दक्खिनी हिन्दी-काव्यधारा

दक्खिनी हिन्दी-काव्यधारा

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना

प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद
पटना – ३

शकाब्द १८८०, विक्रमाब्द २०१५, खृष्टाब्द १९५९

मूल्य सजिल्द ६ ००

मुद्रक
सम्मेलन मुद्रणालय
प्रयाग

वक्तव्य

आजकल अनेक क्षेत्रों में अनुसन्धान की प्रवृत्ति बढ़ रही है। फलस्वरूप कितने ही पुराने तथ्य बदल रहे हैं। बहुत-सी पुरानी परम्पराओं की जगह नई परम्पराएँ स्थापित हो रही हैं। यह कोई अनहोनी बात नही है। नई-नई खोजों से पूर्व-निश्चित सिद्धान्त अथवा इतिहास का रूप प्रायः परिर्वातत होता रहता है। पहले भी ऐसा हुआ है और आगे भी यह होता रहेगा। परिवर्तनशीलता का यह सत्य इस पुस्तक में प्रत्यक्ष मुखर है।

इस पुस्तक के विचारशील पाठक देखेंगे कि खड़ी बोली के आदिकवि कहे जानेवाले अमीर खुसरो के सम्बन्ध में जो मान्यता अबतक चली आ रही है,उसमें भी अब परिवर्तन की अपेक्षा होगी। विद्वद्वर राहुलजी के अन्वेषणों से, पहले की बहुतेरी धारणाएँ बदल चुकी हैं। उनके अनुसंधानों ने हिन्दी साहित्य को भी प्रभावित किया है। उसके इतिहास में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। पहले वीरगाथाकाल से ही उसके इतिहास का आरम्भ माना जाता था। किन्तु उनकी खोज से उस काल के चार-पाँच सौ वर्ष पहले का सिद्धकाल माना जाने लगा। इस प्रकार हिन्दी-साहित्य के इतिहास का आरम्भिक समय बारहवीं शताब्दी के बदले सातवी-आठवी शताब्दी निश्चित हो गया।

श्री राहुलजी ने विभिन्न रुचि के हिन्दी पाठकों के लिए प्रचुर साहित्य रचा है। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् मे उनके और भी दो बड़े ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं——बौद्ध सिद्ध सरहपाद का 'दोहा-कोश' और दो खण्डों में 'मध्य एसिया का इतिहास'। इन दोनों गवेषणापूर्ण ग्रन्थों से हिन्दी साहित्य के बहुत बड़े अभाव की पूर्ति हुई है। दूसरे इतिहास-ग्रन्थ के लिए भारत-सरकार ने ग्रन्थकार को पाँच हजार रुपये का पुरस्कार भी दिया है, क्योंकि गत वर्ष के हिन्दी प्रकाशनों में वही सर्वोत्तम ग्रन्थ समझा गया।

आशा है कि भाषा-तत्त्व-शोधकों और साहित्यिक अनुसन्धायकों के लिए यह पुस्तक विशेष उपयोगी प्रमाणित होगी और इस विषय में आगे भी खोज करने की प्रेरणा देगी।

शिवपूजनसहाय
(संचालक)

महाशिवरात्रि, शकाब्द १८८०

दो-शब्द

'दक्खिनी हिन्दी-काव्यधारा' को आज प्रकाशित होते देखते बड़ी प्रसन्नता होती है। सात-आठ वर्ष पहले यह संग्रह तैयार हो गया था, और इसके कुछ अंश पत्र-पत्रिकाओं में निकले भी। ऐसी काव्य-धाराओं की बड़ी आवश्यकता थी। यद्यपि अपभ्रंश और दक्खिनी हिन्दी को छोड़ बाकी को मैंने लिखने का दायित्व नहीं लिया था। 'संस्कृत काव्यधारा' भी छप गई, जिसको इसके बहुत पीछे लिखना शुरू किया था।

दक्खिनी हिन्दी-साहित्य की ऐसी कड़ी है, जिसको भुलाया नही जा सकता। खुसरो को खड़ी (कौरवी) हिन्दी का प्रथम कवि बतलाया जाता है, पर इसमें सन्देह है। खुसरो के समय अर्थात् १३वीं सदी का अन्त अपभ्रंश और आधुनिक भाषाओं का सन्धि-काल था। उस समय प्राकृत तत्सम शब्दों का प्रयोग ज्यादा होता था। खुसरो के समकालीन फारसी इतिहासकार राजपूत के लिए राउत शब्द का प्रयोग करते हैं, जो स्पष्ट राउत का ही अरबी लिपि द्वारा भ्रष्ट लेख है। ऐसे शब्दों का खुसरो की कविता में अभाव है। दूसरे, खुसरो की कविताओं का कोई भी समकालीन या उससे तीन-चार सौ वर्ष बाद के हस्तलेख नहीं मिलते। इस प्रकार खड़ी हिन्दी के सर्वप्रथम कवि यही दक्खिनी कवि थे। एक ओर उन्होंने बोलचाल की कौरवी को साहित्यिक भाषा का रूप दिया, तो दूसरी तरफ उनकी कृतियों ने उर्दू कविता का प्रारम्भ किया। हमारी हिन्दी उर्दू की, विशेष तौर से गद्य की ऋणी है। दिल्ली के राज्यपालों, सेनापतियों और दूसरे शासकों के साथ कौरवी भारत के भिन्न-भिन्न भागों में पहुँची है, हाँ साधारण बोलचाल के लिए ही, राजकीय कार्य या साहित्य के लिए नहीं। वह काम तो फारसी सँभाले हुई थी। कुरू के अज्ञातप्राय जनपद की दिल्ली को मुस्लिम शासकों ने अपनी और भारत की राजधानी बनाया। इस प्रकार ६ शताब्दियों के कन्नौज के महत्व को मिटा दिया। उपनिषद् और ब्राह्मणकाल में कुरु भारत का सबसे बड़ा सांस्कृतिक केन्द्र था, पर प्रायः अठारह-उन्नीस शताब्दियों से वह अपने महत्व को खो चुका था। दिल्ली के कारण उसका भाग्य लौटा। और आज उसकी भाषा हमारे समस्त देश की सम्मिलित भाषा बन गई।

हिन्दी के साहित्यिक विकास मे दक्खिनी हिन्दी और उर्दू का बहुत बड़ा हाथ है। उर्दू को बहुत से लोग हिन्दी का प्रतिपक्षी समझते हैं, जो गलत है। हम हिन्दीवाले उसे हिन्दी की एक शैली मानते हैं। जो विरोध है, वह केवल उसकी अरबी लिपि के कारण ही। वह समय दूर नहीं है, जब उर्दू का समस्त श्रेष्ठ साहित्य नागरी अक्षरों में आकर सबके लिए सुलभ हो जायेगा। कौरवी लोकभाषा से व्यवधान करने के लिए उर्दू ने जो विधि-निषेध बनाये, हिन्दी ने उसे स्वीकार कर लिया। कौरवी में 'आवै है' का प्रयोग आज भी होता है, उर्दू ने 'आता है' कर दिया, तो हिन्दी भी इस लक्ष्मण-रेखा के बाहर जाने की शक्ति नहीं रखती।

भूमिका में लिखी जानेवाली बातों को आगे जहाँ-तहाँ मैंने कहा है, इसलिए यहाँ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं रह गई। दक्खिनी काव्य के और भी संग्रह निकले हैं, जिनमें एक हैदराबाद से थोड़े ही दिन पहले निकला है, और बहुत अच्छा है। यदि इन संग्रहों को सात आठ साल पहले मैंने देखा होता, तो शायद इस काम में हाथ न लगाता।

यह संग्रह शायद यों ही दीमकों के खाने के लिए पड़ा रहता, यदि इसे बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् ने न स्वीकार किया होता, इसलिए मैं परिषद् का कृतज्ञ हूँ।

मसूरी
३-६-५८

—राहुल सांकृत्यायन

कवि-सूची

भाग १

आदिकाल (१६७०–१८४० ई०)

§१. ख्वाजा बंदानेवाज (१३४३ ई०)

इनका मूल नाम सैयद मुहम्मद हुसैनी था। दक्षिण भारत के यह ख्वाजा मुईउद्दीन चिश्ती (अजमेर) हैं। आमतौर से यह ख्वाजा बंदानेवाज (स्वामी भक्तवत्सल) अथवा लम्बे केश रखने से ख्वाजा बंदानेवाज गेसू-दराज के नाम से ही प्रसिद्ध हैं। इनके पिता सैयद यूसुफ शाह एक प्रसिद्ध संत थे, जो दिल्ली के प्रसिद्ध मुस्लिम संत ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया के खलीफा (उत्तराधिकारी) बुरहानुद्दीन गरीब के साथ दक्खिन आये। बंदानेवाज १३१८ के आसपास दिल्ली में पैदा हुए, और अपने पिता के साथ शैशवावस्था में दक्खिन गये। पिता पाँच वर्ष का शिशु छोड़ कर मर गये। उनकी कब्र देवगिरि (दौलताबाद) के पास खुल्दाबाद में आज भी पवित्र मानी जाती है। [खुल्दाबाद (स्वर्गनगरी) में ही पीछे औरंगजेब भी दफन किया गया।] पिता के मरने पर बंदानेवाज अपनी माँ के साथ दिल्ली लौट गये, जहाँ ख्वाजा नसीरुद्दीन चिराग-दिल्ली के शिष्य तथा मरने पर उनके गद्दीनशीन हुए। अपनी विद्वत्ता और संतपन के कारण दिल्ली में इनकी काफी प्रतिष्ठा थी। अस्सी वर्ष के थे, जब मास्को की होली जलानेवाले तैमूरलंग ने १३९८ में दिल्ली में ध्वंस-लीला मचाई। उजड़े दयार को छोड़कर वृद्ध बंदानेवाज सपरिवार गुजरात आदि होते दक्खिन (दौलताबाद) आये। इससे आधी शताब्दी पहिले (१३४७ ई०) हसन गंगू अलाउद्दीन हसन बहमन शाह ने बहमनी राज्य स्थापित किया था। हसन के पोते तथा आठवें उत्तराधिकारी फीरोजशाह (१३९७–१४२२) ने अपने दादा द्वारा स्थापित राजधानी गुलबर्गा में ख्वाजा को बड़े सम्मान के साथ बुलाया, जहाँ ही १०५ वर्ष की दीर्घ आयु (१४२३ ई०) में इनका देहान्त हुआ।

ख्वाजा ने फारसी में कई पुस्तकें लिखी हैं। उनकी निम्न पुस्तकें दक्खिनी हिन्दी में हैं—

१. चक्कीनामा (पद्य)
२. मेराजनामा (गद्य)
३. से: पारा (गद्य)

कविता के नमूने हैं—

देखो वाजिद[1] तनकी चक्की। पीड चातुर होके सक्की[2]॥
सौकन इब्लिस[3] खिच खिच थक्की। के या बिस्मिल्ला अल्ला हो[4]॥

---

१. उचित, विहित, २. सखी, ३. शैतान, ४. भगवान्‌के नामके साथ, हे भगवान् !

अलिफ़[1] अल्ला उसका दिसता। म्याने[2] मुहम्मद होकर बसना॥
पछीं तलब[3] यानू दिसता। के या बिस्मिल्ला०॥
वदानेवाज सदा हुसैनी[4]। सो बंदगी[5] में रहने
के या बिस्मिल्ला०॥*

—चक्कीनामा

और गद्य के नमूने*—

(१)

नबी कहे[6] तकहीक खुदा[7] के म्याने सत्तर हजार पर्दे उजियाले[8] के हौं[9] अंधेरे के। अगर उसमें से एक पर्दा उठ जावे, तो उसकी जाचने मैं जलूं। हार एक वक्त ऐसा होता है, समझो और देखा वपर्वा अथेरेक उजियालेके आरिफान[10] पर है। वले[11] वासिलान[12] पर पर्दे नूरानी[13] व ववामिरान[14] का मफा पर्दा होता है। सो मुहम्मद का नूर, ए अज़ीज़[15] अव्वल[16] खूबियत[17] को पर्दा। सिवाय तन-जमाली[18] जिस्म[19] के पर्दे कू अपड़े[20] बाज[21], उस जमाल उलूहियत[22] के पर्दे मुम्किनुल्-वजूद[23] कू अपड सकू। उलूहियत के पर्दे अपड़े, आरिफुलवज्द[24] कू अपट सके। इस सहुल्कुदस[25] के पर्दे कू अपड बाज उस किब्रियाई[26] के पर्दे कू उजियारे में तार उचक कर नहीं दिसते। यो हा दाना आलम[27] कू या आफताब होकर उसे मालूम हो गया।

—मेराजनामा

(२)

सवाल—जाती ईमान[28] कौन सा और सिफाती[29] ईमान[30] कौन?

जवाब—असड हाल साबिती[31] है, सो जाती ईमान वह है। साबिती आती और जाती है, सो सिफाती ईमान।

सवाल—ईमान के झाटा क्या? और ईमान के डाल्या क्या? और ईमान के बात और ईमान का वतन[32] क्या? और ईमान का बीज क्या? और ईमान का पोस्त[33] क्या? और ईमान का सिर क्या? और ईमान का जीव क्या?

---

१ अरबी का प्रथम अक्षर, २ बीच में, ३ इच्छा, लोभ, ४ वदानेवाज (कवि), ५ भक्ति, सेवा।

* (पृष्ठ १९–२० डा० सैयद मुहीउद्दीन कादिरी ज़ोर) के आधार पर।

*उर्दू शहपारे (पृष्ठ ३१९–२०)

६ पैगंबर मुहम्मद, ७ भगवान् की खोज, ८ प्रकाश, ९ और (कौरवी), १० ज्ञानी लोग, ११ किंतु, १२ मुक्त, भगवानको प्राप्त, १३ प्रकाशमान, १४ भगवान्को न प्राप्त, १५ प्यारे, १६ प्रथम, १७ सौंदय, अच्छाई, १८ प्रकाशमान शरीर, १९ शरीर, २० पहुँचे, २१ बिना, २२ ईश्वरत्व का सौन्दर्य, २३ जिसका अस्तित्व सभव हो, २४ जिसका ज्ञान होना सभव हो, २५ पवित्र आत्मा, २६ महत्ता, २७ जगह, स्थान, २८ व्यक्ति-सम्बन्धी श्रद्धा, २९ गुण-सम्बन्धी श्रद्धा, ३० श्रद्धा, ३१ पक्कापन, ३२ घर, स्वदेश, ३३ चमड़ा।

जवाव—ईमानकी जीव कुरान। ईमानकी जड़ तोवा[1]। ईमानकी डाल्यां सो वंदगी[2]। ईमानकी वात परहेजगारी[3]। ईमानका तुख्म[4] सो इल्म[5]। ईमानका पोस्त सो शर्म[6]। ईमानका वतन सो मोमिन[7] का दिल है।*

—शहपा

§२. शाह मीराँ जी (मृ० १४९६)

ख्वाजा बंदानेवाज के द्वितीय उत्तराधिकारी (खलीफा) ख्वाजा कमालुद्दीन बयाबानी के शिष्य शाह मीरां जी भी दक्खिन के बड़े संतों मे हैं। इन्हें शम्शुल्-उश्शाक (प्रेमियों का सूर्य, भक्त-सूर्य) कहा जाता है। वह कोरे भक्त ही नहीं, बल्कि अच्छे विद्वान् भी थे। इन्होंने मदीना मे बारह वर्ष विताये थे, जहाँ से लौटने पर बयाबानी के शिष्य हो बीजापुर के बाहर रहने लगे। १४९६ (९०५ हि०) मे मृत्यु के बाद वीजापुर के पास शाहपुर में इनकी समाधि बनाई गई, जहाँ हर साल उर्स लगता है। इनकी कुछ पुस्तकें हैं—

१. खुशनामा (पद्य)
२. खुशनव्ज (पद्य)
३. शहादतुल्-हकीकत (पद्य)
४. शाह मर्गूबुल-कुलुव (गद्य)
५. सबरस (गद्य)

इनके एक शताव्दी वाद **वजही** ने अपना गद्य-ग्रंथ 'सबरस' लिखा था। मीराँ जी के गद्य का नमूना देखिये।*—

जो कोई आशिक कूं इस सात चीजते मना करे, खुदायताले[8] उसे दुनिया में सों[9] फना[10] करे। खूवसूरत देख, राग सुन, खुश्बूई, खुशकर, केफ खा बेपर्वा च और शेर[11] पर खुदा कूं मौन याद कर। मुहव्वत सों बंधा[12] अपने काम में मशगूल[13] रह। किससों नको[14] झगड। यहां आराम, या[15] काम, यां हाल, यां वसाल[16] यां यो खसरे[17] वाले। जो कुछ तूं देखेगा जो सुनेगा, सो सब दर्द-सर[18] है। मुशाहिदी मुराकबे[19] मे परखत्या सैर तैर मे तू रहेगा। इस जमाने मे किसकूं कश्फे-करामात[20] हुआ, जो तुझे होयेगा, यो जो कीमिया[21] करेगा, धदा नही होता और हुआ च का कर दिलपर आता। सीधे वात पकर, घर कूं आ। तूं कूं[22], जवान मे काई कूं[23] जाता। अव्वल तुझे जो कोई सिखलाता है, उसे पूछ—"तूं मुझे सिखलाता, सो तुझ पर खुला है।"

---

१. पश्चात्ताप, अपराध-क्षमापन, २. भक्ति, सेवा, ३. संयम, ४. बीज, ५. ज्ञान, ६. लज्जा, ७ श्रद्धालु भक्त।

*उर्दू शहपारे, पृ० ३२१।

८. महामहिम भगवान्, ९. से, १०. नष्ट, ११. पद्य, १२. बढ़ा, १३. लगा, व्यस्त, १४. नहीं, १५. यहाँ, १६. मिलन, १७. झगड़े, हानि, १८. शिर की पीड़ा, १९. साक्षात्कार, समाधि, २०. प्रकटन, सिद्धि, २१. रसायन, पारस, २२. तुमको, २३. क्यों।

इसका काम उस पर नही खुल्या, सो तुझ पर क्या खोलेगा ? तू क्या समझकर भूल्या है ? बहुत सिखेगा, तो इधर-उधर किया चार हिकायता[1]। इस हिकायता सो क्या हासिल[2] ? तू दुनिया के धधे में हिल गया[3] है और इसकी बात भी आजाद[4] है। वले[5] यों खबर है, कि उसकी बिसरनी में भी उसी का यार है और अपसते अपे[6] आपकू याद दिलाता है। तू भी उसे याद कर। आशिक[7] है, तो उसे विसर नको[8]। उसकी याद सो 'दिल कू शाद[9]' कर और आपसकू अपे याद दिलाता सो अपसकू दिखलाता है, कि यो देखो यो मेरी सूरत ही, मुझे देख, काकू बेदिल होता है। मैं इता तेरे नजदीक हू और तू मुझे नही देखता।

६३. अशरफ (१५०३ ई०)

नानक और सूरदास के बीच के काल में शेख शरफुद्दीन अशरफ (कवि अशरफ) हुए। इनके बारे में अधिक मालूम नही है। इन्होंने इमाम हुसैन पर पड़ी आफतों के सम्बन्ध में अपना काव्य 'नौ सिरहार' ९०९ हिजरी (१५०३ ई०) में लिखा। पद्रहवी शताब्दी के आरम्भ के इस कवि ने अपनी भाषा को हिंदवी कहते हुए लिखा है।

वाचा[11] कीना[12] हिंदवी में। किस्सा मकतल[13] शाह हुसेन॥
नज़म[14] लिखी सब मौजू आन। यों मैं हिंदवी कर आसान॥
यक यक बोल यह मौजू[15] आन। तकरीर हिंदवी सब बखान॥

अपनी कविता की प्रशसा में लिखते है—

नामा कत्या बोल सवार। जानो[16] मोतिया केरा हार॥
सोने की ज्यो घुटी[17] घड। मानिक मोती हीरे जड॥
यक यक बोल यह मानिक मोल। सीम[18] तराजू सँती तोल॥
बदऽ[19] पिरोये सोनेतार। सच्चा हुआ नौसिरहार॥

'नौसिरहार' में मगलाचरण है*—

अल्ला वाहिद[20] हक सुमान। जिन यह सिरज्या भुइ-असमान॥
चदा सूरज तारे रुख। बादल बिजली मेह अचूक॥

खालिक बारी (जिसे गलती से खुसरो की कृति समझा जाता है) की तरह अशरफ ने वाहिदवारी नामक एक कोश-ग्रथ लिखा है।

---

१ कथाएँ, २ प्राप्ति, लाभ, ३ फँसा, ४. स्वतत्र, ५. लेकिन, ६ अपने-आप, ७ प्रेमी, ८ नहीं, ९ स्मरण से, १०. प्रसन्न, ११ वचन, १२ किया (पजाबी), १३ कर्बला की कथा, १४ पद्य, १५ उचित, १६ मानो, जैसे, १७ अगूठी, १८ चादी, १९. बाघ।

*तज्किरा उर्दू-मख्तूतात् पृष्ठ १८।

२० अद्वैत, एक।

§४. फ़ीरोज (१५६४ ई०)

फ़ीरोज की प्रशंसा **वजही** और **निशाती**—जैसे महान् कवियो ने की है। **वजही** ने अपने कथा-काव्य 'कुतुब-मुश्तरी' में लिखा है*—

कि **फीरोज** आ ख्वाब[1] में रातकूं। दुआ देके चूमे मेरे होठ कूं।।
कह्या है तुं यो शेर ऐसा मुसद्स[2]। कि पढ़नेको आलम करे सब हबस[3]।।
इब्न-निशाती ने भी अपने कथा-काव्य 'फूलवन' (१६६५ ई०) में लिखा है†—
नहीं वह क्या करूं **फीरोज** उस्ताद[4]। जो देते शायरी का कुछ मेरे दाद[5]।

गोलकुंडा का पुराना कवि फीरोज, मुहम्मद कुल्ली कुतुब और राजकवि वजही से भी पहिले इब्राहीम कुतुब शाह के समय (१५५० ई०) में हुआ था। कवि ने अपने गुरु बीजापुर के सन्त मख्दूम जी शेख मुहम्मद इब्राहीम (मृत्यु २३ मई १५६५ ई०) की प्रशंसा में 'तौसीफ-नामा' लिखा। ग्रंथारम्भ में वह कहता है—

तु **पीरोज** खस्ता[6] कु (अति) मान दे। मँगुँ दान तुझकने ईमान[7] दे।।
सों **फीरोज** सुपने में पाया रतन। रख्या ढांक सो रतन जिउसों रतन।।

गुरु-महिमा के कुछ पद्य है—

बराहीम मख्दूमजी[8] जीवना। कि मैं[9] सिर्फ[10] वहदत[11] सदा पीवना।।
मेरा पीर मख्दूम जी जगमने[12]। मँगुँ न्यामताँ[13] (मैं सदा) उसकने।।
करें मुझपर प्यार ये पीब जग[14]। कि तुझ प्यार ते होय मन्धीर[15] जग।।
पिया जीव ते तो हमन[16] वास है। तु हम जीव के फूल का बास है।
वही फूल जिस फूल की बास तूं। वही जीव जिस जीवकी आस तूं।।
सो तूं रुख है दीन का बारदार[17]। जो तुझ छाँब तल जग है पकड्या करार[18]।।
अछो[19] मुझ उपर छांव तेरा जरम[20]। कि आधार मेरा सो तेरा करम[21]।
करीमाँ[22] की मज्लिस करामत[23] तुझे। अमीना[24] की सफ[25] मैं अमानत[26] तुझे।।
सदा मस्त मदहोश[27] दीदार का। सचा तूं तलबगार[28] करतार[29] का।।

---

*उ. श पृष्ठ ८७।

१. स्वप्न, २. अष्टपदी, ३. लालच। †त. उ. म. पृष्ठ १४५। ४. गुरु, ५. न्याय, ६. भग्न, परेशान, ७. श्रद्धा, भक्ति, ८. स्वामी, सेव्य, ९. शराब, १०. केवल, ११. अद्वैत, १२. जग में, १३. न्यामते, सर्वोत्तम पदार्थ, १४. दुनिया के प्यारे, १५. मन्दिर, मनधीर, १६. हमारा, १७. फलदार, १८. धैर्य, १९. रहो, २०. सदा, २१. कृपा, २२. कृपालु, २३. सिद्धि, २४. अमानत रखनेवाला, २५. पांती, २६. अमीनपद, २७. मतवाला, २८. चाहवाला, प्रेमी, २९. भगवान्।

मुहीदीन मख्दूम जी जागना। हमें जीव अम[1] पीवसों लागना॥
अहे पीव मख्दूम जी जाइया। मुहीदीन दूजे पा जम[2] जाइया॥
तुजे राउ[3] ने जग राता[4] जनम। मुहीदीन बूजे मो तू कसाता जनम॥
मुझे दान दे दीनो दिलशाद[5] कर। दुन्या के गुनाहा ते आजाद[6] कर॥
निगहवान[7] मेरा तु मुज रखे निगाह्। मुजे देवे दुश्मन ने मेरा पनाह्॥
जिसे पीर मख्दूम जी पाव हैं। उसे दीनो दुनिया में क्या वाक[8] है॥
जिसे पीर मख्दूम जी माइया।

६५ बुरहानुद्दीन जानम् (१५२२ ई०)

बीजापुर के सन्त मीरा जी शम्सुल-उश्शाक के यह पुत्र और उत्तराधिकारी थे। इनका जन्म १५४३ ई० (९५० हि०) में हुआ था, इस प्रकार यह सूरदास से भी पहिले हुए थे। बुरहानुद्दीन अपने पिता की भाँति गम्भीर विद्वान् तथा प्रसिद्ध सन्त थे। इन्होंने कलाम और सूफी ज्ञान पर कई पुस्तकें लिखी, जिनमें 'सुखमुहेला' और 'इरशादनामा' सुन्दर पद्यों में हैं। 'इरशादनामा' अशरफ के 'नौसिरहार' से इक्कासी वर्ष बाद लिखा गया। जानम् अपनी भाषा को हिन्दी कहते हैं—

यह सब बोलू हिन्दी बोल। पन तू अनभो सेती खोल॥
ऐब[9] न राखें हिन्दी बोल। माने तू चख देखें खोल॥
हिन्दी बोलो किया बखान। जेकर फसाद अथा मुज ज्ञान॥

शाह बुरहान ने दोहे भी लिखे हैं। इस प्रकार वह दक्खिनी के उन कवियों में हैं, जिन्हें देश के साहित्य का परिचय था।

'इरशादनामा' में पुस्तक के बारे में लिखते हैं—

नाम किताब इस आख्या[10] होय। खातिर[11] लिया इस राख्या होय॥
'इर्शादनामा' इसका नाम। लोडे[12] फिक्र[13] इसे मुदाम[14]॥
यह सब बोल्या है अनजान। आबिद[15] आजिज[16] है बुरहान॥
हिजरत नुह सह नकद[17] मान। 'इर्शादनामा' लिख्या जान॥

अपने गुरु तथा पिता मीरा जी शाह की प्रशंसा में लिखते हैं*—

सिफत[18] करू कुछ अपना पीर[19]। जिसते रोशन[20] होय जमीर[21]॥

---

१ ऐसे, २ सदा, ३ राजा, ४ प्रिय, ५ प्रसन्न, ६ मुक्त, ७ रक्षक, ८ डर, ९ दोष, १० कहा, ११ दिल, मन, १२ चाहे, १३ चिंता, १४ सदा, १५ भक्त, पूजक, १६ हैरान, परेशान, १७ नौ सौ नब्बे ९९०। *त उ म पृष्ठ १९। १८ गुण, १९ गुरु, २० प्रकाशमान, २१ आत्मा।

जिन मुंज लीता[1] कर उपदेश। बाई[2] इस चख[3] लेउं गवेस।।
धौं जगमें मुंज वैत[4] वही। सिमरूं ले मन नेत वही।।
तिसकूं सिमरे तन मन शाद[5]। जिसका है मुंज पर शाद[6]।।
जग में अहैं तूं ही रतन। पर्दे में ले करूं जतन।।
राख्या कोंदन कर इस ढांव। तिल तिल[7] सिमरूं ले उस नांव।।
पीर की राजी शम्श उशाक[8]। धौ जग रव[9] तुज किया कशाक[10]।।

आरम्भ में अल्ला की स्तुति की है—

अल्ला सिमरूं[11] पहले आज। कीना[12] जिन यह धौ जग काज।।
जगतर करो तूं करतार। समूंकेरा सिरजन हार।।
अस्तुत ओरूं[13] करने चख। फुर्सत[14] पाऊ वोलने मुख।।
कुदरत[15] तू तुज अंत न पार। अगनित कीना हो परकार।।

"इरशादनामा" में शिक्षा दी गई है—

जे कोई पढ़कर करें सवाद[16]। राहे-हक़ीक़त[17] पर होय शाद।।
वनकी तू ना होवे वाड़। ग़फ़लत केरे खुलें किंवाड़।।
इसमें कीता कर सकलाव[18]। ल्या ल्या रच रच स्वालों-जवाव[19]।।

कल्मतुल-हक़ायक़ (सत्यवाणी) को शाहबुरहान ने १५८२ ई० (९९० हि०) में लिखा था। इस प्रकार यह अकवरकालीन गद्य का सुन्दर नमूना है, जिसमें जहाँ-तहाँ पद्य भी हैं। ग्रंथ की भाषा लेखक ने **गूजरी** कही, जिसका अर्थ गुजराती नहीं, बल्कि गुजरात में बसे मुसलमानों में प्रचलित हिन्दी है, जैसा कि निम्न उद्धरण से मालूम होगा—

"यो गूजरी ज़वान। नाम ई किताब कल्मतुल-हक़ायक़"। इसकी भाषा अरबी-फारसी से लदी है।

"इन्शाअल्ला-ताला कि खुदाय-ताला कदीमुलकदीम क्यों था? ज़ात व सिफ़ात व कुल्ले मख्लूकात इब्तदा-व-इन्तहा, वाली व फ़ानी, कदीम व जदीद, बा-हमा व बे-हमा बदी सबब सवाल-व-जवाब रोशन कर कर देखाया है।

पद्यों में से कुछ हैं:—

"तूं ने देख्या आपस आप। जे घड्या यह तुज पाप।।
आरे[20] तूं इस सफा[21] में नूर। कि जैसा आकाश में सूर।।

---

१. लिया, २. वापी, कुआँ, ३. चक्षु, आँख, ४. पद्य, ५. प्रसन्न, ६. प्रसन्नता, ७. पल-पल, क्षण-क्षण, ८. प्रेमियों के सूर्य, ९. भगवान्, १०. प्रकट, ११. सुमिरन करूँ, १२. किया, १३. चाहूँ, १४. छुट्टी, १५. भगवान् की माया, १६. आस्वाद लेना, १७. सच्चा मार्ग, १८. लाभ, १९. प्रश्नोत्तर। २०. हाँ, २१. स्वच्छता।

अरे तूं अपसे आपस देख । ज़हूर[1] कू करता लेखालेख ॥
व खाली दिसता ठाँव । वह् कइया[2] अपना नाँव ॥
यो गफलत मेरी टूटी । जे नजर ऐसी फूटी ॥
यह सदके[3] मुर्शिद[4] छूटा । यह् घोर अधारा फूटा ॥
जैसा साली फूल । या देखें जैसा डोल ॥

६६ एकनाथ (१५४८–९९ ई०)

यह महाराष्ट्र मे पैठन (प्राचीन प्रतिष्ठान), जिला औरगाबाद में ब्राह्मण-वश में पैदा हुए । इनके दादा भानुदास मराठी के प्रसिद्ध कवि थे । एकनाथ देवगिरि (दौलताबाद) मे अपने गुर जनार्दन स्वामी के पास बारह् वर्ष तक शिक्षा ग्रहण करते रहे । इसके बाद गुरु की आज्ञानुसार ब्याह् किया । मराठी मे इन्होने रामायण, भागवत आदि बहुत-से ग्रथ लिखे । इनके बनाये लोकगीत भी प्रसिद्ध हैं । इनकी मृत्यु १५९९ ई० के फागुन महीने में बतलाई जाती है । इस प्रकार यह गोस्वामी तुलसीदास से तीस वर्ष बाद मरे । कहते हैं जिस साल एकनाथ ने वाराणसी में अपने भागवत को समाप्त किया, उसी साल गोस्वामी ने "रामचरितमानस" का आरम्भ किया । उत्तर में रहने के कारण इनकी प्रवृत्ति हिन्दी की ओर भी हुई थी । इनके कुछ हिंदी पद* हैं—

आदि पुरुष निर्गुण निराधार की याद कर । मेरे गुर परवर्दिगार की याद कर ।
जिने माया अजब बनाई । उस वस्ताद की याद कर ।
गैबी खजाना जिसने दिया । उस साहब की याद कर ।
सन्त महन्त की याद कर । गुणी गुणवन्त की याद कर ।
श्री भगवन्त की याद कर । जोग-जुगत का बाधा तोडा ।
शम-दम का सिर पर समला छोडा । समता सो ही सुहावे तुरा ।
गुरु गारुडी वीर पुरा । नैन चीर के पैही मुद्रा ।
कान फार के साये निद्रा । अनहद ध्वनी घुमक बाजे ।
नाग-सुर धुंनक गर्जे । चल चल चल ।
निरजन जगल के जिवडे । खेलना होय तो उलट दृष्टि से खेल ।
आवी करुगा तेरा तमाशा । पैल तेरी मूँडी काटूँगा ।
साप सब भुले बिच, किडे । प्रपच कोठरी में आके दडे ।
बडे बडे जनावर पाले । हरे, लाल, सफेत ।
उजले, काले, पिले, भले, बेभले । हाडीबाग अभिमान जिवडे झुटमुठ चिपीच लढे ।
नहिं कहू तो ब्रह्माण्ड काटने दौरे । देखो मियाँ हाय हाय ।
डख मारा वे डख मारा । सो बडे बडे कू नही उतारा ।

---

१ प्रकाश, २ कहा गया, ३ नौछावर, ४ गुरु ।
* 'दक्खिनी का पद्य और गद्य'—(श्रीराम शर्मा) पृष्ठ ५७—६६ ।

जब गुरु-ग्यान का लगाया मोहरा। जहर उतारा।
देखो मियां बाजीगिरी विद्या खेल। हांडीबाग बड़ा अलबेला।
हात हलावे के पांव हलावे। भोले भोले लोक भुलावे।
आ वे हांडीबाग। बाप बड़ा क्या बेटा बड़ा?
बेटे आगे बाप खड़ा। गुरु बड़ा क्या चेला बड़ा?
चेले आगे गुरु खड़ा। चेला तो प्रेम महल पर चढ़ा।
धनी बड़ा क्या चाकर बड़ा? चाकर आगे धनी खड़ा।
सास बड़ी क्या बहू बड़ी? बहू आगे सास खड़ी।
बीबी बड़ी क्या बांदी बड़ी? बांदी आगे बीबी खड़ी।
निराधार की ले कर छड़ी। बीबी खसम की छाती पर चढ़ी।
तै बड़ा क्या मै बड़ा? मेरे आगे तैं खड़ा।
मै नही मै नहीं। आलस छाया मेरे गुरु।
ग्यानी कू ग्यान लगाऊँ। लोभे आँधे कू उड़ाऊँ।
फुक मारूं तो जा जा जा। बोध के पहाड़ पर जा।
बच्या जाहाँ आना नहीं, ताहाँ ज्या। मेरे सद्गुरु दाता कू शरन ज्या।
मेरे सद्गुरु दाता की इतनी-सी लकरी। मूल मंतर हात मो पकरी।
जिदर दौरा उदर दौरी। फेर देखे तो मेरी मेरे सात।
देख अबी करूंगा खबूतर का तमाशा। बिन पर से उड़ता है कैसा?
खेल खेलते अविद्येके खलीते में घुसा। बाहेर कैसा आवेगा?
आव बे, आव बाहर आव। जिसे नहीं हात ना पाव।
जिसे नहीं गांव ना ठांव। जिसे नहीं रूपरेखा नांव।
भाव ना अभाव कुछ नही। धीरे धीरे तेरा बी मंतर बोलूँ।
लिंगदेह की गांठ खोलूँ। एक बार ऐसा खेल खेलूँ।
कि मेरे बड़े बडे खेल थे। हा तो एक, एक के दो।
दो के तीन, तीन के चार। चार के पांच, पांच के पच्चीस।
पच्चीस के छब्बीस, छब्बीस का एक। एक बी नही, तो जनार्दन देख।

§७. शाह अली (मृ० १५६६ ई०)

"माशूक-अल्ला" (भगवत्-प्रियतम) उपनाम था। यह अहमदाबाद में पैदा हुये और वहीं इनकी शिक्षा-दीक्षा हुई। एक गांव की जागीर मिली थी, इसीलिये "गांवधनी" भी कहे जाते थे। यह सूफी सन्त थे। इनके उपदेशों को "जवाहर-उल्-इस्रारे-अल्ला" (भगवत् रहस्य-सार) में इनके शिष्यों ने जमा किया। इनकी कविता के नमूने देखिये*—

---

*'दक्खिनी का पद्य और गद्य', पृष्ठ ६७—७०।

आपी खेलूँ आप खिलाऊँ। आपी आपस ले, कल लाऊँ।।
मेरा नाँव मुझे अत भावे। मेरा जीव झुंकी पर जावे।।
मेरी निया मुझी सूँ माती। रह री, अपनई रूप लुभाती।।
ला का निया सो मुंज मूँ मिथ्या। जद का मो धन आपस दीया।।
जी को अपनइ रूप लुभावे। भइ सो क्यों न आप सुहरावे।।
मैं मुंज रह्या, ना तूँ सघाती। 'शाहअली' जिव ही मुज साथी।।
मुंझ बिन कोइ नही जग माहा। नेरी सुहागिन हूँ तिस नाहा।।
आपन खेले आप खिलावे। आपन आपस ले कल लावे।।

× × ×

हासिल सब कुरान का है इतना जानो।
वहम दुई का दूर करो होर मुंझे पछानो।।
ढूँढन निकली पीव कूँ, अपस गई मो खोय।
जिधर देखूँ (सो) एक हूँ, मुंज बिन और न कोय।।
मैं आपकूँ भाय कह्या, मा-बाप अपस्कूँ कह्या।
तिस आप पद आवे दया, रे भाइयो हौं से करू।।
जब प्रेम अपने चित धरू, अपसे दिखाऊ मन हरू।
यों आपके घूंघट करू, रे भाइयो, हौं सो करू।।

× × ×

है सो हो हो होय रही है।
जिधर देखूँ एक वही है।।
मैं तो बहुत छिपाया पन काह कीजे।
आप माता जब जन दिसूँ कहा थे कल दीजे।।
दीठा पर्या जग सूँ सब रहे सो जोय।।
हुब जे भोत छिपाये सूँ कित माने कोय।।
जैसा कोई होय मे सब कोइ कहती।
आवत जनदिसे ओ क्या क्यों छिप्या रही।।
आपें बरक्त होय, करे भेस मेरा लेता।
मुंज कूँ जाके 'शाहअली' तइ दिखला देता।।
किन्हें बेरे दीठतें जे तिल भी टलता।
कुछ भी छिपाता आपकूँ तो मरा चलता।।
अभरन मेरा सही सो पिव है। पिव का जिव सो मेरा जिव है।
हार हमेलाँ मुंज शहबाहा। मोतीहार सो तुम गल माहा।।
मुझ शह अन्तर कछू न भावे। प्यारो चोला चीर उतरावे।।
एकमेक जो रास्या लौ है। सो बुज अभरन क्यों कुछ छोडे।।

× × ×

जब ज्यों राखे तब त्यों रहिये। लटका पिव का किसे न कहिये ।।
जे कहना होय सो कहिये। मन माहीं, ले न रहिये ।।
कभी सो मजनू होय बिरलावे। कभी लैला होय दिखलावै ।।
कभी सो खुसरो शाह कहावे। कभी सो शीरीं हो कर आवे ।।
कभी सो साथी कहें अली जियो। अली मुहम्मद कहीं कहावे।
कभी सो शाह हुसेनी राजा। एवें तिल-तिल भेस भरावे।
अहरपनवाली जग रतनाली। बेनी वासक हरतिल काली।
इ जो बाँकी भों दो माली। रे जीव सब सुन एवें कीजे ।।
यह जीव 'शाहअली' जिउ दीजै। दोनों जगमाँ तू राज करीजे ।।
आज प्रेम तो तुज सूँ खेलूँ, जो ये वाचा देवे।
जे तूँ जीते मुंज कूँ लीजे, होर धन जीते तूँ लेवे ।।
एक सो बात प्रेम की भारी। दूजा तुज सूँ खेल चढाई ।
तिस पर तैं मतवाली केती। भर भर प्याली प्रेम पिलाई ।।

× × ×

जिसें तिरे दो, नयन हाते...सो तो नही साथी।
तुज बिन कुछ भी ना जोऊँ, क्या करूँ संघाती ।।
ये यारी होर दोस्ती मेरी।
ये सब यारी दोस्ती तेरी ।।
हब क्या कीजै बात घनेरी।

× × ×

क्या कुछ रूप है मुँझ माँ सहेली।
जे हूं किसमें देख करे हो जाऊँ खेली ।।
रूप लुभाने आपके धन आप दिखावे।
आगे अपने रूप के सो दास कहावे ।।
जग में मुँझ विन कोइ नहीं हौं अपने दासा।
ए जी, महके फूलरी सब मेरा बासा ।।
ये जग मेरी आरसी कर अपस देखूँ।
अपना रूप बखेर करि मुँझ जन धन पेखूँ ।।
सूरज-तारों चाँद-माँही में खाल अछाय।
की उजाली माँझ जगें होर दिया विदाय ।।
इन सव कलियों माँ महीन रँग आप दिखाऊँ।
राती माती होय सही मुँझ वारी जाऊँ ।।
अली मुहम्मद नाम मुझे बन दास कहाऊँ ।।

—"जवाहरु-ल्-इसरारे-अल्ला"

भाग २

मध्यकाल (१५००–१६७० ई०)

§८. वजही (१६०९ ई०)

यद्यपि दक्खिनी हिन्दी कविता का आरंभ ख्वाजा बन्दानेवाज (१३४१ ई०) अर्थात् विद्यापति के समय से होता है, किन्तु उसको उन्नति के शिखर पर पहुँचानेवाला वजही है। वह राजकवि मुहम्मद कुल्ली कुतुव (१५८०-१६११ ई०) के पिता सुल्तान इब्राहीम कुल्ली कुतुब शाह (१५५०-८० ई०) के समय कविता करने लगा था, यही तुलसीदास की तरुणाई का समय है। वजही के दो काव्य-ग्रंथ मिले है, जिनमे से एक "कुतुव मुश्तरी" को उसने १६०९ ई० में (अर्थात् अकवर की मृत्यु के चार वर्ष बाद तथा तुलसीदास के निधन से १४ वर्ष पहिले) समाप्त किया था। यह कवि की मौलिक कृति है, जिसमे उसने बंगाल की राजकुमारी मुश्तरी और अपने संरक्षक इब्राहीम कुतुवशाह के उत्तराधिकारी मुहम्मद कुल्ली कुतुब के काल्पनिक प्रेम का वर्णन किया है। लेकिन ग्रंथ-समाप्ति के समय मुहम्मद कुल्ली कुतुव युवराज नहीं, बल्कि सुल्तान और ख्यातनामा कवि हो चुका था। वजही की आरम्भिक कविताओं का पता नही लगता। जिस समय (१६०९ ई०) कुतुब-मुश्तरी समाप्त की, उससे बहुत पहले से उसने कविता करनी शुरू की होगी। वजही के समकालीन गौवासी आदि और भी कितने ही कवि गोलकुंडा में मौजूद थे, लेकिन वह अपने से पहले के कवियों मे फीरोज और महमूद का ही सम्मान के साथ स्मरण करता है। गौवासी को तो वह बहुत नीची निगाह से देखता है, यद्यपि गौवासी का स्थान दक्खिनी हिन्दी-कवियों में वजही से कम नहीं है। आलोचकों का मत है, कि गौवासी के तेज के सामने अंत में वजही इतना धूमिल हुआ कि उसने "कुतुव-मुश्तरी" लिखने (१६०९ ई०) के बाद फिर पद्य-काव्य पर कलम नही उठायी और २६ वर्ष वाद (१६३५ ई०) यदि लिखा भी, तो गद्य "सबरस" ही। "सवरस" वजही की मौलिक कृति नहीं समझी जाती, किन्तु वह अपने कवितामय गद्य के रूप में विशेष महत्त्व रखता है। तुलसीदास के तुरन्त बाद या समकालीन गद्य का क्या रूप था, इसका यह एक अच्छा नमूना है। इस प्रकार यह महाकवि गद्य और पद्य दोनों का उत्कृष्ट रचयिता है। गद्य में ऐसा कोई उदाहरण उत्तर के समकालीन हिन्दी-कवियों द्वारा उपस्थित नहीं किया गया।

आजकल हिन्दी-कवियों के ऊपर एक यह आक्षेप किया जाता है, कि ये स्वयंभू कवि किसी को अपना गुरु नहीं वनाते। यद्यपि यह कोई उचित आक्षेप नहीं है, नवीन कवि पुराने कवियों की कृतियों द्वारा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। उर्दू-कवियों मे तो परिपाटी बन गयी है, कि वे किसी-न-किसी कवि को अपना गुरु वनाते हैं, और गुरुकवि अपने शिष्य की कविता के संशोधन में काफी परिश्रम से काम लेता है; लेकिन वजही और गौवासी के समय गुरु-परम्परा कायम करने की कोई परिपाटी नहीं थी। दक्खिनी हिन्दी के छन्द सभी अरवी छंद हैं, जो मात्रिक होते हैं और स्वरों के खींचातानी करने में कोई रुकावट नहीं डालते, इसलिए जहाँ तक छंद का

सम्बन्ध है, कवि को कोई शिक्षा लेने की आवश्यकता नहीं थी। वजही के समय भी सुल्तान के कवि-दरबार हुआ करते थे, किन्तु इब्राहीम कुतुबशाह का समय वह समय था, जब कि दरबारों में हिन्दी नहीं, फारसी कविता की तूती बोल रही थी। दक्खिनी हिन्दी-कवियों ने उन्हीं अरबी छंदों को अपनाया था, जो फारसी में भी एकाधिपत्य रखते थे। बाकी अलंकार आदि जो कविता के सजाने, गंभीर तथा चमत्कारपूर्ण बनाने के लिए आवश्यक होते हैं, उनका ज्ञान उन्हें पुस्तकों तथा कवि-दरबारों द्वारा हो जाया करता था। फारसी कविता का जिसने रसास्वादन और अवगाहन न किया हो, ऐसा दक्खिनी कवि शायद ही कोई हो।

यद्यपि वजही के बुढ़ापेमें, मुहम्मद कुली के नाती तथा द्वितीय उत्तराधिकारी अब्दुल्ला कुतुब शाह (१६२४-७२) के समय (शाहजहाँ और औरंगजेब के काल में) गौवासी गोलकुण्डा का राजकवि था, और वजही का सितारा डूब चुका था, लेकिन जैसा कि डॉक्टर जोर ने कहा है—

"वजही कई बातों के लिहाज से दक्खिन का एक अद्वितीय साहित्यकार है। उसका विषय स्वयं उसकी मानसिक उपज है। उसको इस बात पर अभिमान था, कि उसने और कवियों की तरह दूसरों से विषय उधार नहीं लिया। दूसरी भाषाओं से अनुवाद करना या दूसरे के विषय को उधार लेना उसकी दृष्टि में चोरी और दगाबाजी-जैसा अपराध था। वजही वह सौभाग्यशाली कवि है, जिसकी रचना के गद्य और पद्य दोनों नमूने इस समय मौजूद हैं। ये दोनों उसकी साहित्यिक शक्ति के सबसे अच्छे सबूत हैं। उसके गद्य "सबरस" के गुणों से साहित्यप्रेमी अपरिचित नहीं हैं और उसके पद्य "कुतुब मुश्तरी" के अध्ययन से कहा जा सकता है कि वह गोलकुंडा का बहुत बड़ा शायर है। वह वस्तुतः दक्खिन का एक आला दरजे का कवि था। उसने बहुत अच्छा मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। उसमें बनावटी और रूढ़िग्रस्त विचारों का कोई स्थान नहीं है। उनसे मालूम होता है कि सर्वप्रथम उर्दू (दक्खिनी) कवियों ने हिन्दी-कविता का अनुकरण आरंभ किया था। यदि वह इस पर कायम रहते तो शायद उनकी कविता आज किसी दूसरे ही रंग में होती।"

१ कुतुब-मुश्तरी* (२००० शेर)

(१) गौवासी पर आक्षेप

जो लक[1] बस कोई सिर लेवे रजकूं। न पावे कधी[2] इस छिपे गजकूं॥
हुआ जीव[3] जब शेर[4] ओ बोलने। खजीने[5] लग्या गैब[6] के खोलने॥
अगर गोते[7] लक बस गौवास साय। तो एक गौहर[8] इस घात अमोलक न पाय॥
यो मोती नहीं वो[9] जो गौवास पाये। यो मोती नहीं वह जो किस हात आय॥

---

*उर्दूशहपारे, पृ० ८६, ८७।

१ लाल, २ कभी (कौरवी), ३ मन, ४ पद्य-काव्य, ५ यह (कौरवी), ६ खजाना, ७ गुप्त, ८ डुबकी, ९ गोता लगानेवाला, गौवासी कवि, १० मोती ११ वह (कौ०)।

गौवासाँ कई गोते खा खायकर। मुये है सो इस समद[1] मे आय कर।।
अपन होके ल्याना सो है झूठ सब। खुदा, गैबते[2] देवे तो क्या अजब[3]।।
कि हंस तुमने वीच समद एक आय तो। मरे डूब मिल सिरउ पर पयों[4] हो।।

इब्राहीम कुतुब शाह (१५५०-८० ई०) की प्रशंसा में वजही कहता है*—

वराहिम कुतुवशाह राजाधिराज। शहशाह है शाह-शाहाँ मे आज।।
अदलवख्श[5] होर दाद[6] उसते अछे[7]। सदा खल्क[8] सब शाह उसते अछे।।
जिते वादशाहाँ है संसार के। भिकारी है सब उसके दरबार के।।
सुलेमाँते फाजिल[9] है सब बख्त वल[10]। पड़े देव-जिन सब है उस हुक्म तल[11]।।
उसी शाह आदिल[12] के गुस्से ते डर। लिया है गगन कूँ पवन पेट पर।।
इता वल है उस अद्ल के फ़न मने[13]। कि विज्त्यां खड्यां कांपियां पन[14] सुने।।

(२) तबई द्वारा प्रशंसा

वाद के गोलकुडा के कवि तबई (१६६९ ई०) अपने कथा-काव्य (मस्नवी) "बहराम गुल्अन्दाम" मे **वजही** की प्रशंसा करते लिखा है—

लग्या मै जो यों[15] मस्नवी[16] बालेने। यो मोतियां निछल[17] ढाल यो रोलने[18]।।
यो **वजही** मेरे ख्वाब मे आयकर। मुख अपना सो रुखनाद[19] दिखलायकर।।
सरासर सुन्या जो मेरी मस्नवी। कया[20] "वात तबई है तेरी नवी"।।
हो खुशहाल[21] सुनकर यो बातां मेरे। अपस के[22] ले हातॉ[23] में हातॉ मेरे।।
वड़े प्यार सों अपना यो मनल। सुन्या सो पड्या ख्वाब मे से उछल।।

(३) आत्मश्लाघा

(क) काव्य-प्रशंसा*

कता[24] हू सुनो कान धर लोग हो। कहावत मने[25] बात जो आये सो।।
अगर शेर[26] कोई खूब कह कर जो लाय। तो खूबाँ[27] कू वह सुन रश्क[28] अल्वत्ता आय।।
एकस कूँ[29] सो एक ढाँक सकते नही। एकस कूँ सो एक मान रखते नही।।
अगर कुछ कहे तो किधर का किधर[30]। कहे तो कते है इसे हेच[31] कर।।
अराई[32] मे इसकूँ ज्यों धीर थे[33]। फ़जीहत करे पाव लग[34] सीर थे।।
अगर खूब जो बोले तो वों[35] रहे। दिगर[36] जो बुरा बोले तो यों अहै[37]।।

---

१. समुद्र, २. गुप्त, ३. आश्चर्य, ४. पाद, पैर।

*उ. श. ९२।

५. न्यायकारी, ६. न्याय, इंसाफ, ७. रहे, ८. संसार, ९. अधिक, १०. उसके सौभाग्य का बल, ११. उसके हुक्म के नीचे, १२. शाह न्यायकारी, १३. मे, १४. पुनि, १५. यह (कौरवी), १६. कथा-काव्य, १७. निर्मल, १८. वहाने, १९. समान, २०. कहा (कौरवी), २१. प्रसन्न, २२. अपने, २३. हाथों। *उ. श. पृ० ८८। २४. कहता, २५. में, २६. कविता, पद्य, २७. भले, २८. ईर्ष्या, २९. एक-एक, ३०. ऊटपटांग, ३१. छोटा, ३२. संवारना, ३३. से (सब जगह), ३४. तक, ३५. वैसे, ३६. दूसरा, ३७. हू (व्रज)।

(४) मंगलाचरण—

(क) ईश्वर-स्तुति*

अपे फूल अपे फल वन अहै। अपे चाँद अपे सूर अपे घन अहै॥
गरज[1] एक आप च[2] सर्ब ठार[3] है। उसी नूर[4] का सब में झलकार[5] है॥
खुदाया[6] वडा तूँ वडाई है तुज। हमन सब बँदे हैं खुदाई हैं तुज॥
जो जग में सदा काल जीता अछूँ[7]। मुहब्बत केरी मै[8] कूँ पीता अहूँ॥

(ख) पैगम्बर-स्तुति[9] —

मुहम्मद नबी नाँव[10] तेरा अहै। अरश के उपर छाँव तेरा अहै॥
कि चौदह मुलक का तूँ सुल्तान है। अली मा तेरे घर में परधान[11] है॥
असी होर एक लाख पैगम्बर आय। वले[12] मतबा[13] कोई तेरा न पाय॥
शफाअत[14] करनहार सबका तुंही। अपे लाडला एक रबका तुही॥
मुहम्मद कूँ जिस रात मेराज[15] होइ। न था दूसरा वाँ अलीबाज कोइ॥
इनो तीनों कूँ बात यो फाम[16] है। समजता वो चौथे का नैं काम है॥

(ग) अली-स्तुति†

तुँ जग का पियारा तुँ जगका अधार। खुदा का तु हम्दम[17] नबी[18] का तुँ यार॥
अली का मुहिब नै जे कोइ सच तूँ जान। हरामीपनी[19] का वही है निशान॥

(५) कविकर्म-शिक्षा‡—

कता[20] हूँ तुजे पदकी एक बात। कि है फायदा इसमने[21] धात धात[22]॥
जो बेवस्त[23] बोले तो बतिया पचीस। भला है सो एक बैंत[24] बोले सलीस[25]॥
मलासत[26] नहीं जिस केरी बात में। पड्या जाय क्यों जुज[27] लेकर हाथ में॥
जिसे बात के रब्त[28] का फाम नैं। उसे शेर[29] कहने सो कुच काम नैं॥

---

[9] 'योरोप में दक्खिनी मख्तूतात' नसीरुद्दीन हाशिमी (हैदराबाद, १९३२ ई०) पृ० ३०, हस्तलेख ११३४ हि० (१६२४ ई०)

१ अर्थात, २ आप ही (मराठी), ३ ठौर, ४ प्रकाश, ५ चमक, ६ हे भगवान, ७ रहूँ, ८ मदिरा।

* यु द पृ० २९ (हस्तलेख ११३४ हि०, १६२४ ई०)

९ पैगम्बर, १० नाम, भरोसा, ११ प्रधान, राजमंत्री, १२ लेकिन, १३ दर्जा, पद, १४ सिफारिश, १५ अल्ला को देखने के लिए मुहम्मद का स्वर्ग जाना, १६ समझ, फहम।

† यु द पृ० ३१ वहीं।

१७ सखा, १८ पैगम्बर, मुहम्मद, १९ नीचता।

‡ उ श मा च—९७। यु द पृ० ३१।

२० कहता, २१ इसमें, २२ भाति-भाँति, २३ बेसमय, २४ पद्य, २५ कोमल, २६ कोमलता, २७ पन्नों का समूह, २८ सबंध, रीति, २९ पद्य।

नको[१] कर तूँ ले बोलने का हवस[२]। अगर खूब[३] बोले तो एक बैत[४] बस ।।
वो कुच[५] शेरके फ़न[६] मे मुश्किल अछे[७]। कि लफ़्ज होर मानी[८] यों सब मिलअछे।
उसी लफ़्ज कूँ शेरमे ल्याई तूँ। कि ल्याया है उस्ताद जिस लफ़्ज़ कूँ ।।
अगर फ़ाम से[९] शेरका तुजकूँ छंद। चुने लफ़्ज़ ल्या होर मानी[१०] बुलंद ।।
रख्या एक मानी अगर जोर है। वले[११] भी मजा बात का और है ।।
अगर खूब महबूब[१२] ज्यों सूर[१३] है। सँवारे तो नूरे अलानूर है[१४] ।।
अगर लाख ऐबाँ[१५] अछे[१६] नारे में। हुनर[१७] हो दिसे खूब सिंगार में ।।
हुनर मुश्किल उस शेर में योच[१८] है। कि थोडे अछे हर्फ़[१९] मानी[२०] सो कैं[२१] ।।
दिवाना हूँ मै इस रँगी बात का। कि हर दिल मे जिव हो खडे ठार आ ।।
कहाँ बात वो चंचल हुआ चुलबुली। कि दिलकूँ न हासूँ[२२] करे गुलगुली[२३] ।।
मेरी बत सुन बात इस धात[२४] बोल। कि जिव[२५] कूँ खुशी होर दिलकूँ कलोल ।।
यो न मोल है बाल इसे बोल नै। हर एक बोल है वही[२६] यो बोल नै ।।
सखुनगो[२७] वही जिसकी गुफ्तार थे[२८]। उछल कर पड़े आदमी ठार थे[२९] ।।
यो बोल्या हूँ सब गज नारज[३०] है। अझूँ[३१] मेरे दिल मे बहुत रज है ।।
जो लक वर्स[३२] कोइ सह लेवे रंज कूँ। न पाये कधी[३३] इस छिपे गज कूं ।।
नको[३४] बोल मजमून[३५] तूँ होरका[३६]। कि काला है दो जग में मूँ चोर[३७] का ।।
जिता चोरी कर चोर अपे साव[३८] होय। दगाबाज उचक्के कूँ मानै न कोय ।।
चुरा कर चुराता न कह जोर कोय। यो बाताँ समझते सो है होर कोय ।।*

(६) स्वदेश-प्रेम†—

दखिन सा नही ठार[३९] संसार मे। निपज[४०] फ़ाजिला[४१] का है इस ठार मे ।।
दखिन[४२] है नगीना अँगूठी है जग। अगूँठी कूँ हुर्मत[४३] नगीना ही लग[४४] ।।
दखिन मुल्क कूँ धन अजब साज है। कि सब मुल्क सिर होर[४५] दखिन ताज है ।।
दखिन मुल्क मौते च[४६] खासा अहै। तिलंगाना उसका खुलासा अहै ।।

---

१. नहीं (मराठी), २. अभिलाषा, लोभ, ३. अच्छा, ४. पर्याप्त, ५. कुछ, ६. काव्य-कला, ७. है, ८. शब्द और अर्थ, ९. समझके, १०. अर्थ, ११. लेकिन, १२. प्रियतमा, १३. सूर्य, १४. प्रकाश के ऊपर का प्रकाश, १५. दोषगण, १६. रहे, है, १७. गुण, १८. यही, १९. अक्षर, २०. अर्थ, २१. कई, अनेक २२. वहाँ से, २३. गुदगुदी, २४. भाँति, २५. मन, दिल, २६. ईश्वर, शब्द, २७. वाणी, वक्ता, कवि, २८. वचन से, २९. ठौर से, ३०. नारंगी, थोड़ा, ३१. अजहूं, आज भी, ३२. लाख वर्ष, ३३. कभी, ३४. नहीं, ३५. विषय, बात, ३६. और का, ३७. मुंह, ३८. साधु, सच्चा।

* उ० श० पृ० ९७।

† उ० श० पृ० ९८।

३९. ठौर, ४०. उपज, कृति, ४१. निपुण, शास्त्रनिष्णात, ४२. दक्षिण-भारत, ४३. इज्जत, ४४. तक, ४५. और, ४६. बहुत ही (मराठी)।

(७) पानगोष्ठी*—

शहशह[1] मजालिस[2] किये एक रात। वर्जीग के फर्जंन्द[3] ते सब सगात॥
हर एक खूबसूरत हर एक खुशलका[4]। सो हर एक दिलकश[5] हर एक दिलरुबा[6]॥
महावत[7] के कामामें जम जर्म[8] है ज्यों। शुजाअत[9] के कामाँ में रुस्तम है ज्यों॥
नदीम होर मुत्रिव[10] सुघड फह्मदार। अये[11] शहसों मिल्कर यो सब एक ठार[12]॥
सुराही पियाले ले हाताँ मने[13]। नदीमा ते मशगूल[14] वाताँ मने॥
लगे मुत्रिवा गाने यों साजसों। कि परती हिले मस्त आवाज सों॥
जो मुत्रिव वो मेहरा[15] में इस धात गाय। तो फिर उनकूँ इस शोक ते हाल आये॥
जो गावो वो शह कूँ कमाने[1] अये। सो रागाँ प रागाँ जमाते अये॥
नदीमा लताफत में जो चल आयें। तो रोतियाँ कूँ खुशकर घडी में हँसायें॥
शराव होर सुराही नकल होर जाम[17]। हुये मस्त मजलिस के लोगों तमाम॥
जो हुइ रात आधी बिछी[18] दोपहर। खबरदारयाराँ हुये बेखबर॥
बिसर गये नदीमाँ तरज[19] बात का। गँवाये खबर मुत्रिवाँ जात[2] का॥
न मिल्ने न खूबाँ झगडते कहीं। यकस के उपर एक पडते कहीं॥
लगे मस्त हो सुटने[21] मस्ती सँगात। एकसके[22] सो पावा उपर एक हात॥
सो यो कुच वह याराँ हुये बेखबर। कि पानी पीते थे शराब है कि कर[23]॥
एकसकूँ बुला एक अजमाउँसों। गले लगते थे मस्त हो छाउ[24] सों॥
बजाओ जो कँ[1] सो उठें गायकर। सुट मुत्रिवाँ होश खुशी पायकर॥
सुराही पियाले सो हम्दस्त[1] हो। करा फिरते थे वो दोनों मस्त हो॥
एता मस्त साकी[27] हुआ सुध गवाय। कि प्याला मगे तो सुराही कुं ल्याय॥
कह्या शाह दिल्ने च[2] परना भला। किसी पास जाहिर न करना भला॥
किसे कहुँ कि मुज इश्क उसका अहे। वही जाने मुंज इश्क जिसका अहे॥
जे कोइ राज[3] यो बापकन[31] खोलेगा। 'दिवाना हुआ' कर मुंजे बोलेगा॥
नहीं बात कहने की यो खोलकर। कि समझाउ अब मैं किसकूँ बोलकर॥
जछूँ सेजपर मौज ज्यों आवमें। कि चटका लगा इश्की[33] ख्वाब में॥
जिता[3] मुत्रिवा[1] शहकूँ समझी कहे। तगाफ़ुल[36] किये शाह होर चुप रहे॥

---

* उ० श० पृष्ठ १९१–९२।

१ राजाधिराज, २ जल से, ३ पुत्र, ४ सुमुख, ५ चित्ताकर्षक, ६ मनोहर, ७ मुहब्बत, ८ सदा, ९ वीरता, १० वादक, ११ थे, हुते, १२ ठौर, १३ हाथों में, १४ लगे, व्यस्त, १५ जगल, १६ भले न लगते, १७ प्याला, १८ पीछे, १९ ढग, २० व्यक्ति अपने, २१ फेंकने (पजाबी), २२ किसी के, २३ क्योकर, २४ छाया, २५ कहूँ, २६ हाथ मिले, २७ मदिरा पिलानेवाला, २८ दिल को ही, २९ कहूँ, ३० रहस्य, ३१ बाप के पास, ३२ रहूँ, ३३ सखी, प्रियतमा, ३४ जितना, ३५ गायक, वादक, ३६ भूल।

कितै कै[1] कि मस्ती की चाले है यो। किते कै पिरीत के उलाले[2] हैं यो।।
कितै कै उसे कुच्च ओछट[3] हुआ। कितै कै उसे इश्क का पट[4] हुआ।

× × ×

छुपी रात उजाला हुआ देस[5] का। लग्या जग करन सेवा परमेस का।।
शफ़क़[6] सुबह का नैहै असमान में। कि लाले खुले सुंबुलिस्तान में।।
जो आया झमकता[7] सुरज वाट कर। अंधारा जो था सो गया न्हाट[8] कर।।
सुरज यों है रंग आसमानी मनै[9]। कि खिल्या कमल फूल पानी मने।।
हर एकस कुं हर एक कुच फाम[10] था। नवल शह कूँ[11] उस नार का फाम था।।
कह्या शाह अब हाल नैं मुंज मने[12]। भला है जो गंज हो अछे गंजमने।।
अपसमे अपे फिक्र[13] कुछ गूंद[14] कर। रह्या गुंचे कि निम्ने[15] मुख मूंदकर।।
कि धरता हूं दिलमें जे कुच बात मैं। करूं जा के बात किस सात[16] मैं।।
न कोइ यार दिलसोज[17] मोहरम[18] है मुंज। न कोई हम्नफ़स[19] होर हम्दम[20] है मुंज।।
जिते इस ज़मानेमने[21] यार है। दगाबाज ऐबाँ चुननहार[22] है।।
उननको[23] कूं पत्या[24] बात बोल्या न जाय। उनों के कने दिल कुं खोल्या न जाय।।
पत्याना उनोंकूं कहौ क्यों कि कर[25]। कि दिल में बुरे खूब है मूं उपर।।
यो यारी में किस धात[26] का कह[27] अछे[28]। जो मूंमें शकर दिलमने जहर अछे।।
जे कोइ यार यारॉमने[29] नेक है। जवाँ होर दिल दोनों उस एक है।।
न मैं भाई में हूं न मैं माइमें। कि तालिब कूं[30] है लाफ़[31] तन्हाइ मैं।।
जे कोइ घर में मशगूल अछे[32] यारसों। नही काम कुछ उसकूं बाजारसों।।
ज़िसे यार का ध्यान नित यार है। जो आलम[33] की सोहबत[34] ते बेजार[35] है।।
किया लोग नज्दीक के दूर सब। नदीम[36] होर मुत्रिब[37] यो है सब अजब।।
अंझू[38] लाल मद[39] नैन प्याला हुआ। नदीम आह मुत्रिव सो बाला हुआ।।*

(८) प्रेम-स्वप्न†—

देखी ख्वान[40] में शह की एक बन अहै। वो बन नै जमीं के उपर घन अहै।।
फिरै चांद सियाँ सुंदरियाँ उस मने[41]। सितारे नैनक याँ परियाँ उसमने।।

---

१. कहै, २. उल्लास, ३. औझट, ४. रोग, ५. दिवस, ६. सूर्योदय की लालिमा, ७. चमकता, ८. भाग (पं०), ९. आसमानी मे, १०. समझ, ११. नये शाह को, १२. मुझमें, १३. विचार, १४. गूंध, १५. भांति, १६. साथ, १७. सहानुभूतिकारक, १८. हृदयभेदी, १९. एक कण, २०. एक सांस, २१. दुनिया मे, २२. दोष निकालनेवाला, २३. उनको, २४. पतियाकर, २५. कैसे, क्योंकर, २६. भांति, २७. क्रोध, २८. है, २९. दोस्तों मे, ३०. चाहनेवाले को, ३१. आराम, ३२. संलग्न रहै, ३३. दुनिया, ३४. संगत, ३५. दुखी, ३६. गायक, ३७. वादक, ३८. आँसू (पंजाबी), ३९. मदिरा।

* उ. श. पृ० १९०।

† यु० द० म० पृ० ३३, ३६।

४०. भोजन, ४१. उसमे।

रगारँग चमना मने फूल थे। नवल शाह[1] तमाशे मे मशगूल थे।।
पडी ओ चिते दिष्ट[2] उस नार पर। अखल कम हुई शह हुआ नेच पर।।
सो इम परी में वी[3] थी वो च[4] घन[5]। कि लब्दाये[6] थी मौत जोरां सों मन।।
जो देख्या अथा[7] स्वाब में माह[8] कूं। हुआ ख्वाव में ख्वाब उस शाह कूं।।
जो इस नीद मे होर तक होशियार। न थी उस सबूरी[9] न था उस करार।।
बराहिम कुतुब शाह मजलिस सिंगार। किये मुस्तइद[10] मोवे[11] अशरत[12] अपार।।
जित्याँ[13] खूब खुश-शक्ल[14] थ्या[15] सुंदरियाँ। सो कर तातक होर कोप कजरा लक्या।।
जो चीन होर माचीन[16] कीथी बुताँ[17]। सो खुशतवा[18] खुश-फहम[19] खुश-सूरता[20]।।
हरेक खूब महबूब[21] बुत फारसी[22]। वदन ज्यो (कि) जलती[23] अछै आरसी।।
अजब एक उस वक्त पीर मद[24] था। हुनरवद[25] आकिल[26] जहाँगद[27] था।।
दुनिया के अपन बद[28] ते आजाद[29] हो। फिरे गर्ब ते[30] शक लग[31] बाद[32] हो।।
बचन[1] स्मसे था कथन शरम में। कि उस्ताद था वो हरेक काम में।।
अताग्द सो नक्काश[34] का नाम था। भला होर बुरा सब उसे फाम था।।
जो बगाले का सेह्र[35] जिवबात[36] है। सो इस मुश्तरी नार की बात है।।
बगाले शकरकू[37] जो याँ ल्याती हे। सो उसके अधर इसकूँ बन पीती हैं।।
अपस पेनज[38] दिपला वो शोप[39] नार। सुरज, चाद, तारे मिला एव नहार[40]।।
अतारदकूँ शह हाल सब बोलकर। वही ख्वाब देखी थी सो खोलकर।।
कि उम धनि सा मुज इश्क इम भात हे। कह्या हू तुजे मैं जो कुच बात है।।
कि आशिक अहे तूं अपे ददमन्द[41]। तुजे फाम इम काम की सब है छद[42]।।
एताल[43] उसके मिलने की तदबीर कर। तुं वेग[44] हो नको[45] काम ताखीर[46] कर।।

(९) प्रेमारभ*—

(क) "कुतुब-मुश्तरी" का नायक इब्राहीम कुतुबशाह का पुत्र तथा युवराज एव भावी महाकवि मुहम्मद कुली कुतुब है। प्रेमारभ के बारे मे है —

कह्या इल्म[47] मे देक[48] न वो आपते। कि फर्जन्द[49] यो वख्तवर[50] बाप ते।।
रख नॉव करतार कने मग पनाह[51]। सुलस्तन मुहम्मद कुली कुतुबशाह।।

---

१ युवराज, २ दृष्टि, ३ भी, ४ ही (मराठी), ५ तरुणी, ६ फँसाये, ७ था, हत ८ चाद, ९ धैर्य, १० तैयार, ११ मुख पर, १२ आनद, १३ जितने, १४ सुरू १५ थीं, १६ महाचीन, १७ सुदरियां, १८ सुमन, १९ सुबुद्धि, २० सुरूपा, २१ प्रियतम २२ पारसी सुदरी, २३ उज्ज्वल, २४ बुड्ढा, २५ कलाकार, २६ बुद्धिमान, २७ विश्व पर्यटक, २८ बधन, २९ स्वतत्र, मुक्त, ३० गर्व से, ३१ पश्चिम तक, ३२ वायु, वात ३३ कभी, ३४ चित्रकार, ३५ जादू, ३६ जानकार, ३७ मिठास, ३८ अपने से ही, ३९ चचल, ४० दिन, ४१ पीडित, ४२ ढग, उपाय, ४३ अब, ४४ जल्दी, ४५ नहीं, ४६ देर

* यो० द० म० पृष्ठ ३२।

४७ विद्या, ४८ देख, ४९ पुत्र, ५० भाग्यवान्, ५१ शरण।

करे जम[1] दुआ जीवसों जग उसे। हयात होती है ज्यास्त[2] तिलतिल[3] उसे।।
जवानी की दरिया कूँ आया अघान[4]। मुहम्मद कुतुबशाह हुआ अब जबान।।
एता जोर था, उसके एक दस्त सों। उचा[5] के पछाडी मते इस्त[6] कूँ।।

(ख) प्रेम की पीड़ा*--

न भुइँ पर दिखै वह न असमान में। रह्या शह उसी नारि के ध्यान में।।
लग्या तलमल्याने बहुत धात[7] सों। कह्या जाय ना बात वो बात सों।।
न यो बात हर एककूँ फाम[8] होय। वही जानै जिसपर जो यो काम होय।।
कधीं[9] चख[10] हंसे होर कधी चख रोये। कधी सुद्द[11] पावे कधीं सुध खोय।।
इसी धात दिन रात रहता अछे[12]। अपस में अपे[13] वह यों कहता अछे।।
भुलाई चंचल धनि[14] वो यों शाहकूँ। कि लहराये ज्यों कहरवा[15] काह[16] कूँ।।
उठे और फिर सोये शह जाय कर। कि वो नारि भी ख्वाब[17] में आयकर।।
जो हर बार यो ख्वाब में यार आय। तो आशिक[18] कूँ बिन ख्वाब भी कुछ न भाय।।
परेशान हैरान बेताब था। न कुच उसकूँ आराम ता[19] ख्वाब था।।
लग्या शाह उसासां भरन आह भर। कि नज्दीक नै है वो गुनवंत नार।।
कधीं बेखबर होय कधीं होशियार। कधीं पीव-पीव कै[20] कधी यार-यार।।
यों सुन मुत्रिबाँ[21] सब खबरदार होय। जो मस्तान थे वों सो होशियार होय।।
भौत धात[22] सों बात समझायकर। कहे शहकूँ नज्दीक यूँ आय कर।।
कि ए शह, तुँ जम[23] शाहखुर्रम हुआ च। नही गम तुझे कुच तु बेगम हुआ च।।
जे कुच तुजकूँ होना सो हाजिर है सब। उसासाँ जो भरता सो तूँ क्या सबब।।

(१०) प्रेम-पद्य--

(क) गजल†--

पिउ अपने कूँ टुक आज मैं, निस सपने देखी सोय कर।
जब पिउ चल्या[24] सुट[25] सेज मुंज, तब सोती उठी रोय कर।।
हाथ बढ़ा अपना सारने[26] मुंज चल चल लाग्या मारने।
ना जाऊं साई कारने भी, अजऊं क्या क्या होयकर।।
ना पूछूँ वहमन[27] जोसी, कब मिलना पिउसों होसी[28]।
गम विरहा सब मैं सोसी[29], ना जाने दुख यो कोइकर।।

---

१. सदा, २. ज्यादा, ३. पल-पल, ४. उबाल, ५. उठा, ६. मस्त हाथी।

* उ० श० पृष्ठ १८९।

७. भाँति, ८. समझ, ९. कभी, १०. चक्षु, आँख, ११. सुध, होश, १२. रहे, १३. अपने-आप, १४. तरुणी, १५. चुम्बक, १६. घास, १७. स्वप्न, १८. प्रेमी, १९. था, २०. कहें, २१. वाद्यवादक, २२. बहुत भाँति, २३. सदा।

† उ० श० पृ० १९२।

२४. चलता, २५. छोड़ (पंजाबी), २६. हटाने, २७. ब्राह्मण, २८. होगा, २९. सहूँगी।

फत्ताही (मुहम्मद यहिया) तेमूर के पुत्र शाहरुख के समय नेशापुर (खुरासान) का विद्वान् था, जिसकी मृत्यु ८५२ हि० (१४४२ ई०) में अर्थात् "सबरस" लिखने से १८७ वर्ष पहले हुई थी। फत्ताही ने "दस्तूर-उश्शाक" (प्रेमियो की रीति) नाम से पाच हजार शेरो का एक कथा-काव्य लिखा था। उसने "शबिस्ताने ख्याल" (सकल्प रात्रि) और "हुस्न व दिल" लिखे थे, जिनमे "हुस्नोदिल" "दस्तूर-उश्शाक" का गद्यमय सक्षेप है। इसका ढग वही है, जैसे सस्कृत में "प्रबोधचद्रोदय" "सकल्प सूर्योदय" नाटय-काव्य का है जिनमें योग वेदान्त की शक्तियो को पुरुषाकार बना कथा रूप दिया गया है।

फत्ताही के नायक, नायिका और प्रति-नायक, प्रतिनायिका हैं दिल[1] और हुस्न[2], अदल[3] और इश्क[4]।

वजही ने अपने इस ग्रथ को मौलिक कृति कहते लिखा है—

"गरज[5] मीन नादिर[6] वाता बोल्या हू, दरिया होकर मोतिया रोल्या हू। मोतिया के मौजा[7] का मैं दरिया हूँ, तमाम मोतियाँ सो भरया हूँ। जे कोई बात हमारी चल्या वो हमारा च है। हर चद[8] फहमदारी[9] है, चल्या तो क्या हुआ बात हमारी है। अगर नुक्ता है किसी ते कुछ जान्या, हम जाहिर[11] हम बातिन[13] उसे नैं मान्या, तो वो मुसलमान नैं, उसे ईमान नैं। ऐसेसे डरना, भौत-भौत परहेज[13] करना। यो बी एक चोरी है, यो बी एक हरामखोरी है।"*

अब्दुल हक साहेब टिप्पणी करते कहते हैं—"लेकिन वजही के मुँह से यह बात कुछ अच्छी नही मालूम होती। उसने सारा किस्सा शुरू से आखिर तक फत्ताही से लिया, और कही इसका इकरार[14] नही किया। यही नही, बल्कि तहरीर का अस्लूब[15] भी उसीसे उडाया। बावजूद इसके हम वजही को उस्ताद मानते हैं, और जो काम उसने किया हे, उसका एहसान

और तिनिहू आश्रमनि की पालना करतु हैं। अरु अपुनु ससार-समुद्र के पार होतु है, सु स्त्री ऐसी बडी है। अरु स्त्री पुरुष की अर्धांगु है। अरु स्त्री ऐसी है, जाके बल गृहस्थु बडे रिपु इन्द्रियनि जीततु है। और तीनिहुँ आश्रमनि इन्द्रिय डगावती है। सु तिनि इन्द्रियनि हम तुमारे बल अनायास ही जीतत ह। जैसे गढपति गढ के शत्रुनि जीतत है। ताते सुनहु दिति, जौलौं हमारी सम्पूर्ण आउ बीति है तौ लौं हम तुमहि उरन न व्है सकिहैं। तातें अबहि हमारी एक बिनती मानहु। अबहि यह महाघोर बेरा है। सु इहि बेरां भूत परेत फिरत हैं, अरु महादेउ फुनि अबहि फिरत हैं। सु महादेव जो देपिह, तौ हम पर दुपु पाइहै। सु तुम घरीकु देपहु।"इतनीं बात जबही कस्यप कही, दिति के मन एकौ न आई। कामु जु अतिही व्याप्यो, सु दौरि कै दिति कस्यपु जाइ गही, अति आतुर व्है रति दानु मागन लगी, तब कस्यप मन मध्य दुपु पाइकै ईश्वरसौं अपराधु क्षमाइक दितु कहूँ रतिदानु देत भए। सु तातें इहिं प्रकार स्त्रीजु कछू कर्यो चाहै, ताकौं अंतराउ न करहीं।"

—सबरस (भूमिका) सम्पादक मौलवी अब्दुल हक, हैदराबाद १९३२ पृ० १२।

१ हृदय, २ सौंदर्य, ३ बुद्धि, ४ प्रेम, ५ अभिप्राय, ६ मूल्य, ७ दुर्लभ, ८ लहर, ९ सदा, १० समझदारी, ११ प्रकट, १२ बाहरी, १३ सयम। * वही पृ० ७। १४ स्वीकृति, १५ ढग।

न मानना हकीकत[1] में ना-इन्साफी[2] है। उस जमाने में उर्दू नस्र[3] का नाम न था, और न नस्र लिखना कोई कमाल की बात समझी जाती थी। एक तो रिसाले जो इसके कब्ल[4] के पाये जाते हैं वह इस काबिल नहीं कि महफ़िले-अदब में जगह पावें। 'सबरस' उर्दू नस्र की पहिली किताब है, जो अदबी एतवार से बड़ा दरजा रखती है*।"

वजही के सबरस के आधार पर ज़ौकी (शाह हुसेन बहरुल उर्फ, ज्ञानसागर) ने १६९७ ई० (११०९ हि०) में "वसालुल आशिकीन" (प्रेमी मिलन) को पद्य-बद्ध किया और मुजुमीं शाह वैरुल्ला वीजापुरी ने १६७५ ई० (१०८६ हि०) में अपनी मस्तवी "गुलशने जश्न दिल" (मनमहोत्सवोद्यान) लिखी।

(२) संक्षेप--

(क) कथारंभ†--

एक शहर[5] था। उस शहर का नॉव **सीस्तान**। उस सीस्तान के बादशाह का नाँव **अकल**[6]। दीनो दुनिया का तमाम काम उसते चलता। उसके हुकम बाज[7] जर्रा[8] कई नै हिलता। उसके फ़रमाये[9] पर जिनों[10] चले, हर दो जहाँ[11] में होये भले।...

सो इस **अकल** पादशाह कूँ...एक फर्जन्द[12] था, कि उसका जोडा दुनिया में कै न था... नांव उसका **दिल**।...सो एक देस[13] उस अकल पादशाह आलमपनाह[14] साहब-सिपाह[15] जल्लअल्लाह[16]... के दिल पर कुछ आया, अपना अंदेशा[17] अपसकूँ भाया। सो उस **दिल** शाहजादेकूँ...उस इल्मां[18] धनी कूँ **तन** के मुल्क की बादशाही दिया, तन के मुल्क का बादशाह किया।...सिर छतर छाया, तखत बसलाया[19]।...जिधर जिधर दिल जाता, दिल के पीछे तन वी आता।...

(ख) मदिरा-महिमा+--

आशिक दिल कूँ शराब का भौत ध्यान, चतुर सुघरोल[20], शराब वगैर[21] नै रहाता एक तिल[22]। शराब उसें मोत भाया था, शराब पीना उसे आया था।...पादशाहां कूँ शराव पीने का क्या डर? पादशाह कूँ अदल इंसाफ[23] वगैर होर कुछ पूछ-विचार न होसी[24]। पादशाह

---

१. वस्तुतः, २. अन्याय, ३. गद्य, ४. पहिले।

* सबरस के सम्पादन करने मे जिन हस्तलेखों की सहायता ली गई, उनमे एक १७०५ ई० (१११७हि०) का था, और दूसरा १७६३ ई० (११७७ हि०) का, अर्थात् ग्रन्थ लिखने के समय से ७० साल ही बाद का।

† 'सबरस' (सम्पादक—श्रीराम शर्मा, हैदराबाद, १९५५ ई०) पृष्ठ १३ से तुलना करें।

५. नगर, ६. बुद्धि, ७. विना, ८. कण, अणु, ९. आज्ञा देने, १०. जो, ११. दोनों लोक, १२. पुत्र, १३. द्योस, दिवस, १४. लोकशरण, १५. सेना-स्वामी, १६. भगवत्छाया, १७. विचार, १८. विद्याओं, कलाओं, १९. बैठाया।

+ वहीं पृ० २३, २४।

२०. सुघर, २१. विना, २२. क्षण, २३. न्याय, २४. होगा (पं० गु०)।

शराब पिया, तो गुनहगार[1] न होगी। पादशाहाँ कूँ खुदा ने प्यार कर कुछ दिया है, दुनिया का सवाद[2] पादशाहों खातिर पैदा किया है। पादशाहा खुशी पर आये, तो खलक[3] कूँ बी खुशी भाये। हर एक कोई दो प्याले पिया, पादशाहाँ कूँ दुआ दिया। दो देस की दुनिया महजूज़[4] हो जिया। जान ताज़ा, ईमान ताजा तो सब जहान[5] ताज़ा। जाँ आशिक[6] होर माशूक[7] अछें[8], वहाँ शराब न अछे तो वडा हैफ़[9], जो नमक नैं सो खाना। जो कोई आशिक है, उसे शराब भौत भाता। शराब आशिक होर माशूक के दिल के शक दूर करता, शराब दोनों कूँ मुहब्बत में चूर करता। शराब पिये पछी दिल में कुछ खिलाफ नैं अछता[10]। शराब पिये बगैर दिल साफ न अछता। दुनिया का लज्जत, तो पी शराब। शराब न अछें तो आशिका के अगे दुनिया सब खराब। शराब हरगिज गम[11] कूँ आने नैं देता। शराब खुशी कूँ दिल में ते जाने नैं देता। अगर मँगता[12] है गम कूँ मार, तो शराब पी। अगर मँगता है जफ़ा[13] तेरे अगे[14] हारे, तो शराब पी। अगर मँगता है सखावत[15] पर आन, तो शराब पी। अगर मँगता है माशूक सों हिज्र[16] पाने, तो शराब पी। अगर मगता है हुस्न का नजारा करे, तो शराब पी। दिल में मुहब्बत भरे, तो शराब पी। ऊचा चडने मगता है, तो शराब पी। खुदा कूँ अपडने[17] मगता है, तो शराब पी *।

आशिक की इबादत[18] हुस्न[19] देखना, राग सुनना, शराब पीना है। आशिक जे मैखाने[20] में पाया, सो कावे मे जाहिद[21] के हात नैं आया। आशिकी मुसाहिबत होर यारी[22] है, इबादत बदगी होर[23] खिदमतगारी है। महबूबाँ[24] है सो साहब[25] की गोद में सोते, चाकर हैं सो हात जोडकर खडे होते।†

(ग) अमृतसजीवनी की खोज—

उस वक्त एकाएक ऐन मस्ती[26] में बादा-परस्ती[27] में एक कदीम नदीम[28] भौत लताफत[29] सो, एक ताज़े आबेहयात[30] का किस्सा पडया, सो बोल्या कि जो कोई या ताज़ा आबेहयात पावेगा, दूसरा खिज्र[31] होयेगा, इस जग में सदा जीवेगा।

इस आबेहयात की बात का असर[32] भौत धात[33] दिल बादशाह के सिर चढया। नाँव सुनते च[34] दिल हुआ बेताब। बास आने च में चड्या शराब।

आशिक पर सबूरी[35] है हराम। सबूरी का नाँव लेतें जीव जावे, आशिक तें सबूरी क्याकर आवे? बेसबरी[36] आशिक की सिफत[37], बेताबी आशिक की इज्जत, तिलमिलाना आशिक का काम, जलना आशिक का इहतराम[38]।

---

१ अपराधी, २ आस्वाद, ज्ञान, ३ दुनिया, ४ स्वाद पाया, ५ दुनिया, ६ प्रेमी, ७ प्रियतमा, ८ रहें, ९ अफसोस, १० रहता, ११ रज, १२ चाहता, १३ जुल्म, १४ आगे, १५ दानशीलता, १६ वियोग, विरह, १७ पाना।

* वही, पृ० २९।

१८ भक्ति, १९ सौंदर्य, २० मद्यशाला, २१ सयमी, २२ दोस्ती, २३ और, २४ प्रेमिका, २५ स्वामी।

† वहीं, पृ० ३१।

२६ मतवालापन, २७ मद्यसेवा, २८ प्रतिहार, २९ कोमलता, ३० अमृतसजीवनी, ३१ जलदेवता, ३२ प्रभाव, ३३ भाँति, ३४ ही, ३५ सतोष, ३६ असतोष, ३७ गुण, ३८ सम्मान।

दिल पादशाह....मौत बेदिल हुआ। दिल पर काम मुश्किल हुआ। शहर सब हैरान, घर पर लोकाँ परेशान। जेते जितना दौडे सर-गर्दा[1] होकर सब सिर फोडे। पेशवा, दबीर, अमीर, नजीर, कोई कर नै सकै उसकी तदवीर*।

...दिल बादशाह कूँ...एक जासूस[2] था। उसका नाँव **नजर**[3], सब ठांव उसका गुजर[4], सब जागा की मालूम उसे खबर।...अक़ल भौत धरे, नै होता सो काम करै। कोई न जा सके वहां जावे, कोई खबर नै ल्याता सो खबर ल्यावै।...सो वो नज़र जासूस दिल...के हुजूर[5] आकर...ताजीम कर...भौत अदब[6] सो बोल्या, बात का माया खोल्या, कि "ऐ दिल बादशाह...दिलकूँ रख घट[7], तकवा[8] नको सट[9]।...इस काम पर एताल[10] में राजी[11], देख मेरी जबानबाजी[12]। मुझे रुखसत[13] दे। इस काम कूँ मै जाऊंगा, जिधर तिधर धूँढ़[14], तूँ मंगता सो **आबेहयात** की खबर ल्याऊँगा†।...

...दिल बादशाह...यो-बात सुन्या, उमेद[15] के चमन में ते गोद भर भर फूल चुन्या।

मन के चमन[16] मे बाव आ, फलके है गुँचा[17] आस का।
डाली च पर फूल हंस पड्या, उम्मेद अब है वास का‡।।

...**नजर** जासूस कूँ शाबाश कह्या,...रजा[18] दिया कि "तूँ जा, यो खुशखबर लेकर वेग आ।...ताख़ीर[19] नको कर।..."

जासूस नजर **दिल** पादशाह आलमपनाह सों बिदा होकर कदम अंगे धर रवाना हुआ, जों वाव कै उठा कै गिरया, जागा जागा ढूँढ्या, आलम सब फिरया।...फिरते-फिरते एक शहर में आया। उस शहर के इमारताँ जैसियाँ किसी शहर में कोई आज लग नै बंधाया। कि उस शहर के आसपास, तमाम फुलवारी, तमाम फूलाँ की बास। लोकां सब बाँके...नेक-नीयत नेक-कर्दार[20], परदेसी कूँ आये-गये कूँ भौत करते प्यार।...

नजर वहां के लोकां ते लिया खबर कि "यो ठांव क्या है, इस शहर का नांव क्या है?" वहां के लोकां हुये एक कोले[21], सब बोले, कि "इस शहर का नाँव आफ़ियत[22], होर इस शहर के पादशाह का नांव नामूस[23]।"...

नजर (**नामूहस** पादशाह)...सो जाकर मिल्या, अपने काम खांतिर भौत बिलबिल्या[24]। नामूस पादशाह उसे देख कर...भौत खुश हुआ। हँस्या, हिल्या, गुँचा था सो खुशी सो जों फूल खिल्या।...उसे अपने नज़दीक बसलाया[25]। पूछ्या कि "तू कौन है, तेरा मकसूद क्या

---

१. धूल फाँकता। * 'सबरस', पृ० ३३।

२. गुप्तचर, ३. दृष्टि, ४. गति, ५. सामने, ६. सम्मान, ७. ठीक, ८. षट्कर्म, ९. छोड़, १०. वस्तुतः, ११. स्वीकारी, १२. दाव, १३. छुट्टी, १४. ढूँढना।

† वहीं पृ० ३४, ३५।

१५. आशा, १६. बाग, १७. कली। ‡ वही पृ० ३५। १८. अनुमति, १९. देर, २०. सुकर्मा, २१. ओर, २२. मंगल, २३. सम्मान, २४. अफसोस, २५. बैठाया।

है, तू काँते आया?" नजर बोल्या कि "ए नामूस बादशाह आबेहयात जो मैं मगता हूँ, उसी कूँ पछाने, काँ अछेगा, सो खुदा जाने।"

नजर नामूस पादशाह कूँ सलाम कर कुछ कलाम कर चल्या, निशान उस आबेहयात का कई नें पाया कर भौत तिलमिलाया।

जाते-जाते तिलमिलाते-तिलमिलाते हैफ खाते-खाते बाट में देखा, एक डूँगर अजीमुश्शान, दूसरा आसमान, हर एक खाने मे उसके चाँद सूरज का मकान। नजर उसकी बुलदी पर नैं जाती, कचलाती भी फिर-फिर आती। जीव नैं रह्या, उस डूगर के नजदीक गया। वहा के लोकाँ कूँ पूछ्या कि "इस जागाँ कूँ क्या कते हैं।" उनो बोले कि "यो डूँगर पर कुहना बूढा अछता है रात-देस, उसमे परसन हुआ है परमेस, उसका नाव ज़र्क मगर होर उसमें कुछ नैं फर्क।

नजर कूँ भौत थी तलब की आग, बाव हो कर डूगर पर चड गया ज़र्क के पास। उन कह्या "ऐ पीर, सलाम, साहब तदबीर सलाम।"

उने कह्या—"ऐ जवान, अलैक सलाम्, अलैक सलाम*।"

बैत (पद्य)†—

यो काँवा जो काँका यो दोनो हुवाई।
तमाशा अजब है नवी आशनाई॥

ज़र्क कह्या कि—"यहाँ तूँ क्या आया? कौन तुझे यहाँ लाया? कौन तुये यो बाट दिखलाया? यहाँ क्या है तेरा काम, हैरान हूँ मैं नैं होता फाम¹।"

नजर अपने दिल की गाठ खोल्या, उसे ताजे आबेहयात का किस्सा बोल्या।

रिजक नें कह्या‡—वह एक चश्मा तू कता² मो बहिश्त में है। तूँ उस चश्मा कूँ धूँढता दुनिया मियाने³, उसका निशान कोई क्या समजे क्या जाने। अगर तुझे होना चाहे यो पानी, तो आशिक के अजबा⁴ मे है उस पानी की निशानी। आशिक की अखी का पानी क्या है इश्क की खूम। उस पानी ते क्या अजब जो मुवा मो जीवता होय। मसीहा का दम उस पानी ते फेज⁵ पाया, मसीहा उस पानी ते मुये कूँ जिलाया। उस पानी सो बे-अदबी⁶ ना करना, उस पानी सो भौत डरना। यो पानी अगर मेह⁷ की मौज उचावे, तिलमें⁸ आलम कूँ गुलिस्ता कर दिखलावे। फूलकूँ फुलवाडी करे, वाडकूँ वाडी कर, पातकूँ झाड करे, ककर कूँ पहाड करे। तेरा सखुन⁹ मुझे खुशी दिया, तेरी बात में भौत हिज़¹⁰ किया। तू कह्या सो बात मेरी बातमे है, दो देस बी उस रात मे है। तू जो मोती सुट्या मैं चुन्या, तूँ जो बोल्या सो मैं सुन्या। वले मेरा मुद्दआ कुछ जुदा है, किसने क्या होवेगा हताल खुदा है।

---

* 'सबरस', पृ० ३५।

† वहीं, पृ० ४२।

१ समझ।

‡ वहीं पृ० ४३।

२ कहता, ३ बीच, ४ विचित्र, ५ बरकत, ६ अपमान, ७. कृपा, ८ पल में, ९ वचन, १० स्वाद।

यो वह वहाँ ते उठ्या, उसकी खिदमत के बन्द मेंते छुट्या। इस कोम पर यों थी क़जा, 'जाता हूँ' कर मँग्या रजा। इस फ़िक्र ते चल्या, भौत तिलमिल्या भी अपने काम कूँ बाव होकर जंगले-जंगल चल्या। उस जंगल में...एकाएक कोट नजर आया, आसमाँ पर पड़्या था उसका सामाँ। सात ज़मीन उस कोटे के एक तरफ का पाया, हर एक कँगूरा उसकी अर्श[1] का हमसाया[2]। ऐसा कोट दुनिया मै आज लगन[3] कोई पादशाह न बँधाया।...उस कोट कने[4] आकर वहाँ के लोकाँ की रविश[5] पाकर, पूछ्या कि, "इस कोट का नॉव क्या है, इस कोट के पादशाह का नॉव क्या है* ।"

लोकाँ बोले कि "इस कोटका नाँव है **हिदायत** और इस कोट के पादशाह का नॉव **हिम्मत** ।"

...जासूस नजर **हिम्मत** पादशाह आलमपनाह...सों जाकर मिल्या।...नजर खातिर वहाँ टुक जम्या, चन्द रोज हिम्मत की खिदमत में गम्या। गमते-गमते वहाँ **हिम्मत** कने एक देस उस ताजे **आबेहयात** की बात कहा।...हिम्मत सुन हँस्या, हँसकर भी रोया, अँझुवाँ सों मुँह धोया, लहू कू पानी मे घोल्या होर बोल्या। उस ताजे **आबेहयात** की वाकने, ताकत नै मुझ मने।...ए नजर खूब नजर कर, इस बातते दर गुजर कर।...भौत लोकाँ इस बाट में आकर जीवाँ गँवाये है।...तुटे दिलकूँ जोड़, इस बात का दुँबाला[6] छोड †...

नज़र यो खबर सुन भौत घवड़ा हुआ, चित का बुरा हुआ।...मामला कुछ का कुछ खड़्या[7], अँदेशे में पड़्या..."**दिल** के उधर देखता हूँ...आशिक काबिल[8] की बात खातिर मैकाँ आती है, पंद[9] किसी की काँ भाती, दोस्ती जाकर दुस्मनी बसाती। **दिल** मेरी बात कूँ काँ मानेगा, अगर बोलूँगा दुश्मन कर जानेगा।...**दिल**के दिल में मेरी है आस, मै भी अंपड़्या[10] हूँ हिम्मत पास।...

...कुछ अँदेशा अँदेश कर कदम कुछ पेश कर हिम्मत कूँ बोल्या..."तूँ बादशाह, तूँ हिम्मत, तूँ फतह[11], तूँ नस्रता। मुझे मेरे काम कूँ हिम्मत दे, हिम्मत की कुछ मत दे।...खुदा खातिर जों-त्यों उस **आबेहयात** काँ है, उसका निशान बोल।...

हिम्मत नजर कूँ भौत कस्या, पेट पकड पकड कर होग्या। कहा...शाबाश तुझे।...जिसका ज़फ़र ऐसा अछैगा, उसका साहब कैसा अछैगा।...अल्-किस्सा[12] हिम्मत ने नजर कूँ, इस खुशखबर कूँ खिलवत में ले जाकर अपने नजदीक बसला कर समझाया, मकसूद[13] उसका पाया।...कहा...मशरिक वलायत में...एक बादशाह है,..इश्क[14] उसका नाँव है, हर दिल में उसका ठाँव, सबसों जोड़्या किसी सों नै तोड़्या†...।

वह शाह इश्क है यो सब जहाँ उसका है।
सितारे चाँद सूरज आसमाँ उसका है।‡

---

१. भगवदाज्ञा, २. पड़ोसी, ३. तक, ४. पास, ५. ढंग।

* वहीं पृ० ४४। ६. पीछे। † वहीं पृ० ४५।

७. खींचा, ८. योग्य, ९. शिक्षा, १०. तैयार, ११. विजय, १२. संक्षेपतः, १३. अभिप्रेत, १४. प्रेम।

‡ वहीं पृ० ५३।

इश्क आग है, जाँ जायें वाँ जले, इश्क की आग कूँ कौन सँभाले ? इश्क का जीव हुस्न, उस जीव में लाख-लाख गुन, इश्क कूँ झाड है हुस्न पानी, हुस्न ते कायम इश्क की जिन्दगानी। इस दोनों च का है शोर घरे घर ठारें ठार। इश्क आशिक, माशूक हुस्न नारी, इश्क के माशूक दायम सँवारी सिंगारी। इश्क बादशाह कूँ एक बेटी है, भौत मकबूल[1] भौत खुश-असूल[2] भौत खुश-रंग, भौत खुश-ढंग। नूर में सूर नै उसके सम, नाजुक नरम, जो फल जो अवरेदाम[3]। अँगियाँ कू घेरें अगर करनाँ, सुध छोड दीवाना होकर फिरना। (बैत)

घर मे हँसते निकले अँगन मने फूलाँ झडे।
आशिक हो कर चाँद और सूरज दरवाजे पर आकर पडे।*

नाँव उसका हुस्न, किने बोलूँ उसके गुन। कोहकाफके उधर एक शहर है। उस शहर में एक बाग है, कि उस बागकूँ बहिश्त[4] उस बाग रश्क ते दाग है। उसके फूल देखते जीव आवे, उस बागकूँ वहिश्त मो क्यों तश्बीह दिया जावे। सेहन उसका मोतिया सो भऱ्या, जा तारियाँ सो गगन, बहिश्त उसके एक बाग के कोनें का चमन। जिस दिलरुबा शहर में यो दिलाराम बाग है। उस शहर का नाँव दीदार[5] उस दिलराम बाग का लकब रुखसार[6]। इस बाग में एक चश्मा है। उस चश्मे का नाँव धन, मनमोहन जगजीवन। भौतेज मीठा जो नबात[7], इस चश्मे है तूँ मँगता सो आबेहयात, उसका सिंगार, जिस पर झूल्या सब संसार। इश्क की बेटी भौत नाज मो, भौत साज सो, लटकती, ठमकती, झलकती, झमकती रुखसार की फुलवाली में नाज[8], गजमा[9], इश्वा[9], अदा[10], हरकत[11] दिलरबाई[12], खुशनुमाई[13], लताफत[14] ऐसियाँ चाँद जैसिया सुघड सहेलियाँ सो मिल-मिल, ऐसियाँ रंगीलियाँ, छबीलियाँ मिल-मिल दायम[15] तमाशे देखती फिरती। बैत†—

आई धन चमकते आगन में। फूल फिरता है फूल के बन में।

हिम्मत यो बात कहा, गुम हो रह्या। नजर सुन्या बेसुध हुआ, सिर धुन्या, दोनों हुए बेहोश। बारे बक्त कूँ दोनों हुशियार हुए। दोनों खडे हुए, दोनों हैरान दोनों परेशान, एक का एक देख मु।

हिम्मत कहा "मैं कहा सो अगे आया। ऐताल मुझे मैं क्या कहूँ न कहूँ तो चुप क्या रहूँ। तूँ तो भौत दाना[17] भौत आकिल है, बले हुशियार शहर दीदार कूँ अपडना भौत मुश्किल है। बाट में जिन्मकी मेहनत हायल[18] है। अके[19] एक शहर के नाँव सुबुकसार। एक देव है बादशाह उसका नाव रकीब। बले इश्क बादशाह फरमाये सो रकीब[20] करे।

---

१ स्वीकृत, २ सिद्धान्त, ३ उपमा।

* वही, पृ० ५४।

४ स्वर्ग, ५ दर्शन, ६ गाल, ७ फल, ८ गर्व, ९ हाव-भाव, १० भाव-भंगी, ११ ढंग, १२ चाल, १३ मनोहारिता, १४ शोभा, १५ कोमलता, १६ सदा।

† वहीं, पृ० ५५।

१७ चतुर, १८ व्यवधायक, १९ आगे, २० प्रतिद्वन्द्वी।

दिलरुबा शहर **दीदार** का निगहबान, अगयार कूँ वाँ नै देता आन, हरगिज किसी ते नै डरता। जो कोई आता उसे मना करता।...जो कोई आता उससों झगड़ता, कुत्ता होकर लड-लड पड्त्या। जाॅ ऐसा आदमी अछै नित, कुत्ता रखने की वहाँ क्या हाजत? न भले ते डरेगा न बुरे ते डरैगा, **एक रकीब** हजार कुत्ते का काम करेगा।...तू अगर उस शहर **सुबुकसारते**...खलासी पावेगा, होर खुदा ले जावेगा, तो...शहर दीदार में जावेगा। याद अछो, वहाँ मेरा एक भाई है, एक माई-जाई है, **क़ामत** उसका नाम, **इस्तकामत**[1] उसका काम, दिलरुवा शहर दीदार में उसका मुक़ाम। क़बूल सूरत मदनमूरत, बुलंद-बाला, भोते च आला, दिलकु लगे, जीव कूँ ठगे, सुध छीने, बुध छीने...क़रार कूँ बेक़रार करे, इन्तज़ार कूँ प्यार करै, सबूरी कूँ लूट लेवे, इज्तिराब[2] कूँ कूवत देवे।...क़ामत मै वो एक आफ़त है, आशिकों के दिलाॅ का ज्याफ़त[3] है। उस क़ामत कूँ...तेरी सिफ़ारिश खातिर एक किताबत[4] लिख देता हुँ, तेरे किस्से की हिकायत लिख देता हूँ। मेरा नाॅव ले, यो किताबत उसके हाथ दे, अल्बत्ता तुझसों कुछ मुहब्बत धरैगा, मुरव्वत करेगा।...

(घ) सुबुकसार में—

तूँ कहाँ का है, इस जागाँ तूँ क्यों आया? इस शहर की बाट तूँ क्यों पाया? तुझे कौन दिखलाया?

नजर...समझाया कि यो तुरफ़ा वक्त है, काम भौत सख्त है। यहाॅ अक़ल न बिसरना, अँदेश कर कुछ काम करना।...रक़ीब रुसियाह कूँ...सलाम कर कलाम[5] कर चुप नही रह्या। क्या कि, "मै हकीम हूँ, भौत मातवर हूँ, सब हिकमत ते बा-खबर हूँ...। बेजान कूँ देऊँगा जान, शागिर्द है मेरा अफ़लातूँ, अरस्तू, बूअली होर लुक़मान।...खुदा कूँ भाया जो मुझे इस मुल्क मे लाया। अगर हिकमत पर मै ध्यान धरूँगा, तो माटी कूँ सुन्ना करूँगा।...**बगैर पुट बगैर** अग, पीतल कूँ कर दिखलाऊँगा सुन्ने ते खास।"

हिम्मत ने नज़र कूँ उस आबे-हयात का निशान दिया।...नजर हिम्मत कने रजा मंग कर उमँगकर भौत मुहब्बत सों...मशरिक[6] के मुल्क के उधर रुख किया।...नज़र कूँ पकड्या उचाट, यही अपे और अपनी बाट। देश चलते-चलते तलमलते-तलमलते अपने दिलकूँ तकवा दिया, समझाया। एक देस... उस शहर सुबुक्सार में आया। रकीब बादशाह के लोकाँ...देखें, कि यो आदमी इस शहर में नवा आया है,...जासूस है, भेदी है। चोर है आया, इस शहर का क्या माया है? बैत—

पराये शहर में हरगिज़, खुदा किसे न ले जाये।
अगर हजार भला है वी, उसकूँ कौन पतियाये*।

...पकड कर जकड कर रक़ीव वादशाह...कने जने मिलकर ल्याये।

---

१. दृढ़ता, २. अधीरता, ३. न्योता, भोज, ४. लेख, ५. वचन, ६. पूर्व।
*** वहीं, पृ० ५८।**

रकीब सुने का तालिब[1] था। नजर के हुजूर उसके मूँ में थे। या निकाल्या कि "तेरे वार्ता सुन मैं रहा हूँ आस कर, ऐताल जो तूँ कहा त्यों सुना गान[2] कर"।

नजर जवाब दिया कि "उस सुने की तरकीब कूँ कुछ-कुछ दारवाँ का भौत दरकार है, मअदन[3] उस दारवा[4] का दिलरुबा शहर दीदार है, होर गुल्शन रुखमार है।"

रकीब बोल्या "अगर सुन्ना राम करना मुयस्सर है, शहर दीदार होर गुल्शन रुखमार भी नजदीक बल्कि नजदीकतर है। खुदा कादिर[5] है, जो कुछ तूँ मँगता सो सब हाजिर है। हमें तुमें मिलकर जायें, जो कुछ मुस्तैदी हो शहर दीदार ल्यायें।"

उने बी कहा खूब, इने भी कहा भौत खूब, मतलब पर आया मतलूब[6]। बैत—

जवाँ एक थी दोनों का दिल जुदा था॥
समजता हाल उनका सो खुदा था*॥

रकीब होर नजर दोनों मिलकर एक दिल कर शहर दीदार उधर चले। दिल में कोड-कपट मूँ पर दोनों भले

अगर कोई मरद या स्तिरी है।
दुनिया में सब दगाबाजी भरी है†॥

वो रकीब नापाक यो नजर सीनाचाक दोनों आये, दीदियाँ कूँ दूर ते शहर दीदार का तमाशा देख लाये। कामत जो नजर कूँ रकीब की सँगात देखा, चोरीसो उसके अहवाल की बात पूछ्या। नजर अपना किस्सा कामत[7] कूँ बोल्या, हिम्मत ने मकतूब[8] लिखा था, सो कामत के अग खोल्या। कामत उस मकतूब का मज्मून[9] खातिर ल्याया। कामत कूँ एक गुलाम था, सीमसाक उसका नाम था। उसे बोल्या कि "नजर कूँ किधर तो भी पिनूहाँ[10] कर, जीवदान दे मुश्किल इसका आसान कर, कि रकीब जितना ढूँढे, तो बी इसे क्यों न पावे, रकीब के हाथ में नजर फिर न जावे‡।"

गुलाम ने नजर कूँ फर्श के आसरे छिपाया, के कोई न पावे उसका साया। रकीब देखता है, जो नजर नैं, जिधर धूँढता वो किधर नैं। रकीब गुमराह रुसियाह परेशान फिकर मैं चौक्या। आखिर कुछ तदबीर नै दिसी। ला-इलाज नाखुश होकर अपने शहर उधर फिरया। नजर रकीब के हात ते खलासी पाया, खुश होकर कामत कने आया रकीब की महनत ते आसूदा[11] हुआ, तेरी मेहर[12] का मुजे आजमूदा[13] हुआ। तू मुझपर लै शफक्कत[14] लै प्यार किया, मुझपर तू ने उपकार किया। यो काम करने तू च सके, खुदा तुजे सलामत रखे। मुजे लग्या है शहर दीदार का ख्याल, रखा दे ऐंताल[15]। भौत जरूर है यो काम, जरूर है मेरा खुदा च कूँ फाम[16]§।

---

१ इच्छुक, २ ठीक, ३ खान, ४ दवा, ५ शक्तिमान, ६ इच्छित।
* वहीं, पृ० ५९। † वही, पृ० ६२।
७ स्थिरता, ८ पत्र, ९ विषय, १० छिपा। ‡ वहीं, पृ० ६४।
११ मनभरा, १२ मेहरबानी, १३ परीक्षित, १४ दया, १५ अभी, १६ समझ। § वहीं, पृ० ६५।

क़ामत कहा..."ऐ वल्लाह, बि-स्मिल्लाह...खुदा तुझे तेरी मुराद कूँ अँपडावै, जो कुछ तू मँगता सो खुदाते पावै*।..."

(ङ) हुस्न के पास--

नजर[1] क़ामत सों बिदा होकर, तस्लीम[2] कर, सिर पर हात धर-कर, अपने ठारते हिल्या। चल्या, सो देखने उस शहर दीदार कूँ, उस रंग भरे गुल्जार कूँ।...बारे हजार मशक्कत सों हजार मेहनत सों शहर दीदार कूँ आया, नज़र की जीव भौत खुशी पाया। उस शहर दीदार मे देख्या **रुखसार**, अजायब गुल्जार, मगर नवीं बहिश्त पैदा किया है परवर्दगार[3], झाडाँ-डालियाँ सब फूलाँ सों बार, फूलाँ सब नादिर सब अचंबा सब औतार[4]।†

बैत—सिफ़त उस बाग की गर कोई सुनावे।
अजब क्या रश्क जो जन्नत[5] कूँ आवे।।

भक़बूल[6] वहाँ हर फूल फूलता, पातोंपात जीव बहलाना, आशिक़ देख वहाँ जीव खोना, हर फूल मे लाक तिलिस्म[7] लाक टोना।...नजर कूँ ऐसी जागा परते गुजरना भौत मुश्किल हुआ। **नजर** ख्वार आवारा, कुछ नैं दिसता बेचारा‡।

हुस्न नार औतार[8] खुशदीदार खुश-गुफ्तार[9] खुश-रफ्तार[10], दीदियाँ[11] का सिंगार, दिल का आधार, फूल डाली ते खूब लटकती, चलने में हंसकूँ हटकती[12], रावी[13]ते मीठी बोले बात, आवाज ते कुमराँ कूँ करे शहमात[14], कँवल के फूल की फँकुड़ियाँ[15] जैसे हात। चमन में फूल शरमे हुजूर[16], लाज ते आसमान पर चडे चाँद सूर। मस्त हत्ती ते मगरूर[17] माती माती, किसे खातिर[18] नै ल्याती, बाल जानो काले नाग, गाल जानो इश्क़ की आग।

बैत—यो मोहन धन अजायब[19] मोहनी है।
सुरज उसके दरस का दरसनी है।।

...उसकियाँ अँखियाँ जानो लाले, जानो शराब के प्याले। दाँताँ देख मोती के दाने, घरे घर फिर कर होते दीवाने§।...

सो उस दिलरुबा नार कूँ, दीदियाँ के सिंघार कूँ, चतुर चौसार कूँ, एक सहेली थी, भौत छबीली थी, रात रंगीली थी। नाँव उसका जुल्फ़ था, लट, साँवली निपट, रंगकूँ काली, घूँगरवाली। **कामत** के गुलजार का होर शहर **दीदार** का तमाशा देखती थी, जो व जा देखती थी, अब व हवा देखती थी, तमाशे सों जीव लायी थी, आसाइश[20] पाई थी। सो उस वक्त धूप की गरमी थी, खपनी नरमी थी, कमर के छाँव तले आई थी। एकाएक **नजर** पर उसकी

*** वहीं, पृ० ६६।**

१. दृष्टि, २. नमस्कार, ३. पालनहार, ४. अनर्घ। † वहीं, पृष्ठ ६७।

५. स्वर्ग, ६. पसंद, ७. जादू। ‡ वहीं, पृष्ठ ६८।

८. सुदर्शनी, ९. सुवचनी, १०. सुगमनी, ११. दृष्टि, १२. हटाती, १३. लजाती, १४. पराजित, १५. पंखुडियाँ, १६. सामने, १७. अभिमानी, १८. दिल, १९. अद्भुत। § वहीं, पृष्ठ ६९। २०. आराम।

नजर पड़ी, बैठी थी, सो बिचक्कर उठ पड़ी। नजर (बोली)—कूँ "तू कौन, किधर तें आया इस बाग की खबर तूँ क्या पाया तू परेशान सा दिसता, हैरान सा दिसता, कुछ गँवा लिया त्यों दिसता, किसी की चोरी की त्यों दिसता।"

दोनों हैरान दोनो सरगर्दान¹, सकते नैं है एकस कूं² एक पिछान। नजर की माँ थी हिन्दुस्तानी स्याहपेशानी³, बाप था तुर्किस्तानी। लट (जुल्फ) सों लटपट होवर यार निपट होकर आशनाई व हम्शहरी⁴ का इन्तजार किया।

इस वक्त बारे अपनी दस्तगीरी कूँ ठार, जीव लगाकर बालेबाल, बोल्या उसने अहवाल कि या लग आकर यो पड़्या हूँ, क्या करूँ तदबीर नहीं, अड़्या हूँ। लटकूँ उसकी परेशानगी पर उसकी हैरानगी पर मेहर⁵ आई, उसे गले लाई, कही "ए भाई, खुदा है कुछ गम न कर, खुश अछ अपने खुदा कूँ नको बिसर* ।"

यो बोल बोल लट सौत लम्बी भौत बडी वहाँ तें पेचाँ खाने-खाने कमर पर चडी। वहा तें वो चार तार सुट नजर कूँ कमर पर ल्याई। कही "ऐताल खुशी, किधर जाता उधर जा भाई† ।"

नजर लटकूँ भौत भली कर जान्या, भौत उसका उपकार मान्या, हिम्मत मग्या, रुखसत मग्या। लटने प्यार सो अपने लट में तें चट काट कर थोड़े दे बोली "कै तुजे कुछ काम मुश्किल पड़े, तो यो बाल आग पर जाल, मैं हाजिर हूँगी उस ठार, पेलाड⁶ काम करनहार परवर्दिगार। डर नको, इस वक्त पर हिम्मत बिसर नको‡ ।"

लट (जुल्फ) सों बिदा होकर नजर वहाँ तें शहर दीदार के उधर चलने सकूँ कदम किया, खुश हुआ होर गम कम किया। बारे बेग च शहर दीदार में रुखसार के गुलजार में आया। एकाएक वहाँ कितेक हब्शी बच्चे नजर नजर के पड़े। जितने उतने भौत सुहाने, जानो तिल के दाने, हर एक जानो शराब के बुन्द। नजर पूछ्या कि "तुमें कौन है, क्या नाम धरते है, क्या काम करते है§ ?"

उनो बोले कि, "हुस्न नार, आलम के दिलों का अधार हब्श होर जगबारते भौत सगाय य। सो एक तिल धरती है। वह तिल आफत है, बला है, आशिकाँ के दिलों में उसका गलबला है। महेर⁷ टोने का एक आशिकाँ पर करता जुल्म, सब आशिकाँ होते यहाँ हैरान होर गुम। जिस आशिक कूँ उनके मारचा का न कैं दाद सग्या न कैं पुकारघा। भौत छबीला बडा हटेला (है वो तिल), हमें सब उसके गुलामाँ हैं, चमने-चमन पानी देते फिरते हैं। झाड, व पात, फल यहा का है हमारे हवाले, यो फल झाडाँ सब पानी देने हमी पाले।"

नजर कूँ एक भाई था भौत सुदाफाम⁸ गमजा उसका नाम। ल्हानपन तें च जुदा पड़्या था, ऐसा कुछ किस्सा खड़्या था। आखिर हुस्न की खिदमत उसे रोजी हुई। कजारा⁹ या

---

१ परेशाँ, २ एकका एक, ३ काले ललाटवाली, ४ एक नगर का निवासी, स्वदेशवासी, ५ दया। * पृ० ७०। † पृ० ७१। ६ प्रथम। ‡ पृ० ७२। § पृ० ७४। ७ जादू, ८ सुरग, ९ संयोग।

हुआ, जिस वक्त कि **नजर रुखसार** के गुलजार का नजारा करता था,. . **गमजा नरगिसजार** में . . मस्त फिरता था,. . . सब ठार **नजर** करता था। नज़र कूँ नजर सों देखा। गमजा नैं पिछान्या, कोई बेगा है कर जान्या। हडवडा उठ्या। अपना लहो आपे घट्या,उस घर उचाया कि "तू कौन है इस बाग में आया ?" गमजा मस्त गुस्से सों हमदस्त नज़र कूँ मारने के खातिर नज़र की अँखियाँ बाँध्या, तन पर के कपडे उतारचा। मँगता था कि मारे, वले नैं मारया, कुछ दिल में विचारचा। न्हानपन में **नज़र** होर गमज़े की माँ ने कुछ फिक्र की थी, दोनों को लाल द्री थी बाजू कूँ बाँदने मेहर. . . मुहब्बत सों नाँधने। . . . गमज़े ने नज़र के बाजू का वो लाल पिछान्या, कि "यो तो अपना भाई है. . . अपस में होर इसमें क्या जुदाई है।" भौत रोया गले लगाया। . . . बोल्या, यो क़िस्सा किसे होगा फ़ाम, खुदा के ऐसे हैं काम ? भौत इज्जत सो भौत हुर्मत सों **गमज़े** ने नज़र कूँ अपने घर लेकर गया, दिलासा दिया। जो तवाज़ा[1] करना था त्यों तवाज़ा किया। . . .

हुस्न नार गुल-अज़ार[2] ने, अँखियाँ के सिंगारने, दिल के आधार ने, सुनी कि ग़मजे का भाई जो न्हनपनते बिछुड्या था, सो मिल्या, गमज़े के दिल का गुंचा जों फ़ूल खिल्या। . . . **हुस्न** नार चतुर चौसार, साहेब-सूरत[3], साहेब-दीदार[4] दूसरे देस गमज़े कूँ बुलाई, कही. . . "मैं सुनी हूँ कि भौत देसाँ बिछड्या था सो मिल्या है तेरा भाई। क्या नाम धरता है। क्या काम करता है ?"

गमजा बोल्या कि—"मेरे भाई का नाँव नजर, अजब मर्द है बाखबर।"

बोली कि, "क्या हुनर जानता है ?"

बोल्या कि, "लाल, मानिक, हीरे, रतन, खूब पिछानता है* ।"

हुस्न नार दिल-परवार[5] दिलदार जीव के आधार पास बड़े मोल का भौत तोल का अजब एक जवाहर था, कि किसी बादशाह के खजाने में वैसा जवाहर न था। . . . बोली कि "मेरे दिल में भौत देसाँ में यो था। खबर लेती थी जा-ब-जा कि कोई मर्द खास पैदा होये, कि जवाहर कूँ जाने, जवाहर की क़दर पिछाने।". . .

यो बात हुये पछीं गमजे ने नजर कूँ दुसरे देस हुस्न के हुजूर लाया। नजर आया, नज़र का रविश हुस्न में भौत भाया। नजर की नजर हुस्न पर पड़ी, हुस्न की नजर नजर पर पड़ी। सलाम-अलैक, अलैक-सलाम, ज्यों दुनिया की रविश था, त्यों चला दुनिया का काम† । बैत—

चतुर था गया वेग मजलिस कूँ काम।
रिझाकर लेना दिल चतुर का है काम‡ ।।

---

१. सन्मान।

२. गाल, ३. शोभावान्, ४. दर्शनीय।

* वहीं, पृष्ठ ७३।

५. हृदयपोषक।

† वहीं, पृष्ठ ७४।

‡ वहीं, पृष्ठ ७४।

हुस्न धन मनमोहन जग-जीवन इल्म की जा जो बूझी बात, नजर त्यों-त्या एक-एक बात कूँ वक्ष सौ-सौ घात। छबीली नार रंगीली सेहरकार[1] वो बात सुन हुई शहमात[2]। हुस्न की बात से दुखिया का दुख जावे, मूँ देखते दिल में ह, मामूरत है। खजानेदार बी बेग च थाया। जो सूरत हुस्न धन मनमोहन सगी सो लेकर आया, दिखलाया। नजर की जो उस सूरत परनजर पड़ी, हैरान हुआ। कह्या—मनहरन सूरत यो आशनाई[3] की सूरत मुझे भौत भाई, वले या सूरत यहाँ क्यों आई? यो पाक सूरत औनार सूरत शाम के पादशाह की है, आलम तमाम व बादशाह की है। इस सूरत के साहेब का नाँव दिल। नजर जगा के पर्दे खोल्या, छिपियाँ बाताँ बोल्या। हुस्न यो स्वाद-भरियाँ बाताँ सुन कुछ फिकर दिल पर ल्यायी, दिल पिघलाई आशिक हुई, दिल परतें उड गई हुई।*

बैत—हुस्न पर दिल भूल्या दिल हुस्न ऊपर।
पड्या अब काम मुश्किल हुस्न ऊपर।।†
हुस्न कूँ दिल का लग्या ध्यान, दिल हुस्न का हुआ परान। ‡

गजल—सहेली यार बिछड्या है मुझे वो याद आता है।
बिसर नै सकती एक तिल ध्याने वो सौ बार याद आता।।
जहाँ मैं देखती हूँ वहा मुझे उसका च मूँ दिसता।
वही बसता है दिल में वो च ठारे ठार याद आता।।
खाना नै भाता, पानी नै भाता, दिल का खातिर हुस्न की जीव जाता।

हुस्न धन मनमोहन जगजीवन दिल खातिर। दिल पर जो आशिक हुई थी, सो कह कर "मुझे दिल पर आशिक किया है, त्या च एताल उसके मिलने की बी फिक्र कर। खुदा तुझे फुरसत दिया है। मुझे दिल पर आशिक करने तुझे आता, दिलकूँ मुझपर आशिक किया, तो तेरा क्या जाता? ज कोई चतुर ह जे कोई सुजान है, सो तुजे पहिचानता है। तू यो किया, सो बी करने जानता है।

नजर बाल्या ×—"ऐ हुस्न जगजीवन मनहरन, मनमोहन जीवा की प्यारी दिलाँ कू आराम देनहारी। दिल लेना हाल भौत लना मुश्किल है। दिल बादशाह, दिल आप भाता, दिलसो दिल मिले वगैर दिल हात नै आता। दिल तो मिले, जो दिल कूँ दिल मिला जाने, ज कोई दिल सो दिल मिलाव दिल कूँ पिछाने। ऐ वन की प्यारी, ऐ नादिर सुन्दरी, ऐ दुनिया के सरग की अपछरी, ऐ गुनवन्ती गुनभरी, तूँ दिल लाई है, तुझे भौत हवस आई है। तू हुस्न, तुजे दिल सो दिल लाना सुहाता है, दिल कूँ भी हुस्न भौत भाता है। वले मैं क्यों कर तुजे दिल सो मिलाऊँ? मैं दिल कूँ क्यों तरे कने ल्याऊँ। मैं तुजे क्यो दिखलाऊँ? एकाएक क्यों ल्याया जात है? क्यों मिलाया जाता है? दिलके तरे कने ल्याना है, सो खूने-जिगर खाना है, एक पाद-

१ जादूगर, २ पराजित, ३ मित्रता।
* वहीं, पृष्ठ ७५।
† वहीं, पृष्ठ ७५।
‡ वहीं, पृष्ठ ७६।
× वहीं, पृष्ठ ७९।

शाही कूँ उलटाना है, एक पादशाही में खलल आना है।...खतर है, जिव का डर है। अकल पादशाह जो दिल बादशाह साहेबसिपाह का बाप, उन्ने दिलपादशाह कूँ तनके कोट में असीर[1] किया है, कँ ना जावे कर तदवीर किया है। न किधर जान देता, न किधर आन देता, कि **दिल** आशिक है,...क्या जाने क्या करेगा ? ... (दिल) उस बाप के हुक्म में गिरिफ्तार है, अपने आते मे नहीं बे-इख्तियार है। दिल हजार-हजार जागा फिरने कूँ तिलमिलता, वले वो बाप है। क्या करेगा, बाप सों कुछ नही चलता। माँ-बाप मजाजी खुदा, उनों के हुक्म सों क्यों होना जुदा। उनों दुनिया में ले आये, उनों परवरिश किये, उनों बढ़ाये। उनों सों बेअदबी[2] क्यों करया जावे ? बड़ा मक्का बड़ा मदीना सो मा-बाप। सुबा उठ उनों का मूँ देखे तो झड़ते सब पाप। अगर खिदमत में अपना जनम खोयेगा, तो बी मा-बाप का उतराई कोई क्या होयेगा।...

आज वरसाँ हुये।..**दिल** कूँ आबे-हयात[3] की प्यास लगी है, प्यास पकड़्या है...बहुत आस लगी है।..अगर कोई तूँ नजदीक का आदमी देवैगी मेरी संघात, होर वो आबे-हयातकाँ है, सो बोलेगी बात, तो मैं जाकर समझाकर **दिलकूँ** तिल[4] मे राम[5] करूँगा, तेरी खातिर यो काम करूँगा, तेरा बी काम होता है, उसे वी आराम होता, मेरा बी नाम होता है...।

हुस्न धन मनमोहन जगजीवन एक गुलाम धरती थी, कि वो एक पल में मश्रिक[6] होर मग़रिब[7] में फिर आवे, आसमान, जमीन, अर्श कुर्सी की खबर ल्यावे। वेगी में भौत मशहूर, शरम हुजूर, सूरतनवीसी[8] के काम में तमाम ख्याल उसका नाम, चतुर चौसार, हुस्न का आईनादार, हर एक काम मे उसका आड था।

बारे **हुस्न** धन मनमोहन के एक याकूत की अंगुश्तरी थी। उस आबेहयात के चश्मे पर मुहर कड़ी थी। हुस्न हूर[9] ने अँखिया के नूर ने दिल कूँ बुलाने ख़ातिर वो अंगुश्तरी दे **ख्याल** होर नज़र के हात अपने जिव की जो कुछ थी सो बोली बात कि, "आबे-हयात का यह मुहर निशान है। लेकर जाओ दिखलाओ होर **दिल** कूँ मुझ लग ज्यों-त्यों लेकर आओ* ।"

हुस्न यों मँगती है जो दिल कूँ बुलाया।
दिल भोला भूल्या सो क्यों न आया।।

ख्याल होर **नजर** हुस्न कनेते रज़ा लेकर दुआ देकर **तन** के शहर कूँ चले।...केतेके देसाँ कूँ चलते-चलते शहर में आये। **दिल** पादशाह का दीदार पाये। नजर खुशखबर ल्या तस्लीम[10] कर गुजरया। सो क़िस्सा बयान किया। हाल हकीक़ च जो कुछ था, सो सब अयाँ[11] किया।...दिल नज़र कूँ अपने हमराज[12] किया, भौत सरफ़राज़[13] किया, हज़ार-हज़ार शाबाश दिया, गले लाया। कह्या—"मर्दा जो है सो हिम्मत करते है, ज्यों बोलते है त्यों च करते है।... दिल रो-रो कर हँस-हँस कर यो च बात पूछ्या, केता वक्त लग योंच फिर-फिर कर योंच बात

---

१. कैदी, २. असम्मान, ३. जीवन, ४. पल, ५. आराम, ६. पूर्व, ७. पश्चिम, ८. चित्रकारी, ९. अप्सरा। * वहीं, पृष्ठ ९७। १०. सलाम, ११. प्रकट, १२. रहस्यज्ञ, १३. सुभागा।

पूछ्या। उसका बस होय तो सारा देस सारी रात पूछता अछे यो बात। चाखी सो जानके नही चाख्या सो क्या पिछाने।

आखिर ख्याल होर नज़र दोनों मिलकर एक दिल कर वो याकूत की अंगुश्तरी का निशान कि उस परी ने उन हूर कने आली[1] इस्त्री ने, उन गुनवन्ती गुनभरी ने दी थी, सो दिल के हाथ में दिये, खिदमत मुजरा[2] किये। दिल वो अँगूठी देख चूम-चाट सिर चढाया। नज़र ने जीव के जिगर ने बोल्या कि —"ऐ दिल बादशाह ऐती मशक्कत ऐती मेहनत मैं इस खातिर किया कि तूँ पिछाने तूँ मुझे माने। मेरा था सो मैं किया, ऐताल तेरा सूँ जाने* ।

दिल पादशाह ने बोल्या कि, "ऐ नजर जो कुछ बोलता है, सो खूब बोलता है। मैं बी जानता हूँ , ज्यो तेरा मँगता है दिल, वा च तेरी मुराद होयेगी हासिल। माल क्या तुजते ज्यास्त है। माल खर्च करने कूँ है न कि खाली सन्दूक में भरने कूँ है। मर्द वो जो खुदा दिया सो माल अपे खरचे, अपना नाँव जगावे, न कि यो माल छोड जावे। दुनिया दो देस का मेहमान ठीक पिछान, नाँव कर ले, कुछ काम कर ले† ।"

दिल के दिल में भरी थी आस, उस याकूत की अंगुश्तरी[3] ते आने लगी आबेहयात की बास। दिल के दिल में जीव आया, ख्याल कूँ नजदीक बुलाया। पूछा कि— "तूँ क्या काम करता है? क्या हुनर धरता है‡ ?"

ख्याल बोल्या कि—"मैं नक्काश हूँ सूरतनवीस मेरा नाव है, विचित्र हूँ चित्र चितेरना मेरा काम है। ऐसा चित्र चितरूँ, जो देखे सुध न रहे, जो कोई देखे सो शाबाश कहे ।"

दिल कह्या "क्या चितरता सो चितर, देखूँ तेरा हुनर।"

ख्याल खुश-हाल होकर हात में ले कलम उसी दम मनमोहन की सूरत, जगजीवन की सूरत, हुस्न धन की सूरत लिखकर दिखलाया। दिल ऐते च उस हुस्न की अजायब सूरत पर, मनहर मूरत पर आशिक हुआ वो नक्श भाया। उस नक्श कूँ जिव लाया, सुध खोया, आहनाले भरने लग्या, दीवानी-दीवानी चालें करने लग्या। अक्कल सुट्या, कुछ था सो कुछ हुआ। "हुस्न हुस्न" यो च लगी थी उसकी धुन§ ।

आखिर ख्याल नज़र सो विचार कर दिल शहर दीदार सो अज्म[4] किया। उस वक्त दिल पास एक वज़ीर था, वहम उसका नाम, भरम उसका काम। उनने सुन्या कि दिल एताल जाता है, आप दिल भाता है। ख्याल होर नज़र की बात कूँ लगेगा, तो क्या हमारे हातकूँ लगेगा। भौत च पकड्या है इज्तराब[5], आखिर मुल्क सब केरे खराब। पर्वा नहीं करता ताज होर तख्त का, क्या जाने क्या लिखा है बख्त का। वेग-वेग वो अकल पादशाह कने जाकर जिव लाकर उन चोरने उन हरामखोर ने चाडी[6] खाया, पछाडी खाया, अँखियों में पानी ल्याया, सब खोलकर कह्या था, सो ऐताल आया है, फितना[7] उचाया है। इश्क पादशाह की बादशाही में ते एक घर-घराऊ दगाबाज ख्याल नाम नक्काश कूँ सघात ल्याया है। यो दोना जने मिलकर मँगते हैं, जो

---

१ बडी, २ उपस्थिति। * वहीं, पृष्ठ ९८।
† वहीं, पृ० ९९।
३ अंगूठी। ‡ वहीं, पृ० १००।
§ वहीं, पृ० १०१। ४ संकल्प, ५ अधीरता, ६ चुगली, ७ संकट।

दिल कूँ **दीदार** के शहर के उधर ले जावें, इस भरे शहर मे कुछ फ़ितना उचावें, तन के मुल्क कूँ खराब करें, एक बला ल्यावें।...वेगे च कुछ इसकी तदबीर कर, जो करना है सो कर आज कुछ भला वुरा हुआ तो पछी क्या इलाज, नहीं तो वही च **मरहठी** मसल होता "वहुत झेला झेल झेला, वैल के लापरुकी जहून पा केला।"...मैं कता हूँ तुजे, तूँ तो अक़ल है, वले मुझे यों दिसता कि आखर कुछ खलल है। यो नज़र का आना जाना, यो **ख्याल** कूँ संगात ल्याना, यों दिल कूँ फ़ुसलाना हो यो जमाना। खुदा खैर करे, किसी सों न बैर करे।...ऐ अक़ल बादशाह, मेरी बात जान पिछान, कि इश्क़ बादशाह आखिर तुझसों लडैगा। तुझमें होर इश्क़ में कुछ क़िस्सा खड़ैगा, काम मुश्किल पड़ैगा। तूँ राजोट कर इश्क़ सों सुलह किया है, इश्क़ ने तुझे भाग-भरोसा दिया है। ...पादशाहाँ में यों वी एक जिनस का मकर अछता है। इस शक्कर में जहर अछता है।... खुदा करे जो यो क़ौलो-क़रार अछो, उसका यों च प्यार अछो, यों च दोस्त अछो। नामुराद क्या मँगता है...मुराद। अड्या क्या मँगता है...हमदाद।...बकील **अहले-हिंन्द** प्यासा क्या मँगता...पानी।...वोले नै...ज्यों शराब का असर, त्यों बादशाह का प्यार, ऐसे प्यार कूँ क्या एतबार, तिल ते उतरे तिल मे चढ़े।...ऐसे प्यार कूँ क्या पतियाना ?...

नफ़र[1] क्या मँगता...साहेब का फ़तेह होय तो मुराद कूँ अँपडे नफ़र।...साहेब वही च जिसे साहेबी करनी आये, नफ़र वही जो कर जानता है नफ़राई। राम जैसा साहेब आपे, तो हनुमंत जैसा नफ़र पैदा होय, दरिया होकर बैठे कोई तो वहाँ आपे गौहर[2] पैदा होय।...इश्क़ पादशाह सों सुलह-सलाह किये हूँ कर बी गमना अछना हरचन्द भाग-भरोसा किये है कर बेगम ना अछना।...

अकल पादशाह ने यो सब सुन **वहम** कूँ गले लगाया, वहम का अँदेशा भौत भाया। क्या ..."शाबाश वहम, तेरा बहुत खूब है फ़हम। तेरी फिक्र मेरे खातिर आई। तुझे हम[3] वज़ीरी देना हम पेशवाई[4]।...

अक़ल ने वहम कया सो बाताँ...दिल मे लाया। फ़िलहाल लश्कर भेजकर दिलकूँ होर नज़र कूँ वन्द करने फ़र्माया।...वहम की बाताँ का असर चड्या, जो कुछ वहम कया था, सो उसका मां के ख्याल में पड्या।...जो काम पकडे भी घट पकडना, खूब डट पकड़ना, मर्द दानाई का हट पकड़ना*।...

वो याक़ूत की अंगुश्तरी जो **दिल** ने **हुस्न** धन मनमोहन ते आशिक़ हो लिया था, वो अंगुश्तरी कुछ मस्लहत देख नज़र कूँ दिया था।...जो कोई वो अँगूठी मूँ मे रखे, तो किसी के नज़र ना पड़े। होर दुसरी खासियत उसमे यो थी, कि जो कोई वो अँगूठी रखे अपने सघात, उसकी नजर तले दिसे चश्मा आवेहयात। नजर वो अँगूठी मूँ में लेकर सवकी नजराँ को दगा देकर हँसता-खेलता उस **अकल** पादशाह के वन्द में ते भार आया, ख्याल का वहाँ च ख्याल आया। ...देखने उस हुस्न नार कूँ दीदियांके सिंगार कूँ, दिल के आधार कूँ शहर दीदार कूँ जाने-अख्तियार कूँ, पाँव सार हुआ। नज़र...वेगेच शहर **दीदार** मे रुखसार के गुलज़ार में आया। सैर करते चश्मा...जिसे आवेहयात कहते हैं, सो उस रुखसार के गुलज़ार में पाया। नज़र लालची लालच

१. सेवक, २. मोती, ३. भी, ४. महामंत्रित्व। *वहीं, पृष्ठ ११६।

भरया। ज्यो आवेहयात पीवने कूँ मूँ पसारया, अपना पत हारया चोरी किया। कज़ा उस वक्त यो घडी, कि वो अँगूठी मूँ में ते निकल उस आवेहयात के चश्मे में पडी। दगा दवा कर बहुत पछताकर हँफी खाने लगा। लै तरस्या लै तप्या, आवेहयात का चश्मा नजर तले ते छिप्या। नजर हैरान डँवाडोल, किसे कहे खोल, मूँ में ते भार फद[1]*—

गँवा लिया च तूँ अब क्या गमाते पचतावे।
यो वस्तु वो नही जो गई सो हात फिर आवे॥†

नजर निढाल, नज़र का यो हाल। एकाएक रकीब कूँ देख्या। सो नज़र के लग्या [2]बाल[2] पकडया-जकडया, आजार[3] दिया मार दिया, दद सारधा जाल्या, अपने घर ले जाकर बदीखाने में घाल्या[4]। कतेक देस यो च टाल्या। नजर का कोई दस्तगीर[5] नही, कुछ तदबीर नही। यकायक एक रात जुल्फ (लट) ने जो अपने उस देस वालाँ दिये थे, उसके हात, वक्त पर याद अछो[6], सो उस वक्त वो वक्त याद आया। फिल्हाल एक दो बाल लेकर बेग-बेग आग पर जलाया। तो का तो य च देखता है, जो जुल्फ हाजिर हो आई। पूछी कि—"क्या हाल है रे भाई?"

"क्या पूछेंगी मेरा हाल, क्या बोलूँ ऐताल?"

जुल्फ कही "गम नको[7] कर, हिम्मत कम नको कर। चलता सो च अडता[8] बहता सो च पडता, होआर का खेल जो आग सो है, तो एकादे वक्त जलता बी है। गंगा की धूपकाले मे न्हनी, वर्षकाले में बडी, जगल का झाड उसे कधी फूल-फल कधी पतझडी। मर्द वो जो अपने वक्त करे[9] कुल वक्त, अबुलवक्त[10] अछे[11], न (कि) इब्नुल्-वक्त[12]। मर्द कधी फूलते नाजुक कधी फौलादते सख्त अछना, हर एक जा हिम्मत सो रहने मर्द धु वख्त अछना[13]। जिसमें कुछ नेम है, जिसमें कुछ धरम, ज्यों सुना जैसा व मख्त वैसा च नर्म। दोहरा

मेऊ मतत न छोडिये, मत छोड पत जाय।
लछमी मतकी दासि है, पग लागे घर आय‡॥

वारे जुल्फ ने धम करी बहुत करम करी। उस बदीखाने में ते कुच फद कर भार काडी, उस रकीब कूँ उस बदबख्त-बदनसीब कूँ पचतावे में पाडी। नज़र कू गले लाई, रुखसार के गुल्जार होर शहर दीदार की बाट दिखलाई। कही—"एताल जा, अपना मुद्दआ पा।" बैत—

मुरव्वत मौत की चोटी की जाई।
बलाते भार काडी बाट दिखलाई§॥

---

१ पद्य। * वहीं, पृ० ११७।

† वहीं, पृ० ११८। २ साथ, ३ कष्ट, ४ डाला, ५ सहायक, ६ रहो, ७ नहीं, ८ रुकता, ९ समय को बनावे, १० समय का पिता, ११ रहे, १२ समय का पुत्र, १३ रहना।

‡ वहीं, पृ० १२२।

§ वहीं, पृ० १२२।

नजर जुल्फ़ सों विदा होकर चल्या। सो **दीदार** के शहर मे **रुखसार** के गुलजार मे आया। हुस्न धनका मनमोहन का जगजीवन का मुलाकात पाया। घड़ी एक सास भर्‌या धरी उसास। गुजर्‌या था, सो क़िस्सा कह्‌या **हुस्न** छंदभरी औतार स्त्री पास। **हुस्न** नार कूँ. . .हैरानगी लगी, परेशानगी लगी, कि मै जानती थी कि दिल ज्यों त्यों आवेगा, दीदार दिखलावेगा, मेरा दिल **दिल** ते आराम पावेगा। यों नही जानी थी कि, कि यो क़िस्सा यों खड़ैगा, भी ऐसा वक्त पड़ैगा।

हुस्न दिल मे ल्यायी, अपने **ग़मजे** कूँ नज्दीक बुल्याई, जो वात थी, उसे समझाई। . . .कही—"एताल[1] इसका इलाज यो है, कि तूँ होर नज़र दोनों मिलकर एक दिलकर **तन** के शहर कू जाओ, होर **दिलकूं** कुछ तदवीर कर, तसखीर[2] कर, कुछ फ़न कर सेहर-टोना-टामन कर ज्यों त्यों मुझ लग ल्याओ*।" फ़र्द—

वार न लगसी दिल कूँ आने कूँ।
गम्जे कूँ भेजी है बुलाने कूँ।।

(च) दीदार नगर पर आक्रमण—

. . ग़मजा होर नज़र लोगां चुने-चुने जले-जले भुने-भुने अपनी सघात लेकर शहर **दीदार** ते **तन** के शहर के ऊपर रुख धरे। यों चले सौ मंजिल की एक मंजिल करे। . . .नजर जिस वक्त अक़ल के मंदिर में ते भार आया था, अक़ल तोय भेद पाया था कि नज़र यहाँ ते जो जावेगा अल्वत्ता कुछ फ़ितना उचावेगा। . . .उसने यों समजकर लिख्या था, अपने सरहद के सरदारों कूँ कि चारों तरफ़ के मुस्तैद रक्खो वहादुराँ कूँ। इस नजर कूँ इस निडर कूँ इस मुल्क मे ते भार जान नको देओ, होशियार अछो।. . .

जहद[3] व **रिया**[4] का नोकर था एक मुकाम होर रिज्क़[5] (जर्क) का एक बेटा था, **तोबा** उसका नाम, उसे फ़रमाया था, यो च काम, कि नजर कूँ सँभाल कि सरहद ते भार न जावे। . . .वारे क़ज़ा यों होता है, जो गमज़ा होर नजर दोनों. . .उस डूँगर तले आये। उस डूँगर तलें एक फूलवाड़ी थी। उस फूलवाड़ी में खड़े आसाइश पाये। जागा भौत भाई, रात के जागे थे, टुक नीद आईं†।. . .

कितेक वक्त कूँ सूरज ने सिर काड्‌या, आसमान का पर्दा फाड्‌या, उजाला संचर्‌या ठारे-ठार रोशन हुआ सव संसार। अजहूँ देस[6] चड्‌या नहीं पाव घड़ी, जो सुबा पड़ी, उस किला के दीदवान ते देख्या. . . कि नज़र निडर बेजिगर सघात लशकर लेकर यहाँ उतर्‌या है। हैराँ हुआ, कधी नहीं सो यो क्या हुआ, वेग-वेग **तोबा** कने आकर समजाकर **नजर** कूँ ज्यों लशकर सो डूँगर तले देख्या था, त्यों कह्या। **तोबा** कूँ उस वक्त बहुत गुस्सा आया, चुप नहीं रह्या, नजर होर गमजे पर जाकर पड्‌या। **नजर** होर **गम्जा** दोनों अपने लोकाँ सों एकाएक नीद मेंते हुए

---

१. अभी, २. जय। * वहीं, पृ० १४३।
३. पवित्राचार, ४. दिखावट, ५. रोजी। † वहीं, पृ० १२३, १२४।
६. दिवस, दिन।

भउते उठे हक्का-बक्का हुये, लडते-पडते उठे। नज़र होर गमज़ा दोनों मस्त दोनो बी दिलावर दोनो तोबा कूं ख्वार किये, घडी में झगडा हुआ फ़नेह। बैत—

गमज़ा है अपनी बात सुने तो छोडेगा।
गमज़ा हज़ार तोबा कूं एक तल में तोडेगा।।

तोवा का लश्कर न्हाट्या, तोबा का सीना फाट्या।

केता गमज़े की खावें मार तोबा।
बेचारा क्या करे उस ठार तोबा।।

तोबा का कोट लूटे तोबा कूं नंगाये, **तोबा** के सिर पर हज़ार-हज़ार बलायां ल्याये। तोबा कूं मुश्किल पड्या सख्त, तोबा कूं तोबा करने कन अग्या वक्त। **तोबा** पैमाल हुआ।*

पछी **रिश्क** का जो वहां सोमआ था, उसे भी तोडे, झगडा न जीते वो जागा भी छोडे। वहां ते आफियत शहरकूं जाने अँगे रखे कदम। ग़मज़ा होर नज़र अपना लिबास फिराकर कलंदरी पकडे रसम। **आफियत** के शहर में आकर बात किये, नामूस[1] पादशाह सो मुलाकात किये। नामूस पादशाह आशिकमिफत साहेब-हिम्मत था, गल्या था, तिलमिल्या था। नामूस पादशाह उनोकूं देखते च माल-मुल्क सब छोड्या, कुछ लोड्या कलदर हुआ, समुदर हुआ, फकीर हुआ, अमीर हुआ। गमजे के हात में सँपड्या। नामूसका यो हाल हुआ, नामूस पायमाल हुआ।

बादअज़ां[2] नज़र होर गमज़ा शहर तन के उधर चले। जो शहर तनके नज्दीक अँपडे भी अपना लिबास फिराये-बदलाये, फिर कर पैंने कपडे। गमज़ा शराब पिया था आया कैफी अपने लश्कर पर पड फूंका। उस दुआ में था बहुत असर, हरिना की सूरत पकड्या सब लशकर।†

जिस वक्त तोबा गमजे के लश्कर ते शिकस्त खाया, सो तन के शहर के उधर रवाना होकर कने आया। तस्लीम किया, खिदमत बजा लाया। गमजे ते जो कुछ बेदर्दी[3] हुई थी, सो सब ब्यान किया, अकल कूं परेशान किया। हैरान किया। , अकल जैसा पादशाह गमजे की यो बेदर्दी सुनकर बहुत बेग दिलकूं तलब कर्‌या। जितना सई करना था उतना सब कर्‌या, दिल के हातपांवा के बंदा बांध्या था, सो खोल्या, ग़मजे की बेदादी[4] का किस्सा बोल्या .यो ग़मजा है, यो दगाबाज़ां हैं, इनो सो जीव लानकर इनोकूं पतियानकर पचतावेंगे, दगा खावेंगे। अगर इतने पर भी तेरे दिलपर आता च है, कि शहर **दीदार** कूं जानां च है, होर **हुस्न** घन मनमोहन का वसाल पानां च, उसे गले लानां च (है) ,तो एक बात मेरी सुन, इस बात में बहुत गुन। हमारा लडता सो लश्कर, दुश्मन पर पडता सो लश्कर, तनके मुल्क में ते अपनी सघात ते होर

---

* वहीं, पृ० १२८। १ सम्मान, २. इसके बाद।
† वहीं, पृ० १२८। ३ अन्याय, ४ मिलन।

शहर **दीदार** के उधर डेरा दे। ...अकेले जाना, वहुत ज्वान है, ...**हुस्न** धन मनमोहन जगजीवन पास लश्कर बहुत है। ...अगर तेरे पास भी लश्कर अछै तो खूब है। ...

दिलकूँ यो बात बहुत खुश भाई, भौत भाई। बापकूँ कया..."एताल मैं अख्तियार अपना तेरे हात दिया, जे कुछ तू कता सो मै किया। आशिक जानबाजी हूँ, जों तू कता है, वोंच राजी हूँ। जों तूँ फरमाया है, त्यों च जाता हूँ। खुदा करता है, तो हुस्न सों मिलकर, हुस्न कूँ भी फाँदे में पाता हूँ।" आशिक़ वो जो माशूक़[1] को भावे, आशिक वो जो माशूक कूँ रिझावें, अपे तिलमलाता त्यों उसे भी तिलमिलाये, जों अपे तरसता, त्यों उसे भी तरसावै। आशिक़ जों माशूक़ कूँ जपै तो खूब, माशूक भी आशिक़ खातिर तपे तो खूब* ।

गवालियर के सुभाने, यों बोलते हैं (दोहरा) :

धरती स्याने रीज धर, वीज बिखर कर बोय।
माली सींचै सौ घड़ा; रुत आये फल होय।।

बारे **दिल सब्रकूँ** वुलाकर लश्कर हाज़िर करने का हुक्म दिया। लशकर अपना सब देख्या, लश्कर की गिनती लिया। हिम्मत कर्‌या, सीने में उसास भर्‌या, शहर **दीदार** के बाट में पाँव की जागा सिर धर्‌या। एकल देख्या कि **दिल** तो रवाना हुआ, मेरी बात उसे बहाना हुआ। बहुत मेह, व मुहब्बत सों...तीन मंजिल अँपड़ाता[2] आया। दिलकूँ अकल दिया सँभलाया। एते मे सँघात लोगाँ कै सुद पाये, खबर लेकर आये, कि इस सेहरा, में हरना भौत है ठौरठार।† ..

लागे लागां यो बाव पर लेने।
अकल दिल दोनों कूँ दगा देने।।‡

...हरिन तो है भौतेच आले, वले हरिना मे है आदमी के चाले। जंगल मे रहते, इतना च है तो बात नही कते। अजब है यो हैवान सब आदमी का धरते ज्ञान। या जिन्नाँ ने हिरनाँ **का** लिये लिबास, इस बातकूँ खूबी करना तफास। ...**दिल** बादशाह० बात इस धात सुन बहुत पकड्या उमस, इस तार इस ठार शिकार खेलने की आई हवस। ...अपे नवॉ नौतेका जवान, ताजी पर सवार हो हात मे ले तीर हो कमान, हिरनॉ के पीछे घोड़ेकूँ दिया ताव, या बाव पछीं जानो दौड़ी बाव। उनोकूँ हिरनाँ कते वो हिरनॉ न थे, **गमजे** का चश्म, उनोकूँ पकड़ने कौन कर सकता। ...**दिल** नज्दीक आपे लगन हरगिज दूर नही जाते थे। अक्ल होर **दिल** कूँ कहोर उनोके लश्करकूँ बाटेवाट यों च खींचते ल्याते थे। दूर गये तो खड़े रहकर अपसकूँ दिखलाते, वहुत नज्दीक आये तो निकल जाते।...

बारे **अक़ल** पादशाह० रह्या थक्या, अकल पादशाह० कूँ बुरा लग्या। ...फ़र्जन्द जिगरगोशा, हर दो-जहाँ का तोशा, सीना फोड्या क्यों जाता है? फ़रजन्द कूँ छोड्या क्यों जीता

---

१. प्रियतमा।
* वहीं, पृ० १३०।
२. पहुँचता। † वहीं, पृ० १३१।
‡ वहीं, पृ० १३२।

है ? मेहर सो माँ-बाप की, बाकी मेहर पुन-पाप की, दुनिया में सब मिलेंगे तहकीक जान ना मिलसी सो मा-बाप हो सगे-भाई होर भान[1]।

अकल पादशाह अपना लश्कर जोड़्या, यो भी हिरनों के पछी लग्या शहर तनकू छोड़्या। दिल होर अकल दोनो हुये बयाबानी दोनो कू लगी हैरानी सरगर्दानी*।

बारे नजर होर गमजा जो दिल पादशाह० कू बुलाने जाते थे, ल्याने जाते थे, । सो दिलकूं च इधर आते देख, हुस्न धन मनमोहन जगजीवन खातिर तिलमिलाता दसे। कह अल्हम्दो लिल्लाह काम पाया सरजाम, एताल फतेह हुआ काम, जिसकी खातिर हमें जाते थे सो बा च अँगे आया, खातिर हमारी तसल्ली पाया। एताल फिक्र यो हो, जो हमें दिलके कने ना जाना, अकल होर दिल हमना ना देखे, त्या च इन दोनो कूं शहर दीदार के नज्दीक ल्याना†।

बैत—

नजर होर गमजे के चालें बला ल्याये।
कि दिल होर अकल दोनो मिल दगा खाये।।‡

यो च चटक लाते-लाते फादे में भाते-भाते[2] फुमलाते, फुमलाते दीदार शहर लगन लाय, अपना काम फतह हुआ कर बहुत खुशहाली पाये। हजार-हजार आनन्द सो लाख लाख छद सों हुस्न धन जगजीवन मनमोहन कने गय, सलाम किये, गुजर्‌या सो किस्सा वाले तमाम किय, सुर्खरू हो आपे बहुत सबासी पाये। हुस्न धन० नजर होर गमजेकूं गले लाई, कुछ वस्त्र कुछ दई[1]। होर फिक्र अपस में किये कि अकल बडा पादशाह है, अपने लश्कर सो नज्दीक आया है। मस्लहत का काम यो दीसे, कि बापकूं खबरदार करना कि इस लश्कर कूं दूर करने का कुछ इलाज करें। मक्तूब लिखकर भेजे बाप कने। मज्मून या था, उस मक्तूब मने कि "नक्कास खूब सब नक्काशा में अव्वल, मेरा था एक गुलाम ख्याल उसका नाम। आज पादशाह न उसे पानी न उसे खाना देता, न इधर आन देता। हमें उसे बुला भेजे बहुत गस्सा कर, (वो) अपने लश्कर सो आकर बहुत गोगा करता है। मागता है जो शहर दीदार कूं इस गुल भरे गुलजार कू लेवे।

औरत की जाति कुछ झूठा कुछ सच लेकर बोली बात "तूं इश्क है तुझसों अक्ल क्या करना। वले अकल मक्री है, उसके मकरते बहुत डरना। तूं मस्त वो होशियार, दगा देन केती बार। सन्मुख हो जाय आकर सन्मुख हकारे, दगे से चिमटी हती को मारे। दगे सो बकरी गालिब बाघ पर हाये। यो बात सब खातिर ल्याना, हुशियार अछना, दगा न खाना ×।

इश्क बादशाह० यो वाकया[3] सुन्या, गुस्से ते सिर धुन्या।

कहा—अक्ल कू वजूद क्या है, जो ऐसा काम करे, अपसकूं रिसवा हमना बदनाम करे।

---

१ बहिन। * वहीं पृ० १३३। † वहीं पृ० १३४। ‡ वहीं पृ० १३५। २ डालते। × वहीं पृ० १३६। ३ पत्र।

वारे **मेहर** नाम...इश्क का एक सिपहसालार था, अपने ढंग पर हुशियार था,... उसे फरमाया कि... मुशक्कत, दर्द मेहनत, गम अलस, ज़ारी, बदनामी...यो वजीर बड़े बड़े, सब हाजिर खड़े, उनोंकी जी की बात ले, उनो कूँ अपने सँघात ले...जेता लशकर है, बाकी वजीर-सरदार जितना नर है कारगर है, यो सब यकबार शहर **दीदार** के उधर ले जा।*

बारे अक़ल होर दिल के लश्कर सों टुक झगड़ा बजा, उस लश्कर कूँ बेजान कर...कि दूसरा ऐसे कामते डरे, दुसरी बार भी कोई ऐसी चाली न करे।

जो ग़मज़ा आये लड़ने कूँ अक़ल उस ठार क्या करना।
उठैगा हात क्यों उस ठार यहाँ तरवार क्या करना।।

वैसे सुबास (खुशबूई) की बास कि दिलकूँ जलानहारी थी, दिलकूँ भौत प्यारी थी, **दिल** मे होर उसमें यारी थी। ...वो हुई दिल के उधरकूँ,†

नकौ डर। या बाव काँ लगते इसे किसके जखम का उसे क्या गम...

आडे वक्त **दिलकूँ** मदद आई, बारे सँभाली।

काम हुआ मुश्किल, एताल हिम्मत छोड़ने में क्या हासिल। मारना या मरना, अपना नाँव करना। न्हाटे तो क्या आयेगा, न्हाटे तो क्या बँचने पावेगा। बख्ताँ में लिख्या सो बँधा जावेगा या न्हाटे ते खुदा कूँ भी भावेगा। जीवकूँ कता डरना यो मर्दी का वक्त है, कुछ भी तो भी करना। जीव गया तो गया, बले शर्म न जाना, न कि जीव होर शर्म दोनों गँवाना। यों हुआ तो मर्दा में मर्द क्यो कहवाना होर लोकाँ मे भी क्या मूँ दिखलाना।...

दिल कह्या..."खूब कही एक सुवास,...इस वक्त मुझे तेरे च आस मे भी दिल हूँ, बड़ा हूँ, कायम होकर खड़ा हूँ। क्या करूँ, इश्क होर हुस्न का लश्कर क़वी है। ...मै भी यहाँ जीवते झाड्या हूँ, हिम्मत किया हूँ, रन-खम गाड्या हूँ। कूये मे पड़कर रसरी काटना नहीं फबता, आशिक कूँ न्हाटना च नहीं फबता। **दिल** तो हिम्मत धरता, देखे एताल खुदा क्या करता" ‡

वारे, ओ **सुवास** जो **दिल** कने आई थी, दिलसों दिल लाई थी। उनने खूब दो-चार हमले करी। ...इश्क के लश्कर कूँ हैरान करी, परेशान करी।

चौथे देस भी यो झगड़ा...निवड्या नही च था। ...अपस मे अपे लड़ते थे झगड़ते थे, न व न्हाटते न वो न्हाटते। एककूँ एक डराते एककूँ एक डाँठते, आटाअट था कटाकट था।

हुस्न धन० लश्करते ऐसी खबर पाई, बहुत हैफ़ीखाई...कि "आखिर खुशी है गम, इस झगड़े का क्या आलम? यो झगड़ा क्यों आखिर निबडता है? किसपर क्या वक्त पड़ता है। आख़िर वो विन पर की परी अपस मे अपे कुछ फिकर करके...**ख़्याल** कूँ आलम के कार कूँ... बुलाई, उससों मशौरत लाई।× ...

उन ख्याल ने बौल्या कि—"ऐ हुस्न धन...तुझे **कोहक़ाफ़** की परियों मे एक हमजाद है, तुझते हमेशा उसका दिलशाद है,... बहुत दिलावर बहुत जोरावर, किसी ते न डरे, जाँ जावे

---

*वहीं, पृ० १३७। ‡ वहीं, पृ० १३९।
† वहीं, पृ० १३८। × वहीं, पृ० १४०।

वहाँ फतेह करे। ज कोई मैदान में मद होकर निकलता, उसके आचे च त गलता। सामने आकर कौन दे सकता जवाब, हटीली हटभरी, जे कुछ कही सो करी। खुश-शकल कबूल-सूरत, मन-हरनसूरत रूप भोने च आला, जाँ बैठे वहा पडे उजाला। हँसे तो फूल झडे, बोले तो नबात होर मोती पडे। वो यहाँ आये तो भोत भला है। उनने ऐसी जगह पर करी है घर, कि हरगिज नहीं पडता किसी का नजर। वहा जा कोई किसे दिसे ना, उसका निशान कोई किसे दिसे ना। उसका नाँ भी हुस्न च है।* (फद)—

बोल कर क्या कहूँ कि कैसी है।
हुस्न की भान[1] हुस्न जैसी है॥

वा भी आशिकाँ पर जुल्म करती है। तुझमें क्या इश्वा थोडा है, वो भी तरा च जोडा है। एक कूँ छिपाना, एक कूँ दिखलाना, नादिर है तुमें दुनियाँ में दोनो भाना। तुमें दो फूल दो तारे, दो देवे दोनो भाग चमकावे, । दोपरियाँ दो हूर, दो चाद दो सूर, दो बाद-शाह खुनखार, दोनो साहेबसिपाह दो सखियाँ, दोनो भी दो-आलम किया अँखिया, दोनो दो बहिश्त या दो महबूब नादिर नारिया जीवाकियाँ प्यारिया, सब गुनमे सारियाँ। जो कोई उनो सो जीव लावे, वो हर्गिज न मरे, दोनो दो आबेहयात के झरे। अगर तूँ होर वो दोना मिलकर आते हैं, तो अल्बत्ता उस अकल पर जफर[2] पाते हैं। दिलसा तो यारी है, दिलक झगडा सितारी है। बाप है कर दिल अकल के पास है, बले उसे भौत तेरी आस है। दिल हुस्न के गुलाम का गुलाम है, उसे लडने-झगडने सो क्या काम है? इधर वाई उधर हुआ है, उसे बेचारे कूँ भी बहुत मुश्किल हुआ है।†

हुस्न घन मनमोहन जगजीवन ने बोला कि "क्या फायदा?"

वो गुलगूँ-बचन ने बोली "क्या फायदा झगडे कूँ अखाडे है। हुस्न होर दिल। जो मदद आये लग बहुत मुश्किल। एताल हमें झगडे की लाफ में, वो हमजाद हमारी कोहकाफ में, दद खुरासान में दारु हिंदुस्तान में।" वो दारु को आना, उस दद को जाना शाबाश तुझसा मशवरत[3] करी सारी रात, तूँ मुझसो बोल्या आखिर ऐसी बात ।

ख्याल न क्या "तू हुस्न है, तुझमें नाजुकिया याता बहुत है। कुछ बात के पठी भी गम करना है, कुछ समझना है, पाना है दिलकू बेगम करना है। क्या वास्ते, कि मेरे पास एक अबर का दाना है, बहुत पुराना है। जिस वक्त कि मैं आग पर रखूँगा उस अबर के दाने कूँ, तो केति वार है तेरे हमजाद कूँ तरे पास ल्याने कू। घडी में आयेगी पवनवारी, कि वो है परियो में की रहनहारी।" ×

हुस्न धा० यो बात सुन निपट फारिगबाल[4] हुई बहुत खुशहाल हुई। फिल्हाल उस अबर के दाने कूँ आग पर जलाया, उस हुस्न के हमजाद[5] कूँ हाजिर कर हुस्न के

---

* वहीं, पृ० १४० ।

१ बहिन, २ विजय। † वहीं पृ० १४१। ३ सलाह। × वहीं पृ० १४२।

४ छुट्टी, ५ बहिन।

हुजूर ल्याया। हुस्न देख हुई हैराँ, यकायक यो किधरते पैदा हुई यहाँ। . . .वो नाज वो ग़मज़े की घड़ियाँ, एक कूँ एक देख कर दोनों हँस पड़ियाँ। वारे. . .हात में ले हात दोनों सकी चकल-चकल गले लगी। बैत*—

दो बिछड़े दो अजीजाँ आ मिले हैं।
दो गुँचे दोनों फूल होकर खिले हैं।।

बात में बात **अक़ल** होर **दिल** के लश्कर का किस्सा काडा, अपने राज का पर्दा फाड़ा, . . .अपने हमदर्द पास दर्द कहा।

(हुस्न) कही—हमना होर **दिल** मे आशिकी[1] होर माशूकी[2] की निस्बत दरम्यान[3] है, दो तन है, वले दो तन कूँ एक जान है। दोहरा. . .

जे मैं कही सो उन कहा, प्रीत अहै इस धात[4]।
दो मनका एक मन भया, दो की एकहि बात।।

दिल बाप के मुलाहजों सों चुप झगड़े में आता है, नही तो यो झगड़ा उसे कधाँ भाता है।. . .

हुस्न धन० की बात हुस्न की हमजाद सुन सब खातिर किया बिचारी, कही. . .खुद है, डर नको, अकल क्या अछे वेचारी. . .

मेह् जो **इश्क़** का सरलश्कर[5] था,. . .हमजाद हुस्न ने भी अपना नाज, अपना ग़मज़ा अपना शेवा[6] अपना जाला अपना छंदवंद सब उसकी मददगारी कूँ भेजी, उसकी यारी कूँ भेजी।. . .

होर हुस्न कने भी एक हाजिब था आकिलकारी, खूब करता था कमानदारी. . .नांव उसका **हलाल** कमानदार, धाक उसकी ठारेठार, उस शहबाज कूँ भी हुस्न. . ."मदद कूँ जा" कही, "बेग फ़तह कर आ" कही।†

यो **हलाल** कमांदार. . .**मेह्** सिपहसालार सों. . .मिलकर. . .हात मे तीर कमान लिया। **इश्क़** का लश्कर बहुत वरजोर हुआ। . . .**हलाल** कमांदार. . .अक्ल के लश्कर मे जा पड्या। . . .**हलाल आशिकाँ** का काल. . .मर्दाना था, दाना था, तवाना था। अकल कूँ जाकर घट किया, तकवा[7] निपट किया। हुआ खुदा का लोड्या[8], वले अपनी हिम्मत नही छोड्या। अक़ल कूँ जाकर हट किया हँकार्‌या। बाप के जहल ते, अपनी कूबत के बलते, ना देख सक कर इस गलगाल में. . .एकाएक **दिल** मियाने मे आया। सो (हलाल) ना जानकर. . .**दिलकूं** तीर मार्‌या, दिलकूँ घोड़े पर ते उतार्‌या, झगड़ा बेग नहीं भँग्या। किसे मारने गया, सो मिलेग्या, जेता कोई ज्ञान धरे, कजा कूँ क्या करे? . . .**अक़ल दिलकूं** घोड़े पर ते पड्या देख्या,. . .घबरा हुआ **अक़ल** का सीना फाट्या। अकल का लश्कर सब न्हाट्या, क्या न्हन्ना क्या बड़ा एक जना नहीं रह्या। . . .अक़लकूँ एताल अकल आई पचताने लग्या, सिर कूट लिया मूँ मे माटी भाने

---

* **वहीं, पृ० १४३।**

१. प्रेमी होना, २. प्रियतम होना, ३. बीच, ४. भाँति, ५. मुख्य सेनापति, ६. कर्त्तव्य।

† **वहीं पृ० १४४। ७. शुद्धाचार, ८. जल्दी।**

लग्या वारे, यो अकल आई पचताने हुआ, खुदा जाने किधर गायब हुआ। कोई कना शहर तनकू गया, कोई कता बाई च मे पड्या गिर, कोई कता झगडे च में मारा गया, कोई कता बाट म किमके हात उतारे गया। 'कूँचे कूँचे यो हिकायतॉं, हजार जने हजार बातॉं।'

दिल के वख्ताँ मे वी लिग्या था, मो अँपड्या, दिल वी हुस्न के हात म सँपड्या आखिर हुस्न का फनह हुआ, जो मँगती थी (सो) हुआ। फनह का बाजा बजने लग्या, हुस्न का बाजार गज-गजने लग्या। हुस्न धन मनमोहन जगजीवन जुल्फ कूँ फरमाया कि, "अकल पीर पछी दौड वेग, ना सग देख ला रेग। अपने ताग सो धुये की धारा सो उसे जकड ल्या, पकड ल्या।"

अकल को रमी के पॉव लगाकर जावे, तो बेचारी जुल्फ किधरते खीचकर ल्याय।

वैत —

जो जो नसीबा में था सो वो अँपड्या।
अकल न्हाट्या फकीर सपड्या।।*

हुस्नधन मनमोहन कूँ एक दाई थी, जिसका गुन उसने पाई थी। उसका नाँव नाज, बहुत चतुर चौसार बरसाज। हुस्न ने दिल के इश्क की कही बात, मशवरत करी उस दाई के सगात, कि "दिल मेरा दीवाना, मैं दिल की दीवाना। दीवाने दोनो मिले जो च दोनो की जिदगानी। वो भी बेताब मै भी बेताब, दोनों कूँ खड्या है इज्तराब।"

इश्क बादशाह कने० मेहृ सिपहसालार कूँ भेजे। कि हमना मे होर अकल मे ज्या निवरया, अकल नामर्दी की बाट न्हाट गया, सो खबर अपडवे हो इश्क क्या वता सो खबर ल्यावैं, तो देखे इश्क इस बाब क्या फरमाता, उसकी खातिर कें क्या आता? वड्या की बडी अकल, न्हनियाँ की अकल मे हजार खलल। अगर जेता अकल धरेबच्चा, आखिर भीकच्चा सो कच्चा।

वडे नेक हारे वदते वाकिफ हो रहते हैं, वड्या कूँ वडे चुप नैं कहते है। उनो बी कुछ देख हैं, बहुत काम किये हैं। दुनिया का भला बुरा सब काम किये हैं। न्हनेतेकामाँ कू हरगिज न जासँ, कौआ दगा देने जाया तो दगा ना खामैं। पुख्तकार आदमी टुक अछता हे तजर्बाकार, सब जागा अछता है खबरदार। हर कोई अपनी अकल में गक है, वले तजर्बे का टुक फक है। हर कोई अपनी जागा एक सवाद पकड रहया है। वकील अहले-खुरासान, जिनाँ कूँ सब मुल्क मे देते है मान। (मिस्रा)†

"कस न गोयद कि दूगे-मन तुश-अस्त"।
(कोई नही कहता, मेरा दही खट्टा है।।)

वड्या ते टुक डरना, हर एक काम किये तो वड्याँ कूँ खबर करना। आखिर खूब अछेगा, तो 'करो' कयेगे, व अगर बुरा अछैगा, तो ज्वाब ना दे चुप रहेंगे। ‡

यो नाज दाई हुस्न धन० कूँ गले लाई, कही "बला लाऊगी० बहुत खूब फरमाई। खूब तूझे यो अकल आई। तेरी अकल पर मै वारी, काँ है दुनिया तुज जैसी चतुर नारी? सिर तें पाव ल्ग गनभरी, बहुत अदेशे करी।" ×

---

*वहीं, पृ० १४६।
†वहीं, पृ० १४८।
‡वहीं, पृ० १४९।
×वहीं, पृ० १५०।

हुस्न होर **नाज** नार यो बात अपस में विचार **मेह्र** सिपहसालार कूँ बुलाय वों च उसे फरमाये। . . .**मेह्र** अफताब-चेहर उसकी बात सुन **इश्क़** लग गया, सलाम किया, कलाम किया। **अक़ल** यों न्हाटा होर **दिल** यों सँपड्या कर कह्या, नसीबा में जो अंपड्या कर कह्या। इश्क बहुत हंस्या **अक़ल** पर. . .कि "अक़ल अजब जाहिल है, बड़ा नाक़ाबिल है, कि जो काम हातते नैं होता, सो काम करने जाता, ऐसे कामाँते क्या हात में आता. . .अक़ल, अकल कहते सो उसकी यो च अक़ल ? उसे क्या गर्ज था, कि **इश्क़** के कामों में करता दख़ल। **हुस्न** सों दावा लाना, अपनी इज्जत अपे च गँवाना।". . .

इश्क़ फ़रमाया कि. . .जुल्फ़ कूँ बोलो कि "दिल के गले मे हल्के का तौक भी, तारां का जजीरों सो जकड़ कर अक़ल जाँ गया अछैगा, वहाँ ते पकड़ कर ल्या। ग़मजा, शेवा, इश्वा, छंद, चाला उनोकूँ अक़ल बहुत मुफ़तिन है।. . .*

मेह्र ने. . .वेग आकर दुआ कर **हुस्न** कूँ सुनाया, . . .समझाया। **हुस्न** यो बात सुन अंदेशा करी, मस्लहत पर नज़र धरी। कि. . ."काम ऐसा करना, जो कुछ काम होये", वही च नाज दाई, जिसकी अकल उसकी खातिर आई, देस बुलाई, कही—"इस काम का इलाज यो च है एताल, कि इस जागा अपस कूँ बहुत रखना सँभाल, अपसकूँ बावल न करना, उतावल न करना, बहुत धीर अछना, गँभीर अछना।. . .सबूरी अव्वल कड़वी लगती है, बले बहुत मीठी होती है, बीजते झाड़, झाड़ते डाली, डाली ते पात, पात ते फूल, फूलते फल आता है। देखते-देखते, सुनते-सुनते, खातिर ल्याते-ल्याते फ़िकर करते-करते रहते-रहते मालूम होती है काम की धात। . . .इस **दिल** कूँ . .चंद रोज बहुत मुहब्बत सों बहुत मुरव्बत सों. . .एक जागा धरैं, पछीं अहिस्ता-अहिस्ता जो कुछ **इश्क़** फ़रमायेगा, तो उसकी भी एक फ़िक्र करें। यहाँ वेगी काम नहीं आती। . . .**रुख़सार** के गुल्जार में एक कूवाँ है, कुछ सुन्ने सों मुस्तीद हुआ है,. . .चाह **ज़कन** उसका नाम। उस चाह मे दिल कूँ. . .बद करना। . . .(बैत)—

अजब चाले बैरियाँ हैं औरताँ यो।
न जानूँ काँते सिकियाँ हिकमतां यो॥ . . .‡

दिल बहुत पकड़कर आस, कुछ कम हेक मास उस चाह मे, उस नाले उस आह मे गिरिफ्तार था। **हुस्न** धन० कधी याद करैं कर उम्मेदवार था. . .कि. . ."मेरा इश्क़ तो बहुत गर्म, कधीं तो भी उसका दिल होयेगा नर्म।" . . .ऐसे में यों हुआ खुदा का फ़रमान, **हुस्न** को भौते च तिलमिलने लगा परान। **हुस्न** धन० भी आशिक़ थी,. . .**दिल** के दीदार का गालिब हुआ इश्तियाक[१], सीने में उबल्या फ़िराक़[२]। सरलश्कर, जो था **मेह्र** उसके एक बेटी थी पुरसेह्र, **वफा**, उसका नाम, **हुस्न** सों उसे बहुत उल्फत था बहुत आराम, बैत—

***वहीं, पृ० १५१।**
‡ वहीं, पृ० १५३।
१. इच्छा, २. वियोग।

पर आसाइश किया है। आह मारी, पुकारी बेचारी भौत की जारी। . जगमग रह्या है, तमाम गुलशन, फूलां नही यो दीवे हुये हैं, रोशन बाग में पड्या है सब उजाला, आफताब हुआ है हर एक लाला। अँखियां में ते अजुआं[1] का बुंद पडता, फूलते जाने शबनम झडता। दोना हुये दो झरे, पानी हो लहू भरे। अजू ढलते है उजले होर लाल, खुदा कूं मालूम इस विचारे का हाल। दिल हुआ इश्क ते दानादान, आँख हुई याकूत होर अत्मास[2] की खान। दीदे दीदार कूं तरसते, बादल होकर मोती बरसते। दिल के इश्क में अपस कूं जला ली, दोनो पावा पडी बला बला ली। यो हुस्न नार मुहब्बत की मतवाली दिल का सिर गोद में उँचा ली, सीने सा सीना ली। इश्क सिर चड्या, एकाएक दिलके मूं पर उसकी अँखियां में ते अश्रू का बुद पड्या। दिल नीद में ते जाग्या, हैरान होकर देखने लग्या। ज्यो बाग में ते कलिया, सब फूल कर फूल हो करतियां रग-रलिया। ठारें ठार, चारो तरफ झलक्ते हैं झलकार। झाडां ने सब ताजा किये हैं सिगार, गले में फूलां के भाये हैं हार, पानी कालोंयां में सब शराब हुआ, मगर साय सुट्या उसकी अँखियां का खुमार। हुस्न ऐसी नार चांद जैसी अचवा ओतार, बेइख्तियार नारी रोती है, जार-जार, * बैत—

जो आँखी हुस्न कूं देखे वो आँखी खुद को रोती च है।
एता तारीफ जग करता अजहुँ तारीफ होती च है॥

(हुस्न) खुशगुफ्तार, वो खुशरफ्तार, तो दीदां का सिंगार, जीवका अधार, अलम का मदार, अजब खूबी का सूर, महबूबी का नूर, छंद भरी वाली, लताफत के फूल की डालीं, नाजां में कारी, गमजियां कूं उपजान हारी, बातां जैसियां निवातां, फूल की फखुडियां जैसे हाता, किरना जैसे बाल, आफताब जैसा जमाल, कमर देख शेर जा शरम हुजूर, उसकी चाली ने काडी हत्ती की चाल में कसूर । इस वजा के महबूब भौत च खूब (कूं देख) दिलकों सुद नहीं रही, बुद नहीं रही। मुहब्बत कर जोश दिल में उठी रोश, जागा पर नहीं रहे होश, आह मार उठ्या, पुकार उठ्या। इश्क का असर भौत चढ्या, दौडकर दोनों पाँव पड्या कमर में हात भर्या, चकल कर गले लाया। कह्या हुस्न धन० माशूक आशिक पर ऐता बी प्यार करती है, एता बी उपकार करनी है। "ऐ परी, तू मुझे सरफराज[3] करी। जीव के लहोये का घाव ज्या त्यां सामेगा दिल, वले वसाल के खजर का जख्म सोसना भौत मुश्किल।" फर्द—

गले लग सोने होर बेताबी नहीं जाती है यो मुश्किल।
विरह में तिलमिल्या जो त्यां हलाक है वस्ल[4] में बी दिल† ॥

दूर की आग ज्यां त्यों टाल्या जाये, नजीक की आगकूं क्योकर सँभाल्या जाया। जो

---

१ आंसू, २ पन्ना।
* वही पृ०, १५८।
३ सौभाग्यशाली, ४ मिलन।
† वही, पृ० १५९।

कोई खुदा के कारखाने में जाते, आखिर इस फिक्र पर आते। ...रब ने उनाकूँ दिया यो मंसब, आजाद आशिक़ यो छोड़ दिया सब। दाखिनी दोहरा*...

तेरे करतब करन ते, मैं चुप हुई बदनाम।
में म्याने ते उठ गई, तूँ जाने तेरा काम।।

जो आशिक यों हुए हैं अस्फियार खुदा का भी उनोंपर प्यार।...फ़िराक[1] के जलनेकूँ सब कोई जानता, वसाल में कूँ कौन पिछानता† ?

पानी में की जो आग कते सो वसाल है।
इस आग म्याने जलनेकूँ किसका मजाल है।।

आल्क़िस्सा[2] दिल कह्या—"मै आशिक हूँ, अगर होता हूँ, तो सुहाता है, तूँ माशूक़[3] तुजे क्यों रोना आता है ? जफ़ा[4] आशिक का वतन...मुकाम, तू माशूक तुजे गम सों क्या काम ? माशूक़ शीरी[5] आशिक सलोना, माशूक का काम हंसना आशिक का काम रोना।... मुहताज माशूक गनी, जों आजाद होर असीर, जों बादशाह होर फकीर‡...।

हुस्न धन० बोली कि—"सुन ऐ **दिल**, यो बात समझना है भौत मुश्किल। जानती हूँ किस पानी सों खमीर हुई आशिक़ की खाक, कि हम फिराक़ में हम वसल में दोनों जागे हैं ललाक़, न यहाँ आराम न वहाँ आराम।...जल-भस्म होकर वारे पर उडे, जो आशिक हाये,... इश्क़ के शहर में पिरीत के नगर में माशूक़ वही च, जो आशिक़ कूँ प्यार करे, आशिक़ पर उपकार करे, आशिक़ के दिल कूं गुलज़ार करे, न कि बेजार करे ख्वार करे।...अगर आशिक़ मरता, अछैगी बी, हँसतियाँ खडियाँ रहेगियाँ।...मुआ तो आगमें पड चुप अपस जलता। दिल में नहीं लाता, तोडने नै जानता भी होर एकम सों जोडने नहीं जानता। तोडने जाता तो टुटता नहीं, छुडा लेता तो छुटता नहीं। दिल मे इश्क़ सुलग्या, आशिक़ बेचारा हिलग्या।...इश्क़ का स्वाद उसी ठार, जाँ दो तरफ ते उबलते प्यार। मै तेरे दीदार की बहुत मुश्ताक़ थी,...सो मुराद बर आया, यहाँ खुदा मिलाया। आशिक थी, तेरी खबर चोरी सों तुझे देखने आई थी। इश्क का दुःख सहा नहीं गया, जीता रहूँगी तो बी नहीं गया। मै इश्क़ तुझसों लाई हूँ, जीवपर उठकर आरई हूँ। एताल रजा दे जान जाती हूँ, वसाल की जागा खातिर ल्याती हूँ। या तुझे बुला भेजती हूँ या मै अपे तुजे बुलाने आती हूँ। मै कही सो तहकीक जान, दिलमें अपने बुरा नको मान। खलक़ के मूँ में आकर पडी बात, असमान टूट्या तो कौन देता हात, समुंदर कूँ क्यों बांदना पाल, आफ़ताब कूँ क्यों रखना संदूक में घाल। दीवा घरमे रोशन हुआ, पछीं जोतकूँ काँ ले जाना ? वन में फूल खिला, पछी वासकूँ क्यों छिपाना ? मूँ में ते बोल निकल्या, पिछीं सो क्या फिकर आता है ? तीर कमान ते छुट्या तो क्या सँभाल्या जाता है ? थाल भुई पर पड्या, आवाजकूँ क्यों पकड्या + ।...

---

* वही, पृ० १६०। १. वियोग।

† वही, पृ० १६२।

२. संक्षेप में, ३. प्रियतमा०, ४. जुल्म, ५. मीठा।

‡ वही, पृ० १६५। + वही, पृ० १६५।

, दिल कह्या—ओ नार शीरी-गुफ्तार[१] आशिकाँ की अँखियाँ का सिंघार चतुर-चौसार, तू ऐसी है, जो कोई तुझसे बुरा माने, तेरी बातकू झूल कर जाने । विस्मिट ल्लह् खुदा हमाराह[२] जाना बेग कर फिर आजा* ।

हुस्न परी-औतार इस्तिरी ने ख्याल, होर नजर होर तबस्सुम[३] कूँ दिलवने रखकर कसाल के छज्जे पर चडी सारा देस वहा च थी, ता शाम पडी । फ़र्द

भुंईं परके चदनी (सो) बिन पर की परी है ।
दिल सेती मिल कि दिलसो क्या क्या अदा करी है ।।

वो छद-भरी उस ठार एक अदा[४] करी । वफा होर नाज उस छज्जे पर इश्क की मजलिस सँवारी । दिल होर नजर होर ख्याल होर तबस्सुम उस बाग मे व पानी चश्मे पर सुहबत रखते थे ।

बारे, हुस्न धन० कू भौत मुश्किल लगी दूरी, दिल मे कुछ नही उबरी सबूरी । "क्या करूँ" कही हत जोड़ी, वे ताकती हुई पूरी अपना दिल खोली, वफा कूँ बुलाकर बोली इताल ख्याल होर नजर होर तबस्सुम कू बोले कि दिल का दिल हात लेवो, सब मिल उसे दारवे बेहोशी देवो ।

होर जुल्फकूँ कहो कि दिलकूँ इस छज्जेपर यो लेकर आ कि दिल भी न जाने, न अपसकू समझें न दुसरेकूँ पिछाने ।†

ख्याल होर नजर होर तबस्सुम होर वफा दिलकूँ दारुवे-बेहोशी दिये बेखबर बेसुद किये । जुल्फ दिलकू कुल्फ होर छज्जे पर खीच ल्याई, कि दिल कूँ खबर नही आई । अपने सीनेपर उसका हात धरी, आह भरी, उसास भरी, टुक हँसी टुक रोई, अपसमें कुछ बातें करी‡ । फ़र्द—

तमाशा है अजब कुछ आज इस ठार ।
कि आशिक मस्त होर माशूक हुशियार ।।

(हुस्न ने) कही—"ऐ दिल मै क्या क्या जफा देखी तेरे बदल, तुझपर भी लई-लई मेहनत गुजरी मेरे बदल । तेरी यारी पर मैं वारी, तेरी अख्तियारी पर मैं वारी । यो नवा मिलना, एकाएक फूल होकर क्यो खिलना, मूँ देखते शरम आती, एकाएक क्यो बात बोली जाती ।

उसने दिलकूँ बेखबर की कि दिलकूँ सो कुछ हिज्र[५] पावे । हुशियारी मे आखभर देखते मुबादा[६] लाज आवें । वह चतुर परी, ऐसी कुछ फिकर करी, दिल बेखबर मतवाला, हुस्न करती कुछ हातबाजी कुछ ऊपर चला । वाँ नजर मो बी कुछ किया जाता । जो भँवरा फूल का रस लेता । जो अपसकूँ इश्क की मस्ती बहुत चडे, यो खतरा वज्द[७] मैंने बम भार

---

१ मधुर वचन, २ साथ । * वही, पृ० १६६ ।
३ मुस्कुराहट, ४ हाव-भाव ।
† वही, पृ० १६० ।
‡ वही, पृ० १६७ ।
५ वियोग, ६ कदाचित्, ७ तल्लीनता ।

पडे। तुख़्म-इन्सान, इस तुख़्म में लई-लई तमाशे है जान-छान। इस खतरेकूँ जोरसो खोलना है अँखियाँ की बाट, इस खतरे कूँ जोर से चडाना है ट घ।...यो तनका वसाल नहीं यह दिलका वसाल है, आ खडे रहना किसका मजाल है।

(ज) इश्क़–

ग्वालियर के गुनी, उनों ते बीयो बात गई है सुनी (दोहरा)

जिनकूँ दरसन इत्त है, तिन्कूँ दरसन उत्त।
जिनकूँ इत दरसन नहीं, तिनकूँ इत ना उत्त* ।।

आशिक़ ने कोशिश करना कि कहीं इश्क़ की आग खूब सुलगे, जाहिर[1] दिल किसी के फंदे में खूब हिलगे। पछीं अपनी हिम्मत फ़ाम[2], अपनी-अपनी तलब अपना-अपना काम। खुदा ने लै कुछ करचा है, खुदा के आलम में सब कुछ भरचा है, एक है हरचा है, जिधर देखें उधर दरचा है। उसमें तो अव्वल आशिक कूँ फ़र्ज भौत देखना, खुश करना, शराब पीना होर राग सुनना। यहाँ सब है, यहीं तमाशा अजब है।...माशूक़ नज़दीक अछ कर तपना तरसना न्हन्ना काम नहीं, अँखियाँतली दीदार शेर अंझ बरसाना न्हन्ना काम नहीं। यो इश्क़ जोरॉ सों कोई नहीं भाया, जिसे खुदा दिया उसे आया। किसी की बहूबेटीवो, अपने घर में तिलमिलता वो अपने घर मे लेटी। यो फिरता घरके आसपास, उसे घर में जांचती ननद होर सास। उसकी सँगात उसका मर्द सोता, यो रात-देस याद कर-कर रोता। इसे न भीतर करार न भार, छिपे चोरीसों कधीं कधीं होता दीदार। यो आशिक़ दीवाना है च बेफ़ाम[3], बहुत मीठा लग्या चोरी का काम। हलाल ते दिल कचाता, हराम मौत सवाद लाता।...मना किये काम सो इंसान कूँ भौत भाया है।... अगर हराम कूँ मना न करते, तो अजब नहीं, जो कोई हराम न करता, हराम कूँ मना करने ते हराम पर जाहिल[4] आदमी एता लज्जत पकड़ कर जिद्द धरता। अगर हलाल कूँ बी मना करते, तो हलाल वी भौत भाता। हराम कूं सब सुट देते, हलाले च खुश आता आदमी। बहुत बुरी बला है। आदमी ते हद हुआ है, मकर जनॉ[5] कूँ भाता, मियानेमियाँ मॅग-मॅग भेजता। उन्ने के खाये सो झूटे पान। उसकी खून लगी सो अंग की चोली, उन्ने खुशबुई लाई सो खुश्बूई उन्ने खाई सो गोली। बुढियाँ लाती इधर इधर की हिकायतों[6], बहुत स्वादकियाँ होतियाँ बाताँ।...एक जनी सों जीव नहीं लाते, सौ जनियाँ कने जाते। एक घर में चार भार, यो भी अजब तमाशे का है ठार।...घूँगट मेंते मूँ भार नही काढते, बाजार में खडे अछ पर्दे फाडते। हटक हटक लोगाँ कूँ बुलाते, एकसकूँ दिखलाकर एकसकने जाते। उस जागा क्यों जीव लाना, यो किसे भाना।...यहाँ इश्क की तो है गरमी, वले[7] भौते च है बेशर्मी। हजाराँ की, केते याराँ की, ऐसियाँसों क्या करना यारी, ऐसियाँ सों ते क्या ढूँढना वफ़ादारी? यो बैठियाँ है पैके मिलाने, उनों मुहव्वत क्या जाने? यो स्वाद बाजारी, मुवलिग एक रात की यारी। खीसे-किया दुश्मन, घर के लोकाँ के हिस्से कियाँ दुश्मन। ऐसियाँ क्या पतियाना ऐसियाँ कूँ क्यों देना मत, एकसपास

---

* वही, पृ० १६८।

१. प्रकट, २. समझ, ३. बे-समझ, ४. मूर्ख, ५. स्त्रियां, ६. कहानियाँ, ७. लेकिन।

मन एकम पाम तन। ऐसियाँ का का आस, जीव ला कर फुमलातियाँ, महज[1] पैंकियाँ च खातिर आतियाँ, जो लगन कुछ अछता[2] तो लगन पातियाँ। एक घडी कुछ नही तो निकल जातियाँ। जानो कधी आई न थी, जानो आशनाई[3] च न थी। ऐसी छिनालां के वेरी चालें, ऐसी छिनाला ते खुदा सँभाले। यो वुरे चढ, यहा कौन कर कमता दिलकूँ घढ। जेता नेम-धरम होयगा, अगर फजर[4] अछेगा तो यहा नरम होयेगा*।

यो हूरक जैमी हुस्नपरी, वो देम दिल कूँ वेखवर कर उम वसाल के छज्जे पर ल्याकर हिज्र करी। दिल कूँ वेहोश कल म्हाडी पर ल्यावें ले जावें, किसे ना दिखलावें, किसे न सुनावें। चोरी का काम, किसे नहीं होने दे फाम। जैसे में रकीव की एक बेटी थी, उसका नाम गैर[5], सबमा उमका वैर। जाहिरी[6] राज़ी सो रहती थी, हुस्न कने[7] दगावाज़ी सो रहती थी। जाँ जावे, दो में झगडा लगावें, मिल्याँ कूँ विचडावें। लूतरी चाडीगार[8], दिल में कुछ होर मूँ मे कुछ हो हुस्न धन० कने रहती, वले भेद अपना किसे नही कहती। हुस्न नार दिल का अधार चतुर-चौसार समजती कि यो नामाकूल[9] शर्म नही धरती, एक्स के अग एक्स की वात करती। मू की वहुत हल्की शोख निडर अर्वे च शरम नही धरती सो किसकी शरम कि उसे क्या खबर? हुस्न उसे जानती थी, खूब पिछानती थी। जो हुस्न मनमोहन वाग में आये, उम नापाक कूँ सँभाल न ल्यायें†।

(२) गैर ने समजी कि हुस्न धन० अपस सो कपट पकडी है, अपस सो हट पकडी है, यहाँ तो कुछ प्यार नही, एताल कुछ भला वाल नही। जिधर गई भी अकेली जाती, मुझे सँगात ने ले जाती, मैं उसे नै भाती। गैर की गैरत[10] उठ खडी, गैर हुस्न के दुवाल[11] पडी कि देखूँ यो मुजते अपसकूँ छिपातो, अकेली किधर जाती। यो च करते-करते एक रात उस वाग में हुस्न धन मनमोहन दिल सो मिलने जाती थी, यो बी उसके सँगात चोरी सो लग पछी आती थी‡।

हुस्न नार चतुर-चौसार जो दायम जाती थी, वो च जाकर उस छज्जे पर चढी, यो वी उम छज्जे पर जाकर एक कोने मे मारी दडी। हुस्न होर दिलकूँ वे चाले सब खातिर ल्याई, उनो दिनो का भेद पाई। गैर कूँ वी उनें दोनो का चाला देखकर इश्क हायल हुआ, गैर का वी दिल दिल पर मायल[12] हुआ। इन कमजात ने अपना ज़ात दिखलाई, आखिर अपनी जात पर आई, कि हुस्न की चोरी सो उस म्हाडी[13] पर चडना, होर दिल के वसाल की लज्जत कूँ अपडना मैं वी हुस्न ते हुस्न मे खूब हूँ, दिलरवा[14] हूँ, महवूब हूँ। मैं वी चुचुलाने जानती हूँ, म वी दिलकूँ भाने जानती हूँ। क्या मुजमें नाज़ होर गमज़ा नही, क्या मुजमें शेवा और इशवा नही। मेरा मूँ भी फूल का चमन। अँखियाँ जो लाले हैं। मुंज में वी बाले-वाल छेंद होर चाले हैं।

---

१ केवल, २ रहता, ३ दोस्ती, ४ भोग, स्वाद। * वही, पृ० १६७। ५ शत्रु, पर, ६ प्रकट, ७ के पास, ८ चुगलखोर, ९ नालायक। † वही, पृष्ठ १७३।

१० लज्जा, ११ पास।

‡ वही, पृष्ठ १७४। १२ आकृष्ट, १३ कोठा, १४. मनोहर।

अगर खूबी का दावा धरूँगी, तो हूर-परी सों बात करूँगी। मै बी आरसी में अपसकूँ देखती हूँ, अपसकूँ जानती हूँ, अपसकूँ की खूबी कूँ खूब पिछानती हूँ।

वारे एक रात **हुस्न** धन० मन-मोहन जगजीवन शहर में च थी। **हुस्न** का नहीं हुआ आना, वक्त खाली देखी इस हरामखोर कूँ यो च हुआ बहाना। **दिलसों** मिलने खातिर वह मौत तडफडी। उस बाग में उस वसाल[1] के छज्जे पर चढ़ी, सेहरटौना भौत जानती थी, वहां हुस्न की सूरत पकडी खड़ी। **ख्याल** होर **नजर** होर **तबस्सुम**[2] होर **वफ़ा** कूँ जों हुस्न फरमाती थी, वों च अपे भी फ़रमाई। ...दिलकूँ पिलाई, होर जुल्फ[3] कूँ वी हुस्न के नर्मे च बोलकर ज्यों त्यों दिलकूँ उस वसाल के छज्जेपर ल्याई मँगाय गले लई समजाई।...यो बदअस्ल[4], शैतान की नस्ल, हुस्न के तख़्तपर दिलसों लट पट हुई, उसका वी दिल दिलसों लग्या, दिलपर आशिक़ निपट हुई। वैसे में ख्याल जो सोता था जाग्या, 'दिल दिसता नही' किधर गया है, कर धूँढने लाग्या*।

दिल की ख़ातिर अजब रखे रखवाल।
ग़ैर जो चोरी किये, तो जाग्या ख्याल।।

(झ) सौत--

ख्याल का मुश्किल हुआ हाल। धूँढते-धूँढते वसाल के छज्जेपर जो आया, तो मकसूद[5] अपनी पाया। देखता है जो ग़ैर दिलकी गोद में मस्त पडी है। ख्याल फ़िल्हाल शहर **दीदार**-कूँ जाकर उस गुलजारकूँ जाकर जो कुछ देख्या था, सो **हुस्न** नारकूँ दिलके सिंघारकूँ दीद्याँ[6] के अधारकूँ खबर बोल्या, मामला यों है कर बोल्या। **हुस्न** यो बात सुन हैरान, परेशान सरगर्दान। ना खाना ना पानी, कडुवी हुई सब जिंदगानी, । आगकी भडकी उठी तन में, आहाँ मारने लगी मन में, । सौकन के छल, नऊज बिल्लाह[7] जीव जावै निकल। इस छलकूँ कौन सँभाले, तन-मन रंग-रूप, सब जालें। अगर मर्द आग में पडो कहे तो आग में भी पडना भाये, वले सौकन की छल सोस्या न जाये। सौकन अछै जिस ठार, उस मर्द ते बी दिल बेजार।...जॉ सौकन होतीं, वहाँ औरत...बेजार होकर मर्दकने सोती, न मनका स्वाद न तन का स्वाद। सीना जलता दिल में तडफडी, सेज मे आई है जाकर दोजख में पडी।...सौकन न सोवै न सोने देवै, सौकन जीवपर उठे सौकन जीव लेवै। सौकन ते मुहव्वत मे फ़तूर उठै, सौकनते जुड्या दिल तुटै। इस इधर ते साले उधर ते सालियाँ, चारों तरफ ते वरसती गालिया। कोई कुआँ गिरती, कोई बाँई घर में खेलतियां चाई माई। यो घर मे सुख सों नही सोता, मियानेमियां लोगों का हँसना होता। जो देखे तो कलकल, औरत ते ज़ियास्त सासकी झल। साला दुश्मन साली दुश्मन, वजर का उस बेचारे का मन। किसे-किसे समझावै, किस-किसके तगाद्यॉ ते भार आवे। ब्रेट वेटी अपनियां मा वां खातिर जुदा लडते, यो जुदा तिलमिलते, वो जुदा चिरफडते†।...

---

१. मिलन, २. मुस्कुराहट, ३. अलकें, ४. दोगला।
* वही, पृ० १७५।
५. इच्छित, ६. नेत्र, ७. खुदाकसम।
† वही, पृ० १७६।

सौकनकूँ देखने का किसे ताव, जिस घर में सौकन आई वो घर खराब। जिनने असूदगी कूँ दुसरी औरत किया, उनने बतरी अपसकूँ अजाब में दिया। केती जागा अपसकूँ बाट भावे, एक दिल दो जागा क्यो लावे ? एकसो तोडना, तो दुसरे सो जोडना। इदर यो लडती, उधर वो झगडती। सुबा उठकर घरमे कचाट, आसूदगी का बाराबाट, एकस कने सोता, दिल दुसरी पर होता। एकसकूँ किया प्यार, तो जानो दुसरी कूँ दिया जहार। एकसकू पान खिलाया, तो दुसरी कूँ जानो आग लाया। एकसकूँ फूल पिन्हाया, तो दुसरी कूँ जानो अगारियाँ में भाया। एकससा बात किया, तो जानो दुसरी के जीव पर घात किया। एक नजदीक सोती, तो दूसरी रोती मरने पर राजी होती। कलकलाती तिल-मिलाती कई का कई नही सो झगडा काडती, दोनो को खुशी मे खलल पाडती। सौकन न सोवे न सोने देवे, अपना दावा न छोडे, अपना बैर लेवे। यो बेचारा न इधर का न उधर का, क्या जाने किधर का। यहाँ खाना खाता, तो वहाँ पानी पीता। इश्रत गुम हुआ, घर जहन्नुम हुआ। रात-देस झगडा किसे आता, घर मे ते न्हाट जाने का वक्त आता।*

हुस्न धन०इस ग़ैर के रश्क ते अचल भिगाई अँखियाँ के अश्क ते जलती तिलमिलाती, कपडे फाड लेती, सिंगार तनका काड लेती। गालियाँ देती, रोती हैरान होती वसाल[1] के छज्जे पर आई, । ग़ैर कूँ देखी तख्त पर मस्त, दिल उससो हम्दस्त, मूँ सो मूँ मिलाये हैं, सीने सा सीना लाये है, सुद सो रही, सो रही है। हुस्न नार सुदरी बहुत नखरे भरी इस्तिरी पुकार उठी, आह मार उठी कि, "आह यो क्या हुआ ? वाय[2] यो क्या हुआ ? इन छिनाल ने मुजे जीवो मारा, इन छिनाल ने अपन दुद सारी, इन छिनाल ने मेरा घर घाली । इन छिनाल ने मुजे देस-अतर दी। उसे और जागा न था, जो यहा ख्याल करा गरम, इतना तो वी मेरी आशनाई का नही रखी शरम। उसे ठार कहीं न थी, क्या अपने जनम मे किससो यारी की न थी। इसकी चोरी की जागा देखो, इसकी हरामखोरी का जागा देखो। दुनिया ते डरना, नजदीक का आदमी यो क्या एताल करना। आस्तीन मे की आग घरमे दुश्मन, आदमी कूँ आदमी पतियाता, क्या जाने कोई कोई किसके लक्खन, के कुढँग ओलक्खन, बदनीयत बुरे आदमी कूँ केता करता जतन काम पडे बगैर आदमी जाण्या नही जाता, कुछ मुश्किल खडे बगैर पिछान्या नही जाता। सुना होर पीतल दोनो का एक रग है, वले इसका और ढग है उसका और ढग है। पीतल वी पीला दिस्या तो क्या हुआ ? पीतल बी छबीला दिस्या तो क्या हुआ ? आफताब सबपर परतो सुटता, बल जिसमे जौहर है वो च जाहर होता में हो ते धुँदले पडते हैं, वले जिसमें कुछ जोत[3] है, वोच गौहर होता बुरे सो भलाई दुश्मन सा सगाई ।

(अ) दिलपर हुस्न का कोप—†

हुस्न कूँ लगी तक्वक[4], गैर कूँ गालियाँ देने लगी "मू कारी झोटा-काटी, मेरा बस होय तो इसे बहुत लोकूँ, मेरा बस होय तो इसे छुरियाँ भोकूँ, दो नीमा, करूँ, कीमा करूँ।

---

* वही, पृ० १७६।

१ मिलन, २ वाह, ३ प्रभा। † वही, पृ० १७८। ४ घबराहट।

बहुत सिर चडी है, धगड[1] कूँ लें पडी है। बहुत अपसकूँ मुरव्वती है, कुत्ते की खीर चुरौती है। अजहूँ भी जीव नहीं भाग्या, धंगड बहुत मीठा लाग्या। यो छिनाल खुदाते नहीं डरी, क्या बला करी? झगडा लानहारी, दुदकारी, चील होकर हातमें ते झोंटे मारी। इताल में वाई[2] गिरूं के कुवा में? कती थी सो हुवा*।"

ग़ैर, दिल में रखती थी वैर, जो हुस्न का सुनी आवाज, समजी कि यो हुस्ने च जो करी है इतना नाज।...यारकूँ प्यार दिखलाती है, अपना एतबार दिखलाती है।...औरत की जातकूँ इतना कला, तोबा...यो क्या बला? घडी एक आह भारती, घडी एक उसास भरती। इते गमजे[3] इसमें थे, तो इनने दिलकूँ यों हलाक करी। मर्द भंवर हजार फूल की लेवे वास, यो केता पुकारती फिरेगी आसपास? मर्दकूँ कोई रखवाल रख सक्या है, मर्द कूँ कोई सँभाल रख सक्या है?..मर्द हज़ार जागा जायेगा, उसे कॉका झल आयेगा।...एती चतुरी एती चौसार, लड झगडकर कोई मंगती है प्यार? लडने झगडनेतें क्या प्यार आता है? वल्कि प्यार है सो बी जाता है। वो औरत अजब है गंवार, जो मर्दकने लडकर मॅगती है प्यार।...छोरियाँ छारियाँ अजहूँ कुछ तन पर पड्या नहीं, भला बुरा सिरपर कुछ खड्या नहीं। मर्द का दिल हात लेना जानतियाँ, क्या फ़ायदा मर्द कूँ गवॉ लेकर पछीं तापतियाँ।...औरत ने मर्द का जीव पकडे तो अवूदगी ना देखना अपने तन की, खातिर रखना मर्द के मन की।...सवाद समझनहारी औरत काँ है? सब गुन में सारी औरत कॉ है?...अपसकूँ घडी-घडी सॅवार मर्दकूँ दिखलाना, अपने दिल में का कुछ प्यार मर्द कूँ दिखलाना,...औरत ने मर्द की बहुत मिन्नत करना, पाँव पर हात सुटना, अलावला लेना, सीनेसों सीना चिकलना, हॅसना गड देना, खुश्बोई मे तमाम महक रहना, अपने दिल की बात खोल कहना।...यो तनसों तन दिलसों दिल मिलने की जागा है, अपसकूँ कली कर वा अछना, यो फूल होकर खिलने की जागा है। मर्द भॅवर है, फूल का रस लेने आया है, औरत पर आशिक हुआ है, दिलकी हवस लेने आया है। मर्द सों एक चित्त एक दिल अछना, जों मर्द का दिल मँगता, त्यों मर्द से मिल अछना।...नार उसे कते हैं, चौसार उसे कते है।...ऐसियाँ औरताँ खातिर जीवाँ देते हैं मर्दां, ऐसियाँ औरताँ खातिर हजार-हजार सोसते है सरदर्दां। जिनाँ औरतों ने यो छन्द नही पाई, क्या काम आती रूखी कवूल-सूरताई[4]? कवूलसूरती और उसमे यो छंद, भौते च खूब सुन्ना होर सुगंद। औरत की सिफ़त[5] क्या है? नाज, गमजा शेवा, चाला, नाजुकी, नरमी दिल हात में पकडना, हॅस बात बोलना, मिलना लेना होर मुहब्बत की गरमी। औरत में जितनी सिफ़त है, उतनी सिफ़त मर्द कूँ दिखलाना, मर्द ते यो सिफ़त न छिपाना, मर्द कूँ न भुलाना। औरत कूँ यो सिफ़त खुदाने मर्द को भुलाने खातिर दिया है, न कि मर्द ते छिपाने खातिर दिया है।...बहुत पाके हो चले, तो मर्द प्यार करता है, पाँव खाक हो चले, तो मर्द प्यार करता है। खुदा ने कह्या है, मर्दकूँ नीमे-खुदाइ,[6] उसकी बाततें क्यों होना जुदाई।...जो कोई औरत चौसार है होर चतुर, वो यों चलती है,

---

१. संड-मुसंड, २. वापी। *वही, पृ० १७९। ३. चितवन, ४. सुन्दरता, ५. गुण, ६. आधा ईश्वर।

जो मर्द अपें उसका होता शर्म हुजूर घरवार अपना देता सब उसके हात, उसके सामने फिरके भी नही करता बात। उमे च जानता है घर की इस्तिरी, लखनवती गुनभरी उसके हातमें देता अख्तियार जो कुछ वो करे सो करी। .. जिस औरत कूं मंग्या घरका धनी, उसके दीवकू क्यो न होसी रोशनी* ?

ग़ैर अपने दिलमें केतेक वक्त लग तकपग तकपग ऐसियां कुछ वातें कह्कर असपमें अपम हैरान रहकर भी कही।, इताल यहा रहना खूब नही, यो बात किसे पास कहना खूब नही। सो साहिर[1] थी, जेतेक बदियां में माहिर थी। भेस अपना फिराई सूरत पकडी होर। हुस्न की नज़र तले में अपमकूं छिपाई, कमाल के छज्जे परते उतर तले आई। अपने दिलकू जा भावना सो करी, भी शहर सुबुकसार[2] के उपर कदम धरी।

हुस्न धन० कूं दिल का यो रविश नही भाया, दिलपर बहुत गुस्सा आया। या चांद-सूरज की जाई, जिसपर खतम हुई जेवाई,। ख्याल होर नज़र होर तबस्सुम को फरमाई कि "इस दिलकूं इस जाहिल कूं इस नाकाबिल कूं, इस बाग में ते बाहर काडो, इसकी दोस्ती का वरक[3] फाडो। वेग इस बाग में ते इसे भार[4] ले जाओ। कई न्हाट[5] जावेगा सँभालो, इसे गजब के बदीखाने में घालो। इस बाग में भी नको देवो आने, अगर कई निकल आवेंगा तो तुमें जाने। तुमें तीन जने च नज़र चारो कधन रखो, होशियार अछा इसे जतन रखो।"

इताल कांका इश्क कांकी यारी, कांका दिल कांकी दिलदारी ? कांका गमजा काका नाज, मूं देखने ते हुई बेजार बाज ? वो तो औरत थी, कम-बुद[6] थी, कम-ज़ात थी, अपना जीव दिखलाई, यो तो मद था, दिल सँभाल्ना था, इसे यहां क्यो हिर्स आई। क्यो उसकी मुहब्बत भाई होर पर दिल धग्ना दुरुस्त नही है, एक कूं छोड दूसरे पर नज़र करना दुरुस्त नही है।

दिल होर हुस्न में पडी हुई, असी वातां हुई। जिस वक्त ग़ैर ऐसी करी काडी, उना दोनों में जुदाई पाडी। (ग़ैर) शहर दीदार ते शहर सुबुकसार कूं गई, हुस्न होर दिल का किस्सा सब रक़ीब बेनसीब कूं कई। फर्द—

बात का लाग किया करे है यो।
बार जीवां की इस्तिरी है यो‡ ॥

(ट) दिल की मुक्ति—

उधर हुस्न होर दिलकू दगा दी, उधर रकीब कूं ला दी। रकीब के दिल में भडका उठ्या, सीना फूट्या। बेटी ते बापकूं, ज्यास्त उठे झल। अपसमें अपें जलजल हलाक होता सीना ते चाक होता। शहर दीदार कूं आया। धूंढते धूंढते हुस्न के गजब के बदीखाने में

---

* वही, पृ० १८०-१८२।

१ जादू, २ हलकापन, ३ पन्ना, ४ बाहर, ५ भाग। † वही, पृ० १८३। ६ अल्पबुद्धि। ‡ वही, पृ० १८४।

दिलकूँ पाया। सेह्र में नादिर था, होने पर क़ादिर था, ख्याल, होर तसव्वुर होकर नज़र पर कुछ मंतर सुट्या दाने, यो तीनों हुये दीवाने ।...उन नापाक ने फुर्सत पाया, **हुस्न** के गजब के बंदीखाने में ते दिल भार ल्याया।...**दिलकूँ** शहर **सुबुकसार** कूँ ले चल्या ।...उसमें एक कोट। उस कोट का नाँव हिजराँ। उस कोट में दिलकूँ भाया। दिल बहुत जफ़ा पाया, अपनी जीवनते बेज़ार हो आया, यो आशिक़ी पर बहुत पचताया ।...**हुस्न** क्या सबब मुँजपर एता गुस्सा करी, क्या मेरा गुनाह देख्या कि दीवानी हुई वो परी। क्या मुजते चूक आई नाग-हानी बला मुँजपर भाई।...खुदाते बी नहीं डरी, दिल में आया सो करी। पूछना, विचारना, एकस के कहे सुने पर क्या नाहक एकसकूँ जीवों मारना* ।...

हुस्न बी अजब तमाशे की धन है, तमाशे का उसका मन है।..वो मेह्र व प्यार क्या हुआ ?†...

वो जीना क्या हुआ ? वो तरसना वो तपना क्या हुआ ? वो यारी होर बेजारी जों **वजही** साहेबेदर्द अपने जमाने का फर्द कता है, कि :

हर कि रा मन यार करदम् ओ ब-मन अगयार गश्त ।
क़ीमते हम् चूँ दोस्त की आखिर बमन दुश्मन न शुद ।।२६।। (३)

(त) नारी-निन्दा--

मुँजे बहुत लगता है इस ठार अजब, अजब अजब हजार अजब, औरत अजब है शकर, वले इस शकर में तमाम भरे हैं मकर। बोले हैं कि शेर शैतान ते मकरे, जनाँ ते खुदा अपनी पनाह में रखे। यो दोनों बलायाँ कूँ को जीत सके, उनो कूँ समजाने किस आकिल कूँ अहे बल, नादान ज़ात। इनों कूँ तलबे-अक़ल, समजकर नहि करतियां काम, खोल बोले बी नहीं होता फ़ाम। यो कौम बहुत जाहिल, कम-अक़्ली उनोंकूँ हुई है हवाल।...यों क्या दुनिया में औरताँ होकर आइ यो है, यो औरताँ नहीं खुदा कियां बलायाँ[1] हैं। घर में अछ कर एता गलवाल करतियाँ, अगर यो भार निकलतियाँ तो क्या बला करतियाँ ? इसी च ते खुदा उनोंकूँ छिपाया, 'घर में ते भार नको निकलने देओ' कर फरमाया। अगर घर में ते उनों का पाँव भार पडे, खुदा जाने बेचारे पर मर्दा पर क्या क्या वाक़ा खडे। घर में उनोकूँ यों छिपाते, जों शैतानाँ कूँ शीशे में भाते।... जानतियाँ, अक़ल उधरै च हैं अपे हैं जिधर", अपनी अकल के अंगे दुसरे की अकल किधर?... दावा बड़ा अक़ल न्हन्नी।...हज़ाराँ में एक नेक जनाँ, उनो च कते[2] हैं गुनवंत धनां, उनो च कूँ कते हैं भी इस्त्रियाँ हैं, जिनों दुनियाँ में नाँव करियाँ हैं।... दुनियाँ में ऐसियाँ बीवीयाँ बी हुइयाँ हैं, उनों अजकूँ बी जीतियाँ है, नहीं मुइयाँ हैं‡।...

---

* वही, पृ० १८४।
† वही, पृ० १८५।
१. आफत, २. कहते। ‡ वही, पृ० १८६।

वारे वो गैर मन में ते काढी वैर, दिल कूं ख्वारी यो जारी, तिलमिलना यो जलना देख जाने क्या दिल मे ल्याई, दिलपर वहुत मेहर[1] खाई, अपने कामते आप पचताई, हेफी खाई, कि "दिलते विचडाई दिल की महवूव, यो काम अछे कुच नही करी खूब।" इधर सो दिल कलकलाता, उधर सो हुस्न कलकलानी। क्या जाने भी किधर की वला किधर आती। गैर का उतर्‌या रोस, कतेक वक्त लगन बोली अफसोस अफसोस। खातिर[2] करार कर अपस में कुछ विचार कर हुस्न धन० कने यक रुक्का लिख भेजी इस मज्मून सो "अगर तूं मुजपर गुस्सा करी है, तो मेरा गुनाह है, गुस्से का ठार है। वले, दिल वेगुनाह है, पाक है, दिलने तूं यों क्यो वेजार है? मैं तेरी मूग्त होकर खडी, तो दिल्कूं भरकी पडी। तो दिल इस वेहोशी में हुआ राजी, दिल क्या जानता मेरी दगावाजी? दिल वेहोश था, अपस में अपे फरामोश था। मस्त पर गुनाह लाजिम करना दुरुस्त नही है। मस्त पर एता कपट धरना दुरुस्त नही है। दिल साफ है मस्त होर सोते का गुनाह माफ है। जो अगर होशियार अछता, तो यो काम हर्गिज ना होता। मस्त, क्या जाने सोता, मस्त क्या जाने क्या होता। मैं तेरी बी गुनहगार, दिल की वी गुनहगार हूँ। मैं पाप भौत की, दोनो कूं वो दगा दी। दोनो की मुहब्वत में खलल भाई, एकस ते एकसकू विछडाई। तू चतुर तूं चौसार, तुजे सब नाम है, गुनहगार कूं वखशना वहुत वडा काम है।"

(हुस्न ने) सोच्या, मेरे कामाँ ते च दिल मुंजते पड्या दूर, दिलकूं एताल मूं क्या दिखलाऊं। मै दिलकी खिदमतगार हूँ, दिल मुंजे वेचेंगा तो मै वे-इख्तियार हूँ। वो मेरा साहेब मुंजे उसकी आस, मै वन्दी होकर अछूंगी उसके पास। गुस्से कूं मारना था, किसी सो विचारना था। हर एक काम कूं चार जनियाँ सो मश्वरत[3] करना, मश्वरत में वहुत फ़ायदा है। अगर अपस ते यो वात मैं न पाती, उस चार जनिया में एकस कूं वी तो अकल आती। कोई तो वी कुछ कता, अल्वत्ता चुप ना रहता। चार जने चार वात वोलते, वात का मानी[4] खोलते। किसी की अकल मे ते वी कुछ काड कर देखना कुछ वुरा नही है, यो पर्दा वी फाडकर देखना वुरा नही है। जाँ मश्वरत ना करना वहाँ मश्वरत करने गये, तो कुछ का कुछ होता, रुच का काम सव वेरुच होता*।

पुर्नमिलन—

वारे हुस्न धन मनमोहन कही कि जधांते[5] जो कोई दुनियाँ मे आया अछेगा, अजव है जो कोई ऐसा दगा खाया अछेगा। हुस्न नार दिल के सिंगार ने दीद्या[6] के अधारने वी दिलकने हजार-हजार इश्तियाक, हजार-हजार फिराक[7] सो किताव लिखी "तेरी मुरव्वत की सो तेरी मुहब्वत की सो, तेरे जलने की सो, तेरे तिलमिलाने की सो, तेरे वसाल की उम्मीदवारी

---

१ दया, २ मन, ३ सलाह, ४. भेद। * वही, पृ० १८७। ५ जवसे, ६ नेत्र, ७ वियोग।

की सों, तेरे आफताव जैसे मूँ की सों। तेरे किरनाँ जैसे रों की सों, तेरे वादल जैसे वालाँ की सों, तेरे चांद जैसे गालाँकी सों, तेरे तारे जैसे नैनाँ की सों, तेरी शकर जैसी वतियाँ की सों, तेरे अधर की सों, तेरी कमर की सों, तेरे धन की सों, तेरे वदन की सों, तेरे नाँव की सों, तेरे छाँव की सों, कि तूं तहक़ीक़ जान, ऐ यार मेरा गुनाह कुछ नहीं इस ठार। . . .यो बला **ग़ैर** ने बेसाई[1], यो आग ग़ैर ने सुलगाई। मैं आशिक़ थी, क्या करूँ, कह्या गया, मुँजते रह्या न गया। मुँजेवी झल आई, यो बला. . .अपस पर ल्याई। . . .खुदा न झलकावैं झलका झलकार, अपसकूँ मार लेते नहीं आती सार।. . .इश्क की वुरी अक़ल जितनी मुहब्बत उतनी झल। जिस मुहब्वत कूँ झल नहीं, उस मुहब्वत कूँ बल नहीं।. . .मुहब्वत झाड झल फूल, फूल झाडका दिसैगा मक़वूल[2]।. . ."

ऐसे नक़श-निगार[3] सों बहुत प्यारसों किताबत. . .**ख़्याल** के हात भेजी, रातोरात भेजी। **ख़्याल** जिसकी वावते अगली चाल, फ़िल्हाल उस हिजराँ[4] के कोट में जाकर उस मुहब्वत के मैदान के कोटमें जाकर दिलकूँ, आशिक़ क़ामिल कूँ यो किताबत अँपडाय, जबानसों बोल्या। . . .उताल **दिल** दिल न सँभाल हुस्न की किताबत देख आहाँसों सीना जाल्या, अँखियाँ मेंते लहू के अंझू ढाल्या, बैत—

पडन रुक्का दिया **दिल** जीव के हात।
किताबत कूँ कते आधा मुलकात।।

. . .अपस में अपे फ़िक्र करचा, भी इसमे क्या मक्र है कर डर्‌या। **दिल** दोचीता, दूद का जल्या छाछ फूँक पीता। कह्या. . ."वो गुस्सा क्या था, यो प्यार क्या है? ऐसे प्यारकूँ एतवार क्या है? ऐसे प्यारकूँ कौन पतियावै, ऐसे प्यारते एक अधे वक्त जीव जावै। रुक़्क़ा खोल पड्‌या, अपना हात अपे लड्‌या। कहा, 'ग़ैर पर हजार हजार लानत. .है तो एक बला हो आई, नापाक ने जीवपर ल्याई।. . .दिलने वी समजा कि गुनाह **हुस्न** का नही,. . .उस हरामजादी कमवख्त का है, गुनाह उस पापिन बेरहम दिल-सख्त का है, वले पुख़्त छिनाल, बहुत नाजुक चली चाल। हुस्नकूँ टाली, रखवालाँ कूँ वी उछाली। झगडे का झगडा ल्याई, झगडा लाकर वी दोनों कूँ मिलाई*। फ़र्द—

ऐसे चलन्ताँ में कोई अगर आवै।
गर फ़रिश्ता अछै दग़ा खावै।।

ज्यों तोडें त्यों साँदै, ज्यों खोले त्यों वाँदै।. . .

दिल ने. . .**हुस्न** धन० कूँ लिख्या कि. . ."तेरी खूवी की सों, तेरी महवूवी की सों, तेरी मतलूवी की सों, तेरे मुखमक़वूल की सों, तेरे सीसफूल की सों, तेरे नत की सों, तेरे

---

१. खरीदी, २. पसन्द, ३. रूप-रेखा, ४. वियोग।
* वही, पृ० १९१।

सत की मो, तेरी मतवाली आँखो की सो, कबूलमूरत नाक की सो, तेरे इस नाजुक नरम लाल होंटो की मो, तेरे हातां की मेंहदी लगाई सो उस रगीले बूटां की मो, तेरे नबातां जैसे दातां की सो, तेरे अवलो च वैमी वातां की सों, तेरे फूलां जैसे हातां की सो, तेरी जुल्फां के तार की सो, तेरे गलेके हारां की सो, तेरे चाँद वैसे जोवन की सो, तेरे चाँदनी सार के झलकने तन की सो, तेरे शेरनी वैसी कमर की सो, तेरी अजदहा वैसी कमर की सो, तेरी रानां[1] की सो, तेरी साक की सो, तेरे शोक होर इस्तियाक की सों, तेरे पाव की सो, तूं चलती सो उस तेरे पाँव तले के ठाँव की मो। तेरे कॅठ की सो, तेरे कॅठमाल की सो, तेरी ठुड्डी की सो, तेरे गाल की सो, तेरी नाज़ाँ भरी चाल की सो, तेरे घूगरवाले वाल की सो, तेरी कबूल-सूरत[2] की सो, तेरी मदनमूरत की सो, तेरी वफा की सो, तेरी जफ़ा की सो, कि जो मैं यो हुवका पडया, तो सो हिस्सा अगला मुंजे मुहव्वत का असर चडया। यहाँ न गुनाह् तेरा है, न कुछ तकसीर मेरा है। इतना करी सो यो गैर, इताल जान दे यो वैर। इताल खुदा जानता है कि मेरा दिल तेरे नाँव वहुत है साफ, मेरे दिल में तेरे बाव नही कुछ खिलाफ़। अगर सच पूछेगी, तो ऐ मनमोहन परी, इतना सब तूं च करी। अगर तूं ख्याल होर नजर होर वफा होर तबस्सुम कूं कह कर मुंजे दारुये-बेहोशी न पिलाती, तो मुंज पर होर तुजपर एतो बला कैं आती? तूं करने गई छन्द, गैर ने वहाँ अपम कूं यो करी बन्द। इसी च ने कते है, कि औरत नाकिस-अकल है, यो कदीम नकल है। औरत अपने घरबार कूं खूब है, औरत साग सवजी वेसवार कूं खूब है। घर का धदा उसका काम है, बाकी धदे का उसे क्या काम है? घर की रहनहारी, घर का खबर उसे मालूम भारके कामां क्या जानती बेचारी। महबूब की वात, फूल का पात, कुमलाते बारां नई, वास निकल जाते वार नई। बावरा, उस बावरे पर क्यों करना पतियार (महबूब है) जिसकूं खुदा दिया, मान, जिसकू खुदा का ध्यान, जिसकूं खुदा की पिछान, जिसका रोशन ईमान, जिसका वडा ज्ञान चतुर सुघड सुजान।

अकल पादशा ह् जो शिकस्त खाया, फिरकर शहर तन (वदन) में आया, खुदा जाने किधर जा मूं छिपाया। दिल तीर खा अडया, झगडे में घोडे परते पडया। हो सवकि अकल का सर-लश्कर[3] था, वहुत दिलावर था, जो इश्क के लश्कर ते मोड खाया, शहर हिदायत कूं आया। हिम्मत कूं बोल्या कि दिल तो जख्मी होकर पडया, हुस्न के हात चडया। अकल शिकस्त खाकर तायव हुआ, खुदा जाने किधर गायव हुआ। जो कुछ कजा थी, सो हुई, खुदा की रजा सो हुई। हिम्मत ने सिर धुनकर कह्या कि "अकल का मुंज पर हक वहुत है, हकयारी यो है कि इस वक्त अकल होर दिल की खबर लेना उनोकूं तकवा[4] देना। वैत—

जिसे जो कोई प्यार करता है।
हकयारी वो यार रखता है* ॥

इश्क के लश्कर सो बी फिरकर झगडा करें रगडा करें, यक नाँव करें, मारें

---

१ जांघ, २ वुप्ट आकृति, ३ सेनापति, ४ पतिव्रता।
* यही, पृ० १९३।

या मरै। **हिम्मत** यो बातकर ल्होआ[1] हात कर अपना लश्कर मुस्तैद किया,...एक-एक की गिनती लिया। चारों तरफ ते उठियाँ फौजाँ, जानो कहर[2] के दरिया की मौजाँ। शहर **दीदार** की तरफ चल्या,...जानो डूँगर हिल्या, ठारें ठार ख़लक खलबल्या। केतेक देसाकूँ क़ामत के बोस्तान[3] जमें आया। भाई कूँ अकल होर दिल का अहवाल पूछ्या गले लाया।

कामत बोल्या कि..."ए हिम्मत तू खूब यो पूछ्या। तुजपर हज़ार रहमत।... अक़्ल पादशाह एत्याँ कूँ लिया-दिया, खिलाया-पिलाया, वले इस वक्त उसे पूछने तुझ बगैर यहाँ कौन आया?...एताल क्या पूछना उसका न हाल? आज यक साल है, कि दिल हिजरां[4] के कोट में वहुत बदहाल है, होर **अक़्ल** वी शहर। तन कूँ गया है अपने कदीम वतन कूँ गया है। इश्क़ का बहुत लश्कर है। इश्क बहुत जोरावर है। इश्क सो जेता कोई लडेगा, पूरा ना पडैगा। इश्क सों मिल चले तो च नफा है, नहीं तो वहुत जफ़ा है। इश्क़ ते लड़कर क्या किया, झगडकर क्या किया, अपसकूँ खराब किया। लडकर क्या पाया, अपना मरम गँवाया,...बहुत आखिर पचताया।...बैत—

अकल सों लड अव्वल अकल सों विचार।
अकल जाँ न चले वहाँ तरवार।।

...जो दर्द दारू[5] ते खूब नही होता, उसे दाग़ देना, यो बात इसते कहे कि बातते कोई कुछ पन्द[6] लेना। एक बात है मेरी फ़ाम कर। जितना सकैगा उतना दोस्ती सों कामकर। इश्क़ वहुत बड़ा पादशाह ज़ोरावर, समज सों लड अक़्ल ते नको पड टुक मुलाहिज़ा कर।... गरूर कूँ जीवपर आये, तो कोई ल्होये पर हात भाना, चुपे च ल्होये पर भाना सो बला जीव पर ल्याना। यो क्या फ़ाम है? यो क्या काम है?...इस फ़ाम नको पड़ नको लड, नको झगड़। सुलह सों काम न होय तो लडना, तदवीर ना चलै तो झगड़ना।...लडे कूँ नको कर इज़्तराव[7], भौताँ का होयगा घर खराव।...इश्क़ का लश्कर बहुत वेनिहायत, जिधर देखैंगे उधर उसकी विलायत। ...वडे डूँगर पर न्हन्ना डूँगर पडे, फत्तर[8] ते फत्तर जुदा होये न्हन्ना डूँगर बालू होकर सव झडे। ...सत में पीट रगडकर सूल उठाना, आकिल यो काम क्या माना। ...एताल तदवीर इसकी यो है कि इश्क़े च सों इश्क़ होना, इश्क़े च कूँ समझाना, इश्क़े च कूँ अपना करना। अगर कोई वडे की अदब रख्या तो न्हन्ना नहीं होता, नै रख्या तो कोई सीके काम में मना नहीं होता। वडयाँ की अदब रखना अपनी बडाई है, यो वडाई वडयाँ ते आई है, यो वडाई न्हन्नाँ कूँ, बडयाँ कूँ सवकूँ भाई है*।...

क़ामत हिम्मत का भाई, कामत की नसीहत हिम्मत की खातिर आई। हिम्मत लश्कर सव अपना **क़ामत** कने छोडया, कामत के कहे पर इश्क़ सों जोडया।...दिल का कपट दूर किया, हट दूर किया। इश्क़ कूँ 'बडा है' कर जान्या, इश्क़ की बडाई मान्या। इश्क़ ने हिम्मत

---

१. हथियार, २. क्रोध, ३. बाग, ४. वियोग, ५. दवा, ६. शिक्षा, ७. अधीरता, ८. पत्थर।

*** वही, पृ० १९५।**

कूं गले लगाया। इश्क कूं हिम्मत पर बहुत मेहर आई, सच्ची बात सब किसे भाई। रहनेकूं अजायब नादिर[1] एक जागा दिया, बहुत तवाजा बहुत ताजीब[2] किया। बाट की माँदगी बडी थी, सो उसका उतार हुआ, हिम्मत दिल करार हुआ। पछी इश्क ने उसे एक रात खिलवत[3] में बुलाया। हिम्मत ने लई बाता इधर उधर कियाँ, जिधर तिधर कियाँ सुनाया। उस बाताँ में अकल और दिल की बी बाताँ ल्याया। इश्क बहुत खुश होकर राजी हुआ। इश्ककूं बहुत खुश आया। आखिर करार हुआ कि इश्क पादशाह० के घर अकल कूं वजीरी देना, सब पर अमीरी देना, इश्क जैसे पादशाह कू अकल जैसा वजीर होना। दिलावर लोगों की सुहबत नहीं भाई, बादशाही जाकर वजीरी आई। इश्क पादशाह० ने अपने मेहर खुर्शेद चेहर सरलश्कर कूं फरमाया कि शहर बदन कूं बेग जा। होर अकल कूं बहुत दिलासा देकर, बहुत दिल हात लेकर इज्जत सो समजा कर मुंज लग लेकर आ। होर कह कि दिल आजुर्दा[4] नको कर, तू हमें भाई है, हमना तुमना में क्या जुदाई है? हमारी वजीरी तेरी पादशाही ते कुछ कम नही है, दिल खुश रख कुछ गम नही है* ।

मेहर यो बात सुन शहर बदन कूं रवाना हुआ, बहुत बेग च जाना हुआ। अकल सो मुलाकात किया, जो इश्क कया था सो बात किया। अकल ने दिल का पूछ्याँ अहवाल मेहर ने कहा "दिल बी है खुशहाल, तेरा बी बुलद हुआ अकबाल[5]। कर अब अनन्द बढाई, तेरी मक्सूद[6] हासिल हुई मुराद घर आई† ।

अक्ल अंदेश देख्या कि लश्कर ढूंढ्या, बादशाही का बद छूट्या, फिर लडने का सकत नही, तदबीर कूं बी गत नही। मुल्क हुआ परागदा[7], साहेब होकर बैठ्या हर एक बदा। घर-घर अमीर, घर-घर राजोन घर घर तदबीर। हर कोई सरखुद कोई नही सुनता किसी की बुद। जिसे देखता हूँ वो दिल में बदनीयत करता इश्क बादशाह सो बहुत डरता। जीत देने कने थे जो काम पडे, वो दोस्त सब दुश्मन होकर खडे। इताल फिर पडे बस्त, इत लकाँ की पादशाही का का तख्त? इश्क सो मिलने च नफा है। (अकल ने) कहया बहुत खूब हमें दोनो मिल जावें, इश्क फरमाता सो खातिर ल्यावें इश्क सों मुलाकात करें, अपने जीव के बारे बात करें‡ ।

बादशाही चिंता—

मेहर के सगात अकल रातें रात इश्क के हुजूर आया, दुआ दिया,

---

१ दुर्लभ, २ सम्मान, ३ एकात, ४ परेशान।
* वही, पृ० १९८।
५ प्रताप, ६ इच्छित।
† वही, पृ० १९८।
७ उजाड।
‡ वही, पृ० १९९।

दस्तबोसी किया। इश्क़ कूँ बी भौत भाया। इश्क़ ने वी अक़ल कूँ गले लगाया, दिलासा दिया बहुत बहुत समजाया। कहा..."इताल मै पादशाह कूँ वजीर, तेरे हात में दिया अपना मुल्क अपनी सब तदबीर। तुजे भाये सो कर।...मै मस्त हूँ,.. .मेरी निगहवानी मे अछ। मैं होर शराब, राग होर महबूब, मै इश्क़ हूँ, मुंजे यो च खूब। बाकी का दर्दसर तूँ जाने। यो दर्दसर मुंज लग नको दे आने। मँगता हूँ, इस दुनिया मे दो देस बे-गम हो अछूँ।...कब लग इस दुनिया में गिरिफ्तार हो अछना, अपने दिल की खुशी ते बेसार हो अछना। सुबा उठकर यो लोकों का कुचाट, दिल...बहुत पकड्या है उचाट। किस किस सों जँग किस किस सों आश्ती[1] करूं, केताँ कूँ समझाऊँ, केताँ की दिल दाश्ती करूँ? जनम यों च किया बरबाद, ना दिल की खुशी न खुदा का याद। एती आरजू सों दुनिया में आना होर तख्त पर बैठ इधर उधर का गम खाना। ...इधर की हाँक उधर का पुकार, मुल्क में गौगा ठारेंठार।...तख्त पर बैठ तो क्या बादशाही, आई ऐशो-इशरत का नांव है बादशाही।...दो देस की दुनिया बादशाहों के घर में दायम[2] धँगाना-अछना, दायम हंसना-खेलना, लेना-देना, पीना-खाना अछना, गाना-बजाना अछना, घर का एक यात्रा एक हाट हो रहना, रात-देस तमतमाट हो रहना।...बादशाह का घर बादशाह के जैसा दिसना ...बादशाह के घर में कोई आये तो यों अछना जानो मेजबानी कूँ आया है, गमकूँ विसर जावे जानो शादमानी कूँ आया है। दुनिया की बहिश्त है बादशाह का घर, न कि बादशाह के घर में आये बी दर्दसर।...नेम होर धरम की नांव बादशाही है।...बादशाही आती वले बादशाही कर जानना बहुत मुश्किल है, बादशाह होकर अपस पिछानना मुश्किल है। यो जो लश्करी लश्करी धने की झडती देता,त्यों बादशाह बी बादशाही की झडती देता है, यानी अदल होर इंसाफ़ करना, खलक़ कूँ आसूदा रखना, ख़लक कूँ मुराद कूँ अँपडाना[3], खलक की दुआ लेना है। ..खलीफ़ा यानी खुदा की जागा पर बैसनहार, हर एक बात कूँ हकसों करना बूज विचार। ...यो खुदा का खलीफ़ा सा दिस आयेगा, उसका चलंत बी खुदाकूँ भायेगा। ...यहां हक़ चलना हक़ पर दिल धरना है, बादशाही करना खुदाई करना है। ..एताल मुंजे तुज जैसा वजीर मिल्या है, खुदा है मद देख हुआ है।...

आखिर जिस वक्त कि **इश्क** पादशाह की अकल पर वजीरी मुकर्रर हुई, इश्क पादशाह० **हिम्मत** कूँ फ़रमाया कि **दिल** कूँ हिजराँ[4] के कोट मे **रकीब** ने दुंद सों बंद किया है,...तूँ जाकर...दिलकूँ...वहां ते मेरे हजूर ल्या, होर उसके पांव में का बंद काड[5] कर उस रकीब बे-नसीब के पांव मे भा। होर गैर कूँ जो उसकी दुख्तर[6] है...उसे बी खूब कलब जागे में कद कर आ। जो वह कई निकल न जावे, वो कई झाँकने की फुर्सत ना पावे। वो बहुत बुरी है, शकर की छुरी है, जां जायेगी, वाँ बला बेसायेगी।*

हिम्मत ने इश्क़ पादशाह कूँ सलाम किया, मुद्दा सब फ़ाम किया। **हिजराँ** के कोट कूँ चल्या।...वहां जाकर लडकर झगड कर कोट लिया, झण्डा फतह किया। दिल कूँ उस कोट में तोभार ल्याया। दिल के पाँव का बंद काडकर **रक़ीब**...के पाँव में भाया। होर **ग़ैर** कूँ बी

---

१. मित्रता, २. सदा, ३. पूरा करना, ४. वियोग, ५. निकाल, ६. बेटी।

*** वही, पृ० २०१।**

पुराने घर में छोड्या, चारों तरफ ते कादान चिया, दर्वाजों के पाटां जोड्या, कि दुसरी वार ऐसी शैतानी न करे, दो देस अदब पावे, टुक डरें। ग़ैर खातिर बी जीव तिलमिलता, वले क्या करना दुनिया का काम है, अदव किये वाज नही चलता। पछी हिम्मत ने दिलकूँ बहुत दोस्तीदारी सो इश्क पादशाह० के हुजूर ल्याया, दिलकूँ हार अक्ल कूँ होर इश्क कूँ एक जागा मिलाया। यो सब जो सगे, एक्स के गले लगे। अदावत[1] होर हट दूर हुआ, सब कोड-कपट दूर हुआ। आखिर अकल होर इश्क होर हिम्मत मिल देंगे कि दिलका हुस्न मों अकद[2] करना (क्यों) कि दिल ने हुस्न खातिर बहुत जफा[3] देख्या है, बहुत साल्या है।*

(ख) उपसंहार—

सब मिले, सब हुये खुशहाल। कहे एताल दिलकू ना विसरना, यो काम अदेशे हैं सो करना। इस काम कूँ सब करकर दिये। व्याह का काज माडे, डरे, ठारेंठार दिये घर सवारे। जागा जाग नक्श नगारे। सदर[4] बिछाये पाचे, रंभा, उरवसी, मेनका पातुरां नाचे। ठारेंठार आराइश[5] किये। दिल सूरज का हुस्न चाद सो जलवा दिये नाज, ग़मजा, इशवा, लताफत, मेहर छंद यो चदनियां सारिया उस सूरजपर उस चांद पर तारे वारियां। सुंदरी तमाशा देखने आई, जोहरा ने जल्वा गाई। इताल गमे विसरने खातिर इशरत की खिलवत करने खातिर फूलां मो सेज सवारे छपर पलग का पर्दा उतारे। दोनो दिल खोल दिये, गुजरा किस्सा बोल लिये। एकमकू एक गले लाते, एकस पर एक कुर्बान जाते। एक्स की खातिर एक तडफडाते, एक्स के एक पाँव पडते आह मारते उनास भरते। एकमकूँ एक देखते नींद उड गई, नही सोते। इताऊ की खुशी याद आई तो हँसते, अव्वल का दुख याद आया तो रोते। अपस में अपे ज्यों जाते त्या बहुत सवाद सो सब रात गुजराते। पाँव में पाँव, सीने सा सीना अधर पर अधर हात में हात दोनो मिल यो सोते, जानो एक वजूद एक जाते। मुरव्वत चुल्बुलाने लगी, मुहब्बत आख्यां में घुलने लगी, वगाडया शोर किया। घुंगरू गुल उचाये, कमर ते जर कमर खुलिया, हारा सीने पर दुंद लाये, फूला खूये[6] में भिगे तो का तोये च कुमलाये। खुश्बोई की डोरी छुटी, चौवर वास की महकार उठी। दो चार प्याले शराब पिये, दुनिया में जो कुछ करते सो गये†।

हुस्न धन हांक मारी, चिलचिलाकर उठी। दिल वादशाह चतुर जौहरी। हुस्न नार करी रोन के वहाने। दिल लग्या गले ला-ला समझाने। रोती थी, सो यकायक हस पडी भी, अपस में वो गले लगने लगी घडी-घडी भी। वो ही मुहब्बत वो ही प्यार, एकम पर एक सदके[7] एकम पर एक बलिहार। दोनो कूँ हुआ वमाल,[8] अपना दिल खुश तो सब आलम खुशहाल। दिलकू मिल्या जीव का जानी।

दिल ने खातिर करार किया, घरदार किया दिलकूँ फरजंदाँ हुये, फरजन्दां खिरदमंदा[9]

---

१ दुश्मनी, २ व्याह, ३ जुल्म। * वही, पृ० २०३। ४ फर्श, ५ सजावट, ६ कूये। † वही, पृ० २०५। ७ नौछावर, ८ मिलन, ९ बुद्धिमान्।

हुये। उस फर्ज़न्दाँ में का बडा फ़र्ज़न्द सो यो किताब (जो) है अपने वक्त का **लुक़मान**... **अफलातून**, अपने वक्त का **खुसरो**... **फ़रहाद मजनूँ** अपने वक्त का **खाक़ानी-अनवरी-सादी** ...जो किताब पादशाह कूँ मजलिस में फिरे, मोतियाँ के दरिया में तिरे, आशिकाँ का दिल बहलाता, माशूकाँ कूँ तपाता। सब के दिलकूँ इससो काम, बहुत इसमें अक़ल बहुत इसमें फ़ाम[१]। जाँ यो अछै वाँ दिलगीरी ना आवै, सुहबत इसकी सबकूँ भावै।...

...वारे जिस वक्त था एक हज़ार व चहल व पंज (१०४५ हि०), उस वक्त जहूर पकड़ाया[२] यो गंज। जो कोई साहेबे-सखुन[३] अछैगा, जो कोई साहेबे-फ़न[४] अछैगा,[५] उसे यो सखुन[६] असर करैगा, मस्त बेखबर[७] करैगा, अपना करैगा अपनी उधर[८] करैगा। वो पिछानैगा...इंमना[९] याद करैगा...अजब मर्द[१०] था कहैगा, अजब साहेबेदर्द[११] था कहैगा।...

हज़ार शुक्र कि वारे अल्हम्दो-लिल्लाहि किताब तमाम हुआ, इताल जों हुस्न होर दिल अपनी मुराद कूँ अँपडे...त्यों पादशाह होर पादशाह के दोस्ताँ...अज़ीजाँ...ख्वेशाँ[१२] ...करावंताँ, पादशाह के प्यारियाँ, प्यारे, मांगते, मंगनहारे, पादशाह के खिदमतकाराँ ...सब अपनी मुराद कूँ अँपडो,[१३] उनों कूँ गैब की न्यामत सँपडो* ...।

---

१. समझ, २. प्रकाशित हुआ, ३. वाणीस्वामी, कवि, ४. कलास्वामी, कलाकार, ५. रहैगा, ६. वाणी, काव्य, ७. मस्त, वेहोश, ८. अपने को उस ओर, ९. हमको, १०. अद्‌भुत पुरुष, ११. वेदनावाला, १२. मिले, १३. पहुँचे।

* वही, पृ० २०५।

भाग २

मध्यकाल (१५००–१६७० ई०)

§९. मुहम्मद कुल्ली (१५८०–१६१२ ई०)

१. कवि

सामन्तशाही युगमें किसी सामन्त के सहारे साहित्य को आगे बढ़नेका मौका मिलता है। दक्खिनी हिन्दीके लिये ऐसा सुयोग्य तब मिला, जब कि गोलकुण्डाकी गद्दी पर मुहम्मद कुल्ली कुतुव (१५८०–१६१२) बैठा। यह ठीक है, कि मुहम्मद कुल्ली दक्खिनी हिन्दी का प्रथम कवि नहीं है। उससे पहले ख्वाजा बंदानिवाज (मृ० १४२१ ई०) का 'चक्कीनामा', अशरफ (१५०३ ई०) का 'नौसिरहार', फीरोज (१५६४ ई०) का 'तौसीफनामा', बुरहानुद्दीन जानम् (१५८२ ई०) का 'इरशादनामा' लिखा जा चुका था। सुल्तान मुहम्मद कुल्ली कुतुव का शासन गोलकुण्डा की बहुत ही शांति और समृद्धि का समय था। उसके दादा कुल्ली कुतुव (१५१८–४३) ने बहमनी राजके ध्वंसावशेष पर अपने राज्य की नींव रक्खी। वह एक साहसिक वीर ईरानी तुर्क था। लेकिन उसका पोता और पाँचवाँ उत्तराधिकारी एक हिन्दू माँ का पुत्र होने से अपने देश और उसकी चीजों का अधिक परिचय ही नहीं रखता था, वल्कि उनके प्रति यथाशक्ति प्रेम भी रखता था। उसके बाप-दादा जहाँ अपनी धार्मिकताके प्रमाण-स्वरूप खूब दाढ़ी रखते थे, वहाँ यह कवि-सुल्तान दाढ़ी से ही मुक्त नही था, बल्कि उसकी वेशभूषा भी विल्कुल स्वदेशी थी। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं, कि वह इस्लाम का भक्त नही था। कोई ऐसी कविता नही है, जिसमें मुहम्मद कुल्लीने अल्लाह और उसके पैगम्बर की प्रार्थना-स्तुति न की हो।

मुहम्मद कुल्लीका बाप इब्राहीम कुल्ली भाई से जान बचाकर विजयनगर में शरणार्थी हुआ था। गद्दी प्राप्त करनेमें उसे सबसे अधिक सहायता हिन्दुओं से मिली थी, इसलिये हिन्दुओं के साथ उसका अधिक अच्छा संवंध होना स्वाभाविक था। इब्राहीम की एक रानी भागीरथी आंध्र-महिला थी, जिसको ही भविष्य के महान् कवि को पैदा और प्रभावित करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। कहा जाता है—मुहम्मद कुल्ली ने तेलुगु-भाषा मे भी कवितायें की थीं, किन्तु उनके उदाहरण उपलब्ध नहीं है। अपनी कविता मे संस्कृत-शब्दों का इसने जैसा उपयोग किया है, उससे जान पड़ता है, कि उसको भारतीय साहित्य का कुछ परिचय अवश्य था। मुहम्मद कुल्लीका जन्म १५६४ ई० मे हुआ था और बाप के मरने के वाद १५ साल की उमर (१५८० ई०) में वह गद्दी पर वैठा। उसके पिताका बहुत-सा समय लड़ने-भिड़ने और राज्यके विस्तार करनेमे बीता था। कवि सुल्तानको शांतिसे कविता करने तथा प्रेम और मदिराके महोत्सवों को मनानेका पूरा अवसर मिला। उसके जन्मके एक साल बाद (१५६५ ई०) दक्षिणकी पाँचों मुसलमान रियासतोंने मिलकर विजयनगर को खत्म कर दिया। उसके समकालीन

अकबरने गुजरात तक ही अपनी विजयको सीमित रखा। इस प्रकार दक्षिण और उत्तर दोनो ओरसे किसी बडे शत्रु का भय नही था। हाँ, पाँचो बहमनी रियासतोकी आपसमें कभी-कभी अनबन होती रहती थी, लेकिन उसने मुहम्मद कुल्लीके समय कोई गम्भीर रूप धारण नही किया। मुहम्मद कुल्लीकी बहिन चाँद बीबी अहमदनगरकी प्रसिद्ध वीरागना थी, जिसने मुगलोके सामने सिर नवाना स्वीकार नही किया। मुगल-साम्राज्यका सीधा सबध अभी गोलकुण्डा या बीजापुरसे नही हो पाया था।

गोलकुण्डाका यह रगीला सुल्तान कविताकी भाँति दूसरी ललित-कलाओका भी प्रेमी था। मदिरा, मदिरेक्षणाका प्रेमी तो उसे होना ही चाहिये था? जवानीमें वह गोलकुण्डाके समीप चचलम् की नर्तकी भागमतीको अपना हृदय दे चुका था। इस प्रेमकी कितनी ही कथायें प्रसिद्ध है। इसी चचलम् गाँवमें मुहम्मद कुल्लीने अपनी प्रेमिका भागमतीके नाम पर भाग-नगर बसाया। पीछे जब भागमती राज-महिषी बनकर हैदरमहलकी उपाधिसे विभूषित की गयी, तो भागनगरको हैदराबादके नामसे प्रसिद्ध करने की बहुत कोशिश की गई। इतिहासकार फरिश्ता तक ने लिखा है कि हैदराबाद नाम रखा तो गया "लेकिन दरम्यान खलायक मशहूर ब भागनगर अस्त, न हैदराबाद" (लेकिन लोगोमें यह शहर हैदराबादके नामसे नही, बल्कि भागनगरके नामसे प्रसिद्ध है)। फरिश्ताकी शिकायत हो सकती थी, लेकिन अब तो दुनियाँ भागनगर को कब की भूल चुकी है और सभी हैदराबाद को जानते है। सभव है, आध्र-प्रदेश की राजधानी होने के बाद फिर उसे भागनगर बनने का सौभाग्य प्राप्त हो।

सुल्तान मुहम्मद कुल्ली (१५८०-१६१२ ई०) अकबर का तरुण सम-सामयिक था। वह गोस्वामी तुलसीदास की मृत्यु (१६२३ ई०) से ११ साल पहिले मरा। कहते है, उसने एक लाख से अधिक पद्य (शेर) रचे।

२ कविता

भाषा—मुहम्मद कुल्ली ही नही, बल्कि दूसरे भी मुसलमान कवियो के सामने देशभाषा को अपनाने के समय यह सवाल बराबर आया, कि किस रूप में भाषा को अपनाया जाय। दक्खिनी-हिन्दी के इन कवियो की रचनाओ में सस्कृत और हिन्दी के शब्द बहुत अधिक मिलते है, जिन्हें आगे चलकर कम-से-कम करते अन्त में केवल व्याकरण हिन्दी का रहने दिया गया। पर, पुराने कवियो ने भी हिन्दी छन्दो को कभी नही अपनाया, वह सदा अरबी छन्दो को लेते रहे। इस प्रवृत्ति को देखने से साफ मालूम होता है, कि यदि हिन्दुस्तान ईरान की तरह पूर्णतया मुसल्मान हो गया होता तो हमारे छदो की भी वही गति हुई होती, जो कि ईरान में हुई। ईरान के फिरदौसी जैसे राष्ट्रवादी कवि भी अरबी-छदों का ही प्रयोग करते रहे। विद्वानो को बडी प्रसन्नता हुई, जब कि मध्य-एसिया की मरुभूमि से मानो की किसी पुस्तक में पुराने ईरानी छद देखने को मिले। वस्तुत इन कवियों ने भाषा के हिन्दीकरण की ओर उतना ध्यान नही दिया, जितना कि उसके इस्लामीकरण की ओर।

मुहम्मद कुल्ली की कविता पर सूफी विचारों की भी छाप है, इसलिये यह कहना मुश्किल है

कि वह कहाँ लौकिक प्रेम का वर्णन करता है और कहाँ पारमार्थिक प्रेम में चला जाता है। पिया के **चरना** और साईं **समझावना** ऐसी ही संध्या-भाषा की कवितायें हैं। इसका असर वियोग-संबंधी कविताओं में भी मिलता है। चाँदनी और पिया भी एक सुंदर कविता है। नखशिख के भी कितने ही वर्णन मुहम्मद कुल्ली की कविता में मिलते हैं। प्रेम और बुद्धि का झगड़ा सभी जगह कवियों के हृदय में रहता है। मुहम्मद कुल्ली बुद्धि-पंथी नहीं, प्रेम-पंथी हैं।

गोलकुण्डा पर ३२ वर्ष शासन करके कुल्ली ने गोस्वामी तुलसीदास के देहान्त से ११ वर्ष पहले शरीर छोड़ा। इसी ने हैदरावाद को संस्थापित कर चहारमीनार, दादमहल जैसे अनेकों सुन्दर प्रासादों से अलंकृत किया, जिनमें से अब थोड़े ही बाकी रह गये हैं। हमारा सौभाग्य है कि हिन्दी के इस महान् कवि की साहित्यिक कृतियाँ अब भी सुरक्षित हैं, यद्यपि वह नागरी-अक्षरों में प्रकाशित नहीं हुई हैं।

सुल्तान मुहम्मद कुल्ली कुतुवशाह की कवितायें दूसरी दक्षिणी कविताओं की तरह अरवी-लिपि में लिखी गई हैं। यद्यपि तथाकथित मुगलों के आदिपुरुष तैमूर के समय अरवी की सुधरी और सुन्दर लिपि नस्तालीक आविष्कृत हो चुकी थी और बाबर तथा उसके उत्तराधिकारियों ने उसका भारतवर्ष में खूब प्रचार किया, लेकिन दक्षिण मे बहमनी-राज्य अब भी टेढ़ी-मेढ़ी अरबी लिपि को ही इस्तेमाल करते थे। मुहम्मद कुल्ली का दीवान (अकारान्त क्रम से कविताओं का संग्रह) कवि के जीवनकाल ही मे लिखा गया, अब भी मौजूद है। उसके अक्षरों की सुन्दरता देखकर चित्त प्रसन्न हो जाता है। अरबी-लिपिमें स्वरों की कमी के कारण हिन्दी, विशेषकर तत्सम शब्दों का लिखना कठिन था, किन्तु उन्हें शुद्ध लिखने के लिए मुहम्मद कुल्ली के दीवान में उसी तरह स्वर-चिह्नों को बड़े ध्यान से लगाने की कोशिश की गई है, जैसे कुरान लिखने में।

धार्मिक त्योहार और रीति-रिवाजों के बारे में मुहम्मद कुल्ली ने कितनी ही कवितायें की हैं, किन्तु उसका जौहर तब खुलता है, जबकि वह धर्म की लक्ष्मण-रेखा से बाहर जाता है। वसन्त इस्लामी त्योहार नहीं था, जलवा (सोहाग) भी प्रेम से अधिक सबंध रखता है, वर्षाकाल और ठंड-काल (शीत ऋतु) के वर्णनमें कवि मुक्त होकर प्रकृति के क्षेत्र में विचरण करता है।

अन्य राजाओं और सुल्तानों की तरह इस रसिक कवि का अन्तःपुर भी सुन्दरियों से भरा हुआ था। भागमती नृत्यकला और संगीत में उस समय अद्वितीय थी। जिसके लिए मुहम्मद कुल्ली का उस पर उतना ही प्रेम था, जितना उसकी मृत्यु के सात वर्ष पहले गद्दी पर बैठनेवाले जहाँगीर का नूरजहाँ से (अथवा शाहजहाँ का मुमताजमहल से)। भागमती अभी भागमती ही थी, जब कि उसके नाम से भागनगर बसा। किन्तु जल्दी ही सुल्तान मुहम्मद कुल्ली ने अपने हरम में स्थान देकर उसे हैदरमहल का नाम प्रदान किया और जैसा कि अभी कहा, उसने असफल प्रयत्न किया कि भागनगर को हैदराबाद कहा जाय। हैदरमहल की प्रशंसा में कई कवितायें मुहम्मद कुल्ली ने लिखी हैं। भागमती गुण में ही नहीं, रूप में भी विशेषता रखती थी।

३ मंगलाचरण

(१)

चँद सूर तेरे नूर[1] ते[2] निस दिन कुं नूरानी[3] किया।
तेरी सिफत[4] किन[5] कर सके तूं आपि मेरा है जिया ।।
तुंज नाम मुंज आराम है, मंज जीव सो तुज नाम है।
सब जगकूं तुझसाँ काम है, तुज नाम जपमाला हुआ ।।
तुज याद मे जग मोहिया, है जग उपर तेरा मया[6]।
जो जग मँगे[7] सो तूं दिया, तूं ही जगत का है दिया ।।
जीता हूँ तेरा आसते, आया है रह्‌म[8] अकास ते।
जे कुच मँगूं तुज पासते, सो है सो मुजकूं तूं दिया ।।
भौतिक[9] मया सेती अपन, दीता[10] कुतुब कूं सब दखिन।
सेऊँ[11] नबी[12] का नित चरन, जब लग है तन म्याने[13] जिया* ।।

(२)

दिला[14] मँग खुदाकन[15] कि खुदा काम देवेगा। तुमन मनके मुरादाँ[16] के भरे जाम[17] देवेंगा ।।
खारिज[18] की अगिन कह[19] के पानी से बुझागा। बराहिम नमूने[20] मुझकूं सुख आराम देवेंगा ।।
दु अलम[21] के दुवारे खुले हैं ऐश[22] के खातिर। जो कोई नबी[23] नामसो दिल राम[24] देवेंगा ।।
जे दिल मैं मुहब्बत अली व आले-अली[25] बाह। उसे खूने-जिगर दारुवे[26] नाकाम[27] देवेंगा ।।
न खा गम तुंजमाने[28] का तेरा काम खुदासों। हर एक पस्तिमे[29] तुजकूं बुलद नाम देवेंगा ।।
अपन बख्त की रोतें[30] कही दिल में न कर गम। तुजे दारुवे सेहत[31] सो शफाजाम[32] देवेंगा ।।

रकीबों[33] के दुखो सेती कुतुब शाह तूं न कर गम।
खुदा सारे रकीबाँ के गले दाम[34] देवेंगा† ।।

---

१ प्रकाश, २ से, ३ प्रकाशमान, ४ गुण गान, ५ कौन, ६ माया, छोह, ७ चाहे, ८ कृपा, ९ बहुत कुछ, १० दिया, ११ पूजूं, १२ पैगम्बर मुहम्मद, १३ इतने में।

* कुल्लियात सुल्तान मुहम्मद कुली कुतुब सपादक डॉ० सैयद मुहीउद्दीन कादिरी ज़ोर (भाग १) पृ० ३।

१४ हे हृदय, १५ भगवान् के पास (रुहेलखडी), १६ अभिलाषाएँ, १७ प्याला, १८ बाहरियो, विद्यार्थियो, १९ कोप, २० इब्राहीम की भाति, २१ दोनो लोक, २२ आनन्द, २३ पैगम्बर (मुहम्मद), २४ आराम, २५ अलीको सन्तान, २६ दवा, २७ बेकार, २८ दुनिया का, २९ अवसाद में, ३० अपने भाग्य की निकृष्टता से, ३१ स्वास्थ्य की औषधि, ३२ स्वास्थ्यका प्याला, ३३ ईर्ष्यालु, ३४ फदा, फाँसी।

† वही, भाग २ (दीवान पृष्ठ १)।

४. उत्सव

(१) नौरोज़ (नव-वर्ष)

नवा नौरोज़[1] नवरंग जों कलियाँ-कलियाँ खिलाया है।
बँदा नारियाँ कूँ फूल चुनडियाँ कमल कंचुकियाँ खिलाया है ।।६४५।।
सुरंग फुल प्याले शबनम[2] सों धुला मय[3] भर गुलाली तिस।
सबज़ रंगी निहालाँ[4] नौरँगियाँ हत[5] दे पिलाया है ।।
दिसें जों बुलबुलाँ तिलतिल[6] तलाँ नारियाँकी नरगिस[7] पर।
प्रेममय परमलाँ[8] दे तिनकूँ जीवाँ दे जिलाया है ।।
तरोताज़े[9] तरावतसों कमल, गुललाल नारियाँ कूँ।
बँदावन ताफते हरिये उपर फूलाँ फुलाया है ।।
भँवर फूलाँ के पिछड़ी[10] में हो काला जों कि कोयल हो।
हरी डालाँ उपर फिर फिर सुंदर फुलकर जलाया है ।।
चलाने ते भँवर के भर रहे सरवन[11] हमन कर की।
कयाँ मुख मोड़ि कल्याँ सों फिर खुदा एकजा हिलाया है ।।६५०।।
कल्याँ कंचलियाँ क्वाँर्याँ नार्याँ कल्याँ कूँ नौ रोज आया।
मुहम्मद सदक़े[12] कुत्बा कूँ अनन्दाँ सो मिलाया है* ।।६५००।।

(२)

पिया मुख नूर[13] ते[14] है जावदाँ[15] हम्[16] ईद[17] व हम् नौरोज़[18]।
सूरज आओ हमट[19] या न अधाँ[20] हम् ईदो हम् नौरोज़ ।।१३७।।
मुवारक[21] वन तेरे मुख-नूर सूरज ते हुआ पैदा।
खराजाँ[22] लेके आये हैं शहाँ[23] हम् ईदो हम् नौरोज़ ।।
मुबारकवाद[24] देने आइया नौरोज़ तुज दरबार।
अदिक सुखते करें तारे कुराँ हम्० ।।
यहाँ आये हैं जीनत[25] देखने तुझ वज़मे-इशरत[26] का।

---

१. नववर्ष, २. ओस, ३. मद, शराब, ४. पौधे, ५. हाथ, ६. पल-पल, क्षण-क्षण, ७. आँख की तरह का फूल, ८. प्रेममद, ९. अभिनव, १०. पंखुड़ी, ११. कान, १२. नौछावर, बलिहारी।

* कुल्लियात, भाग १, पृष्ठ १२९।

१३. प्रकाश, १४. से, १५. सनातन, अमर, १६. भी, १७. महोत्सव, १८. नववर्ष, १९. तुला २०. प्रकट, २१. बधाई, मंगल, २२. कर, २३. बादशाह, २४. मंगल हो, २५. शोभा, २६. आमोद-गोष्ठी।

यहांका शाह, देने दौलतां[1] हम्० ॥१४०॥
उतम हूरां[2] मजालिस[3] देखने आया है छन्दां[4] सो।
दिलाओ पान, बटियां बांदे स्या[5] हम्० ॥
फलक[6] नो ते सो आये पेशक्श[7] अकबाल होर दौलत।
खुशी शादी सेती हम् मजिया[8] हम्० ॥
दमेदम[9] मुश्तरी[10] होर जोहरा[11] ल्याये है खबर नसरत्[12] ॥२९॥
जो निकले दावसो[13] साहेबकरां[14] हम्० ॥
परम मोती समुन्दर दिलते तब लें जोकसों[15] भरभर।
तो आया सिज्दऽ[16] करने आस्ता[17] हम्० * ॥१४५॥

(२) सुख विलास—

सदा होवे शह बज्म[18] में येह अनन्द। कि दौलत है उस शाह का सर्द[19] बुलद।
सँवारे गगन से रंगीले महल। रतन, जोत झलकै किया सूर चन्द॥
सजन के जशन[20] में सुग्ज से भगत। दिखावें अजब दीसें सो छद-बद[21]॥
सभी साज बजते हैं गुन भेद सों। निपजते[22] हैं उस सम्जते जिनवे छद[23]॥
गरजते हैं उस धुन ते आतो गगन। जगत रक्श[24] करता नईं कुच गजद[25]॥
नहीं बज्म उस सारका[26] होर जकै। नजर न लगै त्यो सुटो[27] अग सपद[28]॥
नबी सदके कुतबा करें सुख विलास। कि दायम[29] अछो ईद के त्या अनन्द॥

(३) जलवा (सोहाग)—

परम प्यारी का जलवा[30] गाजो सारे। उसे चँद-सूरसों परियां सिंगारे॥८२१॥
सुहागां भाग फुल मस्तक खिले हैं। सहेल्यां आरती तोरे नवारें[32]॥
रखा दो तख्त[33] जलवे का खुशी सों। कि चौंवर[34] चौक मोत्यां सों सँवारे॥
चढाओ तेल अब मातों सुहागां[35]। मशाता[36] हो के जोहरा[37] हत[38] निगारे॥
पिला शर्बत देओ हाता मे बीडे। बदाओ सारियां मोत्यां किनारे॥
मुहम्मद कुत्ब शह होर उस परी कूं। खुदाया[39] रख जदांलग[40] हैं सितारे† ॥८२२॥

१ धन, २ देवकन्याएँ, ३ सभा, ४ छल-छन्द, ५ से? ६ आकाश, ७ भेंट, ८ शोक-नाशक, ९ क्षण क्षण, १० शुक्र, ११ बृहस्पति, १२ विजय का समाचार, १३ दाव से, १४ चक्रवर्ती, १५ शोक से, लालसा से, १६ प्रणाम, दडवत्, कोरनिश, १७ दरबार, आस्थान।

* कुल्लियात, भाग ३, पृष्ठ २२।

१८ राजसभा, शाह का जलसा, १९ सों, २० उत्सव, २१ छद-बद, २२ उपजते (गुजराती), २३ रुचि, २४ नृत्य, २५ हानि, २६ सारखा, सदृश, २७ छोडो, फेंको, २८ आग में धूप, सपदको धूप की तरह आगमें डालकर भूत भगाया जाता है, २९ सदा, ३० रहो, ३१ सोहाग या सोहाग रात, ३२ नौछावर करें, ३३ सिंहासन, ३४ चारो धारे, ३५ सोहाग, ३६ नाइन, ३७ बृहस्पतिग्रह, ३८ हाथ, ३९ हे भगवान्, ४० जबतक।

† कुल्लियात भाग १, पृष्ठ १६१।

(४) कंठमाला—

निपट धीट[1] गोखी[2] सों आकर खड़ी जब । सो औचट नज़र मेरी उसपर पड़ी तब ।।८६७।।
नवेली पिरितला कि है ठेर[3] नै मुज । सकी[4] मिलने तै पिउकूँ जाती करन[5] अब ।।
पियारी रै नाजुक कली जौ चँपे की । तो रेशम ते आले हैं वालाँ के उस खब ।।
दो रुख़सार[6] उसके है रंगी गुलालाँ । ओ चलने कूं देस हंसदरियाई होय सब ।।८७०।।
ओ—मुख पाक निर्मल है सूरज के नमने[7] । चँपे की कली जों सोहै नासिका छव ।।
नयन सांई के देख कुमलावै नरगिस । अधर है रसीले कि नावात[8] के छव ।।
नवी सदके[9] कँठमाल जब पैन आई । **कुतुब** कंठ लाकर चुम्या उसके दो लब[10]* ।।

(५) राग (संगीत)—

मुकट रागाँ पियारी आप रागै राग गाती है ।
मुखारे राग गाती मुक्ख लहराँसों सुहाती है ।।९०१।।
सबाही राग गाकर मुँज सुबा के तख्त बसलाओ ।
धनास्री गाके धन मुँजकूँ सुरँग प्याला पिलाती है ।
मेरे सँग मिल न जाती सुन के गाती **संकराभरना** ।
सिरी रागाँ जो गाती इस्तिरी तूँ मुँजकूँ भाती है ।।
अलापे **कानडा** गज्जा कमा भौं की चड़ाई है ।
इशक की आग में अब्रू कमाँ **कोशी** सिकाती है ।।
कि **गौरी** राग जो गावे, तो गोरियाँ का मुलक जीता ।
सुसारंग नयनि सब रंग में सुरंगों सो सुहाती है ।।
सभी रागाँ के गले फुलहार पाया है सो **मल्हारा** ।
जो गावै **रामकेरी** राम कर रावां रिझाती है ।।
सभी रागाँ मुहम्मद **कुत्ब** शह् कूँ जम सुहाये ते ।
नबी दौलत **शेअर** मेरा शकर निम्ने जगाती है† ।।९०७।।

५. ऋतु

(१) वसन्त—

वसंत आया सकी[11] जों लाल गाला । कुसुम चोला...... ।।६७५।।

---

१. ढीठ, २. चंचलता, ३. ठहरना, ४. सखी, ५. युग, ६. कपोल, ७. नाई, सदृश, ८. मिसरी, ९. पैगम्बर की बलि जाऊँ, १०. ओठ।

* वही, पृष्ठ १६८।

† वही, पृष्ठ १६८।

११. सखी।

पपीहा गावता है मीठे बैनां। मधुर रस दे अधर रसका पियाला ॥
पियारी होर पिया हत[१] में सो हत ले। सरो बन में न्हिजी[२] गल फूलमाला ॥
कँठी कोयल[३] सरस नांदा सुनावै। तनन् तन् तन् तनन् तन् तन् तला ला ॥
गरज बादल ते दादुर गीत गावैं। कोयल कूके सो फुल्वन के नियालां ॥
सदा सेवा करैं ऐसी गुसाईं। दलिद्दर दूर कर करता निहाला ॥६८०॥
नबी सदके[४] हुआ कुतुबा तेरा जीत। दुंश्मां सीने[५] में सलता दुक्ख भाला *॥

(२)

उमगों से वसंत आई नुरानी[६]। कर्‌यां वसवत[७] सख्यां[८] सब आरुसानी[९] ॥६८९॥
वसंत के फुल खिले है अपरँगीले। हुआ हैरान देख उसतेईं[१०] मानी[११] ॥६९०॥
कुतल के झूले मोहते है ओ मुख पर। कि जो फुलपर डुले भँवरा सो शानी ॥
जडित चरखया सो[१२] शह पहिले वसत जब। पिलावे नेह-मद तब शह कि म्यानी[१३] ॥
कुहुक कोयल वसंत के राग गाई। कि पाई है उस रुतमें सुख-निशानी ॥
हवा आकर सफा फुलवन कूँ तूं दे। कि देख ओ-नक्श हो हैरान मानी ॥
नबी सदके[१४] कुतुब शह बाईं जमजम[१५]। सुहावैं सेंग भरे हुस्नो सुहानी[१६]† ॥६९५॥

(३)

वसंत का फुल खिल्या है सो ज्यों याकूत रुम्मानी[१७]।
करो मिलकर सहेल्यां सब वसंत के ताईं मेहमानी ॥१९०॥
वसंत का रुत बुझाया है विरह अँगकूँ खुश्यां सेती।
नवेल्यां मिल करो मजलिस नवेला आज शाहानी ॥१९१॥
सकल झाडां कूँ लागे है जवाहर के नमन्[१८] फूलां।
सो फूलां सो करे तिल-तिल[१९] पिया पर गौहर्-अफशानी[२०]।
वसंत फूला का शबनम[२१] मय[२२] सो भर साकी[२३] सुराही में।
जो उस मद ते मदन चडकर हमन रँग होय नूरानी ॥
जो गरजे मस्त हो बादल सुराही नित करै गल-गल[२४]।

---

१ हाथ, २ डाला, ३ कोकिला-कंठी, ४ पैगम्बर की बलिहारी, ५ दुश्मन की छाती।
*कुल्लियात भाग १, पृष्ठ १३६।

६ प्रकाशमान, ७ परिधान, ८ सखिया, ९ दुलहन की, १० उसको, ११ ईरान का पैगम्बर और प्रसिद्ध चित्रकार (ईसवी तीसरी सदी), १२ चरखियो से, १३ मध्य में, १४ पैगम्बर के नौछावर जाऊँ, १५ सदा, सर्वदा, १६ सौंदर्य।

†वहीं, पृष्ठ १३८।

१७ रुम्माका पद्मराग मणि (लाल), १८ भांति, नाईं, १९ पल-पल, २० मोती की बरसा, २१ ओस, २२ मद, २३ मधुबाला, २४ कलकल शब्द।

पियो प्याला ओ गलगल नादसों हैं मेघ नैसानी[1] ।।
पिला साक़ी सरासर मय कि ता होय् करक[2] हमनाकूँ[3] ।
कि इस मयते दिसै मुँजकूँ सदा सब राज़ पिन्हानी[4] ।।१९५।।
अँबर होर यो दो मुश्को-ज़ाफ़राँ[5] का रुत[6] आया है ।
इसी ते वार् उनोका जग में करता है गुलिस्तानी[7] ।।
निछल[8] फुलके अरक म्याने[9] गलाओ तुम कदम छँदसों ।
वले[10] फितना[11] अरक[12] सब बास में करता है सुल्तानी ।।
बँधाओ हौजखाने[13] चाँदो सूरज के सहेल्याँ मिल ।
भराओ नीर अँमृत का कि खेलै रंग-अफशानी[14] ।।१९८।।
वसँत फुलका हमायल पहन् कर आई अँगन में छन ।
सौ फुल सिंगार के नकशाँमने हैरान है मानी ।।
बँदी चुनरी पिरित नकशे करी उस पर विगट तारे ।
नवे कद पर सुहाता है फुलाँ चोला अरूसानी ।।
सूरज किरना की चिर क्याँ हात में ले छरल यह चित सों ।
सहेल्याँ सों अछो मुँजकूँ सदा ए खेल अरज़ानी ।।
नजर है मुस्तफा होर मुर्तजा का कुत्ब शह ऊपर ।
कि दुश्मन की पेशानी पर लिखे हर्फे-पशेमानी ।।
उनों के दुश्मनाँ ऊपर अजल ते लान वाजिब है ।
अगर होए समरकंदी बुखाराई वो मुल्तानी ।।
नज़ाकत शेर के फनमें खुदा बखशा है तूँ तजकूँ ।।
मआनी शेर तेरा है किया है शेर-खाकानी* ।।

(२) वर्षा—

(१)

रुत आया कलियाँ का हुआ राज । हरी डाल सिर फूलाँ के ताज ।।९४४।।
मेहाँ बुँद का लेओ हत प्याला । रुप नार्याँ साजे एकसते एक साज ।।
तन थंडत[15] लरजत[16] जोवन गरजत । पिया मुख देखत कंचुकी कसब कसे आज ।।

---

१. वैशाखी बादल, २. हृदय कपाट खुलना, ३. हमको, ४. छिपा रहस्य, ५. कस्तूरी और केसर, ६. ऋतु, ७. पुष्पवाटिका, ८. निर्मल, ९. रसमें, १०. लेकिन, ११. झगड़ा, जादू, १२. शराब, रस, १३. कुंडघर, १४. रंग-वर्षा ।

* कुल्लियात, भाग ३, पृष्ठ ३४ ।

१५. ठंडा होता है, १६. काँपता ।

नारी मुख झमकै जैसे बिजली । अचल बावक में सोहे उस लाज[1] ।।
केसफूल दीखे सितारे आसमाँ । उस ज़माने की परी पद्मनी आये आज ।।
चौंधर[2] गरजत होर मेंहाँ बरसत । इश्क के चमने चमन भौरा का है राज ।।
हजरत मुस्तफा[3] के सदके[4] आया बरमकाल । कुतुब शह इश्क करो दिन-दिन राज* ।।९५०।।

(२)

सहेली बनी नीली रुत में शिवानी । मेघा छाये अबर रँगारग निहानी[5] ।।९६७।।
सोहे मीस अँचल धनुर[6] ज्यों गगन पर । मिरिग[7] में मृगनियाँ की कसबत[8] सोहानी ।।
पियारी के खूये बुंद[9] मशाता[10] निगारे[11] । भवाँ कज[12] सोहें यो ज्यों असमाँ समानी[13] ।।
इशिक[14] के बने बन सो पिक नाद गावे । पपीहा के बोलाँसो पिउ-पिउ फगानी[15] ।।
चमन नादसो ताल दारु[16] बजावै । जोवन ले पखावज बजावै समानी[17] ।।
गुलाबी है गालाँ पिया ले मल्हारी[18] । नवेली नवी कोप्लियाँ तें जवानी ।।
नवी सदके[19] ऐसे मिरियसाल[20] नित नित । अली की दुआतें छतर आसमानी† ।।९७३।।

(३)

मिरिगसाल[21] आइया फिरते मिरिग-नयनी सिंगाराँ कर ।
जडित मानिक बहुरियाँ लाल मोतियाँ लेके[22] धाराँ कर ।९८१।।
बदल जूडे मे केवडे फकुड्याँ[23] झमकाओ बिजलियाँ ज्यों ।
छिपा खोपे[24] में फुलतारे बदल के अंधकाराँ कर ।।
रमीले कठ सो आलाप अब कोयल के कुहकारे ।
पपीहे नाद सो मद पिउ नित वदना[25] खुमाराँ[26] कर ।।
हर्‍या शीशा हर्‍या प्याला हर्‍या कसबत[27] हर्‍या जोबन ।
हर्‍या ज्वानी हर्‍याली में न याँ मोत्याँ के हाराँ कर ।।
निछल[28] मुख नीर पूराँ में मछ्या[29] लोचन तेरा चचल ।
जोवन गज गर्जने ऊपर लटाँ बादल के माराँ कर ।।९८५।।

---

१ उसकी लज्जालुता, २ चारो ओर, ३ मान्य पैगम्बर, ४ नौछावर, बलि ।

* कुल्लियात, भाग १, पृष्ठ १७६ ।

५ गुप्त, अप्रकट, ६ प्रकाश, ७ वर्षा-ऋतु, ८ परिधान, ९ पसीने की बूंद, १० नाइन, ११ सज्जित करें, १२ टेढी, १३ समाई, १४ प्रेम, १५ क्रदन, १६ एक बाजा, १७ सुन्दर, १८ मल्हार राग, १९ पैगम्बर की बलिहारी, २० वर्षा काल ।

† वही, भाग १, पृष्ठ १९१, १९२ ।

२१ वर्षा, २२ लेकर, २३ पखुडियाँ, २४ जूडा, २५ कमीना, २६ मदालस, २७ परिधान, २८ निर्मल, २९. मीन ।

हवा आना दिखाकर चोंप सों[1] कर साज मल्हारा।
रिझा ले शाह कूँ प्यारी बजाकर जीव के ताराँ।।
मुहम्मद कुत्ब शह के कंठ लग नित दिन लगे झड़ ज्यों।
दुजें अतिभोग गरमी ते पुहे[2] खुय बुंद[3] बाराँ[4] कर* ।।९८७।।

(४)

गरज्या मिरग[5] खुश्याँ सों सिंगारो आओ सकियाँ[6]।
पड़ता है मेघ फुइ-फुइ बोली भिगाओ सकियाँ ।।१०१८।।
अत्तार बाव पन[7] में फूलाँ के खोल तवले।
महकार[8] उचइया[9] है फिर मन में घाओ सकियाँ ।।
जों लाल फूल डाल्याँ पर त्यों दंडाँ पड़ अपने।
बाजूबंदा के सिर ते[10] फुँदने फुलाओ० ।।१०२०।।
अस्मान होर जमी सब यक रंग हो सोहाता।
है आज ऐश[11] का दिन मल्हार राग गाओ० ।।
कर किसबत[12] अहमरी[13] सब सिर पाँव लग मुकल्लल[14]।
सूरज शफ़क[15] में ज्यों त्यों हर यक दिपाओ० ।।
याकूत अधर पियाल्याँ मे भर के मय मुहब्बत।
शाहे नवल मुहम्मद तइं भी पिलाओ० ।।
नटियाँ[16] कूँ नैन पुतल्याँ के मद पिला मनी कर।
शह के मँधर-अँगन[17] में नट सों नचाओ सकियाँ † ।।१०२४।।

(५)

सालाँ व साल[18] मिरगाँ[19] आनंद सों कुजाओ[20]।
जोवन तवल[21] खुइयाँ सों नित नित तुमें बजाओ ।।१०३६।।
तज तनके जल्वे म्याने[22] जल्वेके राग सोहत।
रजनी के हत पियाला मय सबके तइं ले जाओ ।।
चुनरी जो चुनके बाँधी औ चीर उसकूँ सोहता।
बत्तीस वर्न साजाँ[23] अब तन उपर सजाओ ।।

---

१. चावसे, २. फुहार पड़े, ३. पसीने की बूँद, ४. वर्षा।

* वही, भाग १, पृष्ठ १९५।

५. वर्षा, ६. सखियाँ, ७. अतरवाली हवा का होना, ८. महक, ९. उठाया, १०. शिर से, ११. आनन्द, १२. पोशाक, परिधान, १३. लाल, १४. सुनहरे, १५. उषा की लालिमा, १६. नर्त्तकी, १७. मंदिर-आंगन।

† वही, भाग १, पृष्ठ २०१।

१८. प्रतिवर्ष, १९. वर्षा, २०. कूजित करो, २१. यौवन, वाद्य, २२. सोहाग में, २३. आभूषण।

अप सोंप[1] में गुंदे है केवडे के फूल छवि सों ।
छंद सों[2] प्याला हतेली नाइयाँ के तें ले जाओ ।।
सदके[3] नबी[4] के ईदा[5] जल्वा[6] तुमन[7] गोहावे ।
कुतुबे जमाँ के ताईं तोहफा[8] तुमें ले जाओ* ।।१०४०।।

(३) शरद—

हवा आइ है लेके भी थंड काला[9] । पिया बिन सताता मदन बाले बाला ।।१०५१।।
रहन न सके मन पिया बाज[10] देखे । होवे तन कूं सुख जब मिले पीउ बाला[11] ।।
ऐ सीतल हवा मुंज गमे[12] ना पिया बिन । भुलाया है मुज जीव[13] कूं ओ उजाला ।।
जो रात आवे चांदनी कि मुंजकू सतावे । कि चंदन[14] मुजे नईं नयन सोज[15] लाला ।।
मेरे मन कूं आता है लालन सा मिलना । मुंजे आने हैं पीव हत बंड माला ।।१०५७।।
नबी सदके[16] कुत्बा अनदाँ सो मिलकर । अपस सांई[17] सों पीवे जम मद पियाला[18]† ।।

६ कवि की प्रेमिकाएं

कुतुब के रनिवास में बहुत सी सुंदरियां थीं । जिनमें कला-निष्णाता होने से भागमती (हैदरमहल) का सम्मान अधिक था । भावुक कवि होने से वह अपनी दूसरी प्रयसियों पर भी उदारतापूर्वक अपना स्नेह वितरण करता था । सभी पर उसने कविता की, जिनमें से कुछ यहाँ उद्धृत हैं ।

(१) हुस्नी—

(१)

हुनी मिस्ते अपकूं सँवारी अजायब । सवाता[19] परी हो सिंगारी[20] 'अजायब[21]' ।।२११६।।
नवली के कद सम[22] सरा कद न होवे । कि नी राउ सने[23] है पियारी अजायब ।।
मदन फूल के रंग साडी बंदी है । मोहे उनकी मोतया किनारी अजायब ।।
तुमन याद[24] की मस्ती मुख कूं चढी है । नयन मन में मिलती खुमारी[25] अजायब ।।
नबी सदके[26] कुत्बा रिझाने के ताईं । बजाता है ताना दोतारी अजायब‡ ।।२१९०।।

---

१ जूडा, २ चाव से, ३ बलिहारी, ४ पैगम्बर, ५ महोत्सव, ६ सोहाग, ७ तुमको, ८ भेंट ।

* वही, भाग १, पृष्ठ २०४ ।

९ सर्दी, १० बिना, ११ वाला, प्रेमी, १२ पसंद, १३ प्राण, १४ खुशी, १५ फूला, १६ बलिहारी, १७ स्वामी, १८ मद्यचषक ।

† वही, भाग १, पृष्ठ ८७ ।

१९ नायन, सिंगार करनेवाली स्त्री, २० सजावट, २१ अदभुत, २२ शरीर सदृश, २३ में, २४ तुम्हारी स्मृति, २५ मदालसता, २६ पैगम्बर की बलिहारी ।

‡ वही, भाग १, पृष्ठ २२५ ।

(२)

परम मोती चुवाया[1] हूँ, सक्याँ गूँदो खुश्याँ सेतीं ।
कि मुख रूपाँ के झलकारे[2] झमकते हैं मुरां सेती[3] ॥२१२२॥
इशक[4] दाव पुंजसों खेलतीं है ओ न्हनी प्यारी ।
चँदा मुख पर नये चँदा दिखातीं है नवाँ सेती ॥
कहूँ तुज भेस के बासाँ कि या तुज भेद की कहनी ।
कि तुझ बासाँ के महकारे महकते इश्के-जां सेनी[5] ॥
महकना बास तुज तन यों कि महके सात[6] का मह ज्यों ।
पेरेम की बात करता हूँ पेरेम के आशिकाँ[7] सेतीं ॥
तेरे नैनाँ की झमकन में सोहावे भेद काजल का ।
लगे ना चाक[8] दो तन का नयन के मंतराँ सेती ॥
मुहम्मद बालपन ते है मुहम्मद के गुलामों मे ।
तो जीता दाव मैं पयाँ सों मारे सुन्नियाँ[9] सेती* ॥२२२७॥

(२) **साँवली** —

मेरी साँवली मनकि प्यारी दिसै । कि रँग रूप मैं कँचली नारी दिसै ॥२१५०॥
सोहै सब सहेल्याँ में काली अजब[10] । सरोब्रिच्छ[11] नारी ओतारी[12] दिसै ॥
सक्याँ[13] मे डोले नेहाबाजी सों जब । ओ-मुख जोत त चँदकि ख्वारी[14] दिसै ॥
तुँ सबमें उतम, नारि तुज सम नहीं । कोयल तेरी बोलाँ ते हारी दिसै ॥
तेरी चाल नेकी सभी मनकूँ भाय । सक्याँ तूँ (है)जों फुल्ल भारी दिसै ॥
बहुत रँग सों आप रंग्या सक्याँ । वले[15] कॉं[16] तेरे रगकि नारी दिसै ॥
नबी सदके[17] **कुत्बा** पियारी सदा । सहेल्याँ में जेबा[18] तुमारी दिसै ॥२१५६॥

(३) **कंवली** —

(१)

ले खड़ी कमली पियारी अपने हत म्याने[19] पियाले ।
ले बिचकती हिल्डोनी में[20] पवन जीवन हरन वाला ॥२१७१॥

---

१. चुन लाया, २. चमक, ३. प्रकाश से, ४. प्रेम, ५. प्राण से, ६. शान्ति, ७. प्रेमियों, ८. टुकड़ा, ९. सुन्नी सम्प्रदाय ।

* वही, भाग १, पृष्ठ २३२ ।

१०. अद्भुत, ११. सरो वृक्ष जैसा जिसका शरीर हो, १२. दुर्लभ, अवतारी, १३. सखियाँ, १४. बदनामी, बरबादी, १५. लेकिन, १६. कहा, १७. पैगम्बर की बलिहारी, १८. सुन्दर, १९. हाथमें, २०. मिलने में ।

इश्क बसा के भी फमा वाक खीचे आब[1] धन जो।
बेस म्याने[2] फुल जडी चोटीमने[3] दवना व वाला ॥
कँवलि मुख पर भी चडाई है या नूर[4] सेती[5]।
इश्क के फर लिखे हैं पूछो तुम उस नादाँवाला ॥
इश्के बुता[5] ते लगे है मेरे नैन म्याने[6] कुमारी[7]।
नयन लज्जत[8] मुंज चखाकर मेरे तन में कर उजाला ॥
खिचनी खिचाती खडी है प्यारि अपने खज्ज[9] सेती।
अँचल ओझलते नचाती है, नयना-पुतल्याँ का चाला[10] ॥
नौ रतन रोगन हुये है उसके अँग के रँग सेती।
चाँद सूरज के हमायल[11] पाये[12] हैं गले कँठमाल ॥
है मुहम्मदकुत्ब शह बदा[13] अली का कमतरीना।
तो अजलते उडते है मुंज सिर पे अस्मानी रुमाला[14]* ॥२१७७॥

(२)

तुज कद देख सर[15] वाहाके[16] किये है बन में।
तुज कद सोहावता है जन्नत केरे[17] चमन में ॥२१७८॥
पलकाँ नमद[18] तके कर गाल्या हु मै तके तै[19]।
जो पुतली वो हिन्दी टुक आये मुंज नयन में ॥
दो लब[20] तेरे रंगीले याकूतकूं एदये रग।
ले भीक[21] रग अकीका[22] रगी हुये यमन में ॥२१८०॥
खिल्वत[23] मे गमते[24] शह् जब डुबता है चाँद घन पर।
छुप जाय सूर जिसमें निकले जो शह अँगन में ॥
बारीक तुझ कमर देख बारीक हुआ हु जो बाल।
वैसा नही है कोई तार एक पैरहन[25] में ॥
काल्या गोरया सक्या कूं जगमें जो ध्या सो बिसरया।
कवली सकी[26] कूं देखत मै सुद[27] भुल्या दखन में† ॥२१८३॥

---

१ जल, तेज, २ केश-मध्ये, ३ चोटी के बीच, ४ आभा से, ५ सुन्दरियोका प्रेम, मूर्ति-प्रेम, ६ नयनके भीतर, ७. जुआ, ८ नयनास्वाद, ९ खाद्य, १० गतिया, ११ गलेका आभूषण (हमेल), १२ पाये (पजाबी), १३ दास, १४ ध्वजा।

* वही, भाग १, पृष्ठ २३५।

१५ सरो वृक्ष, १६ हांके, १७ स्वग के, १८ नम्दा, फर्श, १९. लिये, २० ओठ, २१ भीख, २२ एक लाल पत्थर, २३ एकान्त, २४ मौज करते, रहते, २५ परिधान, २६ सखी (तरुणी), २७ सुध।

† वही, पृष्ठ २३६।

(४) पियारी--

(१)

सक्याँ जा मना ल्याव प्यारी कुँ आज। कि सब छंद भरया का अहै सीस ताज ।।२१९४।।
कहो यों कि मंदिर कुं बहु जेब सों[1]। सँवारे वले[2] ना गमे तुज्ज[3] बाज़[4] ।।
मदन आ सताता है गर म्यान कूँ[5]। करोदाद्[6] अपे आ, तुमारा है रज ।।
अजायब[7] हैं किस्वत तुमाँ हुस्न[8] की। कि उसते सोहातां है इश्क्यां[9] का साज ।।
तु खूबान का रूप में है बादशाह। तो ल्याये हैं सब तेरे ते[10] नेह-ख़राज[11] ।।
तुमन मुक्ख का नूर जब देखूँ मैं। ओ एक छन मुझे सौ वरस का है आज ।।
नबी सदके कुत्बा ते मज्लिस सदा। सोहाता है, जो हुस्न सो[12] मुल्क लाज* ।।२२००।।

(२)

प्यारी तु बोल मारे तुज बोल नै[13] पतियार।
दिसता है बोल तेरा हर एक जों किनारा ।।२२१५।।
चोटी तेरी सो नाग् है होर जहर उसमे कडवा।
ओ घर खेलाँ में दिसती तूँ साचली[14] सँपारा[15]।
फिर फिर भँवर के निमने[16] तुज बास हूं तो लेऊं।
उस वास में नही हूँ नरगिस्स का खुमारा ।।
देख-देख कर सँदलकूँ लाना[17] मुशक कि लाना।
तू-तन की वास आता सचला[18] जिवाँ सँबारा[19] ।।
पैनी[20] है काँज[21] की काज अछरी[22] बंधी सो हत मे।
क्या जानें पाच[23] होर काच[24] ओ हिंदवी गंवारा ।।
तुज-बोल मे नमक नें तेरे अधर में रस ने।
तेरे क़नक मे कसनें होर चोटि है अंधारा ।।२२२०।।
ऐसे रतन रसन[25] सों दरिया ते कुत्ब काडे।
दो जग में उसकूँ दायम है मुर्तुज़ा[26] अधारा † ।।२२२१।।

---

१. सौन्दर्य से, २. लेकिन, ३. तेरे, ४. विना, ५. उसको, ६. न्याय, ७. अद्भुत, ८. तुम्हारा सौन्दर्य, ९. नाज़, नखरा, १०. तेरे से, ११. स्नेह का शुल्क, १२. सौन्दर्य से।

*वही, पृष्ठ २३९।

१३. नहीं, १४. सच्ची, १५. सँपेरा, १६. भँवर की भाँति, १७. चंदन को लगाना, १८. सच्चा, १९. नौछावर, २०. पहिनी, २१. एक वृक्ष, २२. अप्सरा, २३. पन्ना, २४. शीशा, २५. वाणी से, २६. पैगम्बर मुहम्मद।

† वही, भाग १, पृष्ठ २४२।

(३)

पियारी तेरे बिछड़ने ते रयन मुंज नींद आवे ना।
तुं कुदरतकी[1] घडी तुज बिन घडी पीरिन मो भावे ना ।।२२२३।।
रयन-दिन कूच[2] जाने ना जो कोई जिव आशिक है तेरा ।
लगा है याद[3] यो तेरा कि भी कुछ याद आवे ना ।।
पिरित तेरे कुं लुकमां[4] भी सके न दारु[5] देने कूं।
सेहत[6] क्या होये आशिक तें[7] जो लब शर्बत[8] चगावे ना ।।
सची तुम रात का यक रात मुंज सौ रात हो दिसता।
कना[9] किस सेज रहना मैं जो तूं सज अब-बुलावे ना ।।
तेरी इस आंच[10] ते दिल है जैसा अबलाज का गिल्ला।
कि जो नाबत[11] तूं घट है अपमकूं पिगलावे[12] ना ।।
तेरी बाता तेरी धातां[13] तेरी रीतां अहे बहु घात[14]।
देती जो कुछ तुं गाल्यां दे (अदर-) बागे दिलावे ना ।।
नबी सदके[15] इश्क बाता[16] खुदा तुजतें[17] दिया साना[18]।
तुजे कुदरत[19] पता है जो कुतुब कूं ममजावे ना* ।।२२२४।।

(५) गोरी—

सोहाता है मुख-हुस्न[20] गोरी का शबाब[21] । ओ-मुख चंद पड चंदक्यां है लाजो नकाब[22] ।२२२९।
ओ-कद[23] सर्व ने है कुंदन का निहाल[24] । झमकता है तो उगते सूरज का ताब[25] ।।
तुं रंग रस्स की बाग की है कली । तो चूता है जीवन का तुज मुखते आब[26] ।।
रसाले[27] अधर है तेरे मद भरे । सो करते हैं उश्शाक[28]-दिलकूं कबाब ।।
कहूँ जुल्फ या ताज सुबल मोहे । ओ मुख फूल पर जो कि चंद पर सहाब[29] ।।
तेरी चाल मद-मस्त ते लाजे गज । नहीं उनमें ये भेद होर ए शिताब[30] ।।
नबी-सदके[31] कुत्बा सो गोरी मिली । तो गल बाँह दे उससूं पीवे शराब† ।।२२२५।।

---

१ ईश्वरीय शक्ति, २ कुछ, ३ स्मृति, ४ लुकमान हकीम, ५ दवा, ६ स्वास्थ्य, ७ प्रेमी के लिये, ८ अधर रस, ९ कहना, १० ताप, ११ मिसरी, १२ पिघलावें, १३ ढग, १४ प्रकार, १५ बलिहारी, १६ प्रेमवार्त्ता, १७ तुझसे, १८ उसका, १९ प्रकृति।

* वही, भाग १, पृष्ठ २४३।

२० मुख सौंदर्य, २१ जवानी, २२ पर्दा, २३ शरीर, २४ बूटा, २५ प्रकाश, २६ चमक, २७ रसीले, २८ प्रेमीगण, २९ बादल, ३० जल्दी, ३१ बलिहारी।

† वही, पृष्ठ २४५।

(६) छबीली—

छबीली सों लग्या है मन हमारा। कि उस विन नहिं हमन[1] यक तिल[2] करारा[3] ।।
सवूरी[4] कूँ नही है ठौर दिल में। सवूरी क्यों करे सो करनहारा ।।
अलक फांसी सों पंखी जिव पकडने। दिखाई गाल ऊपर[5] तिल का चारा ।।२२५०।।
वसे मन में सो उसके ख्याल निसदिन। नहीं उस ख्याल बिन मुँज-मन में ठारा ।।
नयन वहरी[6] छोडी सूकी[7] डोरी सों। करै चंचल पँखी दिलकूँ शिकारा ।।
मया करना करै माशूक[8] अपे हो। कहो न क्या करै आशिक[9] वेचारा ।।
नबी सदके कुतुब आशिक़ है तेरा। सदा मिल अछ[10] न हो एक तिल[11] बिन्यारा* ।।२२५४।।

(७) लाला (लाली)—

(१)

हिल्या मन तो वाला सकी[12] सुन मो लाला[13]। विरहते मो जाला वली वालि वाला ।।२२५५।।
(जो) वन वन है आला[14] मो कर मत्तवाला। मंगे[15] मेरा ख्याला सुराही पियाला ।।
तरखता[16] है चोला मुँजे वाज ढोला। हुआ है अवोला मेरा साईं वाला ।।
अधर का पियाला दे होठों[17] हवाला। तुं कर फूलमाला तो तन जावै झाला[18] ।।
मो मन तो सों फूल्या गया मन सो तोल्या। विरह राज़[19] खोल्या तुं दे अब वसाला[20] ।।२०।।
मै गाऊं यलल्ला[21] वले मन तलल्ला। हुआ मन अलल्ला अपें आग ले ला ।।
नवी सदके **कुत्बा** तु मन सेज बसला। वुला ल्या भुला ल्या नवारो मलाला[22]† ।।२२६१।।

(२)

इश्क में मस्त मतवाला हूँ लाला। तुं अप अधरों ते मुँजकूँ लेना प्याला ।।२२६२।।
मुरा के सुर नहीं ओ रस सुरस है। अधर-रंग में हयाते आव जाला ।।
भरी जोवन जवानी भेटनी सों[23]। मो दिल मैखाना[24] प्याला देउ गुलाला ।।
खुमारो सुन काहे मुँज दे न वोसा[25]। चमन गालों मे है दँत फुल कुलाला ।।
जोवन माती पियाले नैन कीती[26]। तेरे हँसने ते होये देस[27] उजाला ।।
नबी सदके[28] रहे तुझ इश्क म्याने[29]। **कुतुब** सों क्या[30] पिरित देउ कठमाला ‡ ।।२२६८।।

---

१. हमको, २. पल, ३. धैर्य, ४. सन्तोष, ५. ठौर, ६. बाज़ (पक्षी), ७. सूखी, ८. स्नेह, ९. प्रियतम, १०. रह, ११. पल।

* वहीं, भाग १, पृष्ठ २४७।

१२. सखी, १३. मेरी लाली, १४. बढ़िया, १५. चाहता है, १६. तड़कता है, १७. अधरों से, १८. झल्लाहट, १९. विरहका भेद, २०. मिलन २१. यला-ला (शब्दानुकरण), २२. रंज।

† वही, भाग १, पृष्ठ २४८।

२३. से, २४. मधुशाला, २५. चुम्बन, २६. किया (पंजाबी), २७. द्यौस, दिवस, २८. पैगंबर की बलिहारी, २९. प्रेम में, ३०. किया।

‡ वही, पृष्ठ २४९।

(८) मोहन—

पिरित ताज़ी लगी है मुंज सखी[1] मोहन पियारी सों।
बँध्या हूँ दिल ओ नातुर छद छरी गुनवंत नारी सों ॥२३०१॥
उमेदो के अनू[2] मोती के रागां बाघ[3] दुह कर ढंक।
रयन सारी सुबह लग मुंज गई है बेकरारी[4] सों॥
तिया[5] त्रिभुवन् मवया ह् यक परन की उस चदरमुख बू।
मोहानी मब्ज[6] मारी मो शिफक अचल[7] निनारी सो॥
अजहु दिसत्या है तुज मुखमें निशान्यां साईं अंग संग क्यां।
अजहूँ घुल्तो अहै तेरी नयन निस कां खुमारी सों॥
सजन के नेह में बिन मस्त होय ने काम हासिल[8] तू।
नहीं है इश्क कूं कुछ आशनाई[9] होशियारी[9] सा॥
पिया मिलने के किस्से शौक मा को[11] रंग-रंग सेती।
न को साजन की दरी की बचा नेह की दुल्यारी सो॥
नबी सदके हुये हैं मुजकूं लावा[12] वे ऊपर लावा।
किय हूँ नेह या सौदा कुतुब गह नेह भारी सा* ॥२३०७॥

(९) हैदरमहल (भागमती)—

(१)

हैदरमहल मया[13] ते नावात[14] घोल साजे। दिन दिन अनंद सेती तबलां मदन के वाजे॥
उस सब-क्द[15] के ऊपर जल्वा[16] है नौरतन का। इश्क के पातुरो सब उस फास[17] देख लाजें।२३२३
सब आशिकां के दिल में है इश्क फूल जल्वा। पुतल्यां नैन क्यां मेरे मन में अनंद सों गाजे॥
इश्शाक का टीका लाई अपनी पेशानी[18] ऊपर। चौफेर नौरतन के तारां महज मा वाजे॥
चादर इशक का ओडे जा विरबहुटी दीसे। तेरे इश्क के रयाजा देखे हैं लाजों भाजे॥
मार्ने[19] सो विद[20] बनकर विरदा मो नाचे नरमन[21]। मावे रुमाल उडते हैं राज करते गाजे॥
सिदके नबी शुकर[22] तुजकू मिली ये पातुर। हैदर गुलामी सेती तुज-सीस ताज साजें †॥२३१९॥

---

१ मेरी सखी, २ आंसू, अजू (पजाबी), ३ फैली, ४ अधीरता, ५ क्रिया, करी, ६ हरी, ७ उषा (अचल), ८ प्राप्ति, ९ मित्रता, १० चाह से, ११ कई, १२ लाभ।

* वही, पृ० २५५।

१३ हैदरमल (भागमती) की माया (प्रेम) से, १४ मिसरी, १५ सरोज-से सीधे सुडौल शरीरवाली, १६ सोहाग, १७ पास, १८ ललाट के ऊपर, १९ २० २१ नृत्य के रूप, २२ धन्यवाद।

† वही, पृष्ठ २५७।

(२)

भवाँ-अबरू[1] में मावे बिरद बाँदे। इशक के राग तामें भेद बाँदे ।।२३३०।।
तेरे केश में कँवल होर सूर[2] आवे। कमाँ भौवां में काजलसाज सादे[3] ।।
चोली तँग अँग में नित नारँग निपजे[4]। नयन सूकाँ[5] सों गो चित नित्त फांदे ।।
सुने जाली मने[6] मन में हिलजा। इशक नादान[7] सों नित आनंद ते (वा) दे ।।
तुँ घुरकर देख रखी है किन ये तुर्रा। किते[8] काँदयाँ[9] पुछूँ न बूँझे काँदे ।।
नबी[10] सदके मिली **हैदर** पियारी। सेव्याँ सेतीं चित्तसों चित्त बाँधे ।।
तेरे अंचल पै है चँदनी का छाया। **कुतुब** डाबाँ[11] सों बिरवाँ कास बाँदे* ।।२३३५।।

(३)

नयन पुतलि हमसों करे एक बात। नयन वनमें दावा[12] के फूलाँ खिलात ।।२३५१।।
इशक किसवताँ[13] ते मुंजे मुश्तरी। इशक अँत अधर मेवा तुजकूँ सोहात ।।
इशक तोरे जोबन की सारा[14] करे। अधर तेरे कौसर[15] का प्याला पिलात ।।
अधर पर तेरे है पेरेम का निशाँ। अधर चूमते ते सो लाजैं नबात[16] ।।
उचित चाँद सोहते तेरे दो-दो दिल। तेरा मूखडा प्रेम कहानी सुनात ।।
चतुर नारियाँ में चतुरपन तुझे। कि आपस के[17] मन म्याने[18] माँगू मनात[19] ।।
नबी-सदके मावे[20] चतुर **कुत्ब** सास। कि रोयाँ मने[21] कुत्ब तारा जँतात† ।।२३५७।।

(१०) हातम—

नारी सो है तुज अताले वाला[22]। झलकार सही...... ।।२३७४।।
संपोली उपर भ्रंग[23] सुट्या[24] चाम। छूटे अलकाँ में फूलमाला ।।
रतन ते अदिक दिपै होटों पर। अधरों के ऊपर जडे सो लाला ।।
देख चँदनी में चंदमुखी कूँ। सुरज कूँ पिलाये छंद सों पियाला ।।
दिन रात हुआ जो खोले घन केस। निस में जो हँसे पड्या उजाला ।।
नारयां में जो नाज[25] भाग अचकल। अँग सँग सों करै पिया निहाला ।।
नित पीवे अली के सदके हातम। कुत्वा के अधर ते मय पियाला‡ ।।२३८०।।

---

१. भ्रू-लता, २. सूर्य, ३. संधान करे, साज, ४. उपजे (गुजराती), ५. काँटे, ६. स्वर्णजाल में, ७. अज्ञ, ८. कितना, ९. रोये, १०. पैगम्बर की बलिहारी, ११. दाव-पेच।

*वही, पृष्ठ २५८।

१२. कामना, १३. पोशाक, १४. सार, १५. स्वर्गकुंड, १६. मिसरी, १७. अपने, १८. मन में, १९. मिन्नत, २०. शरण, २१. राजाओं।

† वही, पृष्ठ २६२।

२२. उतावली चाल, २३. भुजंग, २४. छोड़ा (पंजाबी), २५. हावभाव ।

‡ वही, पृष्ठ २६८।

(११) हिंदी छोरी—

रँगीली साईं ते तूँ रँग भरी है। सुगड सुदर सहेली गुन भरी है ॥२३९२॥
लटकना बिजली निमने[1] उस सुहावै। वो हिंदी छोरी वहु छंद[2] शहपरी[3] है॥
चँदर-मुख सोहन्याँ जब नाचत्याँ है। जो तनमें तूँ सुरँगी जो परी है॥
सभी हूरा[4] न आमें[5] आज तुज सम। कि तूँ-बाला में सब अवर[6] भरी है॥
उपजता है तेरे मुखतें जे शाबी[7]। ओ शाबीते मो जोहरा[8] मुस्तरी[9] है॥
नबी सदके रिझाये कुत्ब शहकूँ। तोसकिया में तूँ जैसी शहपरी है* ॥२३९८॥

(१२) पद्मिनी—

(१)

तुज नाक मोती मुख ऊपर देताहै आबसों[10]। या खिज्र[11] के चश्मेमें तिरता बुडबुडा[12] पुरआबसो[13]॥
ओ बुडबुडे का अक्स[14] तेरे मुख ऊपर यों छाया। ज्यों चाँदनी की जोतिमने[15] मुश्की कलक[16] है दाबमों।
तुज नैन की रावत[17] चढाई भी कमाँना स्म कर। सब आशिकाँ में मुज ऊपर राखे चापनाबु[18] सो॥
जब नाक में मवरा सुहागा पैन आई जल्वे में[19]। वोफुलदे मुज शान पर मिक्वा करे दाब-ताब[20] सो।
मुक्वा[21] जो लटकाई भुनक बालो में पद्मनि पद्मवे। एक तिल[22] में हिलजाई[23] मुंजे उस कमरे के कुल्लाबम॥
कुल्लाब मुट मन में कऊ[24] खैंची अलक डोरीसेती। अप इश्क के खलाँ दिखाती है अजब लबाब[25] सो॥२४०५॥
हस्त्रिन नागिन होर चित्तिनी भुलकर रहे धन भेद में। वो पद्मिनी मिलकर सोहे अब कुत्बशह नव्वाबसो† ॥२४०५॥

(१३) सुंदर—

(१)

चदर-मुख तुज लाल लब है, दसन जो तेरे तारे हैं।
कहाँ यह चाँद काँका है, किस असमाँ तें उतारे हैं॥

---

१ नाईं, भाँति, २ चतुराई, ३ परियों की रानी, ४ स्वर्ग की अप्सराएँ, ५ होंगी (पजाबी), ६. एक सुगंधित रत्न, ७ जवानी, ८ बृहस्पति, ९ शुक्र।

*वहीं, पृष्ठ २७१।

१० तेज से, ११ अमृत कुंडका रक्षक देवपुत्र, १२ बुलबुला, १३ यौवनपूर्ण, १४ छाया-चित्र, १५ प्रकाश में, १६ काला धब्बा, १७ रावट, १८ अगूर, १९ सोहागरात, २० ताप, प्रकाश, २१ एक आभूषण, २२ पल, २३ हिलमिल गई, २४ कहूँ (कौरवी), २५ प्रकार।

†वहीं, पृष्ठ २७२।

अगर यह चाँद उस असमाँ का कहे जग तो कबूलूँ क्यों।
समाँ के[1] के चांद मुख में कवन देख्या जो तारे हैं ।।
सुरज चँद सों सुँदर मुख कूँ दिये तश्बीह[2] सब शायर[3]।
वले[4] पूँछै जो मुँजकूँ तो उस-अंगे[5] ओ बेचारे[6] है ।।
कहे देखे करिश्मा[7] कर वो सुँदर नाजनी मुँजकूँ।
तो उस नैंना के झलकारे झलकते जो कटारे है ।।
समा आ बाज के ऊपर हदफ[8] सो सूर[9] करना वो।
भवां के कौस सों तारे के नयनाँ तीर मारे है ।।२४१०।।
सुरज होर चांद के किरना झलकते सो दिसै मुज यों।
कि जों मँगते सुँदर कने[10] ओ गदा[11] हो हत पसारे हैं ।।
ऐसी सुँदरकूँ पाया हूँ खुदा के रहम[12] ते कुतुबा।
जो हूरहोर मलक[13] देखकर हुये हैरान सारे है*।

(२)

आई नारी सुलक्खन चंद-पेशानी[14]। हिंदोले चित में लालनकूँ पेगाने ।।१६२२।।
वचन-अमृत कुरंग-नयनी सौ वो वार। पेरेम के नाव सों घुँगुरु बजाने ।।
सो नारी पद्मिनी अति चंचली है। सुँदर मद गल सुधाकर मद जो आने ।।
फरिश्ता देख मुख सुध भूल जावे। सरग आछर[15] हुई है उस-दिवाने ।।
पंखी देखत सो मुख परवाज[16] होये। मिरिगनयनी मिरग तन में रिझाने ।।
सखी सुँदर नहीं उस सम जगत में। चमक चमकानने जग मन भुलाने ।।१९२७।।

(१४) रंगीली—

मेरी मिठ बोलनी मीठाइ सों प्याला पिलाती है।
खुमारी रात का अपने नयन म्यानें[17] दिखाती है ।। २४२० ।।
मेरी शीरीं[18] कँघी करती कँगन बजते है नादाँ सो।
रतन टीला (टीका) धरे मँगमे नवे छँद सों दिपाती है ।।
नवी मनवालि मद प्याला पिलाती नैन नकलाँ[19] सों।
नयन खुम्मारि अपने तन चढा धनुक नवाती[20] हैं ।।

---

१. घुस के, २. उपमा, ३. कवि, ४. लेकिन, ५. आगे, ६. तुच्छ, ७. चमत्कार, ८. डर, ९. सूर्य, १०. पास, ११. भिखारी, १२. दया, १३. अप्सरा।

*वही, पृष्ठ २७४।

१४. चाँद-सा ललाट, १५. अक्षर, १६. सूरज, १७. नयन में, १८. माधुरी, फर्हाद की प्रेमिका, १९. लीला, नयन-लीला, २०. मिसरी।

†वही, पृ० २७४।

अँचल झकार की चोवाँ चँदर-सूरज निमन[1] झमकें[2]।
ढलक नार (ओ) लटक चालाँमने[3] चालाँ न पाती है॥
मदने मालाँ नवे जोवन नवेले तन उपर मोहते।
पवन के राग रँग गाकर मुंजे छँद सों रिझाती है।
रतन की प्यारि मानिक जोत प्याला भर पिलाती है।
रँगीली विरवहूटी विरवहुटियो में सुहानी है॥
नबी सदके मुहम्मद कुत्ब सो मिल अछ[4] घडी अवत्।
चँदा ऐसी सहेल्या तैं सुरज सा मुख दिखाती है* ॥२४२६॥

(१५) नाजनी—

धन[5] दीद[6] पर नादीद[7] रख सूरज नही रहता खडा।
तारे चँदर सुन यो खबर सब रैन में रहे गडबडा॥
सो धनका मुख झलकावता निसमें सुरज छुप जावता।
दिनमें चँदा नहि आवता तारे तुटे सब झडपडा॥२४४०॥
सहेली का खोपा है वदक बुंद-खुर्य[8] झडे जो मेहो निछल।
देखत चँचल नैना चपल विजली तो जावे कडकडा॥
विच नीर कोइ न आये कर कोइ आग फिर ना जाय वर।
वाडी सो पलवाँ लायकर सूका[9] करे आडाअडा॥
धन सीस पर फूलाँ चडे अवर पै जो तारे जडे।
हूराँ[10] मलक[11] देखन खडे दिसता तमाशा या वडा॥
हाताँ में लाली यो बमे कीते[12] शिकार वो सबकसे[13]।
खूनी निशानी सच दिसे उश्शाक[14] ले चँग सपडा[15]॥
सिदक नबी का दास हू मैं दास रासिल[16] रास[17] हू।
कुत्बा अली का दास हू पक्कड खडा दिल दिल फडा॥२४४५॥

(१६) चचलनयन—

दो नैन तुज अब[18] तले है नारवेरे ख्वाब[19] गे।
दो मस्त शोखीसो मुते मस्जिद केरे मेहराब[20] मे ॥२४६२॥

---

१ चन्द्र-सूर्य के समान, २ झलकें, ३ चालो में, ४ रह।
*वही, पृष्ठ २८५।
५ तरुणी, ६ आँख, ७ न नजर, ८ पसीने की बूंद, ९ कांटा, १० देवकन्याएँ,
११ फरिश्ते, १२ किये (पंजाबी), १३ सब किसोको, १४ प्रेमी लोग, १५ पहुँचा,
१६ सच्चा, १७ सीधा।
†वही, पृष्ठ २८९।
१८ तेरी भौं, १९ स्वप्न, २०. नमाज पढ़ने का ताक।

तुज नैन चंचल......कानपर दो जुल्फ[1] सों।
खेलै जो धर थुड्डी[2] के कू तुज मुक्ख के महताब[3] में ।।
यह क्या अजव पडता नजर जो धूप पडती चांदपर ।
या मुख नुरानी[4] जोत भर है नैन केरे शाब[5] मे ।।
है लश्करी नैनाॅ तेरे संजोर सलह[6] कला करै ।
कोइ रीस[7] तिसकी क्यों कर सों दिस करे असबाब[8] में ।।
नैनों धलाती[9] सुँदरी तव **कुत्बशह** कूँ भावती ।
मिल सेज में रीझावती चौसार[10] तूँ हर बात में* ।।२४६६।।

(१७) फितनये-दकिन—

हिल्जाये[11] जीवाँ कूँ सकी अप-चोली केरे ताब[12] मे ।
पुतली निमन[13] लुडकाय है दिल अप-नयन-मेहराब में ।।२६०१।।
कहिया कि "मुख दिखला मुँजे छाती सों छाती ला मुँजे ।"
कहई "अपनि-घर आ मुँजे" बेसुद हुआ इस जाब[14] मे ।।
सूरज बदन झलकाये जब छुप जाय तारे लाज सब ।
देखत सो उसका जोत-छब ताकत न है महताब में ।।
क्या चलबली[15] सोधन है तूँ, हर फ़नमने पुरफन[16] है तूँ ।
होर फित्नये दक्खिन[17] है तूँ सरजोर[18] हर यक बात[19] में ।।
सदके नबी **कुतबा** सों मिल करते रल्या[20] हर एक तिल[21] ।।
लुव्दाये[22] कर मुज जीव दिल पिघलाय जो कंद आबमें[23] ।।२६५५।।

(१८) तिलंगिन[24]—

पियारी जोहती मै पन्त[25] तुज पेम[26] । मुंजे जिव देवना है पेम में नेम ।।२६०६।।
गरव[27] सों मै न बूजी थी पियाकूँ । कि यक था मुज नयनतल कोह[28] हार हेम ।।
ढुंडयां हूँ मूँ नही पाया पिरित जेह । बहुत जोया हू नै पाया हुँ मै थेम[29] ।।
पेरेम पियका हमारा जीव संजिवो । पेरेम पँथ मे है उश्शाकाॅ[30] का यह नेम ।।
नवी सदके[31] कुतुवशह सांवली सों । वचन हिंदी सों बोले एम्म रे एम[32]† ।।२६१०।।

---

१. अलक, २. ठुड्डी, ३. चाँद, ४. प्रकाशमान मुख, ५. जवानी, ६. हथियार, ७. ईर्ष्या, ८. विषय, ९. गिराती, १०. सर्वतोभद्र ।

*वही, पृष्ठ २८९ ।

११. फँसाय, १२. ताब, सौन्दर्य, १३. पुतली-सी, १४ जवाब, उत्तर, १५. चंचल, १६. कलामें, कला-मर्मज्ञ, १७. दक्खिनी की आफत, १८. बली, १९. बात, विषय, २०. रले, मिले, २१. क्षण, २२. खींचे, फँसाये, २३. पानी में, २४. आंध्र तरुणी (गोलकुंडा आंध्र में है), २५. पथ, २६. तेरा प्रेम, २७. गर्व, २८. पहाड़, २९. ठांव, ३०. प्रेमी, ३१. वलिहारी, ३२. क्या रे क्या (तेलुगु) ।

† वही, पृष्ठ ३२१ ।

(१९) दकिनकी पुतली

सदा मुंज मस्त करती है नयन मेती नयन पुतली।
वाली गम्जे[1] के प्याले पिलाती है जुबन-पुतली ॥२६१६॥
नयन मों 'सब्र'[2] कर कहती कर्म अब सब मैं पीता।
नयन होते हैं रोशन देखती तू है गगन-पुतली ॥
भया कश्तीमने[3] मैं यो रह्या ज्यों नूह[4] बस्ती में।
पिरित दरियामने[5] पाया परी ऐसी रतन पुतली ॥
तेरा मुख लोहकलिया[6] या डरू ना मैं परी-जिनते।
हिंदू पातुर मेंपडती नै बिचकनी ज्यों हरिन पुतली ॥
अगर मेंगनी रिजाने आशिकां क तैं[7] घडी तिलतिल[8]।
अचल झलराये रोसा[9] गोचले उगडग बनन पुतली ॥
नयन के हौज[10] में पुतली नवी चाल्यां-यों तिरती है।
नयन आशिक है देखनेकूं वचन सुनने वरन पुतली ॥
नवी सदके (जो) सिरते जीतिया नादान[11] बाली[12] कू।
अनन्दांसो मिली कुतुबे-अर्मां[13] सेंती दकिन-पुतली* ॥२६१७॥

७ गजलें (प्रेम-गीत)

(१) सौंदर्य—

(१)

मुखमें बनफशा[14] रँग तिला का नूर[15] में तूं पाइया।
ज्यों स्याम रंग चदासों मिल सब जग प चँदना छाइया ॥२९॥
सुरा काबा के म्याने-मने[16] मकसूद मुज[17] पाने-मने।
उम्मेद के खाने-मने[18] गौहर[19] के दावे लाइया ॥३०॥
कुतल में केवडे भेस है लोगों कहें निस-देस[20] हैं।
मानिक उजाले सीस हैं मतर सो मैं हिल जाइया[21] ॥
मजनूं सो मेरा नाम है वहशी[22] तुं मुजसों राम[23] है।
इस मुख अलक मुज दाम[24] है इक बीच में गलबाहिया ॥

---

१ कटाक्ष, २ धैर्य, ३ भौं-रूपी नाव में, ४ जल-प्रलय का पैगम्बर, ५ समुद्र में, ६ तावीज, ७ तई, से, ८ पल-पल, ९ रोष, १० कुंड, ११ बेवूझ, १२ बाला, तरुणी, १३ युगका ध्रुव।

*वही, पृष्ठ ३२३।

१४ एक फूल, १५ प्रकाश, १६ बीच में, १७ मेरी अभिलाषा, १८ घर में, १९. मोती, २० निशि-दिवस, २१. फँसाया, २२ जंगली, २३ संतोष, २४. जाल।

तुज गाल फुल आले[1] ऊपर लट है सो गुल्लाले[2] उपर।
या है भँवर लाले उपर सो नक्श मुज मन काइया।।
मुज ख्याल-म्याने तूँ बसे मुज ज्ञान-दीवा तूँ दिसे।
कित्ता कसौटी पर कसे मैं ध्यान तुजसों लाइया।।
विरहा **मआनी**[3] मिल अहै उसका दिला मुज दिल अहै।
फुल सँग रकीबा[4] हिल अहै क्यों भी तो धुन विलगाइया* ।।३५।।

(२)

जुल्फ़ के जदवल[5] में हिलजा है देखो बादे-सबा[6]।
हिलजता है बाव ऐसा बूझो वो क्या है बला ।।११९।।
नैन मिठ्ठाई सों लबदे[7] जाहिदाँ[8] तुज-नेह में।
हम मखी कूँ चाखता है ओ मिठाई सब रवा ।।१२०।।
तेरे मुख के नूरते होता मुनव्वर चाँद अजित[9]।
दिलकी तहकीकाँ सों देखो है बी वातां बेरिया[10] ।।
तेरे मुख मस्हफ़ उपर[11] खीचे सूके[12] का ज़बर[13]।
जज्म[14] हो रहिया है दिल तशदीद[15] ना कर आ पिया ।।
सब्ज खत अँगे[16] कहते है बात लोकाँ सब्जी का।
क्या खबर है उनकूँ क्यों पीला हुआ सब गिया[17] ।।
केस खोले करने कंघी रात है हमना कुँ वो।
माँग काडे जब सकी वो देस[18] हमना कूँ सुवा ।।
तुज केता कों[19] ऐ शमे[20] अप-रोशनी ते सिर न खीच।
मारते है दम-बदम[21] गर्दन कि तूँ है बेहया[22] ।।
सीधे कर हुनराँसेती[23] दिखलाते उसका नूर सब।
नूर जाता उफ[24] सेती इसते सदा है बेनवा[25] ।।
रात सारी तेरे गम खींचे[26] सफ़ां हमनाँ उपर।
मीठे वचनाँ ते लिख्या मेरी खलासी[27] का रुखा[28] ।।२७।।

---

१. ताक, २. लाल फूल, ३. कुतुब कविका एक उपनाम, ४. प्रतिद्वंद्वी।

*वही, भाग २, पृष्ठ ४।

५. अकलका फंदा, ६. प्रातः समीर, ७. फँसे, खिंचे, ८. संयमी, धार्मिक, ९. आदित्य, १०. निर्लज्ज, ११. गाल, १२. काँटा, सूखा, १३. स्वर का भार, १४. हल् (हलन्त) का चिन्ह, १५. द्वित्व-चिह्न, १६. आगे, १७. तृण, १८. दिवस, १९. कहूँ (कौरवी), २०. मोमबत्ती, दीपबत्ती, २१. क्षण-क्षण, २२. निर्लज्ज, २३. कलाओं से, २४. अफसोस, २५. बेचारा, २६. जुल्म, २७. मुक्ति, २८. रुक्का, लेख पत्र।

अप-गुनाहोंमे हमीं खाते हैं गोते रात-दिन।
अपनी कुदरत हात सा मुजकूँ बचाओ ऐ खुदा॥
तेरी अक्ल बाद ते है ईसवो-दम जल्वगर[1]।
वो अँचल मुंज हात में है ज्यों कि मूसा का असा[2]।
मै न जानूँ काबा वो बुतखाना[3] व मैखाना[4] कूँ।
देखता हूँ हर कहा दिसता है तुज-मुख का सफ़ा[5]॥१३०॥
आगे[6] है पर्दे अँधारे के मआनी तेरे सब।
शुक्र कर हासिल[7] हुआ है मुद्दआ तू[8] उम-दुआ*॥

(३)

तुज मुखकमलको फिरता है भौंर होकर अरास।
दीवे ये, जो पतंग फिरे बेखबर[9] अकाम॥९८४॥
तुज इश्क की वफ़ा[10] में कमर बाद्या है कर।
चंद-सूर का सो पाया[11] अहै जर-कमर[12] अकाम॥
जहरे खुदा[13] न देख नियां[14] आरका दी।
तुज नैन दौलने[15] होना जेरोजबर[16] अराम॥
तू मेरी जाम है मगी होर तेरी जाम में।
फिरता है डावाडोल किधरका किधर अकाम॥
तुज दरस देख डरते बेताब[17] होयकर।
सिर तुज चरन सो लाने कूँ आवे उतर अकाम॥
चँद-सूर की अँखियाँ सो तुज देखने केतें[18]।
लाया है नूर नीर नयन ते[19] बिछड अकाम॥
करता है शाही[20] कुत्ब मुहम्मद के नाव ते।
तूँ-दाम हो रैया है मुहम्मद के घर अकाम†॥

(४)

दीपै जो गाह[21] सूर गहे[22] डूबे क्यों है डर।
मुख सूर[23] हर नूर[24] सदा दीपै मेरे घर॥८६६॥

---

१ ईसा की प्रकाशमान साँस, २ लाठी, ३ प्रतिमा-गृह, ४ मधुशाला, ५ स्वच्छता, उज्ज्वलता, ६ पाते (पंजाबी), डालते, ७ प्राप्ति, प्राप्त, ८ तेरी कामना।

*वही, पृष्ठ १४।

९ बेहोश, १० ईमानदारी, ११ पाया (पंजाबी), १२ सुनहरा कमरबंद, १३ भगवान् के लिये, १४ निध्येनकर, ध्यानकर, १५ दृष्टि फिराते, १६ वारा न्यारा, १७ अधीर, १८ देखने के लिये, १९ आसुओं से, २० बादशाही, राज्य।

†वही, पृष्ठ १२६।

२१ स्थान, २२ कहीं, २३ मुख-सूर्य, २४ अप्सरा की पवित्रता।

तुज मुख झलक की साजते सब दिन चदा सूरज।
टुक मुख दिखावै लाज छिपै न आवै तेरे सर।।
कुदसी[1] लिखे है दिल में तुमन नूर के वरन[2]।
झलका दिखाओ तिल में[3] जड़ित जेका मौज पर।।
तुज-अंग वास मनमने[4] फुल हो खिलै सोहन।
सो वास ना समन मने[5] ना मुश्क[6] ना अंबर[7]।।
हूरा[8] तवक सो नूर के ल्याइयाँ है चावसों।
आरति सितारे सूर-चंदा करने तुज उपर ।।८७०।।
आशिक़ कहते हैं वागकूँ बहलाने जायें दिल।
क्या बूझे फूल जाग[9] मगर बू जेतो भंवर।।
घुंघरू वा घंट मस्त झनक साजकर चले।
सो नाद सुनके मस्त हती जायँ हार डार।।
हँस्ति[10] सक्याँ सो घंट सुनत गड़वड़ा उठ्यां।
वाबर गयंद तन्त पिछान्याँसो सर-कसर[11]।।
कुत्बा तु दुख विसार बहक्के[12] अलीवली[13]।।
ले हात खरग मार कमर ख़ारजीयें ख़र[14]* ।।८७४।।

(५)

सुरज मुख फूलपर फूल्ये है अंबर-फूल[15] कुंतलर के।
न पाये यो अजव[16] फूलाँ सो मुश्की[17] केस अचपल के।।१८९०।।
घुंगरवाल्याँ छव अलकाँ[18] छव नयन पर फितने[19] कर्तियाँ लख।
सो जों के मस्त हर्न्याँ गल जञ्जीर[20] बां पाय है. . . के।।
चकोराँ होर रावीं[21] हंस सुरँग सुरखाबी[22] फल देखन।।
चँदरमुख लब-शकर[23] ते सिर सो खूबी. . .न्दवानी चंचल के।।
जो निर्मल मोतियाँ चोली सों जोबन देख पूछ्या है।
सो कै छँद सौ छुपा लेकर आय् दिन आज आँचल के।।

---

१. पवित्र लेख, २. रंग, ३. पलमें, ४. मनमें, ५. चमेली में, ६. कस्तूरी, ७. सुगंधित रत्न, ८. अप्सराएँ, ९. कौआ, १०. हस्तिनी, ११. पूर्णतः, १२. भगवान् के लिये, १३. अली स्वामी, १४. विधर्मी (शिया भिन्न) गदहा।

* वही पृष्ठ १३३।

१५. आकाशफूल, १६. अद्भुत, १७. कस्तूरी-रंग (काले), १८. अलकों की शोभा, १९. धोखा, २०. गलेकी शृंखला, २१. तोता, २२. एक चिड़िया, २३. शक्कर-जैसा मीठा ओठ।

पदम धन पैन[1] छँदबँद सो फिरे धन ज्यों हुआ हेरां।
मगर ल्याये पकड सूरजकुं मोतियाँ हार तुज-गल के ॥
तिरै जो माम[2] आ जल में दिसे रोमावली यों उस।
न जाने दे रखे लहरां सो कुंदन जेर[3] निर्मल के ॥
छबीली सुन गजल कुत्बा कि खुश हो आ वचन कनमें[4]।
कहूँगा एक गर बोसे[5] दो दे है आझल अचल के* ॥१८९६॥

(२) नख-शिख—

(१)

तेरे दो नयन हैं मद मस्त मतवाले। तेरे दो गाल हैं खूबी[6] के गुल्लाल ॥१२५९॥
तेरे मुख की लटाँ नै हैं कि दो नाग। सुलेमाँ की अँगूठी[7] के है रखवाल ॥१२६०॥
भवाँ तेर्याँकुं क्यो लिखेगा नक्काश[8]। कमा दो खींचियाँ है सख्त अश्काल[9] ॥
सख्याँ के हात में देख प्याली मद की। नहीं देख्या अगिन के तै जो मय्याल[10] ॥
तुं मोती बेबहा[11] तुज बहा[11] मैं। जगत का माल[12] है तेरा सो पामाल ॥
जहाँ है सीमिया[14] का नक्श उमते[15]। कहे है आरिफा[16] सब उसकूं तमसाल[17] ॥
नबी सदके कुतुब जम[18] ऐश[19] कर ऐश।
कि तुज दर पर पडे है फत्हो-अक्बाल[20] † ॥

(२)

उजाला जगमने[21] झम्क्या बादे बाल भोली जो। हुआ फिर रैन अँधारा बँदे मो केस खोली जो ॥
लटकते जब चले सो धन सिके है चाल हसीका[22]। बेनवन फूल सब झरिये जो हंमकर बात बोली जो
मुंजे जब देखकर सो धन दसन-तल ल्याये लब दीसे। दमन नाबात[23] अधरामृतके पानी सो धुली जो ॥
करो अब आशवाँ दिल घट[24] वचन माशूक[25] का यक नैं। वफा[26] अच्छराँ जो थे मो अपने दिलते धोली जी
मुहम्मद का मुहब्बत आ किया है ठार मुंज-दिल मे ॥
अली घर भीक मगते ते भरी मुंज दिल की झोली जो‡ ॥१५१९॥

---

१ पहनकर, २ एक मछली, ३ सुवर्ण, ४ कानमें, ५ चुबन।
* वही, पृ० २४८।
६ सौदर्य, ७ जादूकी अगूठी, ८ चित्रकार, ९ आकार, १० प्रवाह, ११ अनमोल, १२ तेरा मुल्क, १३ मोल, १४ चांदी, १५ उससे, १६ ज्ञानी, १७ उदाहरण, १८ सदा, १९ आनन्द, २० विजय और प्रताप।
† वहीं पृष्ठ, १६५।
२१ जगमें, २२ कहाँ, २३ मिसरी, २४ छोटा, २५ प्रिय, २६ ईमानदार।
‡ वही, पृष्ठ २००।

(३)

छबीली है सूरत हमारे सजन की । कि या पूतली उस[1] कहूँ अप-नयन की[2] ।।१७३१।।
न देख्या निछल कोई उस सार[3] सूरत । सराऊँ[4] किते जेब[5] अपने मोहन कीं ।।
चँदा सा देख्या मुक्ख उस सर्व-कद[6] पर । तो होती है शर्मिदा पुतली गगन की ।।
तेरा हुस्न फुलवन ते नाजुक[7] दिसै तो । न दीसै तेरे अंगे[8] छब कोइ वन की ।।
नयन तेरे दो फूल नरगसिते जेबा[9] । नजाकत[10] है तुज-मुख में रँगी चमन की ।।
तेरे जुल्फ़ फंदा[11] में दिल आशिकाँ के । रहे हैं सो आशिक हो पिउ के नयन की ।।
नवी सदके **कुतुबा** सो ओ पिउ मिल्या है ।
तो क्या कहूँ सकूँ बात उस-मुख सुमन की* ।।१९३७।।

(४)

पियारी के नैनाँ है जैसे कटारे । न सम उसके अंगे कोई है दो-धारे ।।१७८७।।
असर[12] तुज मुहब्बत का जिसकूँ चड़ैगा । तेरे लाल[13] विन उसको कोइ न उतारै ।।
दो लोचन है तेरे निसँग चोर रावत । उनोसों दिलेरी न कर सब हि हारे ।।
सुहाता है तुजकूँ गुमाँ होर गरूरी[14] । कि माते अहै तुज-हुसन[15] के पियारे ।।१७९०।।
सख्याँ में है तू मिर्गनयनी छबीली । सजन तो नहीं होते तुजते किनारे ।
अजब चंचलाई है तेरे नयन में । कि खंजन नमन[16] एक तिल[17] कै[18] न ठारे ।।
नवी सदके **कुतबा** सो मद पीवे जम जम[19] ।।
ओ चंद-मुख कि जिस मुखतें जोती सिंगारे† ।।१७९३।।

(५)

फुले रयन या तारे धन या भँवरे मुख ले मोगरी ।
या नीलमीं तारों सों भर मोती पिरोये सोक री ।।१८२९।।
सर्वन[20] है ओ या सेवती फुल या सीपियाँ जौहरियाँ की ।
या चँद नौ[21] दुकान देख पाये जग जौहरी संतोख री ।।

---

१. उसे, २. अपने नयन, ३. उसके सारखा, ४. सराहूँ, ५. सुन्दर, ६. सरो-जैसे सीधे कदवाली, ७. कोमल, ८. आगे, ९. सुन्दर, १०. कोमलता, ११. अलक के फंदों।
* वहीं, पृष्ठ २२७। १२. प्रभाव, १३. प्रिय, १४. अभिमान, १५. तेरा सौन्दर्य, १६. खंजन से, १७. पल, १८. कहीं, १९. सदा ।

† वही, पृष्ठ २३३ ।

२०. कान, २१. नया चाँद।

भौंवा है ओ या दोनों आँन या मुद्[1] है दाम[2] के।
या चँद नवे या भौंरे पर ना गमज लई जग जोग री ॥
या मुख है ओ या पुनम या सूल शोलानूरपा[3]।
या दर्पन ओ या जाम[4] जग या फुल मरग ये[5] लोक री ॥
धन का दहन[6] हीर्याँ का तन लव[7] लाल कुँदन है ज़कन[8]।
सुतें सीने पर कुच रतन तें ऐसी कै[9] किस यो करी ॥
जो ले तँव्रा हातमें गाने लगे महेल्याँ सों मिल।
कँठ-जेल[9] अपना तनके जो घोडा गले है सोक री ॥
हज़रत नबी के सदके सुन बाता कुतुब शहमस्त हो।
कहिया कि करता रात-दिन ऐसी सखी सों भोग री* ॥१८३५॥

(३) प्रियतमा आनन्दमयी—

पियासो रात जागी है सो दिस्ती है मो धन सरखुश[10]।
मदन सरखुश, सयन सरखुश, अँजन सरखुश, नयन सरखुश ॥१०५७॥
पियारी प्यारसों पी है पियाला पेम का तो है।
दहन[11] सरखुश, दमन सरखुश, रमन सरखुश, वचन सरखुश ॥
नयन मतवाली हो झुलतीं पियाली पेम पी पी कर।
जोवन सरखुश है, सो मन सरखुश, तो तन सरखुश, करन[12] सरखुश ॥
सखी लट सुबुलिस्ता[13] ते बताये[14] बाव परिमल तूं[15]।
चमक सरखुश है, बन सरखुश, समन[16] सरखुश, अगन सरखुश ॥१०६॥
चडी है नेह की मस्ती सखीकूं पीव के सँगते।
चरन सरखुश, चलन सरखुश, हिलन सरखुश, डुलन सरखुश ॥
मदन सो मटपटाई सो अजायब कुछ है ठब धन का।
जकन[17] सरखुश, चुमन सरखुश, लगन सरखुश, है मन सरखुश ॥
नबी सदके कुतुब बहु गुन रयन-दिन ऐश करने ते।
जोवन सरखुश, मदन सरखुश, जगन सरखुश, मगन सरखुश† ॥१०६३॥

(४) जगमोहनी प्रियतमा—

जगमोहिनी वो उत्तम सो नारी। शह पेमसेती झगडती है भारी ॥१८५७॥

---

१ मुद्दी, २ जाल, ३ ज्वाला, प्रकाश, चरणवाला, ४ प्याला, ५ मुख, ६ ओठ, ७ ठुड्डी, ८ कहीं, ९ कंठ के नीचे।

* वही, पृष्ठ २३८।

१० विभोर, प्रसन्न, ११ मुख, १२ कान, १३ जटामासी (बालछड) का बाग, १४ दिखला दे, १५ तेरी सुगंधि, १६ चमेली, १७ ठुड्डी।

† वही, भाग २, पृष्ठ १३७।

अमृतवचनी मीठी ज़बाँ सों। छन्द-बन्द-अभरन सो आप-सँवारी।।
वो छंद-वंद भरी है पिया रिझाती। कै सूजती उससों तूँ गँधारी।।
गर यों करती है छंद छाले। है पेम के पंत में वो सारी।।१८६०।।
हे मृगनयनी गयंदगँवनी। नैनोंसों करै कमान दारी।।
दूतिन तू न खा होशियार बाजी। प्यारी व पिया में है सो नारी।।
सदके नबी है **कुतुब** के मानी ।।
सखियाँ मेंहूँ है शहकि प्यारी* ।।

(५) मस्त प्रियतमा--

मदन मस्त बदिल मस्त कजन मस्त परी मस्त। हुई मस्त पवनमस्त लगन मस्त परीमस्त ।।३४३।।
चढ़ी मस्त वही मस्त डुली मस्त रही मस्त। मुखा मस्त सदा[1] मस्त सोहन० मस्त ।।
खड़ी मस्त अंचल मस्त ढली मस्त ओ रही मस्त। गजक मस्त नुक़ल मस्त वचन० ।।
परी मस्त विपन मस्त सुरा मस्त हुई मस्त। मिली मस्त खिजी मस्त रसन मस्त ।।
खोपा मस्त फुलाँ मस्त कजलमस्त खुली मस्त। लटाँ मस्त नयन मस्त देखन मस्त ।।
तिला मस्त[2] तुरा मस्त धरा मस्त धड़ी मस्त। शकर मस्त चुमन मस्त हंसन० मस्त ।।
चोली मस्त कमल मस्त भंवर मस्त।
कुतुब मस्त करी[3] मस्त यों मस्त परी मस्त† ।।३४९।।

(६) प्रेमवियोगिनी--

(१)

पिया जों जों मिले त्यों त्यों दुतिन[4]-दिल दाग जाली है।
सरासर[5] दूतनी के तै करो जो ज़ाग[6] काली में ।।१४८२।।
पियारे आजकल आवेंगे कर ले आस ला रह कर।
हरेक तिल[7] कूँ करन[8] करकर गुसाई बाज[9] टाली में।।
जपूँ मैं जागने में तुज, सेबूँ सपनेमने[10] भी तुज।
जनम तुज ध्यान में कट्या[11] नहीं हूँ तुजतै खाली मैं।।
तुमन बिन देस मुँज निस है तुमन सों रैन मुँज दिन है।
खड़ी एक पाँव पर जों सुर्ख मिलने की उताली[12] में।।
नबी सदके **कुतुब** कन मैं वचन कह जाति के मुन्किर[13]।
सख्याँ सब ग्वाही है तो बात करती देखी हाली में‡ ।।१४८६।।

---

* वही, भाग २, पृष्ठ २४२।

१. स्वर, २. काला तिल, ३. किया।

† वही, पृ० ४७।

४. सौत, ५. पूर्णतः, ६. कौआ, ७. पल, ८. युग, ९. विना, १०. सपने में, ११. कटा, १२. उतावली, १३. इन्कार करनेवाली।

‡ वही, भाग दो, पृष्ठ १९५।

(२)

गुमाईं पास मेरे हूँ कि देखी आज सप्ने में।
उठी जब हड़बड़ाकर मैं न देखी सेज अपने में ॥१४८७॥
पिया की छाती लगकर मैं रही थी छिपके छाती में।
तहाते यों[1] दूतिन काडी जो मत देखें छुपने में ॥
न बूझूँ तुज पिरित म्याने[2] मेरा चित क्यों बर आवेगा[3]।
न मुंज में सब्र[4] ता तुज मेह[5] जावे कन[6] जपनेमें ॥
तुमारी सौं तुमनकूँ मैं कधी भी याद आई थी।
तूमन जपनेते निस-दिन मैंन पुनम-चँद जो है खपनेमें ॥
नबी मदके रे कुतुबा भर्‌या है इश्क का बाजार।
जो कुच मँगता है सौदागर नफा कुछ नैं है तपने में* ॥१४९१॥

(३)

पिया किस सात[7] जिव लाये कि समजे किसकुं[8] जाता नैं।
जो आँसू पोछने जाऊँ उसासाँ बात आता नैं ॥१५०४॥
पिया तो शर्त[9] बोले हैं कि मैं तुज सेज आऊँगा।
वले[10] मुज सेज आये बाज[11] मेरा दिल पत्याता नैं ॥
कते[12] हैं बाग में गये तो गँवाया जाय दुख दिलका।
वले मुक बाग पिउका देखे बिन मुंज दुक्ख जाता नैं ॥
फूलाँ सब बास के बनमें खिले हैं मना भलाते[13] तें।
वले पिउ-बास् थरकू बिन बास बिन हरवास भाता नैं ॥
मुहम्मद नाँव दिल में रख मुहब्बत सों मुहम्मत तूँ।
अली के इश्क बिन कुच काम भी तुजकू सुहाता नैं† ॥१५०८॥

(४)

तुज बिन प्यारे नींद टुक नैनाँमे मुंज आती नही।
रैनी अधारी है कठिन तुज बिन कटी जाती नही ॥१५२०॥
तेरा खबर[14] ऐ मोहनी मुंकूँ किया है बेखबर।
दिलते खबर की याद सा अपने के[15] जल्लाती नही ॥

---

१ यही, २ बीच में, ३ सफल होगा, ४ संतोष, ५ तेरी दया, ६ युग।
* वही, भाग २, पृष्ठ १९६।
७ साथ, ८ किसी को, ९ वचन, १० लेकिन, ११ बिना, १२ कहते, १३ मन लुभाने।
† वही, पृष्ठ १९८।
१४ विचार, १५ क्यों।

हावे न पावें[1] रोम रोम बजते अहै तुज याद[2] नित ।
ओ नाद पाव्यां का मुंजे कै[3] याद दिलाती नहीं ।।
केता सबूरी[4] मै करूँ जों मीन पानी ते बिछड़ ।
तूँ गल[5] सुनाती है वले कै[6] मुँज गले लाती नही ।।
केता अपसकूँ नाज होर छँद में पवाँगी[7] ऐ सखी ।
आ सेज पर मिल मिल गमें तुज बिन मुजे राती[8] नहीं ।।
ऐ धन घुँगटमें नाज़के केत्ता छुपा के आपसे ।
कै मुंज नैन-तार्‌याँ मै तुज मुखचंद झमकाती नहीं ।।
खाना-नबी[9] सदके कुतुब आशिक कहाता है तेरा ।
उस दिन यकीं[10] पहिचान तूँ भी[11] कोइ तुज साती[12] नहीं* ।।१५२६।

(५)

तेरे दरसन कि मै हूँ साई माती । मुजे लाओ[13] पिया छाती सों छाती ।।१९६०।।
पियारे हात धर सभालो मुँजकूँ । कि तिल-तिल[14] दूती[15] तुज-माती डराती ।
पेरेम प्याला पिलाओ मुँजकूँ दमदम[16] । कि तूँ है दो जगत में मुँज सँगाती ।।
न राखूँ तुज नयन में राखुँ दिल मे । कि तूँ मेरा पियारा जिउका साथी ।।
पिया के ध्यान सों मैं मस्त हूँ मस्त । मुंजे बिरहे के बैनाँ कै[17] सुनाती ।।
अगर यक तिल पड़े अंतर[18] पिया सों । नयन जलसों सपत समदर[19] भराती ।।
नबी सदके कहै कुतुबा कि प्यारी ।
रिझा दमदम अधर प्याला पिलाती† ।।१९६६।।

(७) प्रियतमा-दर्शन--

ऐ नार मोसी नार है तेरा सरस दरस । जिस हीन पर जो दिस्ट[20] करे होय ओ परस[21] ।।९७७।।
दिल लूटे बाज[22] तिल[23] रती[24] नै शोख[25] सुँदरी । दिल लूटने के काम में तुजकूँ बहुत है जस ।।

---

१. हायहाय, २. स्मृति, ३. क्यों, ४. संतोष, ५. बात (पंजाबी), ६. लेकिन, ७. डालैंगी, ८. फिर, ९. पैगंबरके परिवार, १०. विश्वास, ११. फिर, १२. साथी।

* वही, पृष्ठ २०१।

१३. लगाओ, १४. पल-पल, १५. सौत, १६. क्षण-क्षण, १७. क्यों, १८. फर्क, भेद, १९. सप्त समुद्र।

† वही, पृष्ठ २५८।

२०. दृष्टि, २१. पारसमणि, २२. विना, २३. पल, २४. रहती, २५. गर्वीली।

ना जानूं तुज दरस में सखी क्या मतरा अहे । लैली तुजे सो देख के मजनू किये अपस ॥
शीरी है तू व खुसरवे-शीरी है तेरा नांव । फरहाद हो के जिव करे तुज सेरी[1] हवस[2] ॥
युसुफ हुसन[3] तेरा है जुलेखा है दिल मेरा । तुज मुज पिरित कसौटी पे देख्या हूँ कसमकस ॥
माशूक हो आशिक[4] हमें मिलके दोनों है । ना आ दूतिन हमनमने[5] तेरा है सग वस ॥

सदके नबी कुतुब के दिल में जो इश्क है ।
ओ इश्क है जगत मने[6] ससार का कलस* ॥

(८) प्रेमी अधीर—

पिया बाज[7] प्याला पिया जाय ना । पिया बाज यक तिल[8] जिया जाय ना ॥१७१॥
कहते पिया बिन सबूरी[9] करूँ । कहया जाय अम्मा[10] किया जाय ना ॥
नही इश्क जिस वह बडा कूड[11] है । कधी उससे मिल बैसिया[12] जाय ना ॥

कुतुब शह न दे मुज दिवाने[13] कुं पद ॥
दिवाने कूं कुछ पद[14] दिया जाय ना† ॥१७३॥

(९) प्रेमी पागल—

बाग दिल में तुज मुहब्बत का अचबा फुल गया ।
वास सुंघ फूलाँ अरक का[15] मैं हुआ हूँ डगमग्या ॥४९॥
ये इलम[16] होर ये कुतुब[17] होर किसते बक्स्या जाय ना ।
आलिमा[18] बेचारा देखकर उसकी तक[19] में रहे थक्या ॥५०॥
साँवली कद-सर्व[20] कूं लागे हैं अब मीठे नवात[21] ।
चसन जाकर मैं डराँ सेती रह्या हूँ धकधक्या ॥
शीशे के कुलकुलते पियाले म्याने बाँधे बुडबुडे[22] ।
बुडबुडा वो नेह के जोरों सों[23] जगमें जगमग्या ॥
तू अँधारे पथ में ना मँगे रोशनी अगयार[24] तें ।
रोशनी तुज देवे कौन कुदरत[25] उजाले का लग्या ॥

---

१ तेरे साथ, २ कामना, ३ युसुफ का सौन्दर्य, ४ प्रेमी, ५ हमारे में, ६ जगत में।
*वही, पृष्ठ १२६।
७ बिना, ८ पल, क्षण, ९ धैर्य, सतोष, १० लेकिन, ११ अधा, १२ मिल बैठा, १३ पागल, १४ उपदेश।
† वही, पृष्ठ २३।
१५ शराब का, १६-विद्या, १७ पुस्तकें, १८ पडित लोग, १९ ताक, २० सरो जैसे कदवालो, २१ मिसरी, २२ बुलबुला, २३ बल से, २४ पराये लोगो से, २५ शक्ति।

मैं उम्मी[1] कर गिनते हैं सब उम्मियाँ तू इल्म में।
मो जवानी[2] का कलम तुज वस्फ[3] लिख ना सक भग्या॥
तुम भआनी के गुनाहाँ का रकम[4] करते है कैं[5]।
मैं मुहम्मद नांव ते दोनों जहाँ म्याने जग्या* ॥५५॥

(१०) प्रेमी-समझावना—

सकी[6] आपे तुं साई समजावना। मंदिर मेरे समजाव कर ल्यावना॥२१६॥
प्यारी का करना है मनभावना। पिया मुख वचन ते मँगल गावना॥
पिया हात में है मेरा अख्तियार। मुंज अपना किया है मो मन-भावना॥
मुंजे गुंचे[7] कूं देख याद आवता। अलंकार सो साईं मुस्कावना[8]॥
जलाना दूतिन[9] कु अगिन रश्क में। संताने दूतिन मुँजसों रावना[10]॥
बुलाना बखत[11] मुँज हँसी बाजी सों। दूतिन देखने मुँज मंदिर आवना॥
नबी सदके[12] कुत्बा तूं उस छोकरी। सयन की सरक में सो हिलावना† ॥

(११) प्रेमी-विरह

विरह मुंज जागता[13] है साई तुम बाज[14]। मेरे मंदिर तुम आ देउ वस्ल[15] का राज॥५११॥
जो आशिक़[16] साई कारन जी छिपावे। उसे नै आशिकाँ के सफ़ मने[17] लाज॥
जिने साबित कदम[18] है इश्क म्याने[19]। धरेगा पेम उसके सीस पर ताज॥
जिने कामिल[20] किया है पेम अपना। ग़नी[21] है दो जगत में नै वह मुहताज[22]॥
पिरितकूँ जान आशिक जो अहै फ़र्द[23]। तुँ यों बूजे तो तुज दिखलाये मिनहाज[24]॥
पिरित तुजकूँ करै गर तीर-वारा[25]। तुँ अपना सीना कर उस ताईं आमाज[26]॥
नबी सदके कुतुब शह दो जगत में। अली का मेहू तुज सिर दुर्रतूत्ताज[27]‡ ॥५५७॥

(१२) प्रेम बाधा—

सहेली न कर तूँ हमनसेती दंद[28]। कि मै बूझे हूँ तेरे सब छंद-बंद[29] ॥६४१॥

---

१. अनपढ़, २. मेरे मुँह से, ३. तेरे गुण, ४. लिखना, ५. क्यों।

* वही, भाग २, पृष्ठ ६।

६. सखी, ७. कली को, ८. मुस्काना, ९. सौत, १०. राजा, ११. समय, १२. नौछावर।

† वही, पृष्ठ २८।

१३. जाँचता, १४. विना, १५. मिलन, १६. प्रेमी, १७. पांती में, १८. दृढ़ पग, १९. प्रेम में, २०. पूर्ण, २१. धनी, २२. गरीब, २३. अकेला, व्यक्ति, २४. मार्ग, २५. तीर-वर्षा से मारना, २६. लक्ष्य, निशाना, २७. तेरे मुकुट का मोती।

‡ वही, पृष्ठ ७४।

२८. द्वन्द्व, झगड़ा, २९. चाल।

मंतर पढती है दूती पिउ-दिष्ट[1] पर । कि जेवा[2] दिसे उस नयन अपने छद[3] ।।
सकी चारे न कर मो प्यारेसेती । कि सलता है मुंज सीना में तेरा दद ।।
पियाकूं सचा नेह आता अहे । दुतिन उसके नैं पिउ अँगे[4] अज्ञमन्द[5] ।।
नही देखे हूं किस[6] चमन मे कधी । सजन कद्[7] ऐसा सरो कोद बुलद ।।
मुहब्बत पियाला पर्यां ले सइयां । दिसे या उनन हतमे ज्यो सूर-चन्द ।।
मुहम्मद गुलामी[8] ते कुत्बे ज़मा[9] । सकयांगल मे पाया[10] है अप नेह-फद* ।।६४७।।

(१३) बुनाई—

चदा मुख पर मकीकन[11] देसने वागंते बालां कुच[12] ।
गुसेसो उस उपर खीचूं कमां अब्रू-हलाला[13] कुच ।।
तुमारा हुस्न मेरे दो नयन में नक्श[14] बाँध्या है ।
जे कोइ देखें तुमनकूं कुच होवे उनके निहालां[15] कुछ ।।
न आवे सर्व कूं हर्गिज कधी ओ नार का डुलना ।
सोहाते है उनोकूं नाज[16] होर चालें व चालां कुच ।
जेते हूं समँद[17] होर खुश्की[18] कुं भी वया जीते मँगते ।
हमायल[19] नम्ने पाये[20] हैं गले में कठमाला कुच ।।
गँवाने गम गया में बाग में देसा अजायब[21] कुच ।
पिया के पाँव पडने तैं[22] हुये फूल डालां कुच ।।
दो दिल होर[23] पूंग के मोती तुमनकन[24] नैं करें बाता ।
उसी ते होके निमल डुलने हैं खूबां[25] के गालां कुच ।।
मआनी इश्क के तारां सो बुनता है सरासर[26] सव ।
सरासर किने[27] बुन सकसी[28] उनो के हैं खियाला[29] कुच† ।।१६।।

(१४) प्रेम-विष

तेरी नेहका मुंजकूं विच्छू लड्या । मेरे स्वही तनमें विस उसका चड्या ।।
मै आई हूं तुज पास उतारा करन । तुमी करनेहारा उतारा पियारा ।।
जो देखी मैं उस रुपवन्ता सजन । नयन उस सलोने ते फिर विस चड्या‡ ।।

---

१ प्रिय की दृष्टि, २ सुन्दर, ३ चाल, छल छद, ४ प्रिय के आगे, ५ सम्मानित, ६ किसी, ७ प्रियतमाका कद, आकृति, ८ दासपन, ९ युग का ध्रुवतारा, १० पाया (पजाबी), डाला।

* वही, पृष्ठ ८५ ।

११ सखी के पास, १२ कुछ, १३ भ्रू, चन्द्र धनुष, १४ चित्र, १५ सतुष्ट, १६ लीला, १७ समुद्र, १८ स्थल, १९ हमेल, २० पाये (पजाबी), डाले, २१ अद्भुत, २२ तई, लिये (रुहेलखडी), २३ और, २४ तुम्हारे पास, २५ सुन्दरियां, २६ पूर्णतया, २७ किसने, २८ सकेंगे (पजाबी), २९ विचार।

† वही, पृष्ठ ६९ ।

‡ वही, भाग २, पृष्ठ २७ ।

(१५) प्रेम-प्रतीक्षा—

करो फडके[1] आवेंगे मन-हरना। लगूँगी आज पिया के चरना।।
सँवारी हूँ मै सद्रे सीना[2] तुतै[3]। मो अंगन में तू पिया पग धरना।।
कि देवो मुजकूँ असर[4] तुम ललना। कि तुमीं मन के मेरे है परना[5]।।
दूते का कूड़कपट दूतिन कूँ। नेहनगर में तो सकियाँ सों फिरना।।
फूल-वन में तेरा नाजुक है दहन[6]। चुप रहना आह सखी ना करना।।
नबी सदके कुत्बा के मन में।
जौ सी नाव[7] सकी[8] जप हरना* ।।

(२)

युसुफ़े-गुम[9] फिर आगा[10] अब व कनआँ[11] ग़म न खा।
घर तेरा उम्मेदका होगा गुलिस्ताँ[12] गम न खा।।
ऐ हिया, नेह दुख दुख्या सो खूब होगा हाल तुज।
म का चिन्ता हो गया फिर आकि जानाँ[13] ग़म न खा।।
विरहे कहावे दो दिन था दूर अपने पीवते।
दायम[14] एकधा तूँ न रहसी[15] कार मीजाँ[16] ग़म न खा।।
जम[17] बहारे-उम्र तुज है फिर कि आगा[18] बाग मे।
चत्र[19] फूलका खिलके रँगीं मुर्ग खुशख्वाँ[20] ग़म न खा।।
हाँ तु नां उम्मेद ना हो कौन जाने सिर्रे-ग़ैब[21]।
क्या अछैगा[22] पर्दे ओझल खेल पुतल्याँ ग़म न खा।।
ओ जँगल में शौक सों अब काबा खातिर[23] रख कदम।
तुज अगर बोले चुभे काँटे मुगीलाँ[24] ग़म न खा।।
ए हिया, मोजाँ ते न डर मन का भाता होयगा।
तो तुझे है नूह कश्तीबान[25] तूफाँ ग़म न खा।।
बाट तेरा दूर अगर है इश्क पथ दिखलायगा।
शाहे रायाँ[26] तूँ है रायाँ मे ज रायाँ[27] ग़म न खा।।

---

१. अब, जब, २. कलेजा, छाती, ३. तेरे तई, तेरे लिये, ४. प्रभाव, ५. प्राण, ६. मुख, ७. नाम, ८. सखी।

* वही, पृष्ठ ७१।

९. लुप्त, १०. आयेगा, ११. कनआँ मुल्क मे, १२. पुष्पवाटिका, १३. प्यारी, १४. सदा, १५. रहैगा, १६. काम नापनेवाला, १७. सदा, १८. आयेगा, १९. छत्र, २०. सुभाषी, २१. गुप्त-रहस्य, २२. रहैगा, २३. कलाके लिये, २४. बबूल, २५. नाविक, मल्लाह, २६. शाहंशाह, २७. राजाओंसे।

कुत्बशह इस गजे फिक्रो खिलवते[1] दीनी मने[2]।
ता अछे[3] ददत[4] दुआ वो दर्से कुरआँ[5] गम न खा* ।।८०।।

(१६) प्रेम-उल्लास—

तुज रूप देख पाते हैं चित के नयन उमस[6]। अस्तुत तेरी करन केरे तिल-तिल[7] वचन उमस ।।९७०।।
तुज हुस्न केरे दार[8] में रक्काम[9] होयकर। करता है रक्स मस्ती सो पाकर गगन० ।।
जिस देस[10] ते तुज देख्या उस दिन ते बेसुद हो। भी[11] तुजसों मिलने ताईं करे जीव तन० ।।
है बेबहा[12] वतन सकी तूं तो तेरे ऊपर। आपसके तै[13] निवारने[14] करने रतन०।
तेरा उमस सका कधी जासे[15] न मुंजे सेती। राख्या हू दिलके तव्ले में तेरा जतन० ।।
तुज मुख के नीरते सो तेरी पायकर सदा। पाते हैं ताज़ा होय कि सब फूलबन० ।।
सदकें नबी के कुत्ब सदा इश्कबाज़[16] है ।।
इस काम में मुजे देते हैं पंज-तन[17] उमस† ।।

(१७) प्रेम-प्यास—

सकी, आज प्याला आनन्द का पिला मुंज। व याकूत अधरा[18] की मस्ती दिला मुज ।।५३७।।
महल दिसते हैं नूर के अति सफा[19] सो। सकी ल्या सजनकूं मनाकर बुला मुंज ।।
गगन से तबक[20] मोतियाँ सो भरे हो। पिया आरती ताईं पिउकूं हिला[21] मुंज ।।
तेरे नेह बिन जीवना मुंज न भावै। मसीहानमन[22] आप-दम[23] सो जिला मुंज ।।
अधर तेरे बिन मुज न भावें अकीकाँ[24]। वदन[25] तेरे बिन नै है नीका तिला[26] मुंज ।।
तेरे हुस्न[27] बिन होर मुंज नैन में कद[28]। न आवे कि है इस सेती इब्तला[29] मुंज ।।
नबी सदके कुत्बा अली मेह सेती।
बँधा दिल कही नै उनन बिन बला[31] मुंज‡ ।।५४३।।

---

१ एकान्त, २ में, ३ रहे, ४ तेरी पीडा, ५ कुरानका पाठ।

*वही, पृष्ठ ९।

६ गरमी, उल्लास, ७ पल पल, ८ युग, ९ नर्त्तक, १० दिवस, ११ तो भी, १२ अनमोल, १३ अपने लिये, १४ रोकने, १५ जायगा (पंजाबी), १६ प्रेमखिलाडी, १७ पांच वीर (मुहम्मद, फातिमा, अली, हसन, हुसेन)।

†वही, पृष्ठ १२५।

१८ लाल जैसे ओठ, १९ अति स्वच्छ, २० थाल, २१ फँसा, खींचा, २२ ईसा की तरह, २३ अपनी श्वास, फूंक, २४ एक लाल पत्थर, २५ मुख, २६ सोना, २७ सौंदर्य, २८ कभी, २९ परीक्षा, ३० अलीकी दया से, ३१ आफत।

‡वही, पृष्ठ ७३।

(१८) प्रेम-मदिरा--

(१)

सकी तुज अधर ते पिला मुँज नबेज[1]। चुमन के नकल सों पिला मुँज नबेज ।।७६९।।
जिया कूँ[2] दिया है सफा[3] नेह-शराब। दिया दिलकूँ कौसर[4] जला मुँज नबेज़ ।।
मेरे नैन जौ सूर[5] पुरनूर[6] कर। दिलाकूँ दिलाकर खिला० ।।
तेरे नैन ते मुँज चड्या है असर[7]।
दिया तुज तिला[8] की कला० ।।
जो वन की सुराही कुतुब हत में दे।
बशारत[9] दिया कुत्कुला मुँज नबेज़* ।।७७३।।

(२)

ननाँ के बंद[10] में हिल्ज्या[11] हो किन[12] नहीं है अगाहा[13]। ना बूझ सक कहते मुँजकूँ दीवाना गुमराह[14]
नेह खरग-धार उपर चलना बहुत है मुश्किल। चलना सकउसके ऊपर खोये है सब अपनी राह।१६७०।
पियार ओ इश्क का होकर नेह सफ़[15] में डरता हूँ। है मुद्दआ यह मेरा सिज्दा[16] करूं ओ दरगाह[17]।
मुखफूल-आसमाँ में दिसते है तोरे जौहर। अप काम में है फिरते नही किसते कोई अगाह।
है मात तेरे जिस्म अँगे कैकवाद व रुस्तम। चेरे[18] बंदे है तेरे हमकुँ रख अपने दिलख्वाह[19]।
किन लिख सके हिसाब तेरी सिफ़त[20] के या रब[21]। मुँशी बनो चहें इन्शा[22] कलमाँ होय है ज्यों कार[23]।
काफ़िर[24] कहो मुंजे कोई या जाहिद[25] व सुसल्मां। अहराम[26] बांध्या उसका न सूजे[27] होर दरगाह।
तुज नेह सूर[28] कूँ झारन कोई जगमें। यक रंग होये सो झाडे तू दीसे सब में जमजाह[29]।
ताकीब है हमारी तरकीब[30] लै तराकीब[31]। टुक नोश दारु[32] भेजो तरकीब होवैगा शाह।
मैं तिफ्ल[33] हो तुम्हारे मक्तबते[34] इल्म बूझ्या। तो देवें आलमाँ[35] सब शाबाशी मुँजकूँ गहगाह[36]।
ये सरफ़राजी[37] बस है दो जगमने[38] **मआनी**।
मुँज सीस पर लिख्या है इस्मे[39] मुहम्मद अल्ला† ।।१६७९।।

---

१. जौ की शराब, २. को, ३. स्वच्छ, ४. स्वर्गकुण्ड, ५. सूर्य, ६. प्रकाशपूर्ण, ७. प्रभाव, ८. तेरे तिल, ९. सुसमाचार।

*** वही, पृष्ठ १०१।**

१०. बंधन, ११. फँसा १२. कोई, १३. जानकार, १४. पथभ्रष्ट, १५. प्रेम-पाती, १६. दंडवत, कोरनिश, १७. दर्बार, १८. दास, १९. मनमाना, २०. गुण, २१. हे भगवान्, २२. लेख, २३. तृण, २४. नास्तिक, अधर्मी, २५. संयमी, २६. हजके समय की पोशाक, २७. सूझे, २८. सूर्य, २९. सदा प्रतापी, ३०. बहुत, ३१. युवतियाँ, ३२. पीने की दवा, ३३. बच्चा, ३४. पाठशालासे, ३५. विद्वान् लोग, ३६. जब-तब, ३७. सम्मान, ३८. दोनों लोकों में, ३९. नाम।

† वही, भाग २, पृ० २२०।

(१९) प्रेम-मस्त—

सजन मेरा चचल अहै पेम-माता[1]। सक्याँ कूँ पिया बात रगी सो माता ॥१८३॥
मोहन कोप करते है, आप नाज सेती[2]। दूतिन जा कहे है मगर मेरी बाता ॥
सँताते हैं छदो सो साजन वलेकिन[3]। सजन का मया नेह मुंज दिल न पाता ॥
मेरी चिन्त[4] करते हैं साजन पिरित सो। उसीने सदा विरह कूँ मैं सताता ॥
दूतिन गलती होर बलती जों मोमबत्ती। गँवाती है जलने मने[5] सारी रात ॥
सदा माँगू मैं जीव होर दिल सो पिउकूँ। कि उस बिन दुजा मेरे मन न समात। ॥
नबी सदके कुत्बा सो कह बिनती मेरी।
कि तुम हुस्न[6] का छब मेरे मन रिझाता* ॥१८९॥

(२०) प्रेम-सुख—

(१)

ऐ नार मेरे नैन कूँ दे आपना दीदार ऐश[7]।
मरवन[8] भि तपते हैं मेरे इनकूँ भी दे गुफ्तार ऐश[9] ॥२५२६॥
मुंज नाक धन[10] तुज नाक तें दम बास[11] का धरता हवस[12]।
दम बास देकर तू उसे दायम[13] दिये आधार ऐश ॥
तुज दुर अधर[14] तिसमे नबात अम्रीत[15] भर।
मेरे अधर पर धर अधर मँगता हूँ मैं आसार ऐश[16] ॥
मुंज कठ धन तुज कठ की कँठकूँ बहुत मगता अहै।
मुंज कठ सा हम कठ[17] होरे मूर का झलकार ऐश ॥
बाहा मेरया मुश्ताक[18] है तुज बाह के गलहार के।
बाहाँ मने[19] बा[20] ना सके तुज बाँह का गलहार ऐश ॥
मुंज हात मँगना है अदिक[21] तुज हात सो मिलने के तें[22]।
मुंज हात कूँ अप हात सो करने दे तूँ ऐ यार ऐश ॥
भेटन के दो वट सेति धन कुच कच्च अपना तुज कर।
हम दोनो कुच सो कुच लगा कुछ कुछ करे हरबार ऐश ॥

---

१ प्रेम-मस्त २ नाजसे, ३ लेकिन, ४ चिंता, ५ जलने में, ६ तेरे सौन्दर्य।
* वहीं, पृष्ठ २५।

७ आनन्द, दर्शनका आनन्द, ८ श्रवण, कान, ९ वचनका आनन्द, १० तरुणी, प्यारी, ११ श्वास-गंध, १२ लोभ, १३ सदा, १४ मोतियोंवाला ओठ, १५ मिसरी, अमृत, १६ आनन्दका प्रभाव, १७ एक कठ, १८ चाहनेवाली, १९ बाहोंमें, २० पा, २१. अधिक, २२ मिलनेके लिये।

छातीं सों छाती एक कर एक जीभ होर यक मीत सों।
तुज नखसेती नख मुंज करन में है ठारेठार ऐश ।।
मेरी तेरी रोमावली जमना बो गंगा जों मिल अहै।
रौं रौ सो मछली होयकर करते है तुज गंगाधार ऐश ।।
दो नाभि दो भंवरे अहैं संग्राम के दरिया मने[1]।
दो मन तेरा दो तीर तिर करते अहैं इस ठार ऐश ।।
तुज मुंज कमर के कटिमने[2] पीरित एकट सॅपडचा[3] विकट।
इस कटमने करता अहै दायम[4] मदन का भार ऐश ।।
तेरे मेरे पावाँ सकी[5] जों नाग नागिन मिल रहे।
सदके नबी[6] करता **कुतुब** करतार ते आपार ऐश* ।।२५३८।।

(२)

सदा मुंज ईद सूरी[7] है कि मै धन वस्ल[8] पाया हूँ।
वफ़ा[9] के मन्तराँ सेती सो धन का मन रिझाया हूँ ।।२५३९।।
कहो चँद-सूर कूँ जा जो यकायक आज ना निकलें।
कि धन-मुख-नूरते अपनी मजालिस[10] में दिपाया हूँ ।।२५४०।।
हजाराँ मिन्नताँ करता तो टुक हँस बोलती नैं थी।
सो आ उतरी है बाताँ में कि मै मद भी पिलाया हूँ ।।
शराब होर इश्कबाजी[11] बाज[12] मुंजने ना रह्या जाये।
कि यो वो काम कर ना कर मै ले सौगंद खाया हूँ ।।
सकी[13] हरगिज नको[14] कह हो कह्या मै बात तुजकूँ जो।
कि दो तन फट परैंगी वो उसे मैं आजमाया[15] हूँ ।।
समनदिल[16] म्याने गव्वास[17] होकर गोते मार बरसाँथी[18]।
वचन के मोति (निरछल) धुंड साक तुजताँई ल्याया हूँ ।।
सो धन जा ऐश कूँ पूछै कि तूँ आया है किस खातिर।
कह्या हँस ऐश[19] अजल[20] ते मै **कुतुब** शह खातिर आया हूँ† ।।२५४५।।

---

१. दरियामें, २. कटिमें, ३. पहुँचा, ४. सदा, ५. सखी, ६. पैगम्बरकी बलिहारी।
***वही, भाग १, पृष्ठ ३०३।**

७. वीरता-महोत्सव, ८. संभोग, ९. ईमान, १०. जल्से, ११. प्रेम-लीला, १२. विना, १३. सखी, १४. नहीं, १५. परीक्षा किये, १६. समुद्र, १७. गोताखोर, १८. बरसातमे, १९. आनन्द, २०. आदिकाल।

† वही, भाग १, पृष्ठ ३०५।

(३)

रैन सब शह मो मिलकर जागी मो छब नीका है प्यारी का।
नयन माते अलक बिखरे असर घुलता खुमारी का ।।
दिया झूला पेरेम वारा डोले फुलडालि हो नारा।
छुटे गल मोतिया हारा ।।
चले लटपट लटकवाली सो हो शह मद सो मतवाली।
अँचल सिर छूट गुल लाली झुले इस मतवारी का ।।
चँचल का मुख छबीला है अधर अमृत रसीला है।
अजित झलकार टीला है कि चदा रात सारी का ।।
दसन के दाग[1] गालांपर भँवर जो फुल गुलालां पर।
दिसै फुरु झल्क वालां पर सो जुगना[2] रात अधारीका ।।२५५०।।
सुलक्खन छँदभरी चचल खिसाये सीसते अचल।
मती होय मस्त जो मगल सो मद पी पिउ की प्यारी का ।।
नबी सदके कुतुब गजे तबल आनन्द नित गाजे।
सदा फुरु गेंद कँठ साजे सो जोबन धन हमारी का* ।।२५५२।।

(२१) प्रेम-रीति—

नयन बुतखाना[3] पुत्ल्याँ कूँ अछूता[4] करता हूँ सेवा।
सिंदुर टीला पेशानी[5] राखे तिल-तिल[6] रीत अदे नेवा[7] ।।२५१२।।
मुसल्माँ रीत काफिर रीत क्या रीत ऐ न जानूँ मैं।
कि जग के लोग रीताँ छोड पकडे रीत तुज जीवा ।।
धरे है कान में मुदरे चडाई है भभूती तन।
कि पुत्ल्या म्याने[8] दिम्ती है सो सचली पुत्लि जिव् दीवा ।।
उमँग नद्दी की कश्ती[9] में सख्याँ चढ खेल्त्याँ हैं खुश।
अंचल अबँग सुट पकडे उनाका हत सेती रैंवा[10] ।।
पिरित मेहतर[11] सो आई है सखी अब दूद जोबन पर।
नयन आ मिल खुला खेती सुराही न सुरा पीवा ।।
मेरा अमत अँचल ओझल लजत मुंजकूँ दिखाये है।
पसारया हात में आसाँ सो ओ अस मुंजकुं तक रैंवा ।।

---

१ चिह्न, २ जुगनू।

*वही, भाग १, पृष्ठ ३०७।

३ नयन रूपी प्रतिमा-गृह (मन्दिर), ४ केवल, ५ टीका ललाट पर, ६ पल-पल, ७ नई, ८ पुतलियोमें, ९ नाव, १० रहूँगा, ११ महत्तर।

नबी सदके पिरित बागाँ में इश्रत करता हूँ करसूँ[1]।
कुतुब शह कूँ खिलात्याँ है सहेल्याँ रँग-भरा मेवा* ॥२५१८॥

(२२) **प्रेम और बुद्धि--**

पेरेम आपना चत्र[2] जगपर सो छाया। जहाँ अपनापनी छाया अपस वाँ दिखाया ॥२५८८॥
पेरेम फूलवन में सुगँद वास महका। पेरेम आपने हात अरगज गलाया[3]॥
सभी आलिमा[4] अब पडन[5] जानते हैं। नहीं कोई पाया ऐ पीरित का माया ॥२५९०॥
पेरेम के सौ पैमाने[6] सों मद पिलाकर। पिया ताक अब[7] सों सिज्दा[8] कराया॥
अकल के तखत पर पेरेम तख्त बैठा। इशक अक्ल के हात अपसे नवाया॥
न आशिककुँ कटता है बिन इश्क एक तिल। वो आकिल[9] सदा जिन पिरित सों गँवाया॥
पियारे से गमता[10] नबी सदके **कुतुबा**।
पेरेम उसकूँ साजे जिने यों गमाया† ॥

(२३) **प्रेम-स्मृति--**

जग जोत इश्क का[11] ओ लाई अँचल क़िनारा।
लब्द्या[12] जिया पँखी ज्यों उस जोतकूँ हमारा ॥१०३॥
जब तूँ बुलाई हमना[13] पीरित में आपना कर।
जोसी[14] न कर तूँ फिर कर हम खातिर[15] इस्तखारा[16]॥
तुज मुक्ख की झलक[17] होर पेशानि की तजल्ली।
छिपता है सूर निसकूँ ज्यों छिपता देस[18] तारा॥
ऐ दीदवाँ[19] तअद्दी[20] ना कर मुजे नही डर।
नेह शह्र[21] मैं हूँ काजी कोतवाल हेचकारा[22]॥
अब आँखियाँ कुँ कह तूँ टुक मह्रमत नजर[23] कर।
ताले[24] लिख्यासो अँपड्या[25] उसकूँ नहीं है चारा॥
जह्दाद[26] होर आलम[27] हो जौहरी व सर्राफ।
ना बूझें तूँ बुझ्या सो कर बात आशकारा[28]॥

---

१. करूँगा।

* वही, भाग १, पृष्ठ ३००।

२. छत्र, ३. लगाया, ४. विद्वान्, ५. पढ़ता, ६. प्याला, ७. भ्रू-रूपी, ८. प्रणाम, दंडवत, ९. बुद्धिमान्, १०. पसंद होता।

† वही, भाग १, पृष्ठ ३१७।

११. प्रेमका, १२. फँसा, खिंचा, १३. हमको, १४. ज्योतिषी, १५. हमारे लिये, १६. शुभ-कामना, शुभ-प्रार्थना, १७. चमक, १८. द्योस, दिवस, १९. रक्षक, २०. कड़ी, २१. प्रेमनगर, २२. बेकार, २३. दृष्टि, २४. भाग्य, २५. पहुँचना, २६. संयमी, २७. पंडित, २८. प्रकट।

नेहबुंद अझुवां[1] ते जाता फतर[2] तडक गल ।
हैरान है मआनी ओ दिल मे नै है ठारा[3]* ॥१०९॥

(२४) प्रेम छद-बद—

पिरित जलमें जिने रै[4] होर न जाने । ओ पिरित बातकू हरगिज न माने ॥२५५७॥
जिने जम[5] नेह ध्यानां में रह्या है । उमे मालूम है सब नेह के माने[6] ॥
हक अप पिरित के तै दो जग न पाया । वडे भाग उनके जिन ये पथ पिछाने ॥
इशक की जिन न बूजे उन निकट भाव । पिरित में उन करे भौत[7] आनेभाने[8] ॥
हमारा भेद नै तुझते न को आय । हमारे होर पियाके दरमियाने ॥
करे सेवा पेरेम का रात-दिन वो । विरह की रैन जिन कोई बहाने ॥
नबी मदके पियारी कुत्ब आखें ।
पेरेम के छदबंद सब तूं पिछाने† ॥२५६३॥

(२५) मोहिनी तावीज—

(१)

पिया का रूप निर्मल है सदा मेरे नयन तावीज । पियारेका पिरित प्यारी के न्हनपनते मन तावीज[9]॥
सजन के ओठ अमृत का लजत[11] यक देस[12] चाखेते । मो बोल जतकूं अर्जउलग किया है मुंज रमन० ॥
सकी मुंज लब पे[13] दिसनी सो निशानी बूजती है क्या । दिसे मेरे अधरकूं प्यारसो पिउ की रमन० ॥
अजब तासीर[14] है तुज नांवमें प्यारे जा सुनने मे । मक्यां भुलजाके खिलखिल लेके करत्यां हूं अपन०॥
मेरे बाजू कूं[15] जब लालन पकडते पाचो उंगल्यांसो । सो उंगल्या है सक्यां मुंज बाजूके कुंदन रतन० ।
पिया का नेह लग्या बरजोर मुंजपू बुंद[16] गायांर्[17] । कि कुच परिचीत ना होमे[18] हमन पर अप तुमन० ॥
पिया जिसदिन नही लगते गले मुंजसो तो दुख है मुज । गले लगना पियाका है सो मेरा दुखभंजन० ॥
न जाने किसकू अपनेह फंदमे संपडाने मंगते है । सुनी हूं कि लिखे है अपस हातो सजन तावीज ॥
सगी तावीज[18] पिउकन[19] वस्ल[20] का नेहते दिवानी हो । हुये मेरे दिवाने जब दिये मुंजकूं ललन० ।
सजन यक दिन विसर कर मुंज सलामां कैके लिख भेजे ।
सो उस कागजकुं जिउ समने[21] जतन करके हुअन० ॥
बसा सौ बरस लग कुत्बे जमां इस जगमे जीनेतैं । अजल दिनते दिये लिखकर दयाते पजतन[22]‡ ॥७६४॥

---

१ आंसू, २ पत्थर (दिल्ली), ३ ठौर।
* वही, भाग २, पृष्ठ १२।
४ रहे, ५ सदा, ६ अर्थ, ७ बहुत, ८ बहाने।
† वही, भाग १, पृष्ठ ३१२।
९ जतर, १० मतरका, तावीज, ११ स्वाद, १२ दिवस, १३ ओठपर, १४ प्रभाव, १५ बाँह को, १६ मेरे पसीनेकी बूंद, १७ होगा (पजाबो), १८ तेरी तावीज, १९ प्रियके पास, २० मिलन, २१ जीव समान, २२ पांच वीर।
‡ वही, भाग २, पृष्ठ ९४।

(२)

में उस बुतेहिन्दी[१] के राख्या हूँ दिलमें लिख वचन तावीज।
वो मुंजते दूर ना होये त्यों किया बुज[२] पर बँदन[३] तावीज ।।
दुआ होर मंतरां सेती वो चंचल मुँजकूँ सँपडे[४] कर।
बँध्या हूँ उसके दो जुल्फां सेती मै जिउ के मने[५] तावीज ।।
पिरित वरजोर धन वरजोर होर वरजोर[६] नाज[७] उसका।
बहुत परिचीतका[८] होना मुंजे नसरत करन[९]० ।।
इश्क के मारमें जानेकुँ मुंज दिलकूँ नहीं कुच डर।
किया हूँ उसकी पीरितकुँ मैं आपस का सुमन० ।।
पिरित के कौल[१०] देती है, वले[११] मुँजकूँ पत्यारा नै।
पत्यारा[१२] तो होवे मुँजकूँजो देवे मुँज चुमन० ।।
व पर्दायेत[१३] कटरायेत होर चालाक अचपल है।
नजर में किस[१४] न आवै त्यो रखे है दो जोवन तावीज ।।
मुहम्मद होर अली का नांव लेकर **कुत्ब**शह जीत्या।
सो चंचल के दो जोवन गढ तिसउपर के भी तने तावीज* ।।

(२६) **प्रेमालाप**—

(१)

सो धुन के लब[१५] ते मँग्या बोसा[१६] मैं तो पुछी नाम।
जो कह्या नाम उसे, बोली नाम दे दशनाम[१७] ।।१३१५।।
हँसी में सुटके[१८] अपस-मस्ती के वहाने सों।
दिखा के छंद चली हतमें ले सुराही जाम ।।
शराब पीके सूरज कर दिखाई अप तूँ समज।
अवल तू नैन सितारयां सों मुख था बदर तमाम[१९] ।।
जो फूल पेन[२०] खडी धन सो जौ निहाल[२१] खिल्या।
सरग में सर्व न तुजसा ए सर्व-गुलअन्दाम[२२] ।।

---

१. हिन्दी-सुन्दरी, २. भुज, ३. बंधन, ४. प्राप्त, ५. दिलके भीतर, ६. वली, ७. नखड़ा, हाव-भाव, ८. परिचय, ९. विजय करना, १०. करार, ११. लेकिन, १२. पतियाना, विश्वास, १३. अवगुंठन, १४. कैसे ही।

* वही, पृष्ठ ९७।

१५. ओठ, १६. चुंबन, १७. गाली, १८. छोड़कर, १९. संपूर्ण, २०. पहिन, २१. पौधा, २२. सरो और फूल-जैसे शरीरवाली।

मुमन[1] पै दाल सुंबुल[2] या देसा कि तिल गखे।
जीवाँ के पर्नी[3] पकडने अलक के मुखपर दाम[4]॥
वैन पै लबद[5] धर ओ लब सदाँ[6] अजल[7] ते कहे।
अबद[8] लगो मुंजे तुजमो है तुजकूँ मुजसो काम॥
नवी के सदके कुतुब शाह लग्या है धनके गले।
जो लाम अलिफ नमन[9] मिल रहे अलिफ होर लाम* ॥१३२१॥

(२)

पिरित के दावा[10] खेलने तुजसो रही ना हारसूँ[11]।
तनमें रहूँ क्या काम जिव जो इश्कपर ना वारसूँ[12] ॥१४७५॥
जो मुंज विसरते हैं तुमी तुम ना विसर रहते हमें।
हमना[13] तुमन बिन ना गमे[14] जाता बहुत दुस्वार[15] सूं॥
जो जीव सेती मिल है तन वो जिउ मँगे तुजसों मिलन।
दो नैन पिया तुज देखन, बिछडा ना अपदीदार[16] सूँ॥
क्यो रह सकूँ तुजसो एकट[17] जाता मुझे हर तिल[18] विकट।
लाये हैं चोराये अजुट[19] तुम आपने पर वारसू[20] ॥
दाटे[21] मदन सादो मुंजे पानी न अनभावे[22] मुंजे।
यक तिल वरस जावे मुजे क्या पूछने तकरार[23] सूँ॥
जबते जगत में आइया जो जिउ मँग्या सो पाइया।
डोरा जिकरका[24] लाइया में हैदरेकर्रार[25] सो ॥१४८०॥
जब लग है तन म्याने[26] जिया तब लग रहूँ तुजसो पिया।
कुतुबा जिया दिल वादिया हजरत नवी दरबार सो† ॥१४८१॥

(३)[1]

छोडो वहाने[27] कुतवा तुमन परते वारी[28]। करो मुज मया[29] मैं हूँ चेरी तुमारी ॥२००३॥
जो कुछ हुस्न तुज है, सो किनकूँ नहीं है। तु पिउकी नजरमें है तूं सबते प्यारी॥

---

१ चमेली, २ जटामासी का दाना, ३ पक्षी, ४ जाल, ५ चिपक, ६ हँसते ओठवाला, ७ आदि (सृष्टि)-काल, ८ अन्त (प्रलय)-काल, ९ भांति, नाईं।

* वही, भाग २, पृष्ठ १७१।

१० दाव-पेच, ११ हारूँगा, १२ वारूँगा, १३ हमको, १४ पटरी जमे, १५ कठिन, १६ निज दर्शन, १७ अलग-अलग, १८ पल, १९ बाट, २० वारूँगी, २१ डाह, २२ भावे, २३ बार-बार, २४ स्मरण-ततु, निरतर स्मरण, २५ महावीर अली, २६ तन के भीतर।

† वही, भाग २, पृष्ठ १९३।

२७ बहाना, २८ नौछावर, २९ प्रेम।

पिया होर पियारयां के रँगसंग देखत । दुतिन[1] रश्क सों आप सुद-बुद बिसारी ।।
सहेली इशारत[2] करे नैन छँद सों । मुंज यों कि साई कुँ तिल-तिल[3] रिझा री ।।
पियारी के ताले[4] क़वी[5] हैं पिरितमें । कि साजन उपर आप तनमन कुँ वारी ।।
न कर भाना[6] पिउ मद देव अप लाल अधंरतो, कि उस मद का मुँजकूँ लगी है खुमारी ।।
नवी सदके कुतुबा तुं ए रुतवा[7] पाया ।
कि तुज दौर[8] में दीन[9] कूँ है इस्तवारी* ।।२००९।।

८. स्फुट कविताएँ

(१) निशा आगमन—

निसके समंद[10] स्याम में सुन्ने की जोरक़[11] डुब्बियाँ । (वो) डुबने में तिरने लगे वुडबुडे कै लख हजार ।
ग़र्ब[12] के चह[13] में पड्या युसुफ़ अंबरका सूर । जग सभे याकूब कै नैननमने[14] अंदकार[15] ।।
आग इब्राहीम का वुजके हुआ फूलवन । रैन सो तिस आग का है धुंये का धुँधकार ।।
चंद हो सिकंदर चल्या इन के जुलमात में । शमा दीपक मशाला रोशन हुये अपार ।।
चर्ख के खुमखाने[16] में सूर पिया जानो मद । मस्त हो जाकर पड्या ग़र्ब के चश्मे मँझार ।।
धन के लगन शमा चाँद तारे पतँगके नमन[17] । उडते है उस आस-पास झ्कते बेअख्तियार[18] ।।
घन के सौ हौज़खाने[19] में रैन भरा नीरजौ । चाँद फुयारा[20] नमन तारे बुंदां नीर सार[21] ।।
घन के मद्रसे कने[22] चांद मुर्दरिसकने[23] । बहस[24] करन तारे आये तालिबे-इल्माँ के सार[25]† ।।

(२) चित्रकाव्य—

नहीं कै	तुज ऐसी	महेली	छबीली
तुज ऐसी	न अछसे	जगत मे	रगीली
सहेली	जगत मे	न देख्या	गहेली
छबीली	रंगीली	गहेली	नवेली

इस वंध से निम्न प्रकार के और कितने ही पद्य बनते हैं —

---

१. सौत, २. संकेत, ३. पल-पल, क्षण-क्षण, ४. भाग्य, ५. दृढ़, ६. वहाना, ७. दर्जा, ८. युग, जमाना, ९. धैर्य ।

* वही, भाग २, पृष्ठ २६३ ।

१०. समुद्र, ११. नाव, १२. सूर्यास्त, १३. कुआँ, १४. नेत्रोंकी भाँति, १५. अंधकार, १६. घटिका-गृह, मधुशाला, १७. भाँति, नाईं, १८. बेवस, १९. कुंडगृह, २०. फौवारा, २१. जल-समान, २२. पाठशालाओं में, २३. अध्यापकों के पास, २४. वाद-विवाद, २५. विद्यार्थियों की भाँति ।

† वही, भाग ३, पृष्ठ ३८ ।

नही कँ[1] न अछसे न देख्या नवेली। छबीली जगत में जगत में छबीली।।
नवेली न देख्या न अछसे[2] नही कँ। नही कँ न अछसे न देख्या गहेली[3]।।
नही कँ न अछसे सहेली रँगीली। तुज ऐसी जगत में छबीली रगीली।।
छबीली जगत में गहेली गहेली। महेली रगीली न देख्या नवेली।।
सहेली न अछसे न देख्या रगीली। तुज ऐसी जगत में जगत मे गहेली* ।।

(३) चाँदनी—

चले चाँदनी में जब लटक पिउ हमारा। उनन अक्स[4] दीपै चँदरते अपारा।।२४९८।।
बसे जिस हिया म पिरित हम सजन की। बिन् उसकी पिरित कुच नही उस पियारा।।
जिनें सांइ के इश्क का मद पिया है। न करसे[5] उसे होर मस्ती उतारा।।
जे कोइ मस्त है साईं के हुस्न छबिते। उसे मानें नेह पत में जग सारा।।
पिया नूर बसाता है मुंज दिल झमक[6] में। कि जिस नूरते है सुरज आशकारा[7]।।
सकी पीड चिन्ता लगा है हमनकूं। सजन बिन न करसे ले होर कोइ निवारा।।

नबी सदके कुतुबा का मन तुजसों लाग्या।
कि अप-जीव[8] में तेरा कीता[9] है ठारा† ।।२५०४।।

(४) अन्योक्ति—

बाग में आके भँवर फूल सो कह्या यो वचन ।
नाज़[10] कम कर, कि खिले फूल बहुत तेरे नमन[11]।।१३६६।।
फूल हँसकर कह्या 'सच ना रुठमो[12] वले[13]। आशिकां ना कहै माशूक[14] कूं यो सख्त वचन ।।
गर हवस[15] है तुजे उस लाल प्याले ते शराब। पलक की अनिया सेती बीद[16] तूं मानिक-रतन ।।
हश्र[17] लग बास मुहब्बत की न आसे[18] उसकूं। जिन पेशानीसेती[19] झाड्या नहीं मैखाने अगन[20] ।।
बहिश्तके[21] बागमें कल बावके अतिलुत्फ[22] सेती।
लटे सुंबुल[23] का सो बिखर्या है सेहर[24] का सो पवन ।।

---

१ कहीं, २ हैं, ३ गर्वगहिल्ली।
* वही, भाग ३, पृष्ठ ५३।
४ रूप, चित्र, ५ करेगा (पंजाबी), ६ चमक, ७ प्रकट, ८ अपने दिल में, ९ किया (पंजाबी)।
† वही, भाग १, पृष्ठ २९६।
१० हाव-भाव, ११ तेरी तरह, १२ रूठूंगा (पंजाबी), १३ लेकिन, १४ प्रियतमा, १५ कामना, लोभ, १६ बिंधे, १७ प्रलय दिन, १८ आयेगी (पंजाबी), १९ जिसने ललाट से, २० मधुशाला का आँगन, २१ स्वर्ग के, २२ अत्यन्त स्वाद, २३ सुंबुल जैसी अलकें, २४ प्रात ।

हौं कह्या जमके तखतकूँ कि तेरा जाम[1] कहाँ। ज्वाब देता कि तुं चुप हो गये ले ऐसे करन[2]।।
इश्क की बात नहीं ओ जो जवां मे उसकी। साकियाँ[3] आके प्याला देके वस कर यों वयन।।
कुतुब के सब्र[4] सो अँझुवाँ[5] दिये दरियाकुँ उमक[6]।।
क्या करूँ इश्क नहीं देता है यो बात छुपने* ।।

(५) बुड्ढी की कहानी—

परियां के बाग म्याने[7] देख्या मंधिर[8] गुलाली। वाँ यक परी के मुखते सब वन लिया था लाली।
ओ नार नार चंचल गुल लाल गाल फुलदल। खिडकी मनेते[9] अँचल सिरपर ते सिरते ढाली[10]।।
तारे चंद उपरो कर राखे सो माँग सिर पर। जुगनी जडी मुनव्वर[11] ओढे झना सो आली।।
पडिया नजर यकायक हिल्ज्या सो जीव[12] बेशक[13]। चंगी उठी ज्यों चकमक हुस्नो हमन हलाली[14]।।
भुज उस लग्या हिलावा वो तन सो देख सोहवा। उस घरमें लाय लावां गत्तां सो जा उछाली।।
सुन अक़्ल उस बुडी[15] की सास आई उस गुडी[16] की। सो जिव मुखी खडीकी खिडकी पै झांप घाली।।
भौवाकूँ गाँठ बा[17] कर मुँजकूँ निपट दबाकर। गुस्सेते उस जुदाकर दीनी[18] हज़ार गाली।।
मुखपर वुढीकी झुडरी[19] कूशां के टल[20] की झुडरी[21]। मू चंदपे करना तिरडी ओ पापिनी है माली।।
कुत्बे जमां[22] **मआनी** बसकर बुढ़ी कहानी।
शैतान की है नानी आपसकूँ आप जाली[23]† ।।२५८७।।

§१०. अब्दुल (१६०३ ई०)

अब्दुल (अब्दुलगनी) तुलसीदास और मुहम्मद कुल्लीका समकालीन बीजापुर महाराष्ट्र का कवि था, जिसने १६०३ ई० (१०१२ हि०) मे अपने संरक्षक इब्राहीम अदिल (१५८०–१६२६ ई०) के सम्बन्ध में अपना काव्य इब्राहीमनामा (७५० वैत) अपने शाह–उस्ताद (राजगुरु) की आज्ञा पर हिंदी भाषा मे लिखा। इसमें वर्णित विषय है—

१. वादशाहकी दानशीलता
२. बीजापुर नगर
३. दुर्ग और प्रासाद
४. नृत्य, गीत
५. वादशाह का दरवार
६. नौरस महल
७. शाही सभा
८. शिकार और सेना
९. वादशाह के साथी
१०. वादशाहके घोड़े
११. वादशाह के शस्त्रधारी
१२. शाही बागकी मजलिस
१३. वंसतोत्सव
१४. वर्षगाँठका भोज
१५. ग्रंथ-समाप्ति की तिथि।

---

१. प्याला, २. युग, ३. मधुवाला, ४. धैर्य, ५. आँसू, ६. लहर।

*वही, भाग २, पृष्ठ १७८।

७. बाग में, ८. मन्दिर, ९. खिड़की में, १०. डाली, ११. प्रकाशमान, १२. मन, १३. निस्सन्देह, १४. रंज, १५. बुड्ढी, १६. गढ़ी, १७. पा (पंजाबी), डाल, १८. दिया (पंजाबी), १९. झुर्री, २०. टाल, २१. पापिनी, २२. युग का ध्रुवतारा, २३. जलाया।

† वही, भाग २, पृष्ठ २१५।

"इब्राहीमनामा" का एक महत्त्व अच्छा काव्य होना है, साथ ही इसका ऐतिहासिक महत्व भी बहुत है। अकबर-समकालीन इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय) दक्षिण का एक शक्तिशाली बादशाह था। अपने काव्य लिखने का कारण बतलाता है।

उन्ही शाह-उस्ताद कर सो नज़र[1]। बुलाया जो अब्दुल कुँ सिर हाथ धर॥
नवी बात मज्मून[2] कर इक किताब। न कोई पिनक[3] गूँथ्या है तिसका जवाब॥
न बाकी रहे कुछ तो आलम[4] निशान[5]। अगर कुछ रहे तो वचन शेर जान।
सो यो वचन सुन शाह उस्ताद का। पूछ्या जगत-गुर, 'शेर कह किस ज़ुबान[6]'॥
जवाँ हिंदवी मुझसो होर[7] देहलवी। न जानूँ अरव होर अजम[8] मस्नवी[9]॥
कह्या शाह-उस्ताद अब्दुल सो यो। तू हर एक जवाँकार शेर बात यो॥
फने शेर[10] सब मुल्क में एक धात[11]। इशक[12] परगटे छिपें रूप बात॥

काव्य के आरम्भ और अन्तकी कुछ पक्तियाँ—

आरम्भ—

करूँ इबतेदा[13] शह बराहीम नाम। कि जिस सिफ्त[14] आल्या[15] फिर्या है तमाम[16]॥
सुरग मिर्त पाताल हर एक धरा। रखा रूप सरवर हो आलमभरा॥
इलाही[17] जवाँ गज तूँ बोल मुझ। अमोलक[18] वहाँ कर जे बोल मुझ॥
कहूँ विस्म[19] अव्वल तो अल्लाह लाय। गले मुख खुले जीव[20] पकडे सो लाय*॥

§११ अमीन (१६२० ई०)

दक्खिन में अमीन उपनाम के कई हिन्दी कवि हुये हैं, जिनमें एक बीजापुरी "बहराम हुस्नवानूँ" का रचयिता इब्राहीम आदिल द्वितीय के समय (१५८१-१६२६ ई०) में हुआ, और मुहम्मद कुली, वजही, गौवासी का समकालीन था। दूसरा अमीन गोलकुंडा के अब्दुल्ला कुतुब (१६२४-१७२९ ई०) का समकालीन तथा पहिले के बाद में हुआ, जिसने "अबूशहमा" की कथा पद्यवद्ध की। यहाँ पहिले अमीन से मतलब है। "बहराम व हुस्नवानूँ" को वह समाप्त नही कर पाया, जिसे बीजापुर के दूसरे कवि दौलत ने १६३८ ई० (१०४८ हि०) में पूरा किया। अमीन फारसी का भी कवि था।

(१) अमीन दरबारी कवि नही बल्कि शाह आलम नामक किसी पीर का अनुयायी था। मगलाचरण में उसने लिखा है —

---

१ कृपा, २ विषय, ३ चिन्तन, ४ ससार, ५ चिह्न, ६ भाषा, ७ और, ८ पारसी, ९ कथा, १० काव्य-कला, ११ एकधा, एक भाँति, १२ प्रेम, १३ आरभ, १४ जिसका गुण, १५ दुनिया, १६ सारी, १७ भगवान्, १८ मूल्य, १९ नाम से, २० चिह्न।

* द० उ० म० पृ० २६७।

इलाही जगत का करनहार तूँ। गरीबाँ नबीयाँ[1] का उद्धार तूँ॥

(२) बहराम और हुस्नबानू की प्रेम कथा आरम्भ है —

यकायक मेरे दिल पै आया खियाल। किसा यह कहूँ मै मुकीमीं मिसाल[2]॥
जबाँ पर वचन खूब आता चला। यो मज़मून[3] खुश्तर निभाता चला॥
किसा में किया है जो गुल नामका। सो बानूं[4] हसन शाह बहराम का॥
जो कोई पढ़े सो करे मुँजकूँ याद। तअज्जुब से दिलकूँ करे अपने शाद॥
अमीं दास्ताने किसा[5] अब करो। खुदा की सना[6] बीच दायम[7] रहो॥
किसा फारसी सुनके पाई खबर। खुदा की जो कुदरत[8] मे एक था शहर॥
कि फारस उसी शहर का नाम था। वहाँ बादशाह शाहा बहराम था॥
इसम[9] शाह बहराम उसका असल[10]। उसे गौर[11] के सैद[12] का था अमल[13]॥
लकब[14] तब हुआ शाह बहराम गौर। न था उसके सानी[15] कोई जग में और*॥

(३) प्रातःकाल का वर्णन

हुआ सुबह[16] का वक्त यकायक तमाम। लग्याँ बोलने तूतियाँ खुश-कलाम[17]॥
सुबह पन अपस मुदसों खींचा नकाब[18]। हो मशरिक[19] से निकला तबा आफताब[20]†॥

(४) प्रथम मिलन

राजकुमारी हुस्नबानू और उसकी तीन सहेलियाँ तालाब में नहा रही थी। उनमें बहराम की ही बात चल रही थी। बहरामने उनके कपड़े छिपा दिये। बाहर आकर देखती है तो कपड़े नहीं है। इसी समय की घबड़ाहट को कविने चित्रित किया—

सहेल्याँ जो थ्याँ तीन उसके सँगात। उनों ने निकाले यह उस वक्त बात॥
सुना शहर **फ़ारस** का है बादशाह। है खूबी मने[21] खूब ज्यों मेहोमाह[22]॥
कते[23] है बहुत खबसूरत है वो। फिरँग चीन की खबमूरत[24] है ओ॥

---

१. पैगम्बर, २. स्थायी रूपका, ३. निबंध, ४. सुन्दरी, ५. कथा-विस्तार, ६. स्तुति, ७. सदा, ८. शक्ति, ९. नाम, १०. वास्तविक, ११. गोरखर, जानवर, १२. शिकार, १३. काम, शौक, १४. उपाधि, १५. जैसा।

* युं. द. पृष्ठ २१९।

१६. प्रातः, १७. सुवचन, १८. पर्दा, घूँघट, १९. पूरब, २० सूर्य।

† वही, पृष्ठ २२०।

२१. सुन्दरतामें, २२. सूर्य-चन्द्र, २३. कहते, २४. सुन्दर मूर्त्ति।

अगर्चे वही आदमीज़ाद है । चँदा उसके आगे सो बी मात है ।।
ले आया उसे देव आशिक होर । रखा है लिया कर अपस ठार पर ।।
कबूतर हो उसकू चलो देख आये । पिछूँ अपने घर कूँ अपस सब सिधायँ ।।
उठी बोल बानू हुसन तब शिताब[1] । "मैं देखा है इम् शब[2] परेशान ख्वाब[3] ।।
नही कुछ नफा आज इस बात का । मेरे दिल में धोखा है कुछ घात का ।।
कि वल्लाह अअलम्[4] लगे कुछ बला । अपन सब उस ऊपर होयँ मुब्तला[5] ।।
मेरे दिल कूँ दहशत[6] बडी आज है । निगहबान[7] अपना खुदा आज है ।।
देखे (गे) किसी ओर दिन आयकर । अछी नेक सायत अपन पायकर" ।।
अपस मे वह कर आप अपना करार । नहाकर के पानी सा आयी बहार[8] ।।
न देखा अपस रख्त[9] कूँ ठार पर । उठ्याँ तुरत मीना परा बार[10] कर ।।
वह रोने लग्याँ व्हाँ निपट जारजार[11] । सबर[12] कर गरेबाँ के तैं फाडफाड ।।
लग्याँ दिल मे करने अपस के विचार । हुयाँ गम सो रो रो भौत बेकरार ।।
खबर लेवा है कौन ऐसा बशर । जिने दस जग हुआ किया है गुज़र ।।
लग्याँ ढूढने बाग भीतर तमाम । हरेक ठार गुजर्याँ व हर यक मुकाम ।।
वहाँ धूँढ्याँ मौत बेजार हो । अपस मे वह सब आप लाचार हो ।।
खड्याँ हो उसी ठार की ताअवाज़ । कि "ऐ दुज्दे छदी व हीलादराज़[13] ।।
तु है आदमी या फरिश्ता मगर । कि है जिन परी देव बेदादगर ।।
तु होये अपस की कहे जा मुराद । क्सम है खुदा कि करे उसकू शाद[14] ।।
वह सुन शाह वाँ सेती आया बहार । देखत शह की खूबी गइयाँ सुधविचार ।।
तुरत सेती मिलकर यो कीनी अरज । "कहो तुमकूँ हम साथ क्या है गरज ।।
जो कपडे हमारे रखे हैं छुपा । जो दिल मे होवे सो तुम देओ बता" ।।
उनो साथ तब शाह उठा बोलकर । छुपे राज दिल के सभी खोलकर ।।
"तुमारे जो साथ है बानू हुसन । उने दिल में मेरे किया है वतन ।।
मेरा जीव उमपर हुआ है फिदा । खुदा उसमें मुजकूँ न राखे जुदा" ।।
यह सुनकर पर्याँ ने दिया तब जवाब । उठा शर्म का मुखतें दूजा नकाब ।।
"तुं है बादशाह जग में इन्सान का । तुझे है मरातब[15] सुलेमान का ।।
तू ह शहखिरदमद[16] रोशन जमीर[17] । तूं है जग के इनसान मे बेनजीर ।।
हमारी जबाँ से कहें क्या तुझे । यो है सब हकीकत हवेदा तुझे ।।
अबस तुमने हमसो किया है खियाल । यही बात होनी निपट है मुहाल ।।

---

१ जल्दी, २ आज रात, ३ स्वप्न, ४ अल्ला जानता, ५ लग्न, फँसें, ६ भय, ७ रक्षक, ८ बारह, ९ वस्त्र, १० भार, ११ फूट-फूटकर, १२ सतोष, १३ बहानेबाज, १४ खुश, १५ पद, मर्यादा, १६ अधिक बुद्धिमान्, १७ विवेक ।

कहाँ हम परीजाद[1] कहाँ आदमी। कहाँ आसमाँ और कहाँ है ज़मीं॥
देओ कपड़े होर इने देओ रजा[2]। खुदा इसका देवेगा तुमकूँ जजा[3]"॥
कहा शह ने "हरगिज़ न होये यह बात। मेरा जी लग्या है इसी के सँगात॥
मेरे तें इसी साथ अब काम है। मेरे दिल में अब यह दिलाराम[4] है॥
अगर तुम करो फंद हजाराँ हजार। न देऊँगा कपड़े तुम्हे एकबार"॥
देखा तब परियों ने यह अटका है अब। इसे देख शह[5] दिल में हटका है अब॥
करें क्या अपन अब इसका इलाज। कठिन[6] सरपै मुश्किल पडी आके आज॥
कहा उसकुँ अपनों में समझायकर। बहुत हिकमताँ सेती[7] वहलायकर॥
वलेकिन न समझा यही शह-जवाँ। चला छोड़ उसकूँ अपन होय रवाँ॥
"यह सबपर कछू तुमतो आशिक नहीं। सहेल्याँ है हम तेरे लायक नही॥
हमारे देओ कपडे हमन हात में। तुजे हैं नफा देख इस बात में"॥
कहा शह ने "नूर अला नूर[8] है। यही बात मुजकूँ सो मंजूर[9] है"॥
दिये कपडे उनके सो होकर खुशहाल[10]। रखा रख्त[11] बानूका शह ने सँभाल॥
ले कपडे सहेल्याँ गयाँ घर तरफ। हुआ होश उसका सभी बरतरफ़[12]॥
खिजल[13] हो सरोपा[14] डुबी आब[15] में। पडी गमसों हैरत के[16] गर्दाब[17] मे॥

§१२. गौवासी (१६२० ई०)

१. जीवनी

मुल्ला गौवासी दक्खिनी हिन्दीके तीन महाकवियोंमेंसे एक है। वह गोस्वामी तुलसीदास के जीवन-कालमें कविता करने लगा था। इसकी दो कृतियाँ मिली हैं, जिनमेंसे एक "सैफ़ुल्मलूक-व-बदीउज्जमाल" को उसने गोस्वामी तुलसीदास के देहान्त के दो साल वाद (१६२५ ई० में) लिखा था। इसकी दूसरी कृति "तूतीनामा" है, जिसे उसने पहली कृतिसे चौदह साल बाद (१६३९ ई० में) समाप्त किया। वह गोलकुडा का शायर था, जिसके पास हैदराबाद तब आबाद हो चुका था। मुहम्मद कुल्ली कुतुब शाहने हैदराबाद को अपनी प्रेमिका भागमतीके नामपर पहले भागनगर नाम दिया था, बादमें उसने प्रेमिकाका नाम 'हैदरमहल" रख कर नगर को भी "हैदराबाद" प्रसिद्ध करना चाहा था, लेकिन तब वह सफल नही हुआ। यद्यपि गौवासीकी रचनाएँ मुहम्मद कुल्ली कुतुब शाह (मृत्यु ११ जनवरी १६१२ ई०) के समय ही शुरू हो गई थीं, किन्तु अभी वह सम्मानित राजकवि नही हुआ था। मुहम्मद कुल्लीके उत्तराधिकारी मुहम्मद कुतुबके शासनके चौदह साल (१६१२-२६ ई०) में भी इस महान् कविकी कदर नहीं हुई। अगले उत्तराधिकारी सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब शाह के शासन काल (१६२६-६२ ई०)

---

१. देव-कन्याएँ, २. स्वीकृति, ३. बदला, ४. प्यारी, ५. चाल, ६. बहुत, ७. उपाय से, ८. प्रकाशके ऊपर प्रकाश, ९. स्वीकृति, १०. प्रसन्न, ११. वस्त्र, १२. उचाट, १३. लज्जा, १४. सिरसे पैर तक, १५. पानी में, १६. आश्चर्य के, १७. जलके भँवर।

में ही गौवामीका सितारा ओज पर पहुँचा। "तूतीनामा" (१६३९ ई०) लिखने के समय वह राजकवि था।

(१) आश्रयदाता—

गौवामी से पहिले वजहीकी कीर्ति चारो ओर छाई हुई थी। वजही अपने इस तरुण समकालीन कवि से केवल ईर्ष्या ही नही करता था, वलिक भय भी खाता था। उसने अपने ग्रन्थो में उस पर छीटे कसे है। सम्भव हे, वजही की प्रतिद्वन्द्विता ने भी तरुण कवि को मुहम्मद कुल्ली कुतुब जैसे महान् कवि के सम्मान का पात्र न होने दिया हो, अथवा यह भी हो सकता है कि वह अभी कविता की पाठशाला का एक शिशु-छात्र मात्र था। कवि-सुल्तान का उत्तराधिकारी और दामाद उतना कविता-प्रेमी नही था, न अपने ससुर की तरह मुल्लो की खीची सीमा से वाहर जाकर उदारता दिखाना चाहता था। सम्भवत इसी कट्टरपन के कारण उसने भी गौवामी की प्रथम कृति "सैफुल्मलूक" के प्रकाशित हो जाने पर भी कवि की कोई क्दर नही की। कवि कुछ निराश सा हो चुका था, जब कि उसने तीसरे सुल्तान अब्दुल्लासे दया की आशा रखते हुए निम्न पक्तिया लिखी—

जो सुल्तान अब्दुल्लाऽ इसाफ कर। मेरे जौहरां पोते[1] दिल साफ कर॥
देवे दाद मेरा वहुत मान पाँव। उमस दूरने[2] ता गरीवान[3] पाँव॥
कि यो शाह मेरा खरीदार होय। तो ताजा[4] मेरा तव गुल्जार[5] होय॥
कि गमगी[6] हूँ मै सख्त ससार ते। धरूँ दगदगे लाख उस आजार[7] ते॥
परेशानगी[8] में जम्या ख्याल मैं। ले आया हुँ ऐसे रतन ढाल में॥

—सैफुल्मलूक

गौवासी की प्रार्थना अकारथ नही गई। सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब ने उसका वहुत सम्मान किया। १६३५ ई० में वह दरवार का राजकवि ही नही था, वल्कि इसी साल मुहम्मद आदिल शाह (१६२६–५६ ई०) के दरवार मे उसे गोलकुण्डा का राजदूत बना कर भेजा गया। बीजापुर के सुल्तान ने उसकी वडी प्रतिष्ठा की, वड-वडे इनाम दिये। गौवासी ने भी सुल्तान की इस कृपा के लिए तारीफ के पुल वाँधने में कोइ कसर नही उठा रखी। अपने दूसरे काव्य "तूतीनामा" में सम-सामयिक दूसरे दरवारी हिन्दी-कवियो की भाति उसने झूठी तारीफ के पुल वाँधे है।

(२) वैराग्य उपदेश—

गवासी अगर तूं है सचला गवास[9]। लगा इश्क अपने खुदा साथ खास॥
चलेगा केता नफस[10] के कय मने। केता होयगा नाव के पय मने[11]॥
जे कुच ख्वास्त[12] तरा है सब उसपे छोड। दुन्या के, इलाके[13] ते तूं दिलकूं तोड॥

---

१ परसे, २ दूरसे, ३ अचल, ४ नया, हरा-भरा, ५ मनकी फुलवाडी, ६ शोकाकुल, दुखी, ७ उसके कष्ट, ८ हैरानी, ९ गोता लगानेवाला, १० लोभ, ११ नामके पीछे, १२ अभिलाषा, १३ सम्बन्ध।

२. सैफुल्मलूक

"सैफुलमलूक व बदीउज्जमाल" २२८५ शेरों के कथाकाव्य को गौवासी ने १६२५ ई० (हि० १०३५) में ३० दिनों मे लिखा। मूल कहानी "अलिफलैला" की है।

(१) ईश्वर-स्तुति—

इलाही जगत का इलाही[1] सो तूँ। करनहार जम[2] बादशाही सो तूँ ।।
तेरे हुक्मतल नौगढ़ असमान के। रईयत मलिक[3] तेरे फरमान[4] के ।।
भरचा जिस गढ़ाँ बीच तारे हशम[5]। करे नौबताँ[6] सों उलँग दमबदम ।।
जहाँ लग जो बादल के है गडगडाट। तेरी फ़तेह दौलत[7] दमामे[8] के ठाट ।।
इती तेरे दरबार के प्हाड़ सब। छड़ीदार तुझ दार[9] के झाड़ सब ।।
तेरी बादशाहत कूँ कुछ अन्त नै। तेरे मुल्क में गैरकूँ[10] निप्त[11] नै ।।
गवासी जो तुझ दार का ख़ाक[12] है। तेरी बाट का महज[13] खाशाक[14] है ।।
दिखा की मया[15] कर तुँ मुझ खाक कूँ। दे रंगवास मुझ दिल के फलफाक कूँ ।।

(२) असफलता—

कवि ने, जान पड़ता है, अपनी कविता सुलतान मुहम्मद कुतुब शाह (कवि मुहम्मद कुली के दामाद-भतीजे) के उत्तराधिकारी के समय आरम्भ की थी, किन्तु दरबार में पुछार नही हुई। पहिले उसने लिखा था—

सो सुल्तां मुहम्मद कुतुबशह गॅम्भीर। जग आधार होर जग दस्तगीर ।।

किन्तु कुतुबशाह ने दस्तगीरी (हस्तावलम्बन) नही की, इसलिए उसे हटा गौवासी ने उसके पुत्र अब्दुल्ला को अपनी कविता अर्पित करते लिखा:—

जो सुल्तान अब्दुल्ला आफ़ाकगीर। सुलक्खन शहशाह[16] गदूँ सरीर ।।
चन्दा चौदवाँ खुसरवे बुर्ज[17] का। अमोलक रतन[18] हुस्न के दूज का ।।
सकल पादशाहाँ में उसका है नाँव। सो कुतब का कुत्ब तारा[19] है नाँव ।।
सुलेमाँ के जो तख्तका नाँव है। अता[20] शहकूँ ओ तख़्त का ठाँव है ।।
परयाँ देव[21] आवे वतन[22] छोड़ सब। खड़े होर[23] है डरते हत जोड़ सब ।।
न शहसार[24] सूरज किस[25] आसमान है। न शह-सा रतन जग केरे खान है ।।
गवासी जो शायर[26] है शह का मुदाम। करे यों दुआ शाहकूँ सुब्ह-शाम ।।
जहाँ लग यो दुनिया बसनहार है। जधाँ लग यो अम्बर निराधार है ।।
जहाँ लग अछो[27] शह की शाही क़रार[28]। रखे अम्न[29] सों शहकूँ पर्वर्दगार[30] ।।

---

१. भगवान्, २. सदा, ३. स्वामी, ४. आज्ञा ५. सम्मान, ६. बाजे, ७. राजपाट, ८. बाजे, ९. द्वार, १०. दूसरे, ११. अधिकार, १२. मिट्टी, १३. केवल १४. तृण, १५. दया, १६. चक्रवर्त्ती, १७. राजशिखर, १८. मोती, १९. ध्रुवतारा, २०. प्रदान, दान, २१. परी, देवता, २२. स्वदेश, २३. और, २४. शाहके समान, २५. किसी, २६. कवि, २७. रहो, २८. स्थिर, २९. शांति, ३०. पालक।

(३) अपनी कविता के बारे में कविका कथन है—

जो एक द्योस निकले सेहर गाह[1] कर। चल्या फूलवाडे कदन[2] ख्याज कर ॥
सो यो कुछ वहाँ फूल बार[3] आये थे। सवजपोश[4] डाल्या पर झलकाये थे ॥
मगर पाच[5] सो शमा के झाडकर[6]। दिवे ल्याये थे नूर के सरबसर[7] ॥
मेरी रुह परवाना[8] के सारका[9]। जो आशिक है नूरी की झलकार का ॥
देख उस शमा के झाडकूं नूर के[10]। लग्या फिरने खुद गोल पंख सूर[11] के ॥
मुंज हाल उस ठार पैदा हुआ। सआदत केरा दिन हुवैदा[12] हुआ ॥
मेरे वख्त का सूर[13] झलकाइया। मुख अकबाल[14] चौधर[15] तें दिखलाइया ॥
किवाडाँ खुले सब मेरे फाम[16] के। खुले फूल मकसूद के[17] काम के ॥
मेरा जीव बुल्बुल हो बोलन लग्या। छुपे गैब के नगमे[18] खोलन लग्या ॥१७०॥

इस प्रकार किसी बाग में सैर करते समय यह काव्य-तरग कवि के हृदय में तरंगित होने लगा।

मेरा दिल खजीना जो[19] मामूर[20] है। वचन के जवाहर सो भरपूर है ॥१८४॥
लगा रोलने ताई में जोहराँ। दिपाया तजाल्या[21] में नी अँवराँ ॥
किया शेर[22] ताजा बडें छन्द सो[23]। हरेक बेंद[24] विसलाइया चन्द सो ॥
खियालाँ के फौजाँकू[25] दौडाइया। हजाराँ नवे पश्विहाँ[26] लाइया ॥१८८॥
रख्याँ बोलपर बोल यो रस भरे। जो इसते मिठाई के बछराँ[27] झडे ॥१९०॥
मेरा ज्ञान अजब शक्करस्तान[28] है। जो इसते मिठा सब हिंदुस्तान है ॥
जते हैं जो तूती हिंदुस्तान के। भिकारी हूँ मुंज शक्करस्तान के ॥
वहूँ ताजे मज्मून[29] यकतिल मने[30]। कि बेहद उबल्ते हैं मुझ दिल मने ॥२०१॥
हुनर की गवी का सो मैं याद्य हूँ। वतन के उतम गज[31] का ताग हूँ ॥२०२॥
मेरी जीभ अजब खड्ग है आबदार[32]। सदा तेज पानी धरे बेशुमार[33] ॥२०४॥
फहम[34] का सो गम्भीर दरिया हूँ मैं। जवाहर क मौजाँ सो भरिया हूँ मैं ॥२०६॥
यो अमृत सो बतिया वडे शौक सो। मैं लिखने लग्या दिल की अत जौक[35] सो ॥२११॥
सुनें आशिका[36] यो तो हैराँ होयें। पढें पीर-मदा[37] तो फिर ज्वाँ होय ॥२१४॥

---

१ टहलना, २ पासकी ओर, ३ बाहर, ४ हरितवसन, ५ पन्ना, ६ मोमबत्ती के झाडफानूस, ७ बिल्कुल, ८ पतग, ९ समान, १० प्रकाशके, ११ सूर्य के पख, १२ प्रकट, १३ भाग्यका सूर्य, १४ प्रताप का सूर्य, १५ चौधार, चारो तरफ, १६ समझ, १७ अभिलाषा के, १८ अदृष्टके गीत, १९ खजाना जैसा, २० पूर्ण, २१ प्रकाश २२ पद्य, २३ धावते, २४ वध, २५ सेनाओं को, २६ उपमाएँ, २७ वर्षा?, २८ शकर स्थान, २९ विषय, ३० एक क्षण में, ३१ कोश, ३२ तेज, ३३ असीम, ३४ बुद्धि, ३५ रुचि, ३६ प्रेमी, ३७ वृद्ध पुरुष।

निरंजन जगत का तू सामीतु अहै। दयावन्त दातार नामी अहै ।।
वली जाऊँ उसकी दया के उपर। मेहरबान रबकी मया[1] के उपर ।।२१६।।
जो गौवास[2] हूँ मैं कमर बाँ दिया। सो समूदर[3] में. . . .लिया ।।
सो यों मोतियाँ ढाल लाने लगा। जवाहर के ल्यों रास भाने[4] लग्या ।।२२३।।
पिरोने लग्या बैस[5] अप हात सों। रँगारँग हाराँ बहुत भाँत सों ।।२२६।।
हरेक हार सिंगार संसर का। सुरज हो डुबे जोत हर हार का ।।२२७।।
कि हजरत सुलेमाँ के वक्त पर अथा[6] मिस्र मे राज[7] एक वख़्त पर[8] ।।२२९।।
नगर **मिस्र** का तिस अथा तख़्तगाह[9]। अथे तिस जब्त तल[10] सकल बादशाह ।।
नवल **आसिम** उस राज का नेक नाँव। शहाँ में अथा उस-शरफ[11] ठाँव-ठाँव ।।२३१।।
सदा राज करता अथा अपसेता। वले[12] उसकुँ बेटी न बेटा अथा ।।२३८।।
सो एक द्योस अपस में अँदेशा किया। फिकर जाद[13] हो मनमें यों लाइया ।।

३. कथा-संक्षेप

(क) ब्याह की चिट्ठी—

कि अपसी[14] मुलक माल पर्वर्दगार[15]। यता कुछ दिया है जो नैं उस सुमार[16] ।।
वले कोइ जतन इस रखनहार नै। कि मुझबाद मेरा कोइ इस ठार[17] नै ।।२४१।।
अगर कोइ फ़र्जन्द[18] होता मुँजे। तो यह जग में आनन्द होता मुजे ।।२४२।।
बड़ा नाँव होता मेरा ठार-ठार। दुनियाँ मे रहता मेरा यक यादगार" ।।
सुबा उठ करे खैर-खैरात[19] बहुत। कि होता कि फ़र्जन्द अब से तुरत ।।२४८।।
सदा रात-दिन उसकूँ यही काम है। न निस नीद न दिन कूँ आराम था ।।२५१।।
शहाँ मै अगरचे[20] हुँ मै जगपती। वले घर कूँ नै कोइ दीवा-बती ।।२७६।।
वजीराँ सुने शाह सों यो विचार। शहंशाह कूँ धीर[21] दे सब एक बार ।।२७९।।
नजूम्याँ[22] कु एक धरते[23] हाजिर किये। छुपा शाह का राज[24] जाहिर किये ।।२८०।।
शहंशाह क ताला[25] कवी[26] पाय कर। वशारत[27] दिये शह कूँ यो आय कर ।।२८२।।
कि "ऐ बादशाह भोगनी[28] बख़्तऽवर[29]। तुँ फ़र्ज़न्द के कारण अब गम न कर ।।
यमन के जो राजे की वेटी है एक। चँदर-सूर खाते है रश्क[30] उसकूँ देख ।।
उसे मंग तुज शाहकूँ सो सजे। कि देगा खुदा उसते फ़र्जन्द तुझे" ।।२८५।।

---

१. दया, २. डुबकी लगानेवाला, ३. समुद्र, ४. डालने, ५. माला, ६. था (हता), ७. राजा, ८. भाग्यवान्, ९. राजधानी, १०. आज्ञाके नीचे, ११. उसकी दया प्रसिद्ध, १२. लेकिन, १३. फिकर करनेवाला, १४. अपने, १५. पालक (भगवान्), १६. इयत्ता (गिनती), १७. ठौर, १८. संतान, १९. दानपुण्य, २०. यद्यपि, २१. धीरज, २२. ज्योतिषियों, २३. एक ओर से, सब जगह से, २४. रहस्य, २५. भाग्य, २६. शक्तिशाली, २७. खुशखबरी, २८. भोगवाला, २९. भाग्यशाली, ३०. ईर्ष्या।

महाराज गम्भीर आसिम नवल । चड्या देख अपस हात अकबाल बल ॥२८९॥
किया हुक्म आनन्द पा बेहिसाब । लिखे नामा[1] शाहे यमनकूँ शिताब[2] ॥२९१॥
समज शाह के दिल के सूरात[3] कूँ । लिख्या नामा[4] बेगी कर इस घात[5] सो ॥२९३॥
कि "भोगनी शाह समरथ सजन । तुम्हारा सदा गम अछो[6] अजुमन ॥२९४॥
मेरे दिल में यो आवता है एताल[7] । जो जाहिर[8] व बातिन[9] अछै[10] एक हाल ॥३००॥
तुम्हारा मेरा घर सो है एक घर । तुम्हारा कह्या है मेरे सीस उपर ॥
वलेकिन[11] सुन्या हूँ मैं तुमनाकुँ[12] एक । उतम पाकदामन[13] है फर्जन्द नेक ॥
अगर उसे मेरे अक्द[14] में ल्यायेंगे । मेरी वस्त[15] कर मुझकूँ दिखलायेंगे ॥
तुम्हारा वफादार कहलाऊगा । अजीजाँ की शर्तें[16] बजा लाउँगा" ॥३०४॥
जो कुछ खिलअतो[17] खुसरवानी[18] अथे । जो कुछ तोहफे[19] नादिर[20] शहानी अथे ॥
दिये दबदबे साथ[21] हाजिब[22] सँगात । तुरत बात लाये मरातिब[23] सँगात ॥३०८॥
अँगे[24] मेहतराँ[25] सो खज़ाना किये । यमन के कदन[26] खुश रवाना किये ॥३०९॥
एकेक मुल्क एकेक शह एक एक विलायत । एकेक कोट एकेक गढ लख घात घात[27] ॥
उलँगते उलँगते चले ता यमन । खबर किये यमन के शहशाह कन[28] ॥३११॥

(ख) यमन शाहजादी से ब्याह--

वो नामा सरासर पढाया तमाम । मो मकसूद[29] खातिर[30] में लाया तमाम ॥३१५॥
हुआ खुश लिखे सो हरेक बैन पर । ले नामा रख्या आपने नैन पर ॥३१६॥
दिया अपनी बेटी कूँ उस शाहकूँ । बँध्या अक्द[31] सूरजकूँ उस माह[32] कूँ ॥३२०॥
परचा सी कनीजाँ[33] उतम जात क्याँ । चचल छद-भरियाँ[34] सुरजघात क्याँ[35] ॥३२३॥
हरेक साफ तन ढाल मोती दिसें । नवे रग जाली में जोती दिसें ॥
सभी किसवताँ[36] उनकुँ रँगरेग सब । हरेक खुश्नुमा[37] होर खुश-आलग[38] सब ॥३२५॥
गुलामाँ केतेक खूब साहेब-जमाल[39] । मुना-चाँदे खडिया[40] केतेक कर रुमाल ॥
केतेक तबले[41] के मिस्ल[42] तातार के । केतेक फर्श बेमिस्ल[43] जरतार[44] के ॥
दर्याई तुरग होर हती बेशुमार[45] । अमोलक केतेक जिन्स[46] के यादगार[47] ॥

---

१ चिट्ठी, २ जल्दी, ३ सुरति, मशा, ४ चिट्ठी, ५ इस भाँति, ६ रहो, ७ इस समय, ८ बाहर (प्रकट), ९ भीतर, १० हैं (गुज०), ११ लेकिन, १२ तुम्हारी, १३ सती, साध्वी, १४ ब्याह, १५ हित वस्तु, १६ कर्त्तव्य, १७ परिधान, १८ राजसी, १९ भेंट, २० दुर्लभ, २१ वैभवके साथ, २२ दूत के साथ, २३ दर्जे के अनुसार, २४ आगे, २५ अमात्य, २६ की ओर, २७ लाख भाँति, २८ बादशाह के पास (रु०), २९ अभिप्राय, ३० दिल, ३१ ब्याह, ३२ चाँद, ३३ लौंडिया, ३४ चतुराई-भरी, ३५ सूर्य-जैसी, ३६ पोशाक, ३७ सुदर्शना, ३८ सुस्वरा, ३९ सुदर, ४० खड, ४१ बतला, ४२ समान, ४३ अनुपम, ४४ जरदोज़ी, ४५ अनगिनत थी, ४६ जातिके, ४७ स्मृति-चिह्न।

जो था मर्तबा[१] जहेज़ केरा[२] जेता। किया मुस्तअद[३] यक तरफ़ ते वता[४]॥
बडे मर्तबे[५] सों सऽरा बे-हिसाब[६]। लिख्या मिस्र के शाहकूँ यों जवाब॥३३०॥
कि "ऐ बादशाह जगपती नामदार। तेरी बादशाही अछो बरकरार[७]॥
सदा फतहो नसरत[८] सों तूँ राज कर। वसे लग दुन्या नित नवे काज कर॥
तु दरिया है गंभीर गुन ज्ञान का। कि होता तूँ फ़र्जन्द[९] सफ़वान का॥
दया कर जो मुँजकूँ किया याद तूँ। सो रोम्-रोम्[१०] कुं मेरे किया शाद[११] तूँ॥३३४॥
मुबारिक तुमन ख्वास्तगरी[१२] अछो[१३]। यो नारी सदा तुजकूँ प्यारी अछो" ॥३३९॥
लिख्या यो नवाजिश[१४] कर इस घात सात[१५]। बडे गलगले[१६] होर मरातिब[१७] सँगात॥
अनँदकी खुशी मंग अल्लाहकन[१८]। दिया पारकी मेज उस शाह कन॥३४१॥
जो नज्दीक जों मिस्र के आइये। अँगे[१९] एक हाजिब[२०] कुं दौडाइये॥३४४॥
जो आसिम नवलशह खबर पाइया। उमस सात[२१] खुशियाँ मने[२२] आइया॥३४५॥
किया काज का साज खुश ठार-ठार[२३]। हुआ जग में यो काज सब आशकार॥३४७॥
वो महलाँ चितर सों चितारे तमाम। सदा खुस्रवानी[२४] सँवारे तमाम॥३४८॥
बटे बाट धग[२५] नौ रतन के विधाये। मुरस्सा के खुश बारगाहाँ[२६] उचाय[२७]॥३५०॥
कुदम[२८] जाफराँ कै[२९] गलाने लगे[३०]। गलाँ हौजखाने[३१] भराने लगे॥
पिसा मुश्क[३२] फुलनीर मे घालकर[३३]। देखीये नवा एक बरसकाल[३४] कर॥
मिले मज्लिसाँ[३५] होर वजीराँ तमाम। सलहदार[३६] सर्दार अमीराँ[३७] तमाम॥
रँगारँग हुआ शाह का भार[३८] सब। झलकने लग्या जडित सिंगार सब॥३५४॥
मँगा शाहताजी[३९] पवन सा शिताब[४०]। न सावज[४१] रखे कोइ उसका रिकाब[४२]॥३५९॥
सो हाता मने पैनकर हस्तकर[४३]। उतम जात ताजी[४४] को उपराल चल॥३६०॥
यकस तर्फ़[४५] कैसर जो पकडचा है जीन। कि दूजी तरफ शाह फकफूर[४६] चीन॥
चल्या सामने होने उस हूर[४७] कूँ। निछल[४८] नूर के पाक समदूर[४९] कूँ॥
दमामे लगे पीठ सों गाजने। बजंतर हरेक जिन्स[५०] के बाजने॥
उठे बोल अंबर दो तारे तमाम। लगे गावने गानहारे तमाम॥

---

१. दर्जा, २. दहेज का, ३. तैयार, ४. उतना, ५. दर्जे, सम्मान, ६. अनगिनत, ७. कायम, ८. विजय, ९. पुत्र, १०. रोम-रोम, ११. प्रसन्न, १२. मँगनी, १३. रहो, १४. कृपा, १५. भाँतिसे, १६. कल-कल, १७. दर्जे, इज्जत, १८. अल्लाके पास, १९. आगे, २०. दूत, २१. जोशके साथ, २२. प्रसन्नता मे, २३. जगह-जगह, २४. राजसी दरवाजे, २५. पाँवडे, २६. चँदवे, २७. उठाये, २८. कहीं, २९. केसरको, ३०. घोलने लगे, ३१. कुण्ड, ३२. कस्तूरी, ३३. घोलकर, ३४. वर्षा-ऋतु, ३५. सभाएं, ३६. शस्त्रधारी, ३७. सामन्त, ३८. बाहर, ३९. अरबी घोड़ा, ४०. जल्दी, ४१. जानवर शिकार, ४२. साथ, ४३. हाथोंमें, ४४. ताजी, ४५. एक ओर, ४६. बगपूर, देवपुत्र, ४७. अप्सरा, ४८. निर्मल, ४९. समुद्र, ५०. प्रकार।

अगर-ऊद-अवर[1] जलाने लगे। बुखारां[2] के असमान छाने लगे॥
देखे लोग उस हूर के शाह कूँ। मिले सामने आके वहुमान सो॥३६६॥
जो आया निकल शाह मैदान में। उजाला पड्या सातो अस्मान में॥३६९॥
महलदार[3] हर एक वो साहेब-जमाल[4]। उडाने लगे शाह पैं लगटे रुमाल[5]॥३७०॥
रुमाल के अकसां[6] झलकने लगे। हवापर सो बिजल्यां चमकने लगे॥
भरे थे हरेक ठार यो खामो-आम[7]। जो छुपगे थे एक घरतें[8] तारे तमाम॥
मती हस्त[9] अगे[10] सोहाने अथे[11]। पहाडां मगर चलकर आते अथे॥
हरेक हस्त बेमिस्ल[12] मकबूल[13] खूब। मुरस्सा[14] की पिठयां उपर झूल खूब॥
तुरग बाव के पाव[15] कइ लग हजार। चितर में चितारे सके न चितार॥
बिचकते अपन छाँव देख ठाव में। मुरस्सा कि ठाडे रह एक पाव में॥
नफीरचा वरगम[16] यो(तर-) तराट। सिने आसमां[17] के गये फाट-फाट॥
सके[18] वादे पै[19] भर ले फुलवीर[20] सो। छिडकने लगे चौकधन[21] धीरसो॥
जो अहिस्ता[22] डग-डग चलाने लगे। चँदर सूर मात हो सराने[23] लगे॥३७९॥
अपन शहर में शाह ज्यो आइया। महल्ला में सबकूँ बुला लाइया॥३८१॥
जो उस हूर[24] की आइ ज्यो पालकी। खुशी हुइ जियादा नवल[25] लाल की॥३८२॥
तजल्ली देखन वै हुआ वेकरार[26]। सो दौडाइया दिलकूँ वे-इख्तियार[27]॥
उसी रात उस साथ सोहवत[28] किया। मदन[29] कामनी मद व इशरत[30] किया॥३८६॥
खुशी सो लिया शाहजादी के हात। वँध्या उसके गौहर[31] कूँ अल्मास[32] मात॥३८७॥
यकायक जो कुदरत[33] केरा वात हुआ। वेतेक दिन कू उम्मेद का फल हुआ॥३९०॥

(ग) पुत्र-जन्म—

इलाही[34] जो साहेब[35] है ससार का। जो देता है मंग्या मँगनहार का॥३९१॥
जो बेटा दिया शाह कूँ वेबदल[36]। चँदर-सूर ते खूब निर्मल निछल॥३९२॥
खुश्यां साथ अमृत[37] घडी फाल[38] देक। सो सैफुल्मलूक[39] कर रख्या नाँव नेक॥३९७॥
जो था सालेह उस शाह केरा वजीर। खुदा उस के हक[40] पर हुआ दस्तगीर॥
उसी रात उसे एक बेटा दिया। दिवा उसके घर का सो रोशन किया॥

---

१ धूप, २ सुगंधियोके नाम, ३ धुएँ, ४ सुन्दर, ५ झंडियां, ६ प्रतिबिम्ब, ७ बडे-छोटे लोग, ८ एक ओरसे, ९ मस्त हाथी, १० आगे, ११ ये, १२ अनुपम, १३ दिलपसन्द, १४ जरी, १५ हवा जैसे पैरवाला, १६ एक बाजार, १७ आकाशकी छाती, १८ भिश्ती, १९ प्याले, २० गुलावजल, २१ चारो ओर, २२ धीरे-धीरे, २३ सराहने, २४ अप्सरा, २५ नूर, २६ अधीर, २७ बरबस, २८ समागम, २९ काम, ३० आनन्द, ३१ मोती, ३२ हीरा, ३३ भगवान्‌की माया, ३४ अल्ला, ३५ स्वामी, ३६ अनुपम, ३७ अमृतवेला, ३८ शकुन, ३९ देव-खड्ग, राज-खड्ग, ४० उसके लिये।

मुबारिक घडी में देखत फ़ाल[1] ओ। सो साअद[2] कर उसका रख्या नाँव सो।।
जो इस हालते शहकुँ अँपडी[3] खबर। फुटचा[4] सिरते भी खुर्रमी[5] पायकर।।
बुला भेजिया बेग सालेह के तै। कह्या यों कि "इस धात[6] मँगता हूँ[7] मैं।।
जो यो दोनों मिलकर एक ठार अछै। बँधै[8] एक दिल हो कि होर यार अछै[9]"।।
मँग्या भेज साअद कुँ वै[10] शह्रयार[11]। दो दायाँ रख्या दोनों कूँ एक ठार।।४०४।।
बरस सात के ज्यों वो दोनों हुये। मुअल्लिम[12] कुँ यक खूब पैदा किये[13]।।४१२।।
ले जाकर जो बसलाये मक्तब मने[14]। लगे पडने[15] दिन-रात दोनों जने।।
किये इल्म तहसील[16] इस धात सों। जो दम मार कोइ ना सके बातसों।।
हुये खुशनवीसी[17] के यों धात में। जो सातों कलम[18] आये थे हात में।।
तिर-अंदाज[19] ऐसे हो निकले वो दोय। बराबर उनके न था जगमें कोय।।४१६।।

(घ) पद-प्रदान--

सो यक द्योस सैफुलमलुक जग-उजाल। शहंशाह के जिउके चमन का निहाल[20]।।४२४।।
चल्या शह कूँ तस्लीम करने ब-दिल[21]। अदब साथ सिर भूइँ धरने ब-दिल।।४२६।।
देख्या शाह दोनों केतै जो निझा[22]। सोने होर रूपे की दो कुरस्याँ मँगा।।
किया अम्र[23] बैसाइ कर[24] दोइ कूँ। लग्या देखने भर नज़र दोइकूँ।।
हुआ मन में खुशहाल एस धात सों। कह्या जाय न ओ किसी बात सों।।
उबलने लग्या प्यारका दिलमें शौक। मंगाया खजीनें में ते एक सँदूक।।४३०।।
वो संदूक खोल एक अंगुश्तरी[25]। झमकता नगीना सो ज्यों मुश्तरी[26]।।४३२।।
निछल जरजरी[27] खूब जरबफ्त एक। यो दो वस्तकूँ काड अपे शाह देख।।
सो सैफुलमलूक के दिया हात में। हो खुशहाल भौते च[28] उसी सात[29] में।।
मँगाया उतम जात तेजी[30] अनूप। पवनसार[31] जल्दी में अपरूप रूप।।
किया पेशकश[32] होर नेवाज्या[33] बहुत। बुलाकर कहा "ऐ मेरे मन के पूत।।
यों तेजी उतम होर यो अंगुश्तरी। यो जरबफ्त निर्मल निछल जरंजरी।।
मेरेतैं दिये ते सुलेमान भेज। परचाँ होर देवा के सुल्तान भेज।।
अजब[34] कुछ खज़ीने मेरे है यो। दिया हूँ तुझे मैं कि तेरे हैं यो।।४३९।।

---

१. हस्तावलम्बन, २. सुभागा, ३. पहुँची, ४. खुला, ५. खुशी, ६. भाँति, ७. चाहता हूँ, ८. बढ़ें, ९. रहैं, १०. वहीं, ११. बादशाह, १२. अध्यापक, १३. बैठाये, १४. पाठशालामे, १५. पढ़ने, १६. विद्याध्ययन, १७. सुलेखकता, १८. लिपि, १९. धनुष चलानेवाला, २०. बूटा, २१. दिल से प्रणाम करने, २२. ध्यान से, २३. आज्ञा, २४. कहकर, २५. अंगूठी, २६. शुक्रतारा, २७. जर्दोज़ी, २८. बहुत ही, २९. साथ, ३०. ताजी (अरबी घोड़ा), ३१. वायु-समान, ३२. इनाम, २३. नौछावर किया, ३४. अद्भुत।

(३) बदीउल्जमाल के चित्रपर मुग्ध—

यकायक सो दिलकूँ लग्या जो तलाश[1]। सो बेमिस्ल[2] जरबफ्त का वो कमाश[3]॥
देख्या खोलकर सरबसर[4] ज्यों उने। सो तस्वीर पाया अजब[5] उस मने[6]॥
वह तस्वीर देखी दिवाना[7] हुआ। वही इश्क का उसकूँ भाना[8] हुआ॥
अपसमें लग्या देखने जार-जार[9]। सो पटने लग्या बेखबर[10] ठार-ठार॥
वो मूरत नजर[11] भर ही चूम कर। सो जागा किया दिलमने[12] खूब कर॥
दिया सग सार्‌यां केरा छोडकर। लिया खींच दम[13] सबते मुख मोडकर॥
अँधारे भरी कोठरी में यकट[14]। सो जा पर रह्या बेखबर हो निपट॥
जो साअद हुआ नींद में होशियार। लग्या देखने ताईं अँखियाँ पसार॥४६०॥
नजर नै पड्या शाहजादा कहीं। लग्या ढूँडने हैरान हो हर कहीं॥
सो पाया अँधारे मने[15] एक ठार। पड्या था अकेला दुखी बेकरार[16]॥
अँझू[17] अखियाँ में ते ढुलते अये। नवा होकर दो भरते चलते अये॥
न ज़र्रा[18] खबर कुछ उसे जात[19] की। न ताकत जबाँ को है कुछ बात की॥
जेता साअद उसकूँ उचाने[20] कुँ जाय। जेता पाँव पडकर मनाने कूँ जाय॥
वेता[21] अप सें दिखलाये बेहोश कर। न दे जाव[22] चुप रह फरामोश[23] कर॥
उठा मायद उस देखकर तिलमिला। ॥४६७॥
जो दरहाल[24] शह कूँ खबर जा दिया। यकायक शह का सो सीना[25] तडखिया[26]॥४६८॥
वो देखन कुँ बेटे के आया नज़ीक। सो बेताब[27] सख्ते च[28] पाया अधीक॥४६९॥
देख्या यों बेताब यकबारगी। कमर बँस गई होर लगी तगबगी॥४७७॥
सो उस वक्त किसकूँ ना कर खबर। मुबादा[29] नजर कुछ लगी होयकर[3]॥
दवायाँ कुँ धो-धो पिलाने लगा। लिख्या ताविजाँ ल्या बँधाने लग्या॥४७९॥
जेते थे हकीमाँ[31] अपन शहर के। हलब-चीन (होर) मावरा-नहर[32] के॥४८०॥
. । कह्या मेहरबानी सेती ला गले॥४८२॥
करेगा दवा जो कोइ दद फाम[33]। देऊँगा उसे बादशाही तमाम॥४८६॥
हकीमाँ देखन नाडी ज्यों आये हैं। दरद ज़ाहिरा[34] कुछ नहीं पाये हैं॥४८९॥
हुये एक तरफने पशेमान[1] सब। रहे दर्द ना फाम हैरान सब॥४९०॥

---

१ खोज, २ अनुपम, ३ कपडा, ४ पूरी तौरसे, ५ विचित्र, ६ उसमें, ७ पागल, ८ बहाना, ९ फूट-फूट, १० बेहोश, ११ आँखोंमें, १२ दिलमें, १३ साँस रोक लिया, १४ अकेला, १५ अँधेरे में, १६ अधीर, १७ अश्रु, १८ जरा कुछ भी, १९ अपनी, २० उठाने, २१ उतना, २२ जवाब, २३ भूला, बेसुध, २४ उसी समय, २५ कलेजा, २६ फटा, २७ अधीर, २८ सख्त ही, २९ शायद, ३० मंत्र धो-धो, ३१ वैद्य, ३२ दजला-फुरात या आमू-सिर दरिया के द्वाबे, ३३ समझ, ३४ प्रकट, ३५ हैरान।

जो उस दर्द का जिन्स[१] कुछ होवता। तो दारू वा दरमन[२] कुँ रुच होवता।।
सभी हर दरद कूँहै हरकै[३] दवा। वले[४] इश्क के दर्द कूँ नै दवा।।४९२।।
मुसल्लम[५] शहंशाह हुआ लाइलाज[६]। न था काम उसे कुछ बैठे रोये बाज[७]।।४९४।।
सो एक द्योस[८] आये वजीराँ सकल। कहै शाह कूँ यों कि "शाहे नवल।।४९६।।
भला है जो साअद कु उसके नजीक। अछै[९] उसके दुख-दर्द में हो शरीक।।५०१।।
वही उसके दिल का जो अंत पायेगा। वही उसकूँ मारग मने लायेगा"।।
शहंशाह कूँ खुश लग्या वो विचार। दिया भेज साअद कूँ बेटे के ठार।।
गया शाहजादे के ज्यों वो नजीक। लग्या रोवने जार उसके अधीक।।
कह्या यों कि "ऐ लाल साहेबजमाल[१०]। न सूरज चँदरमे है तेरा मिसाल[११]।।
तेरा नूर[१२] हर ठार मामूर[१३] अछो[१४]। तेरा दिल खुश्याँ साथ जम[१५] पूरा अछो[१६]।।
है मुज नैनकूँ नूर तुज नूर ते। सदा सूर मुजकूँ तुज सूर ते।।
अधंर खोल मुज साथ कुछ बोल तूँ। तेरे दिलमें क्या है सो कह खोल तूँ।।
कि तेरा सदा मै वफादार[१७] हूँ। हरेक ठार तेरा मै गमखार[१८] हूँ।।
यकायक यो आया हूँ क्या फिक्र[१९] तुज। लग्या किसूँ ते ध्यान होर जिक्र[२०] तुज।।५१०।।
नजर किस सुरज पर पडी जग केरे। जो यों नित उबलते है जल के झरे[२१]।।
तेरा चाँद किने[२२] है तूँ किसका चकोर। . . . . ।।५१२।।
मुजे खोलकर तू कहे तो भला। वगर[२३] नै तो मै काट लैउँगा गला"।।
कमर में ते वै[२४] अपने खंजर कूँ काड। गया आपना पेट लेने कूँ फाड।।
देख ये हाल दरहाल सैफुल्मलूक। पकड हात सायद केरा देख मुख।।
विरह आज सो जल बोला आह मार। अँगारे नयन मे ते डाल्याँ हजार।।
पिछान्या कि साअद वफादार है। अपन दुख होर दर्द का यार है।।
वो जरबफ्त का पारचा[२५] लाइया। जो भी सूरत उसमे सो दिखलाइया।।
कहा "मै इसी का दिवाना[२६] हूँ भौत[२७]। अगरचे[२८] अपन ठार दाना हुँ भौत।।५२०।।
यही रूप लबदाइया[२९] है मुँजे। यही हुस्न[३०] बेसुध किया है मुँजे।।
कही रूप दुनिया मे इस सारका[३१]। न देख्या है कोई खल्क संसार का"।।५२२।।
सुन्या राज[३२] **साअद** अपन यार ते। रजा[३३] लेकर आया जो उस ठार ते।।५२४।।
शहंशाह कुँ तस्लीम[३४] आकर किया। सो ओ सूरते-हाल[३५] सब बोलिया।।

---

१. जाति, २. औषध, ३. हर कहीं, सब जगह, ४. लेकिन, ५. पूरी तौर, ६. अचिकित्स्य, ७. विना, ८. दिन, ९. रहे, १०. सुन्दर, ११. समान, १२. तेज, १३. भरा, १४. रहो, १५. सदा, १६. पूर्ण, १७. सच्चा भक्त, १८. संवेदक, १९. चिंता, २०, स्मृति, २१. झरने, २२. कौन, २३. नहीं तो, अन्यथा, २४. वहीं, २५. कपड़ा, २६. पागल, २७. बहुत, २८. यद्यपि, २९. बुद्धिमान्, ३०. सौन्दर्य, ३१. सारखा, ३२. रहस्य, ३३. सम्मति, ३४. प्रणाम, ३५. अवस्था।

(च) प्रेमिका की खोज बेकार—

अजायब[1] लग्या शहकूँ उस भेद पर। कह्या खोलते सबकूँ यो सरबसर ॥५२५॥
मैं यक द्योस बैठा अथा तख्त पर। सो देख्या यकायक उसी वक्त पर ॥५२७॥
। केतेक शह परया[2] ऐन[3] झलकारसों ॥५३१॥
मेरे तख्त के अगे[4] आइयाँ तमाम। कियाँ मुजकू देक यक तरफ ते सलाम ॥
कह्या मुजकूँ ऐ साहेबे-तख्तोताज[5]। हमनकूँ सुलेमान भेजा है आज ॥
वो जरबफ्त का पारचा[6] लाइया। मेरे अगे[7] रख खोल दिखलाइयाँ ॥
जो था उस मन[8] सूरते बेनजीर[9]। ॥५३५॥
कह्याँ खोल यो मुज उपर कर करम[10]। यो ल्यायाँ है अज गुलसताने अरम[11] ॥
कि है शहपरी यक बदीयुल्जमाल। सो यो पाक सूरत है उसका मिसाल ॥
वो शहबाल[12] बन शाह रुख[13] राज की। सो बेटी है अति शर्म होर लाज की ॥
परे होर परिया[14] जहाँ लग तमाम। करें आके शहबालकूँ सब सलाम ॥५४०॥
वो जरबफ्त बेमिस्ल[15] न होवे कर। यक् अगुश्तरी यक तुरंग तिस उपर ॥
लेकर आयकर पेशकश[16] मुंज किया[17]। यकायक्क सब गैब[18] होकर गियाँ ॥५४२॥
अँदेशे मने[19] पड हो दिलगीर[20] अधिक। हलो[21] शाहजादे के आया नजीक ॥५४७॥
केतेक द्योस[22] खातिर[23] कूँ टुक जमा राक। ॥५४८॥
जो लेऊँ परे मैं चला हात पाव[24]। खबर तेरे मकसूद[25] की ठाँव ठाँव[26] ॥५५३॥
जो इस धान मो मग मुहलत[27] लिया। सो लागाँ कुँ मुल्के मुलक भेजिया ॥५५४॥
जो गये थे रसूला[28] तमाम एकबार। लगे ढूँढने आलमें[29] ठार ठार ॥५५६॥
खुरासान, रुम होर शाम होर खोतन। हबश होर गुजरात दिल्ली दखन ॥५६१॥
इराक होर शीराज[30] होर खोजद। बुखारा-बलख यज्द होर समरकन्द ॥
सस्जान काशान सजान सब। हलब चीन तूरान ईरान सब ॥
मक्का[31] आगरा होर सकल पुर्तगाल। सो मशरिक व मगरिब[32] जनूब[33] होर शुमाल[34] ॥
लका परलका होर बगाला व गौड। बेचारा जिधर के उधर दौड दौड ॥
गये यक तरफ ते जगत के ऊपर। न पाये गुलिस्ताँ अरम का खबर ॥
बरस एक लग सब परेशाँ हुये। फिर आये मिसर कूँ पशेमा[35] हुये ॥
सुन्या ज्यो यो अहवाल[36] सैफुल्मलुक। लग्या गम पै गम करने होर दुख पै दुख ॥

---

१ विचित्र, २ अप्सराएँ, ३ ठीक, ४ आगे, ५ मुकुट, सिंहासनके स्वामी, ६ कपडा, ७ आगे, ८ उसमें, ९ अनुपम, १० कृपा, ११ स्वर्गका उद्यान, १२ परियोंकी रानी, १३ नाम, १४ परा और परी लोग, १५ अनुपम, १६ भेंट, १७ करीं, १८ लुप्त, १९ चितामें, २० दुखित चित्त, २१ धीरे-धीरे, २२ दिवस, २३ दिल, २४ हाथ-पैर, २५ ईप्सित, २६ भांति, २७ छुट्टी, २८ दूत, २९ दुनियामें, ३० तेहरान, ३१ मक्का, ३२ पूर्व-पश्चिम, ३३ दक्षिण, ३४ उत्तर, ३५ हैरान, ३६ हालत।

अँधारे भरे घरमनें[1] जायकर। पड्या धरतिरी सो अडडाय[2] कर।।
सिना गम सेती कूटल ना लग्या। कर उस नार कूँ याद[3] रोना लग्या।।५७०।।
सँगाती कुँ अपने पुकारन लग्या। न सह सक विरह आह भरने लग्या।।५७३।।
करे याद तिल-तिल[4] रोवै ज़ार-ज़ार। पडे बेखबर[5] होयकर ठार-ठार।।
खबर पायकर टुक[6] जो हुशियार होय। नज़ीक आपने तो नही देखे कोय।।
वह सूरत[7] रखे आपने नैन[8] तिल। उस ऊपर ते जावे और कह बल-बल।।
कहे यो कि "मुंज मन की दिलदार[9] तूँ। मेरे मन में निस-दिन वसनहार तूँ।।
तु किस सम्द[10] की ढाल मोती हैगी। तुँ किस खान की लाल जोती हैगी।।
किस आसमान की है चंदरभान तूँ। किस अक़लीम[11] की री है सुल्तान तू।।
है फुल डाल तू किस गुलिस्तान[12] की। झमकती[13] है शाम[14] किस शबिस्तान[15] की।।५८०।।
जो इस घात तूँ मुजकू लबदाइ[16] है। मेरे मन कुँ चित अपना लाई है।।
न जानूँ तुझे किस घडी पाऊ मैं। सो क्यों ढूँड काडू[17] तेरा ठाँव में"।।५८२।।
दिने दिन इसी धात[18] बैठा अछै[19]। देखी उस पियारी के जीता अछै।।५८५।।
नवल शाह **आसिम** लग्या तिलमिलन। दुखी पूत कूँ देख फिर फिर जलन।।
रह्या सूख दुबला तुलक-तार[20] हो। निपट जिन्दगानी से बेज़ार हो।।
अपसते अपी[21] भर ठंडी सर्द उसास। कह्या आयकर अपने फ़र्ज़ंन्द[22] पास।।५८८।।
"लग्या है परी साथ तेरा जिया। न समझे किसी बात तेरा जिया।।५९४।।
परी कूँ किने[23] जाके ल्या ना सके। कहाँ है सो किन[24] खोज पा ना सके।।५९५।।
अगर बादशाहाँ की बिटिया में कै[25]। दिल अछता[26] तो देता मिला तुजकूँ मै"।।५९७।।
सुना सरते[27] सैफुलमलुक ज्यों बात यो। . . . . ।।५९९।।
कह्या "शहनशाह अगर लाख हूर[28]। उतर आये जन्नत[29] ते मेरे हुजूर[30]।।
तो जर्रा[31] न हो मेरा किस पै खियाल। मुजे हो तो होना **वदीयुल्जमाल**।।६००।।
मेरे दिलमें आता है अब यो खियाल। जो लेऊं रजा[32] तुज कने[33] ते एताल[34]।।६०४।।
फिरूं जाके आलम[35] में चौफेर मे। जो लेऊ गुलिस्ताँ-अरम का खबर।।६०६।।
सो कैसा है देखूँ दरया[36] का सफ़रमै। अपे ही करूँ अपाने तदबीर[37] मे"।।
जो था शाह अव्वल[38] ते रंजूर[39] पूर। हुआ सरते भी दुख तले चूर-चूर।।६११।।
कह्या यों कि फ़र्ज़ंन्द[40] मुजे है सो एक। क्यों उस एक कूँ देउँ रजा देके देख।।६१३।।

---

१. घर में, २. अरराय, ३. स्मरण, ४. क्षण-क्षण, ५. बेहोश, ६. थोड़ा, ७. तस्वीर, ८. आँखोंके सामने, ९. प्रिय, १०. समुद्र, ११. राज्य, १२. फुलवारी, १३. चमकतो, १४. मोमबत्ती, १५. रात, १६. खींचा, १७. कैसे, १८. भाँति, १९. रहै, २०. पतला-सा, २१. आप ही आप, २२. पुत्र, २३. कोई, २४. कौन, २५. कहीं, २६. रहता, २७. फिर से, २८. अप्सरा, २९. स्वर्ग, ३०. सामने, ३१. किंचिन्मात्र, ३२. आज्ञा, ३३. तेरे पास, ३४. अब, ३५. दुनिया, ३६. समुद्र, ३७. उपाय, ३८. पहिलेसे, ३९. रंजीदा, ४०. पुत्र।

सकति है जो विन तल्न विन ताज अछू[१]। वले[२] ताव[३] नै मैं जो इस बाज अछूं ॥६१४॥
केनेक वारकूं फिर मँगात। कि कहने लग्या "क्यों रखूं कैद मात[४]॥६१८॥
मुवादा[५] दुखों ते सीना फोड ले। मुवादा यो जिवने ते दिल तोड ले॥
दुजा होर नैं है जो कौं[६] कुच इमे। किया है निपट इश्क यों हिंव[७] डसे॥६२०॥
भला जो खुदा पर तवक्कुल[८] करूँ। इमे बाट लाने केरा बल करूँ॥६२१॥
दे साअद कूं सैफुलमुल्क के दुँबाल। रवाना किया होर हुआ वैं[१०] निढाल॥६४०॥
लग्या रोने फर्जन्द के ध्यान सों। बुला भेजा वैं अपने परधान[११] कूं॥६४२॥

(छ) राजकुमारी की समुद्र-यात्रा—

करनहार मैर उस पिग्ति घाट का। देवे काड मारग यो उस वाट का॥६४४॥
जो साअद व सैफुलमुल्क ज्हाज़[१२] चड। चले गलगले माय दरिया में पड॥६४५॥
तलें माफ पानी उपर आसमान। बरमता हुआ माजदिल[१३] दरमियान॥
मफावस्त[१४] चौवेर मौजा गँभीर। तमाशा केतक उस मनें[१५] बेनज़ीर॥
मो दख जौक पाने मनें[१६] घात घात[१७]। चलाने लगे ज्हाज़ दिन होर रात॥६६८॥
पयोपें[१८] केतक चोस कश्त्या[१९] चलाय। मो यो ठार दरिया के दरम्यान आय॥७०१॥
यकायक उठा बाव[२०] तूफान का। दरया कूं चड्या ताव तूफान का॥७०२॥
निपट आये ते दाट[२१] काले अभाल[२२]। छुपा मूर होर चाँद पकड्या निपाल॥
बरसने लग्या मेघ उपरालते। न बरस्या कधी यो बरस-काल ते॥
पड्या गिर्द चारो तरफ अवकार। कडकने लग्या बिजलियाँ ठार ठार॥
न दिन फाम होता समझते न रात। हुआ रात होर द्योस मिल एक घात॥
खुदा सों पडया आके मारयाँ कुँ फाम[२३]। भरोसा सुटे[२४] जीवने का तमाम॥
कि दरिया उबलने लग्या शोर सों। उठे मौज तूफानके जोरसों॥
होइया कश्तियाँ दरहम्[२५] यक यार[२६] ते। रह्या खल्क[२७] आजिज़[२८] हो तदवीर ते॥७१०॥
भर आया जहाजाँ मनें[२९] आव सब। गवाता गया माल व असबाव सब॥
वडा कुछ हुआ तफ़रा[३१] हौलनाक[३२]। हुये लोग लै[३३] यक तरफ ते हलाक[३४]॥
उठया मौज ज्यों सो वो वहती वही। चली शाहज़ादे की कश्ती[३५] कही॥
हुआ ज्हाज तूफानने चूर-चूर। मलिक[३६] होर साअद पडे दूर दूर॥
विला साअद अप मीम ले घात घात। चल्या जो कहीं अपनी कश्ती सँगात॥
तरफ रूम के जा के साअद पडया। हवश मुल्क कूं जाय तल्ना लग्या॥७१६॥

---

१ रहूँ, २ लेकिन, ३ ताकत, ४ कैद साथ, ५ शायद, ६ करूँ, ७ ऐसा ही, ८ भरोसा, ९ पीछे, १० वहाँ, ११ मन्त्री, १२ जहाज, १३ मद्धिम, १४ स्वच्छताप्रद, १५ उसमें, १६ शौक पानेमें, १७ भाति-भाँति, १८ लगातार, १९ नावें, २० वायु, २१ डाट, २२ बादल, २३ समझ, २४ छोडा, २५ छिन्न-भिन्न, २६ एक ओर से, २७ दुनिया, २८ हैरान, २९ जहाजो में, ३० पानी, ३१ भेद, ३२ भयानक, ३३ बहुत, ३४ मृत, नष्ट, ३५ नाव, ३६ स्वामी।

(ज) हब्शी बंदीखाने में--

अँख्याँ खोल देखन लग्या ठार-ठार। न लश्कर है अपना न साअद है यार ।।७२०।।
सभी गर्क[1] हो जाके याराँ पचास। जो बाकी अथे सो मिले आसपास ।।७२२।।
उचा[2] शाहजादे कु बसलाइया[3]। . . . . ।।७२३।।
न था शाहजादे कुँ रोय बिन क़रार[4]। कि साअद के उपराल था भौत प्यार ।।७२९।।
यकायक बढे गुलसेती हाक मार। निकल जंगियाँ[5] आये यकघेरते भार[6] ।।७३१।।
सलहपोश[7] सारे बडे धात के। बडे थोबडे[8] होर बडे जात[9] के ।।
दरचा परके वो चोर सारे अये[10]। पकड आदम्या खानहारे अथे ।।
देखे शाहजादे की कश्ती कुला। लगे मारने वाँ तुफगा[11] बला ।।७३४।।
पकड शाहजादे कूँ यारा सँगात। वही बन्द कर ले चले रातेरात ।।
सुबा हो उजाला हुआ देखकर। सब आये किनारे कुँ दरिया उतर ।।
निझा[12] देखते है जो दरिया किनार। रखे है तखत एक ऊँचा सवार ।।
कुढंगी जंगी बिलक्खन[13] उस पे चड। बडे मौज बैठा है सख्ती अकड ।।
एता कुछ बदशक्ल चेहरा अथा। जो देखन किसे उसकूँ जहरा न था ।।७४०।।
बडा भूत कहते सो था आप वो। कि था सारे भूताँ केरा बाप वो ।।
गया होंठ उपरका जो यकधेर[14] कूँ। लग्या था पेशानी उलग सीरकूँ ।।
तले का यों आया अथा लटक होंट। जो था उसके गुरग्याँ[15] मने फर्क योट ।।
लँबा कद लँबी नाक चौडे बुलाख। दिसे गारके नाद[16] लब्दाँ[17] फराख[18] ।।
बडे डागरे सारके[19] कान दो। उजड घर केरे खोड जो रान दो ।।
मसे काले उसके नज्दीक साऱ्या कुँ ल्याय। उसे यक तरफ[20] ते सलामा दिलाय ।।७४९।।
बेड शाहजादे कुँ वो देखकर। ले जाओ कह्या अपनी बेटी के घर ।।७२१।।
सो काले जंगी दोय संगात जा। दिये उसकि बेटी केरे हात जा।
लेकर आये जंगिन कने[21] शाह कूँ। मिलाये जोहल[22] साथ ज्यों माह[23] कूँ ।।
वले शाहजादे का देख ओ जमाल[24]। दिवानी हुई इश्क लाई कमाल[25] ।।७५५।।
बडे शौक होर जौक़[26] सों दौड आय। सो शाहजादेकेरा ज्यों निझाय ।।७५९।।
सो देख शाहजादा हुआ वैं[27] निढाल। रगे-रग मे यक धोर ते[28] वैठा कॅटाल ।।७६०।।

---

१. डूब, २. उठा, ३. बैठाये, ४. धीरज, ५. हब्शी, ६. एक ओरसे, बाहर, ७. कवचधारी, ८. मुँह, ९. जाति, १०. थे (हते), ११. बन्दूक-तोप, १२. ध्यान लगा, १३. अलक्षण, १४. एक ओर, १५. भेदियों, १६. गढ़हेकी भाँति, १७. ओठ, १८. चौड़े, १९. ढोरके से, २०. एक ओरसे, २१. हब्शिनीके पास, २२. सनीचर, २३. चन्द्र, २४. सौन्दर्य, २५. पूरा, २६. रुचि, २७. वहीं, २८. एक तरफसे।

(प्र) कुरूपा हब्शिन—

। निपट रूसियाही में अगुश्त थी ॥७६१॥
कि था थोबडा उसका ज्यो फील[1] का । सर उसका सो काला रँजन नीलका ॥७६२॥
अँख्या डोंगियाँ ज्यो खडी मारके । दो दीदा भीतर ज्यो पथर गार[2] के ॥७६३॥
चडया होट उपरालका नाक पर । थुडी पर पडया है तलेंका उत्तर ॥७६४॥
तमाम अग गोनीकेरा टाट ज्यो । चूच्याँ दो मीनेपर हैं दो माट ज्यो ॥७६५॥
निकल पेट अगे टलेंक ज्यो आ खडा । अथा पेट थे सख्त पेडू वडा ॥७६६॥
बोंवी[3] खुल रही थी सो ज्यों ओखली । मुसल होके दौडी थी रोमावली ॥७६७॥
लडकती जो चुतडा पें चोटी दिसे । सो ज्यों झाटकी पेड मोटी दिसे ॥७६८॥
सुये सार[4] पेंड्ल्याँ उपर तेज वाल । न थी जगमें डायन कोइ उसके मिसाल ॥७६९॥
सडी बांस वगलांमें ते यों झरे । जिने वास उसकी सुंगे सो मेरे ॥७७०॥
पवन सारका उस कि टुक वास पाय । तो ल्या हल्कमें अँतडियाँ न्हास[5] जाय ॥७७१॥
जँग्याँ में कोई ऐसी काली न थी । हो काली कँ ऐसी खुजाली न थी ॥७७२॥
अगर लावें जिस ठार मश्अल हजार । उन आवे तो तीरे पड अदकार ॥७७३॥
चली घरमनें[6] शाहजादे कूं ले । कँदूरे[7] करे वार अपने वले[8] ॥७७८॥
जो वैठे दोनो मिल कँदूरे उपर । सो वो ज्यो हती होर् रयो ज्यो मछर ॥
कि आ नामुवाफिक[9] मोहवत घडी । पगान उटके जा फिक्र लागी वडी ॥७८०॥
जो फारिग हुये पेट भर खाना खा । मँगाई तुरत मस्त प्याला नि का ॥
सो गडव्यापे गडवी लगी झेलने[10] । लगी शाहजादा सो मिल खेलने ॥
पिये शाहजादे सो मिल वैस कर । ॥७८३॥
कवूल्या[11] नही शाहजादा उसे । टरया देख तन परके उसके मसे ॥७८५॥
गुसा खाय अति जगिया कूं वुलाय । सो सगी चकी पीसने कूं मँगाय ॥७८८॥
"मलिकजादे के कने[12] ले जा" कही । "सुवा उठकर आटा पिसाओ" कही ॥
हुआ शाहजादा दुखी लाइलाज[13] । कह्या दिलमें मौत अपनी आई है आज ॥७९०॥
लग्या पीसने आटा ल्हो आट कर । छले आये हाता कूं सव दाट[14] कर ॥
सो खलरी निवल आई दोय हात की । मुशक्कत[15] लगी द्योस होर रात की ॥
हतेल्याँ जो नाजुक[16] अये पानने । नरमतार[17] नरम रुई खतियान[18] थे ॥
गढे पड रहे सख्त पौलाद हो । गई नाजुकी तन कि वरवाद हो ॥७९४॥

---

१ हाथी, २ खड्ड, ३ नाभि, ४ सूये जैसी, ५ भाग, ६ घरमें, ७ आहार, ८ लेकिन, ९ नापसद, १० उडेलने, ११ स्वीकार किया, १२ राजकुमार के पास, १३ बेदवा, १४ डाट, १५ मेहनत, १६ कोमल, १७ कोमलतर, १८ धुनी ।

(ब) भागकर द्वीप में—

केतेक दिनकुँ ओ जंगिये नावकार[१]। सुन्या ज्यों सो घरमेंत काडा बहार[२]।।
सो बेटी कई तें[३] बुरा मान कर। कपट दिलमने आपने आनकर।।
मँगाया तबर[४] एक लसडी[५] सँगात। दिया फिर दुखी शाहज़ादे के हात।।
दे याराँ कुँ दुँबाल[६] इसके तमाम। सो लकडचा ढुलाने लग्या सुबूह शाम।।
रह्या शाहजादे केरा हाल सब। दुखों तल हुआ हाल पामाल[७] सब।।
गये कपडे अँग के सबे फाट-फाट। परेशानगी हो लग्या वैं[८] उचाट।।८००।।
किया फिक्र[९] ये अपने याराँके पास। "भला है जो इस ठारते जाये न्हास[१०]।।८०३।।
जो सौ वरस अछैंगे[११] हमें इस कने। रहेगे इसी गिरफ्तारी[१२] मने।।
हमन पर किसे[१३] प्यार आसे[१४] न याँ। हमारा दरद दुक्ख जासे[१५] न याँ।।
सकल एक मत होयकर एक बार। किये होडी[१६] यक मुस्तयद इस्तवार[१७]।।८०६।।
दरचा के उपर ज्यों रवाना हुये। सो खुशहाल सबके पराना हुये।।८१०।।
सो हाडी चलाने लगे हात हात। केतेक द्योस चलने लगे राते रात।।
दिसे मौज[१८] कहीं ऊँचनीचे होर कही। ले जाता खडा वाव आ रहीं कहीं।।
कही डूबते होर कही तैरते। हलाकी सेती[१९] फेरते फेरते।।
केतेक झाड वाँ देखते मेवादार[२०]। हरेक झाड़ वा सों आया है बार[२१]।।
हो खुशहाल यक दम वही दुक्ख छोड। सो मेवे लगे खावने तोड-तोड।।
किये प्यास होर भूँख कूँ दफ़ा[२२] वाँ। हुआ दस्त[२३] राहत केरा[२४] नफ़ा वाँ।।८१७।।
हुई रात देक[२५] उस जँजीरे मने[२६]। रहने काँ फिकर[२७] किये सब जने।।८१९।।
अथा झाड वाँ यक बुलँद सायादार। सो उस झाड पर चढके बैठे हुश्यार।।८२०।।
अँधारा गिरद[२८] ज्यों हुआ ठार-ठार। जनावर निकल आये दरिया ते बार[२९]।।
निहंगाँ[३०] केतेक पहाड वैसे गँभीर। हतीसार के माहिमा बेनजीर[३१]।।८२२।।
केतक शक्ल मे ऐन[३२] जैसे शगाल[३३]। केतक बद-शकल[३४] रीछ केरे मिसाल।।८२४।।

(ट) प्रातःकाल—

केतक उसमने के थे ऐसे बडे। देखे आदमी तो वही जले मरे।।८२५।।
नुरानी सुबा[३५] का जो बारा हुआ। चँदरका झलक टुक एतारा हुआ।।८२९।।

---

१. दुष्ट, २. बाहर, ३. पाससे, ४. कुल्हाड़ी, ५. रस्सी, ६. पीछे, ७. बर्बाद, ८. वहीं, ९. चिंता, १०. भाग, ११. रहेंगे, १२. बंधन, १३. किसीकी, १४. आयेगा (पं० गु०), १५. जायेगा, १६. नाव, १७. बराबर, १८. लहर, १९. मृत्युसे, २०. फलदार, २१. भार, लटक, २२. खतम, २३. हाथ, २४. आरामका, २५. देख, २६. द्वीपमें, २७. चिंता, २८. आसपास, २१. बाहर, ३०. मगर, ३१. अद्वितीय, ३२. बिलकुल, ३३. सियार, ३४. कुरूप, ३५. प्रातः।

सितारे लग डूबने ठार ठार। पँखी उठ लगे गुल करन यो पुकार ॥८३०॥
अरश का मुरग बाग कहने लगा। सुबा का ठँडा बाव वहने लग्या ॥
सुरज के उजाले कूं जो खोज पाय। ॥८३३॥
रयन सब दरिया के देखत यो खलल[1]। छुपे ठार ते शाहजादा निकल ॥८३३॥
कहा यो कि "अब यांतें जाना भला। बलायां ते अपसी[2] बचाना भला ॥८३४॥
सो चुन ल्यो मेवा निछल धात-धात। लिये बाँध तोदा[3] खुशी अपने साथ ॥
रवाना हुये वेग मिल सब जने। चले फिर तवक्कल[4] सों दरिया मने ॥
जफा होर दुख देखते ठार ठार। ॥८९॥

(ठ) नारी का बन्दी—

। यकायक होर एक जजीरे में आय ॥८४०॥
हवा होर ठँडी छाँव खुश बाकी देख। लगे नीद सो नीद लेने टुक एक ॥८५२॥
सो ऐसे मने आप चोरी वहाँ। पिछाडे[5] बँदे सबके हत[6] जोर सों ॥
चले मारते लेके स्वारी सँगात। हुवा दुक्ख यारां कुं भारी सँगात ॥
बहरहाल इस गुल में ते भार[7] पड। चल्या शाहजादा कही न्हार्म[8] कर ॥८५४॥
पकड शाहजादे कुं दी बद कर। लेकर आइयां अपने राजे के घर ॥८५९॥
सो सैफुलमलूक देखता हो वां। रखे थे तख्त[9] सूर सा दरमियाँ ॥८६०॥
सो बैठी है वाँ नार मकबूल[10] खूब। सुरज पाद ते खूब निर्मल सरूप ॥
मुरक्कस[11] जरीना[12] वो पेने है नार। खुश-आवाज[13] सो देख बोली पुकार ॥
"कहाँ ते तुं आया है ऐ नेकनाम। तुं किस मुल्क का बोल तेरा मुकाम[14]" ॥
अथ[15] हाल जे दुक्ख का था जेता। सरासर[16] वह्या खोलकर सब बता[17] ॥८६६॥
सो व। नार भी यो कही उसके तें। ॥८७४॥
"अगर तूं मेरा दिल करे खुश एताल[18]। जतन से रखूंगी तुझे ज्यो निहाल"[19] ॥८७५॥
जो कुछ मनाई मनानेके धात[20]। कबूल्या नहीं शह उस आतिश सँगात[21] ॥८७८॥
सुनी नार सैफुलमलूक से यो बात। गुसे सात दौडाई शह पर सो हात ॥८९४॥
। रखी कैदसो कैद कर सातरा ॥८८६॥
जो यक रात आधी रात गुजरी अथे। मेंग्या हासने नाहै उस बद से ॥८९०॥
मत्यां[22] हो पड्या है किसे नै खबर। निकल भार आया दरियाके उपर ॥८९३॥
यकायक तख्ता दिस्या यक वहाँ। निकल कर चल्या होर हुआ तब रवाँ ॥८९४॥

---

१ बाधा, २ अपनेको, ३ भरोसा, ४ इसी समय, ५ पीछेकी ओर, ६ था, ७ बाहर, ८ भाग, ९ सिंहासन, १० पसन्द, ११ सुनहरा, १२ आभूषण, १३ सुकण्ठ, १४ निवास, १५ इसके बाद, (बाद-जाँ), १६ बिल्कुल, १७ उतना, १८ अब, १९ पौधा, २०. भाँति-भाँति, २१ आगके साथ, २२ मस्त।

(ड) राक्षसों के चंगुल में--

दरया में जफ़ा होर दुख देखता। सो डुबता निकलता चल्या तैरता ।।८९६।।
छ महीने पछीं यक जँजीरा[1] दिस्या। जजीरा देखत दिलमने[2] यों हस्याँ ।।९००।।
कह्या दिल मने शाह गुर्बतसँगात[3]। "जजीरा यो दिसता है रोशन-सिफात[4] ।।९०१।।
मुवादा अछैगी[5] बलायाँ कु बल। मुवादा मुझे जाय चिंता निगल ।।
चल्या फिक्र[6] करता जजीरे कने। सो रख तख्ता उसपर लग्या फीरने ।।९०३।।
यकायक्क राकस[7] निकल आके भार[8]। सो पा बास आदम की दौड्या पुकार ।।९०५।।
देख्या शाहज़ादा बलायाँ कु बल। सो तख्ता बिसर कर चल्या वै निकल ।।९०७।।
जमीं[9] पर चल्या न्हासता न्हासता[10]। . . . . ।।९०८।।
जहाँ पर देखे उस बलायाँ कुँ शाह। पहाड दौडते है या बादल सियाह ।।
सो फिर देखता होर अधिक न्हासता। अदिक न्हाटता होर सिना फाटता ।।८१०।।
छ म्हीने पछीं न्हासतान्हासता। खडा एक जजीरे[11] कने आसता[12] ।।६१४।।

(ढ) श्वमुखों, पृष्ठपादों और बंदरों के देश मे--

जजीरे के भितराल-डरता घुस्या। वाँ सगसार[13] थक दौड उस पर धरया ।।७१९।।
सो सैफुलमलूक कूँ पकड ले चल्या। गो जिवका भरोसा वहाँ ते टल्या ।।७२०।।
सो रोता वहाँ शहर में आइया। दिल अपना तमाशे सो भूलाइया ।।९२२।।
सो बदशक्ल[14] मूँ है कुते सारका[15]। वदन उस लटकता सुवर सारका ।।
सो हत-पाव उनके है अद्म्याँ के सार[16]। . . . . ।।९२३।।
कहा शहर मामूर[17] है जिन्स[18] ते। न थे वहां कोई सगसार ते ।।९२६।।
ले गये सामने अपने राजा के पास। खडे रह गये देखते आसपास ।।९२८।।
"खिला खाना मोटा करो" कर उसे। . . . . ।।९३२।।
. . . . । रखाने कुँ फरमाइया संगदिल[19] ।।९३३।।
रह्या बंदमें शाहजादा वहाँ। सो दिन वीस म्याने[20] यकायक वहाँ ।।९३४।।
खदेडे जो थे राकसाँ उसके तै। जँजीरा[21] ह,हरेक ढूँढ आये वै[22] ।।९३५।।
सो सगसार[23] का शाह पाया खबर। बहुत राकसाँ आये कर शहर पर ।।
वहीं तफत होकर उठ्या सग्गसार। किया लडने ते मुस्तअद अपना भार[24] ।।९३६।।
हलों[25] शाहजादा जो निकल्या बहार। लग्या देखने शहर मे ठार-ठार ।।९४०।।

---

१. द्वीप, २. दिलमें, ३. परदेशमें गया, ४. उज्ज्वल गुणोंवाला, ५. रहेगी, ६. चिंता, ७. राक्षस, ८. बाहर, ९. जमीन, १०. भागता-भागता, ११. द्वीप, १२. आकर, १३. कुत्ता, १४. कुरूप, १५. कुत्ते जैसा, १६. आदमी जैसा, १७. भरा, १८. सामान, १९. कठोरहृदय, २०. बीस दिनके बीच, २१. द्वीप, २२. वहां, २३. कुत्ता, २४. बाहर, २५. धीरे-धीरे।

इलाही[1] जा उस पाक आशिक[2] उपर। मिल्या यक जज़ीरा उसे खूबतर[3] ।।९५७।।
नज़र नैं पड्या कोइ सगसार वाँ। निकल शहर ते वेग हूवा रवाँ ।।९४१।।
जो उस शहर में जा देख्या हर मकाँ। कि नैं आदमीज़ाद[4] का कुच निशाँ ।।९५९।।
हरेक तरफ रोशन है वाजार चार। ।।९६०।।
भरे ह वहाँ द्वालपाये[5] वहुत। न हिलते न चलते सो वैठे वहुत ।।
सो लडने लगे द्वालपाये वहाँ। हुशे आके लटपट हुये जो तहा ।।
गले होर[6] हाताँ में पावाँ सो पेच। लगे मारने हात सो खीच खीच ।।
जो मादा किये उसकूँ दौडायकर। वहाँते लेगे अपने राजे के घर ।।९६४।।
रखाने कूँ फरमाइया वद कर। सो यक महल में जा रखे वद कर ।।९६७।।
केतक दिन उसी वद में पड रह्या। निकल जाउँ कर फिक्र यक दिन किया ।।९७०।।
। अधी रात गई फिक्र करने मने[7] ।।९७१।।
सो मद पी हुये थे मती वो जेने। जो वेसुद हो आसपास सगले सोने ।।९७२।।
वही न्हास[8] कर जा जँगल में पड्या। ।।९७५।।
चल्या था द्योस न्हामता[9] जो तलक। जो ऐसे मने[10] रात आई वलग ।।९७८।।
छुपा सूर भी शाव[11] ले नूर का। खड्या आ चदा तव ले नूर[12] का ।।९७९।।
चदा चौकदन[13] रस्त साधा अथा[14]। तनावा सितारयाँ सो वाँध्या अथा ।।९८०।।
सुरय्या[15] शमाजोत[16] लडकाय[17] कर। जगाजोत असमान पस सरवसर[18] ।।९८१।।
सो मैं फुन्मलूक रैन सगली कटया। उसी में उजाला रयन का फुट्या ।।९८८।।
चँदर जव निकल रग्या वाँध्या तमाम। शफक[19] में खडा रह किया उस सलाम ।।९८९।।
सती हात की नारके हात सो। शफक खून में थे उचा हात सो ।।९९१।।
मुरग अर्श[20] का हाँक मारन लग्या। परियाँ[21] सो अपने विचरने लग्या ।।
परदे लगे कूकने ठारन्ठार। दरिन्दे[22] चले सैर करने कुँ भार[23] ।।
रयन ज्यों जनी सुवहके पूतकूँ। सो रोशन हुआ सुवह की रूत सो ।।९९४।।
अदिक भूक होर प्यासते तिल्लमिल। लग्या सैर करने कुँ जगले जगल ।।९९९।।
जो तनहाँ[24] जिधर चलके जाता अछै[25]। उधर का जँगल जगमगाता अछै ।।१०००।।
जहाँ लग जो वाघाँ दरिन्दे अथे। जहाँ लग जनावर परदे अथे[26] ।।
वरावर उसीकेसो फिरने लगे। ।।१००२।।
जगल में जो कईं कैं फलफलाल[27] अछै। ।।१००३।।
सकल जायँ चुन चुन के ल्याने के तैं। मलिकज़ादे[28] कुँ ला खिलाने के तैं ।।१००४।।

---

१ भगवान्, २ पवित्र प्रेमी, ३ सुदर, ४ मानव, ५ पक्षी, ६ और, ७ करनेमें, ८ भाग, ९ भागता, १० इसी समय, ११ जवानी, १२ शक्ति, १३ चारो तरफ, १४ था (हता), १५ सप्तर्षि तारे, १६ मोमवत्ती प्रकाश, १७ लटका, १८ पूरी तौरसे, १९ लालिमा, २० स्वर्ग, २१ पक्षी, २२ श्वापद, २३ बाहर, २४ अकेला, २५ रहे, २६ ये (हते), २७ फलफलारी, २८ राजकुमार।

सो कहने लग्या "ऐ खुदाबन्दगार[1] । . . . . ।।१००९।।
कहाँ ते मुजे तँ कहाँ लाइया । सो ला किस बला में सँपडाइया[2] ।।१०१०।।
जिधर देखता हूँ उधर बेक़यास[3] । जंगलके जानवर खडे आसपास ।।
गमूँ[4] क्यों इनन साथ दिन-रात मैं । करूं इस गुंग्या साथ क्या बात मैं ।।१०१२।।
सो यक रात अधीरात गुजरी देखत । जगत नैन[5] कूँ नीद पकडी देखत ।।१०१९।।
जनावर लगे ऊघने ठार ठार । पडे बेखबर सब न कोइ होशियार ।।१०२०।।
चल्या उस अधी रात वाँते निकल । बडे दगदगे[6] साथ जँगले जँगल ।।१०२२।।
केतेक दिनकूँ जों बाट पाया टुक एक । नजर तल पडचा दूरते शहर एक ।।१०२४।।
जो उस शहर का कैसरीया था नाँव । सफ़ा जा-व-जा[7] हो हवा ठाँव-ठाँव ।।१०२५।।
जो ल्या सातों अस्मान उसमे छिपाँय । तो यक कोने में उसके सब छुपके जाँय ।।१०२७।।
निछल[8] चौकदा[9] रस्ते बाजार जार । . . . . ।।
वले[10] आदमीजाद[11] नै कोइ वहाँ । भरे है वहाँ नादरे जाँ-तहाँ ।।
हकूमत[12] उननका च[13] है ठार-ठार । उननका च चलता है वाँ कारोबार ।।१०३०।।
देखे शाहजादे कुँ जो सरवसर । लेगे अपने राजे कने क़ैद कर ।।
जो देखता है वां शाहजादा निझा[14] । अजायब तरह का है ऊँचा छजा ।।
रखा है जडत तख्त म्याने मियाँ[15] । ज़मी वाँ की दिसती है ज्यों आसमाँ ।।
छबीला जवाँ एक ज्ञानी सुगड । खुश उस तख्त उपराल बैठा है चड ।।
सकल बाँदरे दायरा छोडकर । खडे है अदब साथ[16] हत जोड कर ।।
बुला बाँदरचां कूँ कह्या ओ जवाँ । कि कुरसी लेकर आ रखो म्याने म्याँ ।।
लेकर आये जो वेग कुरसी निछल[17] । . . . . ।।१०३७।।
मलिकजादे[18] कूँ बैसला[19] उस उपर । लग्या पूछने हाल उस सरवसर ।।
कि "ऐ जाँ, तूँ काँ ते आया है कि । कहाँ कहाँ ते किस गाँव जाता है कि ।।
तुँ किसका है जाया तेरा ठाँव कौन । कहाँ चाँद तेरा है असमान कौन" ।।१०४०।।
जो ऐसी ओ शीरी-जबानी किया । मलिकजादे कूँ गाल[20] पानी किया ।।१०४३।।
सो एक धोरेते[21] हाल अपना अथा । जो कुछ तिलमिलाना व तपना अथा ।।१०४४।।
सरासर कह्या खोल उस जान सों । लग्या पूछने उसकूँ फिर ज्ञान सों ।।१०४६।।
सो पूछ्या कि "इस राज इस ठार तूँ । मारातिब[22] यो पाया है किस धात सों ।।१०४९।।
तुजे बाँदरचा साथ नमता है क्यों ।" . . . . ।।१०५०।।
कह्या तब वो राजा कि "सुन ऐ अनीस[23] । मेरा बाप था मिस्र केरा-रईस ।।

---

१. स्वामी, २. पहुँचाया, ३. अपार, ४. बिताऊँ, ५. लोकनेत्र, ६. भय, ७. जगह-जगह, ८. निर्मल, ९. चारों तरफ, १०. लेकिन, ११. मानव, १२. शासन, १३. उनका ही, १४. ध्यान कर, १५. बीचमें, १६. स-सम्मान, १७. स्वच्छ, १८. राजकुमार, १९. बैठा, २०. गलाकर, २१. एक तरफसे, २२. दर्जे, २३. मित्र।

दिया भेज मुंज करने सौदागरी। ॥१०५४॥
यकायक सो कश्ती[1] फुटी मौज मार। सो तख्ते उपर एक निकल्या बहार[2] ॥१०५५॥
वहाँ बाँदरे फौज आइये। पकड मुंजे बातें यो लाइयें॥
सितम-ज़ोर[3] सो बेसला तख्त उपर। दिये पादशाही मुंज एस वक्त पर॥
दोहाई मेरे शहर में सब फिराय। चल्या है रसम[4] इस वज़ा का[5] मुदाय[6]॥
जो मरता है राजा उननका कधी। करार[7] उनकूं अछता[8] नहीं है कहीं ॥१०६०॥
उनन के अवलके महाराज की। सो बेटी है अतिशर्म होर लाज की ॥१०६२॥
गमू[9] उस सेती मैं कि हम-जिन्स[10] है।" ॥१०६३॥
दोनों मिलके खुशज़ौक[11] सों खान खाय। रंगीला शराब अगवानी[12] मँगाय ॥१०६८॥
पियाले लगे ऐश सो झेलने। हुये मुस्तअद[13] बाँदरे खेलने॥
अपस मे अपस ताल मंडल बजाय। विकट बाजियांके तमाशे दिखाय ॥१०७०॥
कुलांटयाँ उछलने लगे मेल खूब। ॥
हुनर-भेद[14] अपना जेता था दिखाय। बहरहाल[15] दोनों कुं खुश कर हँसाय॥
केतेक द्योस शहज़ादे कूं रख वां राज। ॥
पया पै[16] रख इस धात[17] दिन तीन चार। शिगुफ़्ता[18] किया माँदगी सब उतार॥
समज ख्याल उसका कह्या यो उसे। कि" तूं ज्यों सो आशिक हुआ है जिसे ॥१०७५॥
यहाँ कोइ उसते खबरदार नै। किसी मुल्क में ओ ते इज़्हार[19] नै ॥१०७६॥
तवक्कल[20] सो कर आपने मन कूं शाद। मुलुक ढूंढ होर पा तूं अपनी मुराद" ॥१०८०॥
कर इज़्हार अपने जेते मेह्‌र ते[21]। रवाना किया खुश उसे शहर ते ॥१०८३॥
चल्या शाहजादा ले बत्या गमी। उठी सिलगकर विरह की आग भी ॥१०८८॥
सरासर[22] सरीर आपना जालता। अँगारे अँझू[23] गर्म अधिक डालता ॥१०९०॥
निपटे निपट जँगले जगल झाड। ॥
उलगता[24] गया एक जज़ीरे कने। जो देखता है जा उस जज़ीरे मने[25] ॥१०९२॥
भरे हैं मकोडे वहाँ ठार-ठार। हती सारके आदम्याँ खानहार ॥१०९५॥
झुंडे होने फिरते हैं चारो केतें। सो खाने मगे[26] उस विचारे के तें॥
लग्या फिर वह जिवके डरों न्हासने[27]। सो देख्या पँखी एक ऐसे मने[28]॥
बडा धड शुतुरमुर्ग के सारका[29]। ॥
किनारे पै दरिया के बैठा है आ। पकड वै लिया उसके दो पाँव जा॥
चल्या उसकूं ले मुर्ग[30] उस ठार ते। उडचा होर हुआ गायब ससार ते ॥११००॥

---

१ नाव, २ बाहर, ३ जुल्म, जबर्दस्ती, ४ रवाज, ५ प्रकार, ६ सदा, ७ धय, ८ होना, ९ गुजारा करूं, १० सजातीय, ११ सुरुचि, १२ लाल, १३ तैयार, १४ गुणका रहस्य, १५ सब तरहसे, १६ लगातार, १७ भाँति, १८ उत्फुल्ल, १९ प्रकट, २० भरोसा, २१ कृपासे, २२ बिल्कुल, २३ आज भी, २४ लांघता, २५ द्वीपमें, २६ चाहे, २७ भागने, २८ इसी समय, २९ सदृश, ३० पक्षी।

उलँगता उलँगता केतक पार[1] वो। चल्यां एक समुन्दर[2] के पेलाड[3] वो।।११०१।।
चल्या जो सो धन पाड वतन आपने। . . . . ।।११११।।
वहां आपने ठार का खोज काड। . . . . ।।१११३।।
उतार उस उपर शाहजादे के तै। बच्याँ पास अपने चला दौड वैड।।१११५।।
अवल ते यक आदम जो वैं मार कर। रख्या था जतन आपने ठार पर।।१११६।।
सो टुकडे कर उस बाँट भाने[4] लग्या। बच्याँ ताइँ अपने खिलाने लग्या।।
देखत शाहजादा जो उस झाडतल। पडे सो जहाँ के तहाँ हाड गल।।
यकायक आया उसे भाने[5] एक साँप। बडा सारखा धड जमीं कूँ ले ढांप।।
धुलारा[6] उचाता[7] वहाँ आइया। बच्याँ कूँ सो खाने केतैं धाइया।।११२०।।
चडचा झाड उपराल दे झाप[8] मार। सब उसके बच्याँ कूँ निगल एक बार।।
लिया उस मुरुग की मुँडी जायकर। भसम कर सुटचा[9] तल मने[10] खायकर।।११२२।।
जँगल बीच पड लाख दुश्वार सात[11]। लग्या न्हासने[12] ताइँ बाकी सँगात।।११२६।।
. . . . । सो उठता वा पडता हरेक ठाव में।।११२७।।
अधिक प्यास होर भूक ते तिलमिले। चल आया हलौ एक हरे झाड तले।।
सो वाँ एक चश्मा अथा आबका[13]। खजल[14] उस अँगे[15] आब-गुल्लाल था।।११२९।।
पडचा था वहाँ गैबका[16] एक अनार। सो रँग-रस भरचा (होर) मिठा दानेदार।।११३०।।
भुका था सो वैं[17] छील खाया उसे। रगे-रग[18] मने जीव[19] आया उसे।।
पिया नीर चश्मे मने जायकर। किया तकिया उस झाड तल आय कर।।
पंखी एक ऐसे में मुरगोल[20] उठा। . . . . ।।
"सुता है जवाँ यो जो साहेबजमाल[21]। हुआ है जो विरहे के गम मे निढाल।।११३४।।
बडा कुछ बला[22] एक यहाँ आयेगा। सो इस बेगुनह[23] ज्वान कूँ खायेगा।।
पँखा दूसरा सुन बुरा मान कर। दरीगे[24] अधिक मन मने आनकर।।
लग्या पूछन उसकूँ यो "क्याहै कना[25]। कि हम बेगुनहका सो क्या है गुना" ।।११३७।।
कह्या वो पंखी खोल इस धात[26] तब। . . . . ।।११३८।।
"सुन्या हूँ कि कै[27] बाग यक-रुखवन[28]। है उस बाग का नाँव औतार वन।।११४२।।
वहां झाड एक अन्नार का। लग्या है उस यक फल जो औतार[29] का।।११४३।।
सो यक जिन ने उस बाग कूँ पाइया। वो औतार फल जाय कर लाइया।।११४७।।

---

१. पहाड़, २. समुद्र, ३. परे, ४. बहाने, ५. इसी समय, ६. धूला, ७. उठाता, ८. छलांग, ९. फेंका (पंजाबी), १०. नीचे, ११. कठिनाई के साथ, १२. भागने (पंजाबी), १३. पानीका, १४. लज्जा, १५. आगे, १६. दिव्य, १७. वहीं, १८. रग-रगमें, १९. सहारा, २०. कलरव, २१. सुंदर, २२. आफत, २३. निरपराध, २४. पछतावा, २५. कहना, २६. भाँति, २७. कहीं, २८. एकतरफा, २९. अद्वितीय, सर्वश्रेष्ठ।

यकायक प्यासा हो पानी को [illegible]
वले फिरके जाते वक्त नाबकार[1]। विसर कर गया था वो औतार अनार॥
उमी फल कूँ यो ज्वान खाया अहै। वले[2] भेद इसका न पाया अहै॥११५०॥
विसर गया सो वो जिन आग हो। बसाने[3] वला उस प आता है वो॥
अगर अकल कुछ होयगा इसमने[4]। खातम[5] सुलेमान का इस कने॥
वो जिन फिरके जिस वक्त आयेगा। जो अनार ढूंढने के तैं धायेगा॥
कना[6] यो गजब सो[7] उसे हाँक कर। कि ऐ जिन कुडगीना[8] जिस नावकर॥
वो औतार बन था सुलेमान का। दगाबाज[9] उसके फल उस ठार का।
तुजे तोडने हात किस धात[10] आय। तु नकाम रह रह किया हाय हाय॥
सुलेमान भेजा अछै याँ मुंजे। लेकर आओ बद कर पिछौडे तुजे॥
दिया है निशाँ[11] आपना मेरे हात। खडे हो न देसूँ[12] तुजे एक सात[13]॥
ओ जिन ज्यो सुलमान केरा निशान। देखेगा तो उड जायगा वैं[14] परान[15]॥११५९॥
सो सैफुल्मलूक ज्यो सुना यो विचार। उडी मार कर जा छिपा एकठार॥
ज्यो आया वो जिन दौड चश्मे कने। यकायक आय। निकल भार उने॥
अंगूठा दिखाया उसे हाक मार। सो हैबतजदा[15] होके बे-इख्तियार[16]॥

(ण) प्रेमिका का पता—

जो निकल्या वहा ते सो सैफुल्मलूक। पड्या जाके होर एक जंगल में चूक॥
अकेला जो आँगे[17] हो जाने लग्या। कठिन बाट कू चल घटाने लग्या॥११७०॥
। नजर[18] चार तरफा[19] जो दौडाइया॥११७४॥
सो बेमिस्ल[20] नकश[21] रँगारंग महल। सफा[22] दार यकायक पड्या दिष्टतल[23]॥११७५॥
जो नज्दीक आया खुशी साथ जब। अपस ते अप[24] खुल पडे कुफल[25] सब॥११७६॥
दरूनी[26] चल्या जौक[27] था बेशुमार। निया[28] देखता जो वहाँ ठार-ठार॥११७७॥
सँवारे अहै गैब[29] ते सब महल। बिछाने बिछाये हैं जाँ-ताँ निछल॥
रखे ह तखत होर उसके उपर। सुता है के मुंह ढाप कोइ बेखबर[30]॥
न हिल्ता न चल्ता है उस ठार ते। न धरता खबर कुच्छ ससारते॥११८०॥
चल्या धसके देख्या नजीक जा उसे। सो नारी है मकबूल[31] सोती दिसे॥११८२॥

---

१ दुष्ट, २ लेकिन, ३ बैठाने, ४ इसमें, ५ अगूठी, ६ कहना, ७ गुस्सेसे, ८ गदा, ९ आज्ञा विना, १० भाति, ११ चिह्न, १२ नहीं दूगा (पजाबी), १३ साथ, १४ वहीं, १५ भयभीत, १६ बेबस, १७ आगे, १८ दृष्टि, १९ चारो ओर, २० अनुपम, २१ चित्र, २२ स्वच्छ, २३ दृष्टिमें, २४ अपने आप, २५ ताला, २६ भीतर, २७ खुशी, २८ ध्यानकर, २९ देवानुभाव, ३० बेहोश, ३१ पसद, मनोहर।

न उस सार सूरत मने हूर का । न वैसा [illegible] सता सूर का ।।
एके बार बैठा नजीक बेकरार[5] । मगर[6] नीद ते होयगी[7] कर होशियार ।।११९।।
सो हरगिज वो हुशियार होती नही । मुझे त्यों च[8] दिसती है सोती नही ।।
डरचा होर मँग्या[9] फिरके[10] जाने वहीं। सो देख्या पटी एक सिराने वहीं ।।
उधार[11] वो पटी देखता है जो पर । सो बाँध्या है नींद कोइ उसके ऊपर ।।
सुटचा[12] फाड जों टुकडे कर वो पटी[13] । वह मकबूल[14] यकायक वही जाग उठी ।।
अँगे[15] हो किया शाहजादा सलाम । मुख उसका देखत जौक[16] पाया तमाम[17] ।।
सो हैरान हो बैठी वो उस घडी । अधर खोल ज्यों फूलकी पाँखुडी[18] ।।११९०।।
कही यों कि "यां आदमीजाद[19] कौन । . . . . ।।
सही कह कि तू कौन किस ठार का । खबर क्यों[20] लिया है तु इस ठार का" ।।११९२।।
तब उस शाहजादा उठा बोलकर । हक़ीक़त[21] सो अपना कह्या खोलकर ।।११९४।।
"ऐ नार, किस्सा[22] है मेरा दराज[23] । कहूँगा सो सुनने कुँ आसे[24] न बाज ।।
हुये वरस तेरह मुझे रात-दिन । जो फिरता हुँ बीताज[25] सर ले कठिन[26] ।।
बलायाँ[27] बहुत सोसियाँ[28] विरह क्याँ । . . . . ।।
हुआ इश्कते हाल सब पायमाल[29] । न जानूँ होवनहार है क्यों इताल ।।
वदीयुल्-जमाल एक है शहपरी[30] । वो सूरत पै अपने मुजे यो करी ।।
कहूँ क्या तुजे ऐ शाह शक्कर-लबा[31] । कि याँ लटपटाती है मेरी जब।।१२००।।
न वो मिलती है न गुलिस्ताँ-अरम । यों उस ताँई खोता हूँ अपना जनम ।।
तले धरतरी[32] होर उपर आसमाँ । दुखों पीस जाताँ हूँ म्यानेमियाँ[33] ।।१२०२।।
यकायक अल्ला जो ल्याया मुँजे । सो इस महल में आज पाया तुजे ।।१२०५।।
तेरा हाल होर वजा[34] क्या है सो बोल । छुपा तूँ न मुजते दिल खोल खोल" ।।
वो अँमृत के गुन की सगी मेहरबान । फरासत[35] सों उसका जल्या दिल पिछान ।।
कही यों कि "बेटी हूँ मै लाज की । सिरन्दीप[36] के मुल्क के राज की ।।
हमे[37] दरअसल[38] तीन भानाँ[39] अथ्याँ[40] । सो एक दिन रजा[41] बाप की ले वत्याँ[42] ।।
गिया बाग में सैर करने केतै । लग्याँ तैरने हौजखाने[43] में वे[44] ।।१२१०।।
सो दरहाल[45] वहाँ एक वारा[46] उठचा । चमन दर चमन[47] सब धुलाराँ उठचा ।।

---

१. वैसा, २. रूपमे, ३. कहीं, ४. तेजवाला, ५. अधीर, ६. कि, ७. जागी, ८. वैसी ही, ९. चाहा, १०. लौटकर, ११. उठा, १२. फेंका (पंजाबी), १३. पट्टी, १४. प्यारी, १५. आगे, १६. प्रसन्नता, १७. पूर्ण, १८. पंखुड़ी, १९. मानव, २०. कैसे, २१. वास्तविकता, २२. कथा, २३. लंबी, २४. आवेगी, २५. दुःख, चिन्ता, २६. कठोर, २७. आफतें, २८. सहा, २९. बर्बाद, ३०. परियोंकी रानी, ३१. मीठे ओठवाली, ३२. धरित्री, ३३. बीचमे, ३४. ढंग, ३५. छुट्टी, ३६. लंका, सिंहलद्वीप, ३७. हम सब, ३८. वस्तुतः, ३९. बहिने, ४०. थीं, ४१. अनुमति, ४२. वहाँ, ४३. कुंडगृह, ४४. वहीं, ४५. उसी समय, ४६. तूफान, ४७. चमने-चमन ।

सो उस धूल[1] मे ते जनावर वडा। उचाकर मुंजे ले गया वैं[3] उडा॥
हवा पर चल्या दौड पँख मार-मार। रख्या मंजकूं ल्याकर सो इस ठार उतार॥
अँगे[2] हो मेरे आ किया वैं[3] सलाम। कह्या "डर नको ऐ चंचल नेकनाम॥
कि आशिक[4] हूँ मैं तुज उतम माह[5] का। कि बेटा हूँ परियाँ के मैं शाह का॥
बहुत-भनइ जो यक मुंजे आज है। वह दरियाव कुल्जुम[6] केरा राज है॥
इसी महलम्याने[7] है मेरा मुकाम[8]। न मेरा है यो बल्कि तेरा मुकाम॥
रख्या यो लेकर आके इस ठार मुंज। किया यो बला में गिरिफ्तार[9] मुंज॥
यो जागा जजीरा है जस्फन्द का। फरहबख्श होर लाग आनन्द का॥
महीने कुं यकबार आता है वो। मुंजे देख फिर फिर के जाता है वो॥१२२०॥
मैं उसका कह्या न सुनूं देखकर। गुसा[10] बेनिहायत[11] पकड मुंज उपर॥
मंतर सो मेरी नींद कूं बाब लाय। अकेली मुंज इस महल में छोड जाय॥
सो तू जिस पटी कूं सुट्या[12] फोडकर। बँध्या था मेरी नींद उसके उपर॥
इसी वजा[13] सो बरस बारह हुये। मेरे द्योस चुपके अवारा[14] हुये॥१२२४॥
न कैं[15] जा द्योस अठ[16] मेरे पास तूं। न को ल्याव दिलमें वसवार[17] तूं॥१२२७॥
वो आसे न अजहूं न हो घावरा[18]। अझूं द्योस बाकी है यक सातरा[19]"॥
दे शाहजाद कुं धीर[20] इस घात[21] सो। उठी बोल फिर यों मिठी बात सो॥
कि "इस वक्त पर मैं तुजे ऐ जवाँ। तेरी मोहनीकी जो देउँगी निशा[22]॥१२३०॥
कहूँगी वो आगे अरमकी खबर। तो क्या अँपडैगा[23] मुंजकुं इसका समर[24]"॥
वो गुनवत सखी जो कही अपनी बात। खुशी सो फुगी[25] शाहजादे की जात[26]॥
अदब की रविश[27] साथ सिर मुंह पर धर। दुआ[28] होर सना[29] उसकूं लै घात[30] कर॥
कह्या था कि "ऐ मोहिनी, नेकनाम। फिदा[31] तुज योने जीव मेरा तमाम"॥१२३४॥
लगी बोल कहनेकूं "सुन ऐ जवान। कि मुंज पीठकी थी नहीं एक भान[32]॥१२४२॥
हमें तीन भानां[33] में वो खूब[34] थी। सो बेमिस्ल आलम में[35] महबूब थी॥
तन उसका निछल[36] मुख मकाता[37] अछै[38]। अंबर मुश्क[39] का वास आता अछै॥१२४४॥
सो ले यक दिन सगात हमनाकुं[40] भाइ। खुशी साथ यक बाग में लेकर आइ॥
केनेक द्योस वहाँ दिमानी[41] किये। अधिक जश्न वाँ खुसरवानी[42] किये॥

---

१ धूल, २ आगे, ३ वहाँ, ४ प्रेमी, ५ चन्द्रमा, ६ लालसागर, ७ महलमें, ८ निवास, ९ पकड, १० क्रोध, ११ अत्यत, १२ फेंका (प०), १३ इसी प्रकार, १४ बर्बाद, १५ नहीं (मराठी), १६ रह, १७ सदेह, १८ घबडाया, १९ थोडा, २० धैर्य, २१ भाँति, २२ चिह्न, पता, २३ मिलेगा, २४ फल, २५ फूली, २६ व्यक्ति, २७ सम्मानके ढग, २८ आशीर्वाद, २९ प्रशसा, ३० बहुत भाँति, ३१ नौछावर, ३२ बहन, ३३ बहनें, ३४ सुदर, ३५ दुनिया, ३६ निर्मल, ३७ महकता, ३८ रहे, ३९ अबर-कस्तूरी, ४० हमको, ४१ प्रसन्नता, ४२ राजसी।

यकाएक औरत इस उस ठार पर। हरे झाड पर ते उतर आयकर।।
अँगे हो मेरी माँ कुँ कीना[1] इलाम। उठी बोल इस धात[2] हो हम-कलाम[3]।।
कि 'परियाँ के राजा की औरत हूँ मैं। देखन आइ हूं तेरी बेटीके तैं।।१२५०।।
सकल शहपरयाँ[4] में मेरा नाँव है। मेरा गुलस्ताने-अरम ठाँव है।।
जो है मुंज कने एक बेटी नन्ही। सो है वो मेरे नैनकी रोशनी।।
रखा उसका है नँव बदीयुल्जमाल। है उस साथ मेरा मुहब्बत कमाल[5]।।
बहुत दिन ते अछती[6] हूँ इस ठार मैं। अधिक खुश किये हुँ यो गुलजार[7] मैं।।
तुझे देख मैं ज़ौक पर जौक़[8] पाइ। अछो[9] क़ायम[10] यो आजते आनाइ[11]।।
यो बेटी सो तेरी बेटी है मेरी। यो बेटी मेरी सो यो बेटी तेरी।।
पिला प्यारते दूद तेरा इसे। कि मैं देउँगी दूध मेरा उसे'।।
कर इस वजा[12] सो बात एकसकुँ एक। रहे दो जनें मिल अपस एकों एक।।
वड़ी होगयी वो चँचल आज कूँ। अछैगी[13] सुरजते निछल[14] आज कूँ।।१२६०।।
मैं अपने नगर बीच अछती जो आज। तो करती हरेका वजा तेरा इलाज[15]" ।।१२६२।।
सो शाहजादा सुन कर हुआ यों खुशहाल[16]। कह्या सुन "ऐ रोशन[17] तूँ साहेब-जमाल[18] ।।१२६४।।
कि मैं अर्ज[19] करने भी मँगता[20] हुँ तुज"। . . . . ।।१२६५।।
कही मोहनी "बोल क्या है सो मुंज। कहूँगी मैं उस बात का जाब[21] तुज" ।।१२६७।।
कहा "जब वो देव आवे इस ठार पर। सो तूँ पूछले उसके जिव की खबर।।
मेरा जीव तुज हाथ में है यहाँ। तेरा जीव मालूम नै मुँज कहाँ।।
यो खूब[22] खबर उसते ले मुजकना[23]। तो मैं कर सुटूँ उसकुँ तिलमें[24] फ़ना[25]" ।७०।१२।।
यो सुन मोहिनी कइ[26] शकरलब[27] कुँ खोल। "लिये हूँ खबर उसते कहती हूँ खोल।।
कि यक द्योस मुंजकूँ रख्या सो परा[28]। लग्या मुँज सों बाताँ करन बहुतेरा।।
कह्या याँ कि तुज बिन नही कोइ मुँज।' . . . . ।।१२७३।।
मैं इस बातकूँ जाब दी यों फिरा। . . . . ।।१२७५।।
'तेरे हाथ में है मेरा जिव तो यहाँ। वले[29] कह मुँजे है तेरा जीव काँ' ।।१२७७।।
सुन्या मुंज जबाँ[30] ते ओ यो बात ज्यों। उठ्या बोल कर फेर मुंज साथ यों।।१२८१।।
'मैं ऐ मोहिनो तुज ते अब क्या छिपाऊँ। कता हूँ मेरा जीव रहता सो ठाँव।।१२८२।।
कि है एक संदूक शीशे केरा। सो उसके दरुनी[31] अहै जिव मेरा।।१२८४।।
वो संदूक सो है दर्या के भीतर। अंगूठी सुलेमान की कोई अगर।।

---

१. किया (पं०), २. भाँति, ३. संभाषण, ४. परियाँ, ५. पूर्ण, ६. रहती, ७. फुलवाड़ी, ८. प्रसन्न पर प्रसन्न, ९. रहो, १०. स्थायी, ११. मित्रता, १२. ढंग, १३. रहेगी, १४. निर्मल, १५. दवा, १६. प्रसन्न, १७. प्रकाशमान, १८. सुंदरी, १९. निवेदन, २०. चाहता, २१. जवाब, २२. अच्छी, २३. मेरे पास, २४. पलमें, २५. नाश, २६. कही, २७. शक्कर जैसे मीठे ओठ, २८. परीका पुरुष, २९. लेकिन, ३०. जीभ, ३१. भीतर।

दर्या के नजदीक जाके दिखलायेगा। निकल ओ सँगाते च[1] उपर आयेगा" ॥१२८६॥
सुन्या शाहज़ादा जो इस बात कूँ। कह्या खुश हो उस पद्मिनीज़ात[2] कूँ ॥११२८८॥
कि "ऐ मोहिनी पाक दामान[3] की। अगूठी तो हजरत सुलेमान की॥
मेरे पास हाजिर[4] है दब मे इताल[5]"। ॥१२९०॥
सुलेमान की उस अगूठी कूँ देख। हुये शाद भौतेच[6] एकस ते एक ॥१२९१॥
पकड हाथ वे[7] बाटमार[8] हुये। ॥१२९२॥
एकस कूँ यकस[9] जल्द हो पावमार[10]। शिताबी सेती[11] आय दरिया-किनार ॥१२९३॥
दिखाये दरिया कूँ अगूठी निछल[12]। सो दरहाल[13] सदूक आया निकल॥
जो एक बारगी पाय दोनो जनें। उचा[14] कर लेकर आये दोनो जने॥
वो सदूक ज्यो देखिये खोल्कर। जनावर अथा एक उसके भितर॥
सुटे[15] उस जानावर की मुँडी मरोड। कि चरा सदूक कूँ तोड-फोड॥
सो दरहाल पैदा हुआ यक गुबार[16]। बरसने लगा मेह[17] लोहु बेशुमार॥
पहाड मारखा सिर यक उपराल ते[18]। पड्या सो हिल्या धरती पाताल ते ॥१३००॥
खुदा इस बला ते किया ज्यो खलास। सो चलने कूँ बातें किये फिक खास[19] ॥१३०२॥
दोनो वें[20] न्हनी एक होडी[21] किये। अजायब केतक देखते झाडपाड ॥१३०६॥
छ महीने तलक दुख जफा[22] देख-देख। उसँगते अजायब[23] जँजीरे[24] बनेक ॥१३०७॥
हो माँदे बहुत एक जज़ीरे मे आय। केतेक द्योस[25] रह (के) वहाँ अम्न पाय ॥१३०९॥

(त) अच्छे दिन—

सो यक दिन निकल शाहज़ादा वहाँ। हलो[26] सैर करने लग्या जान थान ॥१३१२॥
सो आदम केतक वा पडे दृष्टितल[27]। यकायक खुशी आइ मन में उबल ॥१३१३॥
सो नजदीक जा सबकूँ कीता सलाम। ॥१३१४॥
। मिले यक ठार बैठे सो ना फाँक[28] बैं ॥१३१५॥
हुये यकजहत[29], साथ ज्यो हम-कलाम[30]। सो बोल्या उनन धोरे[31] दुख अपना तमाम ॥१३१७॥
जो यकबारगी[32] लोग उस ठार के। सुने किस्से उसके होर उमनार के ॥१३१९॥
कहे यो कि "ओ जगमगाते शमे[33]। ॥१३२०॥
है बेटी हमन राज के भाइ की। जनी[34] भाई जीती उस जाई की॥
सिरन्दीप[35] के बादशाही सँगात। है उसका जीता बाप हाली-हयात[36] ॥१३२२॥

---

१ साथ ही, २ पद्मिनी की जाति, ३ सती, ४ मौजूद, ५ इस समय, ६ बहुत ही, ७ वहीं, ८ बटोही, ९ एकके ऊपर एक, १० पाँवसे, ११ जल्दीसे, १२ निमल, १३ इसी समय, १४ उठा, १५ फेंके (पजाबी), १६ गर्द, १७ मेघ, १८ ऊपर से, १९ विशेष खयाल, २० वहीं, २१ नाव, २२ ज़ुल्म, २३ अदभुत, २४ द्वीप, २५ दिवस, २६ धीरे-धीरे, २७ दृष्टिमें, २८ फरक, २९ एक ढग, ३० सभाषण, ३१ उनके पास, ३२ एक ही बार, ३३ मोमबत्ती, ३४ जननी, ३५ सरन्दीप, सिंहलद्वीप, ३६ जिन्दा।

चचा उस न्हनी का सो एके च[1] है। वो वासित कते[2] सो नगर बीच है।।
नीका नॉव उसका (है) ताजुल्मुलूक।. . . . .।।
हमें सब हैं रैयत[3] उसीके तमाम[4]। यहाँ ते उसीका है आगे मुकाम[5] ।।
ज्यों ऐसी खबर खल्क[6] ते पाइया। सो दौड़ा सहेली कने आइया।।
कहा खोल दर-हाल[7] अहवाल उसे। खबर दे किया भौत खुशहाल उसे।।
फरागत[8] के मिल दोनों होडीपै चढ़।. . . . .।।
चले शहर वासित कदना[9] जौक सूँ[10]। लगे वाट चलने कूँ अति शौक[11] सूँ।।१३२९।।
केतक दिन पछी शहर वासित कूँ पाय।. . . . .।।१३३१।।
जो नजदीक उस शहर के खास बाग। अथा[12] सो रहे वाँ लगे देख चिराग।।
रयन जाग रब्बी[13] के फिरमान[14] सों। जो आया निकल सूर आसमान सों।।
सो उस शहर का बेबदल[15] शहरयार[16]। नेकोकार[17] ताजुल्मुलूक नामदार।।
उसी बाग में खुस्रवीदाब[18] सों। करन सैर आया बड़े लाब[19] सों।।
सो नागह[20] नजर उसकी उस ठार पर। पड़ी शाहजादे के दीदार[21] पर।।
सो नैना कुँ उसके लगा सुबक[22] भौत।. . . . .।।
बड़ा बख्तबर[23] कोइ है कर पिछान। नजिक बैसला (करके) उस 'कूँ' कह्या।।
"कहो काँ ते आया ऐ जवान तूँ। सो मँगता[24] है जाने कुँ किस ठाँव तू।।
क्यों आना हुआ यॉ तेरा बोल मुँज। जो कुछ है तेरा माजरा[25] खोल मुँज" ।।१३४०।।
. . . .। लगा बोलने हाल सैफुल्मलूक।।
कि "ऐ शाह गमगी[26] हो संसार ते। मै आया यहाॅ मिस्र के शार[27] ते ।।१३४२।।
कि लै[28] दिनते फिरता हुँ गुर्बत[29] मने। जनम सब गॅवाया हुँ शिद्दत[30] मने।।
कि होसे[31] न मुजसा दुख्यारा कहीं।. . . . .।।१३४५।।
सुन्या यो जो ताजुल्मलुक शहनवल[32]।. . . . .।।१३५२।।
कि बोल्या जबॉ खोल "सुन ऐ जवॉ। नको[33] डर कि अल्लाह है मेहरबॉ ।।१३५३।।
कि गमनाक[34] हूँ मै कि लै सालते।. . . . .।।
भतीजी मेरी एक साहेबजमाल[35]। गॅवाई गई सो हुये बारह साल।।
दुख उसका करूँ मुँजकूँ छाती नही। कि अजा नी वो कै पाई जाती नही ।।१३५६।।
मुई है कि जीती नही कुछ खबर। बड़ा दुख है यो मुँज कलेजे भितर" ।।१३५८।।

---

१. एक ही, २. कहते, ३. प्रजा, ४. सारे, ५. निवास, ६. दुनिया, ७. उसी समय, ८. छुट्टी, ९. के पास, १०. शौकसे, ११. प्रसन्नता, १२. था, १३. भगवान्, १४. हुकम, १५. अनमोल, १६. राजा, १७. सुकर्मा, १८. राजसी ठाट, १९. लाभ, २०. यकायक, २१. दर्शन, २२. हलका, २३. भाग्यशाली, २४. चाहता, २५. हालत, २६. शोकाकुल, २७. शहर, २८. कई, २९. परदेश, ३०. दुःखों, ३१. होगा, ३२. युवराज, तरुणशाह, ३३. नहीं, ३४. रंजीदा, ३५. सुंदर।

कहया "दुख न कर ऐ सुखी राज तूं । खुशी कर यो दुख छोड दे आज तूं ॥१३६१॥
कि तेरी भतीजी कुँ ल्याया हुँ मैं । कौवल ठार ते उसकुँ पाया हुँ मैं ॥
सो क्यों उसके लेखे सगा भाइ हूँ।" ॥१३६३॥
दरद दुखसो हम-वजां गुजरान वात । मिल एकसकुँ एक[1] हात म्याने[2] ले हात ॥१३६७॥
चले इश्तियाकी सों[3] दोनो जने । वही आये उस पाकदामन कनें[4] ॥१३६८॥
देख्या ज्यों[5] भतीजीकुँ आपें चचा । सो पुतली कर अँखियाँ की लेता उचा ॥
गले लाग अडडा[6] के रोने लग्या । फिदा[7] उसके उपराल होने लग्या ॥१३७०॥
दिल उसका वहुत धात[8] सो हात ले । कलेजे के टुकडे कुँ सगात ले ॥
लेकर आइया घर में ताज़ीम साथ[9]। ॥१३७२॥
दिया भेज कासिद[10] कुँ वी भाइ पास । मेहरबान उसकी जनी माइ पास ॥१३७५॥
शिलांदील[11] का बादशाह बख्तवर[12] । सुण्या अपनि वेटी केरा ज्यों खबर ॥१३७७॥
एता कुछ हुआ जो कि बोल्या न जाय । ॥
लगी झडने अवर ते रहमत[13] कि फूह । जलनहार सीने कुँ ठडक हुई ॥१३७५॥

(थ) नये और पुराने मित्रो का समागम—

भया[14] वस्ल का बाव चौवेर ते[15] । सुग्या बाग उनका खिल्या सीरते[16] ॥१३८०॥
हुआ फर्ह रोज़ी[17] जनी माइकूं । तमाम उसके भाना[18] कुं और भाइ कूं ॥१३८१॥
अज़ीज़[19] अजमद अपनी वेटी के तें । वुला भेजनेका किया फिक्र वें ॥
वुला भेजने उस उतम जाइ[20] कूं । किया मुस्तइद[21] उसकेरे भाइ कूं ॥१३८३॥
जो मुश्ताक[22] हो भाइ ल्याने चला । सगी भैन केतें[23] बुलाने चला ॥
चचा के नगर वीच ज्यों आइया । सो देख उस चचा जीव कर पाइया ॥१३८७॥
हज़ार आरजू साथ[24] दोनों मिले । खुशी के कल्यों हर तरफते खिले ॥
बोल्या घरकुँ ल्या सो मिले माइ भान । यकस कुँ यकस[25] दे ल्यिे जीवदान ॥
जो कुछ अथा[26] अपाने दिलमने[27] । सुटे काड[28] सीन्यां मे तें तिलमने[29] ॥१३९०॥
लग्या दिलकुँ हम भान हम भाइ वी । चौफिर कर[30] जने पेटते भाइ की ॥
गम[31] एक सातरा ला[32] इश्रत[33] सँगात । दुआ ले चचा होर चचानी के हात ॥
निकल वाते सगात ले भान कूं[34] । चल्या मिलके सैफुलमलूक जान[35] सू ॥

---

१ एकको एक, २ हाथमें, ३ उत्कंठा से, ४ सतीके पास, ५ ज्यों ही, ६ अररा, ७ नौछावर, ८ भांतिसे, ९ सम्मान-सहित, १० दूत, ११ सिंहलद्वीप, १२ भाग्यवान्, १३ दया, १४ हुआ (अव), १५ चारो तरफसे, १६ सिरसे, १७ सुखकी रोजी, १८ बहनें, १९ प्रिय, २० इज्जतदार, २१ तैयार, २२ इच्छुक, २३ बहनको, २४ अभिलाषाओंके साथ, २५ एकको एक, २६. था, २७ दिलमें, २८ निकाल फेंका, २९ पलमें, ३० वहन, ३१ चारो ओरसे, ३२ रज, ३३ एक क्षणको, ३४ आनंद, ३५ बहनको, ३६ प्रिय।

पंथे पंथ तीनों कँथे खोलते । गमाते वकत हा किस्से बोलते ।।
सिरां दीप के आये ज्यों वो नज़ीक । उमस पा जनी[1] बाप खुश हो अधीक ।।
निकल घरते लाख इंतिजारी सेती[2] । सो दौड़्या वहाँ बेक़रारी सेती[3] ।।
जिगरगोशा[4] कूँ अपने ज्यों पाइया । छतर कर अपस उसके सिर छाइया ।।
सीने सों लिया उस परीचेह्र[5] कूँ । उने उन लगाया मेहर पर मेहर[6] कूँ ।।
ज्यों आया गया सो रतन हातमें । नवा जीव आया त्यो हुआ जात मे ।।१४००।।
वड़े दबदवे साथ[7] ल्याया उसे । सो फुलनीर[8] सों मुख धुलाया उसे ।।
मिल्या दिलसों सैफुलमलूक जान सों । हुआ आसमाँ उस जमीं भान[9] कूँ ।।१४०१।।

(द) बिछड़ा मित्र मिला--

कि यक द्योस सैफुलमलूक शह-सवार[10] । निकल आइया भार[11] खेलन शिकार ।।१४०७।।
यकायक्क बाजारमे यक जवान । नजरतल[12] पड़्या जार[13] होर नातवाँ ।।१४०८।।
किया याद साअद कुँ उस देखकर । अँझू[14] लाइया दुक्खके नैनभर ।।१४१०।।
अपसमें अपे भाइया[15] सर्द उस । किया अपने मन मे गम[16] बेकयास[17] ।।१४११।।
कह्या अपने लोगों कुँ जा उसकुँ लाव । अपे आपे लग घर लेजा बेसलाव ।।
उसी धात जा उस बुला लाइये । लेजा एक जागे पे बसलाइये ।।१४१३।।
कि ज्यों उस मुबारक सवारी सों फिर[18] । ज्यों आया शिताबी[19] सों अपने मँदिर ।।
किया याद आते च उस जान[20] कूँ । बोलाया नजीक उस परेशान कूँ ।।
शफ़क्क़त[21] जो उसकी गरीबीपैआइ । कह्या "कौन है तूँ सो मुंज बोल भाइ ।।
सो वै वो परेशान जल आह भार । उठ्या बोल .... ।।
"कहूँ अगर मै मेरे दर्द कूँ । तो ताकत न रहसे[22] किसी मर्द कूँ ।।
भर्‍या है सिना पूर उस दुख सँगात । .... ।।
मेरा यार यक शाहजादा अथा[23] । वो मिलता तो मुंज दुख न होता एता" ।।१४२०।।
जो अपनी गरीबी वो बोल्या । सो वो शाहजादा उतम नेक नाम ।।१४३०।।
.... । गले ला उसे आँख मे आब[24] ल्या ।।
कह्या यों कि "ऐ यार अब छोड़ दुख । तेरा यार सो मै हूँ सैफुलमलूक' ।।१४३२।।
मिले देख यक जीव के दोइ यार । हुआ खुश सिरांदीप का शहरयार ।।१४३७।।

---

१. जनक, २. प्रतीक्षा मे, ३. अधीरता मे, ४. कलेजे के टुकड़े, ५. अप्सरा-मुखी, ६. दया, मुहब्बत, ७. सम्मान के साथ, ८. गुलाबजल, ९. बहन, १०. असवार, ११. बाहर, १२. दृष्टि में, १३. दुःखी, १४. आँसू (पं०), १५. डाला (पं०), १६. दुःख, १७. अपरिमित, १८. फिर, १९. जल्दी, २०. प्यारी, २१. मुहब्बत, २२. रहेगा (पं०), २३. था, २४. पानी।

(घ) प्रियतमा का दर्शन——

सआदत[1] के ज्यो द्योम अगे[2] आय । बखत[3] रोशनाई[4] सो झलकाय ॥१४६५॥
सुलक्सनवती धन वदीयुल्जमाल । यकायक एक दिन गियाले खियाल[5] ॥१४६६॥
सिरादीप के राज के घर कुँ आई । सो गुम हुई शाहज़ादी कुँ पाइ १ ॥१४६८॥
सगी माइ[6] कर जानती थी अवल[7] । वडी कर उसे मानती थी अवल ॥१४६९॥
कही "ऐ सगातिन ऐते द्योस तूं । अथी[8] किस वजा[9] होर किस भस सूं"॥ १४७१॥
सो वो शाहज़ादी उठी बोल यों । ॥१४७४॥
कि "ऐ मोहिनी मन की साहेवजमाल[10] । जो तेरा मुहब्बत है मुजगो कमाल[11] ॥
सदा यो मुहब्बत सो कायम अछो । झमकता तेरा हुस्न[12] दायम[13] अछो[14] ॥
जो मैं हात में उस बला के हुलग[15] । गिरिफ्तार होकर जो थी आज लग ॥
यकायक उस ठार पनदगार[16] । ॥
। दिया भेज एक आदमीज़ाद[17] कूं ॥
सो आ भार[18] काड्या मुंज उस ठार ते । हूं शर्मिंदो[19] मैं उसके उपकारते" ॥१४८०॥
सुन इस वात कूं कइ[20] वदीयुल्जमाल । कि 'आदम कुँ आना था या महाल[21] ॥१४८३॥
सो किस घात[22] उस ठार वो आइया । न थी वाट सो वाट क्यो पाइया" ॥१४८४॥
कही शाहज़ादी कि "ए मोहिनी । वडी बात है यो नहीं कुछ न्हनी ॥१४८६॥
दोनो मिलके चल एक गुलशन[23] में जांय । दो वातां करें वक्त अपना गमांय" ॥१४८८॥

(न) उद्यान-वर्णन—

कर इस घात सेती खबरदार उसे । ले जाने मंगी[24] बीच गुलज़ार[25] उसे ॥१४९०॥
सो चमने चमन[26] गश्त[27] करने लग्यां । कल्यां चून-चून गोद भरो लग्या ॥१४९४॥
कहूँ वाके चमना कुँ, मैं क्यो चमन । कि था हर चमन साफ यकायक गगन ॥
भर अमृत सा चमनो के म्याने[28] तमाम । जडत[29] के अथे[30] होज़खाने[31] तमाम ॥
वन वन बिरग[32] लहलहाते अथे । ॥
पवन झूले खा फूल की डाल हिल । सो पडते अथे फूल हर झाड तल ॥
मगर[33] आ अंबर के चितारे तमाम[34] । चमन में बिछाये थे तारे तमाम ॥

———

१ सुकर्म, २ आगे, ३ भाग्य, ४ प्रकाश, ५ विचार, ६ बहन, ७ प्रथम, ८ थी, ९ ढंग, १० सुंदरी, ११ पूर्ण, १२ सौन्दर्य, १३ सदा, १४ रहो, १५ नजदीक, १६ पालक (भगवान्), १७ मानव, १८ बाहर, १९ लज्जित, २० कहां, २१ संभव, २२ भाँति, २३ फुलवाड़ी, २४ चाहा, २५ बाग, २६ चमनहो, २७ टहलना, २८ बागों में, २९ जटित, ३० थे, ३१ कुंडगृह, ३२ वृक्ष, ३३ मानो ३४ सारे।

अथे बुंद शबनम[1] के यो पात मे । रतन खास[2] खूबाँ[3] के ज्यों हात में ।।१५००।।
. . . . । पँखी गुल उचाते[4] थे डाल-डाल ।।१५०१।।
वो आशिक सों माशूक[5] के ध्यान सों । मता हो अपस में खुशल्हान[6] सो ।।
जम्या ख्याल इस धात[7] गाता अथा[8] । कि हर रुख हर साल आता अथा ।।
पँखी[9] गुम[10] हुये थे वो अल्हान[11] सुन । बहता नीर बहता न था तान सुन ।।
सुनी वो गला[12] ज्यों बदीयुल्जमाल । गली[13] उस गले के ऊपर रख खियाल ।।
कहीं या यों किसका है नादिर[14] गला । किया है मेरी रुह कूँ मुब्तला ।।
गला यो न होय कुछ बला[15] है गँभीर । कि पानी किया गाल[16] मेरा सरीर" ।। १०७ ।।
कही शाहजादी कि माँ तब उसे । "यो नादिर उस किसी का दिसै ।।
जिनै मेरी बेटी कुँ ल्याया अहे । दे जिवदान सिरते निपजाया[17] अहे ।।१५१०।।
जो देखेगी तू उसकुँ दिखलाउँगी । नजदीक उसके डेरे के ले जाउँगी" ।।
सो वैं आसरे ते वो चंदरबदन । देखन आइ सैफुलमलूक के कदन[18] ।।
जो देखी निझा[19] खूब उसका जमाल । दिवानी हो दरहाल[20] हुई वै निढाल ।।
पड़ी उसके इश्क के दाम में । . . . . ।।
दिल उसका लग्या तिलमिला तनमने । किया ठार इश्क उसके रे मनमेने ।।
लगा जीव बातिन[21] में उस साथ वै[22] । चली सैर करती हलों[23] होर कै ।।१५१६।।
ज्यों उस साथ वह चुलबुली दिन लगाइ । सो वो शाहजादी उसी वक्त पाइ ।।१५१९।।
बुला कै नजीक उस परीजाद[24] कूँ । . . . . ।।
कही "याद है यक हिकायत[25] मुझे । सुनेगी अगर तूँ तो करेगी तुजे ।।१५२१।।
सुनी हूँ कि कोइ मिस्र में बेनजीर[26] । है आसिम गुनी नवलशह[27] गंभीर ।।
सबी कुछ खुदा उसकुँ बख्शा अथा[28] । नजर कर जो फ़र्जंद[29] वक्त पर दिया ।।१५२५ ।।
. . . . । उसे नांव सैफुलमलूक कर रखा ।।
जो था उस कने एक दाना वजीर । हुआ उसकुं फ़र्जंद एक बेनजीर।।
वो साअद कर उसका रख्या नॉव सो । . . . . ।।
केतक ध्योस कुँ वो जो स्याने हुये । हरेक इल्म[30] में खूब दाने[31] हुये ।।
सो दोनों पे वो खुस्रवे[32] गुननिधान । . . . . ।।१५३०।।
बोला भेज खलअत[33] दे जर्बफ्त[34] एक । दिया सो अथी[35] सूरत एक उसमे नेक ।।

---

१. ओस, २. विशेष, ३. सुन्दरियों, ४. उठाते, ५. प्रिया, ६. सुस्वर, ७. भाँति, ८. था, ९. पक्षी, १०. बेसुध, ११. राग, १२. स्वर, कण्ठ, १३. पिघल गई, १४. दुर्लभ, १५. आफत, १६. गलाकर, १७. उपजाया, १८. के पास, १९. ध्यान (निध्यान) कर, २०. तत्काल २१. बाहर, २२. वहीं, २३. धीरे-धीरे, २४. अप्सरा, २५. कहानी, किस्सा, २६. अनुपम, २७. नया शाह, २८. था, २९ पुत्र, ३० विद्या, ३१ जानकार, ३२. राजा, ३३. पोशाक, ३४. जरदोजी, ३५. थी।

कि वो ऐन[1] तेरी च[2] सूरत अथी । ॥१५३२॥
देखत शाहजादा यो सूरत वही । सो आशिक हुआ ॥१५३३॥
जुदा[3] होयकर अपने घरबारते । निपट तोड ले जीव[4] ससार ते ॥
अथे होर साअद सीना सख्त[5] कर । विरहसो कलेजे कूँ सदलख्त[6] कर ॥
जहा दर जहाँ[7] फीरता फीरता । दर्‍या वीच पड डूबता तीरता ॥
न चँदना समझता न सूरज की आँच । अधिक वेखवर हो वलायाँ[8] ते वाँच ॥
तुजे ढूँड लेता कहाँ ते कहाँ । हलाकी[9] सेती आइया है यहाँ ॥१५३९॥
वो आशिक सचा है तेरा झूँठ नँ । जरा उसके इश्क में तूट[10] नँ ॥१५४१॥
जिने जिव दिया उस इलाही[11] की सो । लग्या जीव बाँध्या है वो दिल तु सों[12] ॥१५४२॥
दिखा होर सनद[13] मूल यकवार उसे । ॥१५४५॥
मेरा होर मेरा माइ का रख वज़्ँ[14] । . . . ॥
यही अज मेरा वडा आज है । अगर नँ तो मुजकूँ वडा लाज है" ॥
वा चदरवदन गुनभरी ज्ञान की । वो निमल रतन हुस्न[15] के खान की ॥
खुश इस धात[16] सेती उठी वोलकर । दिये जाव ऐसी जवाँ खोल कर ॥
कि ऐ भागवन्ती सँगातिन मेरी । मेहरवान दुख-सुख की साथिन मेरी ॥१५५०॥
जो तू मुज पे इज्हार[17] यो राज़[18] की । सरअफराज़[19] की मुज सरफराज़ की ॥
वले में परी होर वो है बशर[20] । ॥
यकायक यो अतर सुट[21] काड क्यो । पडूँ भार[22] पदकुँ में फाड क्यो ॥
अगर यो सुनेंगे मेरे माइ-वाप । गलेंगे हयासों[23] वो आपसमे आप ॥
मेरा हाल रहसे न कुछ तारते । गुज़रसे[24] न वो मेरे आज़ार[25] ते ॥
दूजे वार कुँ भेज देसे न भी । मेरा नाँव रोमो लेयेँ न भी ॥
नको[26] हा तुँ इस वात के पैमने[27] । कि हरगिज न आँसू[28] तरे क्ये[29] मने ॥
वो जाहिर तो यो एतराजी अथी । वले[31] दिल सो वात[32] में राजी[33] अथी ॥
समज अक्ल सो खूब इसका खियाल । सो माँ होर वेटी लग फिर दुवाल[34] ॥
कि "ऐ शहपरी, काड सुट दगदगा । नको अपने आशिक कुँ दे तूँ दगा ॥१५६०॥
हमन बाज[35] कोई तुजकुँ हमराज[36] नँ । न करसें हमें फाश[37] यो राज कँ[38] ॥१५६१॥
ले जायेंगी तुज ऐसे खलवत[39] के ठार । जो कोई न अछे वाज पवदगार[40] ॥
देखा यक नज़र[41] टुक दीदार[42] उसे । विना धार है वो दे आधार उसे" ॥

---

१ ठीक, २ तेरी ही, ३ अलग, ४ मन, ५ कडा, ६ सौ टुकडा, ७ देश देश, ८ आफतें, ९ नाश, १० टूट (मरा०), ११ भगवान्, १२ तुझसे १३ प्रमाण, १४ तारीफ, १५ सौन्दर्य, १६ भाति, १७ प्रकट, १८ रहस्य, १९ भाग्यशाली, २० आदमी, २१ फेंकू, २२ बाहर, २३ लज्जा से, २४ गुजरेगी, २५ दुख से, २६ नहीं, २७ पीछे, २८ आऊँगा, २९ कहे, ३० विरोधी, ३१ लेकिन, ३२ भीतर, ३३ सहमत, ३४ पीछे, ३५ हमारे विना, ३६ रहस्य जाननेवाला, ३७ खोल, ३८ कहीं, ३९ एकान्त, ४०. पालक, ४१ एक दृष्टि, ४२ दर्शन ।

बहरहाल[1] फुसला के राज़ी किया । लगा इश्क रीते[2] ताज़ी किया ॥१५६६॥
कि ज्यों वो छबीली चंचल गुलअजार[3] । करार[4] आपना छोड हुई बेक़रार ॥
उताली[5] हो आशिक़के दीदार की । सुटी[6] लाज हुई यारनी यार की ॥
यकेली नजीक जा आधी रात कूँ । उचा[7] उस सँगातिन उतमजात कूँ ॥१५७०॥
कही यों कि मैं तो तेरे बोल पर । जो थी गाँठ दिल में सुटी खोलकर ॥
गँवाऊँ ऐते दिनकी क्यों आशनाई । कि बजगी[8] है आलम[9] मैं सब यो शहनाई[10] ॥१५७२॥
जो देखूँ उसे यकनजर आज मैं । कि हूँ उसके दर्शन की मुहताज[11] में ॥१५७४॥
न जाने नमन[12] कोई मिल जायें चल । उसे दूरते देख फिर आँय चल ॥
कि तूँ होश टाली[13] है जबते मुजे । नहीं ज़र्रा[14] आराम तबते मुजे ॥
यो गत क्या छिपाऊँ तुज अगे ऐताल[15] । ... ... ॥
न जानूँ उसे किस घडी मैं निझाइ[16] । नहीं नींद अँखियाँ कु तेरी दुहाइ ॥
तुसों[17] मिलके मै गर्चे[18] बैठी हूँ याँ । बले[19] दिल मेरा सैर करता है वाँ" ॥
लगी उसके दुंबाल पड हात पाँव । चली ले उसे ढूँढती ठाँ-ठाँव ॥१५८०॥
जो आशिक़ के डेरे के नज़्दीक आइ । खबर हो या ना त्यौ उसे खुश[20] निझाइ ॥

(प) पुरुष-सौन्दर्य--

सो बैठा देखी मस्त उस ठार उसे । चडया है मदन का सो खुल्हार[21] उसे ॥
तजल्ला[22] उपर मुख बरसता है खुश । लियाँ अंखियाँ नाजो[23] हँसता है खुश ॥
लगे है शमे[24] चौदन[25] नैदके[26] । झमकते[27] हे रुखसारे[28] ज्यों सूर के ॥
अपन मनमें झलता[29] अथा मस्त ख्याल । सो ढलकी है पगडी खुल्या है जमाल[30] ॥
खुले है सफा[31] के किवाडा तमाम । ... ... ॥
खुले है रँगा रंग चमन आसपास । महकता है महकात वाँ बेकयास[32] ॥
डुब्या है सबी बाग खुश-बास[33] मे । सो दौड़्या है महकार आकास में ॥१५८८॥
नजर जो पया यो तमाशा महाल । सो उसे चुलबुली का हुआ होर ख्याल ॥
देखत यो तमाशा[34] बदीयुल्जमाल । हो हैरा अपसकूँ न सकसी[35] संभाल ॥१५९०॥
मती[36] होके वाँ थारके वासते । पडी थी जो फूलों की ज्यों रासते ॥
न थी कुछ खबर उसके तन की उसे । जमी से जगी उस चमन की उसे ॥

---

१. हर तरह से, २. फिर से, ३. फुलवाड़ी, ४. धीरज, ५. उतावली, ६. फेंका (पंजाबी), ७. उठा, ८. बज गई, ९. दुनिया, १०. शहनाई, ११. इच्छुक, १२. जैसा, १३. हटाया, १४. जरा, थोड़ा, १५. इस समय, १६. ध्यान किया, १७. तुझसे, १८. यद्यपि, १९. लेकिन, २०. अच्छी तरह, २१. गर्मी, २२. प्रकाश, २३. नाज से, २४. मोमबत्तियाँ, २५. चारों तरफ, २६. प्रकाश के, २७. चमकते, २८. कपोल, २९. चमकता, ३०. सौन्दर्य, ३१. स्वच्छता, ३२. अपरिमित, ३३. सुगंधित, ३४. दृश्य, ३५. सकेगी (पंजाबी), ३६. मस्त।

खडी थी सो वो सर्द भरकर[1] उसास । पडी जासमन में हो फूला की रास ।।
जो सैफुलमलूक आशिके बख्तवर[2] । मदन मद की मस्ती ते पाया खबर[3] ।।
यकायक सेहरगाह[4] बेइख्तियार[5] । दरुनीतें[6] ढँसे के निकल्या बहार[7] ।।

(फ) स्त्री सौंदर्य—

सुनी देखकर उसकूँ आशिक गभीर । लगा रोवने उसपे चौफेर फीर ।।१६१८।।
दो दीदाँ[8] के अँझुआँ[9] सा मश्गूल[10] कर । छिनकने[11] लग्या शबनम्[12] उस फूलपर ।।१६२०।।
जो वो शहपरी बास आदम की पाइ । यकायक उठी नाज सा दी जमाइ[13] ।।
निझाँ देखती है जो अँखियाँ पसार । नजीक आके बैठा है वह दोस्तदार[14] ।।
धुंगट में छुपा मुँह वही नाज सों । हला[15] साल अधर नम आवाज सों ।।
कही "या तो वाजिब[16] नही है तुजे । जो नजदीक आकर निझावे[17] मुझे ।।
मैं औरत शरम की हूँ होर मद तूं । न मैं तुजकू जानूँ न मुजकू तू ।।
निपज[18] में तू आदम है होर मै परी । नही मुहरम[19] आदमसेती कौं[20] परी ।।
सबब क्या अथा आने इस रात कू । कना[21] मुजकूँ तै खोल यो बात तूँ ।।
वफादार[22] ओ आशिके नामदार[23] । जो माशूक[24] ते पाइयाँ यो अधार ।।
सो खुश बेनिहायत[25] हो पाया उमस[26] । रगो रग में दौड्या वा रग रस ।।
जबा खोल बाताँ लग्या बोलने । रतन जीव के राज़[27] के रोलने ।।१६३०।।
कि "ऐ बेबदल[28] मोहिनी जग-उजाल । जो है नाँव तेरा बदी युल्जमाल ।।
तेरे नाँव परते हुँ बलिहाल में । सुर्द्[29] जीव कूँ तुजपर वार[30] वार मैं ।।
नजर कर मेरी घेर[31] जो अमन[32] पाउँ । देखूँ दीद पर दीद टुक दुख गँवाउँ ।।
कि धरता हुँ सीने मे दुख कड जमी[33] । हुआ हुँ परित आग में जल मुड[34] जमी ।।
एता कुछ भर्‍या है मेरे मन मे मोज[35] । जो सुलगे असू लाख भडकेहर रोज़ ।।
अँझू मुंज नयनते जो ढलते अहे । तेरे इश्क के वाट[36] उबलते अहे ।।
तेरे ल्यें च फिरता हुँ मैं रात-देश[37] । लिये हूँ तरे ल्ये च वित्याग भेस[38] ।।
यकी[39] जान में आशिकें[40] पाक हूँ । तरे इश्क का पाक बबाक हूँ ।।
तेरे ल्ये च एता रज देख्या हुँ मैं । जो देख्या नही कोई दुनियामे कौं[41] ।।
न यो कुछ आया है मुज घोर तें[42] । कि नाजिल हुआ है या तकदीर ने ।।१६४०।।

---

१ पा (डाल) कर, २ भाग्यवान, ३ होश, ४ प्रात, ५ बेबस, ६ भीतर से, ७ बाहर, ८ आँखें, ९ आँसू, १० लगन, ११ छिडकने, १२ ओस, १३ जम्हाई, १४ प्रेमी, १५ धीरे-से, १६ उचित, १७ ध्यान करे, १८ उपज, १९ निहित, २० कही, २१ कहना, २२ भक्त, २३ यशस्वी, २४ प्रियतमा, २५ अत्यन्त, २६ उत्साह, २७ रहस्य, २८ अनमोल, २९. फॅक् (पजाबी), ३० नौछावर, ३१ मेरी ओर, ३२ शांति, ३३. कडी भूमि, ३४ रेत की जमीन, ३५ जलन, दर्द, ३६ रास्ता, ३७ रात्रि दिवस, ३८ बुरा भेस, ३९ सच्ची, ४०. सच्चा प्रेम, ४१ कहीं, ४२ मेरी ओर से।

तेरे वस्ल[1] का देख मुंज मनकूँ आस । दिया है खुदा भेज मुज तेरे पास ।।
नको[2] देख अपसते बेगाना[3] मुँजे । भला है जो अपना कवाना[4] मुँजे" ।।
वचन बोल ओ आशिक इस धात[5] सो । हुआ उसपे कुर्बान सब जात[6] सों ।।
चतुर चलबली धन **बदीयुल्जमाल** । छुपा मन में रख यो मुहब्बत कमाल[7] ।।
उबलते पेरेम कूँ सो मनमे जिरो[8] । बहाने सैती यों उठी बोव वो ।।
कि "ऐ शाहजादे गुनी बख्तवर[9] । अपसमन के सूरति[10] पर रख नजर ।।१६४६।।
यकायक तेरी बात कूँ क्यों पत्याऊँ । यकायक तुज सात क्यों मन लगाउँ ।।१६४९।।
फिरया है बहुत मुल्क तूँ तूट[11] कर । मुबादा[12] तेरा दिल अछै[13] झूट पर ।।१६५०।।
तु जा याँ ते संभाल ले आपकूँ । कि डरती हूँ मै अपने माँ-बाप कूँ ।।
अगर कोई देखेगे याँ मेरे लोग । तो आजार अँपडाँय[14] दोनों कुँ ठोक" ।।१६५२।।
लगा रोने **सैफुलमलुक** सुन यो बात । निकल तनते गइ त्यों हुआ उस हयात[15] ।।
गोता खाइया वै मुँडी ढाल पर । सुट्या[16] विरह अगन सो अपस जाल कर ।।१६५७।।
हुआ सिरते[17] संगीत[18] दुख उसपे यों । रखे पाँड[19] कूँ लाके गाड़ी पे ज्यों ।।
रह्या जीव होटाँ मने[20] आ उसे । हो बेसुध अक़ल सिर चढ़ी जा उसे ।।
देख ये हाल मोहन **बदीयुल्जमाल** । हो मन मे मुसल्लम्[21] परेशानहाल[22] ।।१६६०।।
पिछानी कि यो कुछ तो बाजी[23] नही । हक़ीक़ी[24] पिरीत है मजाजी[25] नही ।।
उचाई[26] नज़िक जा उसे हात सो । गले लागती जिवके सूरति[27] सों ।।
देती लाख बजा[28] साथ जिवदान उसे । सो तहकीक़ कर पाई ईमाँ उसे ।।
मुहब्बत जो जागह किया दिलमने[29] । रखी पाँव यारी[30] के मजिलमने ।।
पलूँ[31] साथ अँजु[32] उसके पोंछन लगी । भरोसा दे धीरक[33] सों बोलन लगी ।।
कि "ऐ मेरे मन के सँगाती एताल[34] । न कर दुख तूँ होर नको हो निढाल ।।
तुँ आशिक़ मेरा कर सची पाई मै । . . . . ।।
बले[35] क्या करूँ नै मुजे इख्तियार[36] । परयाँ मुँज मुवक्कल[37] है कइ लख हजार ।।
न तदबीर है कुछ जो हीला[38] करूँ । यकायक तुसुं क्यों वसीला[39] करूँ ।।
मेरी एक दादी सो है एक ठाँव । **शहरवान्** उसका अहै नेक नाँव ।।१६७०।।
जो सीमीपटन शहर है एक गँभीर । वह करती है वाँ खुस्रवी[40] बेनजीर[41] ।।
है सारों कुँ उसका बड़ा एतबार । कि है सब क़बीले[42] की वह नामदार[43] ।।

---

१. मिलन, २. नहीं, ३. पराया, ४. कहलाना, ५. भाँति, ६. सब तरह, ७. पूर्ण प्रेम, ८. छिपा, ९. भाग्यवान्, १०. रुचि, ११. टूट, १२. शायद, १३. रहै, १४. दुख पहुँचेगा, १५. जीवन, १६. फेंका, १७. फिरते, १८. कठोर, १९. पहाड़, २०. ओठों में, २१. पूर्ण, २२. दुःखी, २३. खेल, २४. सच्ची, २५. बाहरी, २६. उठाई, २७. रुचि, २८. सच्चा, २९. दिल में, ३०. दोस्ती, ३१. अंचल, ३२. आंसू, ३३. धीरज, ३४. इस समय, ३५. लेकिन, ३६. अधिकार, ३७. मुंजाँ पर नियुक्त, ३८. बहाना, ३९, सम्बन्ध, ४०. राजसी, ४१. अनुपम, ४२. जन, जाति, ४३. प्रसिद्ध ।

बले जाँ तलब शहर की बाट है। वहाँ लग अगिन का च[1] एक घाट है॥१६७३॥
वही त्यों करेंगा जो ऐ जान[2] तू। त्यो है लाख मुज पै एहसान[3] तूँ॥
भला है जो वाँ लग[4] अपे जाय तूँ। ॥
कि वो गुनभरी बख्तवर[5] नेकनाम। करेगी तेरा काम हर वयो[6] तमाम॥१६७९॥
कि धरती है ओ दोस्त इसान कूँ। करेंगी बहुत प्यार तुज जान कूँ॥१६८०॥
मेरी माय होर बाप कू मग ले। मलायक करेंगी मुजे होर तुजे॥१६८२॥
बले[7] तुज यकेला केरा नै है काम। ॥
सलामत[8] मा अँपडाये तुज मीत कूँ। देऊँगी मँगात एक अफरीत[9] कूँ॥१६८६॥
तेरे तै वो शहज़ादी होर उसकी माइ। ॥
केते वज़ा[10] सो कर सिफारिश तेरा। पडे ये गले अन्त[11] लेने मेरा॥१६९०॥
अभी तू नको[12] बोल कुछ उनके घेर।" ॥१६९२॥
"कह्या शाहज़ादा मेरा क्या मजाल। जा ठेलू[13] तेरी बात ऐ जग-उजाल"॥१६९३॥
वचन घट[14] करे या हुये एक दिल। सुवा लग गमे बाग में दोइ मिल॥१६९५॥
उजाला हुआ जग में ज्यो सुवह का। रहे लेट अपनहार अजान जा॥१६९५॥
अलामत[15] सो नेक अख्तरी का ज़हूर[16]। किया ज्यो जहाँ में जहाँ ताब सूर[17]॥
सो उसकी सँगातिन सो मिल उसकी माइ। भितर उस परीज़ाद[18] के डेरे आइ॥१६९७॥
कही शत[19] कलकी वजा ल्यावना। तेरा दर्स उस आज[20] दिखलावना॥१७०१॥
नको ठेल दे तूँ मेरी बात एताल। ॥१७०२॥
तूँ आज उस दुखी प्यारकूँ याद कर। दिखे दस तेरा उसे शाद[21] कर॥१७०५॥
ज्यो इस बात परते छुटी गुदगुली[22]। सो राजी हुई वह चँचल चुलबुली॥
मुहब्बत मने[23] देख उसका खियाल। कबूली[24] वो कये[25] त्यो बदीयुज्जमाल॥१७१०॥
जमाकर खुशी[26] मनके सारात[27] की। किये गर्म मजलिस यकस उस रात की॥
बदूरत मो ज्यो आरसी पाक[28] हो। ॥
सो चारो मिले खुश होवी एक ठार। सो बैठे लताफत[29] सो मज्लिस सँवार॥१७१३॥

(ब) रात्रि-वर्णन—

डुब्या सूर महताब आया निकल। बरमने लग्या साफ चँदना निछल[30]॥१७१५॥
सितारे झमकने[31] लगे ठार-ठार। छुपा जाके जुल्मात में अंधकार[32]॥
उजाला हुआ साफ यो चौकदन[33]। ज़मी कू मगर[34] लाये थे[35] घिस चँदन॥१६१७॥

---

१ आज का ही, २ प्यारे, ३ उपकार, ४ वहाँ तक, ५ भाग्यवान्, ६ हर तरह, जैसे भी हो वैसे, ७ लेकिन, ८ खैरियत, ९ भूत, १० कार, ११ भेद, १२ नहीं, १३ टालूँ, १४ कम, १५ चिह्न, १६ सौभाग्य का प्रकाश, १७ जगत्-प्रकाश, १८ परियाँ, १९ बात, २० अब, २१ प्रसन्न, २२ गुदगुदी, २३ प्रेम में, २४ स्वीकार, २५ कहे, २६ रुचि, २७ मेल, २८ शुद्ध, २९ मंजुलता, ३० चाँद, ३१ निर्मल, ३२ चमकने, ३३ अँधेरा, ३४ चारों ओर, ३५ मानो, ३६ लगाये थे।

हरेक ठार पर शमा[1] की रोशनाई । जकाजोत[2] सो चौकधन[3] जगमगाइ ॥१७१९॥
मँगाये निछल मस्त रंगी[4] शराब । सुराया भरे पाच क्यों बे हिसाब ॥१७२०॥
फिराने लगे प्याले याकूत के । सुटे[5] म्याने[6] बादाम[7] ल्या कूत के ॥
वो गुणवंत शाहजादि होर उसकी माइ । अधी रात लग वक्त अपना गमाइ ॥
रजा[8] ले चल्या वाँ ते अपने मँदिर । हुई यों खुशी ज्यास्त दोनों कुँ फिर ॥
असर[9] मंद मनमे हुये मस्त ख्याल । वो सैफुलमलूक होर बदीयुज्जमाल ॥
जो देखन लगे खूब एकसकूँ एक । अँख्याँ में रहे खोब एकसकुँ एक ॥
कि थे एक ते एक साहेब-जमाल[10] । मती[11] हो मुहब्बत के ओ जग-उजाल ॥
हलौ हात मे होत लेने लगे । चुमै लग मुहब्बत सों देने लगे ॥१७२७॥
मदन दो तरफते जो आया उबल । हुये महूव आपसमे आपे पिघल ॥
हुये सुध गँवा बेखबर दो जने । सुते मिलके वै यक बिछौने मने ॥
वलेकिन[12] उनन मे न था कुच खियाल[13] । कि थे पाकदामन[14] में दोनों कमाल[15] ॥१७३०॥
सुवा जो रयन मे ते पैदा हुआ । जो मशरिक[16] वन्दन से ते हवेदा[17] हुआ ॥१७३३॥
छुपा चाँद जा सूरकी ताब ते । यकायक उठे जाग वो ख्वाब[18] ते ॥
चले अपने खेमाँ मे झट फांक हो । .. . . ॥१७३५॥

(भ) अन्तिम संकट—

जो उस वावरे की परीजाद कूँ । लग्या बाव उस साद् आजाद[19] कूँ ॥१७४२॥
हुई ज्यों कि लैला सो इस लाल की । भँवर होके उस फूल की डाल की ॥१७४४॥
दिवानी हुई सुध[20] सुटी[21] जातकी । लगी खूब सोहबत असर रात की ॥१७४७॥
जो पाई खबर फिर केतक बार कूँ । ... ... ॥
सगी[22] अपनी दादी कुँ तब याद कर । सखी[23] नामा[24] ले नामा बुनियाद[25] कर ॥
करी खुश इबारत[26] सों तहरीर[27] यों । लिखी इश्क़ ताजा[28] की तक़रीर[29] यों ॥१७५०॥
अदब की रविश सों सदा वेहिसाब । लिखी अपने हाताँ सो[30] दादी कुँ जाब[31] ॥१७५॥
बुलाकर कही एक अफरीत[32] कूँ । मेरा मीत[33] है एक इस मीत कूँ ॥
लेजा काड सीमीं पटन लग शिताब[34] । मिला मेरी दादी सों होर ल्या जवाब ॥१७५५॥
वो फरमाइ[35] थी त्यों च अफरीत[36] सो । मलिकजादे कन आइया दौ ड़वो ॥१७६३॥
दुआ मँग ले अफ़रीत की पीठ पर । चड़्या जो कह्या ओ अँख्याँ मोंच[37] कर ॥१७६५॥

---

१. मोमबत्ती, २. अति प्रकाशमान, ३. चारों ओर, ४. लाल, ५. फेंके, ६. बीच, ७. भोजन, ८. सहमति, ९. प्रभाव, १०. सुन्दर, ११. मुग्ध, १२. किन्तु, १३. विचार, १४. सदाचार, १५. पूर्ण, १६. पूर्व की ओर, १७. प्रकट, १८. स्वप्न, १९. स्वतन्त्र, २०. स्मरण, २१. फेंकी, २२. अपनी, २३. तरुणी, २४. पत्र, २५. कारण, २६. सुवाच्य, २७. लेख, २८. नया, २९. कथन, ३०. अपनी ओर से, ३१. पंक्ति, ३२. जादू, ३३. मुहब्बत, ३४. जल्दी, ३५. हुकुम दिया, ३६. भूत, ३७. मीच।

उलँग आग का मर्म समदूर घाट । पकड रास्त सीमों[1] पटन घेर बाट ॥१७६८॥
उतारचा जो उस शहर में जा उसे । ॥१७७०॥
न था शहर आलम[2] मे उस धात कें[3] । हुआ देख शहजादा हैरान वें ॥१७८१॥
अखँड पाच का वाँ देख्या एक तख्त[4] । उस उपराल[5] ओ मावली नेक-बख्त ॥१७८४॥
शिगुफ्ता हो[6] वैठी है खुश दाव सों[7] । ॥१७८५॥
अँगे हो किया शाहजादा सलाम । सो देती अलैंकी[8] फिर ओ नेकनाम ॥१७८८॥
कही "तूँ सलाम आ न करता मुंजे । तो करती बिला उज्र[9] टुकडे तुजे ॥१७८९॥
अथा[10] सख्त[11] तेरा कलेजा बडा । जा आकर मेरे सामने तूँ गडा" ॥१८९१॥
सो यो आ कहा शाहजादा उसों[12] । कि "मुंजते हुआ हे गुनह[13] बख्श[14] तूँ" ॥
बदीयुज्जमाल उस लिग्वी सो जवाब[15] । दिया हाथ में जाकर उसके शिताब[16] ॥
पढी सरबस[17] ज्वाब वो खोल ज्यों । ॥१७९८॥
वो मतलब[18] उसे खुश मुनाफिक[19] लँग्या । यो आशिक[20] ओ माशूक लायक[21] ज्या ॥१७९६॥
देख उसकी कवन[22] मेहरबानी[23] मे आय । नजिक वैसला[24] हम-जबानी[25] में आय ॥
शकल[26] सूरत उसके निशाने[27] लगी । अधिक फर्हे[28] पर फह पाने लगी ॥१७९८॥
कि "तू कौन है होर किधर का अहे । जो इश्क उस सहेली मों वरता अहे ॥
तेरी जात आदम दिसे वो परी । तुसा[29] जुफ्त क्यों होवैं वो गुनभरी ॥१८००॥
कि है वह चँचल पद्मिनी आतिशी[31] ॥ ॥१८०१॥
सुनी हूँ परयाँ ते मुजे याद है । बडा बेवफा[32] आदमीजाद[33] है ॥१८०४॥
सुन्या शाहजादा जो इस बात कूँ । उठया बोल उस वक्त इस धात सो ॥१८०७॥
कि "ऐ बख्तवर[34] माइ गुनज्ञान की । तु समूदर[35] सचली हे उर्फान[36] की ॥१८०९॥
मैं उस नार का पाक आशिक[37] हूँ कर । बजा हे ढिंढोरा नौ आकास पर ॥१८१४॥
मैं वो आदमी हुँ जो सबते अवल[38] । देऊँ जीव उस शहपरी के बदल ॥१८१८॥
बहुत दूर देख्या हूँ मैं उसके तैं । जगल घाट कोई नैं न देख्या सो मैं ॥१८२०॥
फिर्‌या डूँगर डूगरा दूर के । किया दौड लै गश्त समूदर के ॥१८२१॥
तुही त्या सुनैंगी मरा दर्द अगर । अजब[39] क्या जो जावे सीना तडख[40] कर" ॥१८२९॥
देखी शहरबानू की सख्ती न[41] यो । हुआ है गुम उसके पिरीत बीच यो ॥१८३०॥
समज ली उसे आशिके पाक[42] कर । ॥१८३१॥

---

१ सीधा, २ दुनिया, ३ कहीं, ४ पन्ना, ५ ऊपर, ६ खिला, ७ दर्प से, ८ अलैक, सलाम, ९ बिना ननु नच, १० था, ११ कठोर, १२ उससे, १३ अपराध, १४ क्षमा कर, १५ उत्तर, १६ जल्दी, १७ पूरा, १८ अभिप्राय, १९ पसन्द, २० प्रियतम, २१ योग्य, २२ उसके पास, २३ कृपा, २४ बैठा, २५ सभाषण, २६. आकार, २७ ध्यान से देखने, २८ आनन्द, २९ तुझसे, ३० मिलन, ३१ आग्नेय, ३२ बेमुरौवत, ३३. मानव, ३४ भाग्यशाली, ३५ समुद्र, ३६. ज्ञान, ३७ पवित्र प्रेम, ३८ प्रथम, ३९ आश्चर्य, ४० तडक, ४१ कडाई ही, ४२ पवित्र प्रेमी।

नजीक आपने प्यार सों वैं[1] बुलाइ । बहुत मानदे तख्तपर बेसलाइ ।।१८३३।।
कही "गम नको[2] कर तुँ खुशहाल[3] आछ[4] । खिल्या ताजा ज्यों फूल का डाल आछ ।।
कि हर क्यों[5] करूँगी तेरा काम मैं । दिलाऊँगी तुज ओ दिलाराम मैं ।।
खिलाऊँगी गुँचा[6] तेरे आस का । दिपाऊँगी तारा तुज-आकास का "।।१८३५।।
तलब[7] सारे देवा कुँ कर एक बार । जमा करने फ़रमाई सब एक ठार[8] ।।१८४०।।
हवा के उपर दो तरफ बाँध सफ़ । चली वैं गुलिस्ताँ अरम की तरफ़ ।।१८४२।।
नजिक गुलस्ताँने अरम के ज्यों आइ । सो यक ठार शाहजादे कुँ बेसलाइ[9] ।।
चली शहर में आप खुशहाल सों । मिली जा के फ़र्जंद[10] शहवाल सों ।।१८००।।
कि जिस ठाँव[11] ओ आशिके नेकनाम । यकेला रह्या जो अथा कर मुकाम ।।१८४७।।
सो वो ठाँव औतार[12] कुछ ठार था । जनतके गुलिस्तानके सार[13] था ।।
खिले थे केतक जिन्स[14] के फूल वाँ । वूके बिन न थी नाँव कूँ धूल वाँ ।।
व डुबे थे चमन सरवसर[15] फूल में । केते जिन्सकी वास हर फूल में ।।१८५०।।
पवन बाज[16] वाँ कोई माली न था । किसी फूल ते वन वो खाली न था ।।
कहीं रायचंपा, कही सेवती[17] । कहीं मोगरा होर कही रेवती ।।
कहीं यास्मिन[18] होर मदनवान कैं । कही ताजसुर्ख होर रैहाँ कैं ।।
कही लाल होर कै रँगीले गुलाल । कहीं फूल सदवर्ग के बेमिसाल[19] ।।
केतक उसमने[20] फूल केतक कल्याँ । देखे तो नयन कूँ उठे गुदगुल्याँ[21] ।।
कही तख्ते[22] अंगूर के बेबदल । कैं इंजीर व अन्नार शीरी निछल ।।
कही सेव होर कै अनन्नास खूब । ... ... ।।
कैं अखरोट, बादाम, पिस्ते नफ़ीस । कहीं जोज, चिलगोज, दिसते नफ़ीस ।।
खुश ऐसे अचम्बे[23] गुलिस्तान में । लग्या सैर करने अपन ध्यान मे ।।
ठंडी कुछ हवा वाँकी ज्यों उसकुँ भाइ । सो यक झाड़तल खुश[24] उसे नींद आइ ।।१८६०।।
क़जारा ओ अस्फ़द[25] केरा परा[26] । जो उस शाहजादी कुँ लेकर उड़ा ।।
रखा जो अथा कैद कर बंद सों । ... ... ।।
दुखी उस परे को बड़ा हाइ हो । ... ... ।।
तलव कर परयाँ कुँ सो कई लख हजार । किया सबकुँ ताकीद[27] यों बे शुमार ।।
कि मारया जो है भाई कूँ मेरे कोइ । सो वो आदमी बाज[28] दुसरा न होइ ।।
ढूँढो जाओ मशरिक[29] ते मगरिब[30] तलक । ... ... ।।१८६६।।

---

१. वहीं, २. नहीं, ३. प्रसन्न, ४. रह, ५. हर तरह, ६. कली, ७. बुलावा, ८. पाँती, ९. बैठा, १०. पुत्र, ११. निवास, १२. अद्भुत, १३. सदृश, १४. प्रकार, १५. पूरा, १६. हवा बिना, १७. शतपत्र गेंदा, १८. चमेली, १९. अनुपम, २०. उसमे, २१. गुदगुदी, २२. क्यारी, २३. अनुपम, २४. मीठी, २५. संयोग से, २६. परी पुरुष, २७. फिर-फिर कहना, २८. विना, २९. पूर्व से, ३०. पश्चिम।

तु फर्जंद[1] है गर मेरे पेट का। तो यो नेट कर वक्त है नेट का ॥१९५४॥
मेरे मन कुँ सन्तास सो पूर कर। यो शर्मिंदगी मुजते तूँ दूर कर ॥१९५६॥
कि नादान वाली बदीयुल्जमाल। तेरा जाव है होर तेरा मुल्क माल ॥१९५७॥
सो शहावल शह-फतह के खग का। दिलावर निपट वाघ के वर्ग का ॥१९६४॥
फतह के दमामे पैं लकडीकुँ लोक। चल्या लाट का थाट सँगात लोग ॥
गुसा ला हार शमशेर कुँ हात ले। सरव दलकुँ सब अपने सँगात ले ॥१९६६॥
यकायक जागे पैंते ज्यो हिल्या। ज्यो असमान बादल के दल सो चल्या ॥१९६८॥
मुवादा नवी कर जमी भार सो। हवा पर रह्या आपने भार सों ॥
जो देखे दल उस शाह के कोट के। सो बिचके मलक अर्श के कोट के ॥१९७०॥
देखत सिलह मजोत का लकलकाट। गया सूर केरा सीना फाट फाट ॥
यकायक नजर ज्यो पड्या वो हजूम। हुए घावरे खलबला सब नजूम ॥
उठ्या गुल जहाँ का तहाँ बेकयास[2]। गई यो खबर शाह कुल्जम के पास ॥
कि शहपाल बिन शाहरुख बादशाह। ॥
तेरी सब विलायत कुँ पामाल कर। वो आता है तेरे उपर जाल कर ॥
सुन्या शाह कुल्जम जम इस बात कूँ। दिया भेज हाजिब कुँ इस रात सों ॥
कि "आना तुम्हारा हुआ क्या सबब। ॥१९७६॥
किसी कूँन था आज लग यो मजाल। जो मुज मुल्क उपराल[3] कर आये चाल ॥
खुलासा जो कुछ है सो कह खोल कर। शिताबी[4] सेती भेज देउ बोलकर" ॥१९७९॥
खबर इस वजा की ले हाजिब शिताब। . ॥१९८१॥
सो शहवाल शह खुसरवे बेनजीर[5]। दिया जाव कुँ यो कर गँभीर ॥
कि "तुम जो गुलिस्ताँ अरम से जिसे। पकड ल्याये है भेज देओ उसे ॥
जो वो आदमी है मेरे प्यार का। नही कोइ दुनिया में उस सारका ॥
मुरौवत सो देवेंगे तो जाऊँगा। वगर नै तो तुमना प चड आऊँगा ॥१९८५॥
दिये बाज उसे याँ ते हिलसूँ न मैं। कि गाड्या है रन थाँभ टलसूँ[6] न मैं ॥१९८६॥
सुन उस बातकुँ शाह-कुल्जम वही। ॥१९९३॥
कह्या "जाके इतवार यो बोल उसे। कि आया है तूँ धुंड लेता जिसे ॥
सलामत सो वो नै है इस ठार पर। कि लैं दिन हुए उस जीवन मार कर ॥
तूँ अपने सरवदल सो जा याँ ते भाग ? नही तो तुजे मैं करूँगा हलाल" ॥१९९६॥
गुसे साथ इस धात कह भेज वै। हुआ मुस्तअद[7] बेग लडने के तैं ॥२००३॥
किस शहवाल बिन-शाहरुख बे-नजीर। जो हाजिब ते कडुवे सुन्या बोर फेर ॥२००६॥
हुआ तुद होर तेज अधिक आग ते। गुसाला होकर अज्दहा[8] वाघते ॥२००८॥
उचा दल-पैं-दल खुश चुपा रास्ता। किया हर तरफ ते सफ आरास्ता ॥

---

१ पून, २ अपरिमित, ३ ऊपर, ४ जल्दी, ५ अनुपम, ६ टलूँगा, ७ तैयार, ८ अजगर।

(म) युद्ध-वर्णन

हुए जमा जगी हजाराँ तमाम । क़बीदस्त खूँख्वार शूराँ तमाम ॥२०१०॥
किये रुख दुंदे पर जो हर ठारते । जमी वैस गई थी उसी भार ते ॥२०१२॥
गजबनाक हो ज्यों अँगे दल हुए । कलेजे पहाड़ाँ के फट जल हुए ॥२०१३॥
सलहपोश पौलाद के कोट ज्यो । बड़ा शोर समूदर की लोट ज्यों ॥२०१५॥
उताले हो आफत भरे अज़्म सों । खड़े आके मैदान में रज़्म सों ॥
बह्या बाव जो क़ह्न का शोर साथ । शितत की अगिन सुल्ग उठी जोर साथ ॥
उठ्या गुल जहाँ का तहाँ "मार मार" । कयामत जमी पर हुई आशकार ॥
झलक देख बिज्ल्याँ सी तरवार के । उड़े फ़ाखते सख़्त ससार के ॥
जो दो राज दो धेरते[1] बरहम[2] हुये । गगन सातो हैबत ते[3] दरहम[4] हुये ॥२०२०॥
जो दौड़ उसके सफ[5] पर दिलेराँ[6] पड़े । तो बकर्‌या[7] उपरजा के शेराँ पड़े ॥२०२३॥
सुटे खास होर आम कूँकाटकाट । जो किसकूँ[8] न समझा अथा बाट घाट ॥
दिलेराँ जो शहवाल के पाये बल । सो फौजाँ कुँ एक घेर[9] ते उसके खँडल[10] ॥
सुटे[11] धड़पोते[12] यों मुँड्याँ काट-काट । न थी बाट जाने किसे बाँते न्हाट[13] ॥
जो दर्‌या लोहू हो उबलने लग्या । गगन इसपै कश्ती हो चलने लग्या ॥
सराँ तैरते लोहु के समदूर[14] ते । जो दिसते अथे बुडबुडे दूर ते ।
धड़ाँ सब निपट मौज के लोट भार । थे डुबते निकलते निहंगा के सार[15] ॥
वलायाँ के बानां[16] कुं ज्यों आग लाइ । जमीं होर जमाने कुं बेताग लाइ ॥
ग़जब पर ग़ज़ब का जो वारा हुआ । सो ऐसा बड़ा कुछ धुलारा हुआ ।
दुन्या गैब[17] हुई उस धुलारे[18] मने । गँवाता गया देस अँधारे मने ॥
लिया गर्द जा ढाँप असमानकूँ । धुआँ साँप हो नीगत्या भानकूँ ॥
सो दरिया कुल्जम कुँ हैबत[19] छुटी । जमीं के तले गाय[20] अडरा उठी ॥
बड़ा रन पड़्या सख़्त रगड़ा हुआ । कही नै सों नादिर[21] यो झगड़ा हुआ ॥
हो देवाँ[22] के हातों के वरहम तमाम । गया औट दरियाय कुल्जम तमाम ॥
फ़तह[23] पाये शहवाल के लोग सब । किये चूर शमशेर सों ठोक सब ॥२०३७॥
जो कुदरत के बल सों अधिक फ़तह पाय । पकड़ शाह कुल्जम कुँ दरहाल ल्याय ॥
नजर उसपे शहवाल की ज्यों पड़ी । सो[24] अरवाह[25] उस राज की ज्यों उड़ी ॥२०४०॥
वोला कर नज़ीक उस उठा बोल यों । .... ॥
कि "औतार था जग में ओ नेकनाम । वफ़ादार[26] था आदम्याँ में तमाम ॥

---

१. तरफ से, २. छिन्न-भिन्न, ३. भय से, ४. छिन्न-भिन्न, ५. पाँती, ६. बहादुरी, ७. बड़े-छोटे, ८. किसी को, ९. एक ओर, १०. तोड़ा, ११. फेके, १२. धड़ पर से, १३. भागा, १४. समुद्र, १५. सदृश, १६. तीर, १७. लुप्त, १८. गर्द, १९. भय, २०. भूमिधारक, २१. दुर्लभ, २२. भगवान्, २३. विजय, २४. त्यों, तत्क्षण, २५. प्राण, २६. भक्त ।

तुजे छोड हरगिज न देसूं[1] इताल[2] । करूँगा मिला धूल में पायमाल ।।
कि सँपडया[3] है तू आज मुज हात में । तुं सच बोल झूठी न हो बात में ।।
उसे क्या किया मारकर का[4] सुट्या[5] । ।।२०४६।।
गजे पट लग्या यो मुसल्लम[6] दुंबाल । सो वा राज है त्यो कहा खोल हाल ।।२०४९।।
कि "वो जान तेरा तो भीता अहै । मुवा नै कि अजऊँ वो जीता अहै ।।२०५०।।
इसी के बदल में मँगाया अथा । जो भाई को मेरे वो मारया अथा ।।
गुना था सो बँद में रख्या मैं न मार । मलामत सो है वो जतन[7] एक ठार ।।
जो तुज ते रजा[8] टुक अगर पाऊँ मैं । तो ल्या उसकुं दरहाल दिखलाऊँ मैं" ।।२०५३।।
बोला "भेज उन मेरे मन-मीत कूँ । मुहब्बत सो कर ताजा फिर रीत कूँ" ।।२०६०।।
यकायक खुले बख्त के ज्यों किवाड । सो ल्याये उसे बंद म्याने[10] ते काड ।।२०६२।।
देख्या ज्या ओ दीदार[11] शहवाल का । खिल्या सिरते[12] वै[13] फूल ज्यों डाल का ।।
पडया आद के शाह[14] के चरन पर । कह्या यो कि "ऐ खुसरवे बहावर ।।
वडे बख्त मेरे देख्या आज तुज । ।।
गया सब मेरा गम तेरे घेर[15] ते । कि जिवदे बँचाया मुजे सीर्ते"[16] ।।२०६६।।
शाह इस बात ते जौक[17] पा बेशुमार । सो पाया उसे अपने फर्जंद सार[18] ।।
उचा[19] लेके छाती कुं लग्या वहीं । कि औतार कुछ है कि पाया वहीं ।।
फजीलत[20] मैं अजमा[21] के देखन लग्या । जे कुछ पूछिया सो तो बोलन लग्या ।।२०७०।।
हरेक बात पर उसकी हैरां हुआ । . . ।।
देने लग खुश्यां दिलमने[22] आनकर । केतेक देस उन शाह कूं बहुमान कर ।।
दे उसका मुलक उस रवाना किया । अपें आपने मुल्क जाना किया ।।
उड्या फत्तह के ज्या दमामें कूं ठाक । हुये शाद[23] तिरलोक म्याने[24] के लोग ।।२०७४।।
चल्या आपने शहर में नीट सा । ले सैफुल्मलूक कूं पीट सो ।।२०७६।।
खल्क[25] सब गुलिस्तां अरम का तमाम । हो खुशहाल पाया अनँद खासो-आम ।।२०७८।।
बदीयुल्जमाल आपने तनमने[26] । खुली ज्या कली फूल्री बनमने ।।

(य) विवाह-भोज—

उतम[27] शहवाल गुनी हक-गुजार । रोमारोम पाई खुशी बेशुमार ।।२०८०।।
बना रच वजा[28] जौक[29] व हाल सो । दुआ अप फर्जन्द शहवाल कूँ ।।
कही यो कि "ऐ शाह, आफाकगीर[30] । ।।
तो कँवली महेली बदीयुल्जमाल । पुतली तेरे नैन की जग उजाल ।।२०८३।।

---

१ दूँगा, २ अभी, ३ पडा, ४ कहाँ, ५ फेंका, ६ पूरी तौर से, ७ जतन से, ८ आज्ञा, ९ भाग्य, १० बधन के बीच, ११ दर्शन, १२ फिर से, १३ वहीं, १४ जल के राजा, १५ तेरे पास, १६ फिर से, १७ प्रसन्नता, १८ पुत्र-सरीखा, १९ उठा, २० बडापन, २१ परीक्षण, २२ दिल में, २३ प्रसन्न, २४ त्रिलोक में, २५ दुनिया, २६ मन में, २७ सच्ची, २८ लाख प्रकार, २९ प्रसन्न, ३० चक्रवर्ती।

... ... । सौ सैफुलमलूक सो मिला तू ताल[१]॥२०८६॥
उनों दोनों यक होवना साज है । दुन्या दीन[२] में यम बड़ा काज है॥२०८९॥
सो शहवाल माँ ते सुन्या यो जो बात । कबूल्याँ[३] वहीं लाख खुशियाँ सँगात॥२०९०॥
खबर यो तुरत जगमे जाने लग्या । जमी का निकल गंज[४] आने लग्या॥२०९५॥
नगर सब गलिस्ताँ अरम का तमाम । हुआ साफ़ ज्यों जामेजम का तमाम[५]॥२०९९॥
परे होर परयाँ जगके सारे मिले । मराये मजालिस[६] बिले-दर-बिले॥२१००॥
परयाँ चुलबुल्याँ का सभा साज सों । लग्याँ नाचने मिलके यों नाज सों॥२१०१॥
पंखे पंख[७] जडत के सदर[८] जगमगाहट । लग्या होवने चौकदन[९] तमतमाट॥
पर्याँ बेबदल याँ सों धाइयाँ तमाम । ... ...॥
दहन[१०] तंग कर मांग वारी कतर । शबेक़द्र[११] ते बाल बारीकतर॥
हुई मस्त मजलिस खुशावाज[१२] सों । दिवानी कियाँ पातुराँ[१३] नाज सों॥
डुमकन्याँ मिल्याँ डोमनियाँ लोलियाँ । शकर शहद शीरीं[१४] ते मिठ[१५] बोलियाँ॥
एकस एकते एक तरुन्याँ[१६] अहै । सो कर्तार क्याँ मोर हरन्याँ अहै॥
सो पुरपे च जुल्फ़ाँ[१७] कुँ देख गाल पर । कुँडल घाल बैठा भुजंग भाल पर॥
पड़े लाल काले सो जॉ ताँ[१८] तले । सो ज्यों नाग लड़ने है पावाँ तले॥
न जानूँ कहाँ कूड मंतर सिख्याँ । पदम पाँव ना किसके जंतर सिख्याँ॥२११०॥
लग्याँ नाचने[१९] तै जो सदरे-सदर[२०] । तिरकने लग्याँ खुश जिधर का तिधर॥
जो गत ले उठे मेंडले[२१] फिर तमाम । सुटे[२२] होश जागे पोते[२३] धर तमाम॥
मँदल काड मंदल[२४] वजाने लगे । गीतां[२५] काड[२६] पकर्याँ सो ल्याने लगे॥
जँतर काड सों जाँ उचाये हलों । सो मजलिस[२७] कुँ मस्ती में ल्याये हलों॥
जो खेलन लगे नग्मे हर ठार ते । हिल्याँ सुन चतुर पुतलियाँ ठारते॥
केता जो अथीं तान पर तान क्यों । रहीं डाल पँख सूर असमान क्यॉ॥२११६॥
देख उस वज्म का खुश सोहावा वो नूर[२८] । लगे भेजने मर्हवा चाँद-सूर॥
जो मजलिस कूँ खाना खिलाने प आय । सफा[२९] खुश कँदूरया सो ल्या ल्या बिछाय॥
कँदूरयाँ शहाने[३०] सो लख जिन्स क्याँ[३१] । रँगारँग शीरिनियाँ[३२] हर एक जिन्स क्यॉ॥२१२०॥
जो फुलनीर[३३] सों हात सबके धुलाय । कँदूरे खिलाने ले जा वैसलाय॥२१२२॥
सो अस्मान बादल कुँ सँगात ले । चँदर-सूर के जाम[३४] दो हात ले॥

---

१. अब, २. लोक-वेद, ३. स्वीकार, ४. खजाना, ५. जमशेद का प्याला, ६. सभा, ७. प्रत्येक पंख में, ८. ऑगन, ९. चारों ओर, १०. मुख, ११. दूज का चाँद, १२. सुस्वर, १३. नर्तकियाँ, १४. ईरानी, १५. मधुर, १६. तरुणियाँ, १७. अलकें, १८. जहाँ-तहाँ, १९. हँसने, २०. ऑगन-आँगन, २१. मँड़राने, २२. फेंके, २३. जगह पर से, २४. पखावज, २५. करुण रस, २६. राग, २७. सभा, २८. प्रकाश, २९. शाबाश, ३०. अच्छे, ३१. प्रकार की, ३२. मिठाइयाँ, ३३. गुलाबजल, ३४. प्याले।

कमर बाँध खुश हो अपें आबदार[1] । नजर सारी मजलिस पै रंग ठार-ठार ।।
जल अमृत ल्या ल्या पिलाने लग्या । पिला प्यास भर-भर चलाने लग्या ।।
खलायक[2] वले-दर-वले[3] खासो-आम[4] । कँदूरे ते फारिग[5] हुए खुश तमाम ।।
जडत[6] के तबक[7] हर एक असमानते । भर उस म्याने[8] तिगटे वट्याँ[9] पान के ।।
अँबर[10] होर खुशबू कदम फूल-माल । फिराने लगे जान साहेब जमाल ।।
जहाँ लग अथ्याँ[11] जग मे फुलवाडियाँ । जहाँ लग जो गँभीर पनवाडियाँ ।।२१३०।।
सो या सच तिल शह के आये वही । जो यक पान होर फुल उबर्‌या नहीं ।।
मनव्वर[12] किये अंजुमन[13] कूँ तमाम । जबरजद[14] के शीशे जमुरद[15] के जाम ।।
मदनमस्त साकी[16] छबीले जवान । अधिक छँद भरे खुश-रँगीले जवान ।।
मदन मद पियाले भरा साज सों । खडे आके मजलिसमने[17] नाज[18] सा ।।
फिराने लगे दौर-पर-दौर खुश । किये सारी मज्लिस केरा तौर[19] खुश ।।
अजब वा रँगी मद असरदार[20] था । मता वासते उसके ससार था ।।२१३६।।
पियाले जवाहर के फिरने लगे । मती[21] होके जानाँ सा गिरने लगे ।।
सो पडते थे जाँ मद के बुँद टूटकर । जमी नाचती थी वहाँ उठकर ।।
हुए थे मती कोइ न ये होशियार । जे कोइ पीवे वह क्यो रहे हुशियार ।।

(२) सोहागरात—

तजल्ली सो जलवे की ज्यो रात[22] आइ । सो वै गैबते[23] फैज[24] ल्या बात[25] पाइ ।।२१४३।।
मुरादा[26] जो धरते थे जग दिल मने[27] । सो पाये उसी रात यक तिल[28] मने ।।२१४५।।
निछल रूप क्याँ चुलबुल्या शहपर्‌याँ[29] । उतमजात, उतमजान क्याँ गुनभर्‌याँ ।।२१४७।।
बदीयुल्जमाल अचपली[30] नार कू । दुवाया जरीने[31] मे झलकारसों ।।
जो जलवा दिलाने होयाँ मुस्तअद[32] । महल जलवे कारन किया मुस्तअद ।।
जवाहर के मँडवे सो छाया तमाम । मुरस्सा[33] के पर्दे बँधायाँ तमाम ।।२१५०।।
हरेक महल सोफियाँ[34] मने रंग-रंग । जडत के रचे ल्या छपर के पलंग ।।२१५१।।
मिल्याँ खुश हो मायाँ वा बायाँ तमाम । शा 'आरस[35] के पास आयाँ तमाम ।।
दुयाँ उस घडी जाँ हुई सीरते[36] । खुले वस्त गोतिया[37] के एक घेरते[38] ।।
उत्तम डोमनियाँ मिल के गाने लग्याँ । सुरेते[39] शहाने सो गाने लग्याँ ।।

---

१ चमकदार, २ जनता, ३ भीड-पर-भीड, ४ बडे-छोटे, ५ छुट्टी पा, ६ जडाऊ, ७ थाल, ८ उसमें, ९ बीडे, १० एक सुगंधित पदार्थ, ११ थी, १२ प्रकाशमान, १३ सभा, १४ एक पन्ना, १५ पन्ना, १६ मधुबाला, १७ सभा में, १८ लीला, १९ ढंग, २० प्रभावकारी, २१ मस्त, २२ सोहागरात, २३ अदृष्ट से, २४ वरदान, २५ भाँति, २६ अभिलाषाएँ, २७ दिल में, २८ क्षण, २९ पक्षी, ३० चचला, ३१ आभूषण ३२ तैयार, ३३ सुनहरी, ३४ सजावट, ३५ दुलहा, ३६ दुलहन, ३७ फिर से, ३८ भाई-बंदो, ३९ एक ओर से, ४० एक गीत।

नवलजात सैफुल्मलूक बख्तवर[1] । उमस[2] सात आ बैठिया तख़्त पर ।।
बनी होर बने लोक पलाने[3] लगे । शौ-आरुस के तै सराने लगे ।।
असादत के सायत[4] हवैदा[5] हुआ । सो काजी[6] मसीहा[7] हो पैदा हुआ ।।
लिया शौ केरा हात अपन हात मे । खुशी सों पढ़या अक्द[8] उस सात[9] में ।।
दुआ सर किया[10] ज्यों खुश-आईन सों[11] । मलायक[12] किये खत्म[13] आमीन[14] सों ।।
मिले शहके चौधर[15] सब गोतियाँ । लगे वारने शौ[16] उपर मोतियाँ ।।२१६०।।
चले जलवे[17] के महल में शौ कुँ ले । किवाड़ाँ सो अकवाल[18] केरे खुले ।।
खडा मुश्तरी[19] नाज का साज[20] कर । सुरज जगमगाता सो असमान पर ।।
मशाता[21] हो जोहरा उतर आई बेग । चमक नूर का ल्या के झमकाइ वेग ।।
निछल नूर का ल्याके पर्दा बँदाय । शौ-आरुस[22] दोनों कुँ ल्या बेसलाय ।।
जो पर्दे मे ते हात हलने लगे । सो लख धात[23] फूलाँ उछलने लगे ।।
देखु जलवा मशाता जो निरवाल[24] हुई । सो भोगी नवलशाह की वाँ चाल हुई[25] ।।
नवी[26] पर हजाराँ दरुद[27] भेज वै । चल्या लेके आरुस कूँ सेज वै ।।२१६८।।
दे मुख ज्यों शौ ने आरुस का । खुल्या सिरते[28] ज्यों फूल फिरदौस[29] का ।।२१७१।।
चिड़ी खूब महबूव[30] देख हाथ मे । रिझाने लग्या बातकर बात में ।।२१७२।।

(ल) बरात-बिदाई—

हुआ जग में मशहूर हर ठाँव यों । बसे लगा दुनिया मे रह्या नाँव यो ।।२१९५।।
शिगुफ्ता हो शहवाल शह नेक-नाम । उमस[31] पा खुलाये खजाने तमाम ।।
.... । लग्या बाँटने माल मन भाये त्यों ।।
किसे नौ रतन होर किसे मोतियाँ । किसे हतकडक[32] होर पदक जोतियाँ ।।
किसीकूँ[33] जडत के उतम कण्ठमाल । किसीकूँ जड़त की पटी जग उजाल ।।
किसे जात तेज़ी[34] किसे मस्त हस्त । किसे खूब तोहफे[35] किसे खूब[36] बस्त ।।२२००।।
किया दान वेमिस्ल यकधेरते[37] । दिया खिलअताँ[38] सबकूँ यों सीरते[39] ।।
किस मेहमान सबकूँ किया सरफ़राज । .... ।।२२०२।।
रजा[40] ले जो मेहमानदाराँ[41] चले । दुआ शाहकूँ कर हजाराँ चले ।।२२०४।।
डुवी थी सोने मे जमी जाँ-तँहा । कि ऐसा सखी[42] बेबदल[43] है कहाँ ।।२२०५।।

---

१. भाग्यवान्, २. उत्साह, ३. गाने, ४. शुभ मुहूर्त्त, ५. प्रकट, ६. पुरोहित, ७. प्राणद, ईसा, ८. ब्याह, ९. उसके साथ, १०. शुरू किया, ११. अच्छे ढंग से, १२. फरिश्ते, १३. समाप्त, १४. एवमस्तु, १५. चारों ओर, १६. दुलहा, १७. सोहाग, १८. प्रताप, १९. शुक्र तारा, २०. सज्जा, २१. नायन, २२. दुलहा-दुलहन, २३. भाँति, २४. अदृष्ट, २५. थी, २६. पैगम्बर, २७. प्रशंसा-वाक्य, २८. फिर से, २९. नंदन, ३०. प्रिय, ३१. उत्साह, ३२. हाथ के कटक, ३३. किसी को, ३४. अरबी घोड़े, ३५. भेट, ३६. सुन्दर वस्तु, ३७. एक ओर से, ३८. परिधान, ३९. फिर से, ४०. आज्ञा, ४१. मेहमान, ४२. सुन्दरी, ४३. अनुपम।

जो गँभीर शहवाल दाना नरेक[1] । केतक दिन शौ-आरम कूँ रख नजीक ॥२२०७॥
मँग्या भेजने उसके माँ-बाप पास । दिया खूब वस्ताँ[2] जो थे अपने पास ॥
चँदर-सूरते दर्जकाँ[3] कइ हजार । जवाहर भरे सँदुकाँ वेशुमार ॥
केतेक जिन्स के खूब बाँदी-गुलाम । केतेक पातुराँ जिल्द नादिर[4] तमाम ॥२२१०॥
मुकल्लल[5] जडित की अमीरी[6] गँभीर । कराया तुरत मुस्तइद[7] वेनजीर[8] ॥
दुआ पर दुआ कर गले लाय कर । शौ-आरम कूँ उसमें वसलायकर ॥२२१२॥
बडे गलगले सो रवाना किया । ॥२२१३॥

(ब) सिहलद्वीप से अपने देश में—

जो अँपडे सिरदीप के राज पास । महाराज गँभीर सिरताज पास ॥२२१६॥
बडी शान सों लाइया शह में । हुआ आशकारा[9] यो चौंफेर[10] में ॥२२१८॥
मिला शाहजादी सो आ भाइ वो । तेखत भाइ कूँ खुश गले लाइ वो ॥२२१९॥
नेके यार मायद वफादार[11] सो । मिलाया खुश सीने लाइया प्यार सो ॥२२२०॥
केनक दिन वहाँ माँदगी दूर कर । ॥
समज खूब सायद दुख्यारे की धात[12] । चलाया हुआ[13] ख्वास्तगारी[14] की बात ॥
सा ओ जगपती राजा राजी हुआ । ॥
किया खुश हो शह मेजबानी[15] शुरु । ॥
जो जाँ लग कलावन्त ते वाँ भरे । तमाम आपने तायफाँ सो[16] खडे ॥२२३२॥
उचाने लगे इस वजा[17] तमतमाट । जो तिरलोक का वाँ भर्या आके हाट ॥२२३३॥
भर्या वास खुदबूई[18] का ठार-ठार । सिरदीप सारा हुआ नौबहार[19] ॥२२३७॥
सआदत[20] की सायत[21] में खुशहाल यो । पढ्या फूटका अक्द उस टाउ सो[22] ॥२२४०॥
मिले ज्यों ओ शाहजादी होर यो जवान । हुआ शाद[23] सैफुल्मलूक का परान ॥
समेट मालधन वात ने वेहिसाव[24] । चले मिस्र के मुल्क कूँ फिर शिताब[25] ॥२२४२॥
जो आसिम नवम्शाह दुखी झूक-झूक । हुआ था जो काडी नमन[26] सूख-सूख ॥
यकायक खुशी होर आनद की । सुन्या ज्यों[27] खबर अपने फर्जंद की ॥
फुग्या[28] होर आया रगे-रग परान । बुढा ढाडा था सो हुआ फिर जवान ॥२२४५॥
गया सामने होर मिरया पूतकू । गले ला किया पूतकूँ गुल तिसू[29] ॥२२४८॥
खुश्याँ सा वुला शह में लाइया । ॥

---

१ पुरुष एक, २ अच्छी वस्तुएँ, ३ बराबर का, ४ दुर्लभ, ५ सुनहरी, ६ हौदा, ७ तैयार, ८ अनुपम, ९ प्रकट, १० चारों ओर, ११ भक्त, १२ भांति, १३ धीरे, १४. मँगनी, १५ आतिथ्य, १६ सामाजिकों के साथ, १७ प्रकार, १८ सुगंधि, १९ नववसन्त, २० शुभ, २१ मुहूर्त, २२ जैसे, २३ प्रसन्न, २४ अगनित, २५ जल्दी, २६ तीलो-जैसी, २७. जैसे ही, २८ प्रफुल्लित हुआ, २९ तिससे।

दिया आपनी बादशाही उसे । सलामाँ किये सब सिपाही उसे ।।२२५०।।
लाया करने सैफुलमलूक राज खुश । ....।।
खुदा उसके मन की दिया ज्यों मुराद[1] । देवे हर तलबगार का वों मुराद ।।
कहाँ आसमाँ होर कहाँ धरतिरी[2] । कहाँ आदमी होर कहाँ शहपरी[3] ।।२२५३।।
खुदा यो मिलाने जो आता अहै । सो इस धात[4] सों ला मिलाता अहै ।।

(श) कविकी ओरसे—

लिख इस धात सों दास्ताँ बेनजीर[5] । रिसाला[6] लताफ़त[7] भर्‌या दिलपजीर[8] ।।२२५७।।
जो लिखने न सक वो रसन[9] का क़लम । सो माँदा हो पड़ता अथा दम-बदम[10] ।।
निझाँ दिलकी अँखियाँ सों देखी[11] मने । तो हर एक बैत[12] इस सफ़ीने मने[13] ।।
जगा जोते महबूब[14] हें वकदार[15] । मेरे फ़िक्र पर्दे ते[16] निकली वहार[17] ।।२२६०।।
मलायक[18] सो वालाय चर्खे-वरी[19] । कहें इस सफ़ीने कुँ देख आफ़री[20] ।।२२६२।।
रतन पारखी बेबदल[21] मुश्तरी[22] । मेरे जौहराँ[23] का हुआ मुश्तरी[24] ।।
कि मेरे चतुर शहनवल लालते । वुलँद[25] उसके गंभीर अकबाल तै ।।
न कै ऐसे जौहर[26] हैं झलकार के । न किस खान में होये संसार के ।।
कि निकले है नादिर[27] हो जौहर मेरे । ....।।२२६६।।
हरेकस[28] कुँ है कुर्ब[29] घनमाल का । मुजे कुर्ब इस जौहराँ लाल का ।। २२६८।।
कि चोराँते इस माल कूँ है दग़ा[30] । ....।।२२६९।।
जो सुल्तान अब्दुल्ला इन्साफ[31] कर । मेरे जोहराँ पोते[32] दिल साफ[33] कर ।।२२७१।।
देवे दाद मेरा बहुत मान[34] पाउँ । ....।।
कि यो शाह मेरा खरीददार होय । तो ताजा मेरा तबा गुलजार होय ।।
कि गमगी[35] हुँ मै सख्त संसार ते । घरूँ दग़दग़ों[36] लाख इस आजार[37] ते ।।
परेशानगी मे जम्या ख्याल मे । ले ले आया हुँ ऐसे रतन ढाल मैं ।।२२७५।।
जो भोगी नवलशाह सेती फर्ह[38] पाउँ । तो इसते रतन खास घुँड घुँड[39] ल्याउँ ।।
अगर्चे[40] हूँ शह के वद्याँ[41] मे हक़ीर[42] । वले शेर के फ़न[43] मे हूँ बेनजीर ।।

---

१. मनष्कामना, २. पृथ्वी, ३. परी नारियों की, ४. भाँति, प्रकार, ५. अनुपम, ६. पुस्तिका, ७. मंजुलता, ८. मनोहर, ९. रसों का, १०. क्षण-क्षण, ११. ध्यान से देख, १२. शेर, पद, १३. कागज में, १४. प्रिय, १५. सम्माननीय, १६. चिंतन के भीतर से, १७. बाहर, १८. फरिश्ते, १९. ऊपरी स्वर्ग, २०. शाबाश, २१. अनुपम, २२. शुक्रतारा, २३. रत्न, २४. खरीदार, २५. ऊँचा, २६. प्रताप, २७. दुर्लभ, २८. हरेक को, २९. स्नेह, नजीकपन, ३०. धोखा, ३१. न्याय, ३२. रत्नों पर से, ३३. न्याय, ३४. चित्त, ३५. शोकाकुल, ३६. भय, ३७. दुःख, ३८. आनन्द, ३९. ढूँढ-ढूँढ, ४०. यद्यपि, ४१. दासों, ४२. छोटा सा, ४३. कला।

कि मुंह मोल यो मैं कहूँ क्या अर्पे । गवाही देवें शेर[1] अर्पे ना छुपे ।।
वहरहाल यो नज्म[2] अल्हाम[3] सों । किया मैं नवलशाह के नाम सों ।।
बरस यक हजार हौर पजतीस[4] (११३५ हि०) में । किया खतम[5] यो नज्म दिन तीसमें ।।२२८०।।
पढ़्या कू तो सब आरे यो कामकू । देवे जौक[6] अधिक खास हौर आम[7] कूं ।।२२८२।।
लिखनहारा यो लाभ पर लाभ पाय । . ।।
मुबारक अछो[8] शाहकूं यो सुदाम[9] । वहकके मुहम्मद अलैहिस्सलाम[10] ।।
मुबारिक[11] घडी मे किया मैं तमाम[12] । मुहम्मद नबी पर हजारों सलाम ।।२२८५।।

२ तूतीनामा*

(१) कथा-आरंभ

कने[13] हैं जा था कोइ सौदागर एक । बजाहतमने[14] पाकसीरत[15] में नेक ।।१४७।।
उनस भाग का भोगिनी[16] वख्तवर[17] । घर उसका सो था ऐन[18] बदर के सार[19] ।।
जेते उस जमाने के सौदागरां । ओते उसके अगे थे जो चाकरां ।।
किया था खुदा यो उसे सफराज[20] । जो ये माता दरिया[21] उपर उसके जहाज ।।१५०।।
शहांपास[22] नें कुछ सा उस पास था । यकन[23] नीरतन गज[24] नो राग था ।।१५१।।
हुआ घरमने[25] एक फर्जंद उसे । सो वैसा हुआ आज लग नै किसे ।।१५४।।
घर उसका झमकने[26] लगा नूर[27] ते । सितारा चल आया मगर[28] दूरते ।।१५६।।
केतक घीस कूं जो हुआ वह जवान । ।।१५७।।
न्हनी एक महबूब[29] महताब से । लताफत[30] में निर्मल निछल आब[31] से ।।
.. । किया लाख खुशियाँ सेती कार खैर[32] ।।
केतक दिनकुं घरमें ते जो वो जवान । निकल भार[33] आया ।।१६०।।
सो बाजार पर सैर करता चला । . ।।
सो रावी[34] एकस के देखा हात में । जो मुरगोरना[35] है वो हर बात में ।।१६२।।
हवस[36] अपने दिलमें बरा[37] बेशुमार[38] । लिया मौल रावीकुं दे हुन[39] हजार ।।
खुशी सा जो आया फिर अपने मंदिर । उठन बोल रावां कि "ऐ दस्तगीर[40]" ।।

---

१ पद्य, २. कविता, पद्य, ३ भगवद्‌वाणी, ४ ११३५ हिजरी सन्, ५ समाप्त, ६ स्वाद, आनन्द, ७ छोटे-बडे, ८ रहो, ९ सदा, १० उस पर सलाम, ११ शुभ, १२ समाप्त।

* 'तूतीनामा'—सिलसिला यूसुफिया, हैदराबाद, १३५७ हि०।

१३ कहते, १४ दर्जे में, १५ सदाचार, १६ ऐश्वर्यवाली, १७ भाग्यवान्, १८. ठीक, १९ बदरगाह सदृश, २० भाग्यशाली, बड़ा, २१ समुद्र, २२ शाहो के पास, २३. अकेला, २४ खजाना, २५ घरमें, २६ चमकने, २७ प्रकाश, २८ मानो, २९ प्रियतमा, ३० मंजुलता, ३१ चमक, पानी, ३२ शुभकार्य, ३३ बाहर, ३४ तोता, ३५ कलरव करता, ३६ लालसा, ३७ रखा, ३८ अपरिमित, ३९ दक्खिनी स्वर्ण मुद्रा, ४० अवलबन देनेवाले।

नुमाइश मैं[1] गरचे[2] मुठी पर[3] हुँ मै । बले[4] इल्म[5] के फ़न[6] में बेहतर हूँ मैं ।।
जहाँ लग जहाँ[7] में है अहले-कलाम[8] । है हैरान[9] मेरे वचन ते तमाम ।।
कमीना[10] हुनर कुछ जो है मुज में एक । कहूँगा तुसों[11] खोल अजमा के[12] देख ।।
कि जैसा अंगे[13] होनहार है काम । समत है जो अब खोल बोलूँ तमाम ।।
कि दो तीन दिन के पछे देख याँ । कि आता है यक के सेती[14] कारवाँ[15] ।।१७०।।
जिनन पास अंबर[16] है इस शह्र बीच । खरीद आ करनहार है सब बहीच ।।
वो ना आये लग हो खबरदार तूँ । वो अंबर सो ले मोल यकबार तूँ ।।
मेरी बात सुन होवेगा कामयाब[17] । है इसमे तुझे फ़ायदा बेहिसाब[18] ।।
हो खुशहाल[19] इस बातते वो जवान । जिनन पास अंबर अथा पा निशान[20] ।।
लिया मोल एक घेर सेती[21] बेशुमार[22] । लेजा अपने घरमे भराया अँबार[23] ।।
यकाएक ऐसे मे वो कारवाँ । सो आया वो रावाँ[24] कहे त्यों च वाँ ।।१८६।।
वो अंबर बजा[25] चौगुने मोलसों । दिया उनकूँ सुन्नेकेरे तोलसों ।।१८८।।
जो हर एक छिन दिल मने[26] शौक आन । चल्या फेर बाजारकूँ वो जवान ।।१९०।।
देखा एक मैनाँ कुँ मिठ बोल खूब[27] । उसे भी लिया होर दिया मोल खूब ।।
मुरस्साके खुश एक पिंजरे में छोड़ । रख्या ल्याके राँवी के नज़्दीक जोड़ ।।
बले अवल राखी में कुछ और था । .... ।।
.... । कहै हर घड़ी वो हिकायत[28] नवी ।।
जो नागाह बाताँ में उस ज्वान साथ । कह्या दरिया[29] की जो तिजारत की बात ।।
सो बहुते च आया उमस[30] उसके ते । दर्या के सफ़र का सो कर अज़्म[31] वै ।।
लिया बोल दिलमे जो बेहतर है जाउँ । तमाशा देखूँ माल ले कुछ मै आउँ ।।१८७।।
अपस में अपे फ़िक्र[32] कर इस वजा । .... ।।
ले तोते कुँ मैना कुँ वे हाथ मे । सो औ रतकन आया उसी साथ मे ।।
गले ला मुहब्बत सों गुजरान बात । वो दोनों पँख्याँ कूँ सो दे उसके हात ।।
हो मुस्तैद[33] घरमे ते बाहर हुआ । सो वेगी सेती वे मुसाफिर हुआ ।।
सफर में लगा मर्द कू जो दरग[34] । सो औरतके तै घर लग्या सख्त तंग ।।
न गमता देखत वक्त हैरान होय । .... ।।
जो थी घर मे म्हाड़ी[35] सो जा वाँचढी । हलों[36] खोल खिड़की निझाती[37] खड़ी ।।
सो ऐसे मने[38] यक छबीला जवान । परी उसकूँ देखे तो देवे परान ।।१९७।।

---

१. देखने में, २. यद्यपि, ३. पंख, ४. लेकिन, ५. विद्या, ६. कला, ७. दुनिया, ८. वाणीपुत्र, ९. चकित, १०. छोटा-सा, ११. तुझसे, १२. परीक्षा कर, १३. कठिन, १४. कहीं से, १५. सार्थ, १६. एक सुगंधित वस्तु, १७. सफल, १८. अपरिमित, १९. सुखी, २०. पता, २१. एक ओर से, २२. असंख्य, २३. राशि, २४. वैसे ही, २५. प्रकार, २६. दिल मे, २७. सुन्दर, २८. कथा, २९. समुद्र, ३०. उत्साह, ३१. ईरान, ३२. विचार, ३३. तैयार, ३४. भय, ३५. अटारी, ३६. धीरे, ३७. देखती, ३८. इसी समय।

निह्या रुख[1] उसका वह चचल जवान । सो मार्‌या वही इश्क का तेज वान ॥२००॥
जो उस वान की घाव कारी[2] लगी । अतर ते च[3] दोनो में यारी लगी ॥२०१॥
वहरहाल[4] उस इश्क फांदे में मेल[5] । चल्या अपने मदीर ताज़ी[6] कुँ ठेल ॥
वोला एक बुढी मक्रजन[7] कूँ शिताव[8] । दिया उस टके खुश किया वेहिसाव ॥
कहा खोल राज़[9] आपना उसके घेर[10] । ॥२०६॥
जो वह मक्रजन उस सो धन के घरआइ । ॥२०७॥
वला ले[11] हलो वे रिझाने लगी । वचन मक्र के सो चलाने लगी ॥२०९॥
वहरहाल वार्ता सो उस नर्म की । मुहब्बतमने[12] ज्वान के गम की ॥२११॥
सो जों मोम उसके पिघल ध्यान में । कही उस बुडीकूँ हलो कान में ॥

(२) नारी-निंदा—

'नारि नरक की खान' गौवासी के ज्येष्ठ समसामयिक कवि भी कह गये थे, किन्तु इसका दोष हम व्यक्तियो को नही दे सकते। पुरुष द्वारा स्त्री के अधिकार-वचित हो पुरुष की दासी वनने, अर्थात् मातृसत्ताक समाज के स्थान पर पुरुषसत्ताक समाज वनने के साथ ही नारी को सारे अवगुणो की खान वतलाया जाने लगा। गौवासी और तुलसीदास ने सहस्राब्दियो से चली आती इसी धारणा को दुहराया। गौवासीके उद्‌गार हैं—

गवासी अगर नार घातक पर[13] आय । तो सच वातकूँ झुठकर यो हराय ॥९५१॥
जो फुट जा मचा[14] का सीना चर होय । वुरी जात है यो अगर हूर[15] होय ॥९५२॥
गवासी है औरत वडी ही लागर[16] । कि इब्लीस वँसो[17] का है इसका डर ॥९९९॥
जा असमानकू ऐसी औरत निझाय[18] । फरिश्ता[19] उतर भुंइयो हरगिज[20] न आय ॥१०००॥
गवासी जती खूब[21] औरत अछे[22] । रहे ना वगैर कुछ हीला[23] रचै ॥१०४१॥
जवान[24] होर औरत ते डरना भला । कि है जे वला वद[25] सो है यो वला ॥१०४१॥
गवासी सत्या[26] पर न धर एतवार[27] । कि हैं इन्द्रायन के यो फल के सार[28] ॥१०७४॥
मीठ्या गरचे दिसत्याँ है जो शक आज । वले दिलमें कुछ नै है कडवाई वाज ॥१०७६॥
गवासी जो नार्‌याँ केरा मक्र कोय । लिखे सो किताबाँ तो पूरा न होय ॥११५०॥
भला होजो तायव इननतें छुटे । कलम तोड कर कागजाँ धो सुटे ॥११५१॥
गवासी यकी जान औरत है साँप । फने वल तो नलदे विला उज्र जाप ॥११९२॥
न जा उनकी जा हिरसी सूरी पो भूल । कि काँटे ते हैं तेज यो गर्चे फूल ॥११९३॥

---

१ चेहरा, २ गहरा, ३ भीतर से ही, ४ हर तरह, ५ डाल, ६ अरवी घोडे, ७ धोखेवाज स्त्री, ८ जल्दी, ९ रहस्य, १० पास, ११ वलैय्या ले, १२ प्रेम में, १३ घात करने पर, १४ सच्चो का, १५ अप्सरा, १६ वहानेवाज, १७ शैतान-जैसों, १८ देखे, १९ देवदूत, २० कदापि, २१ सुदर, २२ हैं, २३ वहाना, २४ जोभ, २५ वुरी, २६ स्त्रियो, २७ विश्वास, २८ सदृश।

गवासी जफ़ावर है औरत अगर । खड़ी होय आ मक्र के सीस पर ।।१२३८।।

(३) सेठानी को रोकना—प्रोषितपतिका सेठानी को तोता बार बार रोकता है, इसे गवासी कहता है—

सो ओ सरव्-कद[1] नार सुदर सुधन । जड़ित आभरन[2] साथ सिंगार तन ।।१३२८।।
वही धकधकाते जरीने सेती । चली रावीकन[3] जलते सीने सेती ।।
जबाँ खोल उसों[4] बोल उठी इस तरीक[5] । कि "ऐ मेरे मनके मुवाफ़िक[6] रफ़ीक़[7] ।।३३०।।
न जानूँ कि क्यों है मेरे भाग आज । लगी है सीनेकूँ विरह आग आज ।।
जो अक़ल[8] आज लग थी मेरे हात में । किधर गई कि दिसती नहीं जात[9] में ।।
अगर तूँ न कुछ मेहरबानी करै । .... ।।
तुँ इस वक्त ऐ सा हेबे अक़्लराय[10] । न काम आय तो मुँजकूँ क्या काम आय ।।
रजा[11] दे जो में वाँ तलक जाउँ आज । वसाल[12] उस नवे यार का पाउँ आज ।।३३५।।

—कथा २

शिगुफ्ता[13] हो तब चलबली ओ निगार[14] । लट्कती[15] चली छवसों राँवी के ठार ।।४५६।।
मिटे शक्र ऐसे अधर खोल उसों[16] । लगी बोलने यों मिठे बोल उसों ।।
कि "ऐ मेरे पंखी, खुश-आवाज़[17] कै । ऐ बुलबुल मेरे गुल्शने-राज[18] के ।।४६०।।
नहीं ठारता मन मेरा आज कै[19] । मेरे दर्द ते तुज खबर है कि नैं ।।
तुँ ऐ वक्त ने जो करै कुछ दरंग । रज़ा दे तुरत मूँजकूँ आई हुँ तंग ।।
नहीं इसते पेलाड[20] कुछ मुजमे ताब[21] । कि इश्काँते[22] उसके हुई हूँ खराब" ।।

—कथा ३

सुन इस बातकुँ पंखी बेबदल[23] । कह्या यों जो "ऐ मदकी माती चंचल।।
सबब[24] आपना मन तुँ लेती है गाल । अपस[25] के[26] तु करती है यों पायमाल।।
.... । वले[27] वेग जा आज निस पाड्गंज[28] ।।
मुबादा[29] सफरसे तेरा मर्द आय । तेरी हौस[30] रह यों तेरे मन मे जाय ।।४६७।।

—कथा ४

सो फिर ओ चंचल । जुलेखा[31] हो राँवी कने आइ चल ।।६०५।।
कही यों कि "ऐ बेबदल[32] हमजलीस[33] । .... ।।
न कर नागा[34] हर रात आ तेरे पास । जो तब्दीद[35] देती हूँ मै बेकयास[36] ।।
न मैं सोऊँ ना तुजकूँ देउँ न सोन । बजुज़[37] तूँ जफ़ा[38] यों सके सोस[39] कौन ।।

१. सरो जैसे सीधे कदवाली, २. आभूषण से, ३. सुग्गे के पास, ४. उससे, ५. तरह, ६. अनुकूल, ७. साथी, ८. बुद्धि, ९. अपने, १०. बुद्धि-मंत्रणावाले, ११. अनुमति, १२. मिलन, १३. प्रफुल्लित, १४. चित्र-सी १५. झूमती, १६. उससे, १७. सुध्वनि, १८. रहस्यो-द्यान, १९. कहीं, २०. अनुमति, २१. शक्ति, २२ प्रेम से, २३. अनमोल, २४. कारण, २५. अपने, २६. क्यों, २७. लेकिन, २८. छोड़, खजाना, २९. शायद, ३०. लालसा, ३१. मिस्री, सुन्दरी ३२. अनमोल, ३३. साथी, ३४. चूकना, ३५. दुख, ३६. अपरिमित, ३७. सिवाय, ३८. जुल्म, ३९. सहन।

अजब कुछ मुरौवत है तुज-जात[1] में । तेरी शरमिंदी हूँ मैं इस बात में ।।
वले[2] फिक्र[3] कर कुछ मेरे काम का । जो बल होय तुजकूँ भी आराम का ।।६१०।।

—कथा ५

फिर ओ विरहिनी इश्क के ख्याल सो । चली रांवीकन मुप्तरिब[4] हाल सो ।।७७१।।
कही या कि "ऐ दर्द होर दुख के यार । पडे मुज कलेजेकूँ रोजन[5] हजार ।।
हुआ छीज पिंजरा मेरा तन तमाम । गले विरह के अगते जोबन तमाम ।।
बगैर तूँ[6] तो मोहरम[7] मेरा कोइ नैं । तेरी आससों जिउ पकड रही हूँ मैं ।।
रजा[8] दे जो घर यार के जाउँ आज । जो राहत फरागत[9] से टुक पाउँ आज"।।
सुन ऐ बात हँस पट ओ रांवा[11] उसे । कह्या यों कि "ऐ नार, मुंज यो दिसे ।।
अगर इश्क अछता[12] तेरे दिल में कुछ । तो करती गुपत काम यो किस न पूछ ।।
कि है सख्त अल्लड होर नादान[13] तूँ । है जाने में अपने परेशान[14] तूँ ।।
न कै तुझते हो यार वो नाउमेद[15] । ।।७८०।।
। सो फिर गमजदी[16] हो वाँ नार ।।८७५।।
दे दुख समद[17] कूँ जोश सीनेमने[18] । अँजू[19] ढालती आई रावी कने ।।
कही यो कि "ऐ मेरे खिल्वत[20] के दोस्त । मेरा मास गल जा रह्या तनको पोस्त[21]।।
सीना कोडता है मुसल्लम[22] मेरा । कयामत[23] ले आया है यो गम मेरा ।।
न जानूँ उसे किस घडी मैं निझाइ[24] । उसूँ[25] किस बुरे वक्तपर जीव लाइ ।।
कहाँ ते नजर उसपो मेरी पडी । यो कैसी बला आ मेरे सिर खडी ।।८८०।।
कधी[26] सुखमें विरहे जली हुइ न मैं । निपजते च[27] के अबली हुइ न मैं ।।
यो दीदे[28] जो दिन-दिन रसोंदे[29] हुये । सो दद[30] होकर मुजपो सीवे हुये ।।
जो इस घात[31] सों दुख उडले बहार[32] । ।।८८३।।

—कथा ६

फिर ओ विरहिनी नार रावाकिन आइ । सो दिलगीर[33] अपसते उसे सख्तपाइ[34]।।
रोरग में फिर बेकरारी[35] छुटी । निपट चटपटी[36] साथ यो बोल उठी ।।१२८०।।
कि "ऐ मेरे गमगीनके[37] गमगुसार[38] । तुं किस फिक्र[39] ते आज है बेकरार[40] ।।
मैं आई जो तूँ फिक्र मेरी करे । न कीं[41] मुज दुखी फिक्र तेरी करे" ।।
सुन इस बातकूँ ओ पँखी भर उमास । कह्या यो कि "ऐ मोहिनी हकशनास[42]।।
तुं महबूब[43] है जातवती[44] गभीर । ।।

---

१ स्नेह, २ लेकिन, ३ चिन्ता, ४ अधीर, ५ छद, ६ तेरे बिना, ७ नर्म सचिव, ८ आज्ञा, ९ सुख, १० छुट्टी, ११ सुग्गा, १२ रहता, १३ निर्बुद्धि, १४ हैरान, १५ निराश, १६ दुखी, १७ समुद्र, १८ सीने में, १९ आसू, २० एकांत, २१ चमडा, २२ पूरा, २३ प्रलय, २४ देख, २५ उससे, २६ कभी, २७ उपजते ही, २८ आखें, २९ पाये, ३० झगडा, ३१ भांति, ३२ बाहर, ३३ दुखी, ३४ कठोर, ३५ अधीरता, ३६ जल्दी, ३७ शोकाकुल, ३८ सवेदक, ३९ चिंता, ४० अधीर, ४१ नहीं को, ४२ सच पारखी, ४३ प्रियतमा, ४४ बडी जाति का।

वले[1] यार तेरा है किस धातका[2] । मुजे फाम[3] नै उसकी कुछ जातका ।।
अगर जात वनता है तुज सारखा । तो यार उस कह्या जाय तुज नार का ।।२२८६।।

—कथा ७

फिर वो नार ज्यों मीन विन नीर की । हृदफ़[4] बेकरारी[5] की हो नीर की ।।१३८५।।
तलब[6] सों जो रुखसत[7] की राँवीकन आइ । अँजू विरहके दाट[8] अँखियाँ मै ल्याइ ।।
कही यों कि "ऐ मस्लहत[9] के अजीज[10] । मेरी जिन्दगानी तो कुछ हुइ न चीज ।।१३६०।।
कि तंग आइ मै यारके बिरहते । बँचाले मुँजे आज इस गिरहते[11] ।।

—कथा ८

फिर ओ विरहनी नार गजचाल की । "लँबे बाल होर गुद-गुदे गाल की ।।१४५४।।
उठी बोल तोते सों इस धात[12] आ । केता दुख कहूँ तुजकू हर रातका ।।
कि कहने होर जाने ते तुज ठाँव कूँ । घट्ठे तो पडे जीभ होर पावकूँ ।।
जो आऊँ तो बातामें भाता[13] है मुंज । खजल[14] हर रयन कर फिराता है मुंज ।।
मँगूँ[15] मैं जो तुजधेर[16] ते कुछ पाउं सुख । वलेकिन[17] न देखूँ बगैर[18] दुख यो दुख ।।
किया जो विरह साँप हो मु जयो कह्र[19] । उतार आज तुं मुँजते हरक्यों[20] वो जह्र ।।

—कथा ९

रजा के वदल[21] आई रावीकने[22] । जबाँ खोलकर यों लगी बोलने ।।१५५०।।
कि "ऐ दोस्त मुँज दर्द होर दुक्ख के । करनहार फिक्रा[23] मेरे दुख के ।।
कधाँ लग[24] अछूँ[25] इस जले भाग सों । होऊँ राख जल बिरह की आगसों ।।
कि दिन-दिन दिल इस विरह के जब्रते[26] । रह्या लो मुआ[27] हो वजर सब्र[28] ते ।।
नाजक है जो वारा[29] मेरी आहका । सुटे[30] मुँज उड़ा गर्द[31] कर राह का ।।
नही कुछ मेरे मनकुँ ताक़त एताल[32] । खुदाताई[33] दे मुज इजाजत[34] एताल" ।।१५५५।।

—कथा १०

जो ओ नार दिलगीर[35] राँवीकन[36] आई । सो बोली कि "ऐ भाइ, तेरी दुहाई ।।१६७८।।
यो किस घातकी[37] आके बाजी[38] खड़ी । किधरकी बला आ मेरे सिर पड़ी ।।
कि हर सात[39] दिसता है मुँज गम नवा । यो क्या काम की मुँजकूँ (यो) क्या हुआ ।।
यो क्या इश्क़[40] भया मेरी जात[41] में । कि आता नही यार अंजू[42] हातमें ।।

---

१. लेकिन, २. प्रकार, ३. समझ, ४. प्रलय, ५. अधीरता, ६. लालसा, ७. विदाई, ८. डाट, ९. सलाह, १०. प्यारे, ११. फंदे से, १२. भाँति, १३. पाता, डालता, १४. लज्जा, १५. चाहूँ, १६. तेरे पास, १७. लेकिन, १८. विना, १९. कोप, २०. हर तरह, २१. अनुज्ञा के लिए, २२. तोते के पास, २३. चिंताएँ, २४. कब तक, २५. रहूँ, २६. जुल्म से, २७. मरा, २८. धीरज, २९. आघात, ३०. फेंके, ३१. धूल, ३२. अब, ३३. खुदा के लिए, ३४. आज्ञा, ३५. दुःखी, ३६. सुगो के पास, ३७. भाँति, ३८. खेल, जुआ, ३९. साथ, ४०. प्रेम, ४१. हृदय, ४२. आज भी।

न मुंज बेकरारी[1] कुँ है ठौर[2] कुछ । न कोशिश कुँ तेरी है तासीर[3] कुछ ॥
हुआ फिक्र तें[4] चूर सीना मेरा । यो किस घात[5] का आइ जीना मेरा ॥
मुअम्मा[6] यो खुलता नही खोल तूं । मेरी आकबत[7] क्यो है सो बोल तूं ॥१६८६॥

अश्रू मेघ अँखियाते बरसावती । चली रांवीकन[8] फेर धुडला वती ॥
कही यो कि "ऐ तैर[9] गुन ज्ञान के । ऐ थडेक[10] मेरे दिलोजान के ॥
हो निर्जीव अछूं कब तलक इस वजा[11] । तुरत आज की रात दे मुंज रजा ॥
जो निपजी[12] में अछती[13] अगर सगते[14] । तो कर दिलकुँ घट[15] चुप रहती नग ते ॥
वले[16] क्या करूँ है निपज खाक[17] ते । इसी वास्ते विरह की धाक[18] ते ॥
अपस में अपे गल के होती हूँ नीर । तू ऐसे मने[19] गर न होय दस्तगीर[20] ॥
तो सीना मेरा तडफते बार[21] नैं । कि सुखसों रहने जीवकूं ठार नैं ॥
मिलाया अगर ना अछै[22] यार साथ । तो क्या काम आवें ये ना यो हयात[23] ॥
रह्या आवे होठां मने[24] जीव आज । भला जो मिले मुंजकूं वो पीव आज" ॥१७५९॥

—कथा १२

सो ओ गमभरी नार गम आ सो फेर । निझा[25] देखती है जो रांवों के वेर[26] ॥१८४८॥
मूँडी शह्परा[27] की तरफ खीच वै । है मशगूल[28] अपस में अँख्या मोच[29] वै ॥
देख अहवाल बोली कि "ऐ सब्जपोश[30] । एती फिक्र[31] क्या है जो है तू खमोश[32] ॥१८५०॥
मैं आई जो तुजसो[33] कहूँ बात कुछ । वले[34] देखती हूँ तेरा घात कुछ ॥
मैं आई जो अपना कहूँ दुखकूं खोल । तु वत्तरी किया मुंजकूं गमगी न ग्रोल ॥
मैं आई जो तुजसो सफा[35] पाउँ आज । तु लेना च[36] मेरा सुट्या[37] नाव आज ॥
मैं आई जो विरहा करे दूर तूं । किया सिरतें[38] मुज दुख के समदूर[39] तूं ॥
मैं आई जो कुछ जमा चित्त[40] होय । किया फिर परेशां न कह मुंजकूं कोय ॥
मैं आई जो लेवे मेरा भार उतार । सो पूरा उचाया[41] मेरे सिर पो भार ॥
मैं आई जो तुजते खुलै यो नसीब[42] । किया नें[43] "तगाफुल[44] तु यो ऐ हबीब[45]" ॥

—कथा १३

---

१ अधीरता, २ ठहरे, ३ प्रभाव, ४ चिंता से, ५ भाँति, ६ पहेली, ७ भविष्य, ८ तोते के पास, ९ पक्षी, १० ठडक, ११ इस प्रकार, १२ उपजी, १३ रहती, १४ पत्थर से, १५ कम, १६ लेकिन, १७ मिट्टी, १८ ज्वाला, १९ ऐसे समय, २० सहायक, २१ देरी, २२ रहे, २३ जीवन, २४ ओठो में, २५ ध्यान से, २६ पास, २७ बडे पखो, २८ लगा, २९ भीत, ३० हरित-परिधान, ३१ चिन्ता, ३२ मौन, ३३ तुम से, ३४ लेकिन, ३५ सफाई, ३६ लेना ही, ३७ छोडा, ३८ फिर से, ३९ समुद्र, ४० खातिर-जमई, ४१ उठाया, ४२ भाग्य, ४३ क्यो, ४४. बेपर्वाह, ४५ मित्र।

.... । (आई) सो वह नार साहेब-जमाल[1] ।।१९८७।।
दर्या इश्क़[2] का फ़िर कीता[3] देख जोश । गरजते बदलसार[4] करती ख़रोश[5] ।।
जो रॉवी के आ पास यों बोल उठी । कि "जलती अछूँ[6] कब तलक जों भठी ।।
जो है आशिक़ाँ का नवी आज तूँ । दवा कर मेरी ऐ हबीब आज तूँ ।।
कि इल्लत[7] बिरह का लिया वैर मुंज[8] । किया सरते[9] बेताब[10] दुख फैर[11] मुज ।।
पड़ी भार[12] ताकत निकल जांतते[13] । पुँखी उड़ गया सब्रका हात ते ।।
गर ऐसे मे देता है तूँ मुंज रज़ा[14] । सँभालूँगी इस जीव कूँ हर वज़ा[15] ।।
जनम जानते उस धात[16] सों फ़ौत[17] होय । न की हर घड़ी यों मेरी मौत होय' ।।

—कथा १४

फिर ओ धन परेशान हो बेहिसाब । जो नज़दीक रावीं[18] के आई शिताब[19] ।।२०९१।।
कही "ऐ मेरे मन के जूने[20] अज़ीज[21] । सुनी हूँ जो संसार में चार चीज ।।
छुट्या तीर होर मूँ ते निकली सो बात । हुआ सो क़जा[22] होर गई सो हयात[23] ।।
फिर आना अजब[24] यो फिरनहार नोय[25] । फिरा था[26] नहीं आज लग[27] उनकुँ कोय ।।
गुजरती है नित गमसों[28] मेरी हयात । कधाँलग[29] अछूँ गमसों लेउँ जोर हात ।।
कि दिन-दिन कुँ मेरे उपर घात क्या[30] । गुजरत्याँ है राताँ बुरी घात क्या ।।
जो जौक़[31] आज की रात ते न पाउँ । अजब क्या है जो मर सीना तरख जाउँ ।।
न जाया[32] कर ये उम्र बाकी[33] तेरी । कि घटती है नित इश्तियाक़ी[34] मेरी ।।
नजर आज कर मुजपो टुक प्यार सों । मिला हर सनद[35] वेगउस यार सों" ।।२०९९।।

—कथा १५

वह विरहे जली दिलरुबा[36] बादअजाँ[37] । हो पजमुर्दा[38] जों फूल वक्ते-खज़ाँ[39] ।।२२१५।।
जो रॉवीकने आई अधी रातकूँ । चलाई अधर खोल यों बातकूँ ।।
कि "ऐ तू जे दाना है हर बाब[40] आज । मंगनहार[41] मेरा जो है लाभ आज ।।
जो धुंड़ती हुँ हिज यार की जात ते । तो जाता अहे मर्द मुझ हात ते ।।
अगर मँगती हूँ हिज[42] यारकी जात[43] ते । तो जाता अहे मर्द मुझ हातसे ।।
अगर मँगती हूँ मर्दकूँ बेकयाम[44] । तो होती हुँ उस यारते मैं निराश ।।
हुँ हैरान इस ठार अपन ज्ञान मे । कि दो खांड़े[45] भायेंगे यक म्यान मे ।।२२२०।।

---

१. सुन्दरी, २. प्रेम-समुद्र, ३. किया (पंजाबी), ४. बादल-जैसा, ५. शोर, ६. रहूं, ७. देरी, ८. मेरा वैर, ९. फिर से, १०. अधीर, ११. पुनः, १२. बाहर, १३. भीतर से, १४. आज्ञा, १५. प्रकार, १६. भाँति, १७. मरा, १८. तोते के नजदीक, १९. जल्दी, २०. पुराने, २१. प्रिय, २२. मौत, २३. जीवन, २४. अद्‌भुत, २५. नहीं, २६. लौटा था, २७. आजतक, २८. दुख-सहित, २९. कब तक, ३०. चोटीली, ३१. सुखी, ३२. बर्बाद, ३३. अवशिष्ट, ३४. लालसा, ३५. प्रमाण, ३६. मनोहर, ३७. इसके पश्चात्, ३८. मुर्झाया, ३९. पतझड़, ४०. विषय, ४१. चाहनेवाला, ४२. लज्जत, ४३. व्यक्ति, ४४. विना विचारे, ४५. खड्ग।

यो पर्वा मेरी शुबह[1] का काड तूँ । नको[2] दगदगे[3] में मजे पाड[4] तूँ ॥
कि इस राज[5] का यार सो तूँ च[6] है । अज़ीज़[7] ओ वफ़ादार[8] सो तूँ च है ॥
कर ऐसा नसीहत जो खुशहाल[9] हूँ । तरोताज़[10] यो फूल का डाल हूँ ॥२२२३॥

—कथा १६

फिर ओ मोहिनी दुखके समदूर[11] हो । बिरह साथ सब देस अधिक चूर हो ॥२३३०॥
कही आ को राँवी कुँ "ऐ कारसाज[12] । हुआ हदते[13] पेलाड[14] मेरा नियाज ॥
फनर[15] गम[16] के ढो ढो यो काँधे गये । मेरा अक्ल के पाँव बाँधे गये ॥
जधाँते[17] पिरित दिलमें खाना[18] किया । मेरे होश[19] ते मुंज बेगाना किया ॥
न देखी किसी रात मो ख्वाब[20] का । जो टुकडे कलेजा हुआ ताब[21] का ॥
सकत[22] नै जो कुछ मूँ सो बोलूँ तुझे । अबस[23] क्या कि बाता में घोलूँ तुजे ॥
अगर है तेरे दिलमें मूँ आस पाउँ । रजा[24] दे जो उस यार लग आज जाउँ ॥
अगर नै तो कह मुंज सरीहन् एताल[25] । जो उस यार का छोड देऊँ खियाल[26]" ॥

—कथा १७

फिर ओ नार मजनूँ केरे शक्ल[27] साथ । दे अपनें[28] निपट बेकरारी के हाथ ॥२४३९॥
कही आ को राँवी कुँ "ऐ होशमन्द[29] । शिकंजा[30] किया मुंज विरह का कमद॥२४४०॥
अगरचे[31] मेरा अक्ल जो है चिराग । वले[32] इसते हो हर घडी दाग-दाग ॥
कि जब इश्क का बाव[33] उसपर वहे । हिला उस बुझावें बगैर[34] नार है ॥
करूँ फिक्र[35] क्या मैं कि मुतलक अडी । कि दिल कूँ मेरे नै करार[36] एक घडी ॥
गुजरता है गम[37] मुंज पो जेते च यो । न जानूँ मुये पर मेरा भाग क्यों ॥
रहे ना जनूँ[38] सिर चढे बाज[39] मुंज । खुदा ताईं ल्या होश में आज मुंज" ॥

—कथा १८

। फिर ओ निगार[40] ॥२५७०॥
तफक्कुर[41] सेती आइ राँवीकने । कही "आज या है मेरे दिलमनें[42] ॥
जो तुजसो सरीहन्[43] करूँ जग मैं । देऊँ छोड पूरा तेरा संग मैं ॥
कि जिस रात आती हुँ उस रात तूँ । तगाफुल[44] में भाता[45] मेरी बातकुँ ॥

---

१ संदेह, २ नहीं, ३ संदेह, ४ डाल, ५ रहस्य, ६ तूँही, ७ प्रिय, ८ भक्त, ९ प्रसन्न, १० नया, ११ समुद्र, १२ काम ठीक करनेवाला, १३ सीमा से, १४ आगे, १५ पत्थर, १६ रंज, १७ जबसे, १८ स्थान, १९ समझ, २० स्वप्न, २१ शक्ति, २२ शक्ति, २३ व्यर्थ, २४ अनुज्ञा, २५ साफ, इस समय, २६ विचार, २७ रूप, २८ अपने, २९ चतुर, ३० जंजीर, ३१ यद्यपि, ३२ लेकिन, ३३ वायु, ३४ बिना, अतिरिक्त, ३५ चिंता, ३६ धीरज, ३७ रंज, ३८ पागलपन, ३९ बिना, ४० तस्वीर, ४१ रूपसी, चित्त, ४२ दिल में, ४३ प्रत्यक्ष, सीधे। ४४ भूल, ४५ पाता, डालता।

रयन टालता नित हिकातॉं[1] सँगात । मगर[2] दन्द[3] धरता है कुछ मुँज सात।।
कता[4] है कि हर क्यों[5] मिलैगा वो यार । वले मुँजकुँ लगता नही एतबार[6] ।।

—कथा १९

. . . . । . . . फिर ओ विरहणी सुधन ।।२७०२।।
जो नज़दीक पिजरे के जाकर खड़ी । सो राँवा[7] वही हँस पड्या उस घड़ी ।।
लग्या वो हँसा उसकुँ पूरा अजब । सो पूछन लगी उस हँसी का सबब।।
उठ्या बोल वो यों कि "ऐ गुलअजार[8] । खतर[9] आज दिन खुश सुबा[10] की पहार[11] ।।
अवल का मेरा यार हमजिन्स एक । उड उस बात जाता मुँज इस ठार देख ।।
मिल्या आइकर होर कह्या एक किसा । मुँज वो याद आया सो आया हँसा[12]" ।।

—कथा २०

सो विरहे जली ओ दिलाराम फेर । अँख्याँ लाल कर आइ रावी के घेर[13] ।।२८३७।।
कही "ऐ जो पिंजरे में खुशहाल तूँ । मेरे गम[14] ते बैठ्या है निर्वाल[15] तूँ ।।
जलूँ में तो हर देस अट जों अदीत[16] । गलूँ रातकूँ चाँद से सार[17] नीत ।।
भूकी होऊँ तो खाउँ गम बेशुमार[18] । लगे प्यास तो पीउँ अँझुआँ[19] की धार ।।२८४०।।
जो होवे हवस[20] राग पर जिस घड़ी । तो नाले[21] सुनूँ दिल के बेसुध पडी ।।
बादल[22] सैरके जो करूँ याद बाग । दिसे फूल हो मुजकूँ सीने के दाग ।।
मेरा हाल इस धात[23] है सो तो यों । है फ़ारिग़[24] करूँ तुजपो गुस्सा न क्यों ।।
भला जो करै आज तूँ कुछ इलाज । कि कोंड्या[25] है पूरा च बिरहा मुँज आज" ।।

—कथा २१

वो मुश्ताक[26] ताकत[27] ते हो फेर ताक़[28] । सो रावीकन आ सोस[29] ना सक फ़िराक़[30] ।।२९१६।।
कही "मै जो पंजर हुई सूख-सूख । मेरा ग़म[31] किया कम न तेरा सलूक[32] ।।
मेरा मुद्दआ[33] था जो तूँ हर तरीक़[34] । मेरी बेक़रारी पो होगा शफ़ीक[35] ।।
हुआ टुकड़े सीना तो बिरहेते फूट । मुकर्रर[36] कहूँ क्या तुझे रोज उठ ।।
कि आती है मुज लाज इस लाजते । तेरा देखसूँ[37] मुख न मै आजते ।।२९२०।।
कि मुज तुजते यक निस बी सुख ना हुआ । क़यामत[38] तलग मुज यो झकना[39] हुआ" ।।

—कथा २२

---

१. कथाये, २. क्या, ३. द्वेष, द्वंद, ४. कहता, ५. हर तरह, ६. विश्वास, ७. तोता, ८. गुलाबी गालोंवाली, ९. भय, १०. प्रातः, ११. पहर, १२. हंसी, १३. तोते के पास (धीरे), १४. रंज, १५. निर्लेप, १६. आदित्य (सूर्य) १७. सरीखा, १८. अगिनित, १९. ऑसू, २०. लालसा, २१. क्रंदन, २२. दिलमें, २३. भाँति, २४. छुट्टी, मुक्त, २५. खौला, २६. अभिलाषिणी, २७. शक्ति से, २८. हीन, २९. सहते, ३०. वियोग, ३१. रंज, ३२. बर्ताव, ३३. अभिप्राय, ३४. तरह, ३५. मित्र, ३६. फिर-फिर दुहराके, ३७. देखूंगी, ३८. प्रलय, ३९. झँखना।

जो ओ फिर सहेली रँगामेज हो । रजा के बदल[1] गम होर तेज हो ॥२०१४॥
कही आको राँवी कुँ "ऐ हकगुजार[2] । पकड जीव जोडी हुँ भा[3] तुजपो प्यार॥
नजिक है जो बिरहा करे मुँज पो जोर[4] । ले जा मेरा जिउ तुजपो राखे हुँ योर[5]॥
मेरे दर्द कूँ आज ऐ गमगुसार[6] । नको[7] जान दुसऱ्याँ केरे ददसार[8]॥
कि माऱ्याँ की यकसार सूरत[9] नई । दुन्या बीच उश्शाक[10] यक धात[11] नईं॥
सुना यो गया है जो मछली की जात । धरे इश्क[12] जलसो पतँग आग साथ॥
वले[13] जल सो मछली कुँ राखे सँभाल । अगिल सो पतँगकुँ करे भुर्ज जाल[14]" ॥३०२०॥

—कथा २३

फिर ओ हम सी आपने साज[15] सो । जो राँवीकन आई अधिक नाज[16] सो॥३११७॥
कही "ऐ पँखी गुन भरे दिलनेवाज़[17] । बुझनहार है तूँ दरूनी[18] के राज[19]॥
यो दुख भी किसे न कहा जाय कर । कहूँ तुजसे हमराज[20] कूँ आय कर॥
कि तदबीर[21] मे अकल होर राय मे । है बेमिस्ल नूँ कम नही काइमें[22]॥३१२०॥
मेरी मश्वरत[23] के तू लायक है कर । करूँ मश्वरत तुजसो कुछ शक न कर॥
अगर तूँ न होता मेरा गमगुसार[24] । तो मरती सीना फूट वैं एक बार॥

—कथा २४

। वो मदन की मती[25] ॥३१८९॥
तती हो गुसे[26] की अँगिन साथ फेर । कही आके राँवी कुँ इस धात[27] फेर॥३१९०॥
कि "ऐ बेवफा[28] दोस्त, सच बोल मुज । तेरे दिलमे क्या है सो कह खोल मुज॥
जो मैं दिलसो मिल देखती हूँ तुजे । निपट सगदिल देखती हुँ तुजे॥
न तुजते मेरा काम होता दिसे । मेरे हक[29] मे तू ऐन सोता दिसे[30]॥
यो तेरी अजीजी[31] है किस रीत की । कहूँ खोल किस रीत तुज मीत की॥
तुँ दायम[32] वफादार[33] मेरा कला[34] । सबब क्या जो करता है फिर यो गिला[35]॥
तेरे दिलमें कुछ मेह अछता अगर । तो सूक-सूक[36] मैं यो न होती पँजर॥

—कथा २५

जो ले फलफुलाली सँगात ओ सखी । फिर आई ले राँवी के नजदीक रखी॥३३२०॥
कही "नोशे[37] कर है यह तेरा खोरिश[38] । है जम[39] उस खोरिश सो सदा पवरिश[40]"॥

---

१ लिए, २ सच बोला, ३ पा डाल, ४ जबर्दस्ती, ५ भरोसा, ६ सवेदक, ७ नहीं, ८ शिरकी पीडा, ९. शक्ल, १० प्रेमी, ११ भाँति, १२ प्रेम, १३ लेकिन, १४ जलाके, भूना (भूजा), १५ सज्जा, १६ लालित्य, १७ दिलपर, कृपालु, १८ भीतरी, १९ रहस्य, २० रहस्य जाननेवाला, २१ उपाय, २२ किसी में, २३ सलाह, २४ सवेदना रखनेवाला, २५ माती, २६ क्रोध, २७ भाँति, २८ विश्वासघाती, २९ बारे में, ३० बिलकुल, ३१ मित्रता, ३२ सदा, ३३ भक्त, ईमानदार, ३४ कहला, ३५ शिकायत, ३६ सूख सूख ३७ खा ३८ भोजन, ३९ सर्वदा ४० पालन-पोषण।

ओ राँवी कह्या तब कि "मुँज ऐ सनम[१] । खिला न्यामताँ[२] मुँजकुँ पाली है जम ।।
अगर जीभ हर बाल होये मेरा । तो करना सकूँ शुक्र हर्गिज[३] तेरा ।।
वले[४] आज मुँज भूक चन्दा[५] नही । कि दिल फिक्रते[६] जर्रा[७] खन्दाँ[८] नही ।।
बरे[९] खोल कह क्या गरज[१०] है तेरा । जो होये जमाखातिर[११] परेशाँ[१२] मेरा ।।
कही वाद्अजाँ[१३] यों कि "ऐ दोस्तदार[१४] । जो सोती थी मै आजके दिन दोपहार[१५] ।।
सो यक ज्वान खुशरूप[१६] का दिलफरेब[१७] । ले यक हतमने[१८] अंब यक हत मै सेब ।।
नजिक आ मेरे हातमें भा[१९] ओ फल । गया कुच्छ ना बोल सीधा निकल ।।
जो देखी हो बेदार[२०] उस सात[२१] मै । न ओ अंब ना सेब था हात मै" ।।
ओ राँवाँ कह्य तबकि "ऐ माहरू[२२] । हुआ खुश मै इस ख्वाब[२३] ते मू-ब-मू[२४] ।।३३३०।।
कि ओ ज्वान जो था अधिक दिलफ़रेब । तेरा बख्त[२५] है होर आँब होर सेब ।।
यकन मर्द तेरा है यकन सो (है) यार । यो दोनों तुरत तुजसों है मिलनहार ।।
अजब[२६] ख्वाब देखी है यो ख्वाब तूँ । कि पावेगी इस ख्वाब का लाभ तूँ" ।।

—कथा २६

सो ओ नार तन नौरतन सों सिगार । मुकल्लल[२७] जोहो आइ राँवी[२८] के ठार ।।३५३५।।
कही "ऐ फ़रासत[२९] के दरियाके दुर[३०] । जो मिठबोल पँखियाँ मै तूँ है सुघर ।।
ज़बाँ खोल कर मुझसे करता है बात । तो सुनती हुँ मै तुजते ताजे हिकात[३१] ।।
हुआ नै गरज[३२] गरचे[३३] हासिल[३४] मेरा । वले[३५] तुजते पकड्या सफ़ा[३६] दिल मेरा ।।
गुजरता[३७] है खातिर मने[३८] यों एताल[३९] । जो उस यारका छोड़ देऊँ खियाल[४०] ।।
कि नै फ़ायदा[४१] कुछ हलाकी[४२] बगैर[४३] । न जासे[४४] हलाकी यो पाकी[४५] बगैर ।।
यो गर्द[४६] आपने पाक-दामनते झाड़ । भला यो जो सौदा[४७] सुटूँ[४८] दिलते काड" ।।

—कथा २७

फिर ओ नार बिरहेते बेताब[४९] हो । परेशान उस यार के बाब[५०] हो ।।२७३१।।
जो राँवी कन आई अर्जूँ[५१] ढालते । लगी फिक्र राँवी कुँ इस हाल ते ।।
मुबादा[५२] मैल्या ताब बेइख्तियार[५३] । सुटे[५४] घरकी दहलीजते पाँव बहार[५५] ।।

---

१. प्यारी, २. नियामतें, ३. हर्गिज, ४. लेकिन, ५. यो, यद्यपि, ६. चिंता से, ७. थोड़ा, ८. प्रसन्न, ९. अर्थ, १०. अभिप्राय, ११. दिल, १२. विकल, १३. इसके बाद, १४. मित्र, १५. पहाड़, १६. सुरूप, १७. मनोहर, १८. हाथ में, १९. पा, डाल, २०. जागी, २१. उसके, साथ, २२. चन्द्रमुखी, २३. स्वप्न, २४. रोम-रोम २५. भाग्य, २६. अद्भुत, २७. सजी, २८. तोते, २९. समझदार, ३०. मोती, ३१. कहानी, ३२. मतलब, ३३. यद्यपि, ३४. लाभ, ३५. लेकिन, ३६. स्वच्छ, ३७. बीत रहा, ३८. दिल में, ३९. इस समय, ४०. विचार, ४१. लाभ, ४२. मरण, ४३. बिना, ४४. जायेगा (पंजाबी), ४५. पवित्रता, ४६. धूल, ४७. पागलपन, ४८. फेकूँ, ४९. बेबस, ५०. विषय, ५१. आँसू, ५२. शायद, ५३. बेबस, ५४. फेंके, ५५. बाहर।

मुवादा निपट शर्म ते हात धोय । मुवादा मेरा कष्ट[1] नाचीज[2] होय ॥
समज बेकरारी[3] कूँ उसकी शिताब[4] । उठ्या बोलकर यों कि "ऐ महताब[5] ॥
मुबारक[6] है यो रात नेगीसों जा । न कर बात मुंज साथ बेगी सो जा ॥
कि कोड्या[7] है तेरा मीना बिरह आज । तेरे दिलते कर दूर यो गिरह[8] आज ॥

—कथा २८

। निकल घरते ओ बिरहनी नार तब ॥३८१८॥
न कर दिष्ट[9] मोरे[10] व बावें कयन[11] । चली फिक्र[12] सो नेट[13] रांवी कथन ॥
तलें होर ऊपर जो निझाड[14] उसे । सो पूरा च[15] दिलगीर[16] पाई उसे ॥३८२०॥
कही यों कि "ए बक्टर[17] यार, तूं । अजब कोई पखी है मक्कार[18] तूं ॥
सबब[19] क्या है जो यो है दिलगीर आज । कना[20] खोल कर बारे[21] मुजवर[22] आज ॥

(४) चार कहानियों का संक्षेप—

पहिली कथा में सौदागर की स्त्री का एक नागरिक तरुण से प्रेम कह चुके हैं, और यह भी कि स्त्री ने रातमें आने का वचन दिया था। घर से निकलने से पूर्व अभिसारिका ने मैना और तोता से राय लेनी चाही—

सो वह बेबदल[23] नार चंदरवदन । हलें[24] लाजती आइ मैना कयन[25] ॥
कही यों जो "ऐ तूं है शीरीं-ज़बान[26] । ॥२१६॥
लग्या दिल मेरा एक नवे यारसों । भुले हैं नयन उसके दीदार[27] सों ॥२२१॥
कहाते महाडी[28] यो जा मैं चडी । जो आ मुंज उपर ऐसी बाजी[29] खडी ॥
। मिल उस यारसों क्यों गमूं[30] मुजकूँ बोल" ॥
सुनी वो जो मैना न सुनने की बात । बजा[31] यों उठी बोलकर उसके साथ ॥
कि "ए मोहिनी तूं है नारी अमोल[32] । मुट[33] तू नक्श[34] अपने सीने सेती ल ॥
तेरा मद होय त्यों तुजे कोइ न होय । कि तुज नारकूँ ना सजे मद दोय ॥
कि है पाकदामन[35] तु नार्‍या में आज । बडाई बडी तुज है सारयाँ में आज" ॥
वो शारू[36] के मूं त सुनी जो यों बैन । नसीहत[37] पर उसकी गजब[38] में हो ऐन[39] ॥
सुटी मुईंप वै पर उसके मरोड । सो मैना दिये थरथरा जिवकूँ छोड ॥
कि बाँन बजा[41] आई तोते के पास । मगर[42] आवे उसके कधी[43] ते बरआस ॥२३०॥
बताल्या[44] पिरित का जो तपना उसे । कही खोल सब हाल अपना उसे ॥

१ तकलीफ, २ बेकार, ३ अधीरता, ४ जल्दी, ५ चन्द्रमा, ६ धन्य, ७ खोला, ८ गाँठ, ९ दृष्टि, १० दाहिने, ११ तरफ, १२ चिंता, १३ सीधे, १४ ध्यान से देखा, १५ पूरा ही, १६ दुखी, १७ कठोर, १८ धोखेबाज, १९ कारण, २० कान, २१ अर्थ, २२ मेरे पास, २३ अनमोल, २४ धीरे, २५ मैना के पास, २६ मधुरभाषी, २७ दर्शन, २८ अटारी, २९ खेल, ३० कैसे बिताऊँ, ३१ इसके बाद, ३२ फुलौरा, ३३ छोड, ३४ चित, विचार, ३५ सती, ३६ सारिका, मैना, ३७ शिक्षा, ३८ क्रोध, ३९ बिलकुल, ४० फेंकी, ४१ इसके बाद (बाद अजाँ), ४२ शायद, ४३, पास, ४४ कोडा ला।

वो तोता पिछान उसके मन का खियाल । न हो गर[1] बुरा, अक्ल अपना सँभाल ।।
कहा गर इसे मन।[2] करता हुँ मैं । तो मैना के नमने च[3] मरता हुँ मैं ।।
भला है च अब काल[4] से पेश अ.ऊँ । उसीके च वे ख्याल में मेल जाउँ ।। २३४ ।।
कहया यों कि "ऐ शहपरी[5] नेकनाम[6] । तुं आक़िल[7] हो के यों गलत[8] की तमाम ।।२३७।।
वो शारू[9] तुसों[10] गरचे[11] जिन्स[12] थी । वलेकिन[13] कहाँ अक्ल उसकूं एती ।। २३८ ।।
कि थी सख्त[14] कोदन[15] वो तो, उसके साथ । न कहना अया[16] आपने दिलकी बात ।। २४० ।।
छिपा राख तूँ आजते राज[17] यो । मुबादा[18] सुने कोइ आवाज[19] यो ।।
कि हरक्यों[20] करूँगा तेरा काम मैं । न कर बातिन[21] अपना परेशानवै ।। २४२ ।।
बजाँ[22] होयगा कजिया तेरा बुरा । हुआ था जो उस एक रॉवी केरा[23] ।।२४४।।
कता हूँ सुन वो कजिया ऐ धन, तुजे । .... ।। २४५ ।।

. . . .

—कथा १

सुन्या था जो सौदागर यक बेनजीर[24] । अथा उसकने एक तोता गँभीर[25] ।।
वफ़ादार[26] खुशफाम[27] शीरीं-कलाम[28] । हुनर गैब[29] के था समज मे तमाम ।।
करे घरकी सब दीदबानी[30] वही । .... ।।
जो एक दिन वो सौदागरे नामदार । चल्या करने सौदागरी एक ठार ।।
लगे देस लै[31] वेग पाया न आन । थी ज्वांउसकी औरत लगी तिलमिलान ।।१२५०।।
जवाँ उसके बाडे[32] में था एक खूब । लगाई छिप्या इश्क़ उसे देख खूब ।।
मँगे जीव तो घर बुला भेज उसूँ[33] । करे जौक़[34] फूलाँसों भर सेजकूँ ।।
वो तोता जो कुछ उनकेरे सो निझाय[35] । वले मूँपे औरत के हर्गिज[36] न लाय ।।
मुँडी शहपराँ[37] मे वो गरदान[38] कर । न जाने च त्यों चुप रहे जानकर ।।
जो आया वो सौदागरे नेकनाम । खबर घर के राँवी कुँ पूछा तमाम ।।
कने[39] का जो कुछ था कहया उसके साथ । वले[40] ने किया पास[41] औरत की बात ।।
कतेक दिन कूँ वो राज[42] ज्यों भार[43] ते । हुआ मर्द पर जाहिर[44] यक तारते ।।
दिल उसते वही तोड लेने लग्या । हलों[45] उसकुँ आजार[46] देने लग्या ।।
ओ नादान[47] ना जान यों दिलमें ल्याइ । कि रॉवी च[48] ते यो बला मुज पो आइ ।।
कह्या है यही राज सब खोल उसे । किया घात मुजपर यही बोल उसे ।।

---

१. शायद, (गहाँ पंजाबी), २. वर्जित, ३. मैना के सदृश ही, ४. उपाय, ५. परियों की रानी, ६. सुनाम, ७. बुद्धिमान्, ८. भूल, ९. मैना १०. तुझसे, ११. यद्यपि, १२. सजातीय, (स्त्री-जातिकी), १३. लेकिन, १४. भारी, १५. मूर्ख, १६. था, १७. रहस्य, १८. शायद, १९. शब्द, २०. हर तरह, २१. हृदय, अन्त, २२. इसके बाद, २३. तोते का, २४. अनुपम, २५. संजीदा, २६. भक्त, २७. सुसमझ, २८. मधुरभाषी, २९. दैवी विद्या, ३०. देखभाल, ३१. बहुत, ३२. मुहल्ले, ३३. उससे, ३४. प्रेम, ३५. ध्यान से देखा, निध्यान ३६. कदापि, ३७. परों के राजाओं, ३८. छिपा, ३९. कहने, ४०. लेकिन, ४१. प्रकट, ४२. रहस्य, ४३. बाहर से, ४४. प्रकट, ४५. धीरे, ४६. कष्ट, ४७. मूख, ४८. तोता ही।

जो पक्डी वही दद[1] रांवी ऊपर । सो पिंजरे में तैं काड उपांइ उसके पर ॥
छजे तल दिये मेल[2] ज़ाया[3] उसे । ॥
जो पूछ्या उसे मर्द रांवा कही । ।
हुआ क्या वो कह खोल हाली[4] मुंजे । कि दिसता है पिंजरा मो खालीमुंज ॥
जवाँ मक्र[5] सो वैं वो औरत फिराइ । 'बिली खाइ' कर ल्या के वो पर[6] दिखाइ ॥
वो पर देख खा लाख अफसोस मर्द । गुमा दिलमें उवरया मो नामोम[7] मर्द ॥
कवाहत[8] सो आजार दे वेशुमार । वही घरतें औरतकुं भाया[9] बहार ॥
जो वो भार[10] कद[11] घरते निकली न थी । गली होर वाजार चिक्ली[12] न थी ॥
भुकी हार प्यासी नँगे पाँव साथ । अकेली निराधार ना कोइ सँगात ॥
निकल शह ते जो एकट[13] भार आइ । अथा एक रौज़ा[14] सो उस ठार आइ ॥ २७० ॥
कही यो तो नैं आदमी का निशान । ॥
यो रौज़ा सो है मठ किमी खाम का । कि दिसता है यो ठार इखलास[15] का ॥
भला है जो मैं इस वली[16] खास सो । लगा दिल करूँ खिदमत[17] इखलास सा ॥
कि शायद मुंज ऊपर मेहरवान होय । ॥
छिनक[18] नीर-अँजु[19] उस सफादार[20] ठाँव । रही दुखसो गरदान[21] ले हात-पाँव ॥
वो रावाँ[22] जा पिंजरे में ते भार[23] काड । निवाली जो थी उसके शहपर[24] उपाड ॥
न ज़ाया[25] होके सब वलायाँ ते बाँच । रह्या था वतन[26] करके अव्वलतें वाच ॥
देखा जा उसे झाड-उपरालते । उतर आइया वैं[27] हरी डालते ॥
छिप्या जाके रौज़े केरा एक ठार । हलो[28] आसरे ते उठ्या यो पुकार ॥
कि "ऐ मोहिनी याँ जो तू आई है । जो इखलास[29] हमनासेती ल्याई है ॥ २८० ॥
तेरे सीस पर है सो सब केस काड । भवाँ होर पलकाँ के ले बाल उपाड ॥
मुजावर हो याँ वीस चालीस दिन । किसी वाव दिलकूं न कर ले सँगीन ॥
तेरा मद तुजसों मिलनहार है । तुजे फतहयावी[31] इसी ठार है" ॥
सुनी यो जो आवाज दरहाल[32] ओ । सुटी काड सब तनपो के बाल ओ ॥
हुआ वेवज़ा[33] रुप जाँ का तहाँ । न पलकाँ न सिरकूं पट्याँ ना भवाँ ॥
रखी छीज सब तन सो भालूके सार[34] । निकल आइया मूं तँबालू के सार ॥
बुरी सख्त दिसने लगी ऐब[35] ते । हुई मस्खरागी वडी गैब ते ॥
ओ रावा वजाँ[36] आसरे ते निकल । निझा[37] उसकुं याँ-वाँ उपर होर तल ॥

---

१ झगडा, द्वेष, २ फेंक, ३ बर्बाद, ४ तुरत, ५ फरेब, ६ पंख, ७ सहन, ८ परेशानी, ९ पाया (डाला), १० बाहर, ११ कभी, १२ घूमी, १३ अकेली, १४ समाधि-मंदिर, १५ मुहब्बत, १६ सन्त, १७ सेवा, १८ छलक, १९ आँसू के जल, २० स्वच्छ, २१ परेशान, २२ तोता, २३ बाहर, २४ उडने के पख, २५ बर्बाद, २६ घर, २७ वहाँ ही, २८ धीरे, २९ स्नेह, भक्ति, ३० पुजारी, ३१ सफलता, ३२ इसी समय, ३३ बुरे ढग का, ३४ सरीखा, ३५ दोष, ३६ इसके बाद, ३७ ध्यान से देख।

अधिक तेज काँटे ते भी सख्त बोल । लग्या बोलने ताइँ मिन्क़ार खोल ।।
कि "ऐ वेकटर[1] धन ओ राँवाँ हुँ मै । निकाली जो थी बेगुनह मेरे तै।।२९०।।
मेरे हक़पो[2] तूँ कुछ भी नेकी न की । खुदा का हुआ खेल कैसा देखी।।२९१।।
सक़त है जो अब मर्दसे तुज मिलाउँ । तुजे होर उसे एक दिल कर दिखाउँ।।२९४।।
रंजानी[3] तो तू क्या हुआ मुँजकूँ । अजूँ[4] भी वफादार[5] हूँ तुज्झ सूँ"[6] ।।२९५।।
दे धीरज[7] उसे इस वजा[8] बेहिसाब[9] । उड्या वाँते दरहाल[10] राँवा शिताब[11] ।।३००।।
सो उतर्या कदीम आपने घरमें जा । वली-न्यामत[12] अपने कुँ देखा निझा[13] ।।
कया बेनिहायत[14] दुआ[15] उसके तैं[16] । कह्या यों ऐ साहेब, औ रावाँ हुँ मैं ।।
जो पिजरे में ते खींचकर भार[17] काड । बिली खाई थी मूँजकूँ फाड-फाड" !।।
सुन्या जो वली न्यामत उसते यो बात । अजायब[18] लग्या उसके तै धात धात[19] ।।
सो बोल्या "अझूँ तो कयामत[20] है दूर । हुआ क्यों कना[21] फेर तेरा जहूर[22]" ।।
कह्या तव कि "ऐ भोगिनी[23] नामदार । तेरा नाँव रोशन अछो[24] ठार-ठार ।।
जो अपनी पियारी सुंदर नार कूँ । ग़जब बेसबब[25] कर सुट्या भार[26] तूँ ।।
फलाने वली के सो रौजे में आ । रही है पकड गोशा[27] भी कैं न जा ।।
मेहरबान हो वो वली उस उपर । मुंज अपनी दुआ[28] साथ फिर जिदा कर ।।
दिये भेज तुजकन[29] देउँ कर गवाह । कि है पाक[30] तुहमत ते[31] ओ बेगुनाह[32] ।।३१०।।
जद्याँ लग[33] तेरे घरमने[34] मैं अथा । न देख्या कधीं कुच्छ उसते खता[35] ।।३१२।।
चल उस पाक-दामन[36] केरे ठार तूँ । वफ़ादार[37] हो मिल वफ़ादार सूँ ।।
लगी सब उसे दिलकुँ राँवी की बात । उसी तिल[38] चल्या वैं शिताबी[39] सँगात ।।
देखत अपनी औरतकुँ लाया गले ।
केते वजासों[40] उज्रख्वाही[41] किया । ले जा घर उसे बादशाही दिया ।।
ओ रावाँ उसे काम आया है ज्यों । तुजे काम मैं आनहारा हुँ यों ।।३१७।।
गर ऐ मोहिनी, इश्क सों तुज है काम । अँदेशा न कर काम कर ले तमाम" ।।३१८।।
जो उस बात पर ओ चँचल छँदभरी[42] । जो रूख[43] यार के घरकूँ जानेकरी ।।३२१।।
यकायक सुबा[44] का उजाला हुआ । उसे उजाला सौ जाला[45] हुआ ।।

---

१. क्रूर, २. मेरे ऊपर, ३. रंजीदा, किया, ४. आज भी, ५. भक्त, ईमानदार, ६. शक्ति, ७. धीरज, ८. इस प्रकार, ९. बहुत, १०. उसी समय, ११. जल्दी, १२. महान् सत्ता, १३. ध्यान से देख, १४. बहुत-बहुत, १५. आशीर्वाद, १६. उसके लिये, १७. बाहर, १८. अचरज, १९. भाँति-भाँति २०. प्रलय, २१. क्योंकर, २२. प्राकट्य, २३. भोगस्वामी, २४. रहो, २५. अकारण निर्दोष, २६. बाहर निकाल फेंका, २७. को पकड़ना, ध्यान-पूजामें रखना, २८. आशीर्वाद, २९. तेरे पास, ३०. निष्पाप, ३१. पास से, ३२. निरपराध, ३३. जब तक, ३४. घर में, ३५. अपराध, ३६. सती, ३७. भक्त, ३८. पल, ३९. वहाँ जल्दी, ४०. कितने ही प्रकार से, ४१. प्रार्थना, ४२. चतुराई भरी, ४३. मुँह, ४४. प्रातः, ४५. ज्वाला।

परेशान हो फेर चित गम¹ सो लाइ। निकल देस आया सो जाने न पाइ॥
गवासी उतम रैन काली दराज²। यकी³ जान है ऐन⁴ आशिकनेवाज⁵॥
रयनते तो है देस रोशन सही। वले⁶ काल⁷ सो आशिकों⁸ का यही॥

—रया १९

सुन्या था जा एक नौरसीदा⁹ जवान। अथा¹⁰ उसकी सूरत सो हैरान¹¹ भान¹²॥२५९०॥
मुसल्लम¹³ अथा हुस्नमें बेबदल¹⁴। सो अपने नगरते यकेला निकल॥
किया शह्र बाबुल मने¹⁵ जा मुकाम। हुआ शाद सब शहर बाँका तमाम॥
सो फूलाँ के हंगाम¹⁶ में एक दिन। गया सैरकूँ बागशाही¹⁷ में उन॥
यकायक बाबुल के राजा की जाइ¹⁸। उसी बागमें सैर करनेकूँ आइ॥
नजर उसकी उस ज्वान पर जो पडी। लगा जीव, आशिक हुई उस घडी॥
जा देख्या वो ज्यों उस गुलदाम¹⁹ कूँ। दिवाना²⁰ हो खोया वहा काम²¹ कूँ॥
जब आ नार घर आइ उस सैरते। छुरा दिलमें उस इश्क कूँ गैरते²²॥
अपसमें च बेताब²³ होती अछै। अँख्याँ सीस अँझुवा²⁴ जे रोती अछै²⁵॥
परेशान²⁶ हो वो बेचारा बहार²⁷। लग्या फिरने चौफेर²⁸ बारे के सार²⁹॥
न उसकी खबर उस अँपडती³⁰ दिसे। नजर उसकी उसपर न पडती दिसे॥२६००॥
जो एक साहिर³¹ उस शह्र म्याने³² गँभीर³³। अथा³⁴ सेह्र³⁵ के फनमने³⁶ बेनजीर³⁷॥२६०२॥
लग्या खिदमत³⁸ उसकी करन रोज जा।
सो यकदिन जवाँ वो खुशी साथ खोल। कह्या "क्या है मकसूद³⁹ तेरा सो बोल"॥
तब वो ददमद⁴⁰ इश्क के दाग⁴¹ का। कह्या खोल किस्सा सब उस बाग का॥
सुन ओ साहिर उसका हकीकत⁴² तमाम। कह्या मुंज अंगे सहल⁴³ कुछ है यो काम॥
जा मंगता चंदर सूरकूँ काइ सार⁴⁴। तुजे आसमाँ परते देता उतार॥
मिलाना तुज उसमां केता काम है। वा सीता तेरी जान तू राम है"॥
कह इस धात दरहाल वो सेह्रगर⁴⁵। दिया बाड यक मोहरा कुछ सेह्र कर॥
कह्या "नर हो पकडे या मूमें उसे। दिसे नार हो हर किसीकूँ उसे॥२६१०॥
जा नारी हो रख लेवे मूमें उसे। ता मार्याँ की अँगियाँ में नर हो दिसे॥

---

१ दुख, २ लम्बी, ३ विश्वास, ४ बिलकुल, ५ प्रेमी पर दयालु, ६ लेकिन, ७ मौत, ८ प्रेमियों, ९ नवागत, १० बिलकुल, ११ चकित, १२ सूर्य, १३ पूरा, १४ अनुपम, १५ बाबुलमें, १६ बहुतायत, १७ राजोद्यान, १८ पुत्री, १९ फूल जैसे शरीरवाली, २० पागल, २१ समस्त, २२ दूसरे से, २३ अधीर, २४ आँसू, २५ रहे, २६ हैरान, २७ बाहर, २८ चारों ओर, २९ सरीखा, ३० पहुँचती, ३१ जादूगर, ३२ शहर के बीच, ३३ सजीदा, ३४ था, ३५ जादू, ३६ विद्या में, ३७ अद्वितीय, ३८ सेवा, ३९ चाह, ४० दुखी, ४१ जलन, ४३ बातें, ४३ आसान, ४४ सरीखा, ४५ जादूगर।

उसी सात[1] ले बरहमन की मिसाल[2] । वो मोहरा सो उस ज्वान के मूँमे घाल ।।
चला लेके बाबुल के राजा के थान । कह्या "नाँव मेरा है अष्टावधान ।।
जो मुज एक बेटा अथा[3] नौजवान । गया है निकल कै सो मेरा परान ।।
परेशान है उस बदल[4] रात-दिन । उसी नूरदीदे[5] की औरत है इन ।।
है पाँवाँ कुँ मेरे यो बेडी के सार[6] । महाराज, अगर तूँ धरै मुँजपो प्यार ।।
रखाये हरम[7] के दरूनी[8] इसे । तो उपकार बंदे पो लै[9] कुछ दिसे ।।
फरागत सेती[10] बादजाँ[11] ठाँउ-ठाँउ । धुंडूँ होर फ़र्जंद कूँ अपने पाँउ"[12] ।।
वो कये त्यों च[13] राजा क़बूल[14] उसकी बात । दिला राहखर्ची[15] उसे मेह्र[16] साथ ।।
उस औरत के तैं दीं उसी तिलमने[17] । हरम[18] में दिया भेज बेटीकने[19] ।।
जों उस रुपसों जा हरम में वो ज्वान । देख्या उस सखीकुँ सो पाया परान ।।
हुआ उसकी सेवाकुँ मशगूल[20] यों । जो सेवा देख उसका खिले फूल ज्यों ।।
वले[21] राज[22] दिलका न भा[23] भार[24] वो । दुंबाल[25] उसकी फिरता अछै[26] झाँव हो ।।
मुहब्बत लग्या दो में इस धात[27] का । जो पर्वा न था म्याने[28] किस बात का[29] ।।
सो यक देस पूरा च हो गमगुसार[30] । कह्या यों कि "ऐ मोहिनी, गुलअज़ार[31] ।।
लताफ़त[32] की है डाल की फूल तूँ । वले जिवते अछती[33] है मखमूल तूँ ।।
गुलाली तेरे गाल जो जर्द[34] है । मगर[35] इश्क का कुछ तुझे दर्द है ।।
कि है मुज खबर इश्क के दर्दते । कि सोसी[36] हुँ में आपने मर्द ते ।।
कहेगा तेरा राज[37] मँजकुं न लाज । तो हर क्यों[38] "करूँगी मै उसका इलाज[39]" ।।
मुहब्बत की जो गुदगुली[40] उस छुटी । समाया[41] सो उस बाग का बोल उठी ।।२६३०।।
.... । कह्या यों कि "ऐ माहरुसाँ[42] की भान ।।
गर उस ज्वानकूँ तुजकूँ दिखाउँ एताल[43] । तो क्या दान दे मुँज करेगी निहाल ।।
कही वो जो मेरी नजर में वसे । अगर तूँ हो दिखलायेगी मुँज उसे ।।
तो जीते तलक जिवके मानूँ तुजे । सदा नैन की पुतली जानूँ तुजे" ।।
सो वो मोहरा[44] मूँ मे ते बैं भार[45] काड[46] । दिखाया उसे रूप अव्वल के सार ।।
वह आशिक़ सहेली हो हैरान वैं । कर उस रूप पर अपसे[47] कुर्वान[48] वैं[49] ।।

---

१. साथ, २. रूप, ३. था, ४. उसके लिये, ५. आँख की रोशनी, ६. बेड़ी-जैसी, ७. अन्तःपुर, ८. भीतर, ९. बहुत, १०. छुट्टी से, ११. इसके बाद, १२. कहे, १३. वैसे ही, १४. स्वीकार, १५. यात्रा का खर्च, १६. मेहरबानी, १७. क्षण में, १८. अन्तःपुर, १९. बेटी के पास, २०. लगा, व्याप्त, २१. लेकिन, २२. रहस्य, २३. पा (पंजाबी), २४. बाहर, २५. पीछे, २६. साया, २७. भाँति, २८. बीच में, अंदर, २९. किसी बात की, ३०. सहानुभूति रखनेवाला, ३१. फूल से गालोंवाला, ३२. मंजुता, ३३. रहती, ३४. पीला, ३५. क्या, ३६. सही, ३७. रहस्य, ३८. हर तरह, ३९. दवा, ४०. गुदगुदी, ४१. दृश्य, ४२. चंद्रमुखियाँ, ४३. इसी समय, ४४. गुटिका, ४५. बाहर, ४६. सरीखा, ४७. अपने को, ४८. नौछावर, ४९. वहीं।

कही "मुंजकुं जरीं[1] न उम्मेद था । वले[2] बोल क्या यो तेरा भेद था"॥
सो खुश हो गुलिस्तान[3] के सार[4] खिल । लगे दोइ हिज्र[5] करने रातां कु मिल॥
सो ओ ज्वान उस धनके मू ते यो बोल । समाया सरासर कह्या खोल-खोल॥
सुवा हुइ तो मोहरा वो मू में सुटे । यकायेक औरत का ले रूप उठे॥२६४०॥
केतक देस चल्या जौक[6] बेदगदगा[7] । दिया नागहाँ[8] यों फलक[9] ज्यों दगा[10]॥
सो एक देस चल्यां न्हावने कू वो ज्वा । देखा भाड उस नार था एक ठाव॥
चुम्या आँख में हुस्न[11] उस अपरूपका । सो आशिक[12] हुआ उसके वें रूप का॥
दिवाना[13] हो यकबारगी जीभ खोल । दिया भेज यों दाइ के हाथ बोल॥
कि "मुंज आज ऐ हुस्न के आफताब । करेगी तेरे वस्ल[14] सों कामयाब[15]॥२६४५॥
। दिया ज्वाब[16] यों दाइकूं ज्ञान साथ॥
कि मैं आप औरत हूं यक मर्द की । ॥
कि सुसरा सो मेरा पत्या राजकूं । यहा रग गया है शरम-लाज सूं॥
खयानत[17] करे आँख सेती मुंजे । निझाना[18] तो वाजिब[19] न था यों तुजे"॥२६५०॥
सुन यो ज्वाब फर्जंद[20] उस राज का । दिया छोड सुध काम होर काजका॥२६५१॥
जों उस राजकू अँपडी[21] यो खबर । हो हैरान अपस में अपे मरसबर॥२६५३॥
कह्या "यो तो परमद की नार है । करूँ क्या खयानत[22] कि नाकार है॥
मैं कहता हुँ यो राज किस घेर[23] खोल । हो मेरी दियानत[24] पर आता है बोल॥
अगर चुप रता[25] हूँ, तो कर दिलकुं चाक[26] । जिगर-गोशा[27] होता है मेरा हलाक"[28]॥
पशेमान[29] इस घात[30] हो आकबत[31] । ॥
दिया भेज यों बोल उस नार कूं । कि फर्जंद मेरेकुं कर प्यार तू"॥२६५८॥
जों इस घात की बाजी[32] उस आई पेश[33] । फरामत[34] सों तब अपने मनमें अँदेश[35]॥
ले राजा की बेटीकु वो पुख्ताकार[36] । चल्या खुश[37] उसी सेहरगर[38] के दयार[39]॥२६६६॥
सो दरहाल[40] वो सेहरगर बेनजीर[41] । वही मोहरा उस ज्वान कनेते[42] ले फीर॥
सुट्या मूं मने[43] उस सहेली के सो । लगी दिसने सिर पाँव लग मर्द हो॥
। उठ्या शहरमें गुल जहा का तहाँ॥
कि "राजा की बेटी होर ओ नार जो । अमानत थी यकबारगी आजसो॥२६७०॥

---

१ जरा, थोडा, २ लेकिन, ३ फुलवाडी ४ सरीखा, ५ आनद, ६ आनद, ७ विना भय के, ८ यकायक, ९ आकाश, १० धोखा, ११ सुंदरता, १२ प्रेमी, १३ पागल, १४ मिलन, १५ सफल, १६ उत्तर, १७ धरोहर मारना, १८ ध्यान से देखना, १९ उचित, २० पुत्र, २१ पहुँची, २२ विश्वासघात, २३ किसी के पास, २४ ईमानदारी, २५ रहता, २६ फाड, २७ कलेजे का टुकडा (पुत्र) २८ मरण, २९ लज्जित, ३० भाँति, ३१ अतमें, ३२ खेल, ३३ सामने, ३४ समझदारी, ३५ चिंता, ३६ सिद्धहस्त, ३७ प्रसन्न, ३८ जादूगर, ३९ जग्ह, ४० तत्काल, ४१ अनुपम, ४२ जवान के पास, ४३ डाला मुँह में।

हुयाँ हैं हरम मेंते[1] दोनों च ग़ैब[2] । ....॥
किये धूँढ धूँढ शह्र सब तल-उपर । पड़्या नै किसे खोज उनन का नजर ॥२६७२॥
केतक दिन पछीं कुँ जो वो गलबला[3] । हुआ सर्द[4] सो फिर वो साहिर[5] बुला ॥
ले उस ज्वानकूँ पीठ[6] सों साज साथ । मिल्या जायकर तुर्त उस राज साथ ॥
कि पहिले दुआ सों जवाब खोलकर । उठा बादजाँ[7] इस वज़ा[8] बोलकर ॥
"जो बेटा मेरा गुम हुआ था सो फेर । मिल्या..................॥
वो फर्जंद[9] सो है यही नौनिहाल[10] । वो औरत अमानत[11] है उसकी हलाल[12] ॥२६८०॥
सआदत[13] भर्या आज का दिन दिसे । मिलाना भला आज उसे होर इसे" ॥२६८१॥
हुआ वायला[14] जों वो यो बात बोल । जबाँ[15] राज़ तब उज्रख़्वाही[16] सों खोल ॥२६८३॥
कह्या कैफियत[17] दोई का उस धरी[18] । वो सुनत्या च वैं चाक[19] करले सरी ॥
सितम[20] धरतिरी के उपर डाल अपस । दिखाया खल्क़[21] बीच बेहाल[22] अपस ॥
कह्या "मै भरोसा तेरे सतपो कर । गया उस-न्इनी ताईं इस ठाँव धर ॥
जो तूँ राजा हो यों खयानत[23] करे । तो क्यों बेनवा[24] आवे तुज आसरे" ॥
.... । हो गमगी[25] वो राजा उतम जात का ॥
बुजुर्गीं कुँ इस काम के म्याने सट[26] । उसे लाख हुन[27] दे किया दूर झट ॥
चडे लाख हून जो वो साहिर[28] के हाथ । खुशी आन ले मनमें कइ लाख-लाख ॥२६९०॥
जो फिर आइया वाँ ते अपने मुकाम । सो बख्शा[29] उसी ज्वान कुँ वो तमाम ॥२६९१॥
जों वो दोइ मिल यक हुये ए निगार । हो तूँ बी मिल उस यार सों आज यार ॥२६९५॥
न ला वार[30] उठ वेग जा दोस्त पास । ....॥
उठी कस्द[31] कर जावने जों वो धन । उजाला हुआ सुब्ह का चौकधन[32] ॥
न जा सक रही तिलमिलाती वहीं । सुटी[33] गम सों लइ फोड छाती वहीं ॥
गवासी उतम रैन काली दराज[34] । यकीं[35] जान है ऐन[36] आशिकनेवाज[37] ॥
रयनते तो है देस रोशन सही । बले काल सो आशिकाँ का यही ॥२७००॥

--कथा २६

.... । "किसा[38] राय[39] का क्या है कह मुँज सही" ॥३३३६॥
सो बोलन लग्या "राय **माचीन**[40] का । जवाँमर्द[41] भोगी[42] खुश-आईन[43] का ॥

---

१. अन्तःपुर में से, २. अन्तर्धान, लुप्त, ३. हल्ला, ४. ठंडा, ५. जादूगर, ६. पीछे, ७. इसके बाद, ८. इस प्रकार, ९. पुत्र, १०. नया पौधा, ११. धरोहर, १२. विहित, १३. न्यायानुमोदित, शुभ, १४. बावेला, १५. जीभ, १६. माफी, १७. हालत, १८. पास, धीरे, १९. फाड़, २०. अन्याय, २१. दुनिया, लोग, २२. विकल, २३. विश्वासघात, २४. गरीब, २५ दुःखी, २६. फेंक, छोड़, २७. अशर्फी, (दक्खिन की स्वर्णमुद्रा), २८. जादूगर, २९. प्रदान किया, ३०. देर, ३१. इरादा, ३२. चारों ओर, ३३. फेंकी (पंजाबी), ३४. लम्बी, ३५. विश्वास, ३६. बिलकुल, ३७. प्रेमियों पर दयालु, ३८. कहानी, ३९. राजा, ४०. महाचीन, ४१. तरुण, ४२. भोग, ऐश्वर्य-सम्पन्न ४३. सुन्यायी ।

उतम उसके औसाफ[1] होर उसके गुन । थे हैरान तिरलोक के राय सुन ॥
जो यक देस निक्ल्या ओ सुलन शिकार । चिड्या एक नादिर[2] पँखी नामदार ॥
सो नाजुक होर नम ऐसा च था । समूर[3] उसके अगे[4] शर्मिंदा सा च[5] था ॥३३४०॥
लगी रायकूँ उसकी नर्मी अजब[6] । कह्या ॥
कि रुये-जमीन[7] पर कहीं इसके धार्त[8] । न होसे[9] ऐती नम आदम की जात ॥
जो था पीरमद[10] एक हाजिर[11] वहाँ । उठा बोल कर यों ॥
कि 'ऐ राय, तन आदमीजाद[12] का । हवा खाइकर मुख्तलिफ[13] बाद[14] का ॥
पकडता है सख्ती, अगर नै तो चम । सो इस जानवरते भी अछता[15] यो नम ॥
वले[16] आज तन एक उतम नार का । न नर्मी में कै फूल उस सारखा ॥
लताफत[17] के आलम की है राज ओ । उतम पद्मिन्याँ की है सरताज[18] ओ" ॥
सुन ओ बातकूँ राय बोल्या "ओ धन । है किस मुल्कमें, काँ है उसका वतन[19] ॥
उसे नाँव क्या है ओ किसकी है जाइ" । कह्या तब ओ शख्स[20] "ऐ जहाँगीर राइ ॥
है इस धर्तिरी के तले यक नगर । सो नाँव उस नगर का है दीपकनगर ॥३३५०॥
वहाँ एक राजा है गभीर आज । है उस राज का नाँव सो रामराज ॥
वो महबूब[21] साहेब-जमाल[22] आज की । है बेटी उसी बेबदल[23] राज की ॥
जो रों- रों[24] अगर जीभ होवे मेरा । न कर सकसू[25] तारीफ[26] उस धनकेरा" ॥
जो उस राजकन[27] था वजीर यक जवान । सुन्या उसकी तारीफ दे खूब कान ॥
सो आशिक हो वैं[28] उस उतम नार का । रख्या दिल उपर क़स्द[29] उस शह्र[30] का ॥
जो अव्वल त[31] जादूगरी ओ वजीर । सिख्या था ॥
फिर्‌या राज ज्या खेल कर वो शिकार । सो वैं सेह्र सो बनके च्युंटी के सार[32] ॥
चल्या एक सूराख में पैसकर । उसी नार के जा को पहुँचा नगर ॥
वले[33] रायकूँ कुछ न था फाम[34] जो । कि ऐसा रगी सो किया काम वो ॥
जो गये देस दो-तीन म्यान[35] गुजर[36] । सरीर आपना खूब सिंगार कर ॥३३६०॥
सो दपन मने[37] औरत उस राय की । निझा देख छब अपनी जेबाइ[38] की ॥
कही "ऐसी सूरत किसी नार मे । न होसी[39] कहीं आज ससार में ॥
मेरा मर्द जो रायराया[40] है आज । इस ऐसा भी कोइ जगमें होसे[41] न राज ॥

---

१ गुण, २ दुर्लभ, ३ अतिकोमल चमडा (साइबेरिया का), ४ आगे, ५ सा ही, ६ अद्भुत, ७ भूमण्डल, ८ भाँति, ९ होगा (पजाबी), १० बुड्ढा, ११ उपस्थित, १२ मानव, १३ भिन्न, १४ वात, वायु, १५ रहता, १६ लेकिन, १७ मजुता, १८ शिरोमणि, १९ घर, २० आदमी, २१ प्रिया, २२ सुन्दरी, २३ अनुपम, अनमोल, २४ रोम रोम, २५ सकूँगा, २६ प्रशसा, २७ राजा के पास, २८ वहीं, २९ इरादा, ३० नगर, देश, ३१ पहिले से, ३२ चीटी के सरीखे, ३३ लेकिन ३४ समझ, ३५ बीच में, ३६ बीते, ३७ दर्पण में, ३८ सुन्दरता, ३९ होगी (पजाबी), ४० राजाधिराज, ४१ होगा (पजाबी) ।

जो नज्दीक था एक रावाँ[1] वहाँ । सुन इस बातकूँ हँस पड्या नागहाँ[2] ।।
सो औरत की खातिर[3] कुँ लागा बुरा । कही वो हँसा रायके धरे[4] दोरा[5] ।।
जो पूछा उसे राय, सो फेर तब । ओ रावाँ कह्या "मै हँसा इस सबब[6] ।।
जो भागीरथी राय की कर मनम्[7] । कही हुस्न[8] में कोइ नै अपने सम ।।
न रायाँमने[9] आजकूँ कोइ राय । कहाँ है जो तेरे मुकाबिल[10] कुँ आय ।।
कि जग में नरो नार कूँ जुल्जलाल[11] । तफ़ावत[12] सों रोजी[13] किया है जमाल ।।
जो अछता[14] है तूँ जिस जमी के उपर । उसीके तले ऐ गुनी बख्तवर[15] ।।३३७०।।
है दीपकनगर कूँर नगर यक गँभीर । वहाँ राय है एक रोशन-जमीर[16] ।।
कि जोड़ा नही इस धरति पर उसे । .... ।।
निका नाँव उसका है सो रामराज । अजब[17] एक धरता है बेटी वो आज ।।
है उस नार का रूपसमदूर[18] नाँव । कि थोड़ा दिसे उस, जेता मैं सराँव[19] ।।
मेरी जानकूँ[20] हुस्नो खूबी में देख । उस ऐसी न होसे[21] कही जग मे येक" ।।
सुन्या राय रावीं ते जिस तिल यो बैन । दिलोजाँ[22] से उसका दिवाना[23] हो ऐन[24] ।।
जे कोइ खास हो मातमद[25] था हुजूर[26] । हवा लेकर[27] उस सल्तनत का अमूर[28] ।।
यकट[29] जोगियाँ का लिया भेस वै । चल्या मम्लकत[30] छोड़ परदेस वै ।।
जो नज्दीक[31] दरिया की कड़की[32] पो जा । .... ।।
न कै बाट जो जाय मारग पकड़ । न होड़ी जो पेलाड[33] होय उस प चड़ ।।३३८०।।
किया उस दरचा कूँ जो हक[34] मेह्रबान । वो माचीन का राज है कर पिछान ।।३३८२।।
तुरत अपनी सरहदते[35] उलगाइया[36] । जों ओ राय दरिया उतर आइया ।।३३९२।।
देख्या बाग फिरदौस[37] के सार[38] एक । सो उस बाग में जाके बैठा टुक एक ।।
यकायक ऐसे में[39] वहाँ दो जवान । सलाम आ किये.......... ।।
उठे बोल यों "ऐ गनी[40] हक-शिनास[41] । हमे तुजसों धरते है यक इल्तिमास[42] ।।
कि दोनों हमें सो सगे भाइ है । जो मीरास[43] कुछ बापते पाये है ।।
सो लड़ते हैं उसके बदल[44] आइ दोइ । बराबर नही बाँट सकता है कोइ ।।
हमन के दो म्याने[45] तुँ हाकिम[46] हो आज । ओ तक़सीम[47] कर दे......." ।।
कह्या राय "क्या है सो बोलो वो चीज । .... ।।

---

१. तोता, २. यकायक, ३. दिल, ४. पास, ५. दुहराना, ६. इसके कारण, ७. मै हूँ, ८. सौन्दर्य, ९. राजाओं मे, १०. प्रतिपक्ष मे, ११. सुन्दरी, १२. फर्क, १३. सदा, १४. रहता, १५. भाग्यशाली, १६. समझदार, १७. अद्भुत, १८. रूप-समुद्र, १९. सराहूँ, २०. प्राणों को, २१. होगा, २२. मन-प्राण, २३. पागल, २४. बिलकुल, २५. विश्वासी, २६. सम्मुख, २७. सुपुर्द, २८. काम, २९. अकेला, ३०. देश, ३१. पास, ३२. तट, ३३. प्रस्थान, ३४. सत्य-सरीखा, ३५. सीमा से, ३६. उल्लंघन किया, ३७. स्वर्गोद्यान, ३८. सरीखे, ३९. इसी समय, ४०. धनी, ४१. सच के पारखी, ४२. प्रार्थना, ४३. दायभाग, ४४. उसके लिए, ४५. हम दोनों मे, ४६. शासक, ४७. विभक्त।

कह्या तबकि वह चार चीज है अवल[१] । सो खर्चा[२] अहे उसमने[३] वे-बदल[४] ॥३४००॥
अगर दिलमँगे सोन टके दस हजार । वो झाडे तो उसमें ते निकले बहार[५] ॥
दूजा एक कचकोल[६] ऐसा है जो । मँगे[७] जैसी न्यामत[८] तो होइ पूर वो ॥
है तिसरा खडावाँ केरा जोड यक । जो कोइ पाँव अपना उस उपराल रख ॥
करे कस्द[९] जिस मुल्क जिस शहृ का । अछे[१०] वाँ च[११] हाजिर[१२] हो यकबार का ॥
है चौथा असा[१३] एक इस धात का । अगर वक्त होवे जो कें[१४] रात का ॥
जो मारे ज़मीं में उसे जैसे ठार । तो दरहाल होय शहृ वाँ आशकार[१५]" ॥
यो बाताँ सुन्या कान धर राय ज्यो । अधिक शाद[१६] हो ल्या लिया दिल में यो ॥३४०७॥
कह्या बादजाँ[१७] उनकुं "ओ चार चीज । रखे मूँ अँगे[१८] ल्या जो देऊँ तमीज़[१९] ॥३४०९॥
जो यो ल्या के आँगे रखे राय के । समज ख्यालकूँ[२०] उस दोनो भाइ के ॥३४१०॥
यकसकूँ कह्या "रास्त ता धेर[२१] दौड । यकसकूँ कह्या यो चपाधेर[२२] दौड ॥
जे कोइ तीर के खास[२३] जा बेग आय । ओ अव्वल जे कुछ खुश लगे सो उचाय[२४] ॥
जो राज़ी हो करते है यो मुंज हजूर[२५] । तो होता है दोनो में का झज[२६] दूर" ॥
चले दौडते वीच[२७] दोनो जने । हुआ राय कूँ फुरसत[२८] ऐसे मने ॥
सो उस चार वस्ता[२९] कुं सोरात[३०] कर । ओ कचकोल[३१] खिर्का[३२] असा[३३] हाथकर ॥
कदम उस खडावें के उपराल रख । निपट अपने मकसूद[३४] पर ख्याल रख ॥
चल्या नेट[३५] दीपकनगर वीच पैस । ॥
जो ओ रायके कस्र[३६] कन आइया । वजीर आपनेकूँ वहाँ पाइया ॥
कह्या तूं क्यो इस ठार आया कना[३७] । घड्या क्यो तुझे यो समाया[३८] कना ॥
दिया ज्वाब ओ यो कि ऐ राय, मूँ । देखन आया या के तमाशा के तैं ॥३४२०॥
अजब कुछ सो रौनक[३९] था इस ठार का । अजब कोइ राजा है इस शहर का ॥
ज़मी का मगर यो है देवेन्द्र आज । पुनम[४०] का यही है मगर चन्द्र आज ॥
जो बेटी अहे एक इस राज कूँ । सो है बेबदल[४१] हुस्न[४२] में आज कूँ ॥
नियत[४३] यो है उसका जो तुज राज बाज[४४] । न छोडे[४५] किसी मर्द दुसरे कुं आज ॥
येते कुछ है औसाफ[४६] तेरे यहाँ । इस यक जीभसो कह सकूँ मै कहाँ" ॥
इसी गुफ्तगू[४७] में ये मिल दोइ सूँ । वैं[४८] ऐसे मने[४९] पा खबर कोइ सूँ ॥

---

१ प्रथम, २ पोशाक, ३ उसमें, ४ अनमोल, ५ वाहर, ६ दरियाई नारियल का पात्र, ७ चाहे, ८ दुर्लभ भोग, ९ इरादा, सकल्प, १० रहे, ११ वहाँ ही, १२ उपस्थित, १३ डडा, १४ कहीं, १५ प्रकट, १६ प्रसन्न, १७ इसके वाद, १८ मेरे आगे, १९ विवेक, २० विचार को, २१ दाईं ओर, २२ वाईं ओर, २३ विशेष, २४ उठा, २५ मेरे सम्मुख, २६ झझट, २७ वैसे ही, २८ छुट्टी, २९ वस्तुएं, ३० पसद, ३१ पात्र, ३२ पोशाक, ३३ डडा, ३४ अभिप्राय, ३५ सीधे, ३६ प्रासाद, ३७ कहना, ३८ मनमें आया, ३९ रमणीय, ४४ पूर्णमासी, ४१ अनमोल, ४२ सौंदर्य, ४३ इच्छा, ४४ विना, ४५ व्याहे, ४६ गुण, ४७ वातचीत, ४८ वहाँ, ४९ इसी समय।

कहै वाँ के राजे कुँ जा नागहाँ[1] । कि "माचीन का राय आया यहाँ" ।।
वो राजा सुन्या यो खबर जिस घडी । खुशी आपने दिलमें लिया ले बडी ।।
चल्या वैं अपे[2] सामने रायके । .... ।।
देखत रायकी शान के धात[3] कूँ । गया भूल कर आपनी जातकूँ[4] ।।३४३०।।
मुहब्बत सों मिल बैस[5] यक तख्त पर । खुशी सों गमा[6] वक्त इस बक्त पर ।।
दुजे दिन गुना[7] मेजबानी[8] बडी । दिया बेटी उस देख अमृत घडी[9] ।।
जों ओ राय खुर्शीद[10] के नूर का । देख्या रूप उस रूपसमूदर का ।।
हुआ शाद[11] यों जो कह्या कुछ न जाये । .... ।।
जो वो चार बस्तां[12] थे उस रायकन[13] । निझा[14] देख यक देस वो गुलबदन[15] ।।
कह्या तब कि "ऐ नार, यो चार सो । मेरे जीव के ऐन[16] है यार सों ।।
अगर पूछती है मुँज उसका तू मोल । है तेरी मेरी बादशाही की तोल ।।
कि अज़मत[17] उनों का जो कुछ है तमाम । अँगे[18] यकबयक होवेगा तुजकुँ फ़ाम[19] ।।
अहानत सेती[20] तूँ इननकूँ न देख । यो चारों हैं औतार[21] एकसते एक[22]" ।।
कि इस धात[23] गुजरे[24] देखत चंद रोज । .... ।।
रुख[25] अपने नगर होर मुलक धेरे[26] कर । जो महबूब[27] कूँ ले चल्या फेरकर ।।
वज़ीर अपने दिलमें हुआ तब दुखी । फिरा रूप यकबारगी हो मखी[28] ।।
गुपत राज[29] अपना छिपा रायपर । लग्या रायके दौर[30] कूँ जायकर ।।
जो अंगे[31] हो मंजिल यो मंजिल चले । वो दो भाइ आ बाट म्याने[32] मिले ।।
नजर राय की जो उनन पर पडी । सो यक झाड के तल उतर उस घड़ी ।।
कह्या उज्रख्वाही[33] सों "ऐ भाइ हो । हुँ माचीन का मै अपे राय सो ।।
जरूरत बदल[34] मै वो बस्ताँ चहार[35] । गया लेके तुमनासों[36] कुछ ना विचार ।।
इनों सों च[37] थी सरफ़राजी[38] मेरी । .... ।।
मेरा चूक[39] बख्शो[40] न मानो बुरा । खुशी सों तुमे[41] ल्यो यो बस्ताँ फिराँ ।।३४५०।।
कहे तब वो दो भाइ "ऐ हक-गुजार[42] । हमे तुजते खुशनूद[43] है बेशुमार[44] ।।३४५२।।
कि लैं[45] दिनते इस चार बस्ताँ बदल । हमन दोनों भायाँ मे था जो ख़लल[46] ।।

---

१. यकायक, २. स्वयं, ३. भाँति, ४. अपने-आप, ५. मिल बैठना, ६. बिता, ७. गिनवाकर, ८. बात, (आतिथ्य), ९. शुभ घड़ी, १०. सूर्य, ११. प्रसन्न, १२. वस्तुएँ, १३. राजा के पास, १४. ध्यान से, १५. पुष्पतनु, १६. बिलकुल, १७. बडप्पन, १८. आगे, १९. समझा, २०. अपमान से, २१. अद्वितीय, दुर्लभ, २२. एकसे एक, २३. भाँति, २४. बीते, २५. मुँह, २६. मुल्क के पास, २७. प्रियतमा, २८. मक्खी, २९. रहस्य, ३०. द्वार, ३१. आगे, ३२. बाट मे, ३३. क्षमा-प्रार्थना, ३४. जरूरत के लिए, ३५. चार वस्तुएँ, ३६. तुमसे, ३७. इनसे ही, ३८. सौभाग्य। ३९. भूल, ४०. क्षमा करो, ४१. तुम, ४२. सत्यवादी, ४३. सौभाग्यशाली, ४४. अत्यधिक, ४५. बहुत, ४६. बाधा।

जयाँ तें[1] जो तूं लेव कर वो गया । तयाँ तें[2] ख़लल बरतरफ[3] हो गया ॥
मुवारक[4] अछो[5] तुज यो वस्ताँ चहार[6] । कि ऐसे हमन पास है बेशुमार ॥
यो ना हो मँगँगा तुं भी कुछ फतुह[7] । तो सिकलायेंगे तुज हमें[8] नक्लरुह[9] ॥
मुहब्बत के मारग में जो आये ओ । सो वै नक्लरुह उसकूं सिक्लाये ओ ॥
मखी हो को जो लग रहा था वज़ीर । सो वो भी सिख्या वो हुनर[9] बेनजीर[10] ॥
रजा[11] तुर्त दे गायकू दोनो भाय । सो भी वो खडावे[12] उमस[13] साथ राय ॥
किया क्स्द[13] माचीन का दिल मने । सो अँपड्या उसी शह्र जा तिलमने[14] ॥
हुआ देख नजदीक कई[15] एक ठार । जो वैठ्या वहाँ टुक खडावें[12] उतार ॥
वै[8] ऐसे में[8] हो आदमी ओ वजीर । किया रायकू आको तस्लीम[16] फीर ॥
कहया देख राय उसकु कि "इस ठार को । तु आया सो क्यों[8] 'वो दिया जवाब[17] यों[8] ॥
कि "मैं तुजते अगे च[18] आया हूँ यां । ॥
भला जो तूं खेले हरिन का शिकार । कि है[8] इस जँगल में[8] हरिन बेशुमार ॥
खयानत[19] सों[8] वै[8] दिल फिरा तब वज़ीर । कह्या यो कि "ऐ राय गर्दू-सरीर[20]" ॥
हुनर एक दीपकनगर बीच मुंज । चड्या हात सो कहने मँगता[21] हूं तुज ॥
अगर मुंजकुं होवे इशारत[22] तेरा । मखी होउँगा अपनी सूरत फिरा" ॥
रजा[23] जो दिया राय भोगी सखी[24] । सो दिखलाइया उन अपस कर मखी[25] ॥३४७०॥
देख्या उस हुनरकू जो ओ गुननिधान । कह्या "यो हुनर सहलकुछ है कि जान ॥३४७२॥
मेरे पास ऐसा च[26] है यक हुनर । चढा जीव मुर्दे के घडके भितर ॥३४७३॥
करूं ज़िन्दा होर फिर अपन घड में आउँ" । ॥
सुन्या रायते बात ज्यों[8] ओ वजीर । कह्या रायकूं फिर कि "ऐ दस्तगीर[27]" ॥
मेरी जात म्याने[28] अथा[29] जो हुनर । सो दिखलाइया तुजकुं ॥
अगर लुत्फ[30] कर ओ हुनर तूं दिखाय । मेरा जीव भी तुजते टुक अम्न[31] पाय" ॥
सो वै[8] राय हो अपने घडते बहार[32] । उस आहू[33] के घडमें[8] किया जाको[34] ठार ॥
देख्या रायके घडकुं खाली उने । सो दरहाल[35] जा सपड्या[36] उसमने ॥
निकल वाँ ते आ राय के रूप सूं । ले अपने मँगात उस उतम जाइ कूं ॥३४८०॥
नमक राय का कर अपस पर[37] हराम[38] । ॥
कदम शूम[39] रख उस खडावे उपर । चल्या राय म्हाडी मने[40] पैसकर ॥३४८२॥

---

१ जबसे, २ तबसे, ३ अलग, ४ धन्य, ५ रहो, ६ चार, ७ विजय, ८ शरीरांतर में आत्मा का प्रवेश, ९ विद्या, १० अनुपम, ११ अनुज्ञा, १२ उत्साह, १३ इरादा, १४ पलमें, १५ कहीं, १६ अभिवादन, १७ जवाब, १८ आगे ही, १९ विश्वासघात, धरोहर हडपना, २० आकाश-शरीरी, २१ चाहता हूं, २२ सकेत, इशारा, २३ अनुज्ञा, २४ तरुणी, २५ मक्खी, २६ ऐसी ही, २७ हस्तावलबन देनेवाले, २८ व्यक्तियों में, भीतर, २९ था, ३० कृपा, ३१ शांति, ३२ बाहर, ३३ हरिन, ३४ जाकर, ३५ तत्काल, ३६ घुसा, ३७ अपने ऊपर, ३८ अभोग्य, ३९ मनहूस, ४० अटारी में।

सब यक धेर ते[१] अरकाने-दौलत[२] मिले । ....॥
धरे कोइ सिर भूइँ कये कोइ सलाम । वले[३] राज[४] किसकूँ हुआ कुछ न फ़ाम[५]॥
जो दिन जाको[६] संचर[७] हुआ शाम का । हुआ देखकर वक्त आराम का॥
चल्या रूपसमदूर की सेज धीर[८] । अदा परते उसके ओ रोशन-जमीर॥
समझ दिलमने[९] ली जो यो राय नोँय । लिया है उसीका मगर रूप कोय॥
लेती उसके नज्दीक ते अपसें[१०] काड । उठी बोल योँ उसकुँ बाताँ मेँ पाड[११] ॥३४९०॥
"सही रायका कालबुद[१२] तूँ तो होय । वले[१३] इस भितर राय का रूह नोय॥३४९१॥
अगर तू वही राय सचला[१४] अछे[१५] । हुँ तेरी च कर जान मुँजकूँ सचे॥३४९२॥
मेरी बात ना सुन तुँ जोरी पो[१६] जाय । तो सच जान इस तिल मेरा जीव जाय"॥
सुन यो बात वैँ उसकुँ लरजा[१७] छुट्या । जरूरत सो उसके नजिकते उठ्या॥
वैँ अव्वल की[१८] औरत के घारमेँ चल्या । सो उन बी रविश[१९] उसकी खातिर[२०] मेँ ल्या॥
हो दिलगीर[२१] सख्त उसके आने पोते[२२] । लेई खीच अपस एक भाने सेते[२३]॥
न रोजी[२४] हुआ देख उनन का वसाल[२५] । दिया छोड उस दोइ का ओ खियाल॥
वले देखने रोज आता अछे । यो दोनोँ के तैँ[२६] देक जाता अछै॥
यकायक अँगे[२७] दिन जो खूबी के आय[२८] । हरिन होके जो था जँगल मेँ वो राय॥३५००॥
सो रावाँ देख्या यक मुआ सो कहीँ । हरिनके निकल जिस्म मेँ तो वहीँ॥
सँचर[२९] तनमेँ रांवी के पाया क़रार[३०] । उड्या वाँ ते खुशहाल[३१] पँख मार-मार॥
उतर आपने कस्र[३२] के वाम[३३] पर । नवी अपनी महबूब कूँ फ़ाम[३४] कर॥
यकट[३५] देख उसे खोल मिन्कार[३६] वैँ । किया सब जफ़ा[३७] उसपो इज़्हार[३८] वैँ[३९]॥
कही राव ओ औरत कि "ऐ राय तुज । गवाँ ले दुखी थी सो फिर पाइ तुज॥
वले[४०] रूप तेरा है राँवाकेरा[४१] । मुलाकात क्यों रोवे तेरा मेरा"॥
कह्या फिर ओ राँवा कि "ऐ हमजलीस । जब आगा महल मे तेरे ओ खबीस[४२]॥
नजिक बैसला[४३] कर मिठी बात तूँ । ओ खुश होय त्योँ बोल इस धात[४४] तूँ॥
वो मुज दलमें था दगदगा होर गुमान[४५] । हुआ आजते दूर कर तू पिछान[४६]॥
मेरा मर्द तहक़ीक[४७] सों तूँ च होय । बगैर[४८] तूँ नही है मुजे गैर[४९] कोय॥३५१०॥
वले रूह के नक़्ल[५०] का जो हुनर[५१] । अथा[५२] तुजमे दिखला मुँजे यक नजर॥३५११॥

---

१. एक ओर से, २. राजामात्य, ३. लेकिन, ४. रहस्य, ५. समझ, ६. जगह, ७. संचार, ८. रूप-समुद्र की शय्या के पास, ९. दिल मे, १०. स्वयं, ११. डाल, १२. शरीर, १३. लेकिन, १४. सच्चा, १५. है, १६. जबर्दस्ती, १७. कंप, १८. पहिली, १९. चाल-ढाल, २०. दिल, २१. दुःखी, २२. आने पर से, २३. बहाने से, २४. प्राप्त, २५. मिलन, २६. दोनों को, २७. आगे, २८. भले, २९. प्रवेश, ३०. निश्चय, ३१. प्रसन्न, ३२. महल, ३३. कोठे, ३४. समझ, ३५. अकेली, ३६. चोंच, ३७. अत्याचार, ३८. प्रकट, ३९. वहीं, ४०. लेकिन, ४१. तोते का, ४२. दुष्ट, ४३. बैठा, ४४. भाँति, ४५. सन्देह, ४६. पहिचान, ४७. सचमुच, ४८. बिना, ४९. दूसरा, ५०. स्थानान्तरण, ५१. विद्या, ५२. था।

मुजे यो हुनर जब तूं दिखलायेगा । मेरा रूह[1] तब तुजतें सुख पायगा ॥३५१३॥
छुपा रख मुंज उन आये लग एक ठार" । ॥
सुन इस बात कूं ओ सोहागिन सखी । कर अप जीव[2] पिंजरां छुपा उस रखी ॥
जो मजलिसतें[3] उठ दूसरे देस फिर । जो आया ओ उस पद्मिनी के मँदिर ॥
उसी धात बातांमनें[4] घाल[5] कर । अवि क उस सियह्दिल[6] कूं खुशहाल[7] कर ॥
जो बोली तो राजी[8] हुआ नाबकार । उसी तिल[9] जिवां एक गधडे[10] की मार ॥
निकल राय के तनमने तें[11] सो फेर । जो गधडे के तनमें गया पैस कर ॥
सो दरहाल[12] ओ राय आलीतबार[13] । निकल कालबदमें ते रावी के भार[14] ॥३५२०॥
किया आपने तनमें जाकर मुकाम । ॥
ओ गधडा जा था कर कुतब मार उसे । कुत्या हाथ घसडा[15] सुटे[16] भार[17] उस ॥
कमल के नमन[18] बादजा[19] राय खिल । लग्या राज करने ॥३५२८॥

—कथा २९

सुन्या हूँ जो यक कोइ जाहिद[20] गँभीर । ॥
यक औरत थी उस होर बेटा भी एक । वले था ओ न्हनवा ताले[21] में नेक[22] ॥३८३०॥
गुजरता अछे[23] उसपो फाका[24] मुदाम[25] । बगैर'ज[26] हलाल उन न खावे हराम[27] ॥
मुसल्लम[28] पड्या बेनवाई[29] सो घर । सो यक रात सुपने में वक्तें-सहर[30] ॥
बशारत[31] दिये कोइ आ इस बजा[32] । कि "ऐ जो गुजरता है तुजपर जफा[33] ॥
सतर[34] आज उठ जा सु तूं सहरा के घेर[35] । अंख्यां खोल कर देख चोफेर फेर ॥
पँखी हफ्तरंगी[36] ले कोइ नागहा[37] । शिकारी मिलेंगा तुझे यक वहाँ ॥
ले उस पासने ओ पँखी मोल तू । वले भी[38] किसी घेर[39] नको[40] बोल तू ॥
कि जिस घरमने[41] वो जनावर अछे[42] । तो न्यामत[43] से भर दायम ओ घर अछे ॥
जो कुछ है खवास[44] उस पँखी मूं तमाम[45] । अँगे दिन वो दिन होयेंगे तुजकूं काम[46] ॥
जो इस घात[47] का ख्वाब[48] उसकूं हुआ । खतर उठ उसी घातओ बेनवा[49] ॥
जो सहरा वधन[50] सर करता चला । सो नागाह् वाँ यक शिकारी मिला ॥३८४०॥
नजर जो पड्या उस पँखी पर सो वँ । लिया मोल, ॥३८८१॥

---

१ आत्मा, जीव, २ अपने जीव, ३ सभा से, ४ बातों में, ५ डाल (हरियानी), ६ काले दिल, ७ प्रसन्न, ८ सहमत, ९ पल, १० गदहे, ११ तन में से, १२ तत्काल, १३ महामहिम, १४ बाहर, १५ घसीट, १६ फेंके, १७ बाहर, १८ कमल-सदृश, १९ इसके बाद, २० पूजापाठ-रत, २१ भाग्य, २२ इच्छा, २३ हैं, २४ निराहार, २५ सदा, २६ विहित, २७ निषिद्ध, २८ पूरा, २९ गरीबी, ३० प्रात काल, ३१ खुशखबरी, ३२ इस प्रकार, ३३ विपत्ति, ३४ सवेरे, ३५ जगल के घोरे, ३६ सप्तरंगी, ३७ यकायक, ३८ लेकिन, तो भी, ३९ किसीके पास, ४० नहीं (मा), ४१ घर में, ४२ रहें, ४३ उत्तम भोग, ४४ गुण, ४५ सारे, ४६ समक्ष, ४७ भाँति, ४८ स्वप्न, ४९ गरीब, ५० जगल की ओर।

.... । दिया छोड़ आँगन में उस मुर्ग कूँ ॥३८५०॥
लग्या मुर्ग जों फिरने पर झाडकर । झडे दो रतन सों लिया काड कर ॥
चल्या ओ उमस साथ[1] बाजार कूँ । जो दिखलाइया जा खरीदार कूँ ॥
बड़े मोल के दो रतन देख ओ । दे पैके[2] वहुत उस लिया मोल ओ ॥
ओ माया चढ्या हात वैं एक बार । दलिदर[3] ते फ़ारिग[4] हो पाया क़रार[5] ॥
फ़रागत सों[6] औक़ात[7] चलने लग्या । घर उसका सो जों दूध उबलने लग्या ॥३८५५॥
किया कामयाब[8] आखिर[9] ओ ख्वाब[10] उसे । .... ॥३८६०॥
कतेक नौबहार[11] होर केतक ख़ज़ाँ[12] । खुशी साथ गुजरान कर वादजाँ[13] ॥
मुराद[14] अपनी हासिल[15] हुई देखकर । नियत[16] हज[17] की ओ जाहिद नेक[18] कर ॥
क़ह्या अपनी औरत के घेर[19] खोल हाल । कि "वाजिब[20] हुआ हज मुँज उपराल[21] एताल[22] ।
जो मक्का के असबाब[23] का सज करूँ । अपस वाँ लग अँपडूँ होर हज करूँ ॥
मेरी गैब[24] अछ[25] घरमने[26] तूँ हुशयार । न भा[27] पाँव दहलीज में ते तुँ भार[28] ॥३८६५॥
अँगे[29] देख कर खर्च घर का चला । .... ॥३८६८॥
चली है रविश[30] पाक बीब्याँ की जों । चला अपने वाडे[31] के लोगाँ में वों ॥३३६९॥
किसे गैर के घेर[32] नको झाँक तूँ । रख अपनी असालत[33] उपर आँख तूँ" ॥३८७०॥
जे कुछ बोलना था सो बोल्या तमाम । चल्या आप मक्के कुँ ओ नेकनाम[34] ॥३८७१॥
कतेक दिन गुजर गये पँछी एक दिन । ओ औरत्त यकाएक चुप एक छिन ॥३८७३॥
निकल घरते दहलीज में आ खड़ी । सो यक ज्वान सर्राफ़ पर उस घड़ी ॥
पड़ी आँख उसकी सो लब्दी[35] वहीं । सो बाँदी कुँ वेग भेज करदी वहीं ॥
बुला जा ओ बाँदी जो ल्याई उसे । .... ॥
हलों[36] वादजाँ[37] बोल उठी उसके धिर[38] । "भला जो तुँ रोज आये मेरे मंदिर" ॥३८७७॥
सुन्या जो ओ सर्राफ उसते यो बात । घर आने लग्या वों च[39] दिन होर रात ॥३८७९॥
अवल[40] मुफ़लिस[41] उन थी, कि था जानता । सो वै बात में बात गुजरानता[42] ॥३८८०॥
लग्या पूछने खुश उसे एक दिन । कि "थी मुफ़लिसी[43] तुजकुँ अव्वल[44] कठिन ॥
यकायक यो वरकत[45] हो ऐ मुखसिरी[46] । किधर ते तुज आई कि ऐ गुनभरी" ॥३८८२॥

---

१. उत्साह के साथ, २. पैसे, ३. दारिद्र्य, ४. मुक्त, छूट, ५. धीरज, सन्तोष, ६. आराम से, ७. समय, ८. सफल, ९. अन्त में, १०. स्वप्न, ११. नववसंत, १२. पतझड़, १३. इसके बाद, १४. मनोकामना, १५. प्राप्त, १६. इच्छा, १७. मक्का-यात्रा, १८. भला भगत, १९. स्त्री के पास, २०. उचित, २१. मेरे ऊपर, २२. इस समय, २३. सामान, २४. अनुपस्थिति में, २५. रह, २६. घर में, २७. पा (पं०), २८. बाहर, २९. आगे, ३०. चाल, व्यवहार, ३१. महल्ले, ३२. दूसरे के पास, ३३. कुलीनता, ३४. सुनाम, ३५. फँसी, खिंची, ३६. धीरे, ३७. इसके बाद, ३८. उसके धोरे, ३९. वह भी, ४०. प्रथम, ४१. गरीब, ४२. डालता, करता, ४३. गरीबी, ४४. पहिले, ४५. अभिवृद्धि, ४६. मुखश्री।

ओ नादान[1] कमअक्ल[2] यकबारगी[3] । ..।।३८८९।।
कही "हफ्तरगी[4] जो है मुर्ग यो । है उसकी तरफने यो सामान[5] सो" ।।३८९०।।
वैं[6] ए राज[7] रख दिल में सर्राफ का । ।।
गया अपने घरसो उसूँ[8] यक हकीम[9] । बरनहार था आशनाई[10] कदीम[11] ।।
कह्या खोल उस मुर्ग की बात उसे । ओ हिकमत मने[12] देख उस सात[13] उसे ।।
कह्या इस वजा[14] मो जवाँ खोलकर । "सिर उस मुर्ग का कोइ खावे अगर ।।
तो होय बादशाह इसमें कुछ शक[15] नही । ।।३८९६।।
सुन्या उसते सर्राफ यो[16] बात जो । ।।३८९९।।
न आने पोते[17] उसके उड जा परान । ओ जाहिद[18] की औरत लगी तिलमिलान ।।३९००।।
सीना विरह दाट्या[19] देखत बेक्यास[20] । किसीकूँ दई भेज सर्राफ पास ।।३९०१।।
क्या तब ओ सर्राफ "ऐ गुलअजार[21] । अगर सच मुंज उपराल तेरा है प्यार ।।
तो दौड्या है मेरा दिल उस मुर्गपर । खिलागी तुं उस मुर्गकूँ काटकर ।।
तो तेरे उतम दरस कूँ आउँगा । अगर नैं तो यो शह्र सुट[22] जाऊँगा" ।।
सुन यो बात पूरा हो दिलगीर[23] सो । निपट तिलमिलाने लगी फेर ओ ।।
जहाँ उस लेखे भव अँधारा हुआ । जनम उस बगैर[24] उसपो खारा हुआ ।।३९०९।।
दई छोडकर मुत्लक[25] इसाफ[26] कूँ । जरूरत[27] सो राजी हो सर्राफ सूँ ।।३९१०।।
बोला भेज उस मुर्गकूँ काट खुश । लगी मेहमानी कुँ वैं दाट[28] खुश ।।
पका मुर्गकूँ जो रखी देग उतार । सो फर्जंद हो भूखते बेकरार ।।
लग्या शोर उचा[29] जोरसो हट करन । लेजा दाइ उसे तुर्त उम देगकन ।।
सिर उस मुर्ग का काड कर उस खिलाय । धुलवा मूँ किनारे ले जा बैसलाइ ।।
ओ अँपड्या मो हेंडा वर्जां[1] देग झाड । जे कुछ था सो सब एककासे[31] में काड ।।
रखी आँगे[32] सर्राफ के ल्याइ कर । न था उसमने[33] सिर सो ना खाइ कर ।।
वो यो बात सुनता च कासे[34] कुँ फोड । हो दरहम[35] चल्या वाँ ते ले मूँ मडोड ।।
कि जिम ठार अछता अथा[36] ओ हकीम । ।।
कह्या खोल यो कैफियत[37] उसके घरे[38] । सो बोल्या हकीम इस वजा[39] उससो फेर ।।३९२०
कि "खाया है उस मुर्ग का सिर जो कोय । सिर उसका जिने[40] खाय सो राज होय" ।।२९२३।
यो होला[41] जो पाया सर्राफ ने । लिया खीच पूरा न जा उसकने[42] ।।

---

१ मूर्ख, २ निर्बुद्धि, ३ तुरत, ४ सप्तरगी, ५ द्रव्य, ६ वहीं, ७ रहस्य, ८ उसका, ९ वैद्य, १० मित्रता, ११ पुराना, १२ वैद्यको, १३ साथ, १४ प्रकार, १५ चिंता, १६ भाँति, १७ आने पर से, १८ भगत, १९ जला, २० उत्कंठा, २१ गुलाबी गालोंवाली, २२ छोड, २३ दुःखी, २४ उसके बिना, २५ बिलकुल, २६ न्याय, २७ गरज, २८ ठाट, २९ उठा, ३० बाद-अजाँ, इसके बाद, ३१ कटोरे, ३२ आगे ३३ उसमें, ३४ कहना, ३५ कुपित, ३६ था, ३७ बात, माजरा, ३८ उसके पास, ३९ प्रकार ४० जिसने, ४१ उपाय, ४२ उसके पास।

उस औरत कुँ बतरी[१] लगी छटपटी । बिरह के अँगारा ते जल होय भठी ।।
दई भेज पैगाम[२] फिर उसके पास । कि "ऐ संगदिल, तपते हुइ मैं निरास ।।
तेरे ताँइ उस मुर्ग का सीस काट । कीती[३] अपनी जिंदगी बाराबाट ।।
सिर उसका जो खाया न्हना कुछ न जान । मुँज उपराल हर्गिज[४] बुरा तू न मान ।।
जे कुछ तूँ कह्या था सुनी वो च[५] मै । लिया खीच यों क्या सबब[६] आप तैं[७] ।।
बहरहाल[८] आ दर्स दिखला तेरा । कि होटों में आ जीव रह्या है मेरा' ।।३९३०।।
दिया भेज सर्राफ यों बोल फिर । जिने मुर्ग का सो जो खाया है सिर ।।
सिर उसका अगर काट देगी मुँजे । तुँ माशूका[९] मेरी कि समझुँ तुझे ।।
अगर नैं तो बस है तेरी आशनाइ ।" ....।।
जनी[१०] माँ हो बेटे के सिरते उठी[११] । सों दिलकूँ लगी दाइ के छटपटी ।।
अधीरात गफलत[१२] में उस पाडकर[१३] । न्हनेकूँ चली वाँ ते ले काड कर ।।
सो परमुल्क में दूर जा की मुकाम[१४] । लगी पालने चावसों सुबहो शाम[१५] ।।
जो न्हन वाद केते[१६] ओ शाना[१७] हुआ । अदबगार[१८], दाना[१९], तवाना हुआ ।।
तिरंदाज[२०] ऐसा हो निकल्या गभीर । जो उस दौर[२१] में कोइ न था उस नजीर[२२] ।।
क़जारा ओ यक देस खेलन शिकार । चड्या रक्श[२३] उपराल जो आशकार[२४] ।।
जो बेटी थी उस शह्रके शाह की मगर[२५] । जाई[२६] थी मेह्र[२७] होर माह[२८] की ।।३९४०।।
निकल सैर कू उस दिन आइ थी बहार[२९] । देख उस ज्वानका रूप हुइ बेकरार ।।
जो देखी नजर[३०] भर सो उस ज्वान कूँ । उतम दिलरुबा[३१] धरति के भान[३२] कूँ ।।
मुहब्बत लगा जीवसों बेकयास[३३] । दई भेज मखफ़ी[३४] किसे[३५] इसके पास ।।
कि "तू कौन होर काँ है तेरा वतन[३६] । है किस खान का जोतवन्ता[३७] रतन ।।
मेरे दिलमें यों है, जो लोडूँ[३८] तुजे । पिरित जिव सों जोडू न छोडूँ तुजे ।।
वले[३९] शर्त[४०] यों है जो यों एक ठार । फ़लाने[४१] जँगल धेर है कल्बे[४२] गार[४३] ।।
वहाँ अज्दहा[४४] एक ऐसा गँभीर[४५] । जो रुये-जमी पर[४६] नही उस नजीर[४७] ।।
निगलता ओ यकदम में दस-पाँच । सके सोस[४८] उसकी न कोइ आँच कूँ ।।
येते आदम्याँ खाइया है जो हाड । पहाडाँ हो नीचे है चौधेर[४९] उजाड़ ।।

---

१. बहुतेरी, २. संदेश, ३. किया (पंजाबी), ४. कदापि, ५. वैसे ही, ६. कारण, ७. अपने को, ८. जैसे भी हो ९. प्रियतमा, १०. प्रेम, ११. जानपर, पड़ी १२. धोखे, १३. डालकर, १४. निवास, १५. प्रातः सायं, १६. धीरे-से, १७. जवान, १८. शिक्षा-सम्पन्नों, १९. चतुर, २०. धनुर्धर, २१. जमाने, युग, २२. उसके जैसा, २३. घोड़े, २४. प्रकट, २५. मानों, २६. बेटी, २७. सूर्य, २८. चंद्र, २९. बाहर, ३०. आँख, ३१. मनोहर, ३२. भानु, सूर्य, ३३. अत्यधिक, ३४. चुपके, ३५. किसी को, ३६. घर, ३७. द्युतिमान्, ३८. ब्याहूँ ३९. लेकिन, ४०. वरदान, ४१. अमुक, ४२. शरीर के भीतर, ४३. गुहा, ४४. अजगर, ४५. भारी ४६. भूमण्डल में, ४७. उस जैसा, ४८. सह, ४९. चारों ओर।

क्ता[1] है मेरा बाप जे कोइ उसे । जो मारे जीवां, देउँ बेटी उसे ॥३९५०॥
अगर तूं करेगा कुछ इसका इलाज । तो तेरी हुँ तूं मर्द मेरा है आज"॥
सुन ए बात उम्मस में आ वो जवान । कह्या मुंज है आसान[2] यो काम जान॥
अगर शर्त तेरा है यो बरकरार । तो उस सांपकूं चूर करता हूँ मार॥
कि है मुंजकुं तौफीक[3] करतार का । ले आता हूँ सिर काट उस मार[4] का"॥
कह इस घात[5] दुसरे दिन उस गार पास[6] । चल्या मुस्तइद[7] होको रामीके रास[8]॥
सो ऐसे में उस शाहकेरा वज़ीर । गया था तफक्कुर[9] कुं सहरा[10] के धीर[11]॥
गुज़रगाह[12] में उस बहादुर कुं देख । ॥
कह्या "कौन तू होर जाता है का । कहां है वतन होर तेरा ठिकां॥
कह्या "म सिपाही हुँ मर्द गरीब । सुन्या हुँ जो इस शह्र के अनकरीब[13]॥
है यक गार म्याने[14] बडा अज्दहा । ॥३९६०॥
मेरे दिल में आया सो जाता हूँ मैं । सिर उसका ले शहपास आता हुँ मैं"॥
कह्या तब वजीर उस कुं "ऐ नौजवां । फिर इस कामते, तूं, कि है तुज ज़ियां[15]॥३९६२॥
मगर[16] हफ्तरंग मुगका सिर जे कोइ । जो खाया अछे उसते यो काम होय'॥३९६४॥
चढ्या सिरते उम्मस[17] उसे बेशतर[18] । न सुन बात उसका हुआ पेशतर[19]॥
जो अँपडाइया[20] अपसे[21] उस गार कन[22] । देख्या दूरते अज्दहा[23] के कधन॥
शिकम सीर कर[24] सुस्त हो बेशुमार[25] । पड्या है आँख्यां मीच[26] बेइख्तियार[27]॥
उतर रख्श परते[28] लिया हथ कमान । चलाया वेतक तीर उसकर निशान॥
सो बैठे कलेजे में कारी[29] ओ तीर । हो निर्जीव ओ अज्दहा बेनज़ीर[30]॥३९७०॥
रह्या सुस्त हो जो ओ फिर हिल[31] न सका । हुआ दर्मियाने तें[32] जो दूर शक[33]॥
मुंडी काट उसकी छुपा छोड धड । फिर्या वांते खुशहाल तेज़ी पो[34] चढ॥३९७२॥
दुजे दिन उठ्या शह्र में गलबला[35] । जो कोइ शख्स[36] कीता दफा[37] ओ बला[38]॥३९७५॥
जब उस शाहकूं जो खबर अपडी[39] । सो नज़दीक था ओ वजीर उस घडी॥
कि बोला कि मैं सैर करने कुं बल । गया भार[40] मो यक जवां बेबदल[41]॥
मिल्या वाट जकूं । ॥३९७८॥
है अल्बत्ता यो काम उसी ज्वान का । शुजाअत[42] में रुस्तम के था मान का"॥३९८०॥
जो शहकूं हुआ आरजू लख उसे[43] । ढुंड[44] होर इज्जतसों[45] ल्याये उसे॥

---

१ कहता, २ सहल, ३ दया, ४ सांप, ५ भांति, ६ गुहा के पास, ७ तैयार, ८ सीधे, ९ चिंता, १० जंगल, ११ पास, १२ रास्ते, १३ पास, १४ गुहा में, १५ हानि, ज्यानि, १६ हां, १७ उत्साह, हिम्मत, १८ बहुत, १९ पहिले, २० पहुँचाया, २१ अपने को, २२ गुहा के पास, २३ अजगर, २४ भर कर, २५ बहुत, २६ मीच, २७ बेबस, २८ घोडे पर से, २९ गहरा, ३० अद्वितीय, ३१ हिल, ३२ भीतर से, ३३ सन्देह, ३४ घोडे पर, ३५ हल्ला, ३६ आदमी, ३७ खतम, ३८ आफत, ३९ पहुँची, ४० बाहर, ४१ अनुपम, ४२ वीरता, ४३ लाखभाग, ४४ ढूंढ, ४५ सम्मान-सहित।

शिगुफ्ता[1] हो दिलमें. . . । चल्या देखन उस अज्दहा कुँ वहाँ ।।
वो अज्दहा बल्कि था यक पहाड़ । किया था हवेली[2] कुँ चौधेर[3] उजाड़ ।।
पड़्या है धड़ अम्मा[4] न था उसपो सिर । जो सिर काँ है कर पूछिया शाह फिर ।।
छुपाया सो जागे पो तें[5] ओ जवाँ । सिर उसका ले कर आ सुट्याँ[6] दरमियाँ[7] ।।
हजार आफ़रीं[8] भेज शाह उस उपर । फिर्‌या वाँ ते ले उसकुँ दुंबाल[9] घर ।।३९८७।।
दिया उसकुं बेटी किया सरफ़राज[10] । . . . .।।३९९३।।
ओं उस शाह की उम्र पूरी भरी । उसी ज्वानकुँ अपनी दे सरवरी[11] ।।३४९४।।
चढ़ी बादशाही ओ जों उसके हाथ । सो यक दिन सवारी के भाने सँगात ।।३९९६।।
ले दुंबाल उस दाइकूँ नागहाँ । चल्या आपना शह्र था जाँ वहाँ ।।
जो ज़ाहिद जो अपना जन्या बाप था । ओ माई जो उसते हुआ पाप था ।।
बोला भेज दोनों कुँ अपने हजूर[12] । कह्‌या बापकूँ . . . . ।।
कि है घर तुम्हारे सुन्या हूँ जो यक । पँखी हफ्तरंगी[13] . . . . ।।४०००।।
अगर मुँजकूँ दिखलायेंगे यक नजर । तो ममनन[14] हो जाउँगा फेर कर" ।।
कह्‌या जाहिद[15] "ऐ सर्वरे खुशमक़ाल[16] । मेरे घर में था सच वले नँ[17] एताल ।।
जो मक्के गया था बदल हज्ज के[18] । मुआ है फिर आये तलक घरमें नै ।।
जो था यक जिगर-गोशा[19] होर एक दाइ । मुये वो भी अब मैं हुँ होर उसकी माइ ।।
जब ओ फूल हुआ गुम[20] मेरे बाग ते । रयन-देस झकता[21] हूँ उस दाग[22] तें" ।।
सुन्या बापके मँ ते· यो बात जो । कह्‌या बापकूँ फिर को इस धात[23] यो ।।
"मुये कर को दोनों कहे तुजकूँ किन । जो फ़र्जद[24] मैं हूंअ दाई सो इन" ।।
देख उस दाइ का मुख वही कर पिछान । गले ला के बेटेकुँ पाया परान ।।
लग्या हाल पूछन सो फ़र्जदकुँ फेर । कहया कैफियत[25] खोल सब बाप धेर" ।।
वैं उस मादरे-नहस[26] ग़द्दार[27] कूँ । होर उस हीन सर्राफ़ मुर्दार कूँ ।।४०१०।।
सियासत[28] की तरवार सों पाक[29] कर । उसी ठार नाबूद[30] दर खाक[31] कर ।।
फिरयाँ वाँतें वैं[32] बापकूँ ले सँगात । लग्या बादशाही करन जौक़[33] सात ।।
ओ रावी[34] सफ़ा[35] बोल इस धात सों । जबाँ खोल फिर. . . . . ।।
कह्या यो कि "ऐ नार हर क्यों[36] तुँ आज । तेरे मनके मकसूद[37] कुँ दे रवाज[38] ।।
शिताबी[39] सों जा यारकूँ शाद[40] कर । येते दिनकी बारी न बर्बाद कर ।।

---

१. प्रफुल्लित, २. घर के, ३. चारों ओर, ४. लेकिन, ५. जगह पर से, ६. फेंका (पं०), ७. बीचमे, ८. शाबाश, ९. पीछे, १०. भाग्यशाली, ११. सर्दारी, १२. सामने, १३. सप्तरंगी, १४. कृतज्ञ, १५. भगत, १६. सुभाषी सरदार, १७. लेकिन, १८. हज के लिए, १९. दिल के टुकड़े, २०. लुप्त, २१. झँखता, २२. रँज, २३. भाँति, २४. पुत्र, २५. हाल, बात, २६. मनहूस, २७. विश्वासघातिनी, २८. दण्ड, २९. साफ, ३०. नष्ट, ३१. मिट्टी की चीजें, ३२. वहीं, ३३. आनन्द, ३४. तोता, ३५. साफ, ३६. हर तरह, ३७. अभिप्रेत, ३८. पीछे, (छेवट, गुज०), ३९. जल्दी, ४०. खुश।

तुरत दूर कर दिलमें का दगदगा ।" ॥
जो ओ मोहिनी विरहिनी गुल्वदन[1] । हुई मुस्तइद जावने यारकन ॥
गिफक[2] शर्कघेरते[3] हवेंदा[4] हुआ । मो गौगे मो वै[5] मर्द पैदा[6] हुआ ॥
हुये शाद सब घरके बाँदी[7] गुलाम[8] । खुशी ना खुशी सो कर अपसे कुदाम[9] ॥
पड्या मद का घरमने[10] जो कदम । खुशी ना खुशी मो कर अपसे कुदम[11] ॥
रवी मीम जा मद के पाँव पर । ले जा बेमला सेज के ठाँव पर ॥
अदव माथ[12] उसके अँगे[13] हो खडी । खुशामद सो कर गुफ्तगू[14] यक घडी ॥
जो कुछ था सो ल्या मेवा उसकूं खिलाइ । मुहब्बत के प्याले में शर्बत पिलाइ ॥
हो आसूदा[15] घर में घडी तीन-चार । चल्या वादज्राँ[16] मर्द रावी[17] के ठार ॥
उठ्या बोल "ऐ तैर,[18] शीरी-कलाम[19] । किया सर्फ[20] मुंज बाद क्यो मुब्होशाम[21] ॥
तेरा लाड किस घात[22] खाँतू[23] चलाइ । तुजे वक्त बेवक्त क्यों काम आइ ॥
म्हने होर बडे घर के थे किस तरीक[24]" । ॥
ओ रावा कर अव्वल[25] मना[26] होर सलाम । ॥
कने[27] का जो कुछ था सो कह्या खोलकर । उठ्या मेवट[28] इस घात सो बोल कर ॥
कि "ऐ स्वाजा,[29] मैं तेरी गैबतमने । किया खिदमत[31] ऐसी जो वैसी किने[32] ॥४०३०॥
किया नै है इस दौरम्याने[33] अज्हूँ । ॥
मुंज आज़ाद[34] इस पींजरे ते अगर । करूँगा तो कौंगा[35] तुजे सरबसर" ॥
किया शर्त[36] उससो इसी घात उन । सो बोलन लग्या तब कि "ऐ स्वाजा सुन ॥
जो है घर में खातून[37] तेरी हलाल[38] । तेरे बाद अपसें[39] न रख सक सँभाल ॥
जो म्हाडी[40] पो चड खोल खिडकी निकाई[41] । नजर कोई पड्या सो उसूँ इश्क ल्याइ ॥
यकायक जो हुइ इश्क ते बेक्रार[42] । चली भार[43] अव्वल[44] सो शारु[45] के ठार ॥
कीती[46] मस्वरत[47] भार जाने बदल । तेरा नगोनामस[48] खाने बदल ॥
ओ शारु नमक खाइ थी कर तेरा । न जाने दे माने[49] हुई बहुतेरा ॥
सो मारी जिवा[50] पख उसके मडोड । वज़ा[51] आइ मेरी तरफ उसकूं छोड ॥
कही, दे रज़ा[52] मुंज जो टुक भार[53] जाउँ । नवे यार सो यक घडी गमके[54] आउँ ॥४०४०॥

---

१ फूल-जैसे शरीरवाली, २ आकाशीय लालिमा, ३ पूर्व ओर, ४ प्रकट, ५ वहीं, ६ प्रकट, ७ दासी, ८ दास ९ बौखलाहट, १० घर में, ११ देखी, १२ सम्मानपूर्वक १३ आगे, १४ बातचीत, १५ विश्रांत, १६ उसके बाद, १७ तोता, १८ पक्षी, १९ मधुरभाषी, २० व्यतीत, २१ प्रात-साय, २२ प्रकार, २३ बेगम, २४ तरह, २५ प्रथम, २६ प्रशंसा, २७ कहने, २८ तुरत, २९ स्वामी, ३० पीठ पीछे, ३१ सेवा, ३२ की, ३३ समय के, ३४ मुक्त, ३५ कहूँगा, ३६ समय, प्रतिज्ञा, ३७ बेगम, ३८ विहित, ३९ अपने को, ४० चौवारा, ४१ प्रेम, ४२ अधीर, ४३ बाहर, ४४ प्रथम, ४५ मैना, ४६ किया, ४७ सलाह, ४८ इज्जत, ४९ बाधक, ५० जीवित, ५१ इसके बाद, ५२ अनुज्ञा दे, ५३ बाहर, ५४ कविता के।

तब इस बातमें दूर अंदेश[1] कर । ....॥
हिकाताँमने[2] कर गिरिफ्तार[3] उसे । दिया घरते जाने न मै भार[4] उसे।।४०४२॥
है तूँ मर्द उसका ओ तेरी हलाल[5] । तुजे भाये त्यों राख उसकूँ एताल ॥
खुदा तै रिहाकर जो मै याँ ते जाउँ । जो इसगमतेफ़ारिग[6]हो कुछ अमन[7]पाउँ ॥
कि इस औरतॉ सों न जीता कोई ।" ....॥
सुन ऐ किस्सा ओ ख्वाजा[8] दिल सबते तोड । दिया उस कफस में ते[9] रावी कुँ छोड ॥
जो गैरत की आग उसके सीने लगी । सुटचा[10] तोड औरतकूँ एकबारगी ॥
लुटा घर फकीरॉ[11] कुँ सब एक बार । गले घाल[12] ले खर्का[13] सूफ़ी के सार[14] ॥४०५०॥

५. अपनी सफलता के बारे में—

जो तूती मेरे तबा[15] का बेनजीर[16] । है शक्करफ़शानी मने[17] दिलपजीर[18] ।४०५४॥
किया शक्कर अफशान[19] इस धातसों[20] । कि दम कोइ उचावे[21] न यॉ बात सों॥४०५५॥
जो अफ़साना[22] इसमें जो है रस भर्‌या । सो जों शहद होर दूधका है दर्‌या॥४०५७॥
न अफ़साना है बल्कि अफसूँ[23] है यो । हलावत[24] में हलवेते अफजूँ[25] है यो ॥
कि जिस वक्त पर यो अथा नातमाम[26] । उसी वक्त ख्वाहाँ[27]थे सब खासो-आम[28]॥
जो सबका किया आरजू[29] मुंजपे जोर[30] । जरूरत बदल[31] मै लिया सरपो शोर[32]॥४०६०॥
जो यो दास्ताँ[33] बेबदल[34] फारसी । मेरे इम्तिहाँ[35] का हुआ आरसी ॥
हिकायत केतक इसमें के खूब देख । सरस होर रसदार मरगूब[36] देख ॥
परागंदा[37] खातिर[38] न कर इस बदल[39] । किया तर्जुमा मुख्तसर इस बदल॥४०६३॥
हवस होय अगला पढनहारकूँ । न होये कदूरत[40] लिखनहारकूँ॥४०६५॥
कि थोडे में लज्जत अहे होर स्वाद । कि करता अहे इश्तिह[41] कूँ जियाद ॥
यो गुलदस्ता खासा मेरे बाग का । दवा दर्दमदॉ के है दाग का॥४०६७॥
कहाँ आज है यो सकत हर किसे[42] । जो इस धात सों देवे जीनत[43] इसे ॥
यो अफ़साने जब दिलते करते थे जोश । तो कहते अये मर्हबा[44] अक्लो-होश[45] ॥४०७०॥
यो नामा[46] रँगारंग निर्मल निछल । हुआ इस जमाने मे सब बेबदल ॥
मेरे फ़िक्रम्याने[47] ते बे-इख्तियार[48] । निकल आइया है यो नक्शोनिगार[49] ॥४०७२॥

---

१. दूर तक, २. कथाओं में, ३. फँसा कर, ४. बाहर, ५. धर्मानुमोदित, ६. मुक्त, ७. शांति, ८. स्वामी, ९. पिंजड़े में से, १०. छोड़ा, ११. गरीबों, १२. डाल (हरियानी), १३. गुदड़ी, १४. कलंदर-जैसा, १५. मन, १६. अनुपम, १७. चीनी बरसाने में, १८. मनभाती, १९. शक्कर बरसाना, २०. भाँति, २१. उठावे, २२. कथा, २३. जादू, २४. मिठास, २५. बढ़कर, २६. अपूर्ण, २७. इच्छुक, २८. बड़े-छोटे, २९. आकांक्षा, ३०. दबाव, ३१. के लिए, ३२. भार, ३३. कथा, ३४. अनमोल, ३५. परीक्षा, ३६. स्वादिष्ठ, ३७. बिखरे, ३८. दिल, ३९. इसके लिए, ४०. कष्ट, ४१. भूख, ४२. हर किसी को, ४३. शोभा, ४४. शाबाश, ४५. बुद्धि, ४६. पुस्तक, ४७. चिन्तन मे से, ४८. स्वतः, ४९. चित्रण।

अगर यो चढे नुक्तादानों[1] के हात । सोनेंने पर सुने के लिखें नीर सात ॥४०७४॥
हुये हज़रते नक्शबी मुज मदद । दिया मैं उसे तो ख्वाज[2] इस सनद[3] ॥
बरस यक हजार हो चालीस पर नौ[4] । हुये थे यो मोतियाँ पिरोये हुँ मैं तो ॥
लताफत[5] भरी मस्नवी यो अजब[6] । मुकम्मल[7] किया सुगाते पहिली रजब[8] ॥४०७७॥
जो अबयात[9] हैं इसमने अल्फज़ार[10] । बराबर है एक वैत के हर चहार[10] ॥
अजीज़ा कने[12] जम[13] यो मकबूल[14] है । ॥
जवाहर जो है इसमने जिन्स-जिन्स[15] । ॥४०८०॥
कि इस धात[16] के सो रतन रोलिया[17] । होर ऐसी नवी मस्नवी[18] बोलिया ॥
मेरा काम है इस ज़मा ने में आज । कि साजे न यो काम किसे[19] मुंज बाज[20] ॥
जो सुल्तान अब्दुल्ला इस दौर का । है राजा सुलेमान के तौर का ॥
शिगुफ्ता[21] किया देख इसका करम[22] । सो नमकसा[23] मेरी नजर[24] का जामेजम[25] ॥
करूँ क्यों न मैं शुक्र हर दम हज़ार । जा सुन सुर हुआ या शहे-गेतीगार[26] ॥
जो उस शह की खातिर[27] पड्या[28] यो कबूल । सो रहमत[29] हुआ मुंजसो रहमत[29] नजूल[30] ॥
जब यो नज़्म मेरा अरूसी[31] किया । सूरज मुजसो आ दस्तबोसी[32] किया ॥
कहा "ऐ मसुनगज, साहबतमीज़[33] । वचन में सो है मिस तू अजीज़[34] ॥
तरी तबा[35] पर सदहज़ार[36] महबा[37] । ॥
कोई इस बातकूं लाफ[38] जानो नको । बुरे होर सुगदिल मानो नको ॥४०९०॥
कि जिसके सदफ[39] में रतन साफ है । करे लाफ अगर उन तो इन्साफ[40] है ॥
छिपाऊँ केता अपसें[41] कोड[42] मैं । कि छुपती नहीं फूल की बास यें ॥
जेता चाँद बादल तें अपने छिपाय । रहे जोत उसका न निस भार[43] आय ॥
सखुन-परवर यवने हैं यक जियाद । वले[44] और है मुंज जबाँ का सवाद ॥
यो अफसाना[45] जो ऐब[46] ते दूर है । मलामत[47] के अस्मान का नूर[48] है ॥४०९५॥

६ गौवासी के अन्तिम काल के विचार*—

गवासी अगर तूं है सचला गवास[49] । लगा इश्क अपने खुदा सात खास ॥४०९७॥
तेरे दर्द का तूं अपे हो तबीब[50] । ॥

---

१ ममंज्ञों, २ प्रचार, ३ प्रमाण, ४ १०४९ हि० (सन् १६३९ ई०), ५ मजुता, ६ अद्भुत, ७ पूर्ण तैयार, ८ अक्तूबर, ९ अर्धालियाँ, १० शेर, १० चार हजार, ११ वार, १२ प्यारों के पास, १३ सदा, १४ पसन्द, १५ इसमें जाति-जाति का, १६ भाँति, १७ रोला, १८ कथा-काव्य, प्रबन्ध-काव्य, १९ किसी को, २० मेरे बिना, २१ प्रफुल्लित, २२ अनुग्रह, २३. चमका, २४ मन, २५ जमशेद का प्याला, २६ दुनिया के राजा, २७ दिल, लिए, २८ पडा, २९ कृपा, ३० उतरे, आवे, ३१ दुलहिन का काम, ३२ हस्तचुंबन, ३३ विवेकी, ३४ वजीर, ३५ मन, ३६ लाख, ३७ शाबाशी, ३८ डींग, ३९ सीपी, ४० न्याय, उचित, ४१ स्वयं, ४२ बन्दकर, ४३ बाहर, ४४ लेकिन, ४५ क्या, ४६ दोष, ४७ लालित्य, ४८ तारा, प्रकाश, *तूतीनामा। ४९ गोता लगानेवाला, ५०. वैद्य।

चलेगा केता नफ्स[1] के कैमने[2] । केता होयगा नाँवके पै मने[3] ।।
केता शायरी[4] पर धरैगा ख़ियाल[5] । केता होगा दरपये[6] ख़त्तोख़ाल[7] ।।४१००।।
न दिनकूँ समजे होर ना रातकूँ । धुँडेगा केता इस्त आरात[8] कूँ ।।
के ता होयगा यों तुँ दूदे-चराग[9] । केता खुश्क अपना करेगा दिमाग़ ।।
केता फ़िक्र[10] सों हर शबे-तार[11] तूँ । करैगा सुका तन्कूँ जौं तार तूँ ।।
अछैगा[12] केता दर रियाई[13] हनोज । करेगा केता खुश्नुमाई[14] हनौज ।।
हो बेदार[15] यक बार इस ख्वाब[16] ते । निकल भार[17] इस ग़म के गर्दाब[18] ते ।।४१०५।।
मगर नै[19] सुना है जो ईसा नबी[20] । वजिद[21] एक दिन हो कहे "ऐ रबी[22] ।।४१०९।।
दुन्या किस वजा[23] की है दिखला मुँजे । है उस देखने का तमन्ना[24] मुँजे" ।।४११०।।
निदा[25] गैबते[26] आइया इस वजा । "नजर[27] कर फलाने[28] जँगलधेर[29] जा ।।
कि निपजे[30] ख़लक़ में जिस जात[31] सों । ओ दिखलाई देगी इसी धात सों[32] ।।
जो ईसा गये उस जंगल धेर गुजर । पडी एक बुर्क़ा[33] सों औरत नजर ।।
कहे "कुन[34] है तू होर तेरा नाँव क्या । यकेली तुँ करती है इस ठाँव क्या" ।।
सो दरहाल[35] ओ रुख नबीघेर[36] कर । दई ज्वाब इस धातसों[37] फेर कर ।।
"दुन्या जिस कते है सो मेरा है नाँव' । कहे "काड बुर्क़ा[38] जो तुजकूँ निझाउँ" ।।
जो बुर्क़ा सुटी[39] काडकर उस घडी । बुरी शक्लसों[40] तब नजर तल[41] पडी ।।
डुबाई है खुश लहुमने[42] एक हाथ । दुजा हाथ रंगी है मेंहदी सँगात ।।
जो ईसा नबी कूँ लग्या यो अजब[43] । कही खोल ईसाकुँ इस धात तब ।।
"जो यो हाथ लहुसे भऱ्या है मेरा । सो कर खून आई हूँ यक शौ[44] केरा[45] ।।४१२०।।
जो मेंहदी दुजे हाथकूँ ल्याइ हूँ । नवा यक मनुस लोड[46] कर आइ हूँ ।।
इसे भी न खुश कर जीवाँ[47] मार मै । होर एकस के होती हूँ मल्हार मैं ।।
मेरा काम है लोडना[48] छोडना । मेरा रस्म है जोडना तोडना ।।
ऐते मनुस क्ये अदद[49] फ़ाम नै । किसी का मुँजे याद भी नाम नै ।।
उनो सात मिल कर तो सोती हुँ मै । वले बकर सों वोंच अछूती हूँ मैं ।।४१२५।।
मेरी आरजू[50] में जे कोइ उम्र खोय । थे नामर्द उनमें न था मर्द कोय ।।४१२८।।

---

१. लालच, २. कहे में, ३. नाँव के पीछे, ४. कविता, ५. ध्यान, ६. पीछे पड़नेवाला, ७. रंगरूप, ८. उपमा, उत्प्रेक्षा, ९. दीपक के धूम, १०. चिंतन, ११. अँधेरी रात, १२. रहेगा, १३. पाखंड में, १४. आत्म-दर्शन, १५. जागृत, १६. स्वप्न, १७. बाहर, १८. भँवर, १९. लेकिन, २०. ईसा पैगंबर, २१. हठ करके, २२. मेरे भगवान्, २३. प्रकार २४. लालसा, २५. शब्द, २६. परोक्ष से, २७. देख, २८. अमुक, २९. जंगल के पास, ३०. उपजे, ३१. व्यक्ति, ३२. भाँति से, ३३. घूँघट, ३४. कौन ३५. तत्काल, ३६. पैगम्बर की तरफ, ३७. भाँति से, ३८. घूँघट, ३९. फेंकी, ४०. रूप से, ४१. दृष्टि में, ४२. खून में, ४३. विचित्र, ४४. वर, पति, ४५. का, ४६. ब्याह, ४७. जीते को ४८. ब्याहना, छोड़कर, ४९. संख्या, ५०. लालसा।

न कर एतमाद[1] इस गुजरगाह[2] का । यो फादा है दर्वेश[3] होर शाह का ॥४१४९॥
सँभाल अपसे[4] ऐ यार इस दामते[4] । नको[5] गाफिल[6] अछ[7] आपने कामते[4] ॥४१५०॥
इलाही[8] जो दाना है इसरार[9] का । देवे तुज असर[10] मेरी गुफ्तार[11] का ॥४१५३॥
सर-अफराज़[12] दोनो जहा पर करे । जो रहे आरजू कुछ न दिल में भरे ॥
दुआ सो किया खत्म[13] में यो किताब । इलाही दुआ यो करे मुस्तजाब[14] ॥४१५५॥

§ १३ तुकाराम (१६०८–४९ ई०)

तुकाराम महाराष्ट्र के बहुत प्रसिद्ध संत हैं। इनकी वाणी कबीर और नानक की तरह वहाँ प्रचलित है। इनका जन्म १६०९ ई० (शक १५३०) में पूना के पास इन्द्राइन नदी के किनारे बसे देहूग्राम में हुआ था। इनके जीवन का बहुत-सा समय लोहगाँव में बीता। उसी साल महाराष्ट्र के दूसरे सन्त समय रामदास का भी जन्म हुआ था। तुकाने व्यापार करके जीविका चलानी चाही, लेकिन उसमें उन्हें हानि उठानी पड़ी और साथ ही अपमानित होना पड़ा। किसी समय देश में भयकर अकाल पड़ा, जिसमे अन्न के बिना उनकी पहली पत्नी रखूमाई मर गई। धीरे-धीरे भाभी, पुत्र तथा परिवार के दूसरे लोग भी अन्न बिना तड़प-तड़प कर मरे। दूसरी पत्नी जिजाई जीवित रही, जिनका स्वभाव बहुत कठोर था। तुकाराम के लिए कविता और भजन आत्मशान्ति के लिए बड़े साधन थे। इन्होंने हिन्दी में भी कुछ पद लिखे हैं —

१ मंत्र तंत्र नहिं मानत साखी।
प्रेम भाव नहिं अन्तर राखी॥
राम कहे त्याके पग हौं लागूँ।
देखत कपट अभिमान दूर भागूँ॥
अधिक-जाति कुल-हीन नहिं जानूँ।
जाने नारायन सो प्रानी मानूँ॥
कहे तुका जीव तन डारुँ वारी।
राम उपासिहूँ बलियारी॥

२ आपें तरे त्याकी कोण बराई।
औरत कूँ भलो नाम धराई॥
काहे भूमि इतना भार राखे।
दुभत धेनु नहि दुध चाखे॥
बरस मेघ भलने हि बिरखा।

---

१ विश्वास, २ रास्तो, ३ साधु, ४ फदे से, ५ नहीं, ६ प्रमादी, ७ रह, ८ भगवान्, ९ रहस्यो, १० प्रभाव, ११ बातचीत, १२ सम्मानित, सफल, १३ समाप्त, १४ स्वीकृत।

कोन काम आपनी उन्होते रखा ।।
काहे चंदा सुरज खावे फेरा ।।
खिन एक बैठण पावत घेरा ।।
काहे पारस कंचन करे धातु ।
नहि भमोल तुटत पावत धातु ।।
कहे **तुका** उपकार हि काज ।

× × ×

३. सब कर, कर रहिया रघुराज ।।
वैकुंठ-नायक काल कौ सासुर का ।
देत डुबाय सब मँगाय गोपिका ।
स्तंभ फोड़ पेट चिरिया कश्यप का ।
प्रहलाद के लिये कहे भाई **तुका** याक ।
लोभी के चित धन बैठे कामिनी चित काम ।
माता के चित पूत बैठे **तुका** के मन राम ।।
तुका राम बहुत मीठा रे ! भर राखो शरीर ।

× × ×

४. तन की करूँ नावरी उतारूँ पैले तीर ।।
सन्त जन पन्हियां ले खडा राहूँ ठाकुर-द्वार ।
चलत पाछे हूं फिरों रज उड़त लेउं सीर ।।
राम कहे सो मुख भला रे, खाये खीर खांड ।
हरि बिन मुख पो धूल परी रे क्या जनी उस रांड ?
राम कहे सो मुख भला रे बिना राम से बीख ।
अब न जानूं राम ते जब काल लगावे सीख ।
कहे **तुका** मै सौदा लेवे केनन हार ।

× × ×

५. मीठा साधु संत जन रे मूरख के सिर मार ।।
कहे **तुका** भला भया हम हुआ सत का दास ।
क्या जानूं केते मरते न मिटती मन की आस ।।
तुका और मिठाई क्या करूं पाले विकार पिंड ।
राम कहावे सो भली सखी माखन खीर खांड ।।

§१४ मीरां हुसेनी (१६२३ ई०)

कवि सुल्तान मुहम्मदकुल्ली कुतुबशाह (१६८२-१७११ ई०) के समय सैयद मीरां हुसेनी गोलकुण्डा में आकर सौ फकीरों के साथ एक मस्जिद में रहने लगे। इनके सन्त-पन्थ की ख्याति झोपडी से लेकर बादशाह के महल तक थी। इनका अधिक समय मलकापुर गाँव में बीता। मरने पर गोलकुण्डा के नजदीक लगरहौज में इनकी कब्र बनी। इनकी काव्य-कृति 'मसनवी वशीरतुल् मनवर' है, जिसके कुछ पद्य हैं*—

जिव का वी ओ जिवाला, रूपों में रूप आला।
सब के ऊपर है बाला, नित हँसत रह तुं मीरां॥
अकुलाय रूप सब सूं, ओ रूप देक जब तू।
बेरूप के तूं तब सूं, नित हँसत रह तुं मीरां॥
बच्चा बगल में होकर, ढुंढते नगर में रोकर।
सारी उमर यो खो कर, नित हँसत रह तुं मीरां॥
कोई नाक के ऊपर ज्यों, नित बादते नजर क्यों।
दिसते ही जोत कर यों, नित हँसत रह तुं मीरां॥
उस नूर[1] कूं फना[2] है, सूरत जिसमें[3] बना है।
नूर ऐन कूं मना है, नित हँसत रह तुं मीरां॥
सो नूर खास होर, रंग रूप कुछ न आया।
सूरत-शकल न माया, नित हँसत रह तुं मीरां॥
ओ नूर खास आला, सब सूं ऊपर है बाला।
काला न लाल-पीला, नित हँसत रह तुं मीरां॥
जिसमें नूरा यो सारे, जिसे है चांद-तारे।
कुन्दन सूं ज्यों चितारे, नित हँसत रह तू मीरां॥
सब गज का धनी है, धरता वो सब धनी है।
कादर[4] उसे मने है, नित हँसत रह तुं मीरां॥
ऐ नूर खास तूं है, दिसने मे आये सो है।
पैदा हुआ सो वो हैं, नित हँसत रह तुं मीरां॥
की ठांव नांव नै है, नित हँसत रह तुं मीरां॥
कोइ देखत हवा में, दिखते जर्रा सफा मे।
कहते है जात उसमें, नित हँसत रह तुं मीरां॥
सूरत दिसे हवा मे, साया किते खुदा में।
फिर गैब[5] होइ सफा मे, नित हँसत रह तुं मीरां॥

---

* 'दक्खिनी का गद्य और पद्य' (श्रीराम शर्मा, हैदराबाद १६५४ ई०)
१ प्रकाश, २ नाश, ३. शरीर, ४ शक्तिमान्, ५ गुप्त।

दिसते कूँ क्या तू देखे, दिसते कूँ देख देखे।
फिर देक अपकूँ लेखे, नित हँसत रह तूँ मीराँ।।
पैदा जो कोइ हुआ है, वो सब उनों किया है।
ना के अपै आ है, नित हँसत रह तुँ मीराँ।।
कोई जोत देक सारे, उस देक अपको हारे।
रह-रास्ता[1] फिर निहारे, नित हँसत रह तूँ मीराँ।।
वो जोत जीव कहते, उस देक अमन[2] सूँ रहते।
कइ लोग याँह बैठे, नित हँसत रह तुँ मीराँ।।
मुर्शद[3] बगैर कामिल,[4] कर खूब रह सूँ शामिल।
तब होएगा तु आमिल,[5] नित हँसत रह तुँ मीराँ।।
जब रूह को तूँ पाया, है नूर का वो माया।
वो नूर जात पाया, नित हँसत रह तुँ मीराँ।।
नै उसको आना जाना, अला न कमा काना।।
उस नूर का निशाना, नित हसत रह तुँ 'मीराँ'।।
है जात वो इलाही, उसकूँ है बादशाही।
सब चीज पर गवाही, नित हसत रह तुँ मीराँ'।।
तुज...देक ओ देखे, दिसता सो तूँ न तेखे।
बेजान हो तुँ देखे, नित हसत रह तुँ मीराँ।।
जैसे दरिया व मौजां[6], झलते है लाख तूफाँ।
वो ही समन्द के सूरो, नित हसत रह तुँ 'मीराँ'।।
मौजां कूँ अन्त नै है, रहने के अन्त नै है।
दिसने कूँ अन्त नै है, नित हसत रह तुँ मीराँ।।

§ १५. अफजल (१६२६ ई०)

अफ़जल उत्तर का कवि है या दक्खिन का, इसका निर्णय मुश्किल है; क्योंकि उसने अपने वारे में कुछ नही लिखा है। भाषा देखने से वह दक्खिनका अधिक मालूम होता है। अफ़जल ने अपना बारहमासा गोस्वामी तुलसीदास के देहान्त के तीन वर्ष बाद लिखा। उसकी कविता में बहुत कम अरवी-फारसी के शब्द मिलते हैं। उसके कुछ अंश देखिए:*—

सखी री चैत रुत आई सोहाई। अजहुँ उमेद मेरी वर न आई।।
वआलम[7] फूल्या फुवारियां सब। करें सैरां पिया संग नारियां सब।
रहे हैं भँवर फूलों के गले लाग। मेरे सीना जुदाईका लगा आग।।

---

१. सन्मार्ग, २. शान्ति, ३. गुरु, ४. सिद्ध, ५. अभ्यासी, ६. तरंग।* उ० श० पृ० २००।
७. दुनियामें।

निहायत दर्द-दुख हमने सही री । गमे-हिजरा[1] मुझे हर दम रहे री ॥
सखी दिन-रैन मुज नागन डसत है । फिरूँ दूरी तमामी जग हँसत है ॥
मेरे गलमो पडी है परेम फाँसी । भया[2] मरना मुझे और लोग हासी ॥
अरे यह इश्क मा डरनी फिरूँरी । नसीहत[3] अपने कू आपे करूँ री ॥
कि पंजी[4] सो लगन हर्गिज[5] न कीजे । अरी दिल दे हजारा गम न लीजे ॥
वरस दिन भी पहर चलता रहेगा । सदा गममों[6] जिगर[7] जलता रहेगा ॥
जिन्होने दिल मुसाफिर सो लगाया । उन्होने सब जनम रोते गँवाया ॥
अरी ए नैन बरजें ना रहे री । मुझे संग ले पराई बस पडे री ॥
अगर मैं जानती यह बेवफाई । खुदा की सो न करती आशनाई[8] ॥
अरे इस आग ने रुसवा[9] किया री । पियाके इश्क में यह जिव दिया री ॥
बबी हालम्[10] सबा[11] बहरे खुदा[12] री । पियाकूँ जा सुना बातें हमारी ॥
कि तुजकूँ लाज जग की कुछ न आई । करी दिलन हमनसे बेवफाई ।
अरे अनजान साईं में दगा रे । कि तुजसें संगदिलकूँ[13] दिल दिया रे ॥
सजन अब गर कही[14] की लाज वारे । मरूँ हूँ दर गमत[15] टुक आव घर रे ॥
अरे बल-बुद्धि तनमा ना रहे रे । तमामी देह खाकस्तर[16] भये रे ॥
मेरे जिव का भरोसा दम[17] नैंकीजो । मनेरे आय कर दीदार[18] दीजो ॥
अरे यह चैत रुत चलती रहेगी । तुमन बिन बिरह ते जलती रहेगी ॥
अरे भादा कहा सावन कहा रे । मिलो टुक आप के फानी[19] जहा मे ॥
देखू अब जेठमा धूयाँ पडत हैं । हमें हैरा बसरगर्दा फिरत ॥
जिन्हो के है सखी इस रुत पिया घर । उन्होकूँ सर्दखाने[20] है मुयस्सर ॥
हमारे पाँव नंगे धूप सर[21] पर । फिरूँ हूँ दौडते पिउ बाज[22] घर-घर ॥
भमोले[23] सर उपर छाले पगन मो । फफोले हो चले सारे बदनमें ॥
उठन-बैठन की तावत ना रही है । न जानूँ जाँ-ब-तन[24] कब लग रही है ॥
सखी री कोई कहे जा दिल-रुबा[25] सो । सितमगर पुरजफा[26] व बेवफा[27] सा ॥
कि बारह मास भी तुम बिन निभाये । अरे जालिम कहो तुम क्या न आये ॥
तेरे गम[28] ने निपट मुजकूँ दहा रे । यह मुख से जीव लबा पर आ रहा रे ॥
गमत[29] मा जा जे तन[30] बाहर पडैगा । कहो यह खून किसके पर पडैगा ॥
जो अपनी आकबत[31] का खैर चाहो । रुखे जाँ बख्श[32] कूँ अपने दिखाजो ॥

---

१ वियोग-दुख, २ हुआ, ३ उपदेश, ४ पक्षी, उड़तू, ५ कदापि, ६ दुख में, ७ दिल, ८ प्रेम, ९ बदनाम, १० देख मेरी हालत, ११ प्रात समीर, १२ भगवान के लिए, १३ कठोर हृदय को, १४ कही बात, १५ तेरे गम में, १६ राख, १७ क्षण भर, १८ दर्शन, १९ नाशवान्, २० ठंडे घर, २१ प्राप्य सुलभ, २२ प्रिय बिना, २३ लूह, २४ शरीरमें प्राण, २५ मनोहर, २६ जालिम, २७ विश्वासघाती, निर्मोही, २८ दुख, २९ तेरे गम, ३० शरीर से, ३१ भविष्य, ३२ प्राणप्रद।

§ १६. मुकीमी (१६२७ ई०)

मिर्जा मुहम्मद मुकीम मुकीमी ने अपने कथा-काव्य 'चन्द्रबदन व महियार' को गोस्वामी तुलसीदास की मृत्यु (१६२३ ई०) के चार वर्ष बाद पूरा किया। मुकीमी ईरान का निवासी फ़ारसी का बड़ा शायर था, किन्तु सत्रहवीं सदीके आरंभ होने तक हिन्दी की महिमा दक्खिन के दरबारों में बढ़ गई थी, इसलिए अपने दूसरे स्वदेशी शायर तथा बीजापुर के सरकारी (फातूहात आदिलशाही) इतिहासकार की तरह मुकीमी ने भी हिन्दी में काव्य लिखना शुरू किया। इस कवि के बारे में इतना ही मालूम हुआ, कि वह असमाबाद (उत्तरी ईरान) में एक सैयदवंश में पैदा हुआ था। अपने बाप के साथ अरब के तीर्थों की यात्रा करता शीराज (दक्षिणी ईरान) में पहुँचा। पिता के मरने पर अनाथ हो गया। दक्खिन के दरबारों मे फारसी और ईरानियो की बडी प्रतिष्ठा थी। मुकीमी बीजापुर चला आया। यही वह पढ़-लिखकर एक अच्छा कवि हो गया। उसके फारसी-कविता-संग्रह (दीवान) की प्रशंसा समकालीन इतिहासकारों ने की है, किन्तु हिन्दी-कविता का उन्होंने जिक्र नही किया। फारसी के लेखक अभी हिन्दी को इस योग्य नही समझते थे, कि उसका जिक्र अपने ग्रथो मे करते। गौवासी ने अपने काव्य 'सैफुलमुलूक' को गोलकुंडा में चन्द्रबदन से दो ही साल पहले समाप्त किया था। इसलिए शायद मुकीमी ने उसे देखा हो। ऐसा अनुमान किया जाता है, कि 'चन्द्रबदन' के कवि के समकालीन आतिशी ने फारसी में अनुवाद किया था, जिसे बीजापुर के दूसरे कवि बुल्बुल ने हिन्दी मे किया। बुल्बुल ने अपनी पुस्तक में यह स्पष्ट जिक्र किया है*—

हरीरे-हिन्दवी[१] पर कर तु तस्वीर। लिबासे-पारसी[२] है पाय-ज़ंजीर[३]॥
तु ही मुज-बाग में टुक नग्मा-परवाज[४]। सितारे-हिन्दवी[५] दो दम नवा साज॥
पढा था इश्क का हिन्दी रिसाला[६]। पिया नै[७] फारसी का मैं[८] दो साला॥
हुआ बुल्बुल उपर उसने जरूरत[९]। दिखाना फर्स की हिन्दी मे सूरत॥

उसने 'चन्द्रबदन व महियार' को १६८८ ई० (११०० हि०) से पहले लिखा था†।

१. मुकीमी ने मंगलाचरण करते हुए लिखा है††—

मुझे फैज[१०] कुछ बख्श[११] तुझ-ध्यान का। इलाही[१२] तु हाफ़िज[१३] कहै ईमान का॥
मेरा दीनो-ईमान[१४] सारा सो तूँ। मेरे जीव में कीता है ठारा सौ तूँ॥

कविने अपने उपनाम मुकीमी को कई जगह इस्तेमाल करते लिखा है—
दुन्या तो फ़ना[१५] है मुकीमी सभी। रहेगी वचन की निशानी यही॥

---

*त० उ० पृ० ४०।

१. हिन्द रेशम, २. फारसी पोशाक, ३. पैर की बेड़ी, ४. संगीत की उड़ान, ५. हिन्दी सितार, ६. पुस्तक, ७. नहीं, ८. मदिरा, ९. उससे कम।

†त० उ० म० पृ० ३८। ††वहीं, पृ० ३७।

१०. अनुग्रह, ११. प्रदान कर, १२. भगवान्, १३. रक्षक, १४. दीन-धर्म, १५. नाशवान्।

मुकीमी पिरित-बीच अपड्या[1] हुँ मैं । पिरिति के कमँद[2] बीच सँपड्या हुँ मैं ॥
मुकीमी वचन का तरग साज तूँ । हविस का[3] चल्या हैं तुँ महियार कूँ ॥

मुकीमी की कविता एक प्रेम-कथा है। एक हिन्दू-राजकुमारी, चन्द्रवदन पर एक मुसलमान व्यापारी महियार (मुहीउद्दीन) आशिक हो जाता है। सामाजिक कठिनाइया के कारण ब्याह नही होता और दोनो तडपकर मर जाते है। मुकीमी समय के शिष्टाचार के अनुसार किसी बादशाह की प्रशसा नही करता, न वजही और गौवासो की भाँति आत्मप्रशसा करता है। वह कहता है—

किसना मुंज पिरित का कहा एक उन । जो बिसरे तु लैला-मजनूँ कों सुन ॥
हुआ दिलप यो कर तफक्कुर[4] करीब । ॥
वचन दुर[5] हो दिलते उबलने लगे । नवी तर्ज-खुश[6] तब निकलने लगी ॥
जुबाँ कों एता[7] हैं सचा जौहरी । करे नित जबाँ सों[8] गुहर-किसरवी[9] ॥
किसा यह कहू मैं गुहरवार[10] का । सो चदरबदन होर महयार का ॥
सुने कोइ मुज को दुआ याद कर । रहेंगे तअज्जुब सों दिल शाद[11] कर ॥
ततिव्वा[12] गवासी का बाँध्या हुँ मैं । सखुन मुख्तसर[13] त्याके माध्या हुँ मैं ॥
वले[14] मैं अपसकू सराया[15] नही । शेयर[16] में किसी को फिराया नही ॥
सराना-फिराना[17] नहा काम है । करे उन अमल[18] यो कि जो साम[19] है ॥

२ कविता के कुछ नमूने* —

सुना हूँ यक शहृ सुन्दर पटन । अथा[20] राच वहाँ ए हिन्दू बरन ॥
करे राज पूजा सो उस देवका । तमाशा अजायब[21] दिसे सेवका ॥
कि राजो मे ओ राज जग-राज था ।

प्रथम प्रेम में पागल महयार को देखकर किसीने कहा—

कया[22] जा उसे "ए दिवाने बशर[23] । कहा मूँ तु आया चल्या हैं किधर" ॥
उने जाब[24] फिरकर दिया शाहकूँ तूँ । चेत चल पकड अपनी बात कू" ॥
"तु आशिक हुआ है सो किस हूर[25] का । हुआ मुब्तला[26] कह तूँ किस नूर का ॥
तेरा मन लग्या है सो कह तूँ मुझे । जो माशक[27] तेरा मिलाऊँ तुजे" ॥
प्रेमी के देश-देश में घूमने का वर्णन—
हरेक शहरमें जो वा जाने लगया । वहाँ क्या जोजो ब्याँ[28] देखाने लग्या ॥

---

१ पहुँचाया, २ फदे, ३ कहाँ, ४ चितन, ५ मोती, ६ नये अच्छे ढग, ७ इतना, ८. वाणीसे, ९ राजमोती, १० मोतीकी वर्षा, ११ प्रसन्न, १२ ततिम्मा, परिशिष्ट, १३ सक्षिप्त, १४ लेकिन, १५ सराहा, १६ कविता, पद्य, १७ सराहना, चुराना, १८ काम, १९ कच्चा।

*यु० द० म० पृष्ठ, १४।

२० था, २१ अदभुत, २२ जहा, २३ आदमी, २४ उसने जवाब, २५ अप्सरा, २६ फँसा, २७ प्रियतमा, २८ बयान।

देखा रोम होर शाम संजाम हम[1]। देखा गजनवी होर दखिन दमबदम[2]॥
अरब होर अजम[3] वो बुखारा बलख। कि मुल्तान लाहोर हवश[4] हिंद बद्ख[5]॥
दिल्ली होर बंगाला देखाय उसे। ....॥
बिजापुर सितारा व अहमदनगर। बुरहानपुर गोलकुंडा बीजेनगर॥
न किस्सूँ ओ बोली न देखी किधर। ....॥

चन्द्रबदन और महियार के वार्त्तालाप में कवि का चमत्कार*—

नजिक[6] जाको बोल्या कि "सुन ए परी। मुजै तुझ लताफ़त[7] दिवाना करी॥
दिवाना हूँ तेरा दिवानै के तै[8]। अपसते न कर दूर जाने के तै॥
धर्‌या आस तेरी निरासी न कर। जफा पर मुझे तूँ कि आसी न कर॥
सो तुझ-बिन मूँजे कोइ होना नहीं। कि बिन जल मछी का सो जीना नही॥
कता हुँ तुझे मै "कि ए गुनभरी। तुँ करना एता कुछ मेरी दिलबरी"॥
सो यों कह अदब सों निवलकर उने। धर्‌या सीस उसके कदम पर उने॥
मगद मार उसकूँ उठी बोल यों। "समझ कुछ अपसकूँ रे बेडौल तूँ॥
हिन्दु मे कहा और तुरग मे तूँ कहाँ। कहाँ राम-सीता मुरख तूँ कहाँ॥
कहाँ मै चँदरमा कहाँ तूँ देवा। कता क्या मुये तूँ दिवाना हुआ॥

महियार निराश होकर प्राण दे देता है, उसकी अरथी चंदरबदन के द्वार पर रुकती है और मृत प्रेमी का प्रेमिका से मिलन होता है--

रवाना हुआ शह जनाजा कुँ ले। सो मंजिल कु ले आ उतारी तले॥
मिले लोक सारे सो यकबारगी। सँवार खूब तुर्बत सो महयार की॥
हुआ जो अमल कब्र का सब तमाम। उठा दफ़न करने कुँ शह नैकनाम॥
मँगा जों कबरसो उतारूँ उसे। दफन कर दुन्या ते बिसारूँ उसे॥
जो देखे जनाजा मे महयार कूँ। ओ है जुफ्त मिलकर उसी नार सौ॥
कफन बीच आकर ओ चंदरबदन। गले लग सोती है सो जों एक तन॥
गले उस गले लग पिरित प्यार सों। पिरित मद-मुहब्बत की महयार सौउ॥
जुदा उनकूँ हरचद करने मंगे। कि दोनों कुँ दो ठोर धरने लगे॥
तो यों लग अपसमे ओ सोते अथे। जुदाई किये तो न होते अथे॥
देखत हैरां हों इस हाल कूँ कन्या दफ़न करना उसी। ....॥

---

१. भी, २. तुरंत, ३. ईरान, ४. अबीसीनिया, ५. बदख्शाँ। *उ० श० पृष्ठ २०० और त० उ० म० पृष्ठ ३९। ६. पास, ७. मंजुता, ८. पागल को।

§ १७ कुतुबी (१६३४ ई०)

कुतुबी गोलकुडा का कवि था। इसने दिल्ली के प्रसिद्ध सत ख्वाजा नसीरुद्दीन के शिष्य शेख युसुफ देहलवी की धार्मिक 'पुस्तक तोहफतुन्नसाहय' (सीखा की भेंट) का उसी नाम से दक्खिनी में पद्यबद्ध अनुवाद किया।

बीबी के चुनाव के बारे में सीख है—

जो लख सभाल्या जाय तुझ औयत में सों मिलने सत्र कर॥
आफन वला गम कर खूबसूरत पारसा। ॥
साथी हो तुझ- भाई चले खिदमत करे शामो-सेहर॥
ना ल्याय दुखका आंज, उनके गम दुख में ले जाये सब।
ऐसे न होसे[1] ना रचे देना तिलाक उस जूदतर[2]॥
जो तु नारी करे धूंढ[3] चार चीज अपने से कम।
सिन[4] जात[5] कद[6] तुजते तलें चौथा सो क्या[7] धन-मालोजर[8]॥
करता च[9] नारी तूं अगर हर्गिज न कर ऐसे बगैर[10]।
कर खौफ[11] हँस मत बोलरे दीदार ऐसे जो खर॥
करते हो मोटी जन नको[12] पतली हो ऊँची खौफ नै।
होर काली जन हर्गिज न कर फर्जंद[13] जनेंगी बद-बतर[14]।
महिने देवनहारी न कर होर बाल जिस पदड्या[15] पैं हैं।
होर मालवति भी नको होय ढीठ मुखडी जरततर[16]॥
इस धात[17] की भरी, समझ वारकें जो पदर बात धरे।
मूपर जो बारी ज्वाब दे दायम रहे सर बाँधकर॥
जो तूं बुलावे सेजपर भाना[18] मलोल[19] होकर करे।
हर बात मे उज्रा करे मकराँ भरी करती उजर॥
आहिस्ता जो तू बात कै फिर जाव[20] दे उठ्ठी तडक।
होर भार[21] आवे वे रजामन्दी यकेले दरबदर[22]॥
जेते आये उसके सामने करती शिकायत होर गिला।
कहै है दुखिया हुँ मदते ओ अगर्चे खूबतर[23]॥
ओढे न अचल सीस पर मुखना न धोये हाथो पा[24]।
ना नैन में काजल करे कदना[25] रखे पटियासो सर॥
तुझते छिपाकर राखे सजन मेहमान कूं दुश्मन घरे।
तुजते अव्वला[26] खाये जब भर पेट तुजते बेशतर[27]॥

---

१ होगा, २ जल्दी, ३ ढूढ, ४ आयु, ५ जाति, ६ आकार प्रकार ७ कहा, ८ सम्पत्ति, ९ करता ही, १० ऐसे के विना, ११ भय, १२ नहीं, १३ पुत्र पुत्री, १४ अधिक बुरे, १५ पैरों पर, १६ फूहड, भोंडी, १७ भाँति, १८ बहाना, १९ रज, २० उत्तर, २१ बाहर, २२ जगह-जगह, २३ सुंदरी, २४ हाथ-पैर, २५ कभी नहीं, २६ पहिले, २७ अधिक।

ऐसी जिस औरत अछै[1] दोजख[2] यकीं सीना-बसे।
कर नेक होवे नार तो जों होर पाय मुश्कतर।।
राहत[3] जो लोडे[4] अपस जा मोल ले सीरत परी[5]।
महताब जों चंदा-पुनम[6] मीठी वचन की सीमतर।।
कि होवेगी वो पारसा[7] काने[8] अछै खिदमत[9] करे।
उस साथ मिल जैतर करे नै तो खरीद यक होर कर।।
बेगाना[10] नार्या पर कधी[11] ना देख शहवत[12] की नजर।
ना देख भी अमरद[13] तरफ नज्दीक ते रह दूरतर।।

§१८. अब्दुल्ला कुतुब (१६३९ ई०)

महाकवि सुल्तान मुहम्मद कुल्ली कुतुब (१५८०-१६१२ ई०) की कन्या हयात बख्शी बेगम प्रसिद्ध नर्त्तकी हैदरमहल (भागमती) से पैदा हुई थी, जिसका ब्याह उसने अपने भतीजे तथा उत्तराधिकारी मुहम्मद कुतुब (१६२६-३६ ई०) से किया था। सुल्तान अवदुल्ला हयात बख्शी का पुत्र तथा कवि मुहम्मद कुल्ली का नाती, नाना की मृत्यु के दो वर्ष बाद, १ दिसंबर (१६१४ ई०) को पैदा हुआ था। फर्वरी, १६२६ ई० को बारह वर्ष की उम्र में महम्मदी महल में वह गद्दी पर बैठा। नाबालिगी के समय राजकाज का प्रबन्ध उसकी माँ हयात बख्शी बेगम करती थी। अब्दुल्ला कुतुब बारह साल की आयु तक पीरों और सन्तों के घर में पला। उसका बाप नाना की तरह स्वतन्त्र चिन्तक न हो इस्लाम का बड़ा पक्षपाती था। ससुर ने दाढ़ी मुँड़ा डाली थी, किन्तु दामाद ने उसे रखी थी। नाना मुहम्मद कुल्ली ने सुन्नी धर्म को छोड़ शिया-मत स्वीकार किया था। संभव है, बाप ने अन्तःपुर से हटकर मुस्लिम सन्तों के घर में इसीलिए अपने पुत्र को रखा हो, कि वह इस्लाम, विशेष कर सुन्नत जमात का अधिक पक्षपाती हो। किन्तु अब्दुल्ला ने अपने नाना को ही अपना आदर्श चुना और दाढ़ी के स्थान पर गलगुच्छा और मोंछ रखी। उसके चेहरे को देखने से कोई उसे मुसलमान नही कह सकता था। अब्दुल्ला की तमाम आयु ऐशो-इश्रत सैरो-तफ्रीह में गुजरी। हर बरसात के मौसम में वह तफ्रीह के लिए दारुस्सलतनत के बाहर जाता था। तख्तनशीनी के पहले साल बाग-लिंगमपल्ली की सैर हुई, वहाँ ऐशो-इश्रत के तमाम सामान मुहैया किये गये थे। दूसरे साल सालगिरह की रस्म बड़े शान से मनाई गई, जिसमें हजारों रुपये खर्च हुए। रक्सो-सरूद और आराइशो-जेबाइस का पूरा इंतिजाम हुआ। तमाम इमारत और बागान में रोशनी की गई। दो साल के बाद, सन् १६२७ ई० में कोहनूर की सैर हुई। यहाँ एक महीना बसर हुआ। अब अब्दुल्ला पन्द्रह वर्ष का था। सन् १६२८ में बरसात का मौसिम शुरू हुआ, तो फिर बाग की तफ्रीह शुरू हुई और उसमें भी कई महीने सरफ हुए। १६३० ई० में

---

१. रहे, २. नर्क, ३. सुख, ४. चाहे (पंजाबी), ५. अप्सरा स्वभाव की, ६. पूर्णिमा का चन्द्रमा, ७. सती, ८. कहने में, ९. सेवा, १०. पराई, ११. कभी, १२. कामुकता, १३. छोकरा।

(१६ वर्ष की आयु मे)एक और बहुत बडी रस्म (सस्कार) मूय-तरागी (मूँछ-दाढी बनवाने) वगैरह की रचाई गई, जिसका इतिजाम और खर्च हयात बख्शी बेगम ने बर्दाश्त किया था। इसका इतिजाम हयातबाद में हुआ। हैदराबाद मे हयातबाद को जलूस गया और वहाँ कई महीने दरबार जलूस रक्स और सरुद की महफिलें हुई।

लेकिन अब दक्खिन की रियासतो के दिन खतम हो चुके थे। शाहजहाँ ने दक्खिन को अपने अधीन करना चाहा था। वह स्वय इसके लिए दक्खिन गया और जरा-से हीले-हवाले के बाद, १६३६ ई० में अब्दुल्ला कुतुब ने दिल्ली की अधीनता स्वीकार की। फिर ३२ साल का दीर्घ शासन मुगल-सामन्त के तौर पर बीता। उसके उत्तराधिकारी तथा दामाद कुतुबशाही वश के आठवें एव अन्तिम शासक अब्दुल हसन तानाशाह (१६७२-८७ ई०) के शासन के साथ राज्य-वश का उच्छेद औरगजेब द्वारा हुआ।

नाना की भाँति अब्दुल्ला के कोई पुत्र नही था। उसके केवल तीन पुत्रियाँ थी, जिनमें से जेठी का व्याह हजाज(अरब)के एक कुलीन तरुण तथा दरबारी के साथ हुआ था। दूसरी पुत्री का व्याह औरगजेब के बडे बेटे मुहम्मद सुलतान से हुआ था, जो शादी के बाद ही उत्तर चली गई। तीसरी बेटी बादशाह बीबी का व्याह कुतुबवशी तरुण अबुल्हसन के साथ हुआ था, जो अब्दुल्ला का उत्तराधिकारी बनने में सफल हुआ।

अब्दुल्ला अपने नाना के भाति फारसी और हिन्दी में कविता करता था, यद्यपि उतनी सफलता के साथ नही। वह कवियो और कलाकारो (सगीतज्ञो) का सरक्षक और प्रेमी था। वजही, गौवासी, कुतुबी, निशाती, तबई, सनअती जैसे महाकवि इसके दरबार के रत्न थे। दरबार में मुशायरे (कवि-सम्मेलन) तो रात-रात चलते थे।

अब्दुल्ला की कविता के नमूने--

जगयार[1] ना पासे[2] उसे आशिक सो अपने यारका।
जो जन्नत[3] होर दाजख[4] कूँ तुज तालिब[5] है दीदा का॥

और

गुफ्तम[7] कि ऐ परी तूँ है फितनये जमाना[8]।
गुफ्ता[9] कि रास्ता गुफ्ती[10] ऐ गुन भरे सजाना॥
गुफ्तम कि दरजहा[11] या लैला ही आई है तूँ।
गुफ्ता कि मन् जूँ मजनूँ[12] पाई हूँ तुज दिवाना॥
गुफ्तम् कि खाली जुल्फन[13] क्या है सो बोल मुंजकूँ।
गुफ्ता कि जुल्फ राहत[14] होर खाल[15] सो है दाना॥
गुफ्तम् की दर-दहान-त[16] अमरीत का है चश्मा।
गुफ्ता कि मिश्र हो तू इस चश्मेपो रधाना[17]॥

---

१ पराया, २ पायेगा, ३ स्वर्ग, ४ नर्क, ५ इच्छुक, ६ दर्शन, ७ मैंने कहा, ८. दुनिया का फसाद, ९ बोलो, १० सच कहा, ११ दुनिया में, १२ मैं मजनूँ-जैसी, १३ अलक, १४ तेरा राह, १५ काला तिल, १६ तेरे मुख में, १७ दौडना।

गुफ्तम् की कीस्त ई जा[1] तेरा परान प्यारा।
गुफ्ता कि शाह अब्दुल-ला है तेरा पुराना ॥

इश्रतमहल (प्रासाद) के सम्बन्ध में—

बोल दिलकुशा[2] इश्रत-महल मत्बूअ[3] औ तारा[4] हुआ।
जोती जमीं की पठिसों ज्यों मुश्तरी भारा हुआ॥
हर ताक[5] याँ खुश तरह[6] का दिसता दरीचा फर्ह[7] का।
आजिज हो इसकी शरहका[8] है बान से न्यारा हुआ॥
अँखिया सों चंदर-सूरके देख आस्माना[9] दूरके।
आशिक है इसके नूर के क्या खूब यो ठौरा हुआ॥
देवें सफा दीवार सों लख नकश[10] ठारेठार सो।
खुश मान यॉ अत्तार[11] सो फिरदौस[12] का हारा हुआ॥
नाजुक अचंभा बेबदल लिक्खे भर्या ऐसा-महल।
बाँध्या न कोई आखिर अवल जमशीद या दारा हुआ॥
ज्यों फूल ताजा वनमने[13] ज्यों पूतली पूजनमने[14]।
त्यों आज इस दखिनमने यो महल उतम सारा हुआ॥
सदके नबी[15] के पा अमॉ[16] इस महल म्याने[17] हर जमॉ[18]।
जम[19] अब्दुला शाह तुर्कमाँ[20] भोगी[21] गमनहारा[22] हुआ॥

§१९ सनअती (१६४५ ई०)

इस कवि ने अपना परिचय नही दिया है। पर अपने संरक्षक सुल्तान इब्राहिम आदिल-पुत्र मुहम्मद आदिल की प्रशंसा की है। इससे जान पड़ता है कि वह आदिलशाही (बीजापुर) वंश के सातवें सुल्तान का कृपापात्र था, जिसने १६२७-५७ ई० तक शासन किया और शाहजहाँ के चरणों में नत हो १६३६ ई० मे दिल्ली की आज्ञानुवर्त्तिता स्वीकार की। प्रसिद्ध इतिहास-लेखक मुहम्मद कासीम फरिश्ता इसके पिता इब्राहीम आदिल द्वितीय (१५८०-१६२७ ई०) का दरबारी था, लेकिन उसने सनअती के बारे में कुछ नही लिखा है। शायद अभी वह प्रसिद्धि नही पा सका था। हाँ, बीजापुर के इतिहास 'बिसातीनुस्सलातीन' में सबई उपनामधारी इब्राहीम का वर्णन किया गया है, जो अक्षरों मे गलती से सनअती का सबई पढ़ लिया गया। यह कहकर लोग सबई और सनअती को एक सिद्ध करना चाहते हैं। सबई की कोई कृति अभी नही मिली है और सनअती की भी यही एक कृति 'किस्सा बेनजीर' उपलभ्य है। सनअती ने यह कथा-काव्य (मस्नवी)

---

१. कौन है यहाँ, २. दिल खोलनेवाली, ३. उचित, ४. शुक्रतारा, ५. कमरे, ६. अच्छे ढंग से, ७. आनन्द, ८. बखान, ९. आकाश, १०. चित्र, ११. गंधी, १२. स्वर्गोद्यान, १३. वन में, १४. मूर्तिपूजा में, १५. बलिहारी, १६. त्राण, १७. महल मे, १८. हर समय, १९. सदा, २०. मुसलमान, २१. ऐश्वर्यशाली, २२. मौजी।

नो किम विरह की आजग सुलगा गिताव[1] । कन्ने मैं फिराकी[2] दिलाकू कवाय ॥
नो किम वस्ल कि मैं खिलाऊँ गुलाँ[3] । . .. ॥३४५॥
नो इतने में मुलह्मि[4] ने ने मुज दिल भितर । कहा . ॥३५३॥
कि प्यारे नबी[5] की खायत है यो । ॥
यो किमा अजब[6] पाक है दिलपजीर[7] । जो पावाँ[8] वहै है जिसे बेनजीर[9] ॥

इस प्रकार सनअती दूसरे फजूल के पुरुषो को छोडकर हजरत मुहम्मद के समकालीन तथा अनुयायी तमीम अन्सारी को अपने काव्य का नायक बनाया।

१. कथा-संक्षेप

'किस्सा बेनजीर' के शब्दो में कथा-सक्षेप करने की आवश्यकता नही है, क्योंकि वह आकर्षक नही है। सारा किस्सा—यदि देव-परिया तथा पीरो-फरिश्तो की रुखी बातें छोड दें—तो यही है, कि मदीने में एक पुरुष तमीम अन्सारी था। एक दिन जाडे में उसने अपनी बीबी को पानी गरम करने के लिए कहा। बेचारी ने झुंझलाकर कहा—पानी गरम करती हूँ, थोडा ठहरो, तुम्हें देव(भूत) नही उठा ले जा रहा है। सचमुच ही बेचारे तमीम को देव उठा ले गया। चार वर्ष तक पता न लगा। औरत ने खलीफा उमर से कहा कि मेरा कोई अवलम्ब नही, मुझे दूसरे के साथ ब्याह करने की अनुमति दें। उमर ने खर्च देकर पहिले तीन साल, फिर चार महीने और रुकवाया। अन्त में ब्याह एक तरुण से करवा दिया। सोहागरात की जगह दोनो ने उस रात को व्रत-प्रार्थना में बिताना चाहा और उसी रात देवा-परियो के देश से घूमता-भागता सात वर्ष चार महीने बाद तमीम आ धमका। झगडा होना ही ठहरा। अन्त में मामला फिर खलीफा के पास पहुँचा। तमीम का किस्सा सुनकर जोरू उसे लौटा दी गई। सारी कथा १६१५ शेरा में है।

सनअती के कविकर्म के उदाहरण के तौर पर यहाँ कुछ पद्य उद्धृत किये जाते हैं। भाषा अरबी-फारसीके शब्दो से बेहद लदी है —

२ रचयिता की रंगीन प्रकृति

पलकमें बेनी नक्शबदी[10] करे । हरेक नक्श[11] सारे अदम[12] में धरे ॥६३॥
रँगादे[13] जो नव रग बना ल्याय है । तेरे रगते रग सब पाये है ॥६८॥
तुज तुजे बेरगी का जो एक रग है । जो उस रगकू ऐस रगते रग है ॥
न तुझ सारखा रग कोई रग सके । जो रगरेज उस रगकू ना पा सके ॥६८॥
हरेक रग में है रँग उस शहा का । अजब रग है सिनअतुल्लाह[14] का ॥७१॥

---

१ जन्दी, २ वियोगी, ३ फूल, ४ अजर अन्तर्वाणीवाले, ५ पैगम्बर मुहम्मद, ६ अदभुत, ७ चित्तप्रसादक, ८ पुण्यात्मा, ९ अनुपम, १० चित्रण, ११ चित्र, १२ अभाव, १३ रग, १४ अल्ला की कारीगरी ।

३: वाणी की महिमा

सखुन[1] बादशाहे जहांगीर[2] है। ....॥
सखुन अतिमिठाई में हलवा अहै। ....॥
इजाना है हक[3] का सखुनका बयाँ। कि है जिस खजानेकु कीली[4] जबाँ[5]॥२१८॥
सखुन[6] एक का सदा सब्ज[7] गुल्जार[8] है। सखुन का सदा गर्म बाजार है॥
जो कुछ है शहादत[9] मे होर गैब[10] मे। सखुन के समाता है आ जेब मैं॥२२०॥
रखनहार सरसब्ज दिलका चमन। सखुन है सखुन है सखुन है॥२२४॥
न हर कोइ[11] सखुन का सजावार[12] है। न हर कतरा[13] लूलूय[14] शहवार[15] है॥२२७॥
सखुनमे का भी को काडे रतन। सखुनदाँ[16] समझते है कद्रे-सखुन॥२३६॥

४. जिन्नों का वीभत्स रूप

सखुन का सदा सूरपर नूर[17] है। ....॥
अँख्याँ खोलकर देखता हूँ तो वाँ। न था आदमीजाद[18] का वाँ निशाँ[19]॥५०५॥
मगर देव होर जिन वा शैतान थे। ....॥
.... । कलेजा तो उसका दिसे पेटबार॥५०७॥
मी देख्या कतेक खल्क[20] कै धात[21] के। सौ कै शक्ल के भाँत के जात के॥५०९॥
केत्याँ की अँखाँ सरपो मूँ पेटसम। केत्याके नगे हाथ उलटे कदम[22]॥५१०॥
केतेक रग होर रूपमें भीलसे। केत्याके बडे कान जों फ़ील[23] के॥
केतक शक्ल मे खूक[24] से नाबकार[25]। केत्याँकी बडी जीभ सीने तलार॥
केत्याँक्याँ अथ्याँ[26] सूरता मार क्याँ[27]। केत्याँ क्याँ दुमाँ[28] कज्दुमाँ[29] सारक्याँ॥
केतक सूरताँ[30] का करूँ क्या विचार। सिराँ दो अँख्याँ तीन हो हात चार॥
केतक फ़ील[31] सी शक्लो सूरत धरें। कतेक ऊटसी काट गर्दन फिरें॥
कतेक शक्ल मे गाव[32] सिरमे तुरग। कतेक रूपमे रीछ तनमें पलंग[33]॥५१६॥
केताके सिराँ हरिनसार[34] पो साख। ....॥५१९॥

५: युद्ध-वर्णन

अथा लश्कर उस देव का भाँत-भाँत। कुदाल्या सी नक होर तैशाँ[35] से दाँत॥५८१॥
सो करवे[36] कुँ देवा उपर मारमार। चल्या दल पर्‍याँ का हजाराँ हजार॥५९०॥

---

१. वाणी, कविता, २. चक्रवर्ती, ३. सत्य, ४. कुंजी, ५. वाणी, ६. वाणी, ७. हरा, ८. फुलवाड़ी, ९. प्रकट, १०. परोक्ष, ११. सभी, १२. पात्र, १३. बूंद, १४. मोती, १५. राजोपयोगी, महार्घ, १६. काव्य, १७. सूर्य के ऊपर प्रकाश, १८. मानव, १९. पता, २०. लोग, २१. कई प्रकार, २२. पैर उलटे, २३. हाथी, २४. सूअर, २५. बदमाश, २६. थीं, २७. मारनेवाली, २८. पूंछ, २९. बिच्छू, ३०. रूप, ३१. हाथी, ३२. गाय-बैल, ३३. शेर, ३४. हरिन-सरीखा, ३५. सींग, ३६. बसूले।

परया के तरँग जब हवाते उठे । कहे तूं गगनते शहावां[१] छुटे ॥५९२॥
चल्यां स तरफते भी परियां खन[२] । कतेक भार[३] तेवां का बादल नमन[४] ॥५९३॥
बजे जब धमाधम तुरगान तल । सुरग लोग देखे जो यो क्या है गुल[५] ॥
सो देवा पर्यां मिल जमीं पर दो रँग । ॥
होया रूबरू[६] जब शफां बेशुमार । हत्यारा सँभाले सो मारे हहकार ॥
उचायें[७] तुरगाकुं ओ बेफसूस । गगन हो रहया गदसा आवनूसं[८] ॥
गुसेसो पडे यक यक सरबसर[९] । परे देव परदेव पर्यां उपर ॥
जो सीनेते कीना अपस मारने । लगे यक पो यक बेजिगर[१०] मारने ॥
चलाये जो तीरा अपस मानपर[११] । पहाडाकुं फोडे तुये जानकर ॥६००॥
हुये कुछ हवा पर येते तीर डाट[१२] । जो पडने कु रुई धूप पर तग वाट ॥
दिसें ल्होसो या लाल[१३] तीरां के भाल । कि तबूल[१४] खाये हैं जो जीभ लाल ॥
अपसमें अपे सख्त रज सो लडे । ॥
हमाहमसो ओ यक धमाधम हुआ । हवापर घुलारे[१५] का यक खम[१६] हुआ ॥
ओ धमसान था एस बजा[१७] सरबसर । कि भिमसेन सा वाँ पड्या बेखबर ॥
नज़र ताब ना ल्या ओ भार[१८] देख । अजल[१९] बेबजल[२०] हुई ओ मार देख ॥
दसासुर[२१] से इक़ देव उसमें पडे । कधो राम-लछमन भी यो नै लडे ॥
कतेक वक्त ऐसा कडाकड हुआ । जो सीना मगलका धडाधड हुआ ॥
ओ देवा अगर्चे जबदस्त थे । वलेकिन[२२] पर्याकेअगे पस्त थे ॥
इधरते उधर होर उधरते इधर । पर्या जायें दो सफ[२३] चीरकर ॥
पर्या योचला देवमें हर रुखन[२४] । कि टुक अब्र[२५] में जल्द बिजल्या नमन ॥६१३॥
धसी सब पर्या पीर देवांमें यो । सितारे रयनके अँधेरेमें ज्यो ॥
सो वइ देव हरयक परी बेंदरग[२६] । करें कत्ल यक शमा जो वइ पतग ॥
यकायक पके पानसे सब झडे । जेते सरकशा[२७] सर-कुशां[२८] हो पडे ॥
पडे यकपो-यक रनमें कँ ठाट-ठाट । तुं बोले सुटे ताडके झाड काट ॥
अय्या[२९] सब पर्यां जो अगिन-सूर-ताप । कियो राख उस कोलसियां[३०] कू शिताव[३१] ॥
लहूसा उननके हुआ बेदरग[३२] । जेता दश्त[३३] मखमल नमन[३४] सुर्ख रग ॥६२०॥
हुआ जब अधिक लहुके दरियाकूं जोश[३५] । मुये सो चले जो अछयां जिरापोश[३६] ॥६२३॥

---

१ तारे, २ अप्सरा-जैसे मुखवाली, ३ बाहर, ४ बादल-जैसा, ५ शोर, ६ आमने-सामने, ७ उठाये, ८ आबनूस की लकडी-जैसा, ९ बिलकुल, १० हृदयहीन, ११ जोर से, १२ घने, १३ मोती, १४ पान, १५ धूल, १६ खम्भा, १७ इस प्रकार, १८ बाहर, १९ मृत्यु, २० शोर, २१ रावण, २२ किन्तु, २३ पंक्ति, २४ हर तरफ, २५ बादल, २६ निर्भय, २७ अभिमानी, २८ सिर तोडनेवाला, २९ थीं, ३० कोयले सी, ३१ जल्दी, ३२ निर्भय, ३३ जंगला, ३४ मखमल-जैसा, ३५ उबाल, ३६. कवचधारी।

लग्या जब पर्‌या इस वजा[1] मारने । तो आजिज[2] हो देवा के सरदार ने ।।६२४।।
चल्या न्हाट[3] परियाके मूँते निकल । ....।।६२५।।
हुआ फतेह[4] परिया देवा पो यों । रयन पर अछे[5] सुब्हकूँ फतेह ज्यों ।।६२७।।

६. परियों का सौन्दर्य

हरयक नूर[6] में हूर[7] पर तानाजन[8] । हरेक चांदते साफ निर्मल बदन ।।६८२।।
दिसे शोलेमें नूरस्याँ[9] ओ पर्‌याँ । ....।।
ओ नार्‌याँ अगर नूर में नार थ्याँ[10] । वलेकिन[11] बराहिम का गुल्जार[12] थ्या ।।
अधर पौ दौर[13] हरेक वरग-गुल[14] धरे । वले काँ[15] है गुल-वर्ग[16] शक्करभरे ।।
दसन मस्त उनके हरे जायेपात[17] । वले काँ है हर्‌याँ[18] में यों आबताब[19] ।।
दिसे जुल्फ[20] उनकी हरेक गालपर । तूँ बोले कि संबूल है गुललाल[21] पर ।।
देखत चख चंचल शोख[22] उनके चरण । भुली ऐसी सब चंचला ईके फ़न[23] ।।
दिसें यों जवानीसो जोबन नवल । उमंग आये जो जलते कँवले कँवल ।।
कमर उनकी शेरजे[24] ने देख्या मगर । जो शर्मो रिलया हात अपस मूँडपर ।।६९०।।
अथ्‌या[25] नूरमे सोसियाँ[26] ओ पर्‌या । सकल सीतते नखलो सीसते नखलो छदो भर्‌याँ ।।
जे ल्याँ बोलल्याँ थ्याँ मिठ्या बोलियाँ । मिठ्याँ बोल्याँ होर शकर-घोलियाँ ।।६९२।।

७. वनशोभा

अथ्याँ[27] वाँ अजब सब्ज यक मुर्गज़ार[28] । दरख्ताँ थे कै भाँतके बारदार ।।७८६।।
दिसे सब्ज रंग आसमासा ज़मीन । सितारयाँसे उसमें गुले यास्मीन[29] ।।
हरेक कालवाँ जो कि जल सीम का । ....।।
दिसे जल्‌यों वारेत इस धात मौज । कि चंचल की जों चखमें ग़म्ज्या की फ़ौज ।।
दिसे पेच सुँबुल के. लाले में यों । अरूसां के रुखासार पर जुल्फ जों ।।७९०।।
हरेक पात पर बूँद बरसात के । हरेक शाख पर मुर्ग कै भाँतके ।।
वचन आयें हर मुर्ग के सीनेत साफ । सफ़ाई में फकनूस पर उनके लाफ़ ।।७९३।।

८. उद्यानशोभा

(१)

.... । दिस्या बाग सेहरा[30] मे यक सब्जतार ।।१४२।।
हरेक झाड तो सब्ज जों नौवहार[31] । हरेक शाख तूवानमन[32] बारदार[33] ।।

---

१. इस प्रकार, २. हार मान, ३. भाग, ४. विजय, ५. रहे, ६. प्रकाश, ७. अप्सरा, ८. व्यंग्य करनेवाला, ९. ज्वाला में प्रकाश-सी, १०. थीं, ११. लेकिन, १२. फुलवाड़ी, १३. चक्कर, १४. पत्र-पुष्प, १५. कहाँ, १६. पुष्प-पत्र, १७. उगे पत्र, १८. हरों, १९. चमक, २०. अलक, २१. लाल के फूल, २२. तीक्ष्ण, २३. कला, २४. शेर-बच्चा, २५. थीं, २६. सराबोर, २७. था, २८. चरागाह, २९. चमेली, ३०. मरुभूमि, ३१. नववसंत, ३२. कल्पतरु-जैसा, ३३. फलदार।

दरख्तों जो पातासो बांधे नबाव[1] । न देखी जमी ओ क्धी आफताब[2]॥
सुरगवन जो थी धूपकूं बाट तंग । अया अर्गते[3] फर्श लग सब्ज रंग॥
सो लालेके याकूत[4] जैसे चमन । सौ नीलम-नमन[5] सब यो नक्शेके[6] बचन॥
दिसे नर्गिस उस यो चमन खूब[7] के । जो झलकें[8] नयन खूब महबूब[9] के॥
लटक मुवुल यों थे गुले लाल पर । कि जो जुल्फ महबूब के गालपर॥
पियाले मो लालेके भरते मदन । ॥१४२८॥
चमन में रहे खिल को सारे गुला[10] । खुशावाज[11] यथ उस पर बुलबुला॥१४३०॥
पुकारे किते फाख्ते सरसरी[12] । ॥
अये खुशनुमा[13] उसमें शमशाद वो सब । ॥
अनारा थे जो बेवदल कूत[14] के । मो हुक्का[15] अये लाल याकूत के॥
पक्यां ग्रुमरका[16] यो दिसें तावदार[17] । सो कचकने जो हेकला तावदार॥
घरे खोशे[18] अगूरके सब्ज बेल[19] । गगन सब्ज मे जो सुरैया[20] की छैल॥
सो मेवे थे इस भांति (के) हर रुखन[21] । ना खाना सुने कोई न देखे नयन॥
दरख्ता हजारो जिनस[22] के थे बार[23] । सो मेवे[24] थे यो शाखपर कई हजार॥
सकल कालुवे[25] जो खां थे सो वां । मो घरे लगे जो कि उम्ररवा॥
दिसे सब्ज सब्जी[26] में साफ[27] जल । रुपेके जमुर्रद[28] के तख्ते पो जल॥
दिसे झाड चश्मापो यो सरवसर[29] । कि जो खिज्र[30] अमृतके चश्मे उपर॥१४४०॥
अजब खुशनुमा[31] सब्ज ओ बाग था । अरम[32] दिलमें जिस बागका दाग था॥१४४१॥

(२)

यकायक दिख्या एक सेहरा[33] उपर । यो एक बाग फिरदौस[34] सम जल्वागर[35]॥१४५८॥
अगर होर चंदन ह्वो संदल के झाड । ॥
नजर जां तलक जाय वां जिस रुखत । जमीं सब दिसे सब्जतूतो नमन[36]॥१४६०॥
दिसे उस लहलते सब्जे उपर । हरे पांच[37] के ये जो यो रुयेगुहर[38]॥१४६१॥
अये बूंद शबनम[39] लाले पा यो । झलकते सितारे शिफक[40] में ते जो॥
थके सब्जसब्जे मे उस देख हिरण । मदन के जमन में जो आहूनमन[41]॥

---

१ घूंघट, २ सूर्य, ३ स्वर्ग से, ४ लाल, ५ नीलम-जैसा, ६ चित्र के, ७ सौंदर्य, ८ चमके, ९ प्रियतमा १० फूल, ११ मधुरभाषी, १२ मामूली, १३ सुदर्शन, १४ अमृत, १५ डिबिया, १६ किमरिख, १७ चमकदार, १८ गुच्छे, १९ हरी लता, २० सप्तर्षि, २१ वक्ष, २२ जाति २३ फल-बाहर, २४ फल, २५ नहरें, २६ हरे, २७ हरियाली, २८ पन्ना, २९ बिलकुल, ३० अमृतरक्षक देवता, ३१ सुदर्शन, ३२ स्वर्गोद्यान, ३३ जंगल, ३४. स्वर्गोद्यान, ३५ प्रकाशमान, ३६ हरे तोते-जैसी, ३७ पन्ना, ३८ मोतो के मुख, ३९ ओस, ४०. आकाश की लालिमा, ४१ हरिण-जैसा।

गुलाँसों जमीं सब्ज[1] सब बेगुमाँ । दिसे जों सितारयाँ सों सब्ज आसमाँ ।।
अथे लाल हर यक गुल शाखपर । छके[2] नैन नर्गिस के पीपी शराक ।।
मये नाब[3] शबनम[4] अथी जों गुलाब । सुराही मये लाल[5] की सरबसर ।।
डुले बावसों गुलके कै शाखभार । मदन पी को जों नाजनी[6] गुलअजार[7] ।।
दिसे सुर्ख गुल सब्ज डालीमने[8] । रुखे खूब[9] जों सब्जवाली मने[10] ।।
अथे सुर्ख गुलनार के पात सब । कि जों पान खाये सो खूबाँके लब[11] ।।१४७०।।
कँवल पर दिसें पर पसारे भँवर । कि जोस्याम अबरू[12] का मलन नैन पर ।।१४७२।
अथे खुशनुमा[13] गुल हर एक डाल के । जमीराँ होर सुँबुल होर गुललाल के ।।१४७६।
गुलाबी गुलाँके खिले कै चमन । फुले यास[14] में हो खिले यास्मन[15] ।।
बनाँ क्योडयाँ के जो थे आसपास । किये थे अपस धामना[16] का लिबास ।।
दिसें झाड चंपा के यों पसों । कि जो लाजवर्दी[17] तिला धूपसों ।।
खुले मुख पो अरगंदसों[18] सेवती । फुले जाइ जूई सो मिल रेवती ।।१४८०।।
खुले कै वजा[19] के गुलां चावसा । झडे कै वजा के पते वावसों ।।
रंगारंग फूलाँ के झडझड पते । जमी रही जमी रही सुरंग दामिनी[20] मुद्दते[21] ।।
गुलाँपर सो चू-चूके शबनम[22] की नम । ....।।१४८३।।
येते हर तरफ़ झाडके वारदार[23] । जो ना कर सके कोइ उनका शुमार[24] ।।
येते डाट झाडा सों झ़ाडा[25] डुले । जो बिछुडे सों जों मिलके लगते गले ।।
सौ के झाड मेवेके थे मायादार[26] । जेते मायादाराँ वेते सायादार[27] ।।
सआदात[28] मेवे अधिक वार थे । सो अमृत के चश्मे हरेक ठार थे ।।१४८९।।
दिसें कालवे सब्ज-सब्जमें यों । पट्यामे अरूसा कै है मांग ज्यों ।।१४९४।।
फिरै जल जो कर मौज सों गलगला । चलावे हरेक इश्क का सिलसिला ।।१४९६।।
मछ्या रक्स करताँ थयां जों मिल सकल । कते जन वजावे जो ताल हो मंदल ।।१४९८
घरे हर मझछी वाँ कि ऐसा हुनर । कुलाटी करै क्या कुलाट उस उपर ।।
देखत खुश-अदा इस मछा का सकल । गगनकी मछी हो गई है पिघल ।।१५००।।
तिरे जलमें खुशहाल गर्दन फ़राज । बगूले वतक ओ लिया होर काज ।।
अथे कै परिंदा जो वां सरवसर । कि जो हल्ला-पोशाँ है कौसर उपर ।।
क हे तो दरख्ताकु इस जल संगात । कि ओ खिज्र होर यो है आबेहयात ।।
अजव खुश लगे झाड चश्मे उपर । सो आवाज मुर्गां का शाखाँ उपर ।।
जेते मुर्ग रंगासों खुशरंग थे । अदामे गले सबके जो चंग थे ।।

---

१. हरा, २. अत्यधिक, ३. अंगूरी शराब, ४. ओस, ५. लाल शरबत, ६. सुंदरी. ७. गुलाबी गालों की, ८. डाली में, ९. सुंदरमुख, १०. हरियाली में, ११. सुंदरियों के अधर, १२. भौं, १३. सुदर्शन, १४. निराशा में, १५. चमेली, १६. धामिन साँप, १७. पुष्पराग, १८. सुवर्ण, १९. कई प्रकार, २०. बिजली, २१. चिरकाल, २२. ओस, २३. फलवार. २४. गिनती, २५. घने, २६. घनी, २७. छायावाले, २८. अच्छे-अच्छे।

हरे लाल मुर्गां मो सब शाखसार । दिसे सब्ज होर सुर्ख जो नौ बहार ॥१५०६॥
सो मैना टिटोरी व कुक्के दरी । भी नूरीसो मिल फाखते समंरी ॥१५०९॥
करे गुल पो बुल्बुल सना बेसुमार । अजारा पढें दास्ताँ के हजार ॥१४१०॥
सो मोरा लगी नाचने देख मोर । पपीहा करें पीव-पीव उस समोर ॥
खुशावाज कुमर्‌या कियाँ आगकार । रह्‌या कूक त्याँ कोइलाँ ठार ठार ॥
खुश्याँ कर अपस दिलमें हर यारका । हसी हस हमा देख गुलजार का ॥

९ निशा-आगमन

जो ऐसेमें अफताब जरी-बरन । किया मुर्ग के आशियामें बतन ॥ ८०६ ॥
गया रोज का बाज़ जब छोड बाग । किया तब बतन रातका आ को जाग ॥
चल्या जगते खुर्शीद साहेबजमाल । हुआ खम पो रोशन चदरका हूलाल ॥
फुली जब रयन सब जो नक्शे नमन । खुले तब गगनके चमकने समन ॥
गगन पर निकल यो सितारे फिरे । हरे बाग में जो चिरागा घरे ॥ ८१० ॥
कि आखिर को अँपड्या[1] वहाँ रोज सब । उतार्‌या गगन पर्दये शाम[2] जब ॥ १०२ ॥
पडी जिस वक्त शाहतुर्कों[3] की घाल[4] । ॥१०२२॥
जो सूरज का कचन हुआ बेनिशान । दिस्या तब शिफक[5] लाल रूम्या के खान ॥१०२४॥
कचन शमा[6] जब गइ ठंडी हो निकल । रुपेरी[7] शमादान[8] मुलगे सकल ॥
छुपा गब[9] में जो गुहर-आफताब[10] । भरी दज म्याने[11] ओ दुर्रे खुशाब[12] ॥
जवाहर का दर जग[13] हुआ जब गगन । रयन नार गोहार का पेनी[14] भरन[15] ॥
सियाही भरी आयगे चार जाम[16] । जजमी अबरी[17] आसमाँ मुश्कफाम[18] ॥

१०. जहाज तूफान में

कहे देख कश्ती[19] कुँ तूँ सरबसर[20] । कि यक शह चलता है पानी उपर ॥ ९७९ ॥
अगर वेग जाने का हम[21] आपडे । वहम सात कश्ती ओ कश्ती करे ॥ ९०८ ॥
मुटी ओ मुजेल्याका करके उपर । निकल पलमें गई यो सियाँ सर्बसर ॥
फिरे जहाज ओजो जने[22] बारदार[23] । सो एक पेट में उस तिफिल[24] के हजार ॥
करे पाव यों पेटमें लेको धाँव । कि जो पेट में सापिनी लेको पाँव ॥ ९८३ ॥
सुरज के दिसे ताबमों[25] मौज तों । रुपेरी टिक्ट[26] साफ चदनी में जो ॥ ९८६ ॥
रयन में जमी यी दिसे ताबदार[27] । दिसे जल पो दीपक हजारा हजार ॥ ९८७ ॥
यो लहरो खुशीकी जादिव फौज-फौज । चली दिलपो मुज जा के दरियाकी मौज ॥ ९८९ ॥

---

१ पहुँचा, २ पर्दे में, ३ तुर्कों का बादशाह, ४ चोट, ५ उषा, ६ दीप, ७ रुपहली, ८ दीपधानी, ९ पश्चिम, १० सूर्य-मोती, ११ में, १२ सुजल, १३ जैसा, १४ पहिना, १५ आभरण, १६ प्याला, १७ पीली, १८ कस्तूरी रंग की, १९ नाव, २० बिलकुल, २१ भी, २२ मारता, २३ भारवाला, २४ बच्चा, २५ जोर से, २६ गोल, २७ चमकीलो।

यकायक एक रोज दरिया भितर। दिस्या एक डूँगर अजब सख्ततर॥९९२॥
सकल कूहकूँ[1] देख रोने लगे। उमेदाँ अपस दिल सों धोने लगे॥९९४॥
दिलाकूँ लगी आग उस कलमने[2]। चल्या दिल हरेक का उस पलमने॥९४६॥
हरेक दिलपो बेशक हुआ यो अयाँ[3]। कि कश्ती फुटेगी एता[4] जा को वाँ॥९९७॥
हुआ वादे शफाँ[5] समुँदर कूँ जोश। यो देखत गया अहलेकश्ती[6] सों होश॥
टुटे बंध कश्तीके लग और खाम[7]। तफ़र्का[8] हुये अहलेकश्ती तमाम॥

§ २०. खुशनूद (१६४६ ई०)

१. कवि

मलिक खुशनूद ने अपने कथा-काव्य (मस्नवी) 'हश्त बहिश्त' को गोस्वामी तुलसीदास की मृत्यु से २३ वर्ष बाद लिखा था। इससे पहले यूसुफ जुलेखा लिख चुका था, जो कि अब अप्राप्य है। खुशनूद पहिले गोलकुण्डा में शाही गुलाम के तौर पर रहा और बढ़ा। किन्तु इन गुलाम छोकरों के बारे मे यह खयाल करना गलत होगा, कि वह साधारण गुलाम थे। मध्य-एसिया में दसवी सदी से पहिले भी इस अनोखी गुलामी प्रथा को देखते है, जिसमें होनहार बच्चों को लेकर दरबार मे उनकी शिक्षा-दीक्षा इस प्रकार दी जाती थी, कि आगे चलकर वह सैनिक-असैनिक बड़े-बड़े दर्जो को सँभाल सकें। किसी शाही वंश से संबद्ध न होनेके कारण इनसे शाह को कम खतरा रहता था। दिल्ली का प्रथम राजवंश इसी प्रकार के गुलाम का था। मलिक खुशनूद उस वक्त जवान था, जब कवि सुल्तान मुहम्मद कुतुब (१६१२-२६ ई०) की लड़की खदीजा सुल्तान मुहम्मद आदिलशाह (१६२६-५६) के साथ ब्याह होने पर इसे भी दहेज में दिया गया। खदीजा सुल्तान स्वयं भी साहित्य से प्रेम रखती थी। खुशनूद अपनी योग्यता के कारण दरबार का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गया, और १६३५ ई० (१०४५ हि०) में इसे राजदूत बनाकर मुहम्मद आदिल ने अपने महा मत्री खवासखाँ की स्वैरिता से मुक्त होने के लिए सहायता माँगने को गोलकुण्डा भेजा। गोलकुण्डा मे इसका अभूतपूर्व स्वागत हुआ और एक बेदीन हिन्दू सामन्त के महल में ठहराया गया। अब्दुल्ला कुतुब ने इस कवि-राजदूत को हर मुलाकात मे बहुमूल्य भेंट-इनाम दिये। खुशनूद ने कुतुबशाह की प्रशंसा मे कसीदे (कविताएँ) पढ़े होंगे, इसे कहने की आवश्यकता नहीं। खुशनूद अपने उद्देश्य मे सफल हुआ। जब वह बीजापुर लौटने लगा, तब गोलकुण्डा का दरबारी कवि उसके साथ भेजा गया।

२. हश्त बहिश्त

हश्त-बहिश्त (अष्ट सर्ग) को मूलतः अमीर खुसरो (१२५४-१३२५ ई०) ने फारसी में लिखा था, जिसका हिन्दी-अनुवाद खुशनूद ने सुल्तान मुहम्मद आदिल की

---

१. पहाड़, २. समयमें, ३. प्रकट, ४. अब, ५. आँधी, ६. नौकारोही, ७. कच्चा, ८. भेद।

प्रेरणा से किया। उपलब्ध पुस्तक में १०००शेर (अर्धालियाँ) पाये जाते हैं, यद्यपि उनके ३२२५ होने का उल्लेख मिलता है। खुशनूद फारसी का भी जबर्दस्त शायर था। ईरान के सासानी वंश (२२८-६४२ ई०) में बहराम गोर (४२१-३८ ई०) और खुसरो नौशेरवाँ (५३१-७९ ई०) कृष्ण कन्हैया बने, जो अनेक प्रेमकथाओं के नायक हैं। हश्त-बहिश्त का नायक बहराम गोर है, जिसकी और हुस्नबानू की प्रेमगाथा को अमीन ने पद्यबद्ध किया, इसे हम बतला आये हैं।

(१) मंगलाचरण—

मंगलाचरण में खुदा और रसूल की स्तुति करते कवि कहता है*—

मराऊ[1] तुझ जा तूँ है पाक माबूद[2] । हुआ सबब खरकों-आलम[3] तुझसो मौजूद[4] ॥
सँवार्या धनउपर तूं चाँद-तारे । किया पैदा अरस-कुर्सी-चमारे[5] ॥
जमी पैदा किया होर कोह अलवद[6] । फलक[7] सब छंद[8] सो कीता[9] तू पैवद[10] ॥
मुहम्मद मुस्तफा महनूर रबका[11] । कहे सारे नबी[12] तूं ताज[13] सबका ॥
मुहम्मद सब नबयोंके सीसका ताज । ॥

(२) संरक्षक सुल्तान—

अपने संरक्षक सुल्तान मुहम्मद आदिलशाह के बारे में लिखता है†—

तु सुल्ता (है) मुहम्मद शाह गाजी[14] । जहाँ कू शाहसो है सरफराजी[15] ॥
वहू सानी सिकदर[16] या कि जम[17] है । नही शाहाँ कि जिसके दरसो तुम है ॥
कह्या यक रोज मुंज शाहे जहांगीर[18] । ॥
"अमोलक तुज्ज धरता है सबाती[19] । कलम है तेज करता मूशिगाफी[20] ॥
हुनर नादिर[21] जो करता जिवकु ताजा ।" ॥
किये जब हुकम आदिलशाह मुझकू । अबवे खुसवी[22] का माह[23] मुंजकुं ॥
सजीना[24] कर रख्या हूँ ध्यान में सब । कि ज्यो मोति है जिवकी खान में सब ॥
लगे दरिया उबलने शौक[25] के तो । ॥
कहानी आठ बोल्या सुन सपुनवर[26] । कि जो है आठ जन्नत[27] आठ कौसर[28] ॥

जिस समय खुशनूद इन पंक्तियों को लिख रहा था, उससे दस साल पहले बीजापुर शाहजहाँ का करद बन चुका था, किन्तु उससे क्या? कवियों की झूठी चाटुकारिता को उनके आश्रय-दाता खूब पसंद करते थे।

---

* यु० द० म०, पृष्ठ २२५। वही, पृष्ठ २२६।

१ सराहूँ, २ पवित्र देवता, ३ लोक, ४ विद्यमान, ५ स्वर्ग-सिंहासन, ६ अलवद गिरि (ईरान), ७ आकाश, ८ युक्ति, ९ किया (पंजाबी), १० जोड, ११ भगवान का, १२ पैगंबर, १३ मुकुट।

† यु० द० म०, पृ० २२६।

१४ धर्मवीर, १५ दाता, १६ द्वितीय सिकंदर, १७ जमशेद, १८ चक्रवर्ती, १९ स्थिरता, २० बाल की खाल उतारना, २१ दुर्लभ, २२ राजसी, २३ चन्द्र, २४ विधि, २५ आनन्द, २६ कवि-वाणी, भक्त, २७ स्वर्ग, २८ स्वर्ग निर्झर।

(३) आत्मश्लाघी—

खुशनूदने अपने और अपनी कविताओं के बारे में लिखा है—

दिला[१] तुज लुत्फ[२] का दारू[३] नवी पाक[४] । बंदे[५] खुशनूदका जिव है दरदनाक[६] ।।
बंदे खुशनूद पर शहका नजर है । मेरा जन्नत नगर[७] के बीच घर है ।।
बंदे खुशनूद का नादिर[८] वचन है । जो कोई समझे उसे सब नौरतन है ।।
उननके[९] जीवके तोतेका चारा । किया खुशनूद ने अतमाम[१०] सारा† ।।
खुदा मुँज फाम[११] कूँ अति बल दिया (है) । कलम तो अबरऽफसानी[१२] किया है ।।
बका[१३] का सत्त देख बुनियाद कमजोर । बंध्या में यो इमायरत भौत बरजोर ।।
लिख्या हूँ अक्लसों नादिर बहुत खूब । हुआ है तो किताब यों आज महबूब[१४] ।।
किया मैं तो किताब यों जगमे मशहूर । रहया दुनियाँमे जों धन-उपर सूर ।।
लिख्या कातिब[१५] अजब खुशखत[१६] जेबा । मुहम्मद शाह इब्ने[१७] हाजी बाबा* ।।

(४) कथारंभ—

कवि कथा का आरम्भ करते कहता है‡—

अथा[१८] यक बादशाह संसार म्याने[१९] । सोरनका फूल जो गुलजार[२०] म्याने ।।
किया था अद्‌लसों[२१] (रोशन) जहाँकूँ । कि जों रोशन किया सूर आस्माकूँ ।।
अथा ओ खुशखराम[२२] होर नेक फ़रजाम[२३] । अचम्बा नाँव उसका शाह बहराम ।।
करे मज्लिस - शराबे - अगवानी[२४] । पिबे निसदिन करे जरेंऽफशानी[२५] ।।
फलातूँ बू-अली[२६] से थे हकीमा[२७] । चतुर शायर गुनी नादिर नदीमा[२८] ।।
रतन-धन-माल-लश्कर कुछ न कम था । नही उसके शहर मे मिलता गम था ।।

(क) नायक-नायिका × —

छबीली बेदिले नाजुक[२९] गुलन्दाम[३०] । अजब या नाव उस धनका दिलाराम ।।
अथा ओ रोज शंबाका नूरानी[३१] । अपें मुश्की[३२] किया अंबर-फशानी[३३] ।।
दिखाया ताले[३४] अपनी शाह यक रोज । किया उस रो जमें बहराम नौरोज[३५] ।।
किया मुश्की इमारत मे नवलशाह । कि जो नादिर अचंभा बुर्ज मे माह[३६] ।।

---

१. हे हृदय, २. कृपा, ३. दवा, ४. पवित्र पैगम्बर, ५. दास, ६. दुःखी, ७. स्वर्गनगर ८. दुर्लभ, ९ उनके, १०. समाप्ति । † यु० द० म०, पृ० २२३ । ११. समझ, १२. अंबर (सुगन्ध) बरसाना, १३. जीवन, १४. प्रियतमा, १५. लेखक, १६. सु-अक्षर, १७. पुत्र । * वही, पृ० २२७ । ‡ वही, पृ० २२९ । १८. था, १९. संसार में, २०. फुलवाड़ी, २१. न्याय से, २२. सुन्दर गमन, २३. दबदबा, २४. लाल मदिरा, २५. सुवर्णवर्षा, २६. दार्शनिक सीना, २७. दार्शनिक, २८. गायक । × वही, पृष्ठ २२७ । २९. कोमल. ३०. पुष्पतनु, ३१. प्रकाशमान, ३२. कस्तूरी-जैसा, ३३. अंबर बरसाना, ३४. भाग्य, ३[illegible]र्ष, ३६. नक्षत्र में चन्द्र ।

अप सूरज किया किमवत जरी[1] का । दिया तरतीब[2] सब साकी[3] सेतीका ॥
सिके[4] हिन्दी नहीं गोमी परीका । कमर जो बाल नाजुक इस्तरी का ॥

(ख) स्वार्थी संसार*—

अजब[5] बेमेह्र[6] दुनिया बेवफा[7] है । मुहब्बत ऐन[8] इसका सब जफा[9] है ॥
जेते है दोस्ता फर्जंद[10] साती[11] । सकल है गारलग[12] जो सब सगाती ॥
निछल[13] नेकीके घरका डाल बुनियाद । तेरे बाद अज[14] करे सब खल्क[15] तुज याद ॥
न कर एमा बदी जो मिर धुनाये । मुय पीछे तेरा कोई गम न खाये ॥
मिले है बाप भाई सब मिरासी[16] । वले कोई गार[17] में हर्गिज न आसी[18] ॥
कहा दारा सिकंदर शाह ख्यानी । गकहा जमशीद जम हातिम दुरानी ॥
कहा खुसरो[*] कहाँ आ रुस्तमेजाल[20] । सुन्या नौशेरवाँ का क्या हुआ हाल ॥
जदालग[21] है सकत[22] हाताम[23] ने जोर । तदा लग[24] उचाते[25] सब दोस्ता शोर ॥
चले जा नेकमर्दा चल तू खुशनूदा । खुदा हासिल करेगा दिल का मकसूद[26] ॥

(५) कथाएँ—

हश्त बहिश्त की आठो कहानिया में से कुछ के उद्धरण हैं †—
अवलके[27] दौर में यक बादशहा था । अथा मशहूर जो सूर-मह[28] था ॥
अथा आकिल चतुर परवीन ज्ञानी । न था दुनिया में उसका कोई सानी[30] ॥
गुन एक जिसमें दिसे दानिश्वरी[31] का । उसे मगब दिखावे सर्वरी[32] का ॥
अजब खूबी[33] का दिलमें रंग रस था । बुजुर्गी साथ मिलने का हवस[34] था ॥
अथे उस शाहकूँ सब फर्जंद[35] । यकसतें एक आकिल होर सिरदमन्द ॥
तवंगर[37] इल्म हार ये माल-धनमें । न थेआजिजे[38] हरेक हिकमत के फनमें[39] ॥
सकल आकिल उनत कि ज्या कुली[40] थे । कि ज्या दाना[41] फलातूँ न्यू अली थे ॥
न जाना क्या नवल्याह दिल में अया । जुदा हर यक जवाकूँ शाह बुलाया ॥
कह्या हर एक जवाँकूँ आजमाना । जो है कलजुग का यो खोटा जमाना ॥
घर में) कौन करता है सियाही । करेगा कौन करता बादशाही ॥
बडे फर्जंदकूँ बाल्या सिरदमद । कि तू आकिल सखी[42] आदिल[43] हुनरमद ॥

---

१ पोशाक, २ क्रमबद्धता, ३ मददायक से, ४ सीखे। * उ० श०, पृ० २०२। ५ विचित्र, ६ बेमुरौवत, ७ विश्वासघाती, ८ बिलकुल, ९ जुल्म, १० पुत्र, ११ साथी, १२. कब्र तक, १३ निर्मल, १४ अनतर, १५ दुनिया, १६ दायभागी, १७ कब्र, १८ आयेगा, १९ नौशेरवाँ, २० रुस्तम और जाल २१ जब तक, २२ शक्ति, २३ हाथोमें, २४ तबतक, २५ उठाते, २६ कामना, † उ० श०, पृ० २०३। २७ पुराने जमाने, २८ सूर्य-चाँद, २९ बुद्धिमान्, ३० समान, ३१ बुद्धिमानी, ३२ सर्दारी, ३३ सौंदर्य, ३४ लोभ, ३५ पुत्र, ३६ एक से एक, ३७ धनी, ३८ अशक्त, ३९ कला में, ४० दास, ४१ ज्ञानी, ४२ दाता, ४३ न्यायी।

जवानी से दिया हक मुंजकं पीरी । खुदा तुजकूँ किया है दस्तगीरी ।।
बहुत आकिल है तूँ कर बादशाही । सकल खुबी सों रख तूँ मुर्गो माही[१] ।।
जो राजी जम[२] अछै माबूद[३] तुझसों । जहांका इल्क सब खुशनूद[४] तुझसों ।।
जईफा कूँ बहुतकर दस्तगीरी । जे कोई दाना है उसकूँ वजीरी ।।
धर्‍या सिर के न क्या दाना खिदरमंद । बहादुर पादशहाका नेक फ़र्जंद ।।
जदाँ लग है गगनपर चाँद तारे । जदाँ ग है अयश-कुरसी[५] चमारे ।।
तदाँ लग कर तुँ जगमे बादशाही । अछै तुज शहाका आलम हिपाही ।।
अजव यो तख्त अफसर-वख्त हुशियार । बगैरज तुज[६] नहीं किसकूँ सजावार[७] ।।
तवंगर कोई कहे (गर) बेनवाकूँ[८] । न देसे[९] बादशाही कोई गदा[१०] कूँ ।।
अगर नादान[११] कूँ जीनेसों काम है । बगैर दाना[१२] उसे जीना हराम है ।।
झलकता[१३] है जहां तुज सारका[१४] सूर[१५] । सितारे जिसमें दिसते त्यों है बेनूर[१६] ।।
बहुत जग राजकर होर शादमानी[१७] । खिजर[१८] का तुझ अछो[१९] जम[२०] जिन्दगानी ।।
सरासर[२१] आजमाया[२२] शाह गुफ्तार[२३] । किया दिल में कि है यो नेकवर्दार[२४] ।।
किया दिलमे खुशी जब आजमाया । वले[२५] जाहिर[२६] गजब[२७] कर भार[२८] आया ।।

(क) द्वितीय राजपुत्र से—

अथा फ़र्जंद दूजा तिस बुलाया । कनक-दिल[२९] का खुशीसो आजमाया ।।
वहुत अफसूँगरी[३०] सों दिल फुलाया । वले जर[३१] खता उसमें न पाया ।।
सवालाँ जो किया शाहे-खिरदमंद[३२] । जवाबाँसो किया फ़र्जंद जबाबंद[३३] ।।
कहया "जो तूँ कहे सो मै करूगा । तेरा फ़रमान[३४] मै सिर पर धरूँगा ।।
वले यो बादशाही तुझ[३५] रवा[३६] है । जे कोई दूजा मंगे[३७] ओ नासजा[३८] है ।।
एता काँ[३९] जोर है बंदेके दमकूँ । घरेगा तख्त पर जिव[४०] के दम कूँ ।।
फलक[४१] बेमेह्र[४२] गर तुजसों फिरेगा । किया दुसर्‍यासों वों तुजसो गरैगा ।।
किया नै कोइ अदब[४३] लग जिन्दगानी[४४] । वफा[४५] किसकूँ किया दुनियाय-फानी[४६] ।।
अगर होये कधों शाह राजी[४७] । करे दे तख्त[४८] जगमे सरफ़राजी[४९] ।।
बडे फ़र्जंदकूँ दे तख्त क्यानी[५०] । तेरे बादज[५१] करेंगा जग नुरानी[५२] ।।

---

१. पक्षी मीन, २. सदा, ३. भगवान्, ४. प्रसन्न, ५. स्वर्गसिंहासन, ६. तेरे विना, ७. योग्य, ८. गरीब, ९. देगा (पंजाबी), १०. फकीर, ११. मूर्ख, १२. ज्ञानी, १३. चमकता, १४. तेरे सरीखा, १५. सूर्य, १६. आभाहीन, १७. प्रसन्नता, १८. अमृत के देवता, १९. रहो, २०. सदा, २१. बिलकुल, २२. परीक्षा की, २३. कथन, २४. सुकर्मी, २५. लेकिन, २६. प्रकट, २७. क्रोध, २८. बाहर, २९. सुवर्ण-हृदय, ३०. जादूगरी, ३१. जरा कुछ। ३२. बुद्धिमान् राजा, ३३. बोलना बंद, ३४. आज्ञा, ३५. तुझे, ३६. उचित, ३७. चाहे, ३८. अयोग्य, ३९. कहाँ, ४०. मन, ४१. आकाश, ४२. निर्दयी, ४३. अनंत काल, ४४. जीवन, ४५. साथ देना, ४६. नाशवान्, ४७. पसंद, ४८. सिंहासन, ४९. भाग्यशाली, ५०. ईरानी, ५१. अनंतर, ५२. प्रकाशमान्।

(ख) तृतीय राजपुत्रसे*—

किया शह हरव[1] जिधर था सुद[2] दाना । किया जिन अक्लमें जगकूँ पूिवाना ॥
लग्या शह मौत छद[3] सो आजमाने । कनक जिवका कसौटी पर लगाने ॥
दिया ज्वाव (उनने) "ए शाहे सुव्हानी[4] । कि तिफ्लाँ[5] सो न होंमे[6] का रवानी ॥
जब इस फर्जन्द कूँ शाह आजमाया । बहुत कुछ शादमानी[7] दिलमें यारा ॥
॥

(ग) पुत्रो का निर्वासन—

कह या शह तीन गौहर[8] है शरफनाक[9] ।
हुआ खुशहाल अपने बख्त[10] परसों । किया सिज्दा[11] खुदा तख्त परसों ॥
वले[12] फरमाँ दिया तीनों रतनकूँ । निकर जाओ तुमें हर यक पटनकूँ ॥
जहा लग है मेरा सब मुर्गो-माही[13] । जहा फिरता है मुंज शट्क दोहाई[14] ॥
रहेगे वाँ तो मारूँ ख्वार[15] कर में । सयासत[16] कर धरूगा दार[17] पर में ॥

(घ) निर्वासित राजकुमार और हब्शी—

कहें जब बात उस शह्की पियादे । सियाहपोश[18] हो चले ओ शाहजादे ॥
बधे तोशा[19] चले सुट[20] तमा[21] घरका । तमाशा देखने सब वहोवरका ॥
गये जब शाहजादे शहसो बार[22] । बगैर जगल-पहाड उन कोइ न था ठार ॥
जे शुक हर शहरमें आवे सो लेते । खराबे[23] मे कधी शेर सोते ॥
अथा सब मग्न[24] सिरमे सर्वरी[25] । का वले पकडे हुनर सौदागिरीका ॥
हुआ एक दिन क जमए आसमानी[26] । चले एक ठार मिल यो यारजानी[27] ॥
जो मिल सहरके नज्दीक आये एक । बधे घोडे वहाँ आराम पाये ॥
अथा उस सहरके नज्दीक जगल । रहे उस वनमें यो जो मस्तमगल[28] ॥
यकायक एक जगी[29] दौड आया । कि जो शैतान अपना मुख दिखाया ॥
हटे सब थासने सुन उसके हाँकाँ । रतन[30] जगीके जो गाडीके चाका ॥
ल्योयेकी कानमें यक बावली थी । मुसल[31] हँसी पेटपर रोमावली थी ॥
बँध्या था झाडके जो गिद पाताँ । हती[32] के दात सो कुछ कम थे दाँताँ ॥
अथा बदशक्ल काला जो हिपाही । देखत शैता डरे होर मुर्गो-माही[33] ॥
कया[34] "ऐ सूर बेटे सूरजादे[35] । हरेक जा चाँद है या शाहजादे ॥

---

* उर्दू शहपारे (१), पृष्ठ २०५-२०६। १ मुँह, २ छोटा, ३ युक्ति, ४. भला, ५ बच्चो, ६ होगा, ७ हर्षित, ८ रत्न, ९ बडे, १० भाग्य, ११ दडवत्, १२ लेकिन, १३ पक्षी मीन, प्रजा, १४ शासन, १५ बर्बाद, १६ शासन, १७ सूली, १८ काला कपडा पहने, १९ पाथेय २० छोड, २१ लालच, २२ बाहर, २३ वीरान स्थान, २४ दिमाग, २५ सर्दारी, २६ भवितव्यता, २७ प्राणप्रिय, २८ मस्तमौला, २९ हब्शी, ३० नयने, ३१ मूसल, ३२ हाथ, ३३ पक्षी-मीन, ३४ कहा, ३५ सूर्यपुत्र।

मेरा यक ऊँट इस बाटों गया है। निशाँ देओ तो मुँजपर लख मया[1] है॥
गया है काँ अगर बोले तो जानूँ। महीने का खबर एक पल में लाऊँ॥
क्या उस तीनमे का यक खिरदमंद[2]। जो थे आदिल[3] हुनरमंद शहके फ़र्जंद॥
"क्या दाना शुतुर[4] बरजोर है ओ। क्या एक आँख उसका कूर[5] है ओ॥
क्या दुसरा चतुर कहना धरम है। जो उसके मूमने[6] यक दाँत काम है"॥
क्या तिसरा जो आरिफ[7] रंग-रंग है। "वले उस ऊँट का यक पाँव लंग है" "॥
हर एक आरिफ वचन जब यो सुनाया। ढूँढन हारेकुँ जानों जीव आया॥
पवन त्यों मैं व कीता[8] कामकूँ ओ। चल्या जो शातिर[9] अपने कामकूँ ओ॥
चरन के ओ तरग करते नथे गर्म। कदम पर धर कदम चलते अथे नर्म॥
चले आपे वहाँ यों तीन ज्ञानी। अथा एक बाग नादिर[10] साफ पानी॥
दिसा यक झाड ऊँचा जो गगन था। हा हवा होर झछाँव चांधर फुलवन था॥
बयक तुबा मगर था नाम उसका। जो यक यक कोस दौड्या छाँव उसका॥
कुछ यक खाये-पिये मुख हात धोये। बंधे घोडे वहाँ टुक सुखसों सोये॥
हुये हुशियारसो सों भी बात करते। खुशीकुँ याद कर गमकू बिसरते॥

× × ×

गया सो सारखा फिरफिरकर आया। बहुत कुछ शोर होर गांगा उचाया[11]॥
गजब[12] की आगकूँ रोशन कराकय। जबाँकी तेगकूँ पानी दिलाकर॥
क्या[13] दो कोस दौड्या हूँ इधर में। जहाँबोले तुमे देखा उधर मैं॥
नहीं देख्या हूँ बीछू सांप झाडाँ। नही देख्या हुँ काँटै सख्त ठारा॥
वले देख्या नही मैं गर्द उसका। मर्‌या हर बाल में सब दर्द उसका॥
पवन त्यों मै बहुत जल्दी सों धाया। उड्या क्या धन-उपर या भुँइ छिपाया॥
क्या "जाना मै का एक ज्वान दाना[14]। जे कुछ समछ्या हुँ मैं सो ना छिपाना॥
घडा हाउका भर्‌या है इस तरफ जान। शहद का उस तरफ लाद्या मरतबान"॥
क्या दूजा कि उसपर इस्तरी है। चतुर बागे अरम[15] की शहपरी[16] है"॥
क्या तीसरा "जो है वो पेटसों नार। शिकम[17] के भारसों होता है आजार[18]"॥

(ङ) चोरी का अपराध--

निशान्याँ थे जेते पाया ओ जंगी[19]। क्या तावत[20] उननपर ओ करन की॥
नही समजा उननमे है अमीरी। ....॥
क्या "यो चोर है दिसते भले यो। बशर[21] के काटते फिरते गले यो॥

---

१. लाख दया, २. बुद्धिमान्, ३. न्यायी, ४. ऊँट, ५. अंधा, ६. मुँह मे, ७. ज्ञानी, ८. किया (पंजाबी), ९. चालाक, १०. दुर्लभ, ११. उठाया, १२. क्रोध, १३. कहा, १४. ज्ञानी, १५. स्वर्गोद्यान, १६. परियों की रानी, १७. पेट, १८. दुःख, १९. हब्शी, २०. तकलीफ, २१. मनुष्य।

तुरग-मानिक-रतन जिसका जो पावें । ओ जो सुरमा नयनम्याने[1] छुपावें ॥
मिठे बातों सो करते दिल-नवाजी[2] । ॥
हरा कान फाटे हो सयामी । जंगलमें खल्क[3] कूं देते हैं फासी ॥
बडे माहिर[4] बुरे हैं चोर सहजोर । चुरा मुर्दा कफन खाली करें गोर[5] ॥
जवा का कर ढढोरा शोर उचाया[6] । तमाशा देखने सब खल्क[7] धाया ॥
मिले हाले नमन[8] सब खल्क सारे । अये जा चाद म्याने[9] ओ बेचारे ॥
केतक कहते एते हैं शाहजादे । केतक कहते हैं चोर पयादे ॥
कहे सब मिल कि तीनों कूं जकडकर । ले जा तूं शहकने[10] सबकूं पकडकर ॥
जब आये शाहशकन तीनो जवाना । नजर कर खूब देख्या शाह दाना ॥
क्या[11] तो सारबा[12] सब गिमनके धाता[13] । निशाया टूटकर बोरे गो वाता ॥
सकल बाता कल शहरन क्या ओ । जिता कहना अया रह चुप रहया ओ ॥
क्या तीनोंकूं शह "यो हाल क्या है । कहो इस बात का अहवाल क्या है ॥

(च) मुक्ति का रास्ता—

दुआ अव्वल किये उन तीन यारा । जो अपने मुल्क के थे ताजदारा ॥
"जदालग[14] रातदिन है मुग-माही[15] । तदा लग कर तुं जग में बादशाही ॥
जदा लग है धरत होर सूरका नूर । अछो[16] "तुज शाह का यो मुल्क मामूर[17]" ॥
हमें तीनो मुसाफिर हैं गरीबां । जहांके फैज[18] सो हैं बेनसीबां ॥
बहुत बरसां के फिरते हैं उदासी । रियाजत[19] की गलेमें घाल फांसी ॥
हम देखे तमाशा सब नगरका । अजायब होर गरायब[20] बह्लोबर[21] का ॥
नहीं हमनाकुं भाता शहरगोशा[22] । तमा[23] का नैं हमारे पास तोशा[24] ॥
खुदाका है बहुत हमनापर[25] साया । जो शहके शहरके नज्दीक लाया ॥
अवल आया यो जगी[26] जो सिपाही । डरे जंगल के मारे मुगामानही ॥
क्या देखे तो मेरा ऊंट खोलो । दरीचे रास्तीके[27] खूब खोलो ॥
जराफत[28] का उडाये मान मे जाग । कहे हँसते लग्या बदनाम का दाग ॥
गुनहका ता लगी हमनाकुं झाली । नहीं देखे सो बातां झूठ बोली" ॥
गजब में आ गया[30] तो शाह ज्ञानी । "नहीं देखे सो बोले क्या निशानी ॥
कहो यक बार किस्सा ब्यानसा मैं । सुनूंगा जीवके दो कानसा मैं ॥
जा कोइ सूरत नहीं देखे हरिनका । निशानी क्यो कहे उसके बरन का" ॥

\+ \+ \+

---

१ नेत्र में, २ दिल पर दया, ३ लोगो, ४ जादूगर, ५ कब्र, ६ उठाया, ७ लोक, ८ कुंडलाकार, ९ चाँद में, १० शाह के पास, ११ कहा, १२ ऊँटवान, १३ भाँति, प्रकार, १४ जब तक, १५ प्राणी, १६ रहो, १७ समृद्ध, १८ दया, १९ तपस्या, २० अद्भुत, २१ जल-थल, २२ शहर का कोना, २३ लोभ, २४ पाथेय, २५ हमारे पर, २६ हब्शी, २७ सत्य के, २८ दिल्लगी, २९ कौआ, ३० क्रोध, ३१ कहा।

किये सिज्दे[१] दिखाये ख़ास ख़इलास[२] । कहे "बंदे हमे है शाह के ख़ास"॥
उननमें का चतुर यक मर्द हुशियार । क्या मीठे वचनसों नेक गुफ्तार॥
"बहुत जग राजकर छत्तर सुटे[३] सो । तुरंग जम[४] दान गरमाते हटे तें॥
क्या "एक बात फिर अंधला सो मै हूँ । समज उस ऊँटके इस धात[५] परसों॥
जेता ओ गश्त[६] जंगलमें कर्‌या है । जहाँ ताँ यक तरफ अक्सर[७] चर्‌या है॥
बँध्या मै नकश[८] अकसर[९] ऊँट है कूर[१०] । जो चरता एक तरफ का सख्त है जोर॥
क्या दूजा कि "सुन ऐ नेक फरहंग । किया मै ऊँटका यक पाँव है लंग[११]॥
चल्या था पाव खर्राता सुवहानी । दिसा मुज रेत पर उसकी निशानी॥
समज इस बात परसो मै जो बोल्या । कि ज्यों ग़ायब चतुर शतरंज[१२] खोल्या॥
जो था सितारा चतुर आकिल खिरदमंद[१३] । क्या था दांत यक कम है हुनरमंद॥
क्या ओ शाहका सुन खुशजबानी । ....॥
दिस्या मुंज एक ठार ओ ऊँट आया । वहाँ के शाख-पात ओ तोड खाया॥
जुगाल उसका पड्या था एक किनारे । बहुत पाता झडे थे उसमे सारे॥
क्या मै यो समज तूँ शाह जम है । जो इसके मूँ मने[१४] यक दाँत कम है॥
सून्या सब बात बोल्या शाह दिलदार । "कहे है यो समझ यो तीन गुफ्तार[१५]॥
क्या अव्वल जो किस्सा[१६] शहद-घिउका । समज बोल्या छिपासो राज जिउ का॥
अथा यों जमीके खाक ऊपर । पड्या था कज शकल[१७] खाशाक[१८] ऊपर॥
मख्या भी यक तरफते शोर उचाये । जरापोशाँ-निमन जों दिलदिलपने धाये॥
अथ्या दूजे तरफ चिमट्याँ[१९] का तूँदल[२०] । पवनकूँ तिल न था जाने वहाँ वल॥
जिधर चिमट्याँ अथ्याँ समझा कि घिउ है । जो अकसर[२१] घिउ चिम्टियाँका सो जिउ है॥
क्या दूजा जो बोल्या महपरी[२२] है । चतुर असवार उँसपर इस्तिरी है॥
जिधर मख्याँ अये बोल्या शहद जो... । जो मख्यां तिफ्ल[२३] शहद उसका सो जिउ है॥
दिस्या मुंज यो जो बैठाऊँ कनानी । धर्‌या करका फिर पायां के निशानी॥
जहाँ बैठा अथा संद[२४] ऊँट भारी । अराफ्त[२५] वाँ कमर किये थी ओ नारी॥
परन ना सक मै उसका बास लाया । मेरे रोम्-रोम्मे सब शौक[२६] ढाया॥
क्या मै हुक्म उसमें शहतिरी[२७] है । नही असवार मर्द ओ इस्तिरी है॥
क्या तिसरा जो बोल्या पेटसो नार । हुआ मालूम यो सुन शाह गुफ्तार[२८]॥
उठी भुंइ परसों जब असवार होने । लगी तब फिक्र[२९] के मोती पिरोने॥

---

१. दंडवत्, २. मुहब्बत, ३. फेके, ४. सदा, ५. इस भाँति, ६. घूमना, ७. प्रायः, ८. चित्र, खयाल, ९. प्रायः, १०. अंधा, ११. लँगड़ा। १२. शतरंज (खेल), १३. बुद्धिमान्, १४. मुँह मे, १५. वात, १६. दिल का रहस्य, १७. टेढ़े आकार, १८. तृण, १९. चीटियाँ, २०. झुंड, २१. प्रायः, २२. चंद्रपुरी, २३. बच्चा, २४. संधाकर, २५. ऊँचाई, २६. आनन्द, २७. राजस्त्री, २८. वातचीत, २९. चिन्ता।

जहाँ था नक्‍श दो पग सुव्हानी[1] । अगे दो हाथके थे नक्‍श बयानी ॥
चरन देख चार उसके राज़[2] खोल्या । अहे सो पेटसो कर बात बोल्या ॥

§ २१ रुस्तमी (१६४९ ई०)

कमालखाँ दवीर उपनाम रुस्तमी बीजापुर के एक प्रसिद्ध खत्तात (सुलेखक) वंश से संबंध रखता था। इस खानदान को खत्तात की उपाधि प्राप्त थी। इसका पिता इस्माइलखाँ खत्तात पाँच पुश्त से बीजापुर दरबार में खुशनवीसी (सुलेखक) का काम करता आया था। रुस्तमी दूसरों की पुस्तकों को उतारने की जगह स्वयं एक सिद्धहस्त कवि हो गया। उसने और भी कितनी ही गजलें और कसीदे लिखे होंगे, किन्तु वह जीवित है अपने महान् कथा-काव्य (मस्नवी) 'खावरनामा' मे, जो पच्चीस हजार शेरों (अर्धालियों—वाल्मीकिरामायण से थोड़ा ही छोटा) में समाप्त हुआ। 'खावरनामा' का एक हस्तलेख इंडिया-ऑफिस-लाइब्रेरी (लंदन) में है, जिसमें प्राय प्रत्येक पृष्ठ पर रंगीन तस्वीरें हैं, यद्यपि वह उतनी सुन्दर नहीं हैं। रुस्तमी का खावरनामा इसी नाम की फारसी मस्नवी का अनुवाद है, जिसे इब्नहुसाम ने इससे सवा दो सौ वर्ष पूर्व १४२६ ई० (८३० हि०) में लिखा था। खावरनामा में फिरदौसी के शाहनामे की नकल में हजरत अली की काल्पनिक विजयो का वर्णन है। सुल्तान इब्राहिम कुतुबशाह के तरुण पुत्र मिर्जा मुहम्मद अमीन की पुत्री खदीजा सुल्तान शह्र बानू (बड़े साहब की) प्रेरणा से रुस्तमी ने अपनी पुस्तक को डेढ़ वर्षों में लिखकर १६४९ ई० (१०५९ हि०) में समाप्त किया।

रुस्तमी ने अपने और अपने काव्य के बारे में लिखा है*—

किया तर्जुमा[3] दखिनी दिलपज़ीर[4] । बोल्या मोजज़ा[5] यो कमालखा दबीर ॥
खलक[6] कहती है मुज कमाल खा दबीर । तखल्लुस[7] सो है रुस्तमी बेनज़ीर[8] ॥
नबी[9] की जो हिजरत[10] थी किता खयाल । हजार पर पचास और नौ की थी साल[11] ॥
कहा रुस्तमी उस वक्त यो किताब । बँध्या बानकी गौहरा[12] बे हिसाब ॥

और भी †—

फलक[13] कूं वफादारी[14] अँदेशा[15] नें । बगैर अज जफा[16] उसको कुछ पेशा नें ॥
अयी खूब यो जिंदगी होर हवस[17] । अगर मर्ग[18] का डर न होता ज़पस[19] ॥
अजल साथ[20] कोई जिव छुपाया नही । अपस दर्दकूं दारु[21] खाया नही ॥
जो हस्तीके[22] कूंचे रख्या है कदम । बाहर जावना है ज-राहे-अदम[23] ॥

---

१ शुभ, २ रहस्य। * यु० द० म०, पृ० २४१, उ० शा०, पृ० २२१। ३ अनुवाद, ४ मनोहर, ५ चमत्कार, ६ दुनिया, ७ उपनाम, ८ अनुपम, ९ पैगंबर, १० नगर त्याग, ११ १०५९ हि० (१६४९ ई०), १२ रत्न मोती। † उ० शा०, पृष्ठ २२०। १३ आकाशदेव, १४ विश्वासपात्रता, १५ संदेह, विचार, १६ जुल्म, १७ लोभ, १८ मृत्यु, १९ पीछे, २० मृत्यु के पास, २१ दवा, २२ हाथी के, २३ नेस्ती की राह।

जो खुर्शीद[1] है तो भी पागा ज़वाल[2] । जो रुस्तम है तो भी उसे मर्ग-जाल[3] ।।
बिछानाँ भी कोइ यों तख्त होर ज़ौक नाज[4] । पड्या एक तख्ते पे करता निमाज़[5] ।।
दोनों ओंच[6] आखिरकूँ माटी होवें । मरें होर दुनिया कूँ भी छोड देवें ।।
जो बेहतर वही है कि जो भार[7] में । दुन्यामें छोड़ू इसकूँ यादगार में ।।
जो इस देखनेमे बुढा होय जवां । अकलकूँ भी होय इसते ताजां रवाँ[8] ।।
इसी नाम[9] सो नाम मुज होय बुलंद । होवे खल्क भी इस सेती बहरामंद[10] ।।
जो भर जर्रा मारी[11] ते मुज होय गुबार[12] । दुन्यामें अछे[13] मुजकूँ यो यादगार ।।
जो-शायर था फिरदोशियाँ पाक जाद[14] । अछो हककी रहमत[15] सों आ भौत शाद[16] ।।
दुन्यामें हुई बात उससे बुलंद । हुआ शेरते[17] भी उने बहरामद ।।[17]
हुआ शेर उसे खूब आवे रवाँ[18] । .... ।।
कि या नामा ओ खल्क मे नामदार । रह्या जगमें उसते च[19] यो यादगार[20] ।।
वुलंद-मर्तबा[21] उसते है बातकूँ[22] । किया शेर[23] जगमे ओ इस धात[24] सों ।।
हुआ खत्म उस मस्नवी बोलना[25] । मोती बातके रासकर[26] रोलना ।।
बोल्या जगमें तोहीद[27] ओ होर पंद[28] । .... ।।
छोड़्या जों कि ओ काबिले-खाक[29] कूँ । खुदा बख्श्या[30] फिर्दौ पै पाक कूँ ।।
दुन्या कुँ बुलंदी वो पस्ती[31] तुई । सभी नेस्त[32] है आंच[33] हस्ती[34] तुई ।।
इस एक बेत[34] पर भिश्त[35] उसकूँ दिया । ।।
क्या बोलूँ जो मै बोले सो नै रह्या । विधे नै सो मोती कहीं नै रह्या ।।
अबल शायरों[36] कुछ नही छोडे है । जो कुछ बोलना सो सभी बोले हैं ।।
नै अब रया है बुस्ताँ[37] में एक फूल । जो उस पर नही बोले बुल्बुल बोल ।।
अकल यार[38] इस बात मे होये ह्म । करे लुफ्फसों मुजकूँ तालीम ओ ।।
कि ए बातके ख्यालके नक्शबंद[39] । जो तुज बातते इल्क होय बहरामंद[40] ।।
कुये ते तबीयत[41] के उपराल आ । जों हारुत[42] जादूगरी कर दिखा ।।
तुँ भी बातकूँ बातसों सांघकर[43] । .... ।।

---

१. सूर्य, २. पायेगा अवनति, ३. धोखा-फरेब, ४. आनंद-मौज, ५. दया, ६. वैसे ही, ७. बाहर, ८. प्रस्थान, ९. पुस्तक, १०. लाभोचित, ११. मिट्टी के कण से, १२. धूल, १३. रहे, १४. सुजात, १५. कृपा, १६. अतिप्रसन्न, १७. पद्य, काव्य, १८. बहता पानी, १९. उससे ही, २०. कीर्त्ति-स्मारक, २१. दर्जा, पद, २२. वाणी को, २३. पद्य, कविता, २४. भाँति, २५. प्रबंध-काव्य-रचना, २६. राशि, २७. अद्वैत (इस्लामी), २८. शिक्षा, २९. मिट्टी का शरीर, ३०. प्रदान किया, ३१. उन्नति और अवनति, ३२. अभाव, ३३. गर्मी, ३४. अस्तित्व, ३४. शेर, पद्य, ३५. स्वर्ग। * यु० द० म०, पृ० २३९ ।

३६. कविगण, ३७. फुलवाड़ी, ३८. बुद्धि का दोस्त, ३९. चित्रकार, ४०. लाभान्वित, ४१. मन, ४२. हारुत-मारुत, ४३. साध।

तु भी मार ला गंज[1] वीरानाते[2] । . . ॥
किया तूं नियत काममें जिम दुरुस्त[3] । न को डर कि अवलो खिरद[4] बार तुस्त[5] ॥
सखुन[6] को अगर तबा तुज[7] है रवाँ[8] । तो यारी करेंगे बख्त[9] तुज निहाँ[10] ॥
हुआ ताजा दिल अकलके ज्वाबते । जो प्यासा होये खुश दिये आवते[11] ॥
न देख्या किसी मर्द इस सातमें । जो इस दास्ताँ[12] कूँ कये बात में ॥
मसुनके[13] घोडे-पर हुआ हूँ सवार । जो इस बाटकूँ तै करूँ एक वार* ॥

रात्रि-वर्णन—

आया था जमी पर वो जाशाहजग[14] । जमीं[15] होर जमा यूँ लिया था ॥
सफेदी की खिल्ची थी मुखपर नकाब[16] । परिन्दा[17] सफेद फँस्या था आफताब[18] ॥
जमीपर अबर[19] का मंडप था तमाम । ॥
जमी पर तो सुम्बुल था नै था सुमन । ॥
गया था महल्ने भितर शाहचीन[20] । सबाही[21] का था मुर्ग भी ख्वाबमें ॥
जमी होर जमा[15] में भी काजल भर्‌या । अँगार जावे जगमें धुआ भर रह्‌या ॥
जेते मुग माही[23] कूँ था भीन ख्वाब । जमीकूँ दरग[24] आसमा बाशिताब[25] ॥
फलक नो तबक[26] गोहरा[27] ह्या सवार । . ॥

युद्धकाल में दो अपरिचित सवारों को सीमा के भीतर देखकर दुर्गपालों की घबराहट का चित्र है—

पुकार्‌या कि "ए नामवर महतराँ । बोलो नाव अपना ब-नाम-आखराँ[28] ॥
बोलो अव्वल-आखिर[29] भी अपना तमाम । के[30] आये है इस मुल्क में क्या है काम ॥
कहा जाते हैं और कहाँ आये हैं । क्या झगडे पर हैं या खुशी ल्याये हैं ॥
हमें भी कमर बाँध आये हैं या । निशानी तुमारा जो पाये हैं याँ ॥
अगर झगडेकूँ आये हैं तो कहो । बगर[31] सुलह[32] सो आये हैं तो कहो ॥
दिया ज्वाब भी यो उसे याद शेर । बुरे दिल का डरता है देखकर दिलेर ॥
दिलावर[33] न डरता हैं देख मर्दें-जंग[34] । जो डरता है देख छाव अपनी पलंग[35] ॥

---

१ खजाना, २ उजडते, ३ ठीक, ४ धी, बुद्धि, ५ तेरा फल है, ६ वाणी, काव्य, ७ तेरी तबियत, ८ जारी, ९ भाग्य, १०. गुप्त, ११ पानीसे, १२ कथा, १३ वाणी।

* उ० श०, पृ० २२२। †यु० द० म० के (सपादक, श्रीनसीरुद्दीन हाशमी दखिनी हिन्दी में साथ लगाने के लिए सबसे अयोग्य व्यक्ति हो सकते थे। उन्होंने पाठो की हत्या कर डाली है) पृष्ठ २३९, उ० श०, पृष्ठ २१९।

१४ युद्ध का राजा, १५ भूमि और काल, १६ घूघट, १७ पक्षी, १८ सूर्य, १९ आकाश, २० चीनराज, २१ प्रात, २२ नींद, २३ प्राणी, २४ भय, २५ जल्दी में, २६ नवो लोक, २७ मोती, २८ नामियो के साथी, २९ आदि-अन्त, ३० क्यों, ३१ और यदि, ३२ शान्ति, ३३ वीर, ३४ युद्ध के आदमी को, ३५ शेर।

किसीकी बुराईसों हमन का मने[1]। इस अंगे[2] भी कुछ बोलना नामने॥
चले हैं भी मग्रिब-जमी[3] कूँ हमें। हमन पर नको[4] बदगुमां[5] हो तुमें॥

+ + +

बोला ले चल्या दीनोंकूँ शाहकन। सितारे निमान[6] गये दोनों माहकन[7]॥
जिसे भेजा था शह सौ अंगे हुआ। दोनोंकूँ भी दरबारकूँ ले गया॥
देखे उसके दर्बार-मैदानकूँ। महलों गये हैं कि असमानकूँ॥
महलकूँ रंगाया है सबजर सगात[8]। महल उसके असमानसो बोलो बात॥
देखे भौत घरकूँ संवार्‌या अहै। उसे चार सफ्फा[9] बनाया अहै॥
किया था फ़र्श भी सात रंग। सातों रंगके भी बिछाया था सग॥

§ २२. निशाती (१६५६ ई०)

उत्तर मे खड़ी (हिन्दी) बोली की कविता १९वीं सदी के अन्त में नाममात्र और सो भी बेमन से हुई। वस्तुतः उसका आरंभ २०वीं सदी के आरम्भ से होता है, जिसमें पहली दो दशाब्दियाँ अभ्यास करने की थीं। लेकिन, अलाउद्दीन और मुहम्मद तुगलक की दक्षिण-विजय के साथ जो लाखो मुसलमान सामन्त, सैनिक, शिल्पकार आदि के रूप में दक्षिण गये, उनके ही कारण दक्षिण मे गुलबरगा, गोलकुंडा और बीजापुर मे खड़ी हिन्दी की कविता उस वक्त शुरू हुई, जिस वक्त मैथिलकोकिल विद्यापति अपने मधुर गीतों से प्राची को मुखरित कर रहे थे। किन्तु उसकी प्रौढता का जमाना वही है, जब कि सूर और तुलसी की कविताओं के रूप में व्रजभाषा और अवधी की कविताएँ उन्नति के शिखर पर पहुँची। इस दक्षिणी खड़ी हिन्दी-कविता के सूर और तुलसी, वजही, सुल्तान मुहम्मद कुल्ली कुतुब (१५६५-१६१२ ई०) और गौवासी (१६२५ ई०) थे। यह कविता-प्रवाह तबतक विकसित होता चला गया, जबतक कि औरंगजेब ने दक्खिन की इन मुसलमानी रियासतों को १६८६-१६८७ ई० मे खत्म नही कर दिया। दक्खिनी का अन्तिम महाकवि वली (१७००ई०) उर्दू-कविता का आरंभ भी करता है।

निशाती या इब्न-निशाती १७वी सदी के मध्य में गोलकुडा में हुआ था। वह समय सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब (१६२४-७२ ई०) का था, जो कि स्वय ऊँचा कवि न होते भी कविता-प्रेमी था। निशाती सुल्तान अब्दुल्ला के दरबार मे एक उच्च पदाधिकारी था। इसकी एक ही मस्नवी (कथाकाव्य) मिली है, जिसका नाम 'फूलवन' (फुलवाड़ी) है। कवि ने इसे फारसी की मस्नवी 'बिसाते' के आधार पर लिखा है। अप्रैल, १६५६ ई० (रजब १०६६ हि०) मे आरम्भ करके तीन महीने बाद ईद के दिन (२३ जुलाई, १६५६ ई०) को उसे समाप्त करते लिखा है—

---

१. दिल मे, २. आगे, ३. पश्चिम के देश, ४. नहीं, ५. बुरे विचारवाला, ६. सितारे-जैसा, ७. चाँद के पास, ८. सोने-सहित, ९. साफ।

अथा तारीख लाया तो यो गुलजार,
इग्यारह सौ कु कम थे तीस-पर-चार।

निशाती अपने बारे में लिखता है कि मैं गजलें (प्रशंसात्मक पद्य) नहीं कहता, लेकिन इससे मेरे सिद्धहस्त होने में कोई बाधा नहीं, क्यों कि निजामी और सादी जैसे (फारसी के महाकवियों ने) भी गजलें नहीं कहीं। मैं भी उन्हीं की तरह मसनवी ही के द्वारा प्रसिद्धि और सन्मान प्राप्त करूँगा। यदि मैं बादशाह के दरबारियों और शायरों में होता, या जीविकार्जन के झमेलों से पूरी तौर से मुक्त होता, तो निश्चय ही कोई अत्यन्त महान् कृति अपनी कीर्ति के लिए छोड़ जाता।

१ फूलबन

दक्खिन के वजही और गौवासी जैसे कवि अभिमान में चूर थे, किन्तु निशाती एक निरभिमान कवि था। उसे इतने ही से सन्तोष था, कि वह बड़ा आदमी नहीं है, तो भी लोग उसका सम्मान करते हैं। वह अपने समसामयिक कवियों—वजही, गौवासी, नसती, सनअती—से प्रशंसा की आशा नहीं रखता, न अपने ग्रंथ में उनका नाम ही लेता है, लेकिन अपने से पहिले के कवियों फिरोज, महमूद, खलील अहमद और शौकी के लिए सम्मान प्रदर्शित करता है। 'फूलबन' लिखने का खयाल उसे कैसे आया, इसके बारे में वह लिखता है*—

'बिसातें' जो हिकायत[1] फारसी है।
मुहब्बत[2] देखने की आरसी है।
इबारत[3] सब किसी के ने समझता।
तुझे है फारसी में दस्तका[4] आज।
न करसी[5] तरजुमा भी कोई तुझ बाज[6]।
इसे हरक्स पे तें[7] समझा कुं तुं बोल।
इसे हरखस कै तें समझा कु तुं बोल।
दखिन की बातसों सार्‍या कूंत खोल।
खुदा के पास मँग हिम्मत बुलन्दी।
नजाकत सा कराय मैं नक्शबन्दी।
अहै ताजा चमन पैवस्ता[8] मेरा।
शगुफ्ता[9] है सदा गुलदस्ता मेरा।
लताफत[10] में है ज्यों खूबा[11] की अबरु[12]।
हरेक मिसरा[13] जो है वर्जुस्ता[14] मेरा।

* यु० द० म०, पृ० ८४।

१ कथा, २ प्रेम, ३ वाक्य, ४ अधिकतर, ५ करेगा (पंजाबी), ६ तेरे बिना। ७ हरेक के लिए, ८ सुबद्ध, ९ प्रफुल्लित, १० मंजुलता, ११ सुन्दरियों, १२ भौं, १३ वाक्य, १४ द्योर्निमित।

दिया है जगकूँ रौनक यकतरफसे[1]।
है यो बाज जो वो रास्ता मेरा।
करम[2] सों हक के[3] पाया आज राहत[4]।
फ़लकसौं[5] था जो खातिर[6] खस्ता[7] मेरा।

'फूलवन' की रचना में कवि सफल हुआ है, इसमें शक नहीं। १६-१७वी सदी की दूसरी दक्खिनी कविताओं की तरह फूलवन मे भी अरबी-फारसी के शब्दो का अगाध प्रयोग हुआ है, लेकिन साथ ही हिन्दी-शब्दो का भी खुलकर उपयोग किया गया है, जैसा कि 'फूलवन' नाम से मालूम होता है। प्रोफेसर जोर (हैदराबाद) ने निशाती और उसकी कविता के बारे मे लिखा है—'फूलवन' निस्संदेह उन थोड़े से पद्यो मे से है, जो सच्चे अर्थो में गम्भीर छानबीन के परिणाम है। इसके लेखक का वास्तविक उद्देश्य था, एक सुन्दर साहित्यिक तथा मनोरंजक पुस्तक लिखना, न कि फारसी कहानी का सूखा अनुवाद करना।...भाषा और वणन-शैली के अनुसार यह दक्खिन के सर्वश्रेष्ठ मसनवियों में से है। इसका छन्द भी खास और चित्ताकर्षक है। कवि अपने मन की कल्पना और वास्तविक भावोद्रेक को पग-पग पर प्रकट करने का इच्छुक दिखलाई पड़ता है। रीति-रिवाजों और विवाह-प्रथाओ के जो वर्णन उसमे आये है, वे बिलकुल स्वाभाविक तथा मानव-जीवन के अनुकूल हैं। वहाँ कुतुबशाही शासनकालीन जीवन और रीति-रिवाजों के बढ़िया चित्र है*।

कवि के सौ बरस बाद सिघोट (कड़पा, आन्ध्र) की एक जागीरदारनी की प्रेरणा से मुहम्मद हैदर जाफर-पुत्र ने 'फूलवन' में समनवर और हुमायूँ का ब्याह और जोड़ दिया। जागीरदारनी ने अपने हस्तलेखो को सुन्दर चित्रों से अलंकृत कराया। यह मूल सचित्र हस्तलेख लन्दन की इंडिया ऑफिस-पुस्तकालय (संख्या १०३) में अब भी मौजूद है।

अपने समकालीन दूसरे दरबारी कवियो की तरह निशाती ने भी सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब की प्रशंसा मे कुछ पंक्तियाँ लिखी है, जैसा कि—

करूँ तारीफ में उस ताजवर का।
समझता है जिने कीमत गुहर का।
शाहों का शाह अब्दुल्लाह गाजी।
अछो जम हक्सों उसके पेशवाजी।
सआदत के नयन का नूर है तूँ।
शुजाअत के गगन का सूर है तूँ।
अजब नैं देख तेरी नौशेरवानी।
करें बकर्‌याँ की गुरगाँ पासबानी।

---

१. सर्वत्र, २. कृपा, ३. सत्य, भगवान् की, ४. आराम, शान्ति, ५. आकाशसे, भाग्यसे, ६. दिल, ७. श्रांत। *उर्दू शहपारे, पृ० १०९।

अगर देगा जो तेरे मदुल हद बांध।
रखेगा कर जतन केतनाकूं (तू) चांद।
जहाँ लग मेहर चरखे अस्तरी है।
जहाँ लग घन पे जोहरा-मुश्तरी है है।

(१) कथा—

कचन पटन नगर का बादशाह एक फकीर को स्वप्न में देखकर उसका भक्त बन गया। बडी खोजके बाद उसे फकीरका साक्षात्कार हुआ। फकीर ने उसे कितनी ही कहानियाँ सुनाई—जिनमें से एक को फूलबन का विषय बनाया गया है। कश्मीर के बादशाह के बाग में एक फूल का पौधा था, जिसपर मुग्ध हो एक बुलबुल रोज आकर उसे छेडती थी। बेचारा फूल कुम्हला जाता था। इस अपराध के लिए बुलबुल को पकडकर बादशाह के सामने लाया गया। बुलबुल ने अपनी रामकहानी कही—मैं खुतन के एक सेठ का लडका हूँ। वहाँ एक भगत की कन्या पर मुग्ध हो गया। दोनो एक दूसरे से मिलने में सफल हुए। जब यह बात भगत को मालूम हुई, तो उसने शाप दे दिया, जिससे लडकी फूल बन गई, और मैं बुलबुल। बादशाह ने इस्म-आजम (महामंत्र) की अगूठी का पानी छिडक दिया, और दोनो असली रूप में हो गये। बादशाह के कहने पर वह और भी कितनी ही कथाएँ सुनाता रहा। अन्तिम कथा अजम (ईरान) की राजकुमारी समनबर और मिस्र के राजकुमार हुमायू के व्याह की है।

कविता के नमूने देखिए (प्रियतमा का नख-शिख वर्णन)*—

मेरा बाप था सौदागर खुतन का। न था पर्वा उसे कुछ मालो-धन का॥
बडा था भौत सब सौदागरोंमें। अया मशहूर सालम[1] बदरां[2] में॥
होकर मशहूर था सौदागरी सू। कते[3] थे कारवाँ-सालार[4] उसकूँ॥
बडे ये उसनके[5] मोहराके अबार[6]। देगा सो थे रुपय्ये होर दीनार[7]॥
तिजारत[8] की बहुत सोरात[9] सा वो। गया इक मतबा गुजरात कूं सो॥
अथा मैं उस सफर में उसके सगात। पड्या[10] सो क्या कहूँ उस ठार पर घात[11]॥
मेरी उस वक्त थी अव्वल जवानी। नवी अँपडी[12] थी मुजकूं शामदानी[13]॥
अथी उस ठार यक जाहिद[14] कूं बेटी। फरिश्ताखूय[15] तिस आबिद[16] कूं बेटी॥
चतुर, चचल, सरगकठल[17] सुहानी। न उसका कोई था सूरत में सानी[18]॥
चँदर आधा कहूँ मैं क्या पेशानी[19]। चँदर आधा नही वैसा नुसानी॥
मैंवाके क्या कहूँ मोहराब[20] थे कर। कहाँ वो नूर[21] मेहराबा के ऊपर॥
नयनकूं नरगिसाँ कहना है नासाज[22]। चमकने नरगिसाँ में काँ है वो नाज[23]॥

---

* उ० श०, पृष्ठ २२७–२८। १ सारे, २ बन्दरगाहो, ३ कहते, ४ सार्थवाह, ५ उसके पास, ६ राशि, ७ अशर्फी, ८ व्यापार, ९ रुचि, १० घटित हुआ, ११ घटना, १२ मिली, १३ हर्ष, १४ भक्त, १५ देव-स्वभावा, १६ पुजारी, १७ स्वगकठी, १८ समान, १९ ललाट, २० धनुषाकार द्वार, २१ प्रकाश, २२ अनुचित, २३ लालित्य, कटाक्ष।

कहूँ रुखसार कूँ क्यों उसके लाला । हरेक लाले के है दरम्यान[१] काला ॥
मैं सिरते पाँव लग उस मोहिनी का । कि था त्यों, क्या सिफत[२] करने सकूँगा ॥
हवस[३] उस देखने का मुजकुँ आया । तमाशे कुँ मेरा दिल सिर उचाया[४] ॥
अवल था हार कुछ आखिर हुआ होर । पिरित की चटपटी मुजकूँ लगी जोर ॥
जो याद आती अथी[५] वो चुलबुली[६] मुज । तो होती थी सीने में गुदगुली[७] मुज ॥
पियारीका पिरित प्यारा लग्या सो । पिरितका थंड होर बारा[८] लग्या सो ॥
लगे च मा होर नयनाँ उबलने । लग्या जो शमा होकर जीव जलने ॥
धुआँ आहाँका सिरपर हो बदल छाय । गरम भायाँ हसों होंटों पर छले[९] आय ॥
कली नमने[१०] हुआ दिल तंगो-नाशाद[११] । हुआ टुकडे गरे-बाँ[१२] फूलकी नाद[१३] ॥
पिरितकी आग सो दिल जल हुआ राख । सबूरी[१४] का जो था दामन[१५] हुआ चाक ॥
जो उसकूँ देखने का मुज हुआ जौक[१६] । जो आया दिलमने मेरे अपन[१७] शौक ॥
हरेक निस जाउँ चंचल की गली कूँ । हलो[१८] छुपकर देखन उस चुलबुली कूँ ॥
यकेला उस गली में कोइ न दूजा । जलूँ मैं चाँदनीकी धूपमे जा ॥
कर उस चदरबदनके घर तरफ मूँ । हरेक निस नैनके तारे बिखेरूँ ॥
हरेक शब[१९] गम सों मैं वो न अछै[२०] जां । धुये सों आह के बाँधूँ खुला वाँ ॥
करूँ हर शब नयन सों आबपाशी[२१] । उसासोकी करूँ दमसों फराशी[२२] ॥
केतक दिनके पछी उम्मेद[२३] का सूर । मेरे बख्ताँ[२४] के नैनाकूँ दिया नूर ॥
यकायक झाँक कर देखी मुजे नार । मेरे होर उसके दो दीदे[२५] हुये चार ॥

पुस्तक को समाप्त करते हुए निशाती लिखता है*—

किया यो इब्तिदा[२६] देख माहरज्जब । कमालत कूँ पऊँच्या ईदकूँ सब ॥
यो 'फूलवन' तीन महीने तक लिकाया । पुनम का चाँद हो पूरा तो आया ॥
गनितमे आली सो यकबार बेताँ[२७] । है सत्रासो पो दोबीस आर (१७४४) बेताँ ॥
अछो[२८] शह कूँ मुबारक[२९] 'फूलवन' यो । नजर मे जम[३०] अछो शहकी चमन यो ॥
उनो पर भी अछो दायम[३१] मुबारक । जो को इस बातका धरता है पारक ॥
लिखना रेकूँ जम[३२] बख्शो[३३] सआदत[३४] । देवे दायम[३५] पढ़नहार कूँ राहत ॥
मुसल्मानों सों उम्मेद है मुज । सखुनदानाँ[३६] सो यो उम्मेद है मुज ॥
करेंगे तो मेरा यो 'फूलवन' सैर । कहो यक बार अछो कर आकबत[३७] खैर[३८] ॥
किया मैं खत्म[३९] खातिम[४०] के इसम[४१] सों । मुहम्मद मुस्तफ़ा मौलल्-अजम[४२] सो ॥

---

१. बीच में, २. गुण, ३. लालसा, ४. उठाया, ५. थी, ६. चंचल, ७. गुदगुदी, ८. वर्षा, ९. छाले, १०. फूल-जैसी, ११. दुःखी, १२. अंचल, १३. फूल की भाँति, १४. संतोष, १५. किनारा, १६. लालसा, १७. अपने को, १८. धीरे, १९. रात, २०. है, २१. जल सींचना, २२. फर्श बिछाना, २३. आशा, २४. भाग्य, २५. आँखे। * यु० द० म०, पृ० ८६–८७। २६. आरम्भ, २७. शेर, २८. रहो, २९. मंगल, ३०. सदा, ३१. सदा, ३२. सदा, ३३. प्रदान करो, ३४. सौभाग्य, सदाचार, ३५. सदा, ३६. वाणी-मर्मज्ञों, ३७. भविष्य, ३८. शुभ, ३९. समाप्त, ४०. दिल, ४१. नाम, ४२. मुहम्मद, सिफारिश करनेवाले दुनिया के स्वामी (गूँगों का स्वामी)।

भाग ३

उत्तरकाल (१६५७–१८४० ई०)

§२३. नस्रती (१६५७ ई०)

१. जीवनी

(मुल्ला मियाँ) नस्रती (पृ० १६७१ ई०) बीजापुर के ही नही, सारे दक्खिन के कवियों में बहुत ऊँचा स्थान रखता था। वह उस समय मौजूद था, जब औरंगजेब दक्षिण-विजयमें लगा हुआ था। इसने अपने 'अलीनामा' में मुगलों के साथ हुए युद्ध का भी वर्णन दिया है। यद्यपि १६३६ ई० तक शाहजहाँ ने बीजापुर और गोलकुंडा को अपना करद बना लिया था, किन्तु जब औरंगजेब ने दक्खिनी रियासतों के अस्तित्व को मिटाना चाहा, तब 'मरता क्या न करता' के अनुसार बीजापुर और गोलकुडा ने तलवार उठाई। नस्रती जहाँ 'मनोहर-मधुमालती' के वृत्तांत को 'गुल्शनेइश्क' के नामसे लिखकर शृगारी कविता का सफल रचयिता है, वहाँ 'अलीनामा' तथा 'नौ कसीदे' (प्रशस्ति-काव्य) उसे वीर रस का कवि सिद्ध करते है।

नस्रती को गारसाँ-द-तासी ने ब्राम्हण बतलाया है, किन्तु उसके अपने वाक्यों से वह और उसके कई पीढ़ी के पूर्वज नौमुस्लिम नही मालूम होते। उसका परिवार दक्षिण के महान् सन्त ख्वाजा बंदानेवाज गेसूदराज का अनुयायी था*—

ब-हम्दुल्ला[1] कुरसी-ब-कुरसी[2] मेरी। चली आई है बंदगी में तेरी॥
जो हूँ मै भी बंदा असीरा[3] हुआ। जो आया हुँ तुज बंदगी में सदा॥

नस्रती का खानदानी पेशा सैनिक का था। उसके सैनिक पिता ने पुत्र की शिक्षा-दीक्षा की ओर बहुत ध्यान दिया था—

जो मै असल मे सिपाही अथा। फ़िदाचर[4] दर्गहे-पादशाही[5] अथा॥
जो था मुँज पिदर[6] यक शुजाअत-मआब[7]। कदीम[8] यक सलहदार[9] जमए-रिकाब[10]॥
ओ शह-कामपर जिन्दगानी मने[11]। कमरबस्ता[12] था जाँफशानी मने[13]॥
बनाने जनम अपना नेक काम। अपस-जिन्दगी[14] मे किया खूब काम॥
नजर धरके मज तबियत[15] में सदा। रख्या नै मुँजे अपसते कर जुदा॥
......................। फिरे ले बुजुर्गों[16] के मज्लिसमने[17]॥
मुअल्लिम[18] जो मेरे जिते खास थे। धरनहार ओ मुँज सों इख्लास[19] थे॥

---

* उ० श० पृष्ठ ५२, ५३।

१. अली की स्तुति के साथ, २. पीढ़ी-दर-पीढ़ी, ३. बंधा, ४. नौछावर, ५. शाही दरबार, ६. पिता, ७. वीरतास्रोत, ८. प्राचीन, ९. शस्त्रधारी, १०. असवार, ११. जीवन मे, १२. कटिबद्ध, १३. प्राण नौछावर करने में, १४. अपनी जिंदगी। १५. हृदय, मन, १६. वृद्ध, बड़े, १७. सभा मे, १८. अध्यापक, १९. स्नेह।

नस्रती दक्खिनी हिन्दी का महान् अन्तिम कवि है। यह प्रसन्नता की बात है, कि जहाँ दूसरे हिन्दी (दक्खिनी या उत्तरी) कवियों की वैयक्तिक बातों का पता लगाना मुश्किल है, वहाँ नस्रती ने अपने बारे में काफी सामग्री जमा कर दी है। नस्रती स्वाभाविक कवि था। उसका मन कमे सैनिक जीवन में लगता? कविता की ओर अपने रुझान के बारे में उसने लिखा है*—

कुछ एक जब सँभाला मैं अपना शऊर[1]। गया कर किताबा पे अकसर अबूर[2]॥
निझाया[3] हरेक तरहका फूलबन[4]। रख्या दिलमें तिस बागबानी के फन[5]॥
देख्या जो जो हर बज्म[6] में कर खियाल। हरीफाँ[7] क्यो है मो सरमस्त[8] हाल॥
(सो) भी मुंजपे माशूक हो शौक था। अपसके नजारे[9] में नित जौक[10] था॥

नस्रती को एक और सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह और युवराज अली प्राय एक ही आयु के थे। ऐसे प्रतिभाशाली तरुण को साथ रखना शिक्षा के लिए उपयोगी समझ उसे युवराज के साथ रख दिया गया। अली को नस्रती ने अपना गुरु कहा है, जिसमें कितनी सभ्यता और कितना दरबारी शिष्टाचार है, यह कहा नही जा सकता। अली १९ वर्ष की आयु (१६५६ ई०) में औरंगजेब के बादशाह बनने के दो साल पहले अली आदिल शाह द्वितीय के नामसे गद्दी पर बैठा। अली आदिल के मरने (१६७२ ई०) पर सिकन्दर आदिल (१६७२-८६ ई०) बीजापुर का अन्तिम बादशाह हुआ। इसी के समय औरंगजेब ने बीजापुर विजय कर आदिल-शाही राजवंश को खतम किया।

नस्रती ने अली आदिल को गुरु मानने कहा है†—

सुरजबाज[11] ना पकडे रंग रतन। चंदर बिन न खुशबू धरे फूलबन॥
किये बाज[12] उस्ताद कोई तबियत[13]। न कोई हो सके काबिले-हैसियत[14]॥
ब-हम्दुल्ला[15] यह क्या बडे बख्त[16] आज। न उस्ताद कोइ मुझअलीशाह बाज॥
कि शह मुज तबीयत की तेजीकुँ पाऊ। सिखाया है जबते बडे दौड चाल॥

अली आदिल न गद्दी पर बैठते ही अपने वयस्क कवि की ओर विशेष ध्यान दिया और वह उसे बराबर संरक्षण-प्रोत्साहन देता रहा‡—

तिलक तख्त[17] शहकू मुबारक हुआ। अपन सायमें-हक बतबारक हुआ॥
तो था ऐन[18] शह कामरानी मने[19]। जहाँ बानी बो शादमानी[20] मने॥
बुला भेजे बदेबु तिस हालमें। नजर हर मेरे नेबहा[21] माल में॥
परखता चल्या या रतन सरबसर। ॥
वही जगमें बदा रहे बेनियाज[22]। रख्या अपनी खिदमत मने[23] सरफराज[24]॥

---

*वही, पृ० ५४। १ होश, २ पारगमन, ३ ध्यान से देखा, ४ फुलवाडी, ५ कला, ६ सभा, ७ शत्रु, ८ मतवाला, ९ दृश्य, १० शौक।

† यु० द० म०, पृष्ठ ५६। ११ सूर्य बिना, १२ किये बिना, १३ शिक्षा, १४ पद में योग्य, १५ अल्ला की प्रशंसा से, १६ भाग्य, ‡ वही, पृष्ठ ५८। १७ तिलक-सिंहासन, १८ बिलकुल, १९ प्रताप में, २० जगपालन, २१ अनमोल, २२ अभागा, वञ्चित, २३ सेवा में, २४ भाग्यशाली।

फिर लिखता है—

जनम खाम[1] था सो दखिनका कलाम[2] । हुआ पुख्ता[3] तुज-तर्बियत ते तमाम ॥
बडे शासरां शेर नाजुक[4] बनाये । कि जिस वस्फ[5] कालिब[6] में खूबाँ[7] के जाय ॥
समझना है बारिक दुनिया का फन[8] । जो अव्वल[9] अथा[10] क्या सो शेरे-दक्खिन[11] ॥
इताके जो कै शेर सो सरसरी[12] । सुने तो कहे महबा[13] अनवरी[14] ॥

तथा†—

लगाया तेरा तुँ च[15] अपस[16] हितसों पाल । जोजो जौहरी जगकुँ होय हर निहाल[17] ॥
शहा[18], गर्चे एक जूना पाता[19] हुँ मैं । वले[20] नाँव सो तुज विकाता हुँ मैं ॥
न तूँ जानता है कि हर हाल मे । जो तेरेच[21] खासा[22] का हूँ माल मैं ॥
मुझे तर्बियत[23] तूँ किया है कि कर[24] । दिखाया हुँ कर आज ऐसा हुनर[25] ॥
जो तारिफ़ सुन जिसकी धर इस्तियाक[26] । झँगावें समझ तुहफ़ा[27] अहले-इराक[28] ॥
तेरे दौर[29] में बेहुनर[30] बाद[31] है । हुनरमद है सो जिते शाद[32] है ॥

और भी*—

अँगे[33] तब निकल मुंज उपरते चली । सुसूखी शाख जब बार[34] धरते चली ॥
मेरा मन दिस्या साफ़ गौहरका खन[35] । अँगे देनहारा अमोलक रतन ॥
रतन खनते ते निकले जो अव्वल सुनो । ले जावें शहाके अँगे राहरो[36] ॥
मेरा शाह यो जोकि अहै जौहरी । वो शहजादगी में अथा मुश्तरी[37] ॥
नवे जाँद सा शह जो बाला[38] अथा । चरंत बद्र[39] दिन-दिन उजाला अथा ॥
मे ी तब्यकी खन[40] ककुँ काबिल[41] पिछान । "न कोइ खन है" कह इस मुकाबिल[42] पिछान ॥
धरनहार अक्सर[43] असर-मेह्र[44] की । रख्या मुंज तरफ़ नित नजर मेह्र[45] की ॥
जो बखशा[46] जम[47] उस मेहने आबो-ताब[48] । हरेक फ़ेल[49] रंगी हुआ आफताब[50] ॥

० ० ०

मुँजे यो सखुन[51]-बादशाह याद है । पछे पीर[52] के वस्फ उस्ताद[53] है ॥
मुज-उस्ताद उस्तद-आलम[54] अछै[55] । किया इल्म[56] अज्वर[57] जिसे जम[58] अछै ॥

---

१. कच्चा, २. वाणी, ३. परिपक्व, ४. कोमल, ५. जिसका गुण, ६. हृदय, ७. सुन्दरियों, ८. कला, ९. प्रथम, १०. था, ११. दक्खिनी कविता, १२. साधारण, १३. शाबाश, १४. फारसी का कवि। †वही, पृष्ठ ५९। १५. तू ही, १६. अपने, १७. सफल-मनोरथ, १८. ऐ बादशाह, १९. पुराना पत्ता, २०. लेकिन, २१. तेरे ही, २२. निजी खेती, २३. शिक्षा, २४. कैसे करके, २५. शिल्प, २६. शौक, २७. भेंट, २८. इराकवाले, २९. शासन-काल, ३०. शिल्पविहीन, ३१. नहीं, ३२. प्रसन्नता। * वही, पृष्ठ ५४, ५५। ३३. आगे, ३४. फल, ३५. खान, ३६. बटोही, ३७. खरीदार, ३८. युवा, ३९. पूर्णचंद्र, ४०. खान, ४१. योग्य, ४२. समान, ४३. प्रायः, ४४. कृपा का प्रभाव, ४५. कृपा, ४६. प्रदान किया, ४७. सदा, ४८. चमक, ४९. कार्य, ५०. सूर्य, ५१. वाणी, ५२. गुरु, ५३. गुरु का गुण, ५४. जगद्गुरु, ५५. है, ५६. विद्या, ५७. याद, ५८. सदा।

मुंजे तर्बियत[1] तैं किया है अगर। देखाया हुँ कर आज ऐसा हुनर॥
मेरा तबा यक बागे-महकबूब है। जिसे बार-फल-फूल अपरूप है॥
लगाया तेरा तूंच पस तपसों पाल। जोजो जौहरी जगकुँ होय हर निहाल॥
मुजे तर्बियन कर तुं ज़ाहिर किया। शऊर[2] इस हुनर का देश शायर किया॥
वगर्ना[3] न था मुज यो कस्बे कमाल[4]। कता[5] हुँ एता में सखुन[6] हस्बे हाल[7]॥
खसूसन[8] अलीशाह आदिल अली। तेरा नाव कारी जो है अतिबली॥
आ मुंज मनकुँ पर्वर्दा[9] बेहतर किया। सुबासांसा सब जग मुअत्तर[10] किया॥

नस्रती दरबार का महाकवि, सुल्तान का कृपापान ही नही लगोटीयार था, तो भी जान पडता, शिवाजी और औरगजेब मे लोहा लेने के कारण अलीआदिल उदारता-पूवक आर्थिक महायता कवि की नही कर पाता था, अथवा कजूस था या नस्रती स्वय फजूल-खर्च था, क्योकि नस्री घर की अवस्था से असतुप्ट था। ऊपर से असस्कृत पास-पडोसी उसके मन को चैन नही लेने देते थे*—

ऐ शह रतनका खन[11] हुआ मुज-मन सो तेरा फैज़[12] है।
कुछ कस्ब[13] मौरूसी[14] न होय हक्का[15] कि तुज यो शायरी॥
चुन चुनके आज या काफिया[16] किम्मा कसीदे[17] मे किया।
या वार[18] ना हल्का लगे पन तबा[19] की ज़ोरावरी[20]॥
हक्का कि जाहिर[21] या करूँ सेह्र[22] हलाल इस बानमे।
जो मुज कलम हो अज्दहा[23] विसराये सेह्रे - सामरी[24]॥
पन क्या करूँ ऐ शाह, मैं कै बात बे - सामान[25] हूँ।
अव्वल तो ऐसा घर नही जहँ ठार हो राहत[26] भरी॥
घर भी नन्हा यक है वले[27] दायम[28] है कइ इल्लत[29] उसे।
लडका नू हम्साया[31] बद बैसी च भुईंकी बदतरी॥
मुतलक[32] अरजल[33] कौम वो है गिर्द[34] ऐसे बेहया[35]।
समझे वो गाली खावकूं ममझें गमत[36] होर मस्खरी॥
जिनकी ज़बान लाम-काफ[37] आता है शैतां सीखने।
सीचो बने जब (वो) कर तालीम[38] जगे-ज़र्गरी[39]॥

---

१ शिक्षा, २ होश, ज्ञान, ३ नहीं तो, ४ काम की पूर्णता, ५ कहता, ६ वाणी, ७ वस्तुस्थिति के अनुसार, ८ विशेषत, ९ पालन कर, १० सुगधित। * वही, पृष्ठ ६१–६२। ११ खान, १२ कृपा, १३ पेशा, १४ पैतृक, १५ सचमुच, १६ तुकबदी, १७ प्रशसात्मक काव्य, १८ भार, १९ तबियत, २० जबर्दस्ती २१ प्रकट, २२ जादू, २३ अजगर, २४ सामरी का जादू, २५ साधनहीन, २६ आराम २७ लेकिन, २८ सदा, २९ कई कठिनाइयाँ, ३० नालायक, ३१ पडोसी, ३२ बिलकुल, ३३ नीच, ३४ चारो ओर, ३५ निर्लज्ज, ३६ मौज, ३७ उच्चारण, ३८ शिक्षा, ३९ सोनारी युद्ध।

सोने मँगे[1] तो घरम टुक ना-तनमें उपरी ल्हो छिटक।
हो जोंक लगता हर मकन करता है हर पिउ नश्तरी॥

अपनी कविता के सम्बन्ध मे काव्य-मर्मज्ञ मित्र इब्न अब्दुस्समद की बात उद्धृत करता है*—

दखिनमें तु है आज नस्रत[2] क़रीं[3] । बुलंद[4] शेरके फ़न[5] का सेहूफरी[6]॥
जो जिस ठार परगट तेरा छंद होय । वहाँ हासिदाँ[7] की जबाँ बंद होय॥
ग़नम[8] का गनीमाँ[9] मे तुझ फ़न[10] अछै[11] । तेरे सामने ताना़जन[12] जन[13] अछ॥
ददे[14] तेरी शोहरत[15] सो बूटे रहें । देजें आंखिया रूप फूरें[16] रहे॥
रखेगा तु जिस ठार पर आक़दम । सकत किस जो वाँ आ सके मार दम[17]॥

'अलीनामा' मे अपनी कविता के बारे मे खुद कहता है†—

मेरी बातमे लाफ[18] नही बेखिलाफ़[19] । कि नादान[20] का है हुनर ऐन[21] लाफ़॥
कि यो शेर में आज इस धात सात[22] । कहया सो बड़े दबदबेके सँगात॥
किया मै तो क़ित्ता-नजर[23] लाफसों । वले[24] दाद[25] है अह्‌ले-इन्साफ़[26] सो॥
कि क्यों मैं पकड़ आज बात यकनबी । जबूँ[27] बातकूँ कर दिखाया क़बी[28]॥
अवल के अगर लोग बरनाव पीर[29] । कते[30] थे कि है शेर-दखिनी हक़ीर[31]॥
हक़ीक़त मे उनकी तरफ हक़[32] अथा[33] । कि तब शेर बेमाया[34] मुत्लक़[35] अथा॥
हुआ जबते उस्ताद-आले[36] **अली** । सखुन कूँ सकत दे किया महबली॥
सज़ावार[37] तहसीन[38] है ये शेर आज । न कोइ रख सके बात हासिदके बाज[39]॥
पसँद शेर करना है बस-आक़िलाँ[40] । अपस ठार अछो[41] हासिदाँ[42] जाहिलाँ[43]॥

नस्रती की योग्यता को उसके समकालीन फारसी 'तारीख अह्वाल सलातीन बीजापुर' का लेखक खानी खान एवं 'बिसातीनुस्सलातीन' के लेखक जुबेरी ने भी माना था।

२. **कृतियाँ**—नस्रती की तीन कृतियाँ मिलती है—

(१) 'गुल्शने-इश्क', सन् १६५७ ई० (१०६८ हि०) मे लिखी।

(२) 'अलीनामा', सन् १६६५ ई० (१०७६ हि०) मे लिखी।

---

१. सोना चाहे। * वही, पृष्ठ ६२। २. विजय, ३. नजदीक, ४. ऊँचा, ५. कवि-कर्म, ६. आलाधारी, ७. ईर्ष्यालु, ८. धन, ९. शत्रु, १०. कला, ११. है, १२. ताना मारनेवाला, १३. औरत, १४. द्वंद्वी, शत्रु, १५. प्रसिद्धि, १६. फूहड़, १७. साँस। † वही, पृ० ५८। १८. डींग, १९. विरोधी, २०. मूर्ख, २१. बिलकुल, २२. इस ढंग से, २३. अलगाव, २४. लेकिन, २५. न्याय, २६. न्यायियों, २७. बुरी, २८. कभी, २९. गुरु, ३०. कहते, ३१. हीन, ३२. सच्चाई, ३३. था, ३४. प्रतिष्ठाहीन, ३५. बिलकुल, ३६. जगद्‌गुरु, ३७. पात्र, ३८. प्रशंसा, ३९. ईर्ष्यालु के विना, ४०. बुद्धिमानों के वस, ४१. रहो, ४२. ईर्ष्यालु, ४३. मूर्ख।

३ 'कसीदे', (युद्ध-वर्णन), की सख्या नौ है।

२ गुल्शने-इश्क (प्रेमवाटिका)

(१) कथा का उद्गम—

यद्यपि पुस्तकका नाम फारसी है, किन्तु है यह मनोहर और मधुमालती की प्रसिद्ध प्रेमकथा। भवभूति के 'मालतीमाधव' (माधव-मालती) का प्रभाव इस प्रेम-कथा पर किसी समय अवश्य कुछ रहा, किन्तु आगे कथा बहुत बदल गई है। हिन्दी मे ऐसी प्रेमकथाओ के लिखनेवाले सवप्रथम कुतुबन, मझन, जायसी जैसे मुसलमान कवि थे, जिनके सामने फारसी में लिखी मस्नवियाँ (कथाकाव्य) मौजूद थी। कुतुबन ने अपनी 'मृगावती' जौनपुर के बादशाह हुसेनशाह के आश्रित रह १५०१ ई० (९०९ हि०) में लिखा था, उससे १८ वष बाद १५१९ ई० (९२७ हि०) में जायसी ने अपनी 'पद्मावत' लिखनी शुरु की, जिसकी समाप्ति शेरशाह के शासनारभ (१५४० ई०) के बाद हुई। १५१९ ई० म जायसी के सामने 'मृगावती', "मधुमालती" मौजूद थी‡ —

राजकुँवर कचनपुर गयऊ। मिरगावति कहँ जोगी भयऊ॥
साधे कुँवर खडावत जोगू। मधुमालति कर कीन्ह वियोगू॥

'मिरगावती' और 'पद्मावती' की भाँति मधुमालती भी अवधी भाषा में लिखी गई थी और जौनपुरकाल में—मधुमालतीके कवि (मझन) के बारे में विशेष मालूम नही है, और अब, सम्पूर्ण मधुमालती भी उपलब्ध है। उसके कई फारसी अनुवाद तथा नकलें का यह काव्य बतलाते है, कि मझन की कविता का बहुत आदर हुआ था*।

(१) मझन की 'मधुमालती' का प्रथम फारसी पद्यबद्ध अनुवाद शाहजहाँ के समय १६४९ ई० (१०५९ हि०) में किसी अज्ञात व्यक्ति ने 'कुवर मनोहर व मदुमालत' के नाम से किया था, जिसके दो हस्तलेख ब्रिटिश म्युजियम (लन्दन) में मौजूद है। यह ग्रथ शेख मझन के ग्रथ का अनुवाद है, यह स्वय बतलाया है†—

तुफैले हज्रते औलादे आदम। ब-यम्नो हिम्मते असहाब अकरम्॥
चुनाँ अन्देशा बरमन् गश्त रौशन। कि मधुमालत जबा हिंदीऽज़-मझन॥
बगोयम् फारसी दर शेर-अबयात। . . . ॥
हजारों आफरी बर-शेख मझन। जे-शेरे हिंदवी बूदास्त पुर-फन॥

(२) मझन की कृति का दूसरा फारसी अनुवाद आकिल खा राजी ने १६५४ ई० (१०५६ हि०) मे 'मेह्रो माह' (सूर्य-चन्द्र) के नाम मे किया। इसके हस्तलेख लन्दन में इडिया ऑफिस और ब्रिटिश म्युजियम के अतिरिक्त बोडलियन पुस्तकालय (ऑक्सफोर्ड) तथा पेरिस के बिब्लिओथिक नाश्योनल मे मौजूद है।

(३) तीसरा फारसी अनुवाद माधोदास गुजराती ने सन् १६८६ ई० (१०९८ हि०) मे किया, जिसकी एक प्रति इडिया ऑफिस-पुस्तकालय मे मौजूद है।

---

‡ पदमावत। * देखिए 'हिन्दी-साहित्य का इतिहास' भी (रामचन्द्र शुक्ल, बनारस, २००५ सवत, पृष्ठ ९८)। † यु० द० म०, पृ० २७४।

(४) चौथा गद्य-अनुवाद किसी अज्ञात लेखक ने 'मेह्रो माह' के नाम से किया, जिसकी एक प्रति ब्रिटिश म्युजियम में है।

मझन की कृति के फारसी अनुवाद नस्रती के ग्रंथ के पहिले हो चुके थे। नस्रती ने यह नही लिखा है, कि उसने मंझन की 'मधुमालती' या उसके अनुवाद के सहारे अपने ग्रंथ को लिखा। किन्तु, उसके सामने फारसी और हिन्दी की 'मधुमालती' थी*—

मआनी[1] की सूरतकी है आरसी। कह्या शेरे दक्खिनकूँ जों फारसी॥
फसाहत[2] में कर फारसी खुशकलाम[3]। धरे फ़ख्र[4] हिन्दीवचनपर मुदाम॥
वगर शेरे हिन्दीकी बाजी-हुनर[5]। न सकती है तथा फारसीमे सँवर॥
मै इस दो हुनर[6] के खुलासा[7] कुँ पा। कह्या शेर ऐसा दोनो फ़न मिला॥
देवे दाद[8] सुन फ़ारसी-शेरदाँ[9]। जो हिन्दी सुनें भी कहे दिलसों ताँ॥
आ देखा अगर हो हसद सों कबाब। रखी बोल तना जो बखिनी किताब॥

(२) कथा-संक्षेप—

पंडित रामचन्द्र शुक्ल ने मंझन के काव्य पर लिखा है†—

"मृगावती के समान मधु मालतीमे भी पाँच चौपाइयों (अर्धालियों) के उपरांत एक दोहेका क्रम रखा गया है। पर मृगावती की अपेक्षा इसकी कल्पना विशद है और वर्णन भी अधिक विस्तृत और हृदयग्राही। आध्यात्मिक प्रेमभाव की व्यंजना के लिए प्रकृति के भी अधिक दृश्यो का समावेश मंझन ने किया है। कहानी...संक्षेप मे...है। कनेसर नगर के राजा सूरजभान के पुत्र मनोहर...को अप्सराएँ रातोरात महारस नगर की राजकुमारी मधुमालती की चित्रसारी में रख आई। वहाँ जागने पर दोनों...एक दूसरे पर मोहित हो गये। पूछने पर मनोहर ने अपना परिचय दिया। ..बातचीत करते-करते दोनों एक साथ सो गये। अप्सराएँ राजकुमार को उठा कर फिर उसके घर पर रख आई।...राजकुमार वियोग से विकल होकर घर से निकल पड़ा और उसने समुद्र के मार्ग से यात्रा की। मार्ग मे तूफान आया, जिसमे इष्टमित्र इधर-उधर बह गये। राजकुमार एक पटरे पर बहता हुआ एक जंगल में जा लगा, जहाँ एक स्थान पर एक सुंदरी स्त्री पलंग पर लेटी दिखाई पड़ी। पूछने पर जान पड़ा कि वह चितविसरामपुर के राजा चित्रसेन की कुमारी प्रेमा थी, जिसे एक राक्षस उठा लाया था। मनोहर कुमार ने उस राक्षस को मारकर प्रेमा का उद्धार किया। प्रेमा ने मधुमालती का पता बताकर कहा कि मेरी वह सखी है, मै उसे तुझसे मिला दूँगी। मनोहर को लिये हुए प्रेमा अपने पिता के नगर मे आई। दूसरे दिन मधुमालती अपनी माता रूपमजरी के साथ प्रेमा के घर आई और प्रेमा ने उसके साथ मनोहर कुमार का मिलाप करा दिया। सबेरे रूपमंजरी ने चित्रसारी मे जाकर मधुमालती को मनोहर के साथ पाया।... रूपमजरी अपनी कन्या को भला-बुरा कहकर मनोहर का प्रेम छोड़ने को कहने लगी। जब उसने न

---

* यु० द० म०, पृष्ठ २७७–७८।

१. अर्थ, २. लालित्य, ३. सूक्ति, ४. गर्व, ५. कला का खेल, ६. विद्या, ७. संक्षेप, ८. न्याय, गुणग्रहण, ९. फारसी पद्यज्ञात।

† 'हिन्दी-साहित्य का इतिहास', पृष्ठ ९५–९६।

माना तब माता ने शाप दिया, कि तू पक्षी हो जा। वह पक्षी होकर उड गई। कुँवर ताराचद ने उसे एक सोने के पिंजडे में रखा। एक दिन पक्षी मधुमालती ने प्रेम की सारी कहानी कह सुनाई। अन्त में वह पिंजरे को लेकर महारस नगर पहुँचा। वह फिर पक्षी से मनुष्य हो गई। मधुमालती की माता सारा हाल लिखकर प्रेमा के पास भेजती है। मधुमालती भी उसे अपने चित्त की दशा लिखती है। राजकुमार मनोहर योगी के वेश में आ पहुँचा। मधुमालती का पिता अपनी रानी सहित दलबल के साथ राजा चित्रसेन (प्रेमा के पिता) के नगर में जाता है और वहाँ मधुमालती और मनोहर का विवाह हो जाता है। एक दिन ताराचन्द प्रेमा और मधुमालती का एक साथ झूला झूलते देख प्रेमा पर मोहित होकर मूछित हो जाता है। मधुमालती और उसकी सखिया उपचार में लग जाती है।"

शुक्लजी आगे लिखते हैं—"इसके आग प्रति खडित है, पर कथा के झुकाव से अनुमान होता है, कि प्रेमा और ताराचद का भी विवाह हो गया होगा।"

नसीरुद्दीन हाशिमी ने नस्रती के 'गुल्शने-इश्क' के अनुसार कथा का सक्षेप जो किया है, वह अरबी-फारसी शब्दो के हिन्दी रूपान्तर के साथ निम्न प्रकार है*—

"पुराने समय में एक राजा विक्रम था। उसकी राजधानी कनकगिर थी। राजा शूरवीर भी था। दान-दक्षिणा म उसकी ख्याति थी। बडे-बडे राजा उसकी सेना के सर्दार थे। मुल्क और खजाने की कमी न थी। सब कुछ था, मगर कोई सन्तान न थी। एक दिन खाने का थाल—एक साधु के पास ले गया। फकीर ने जवाब दिया—'बाझ के घर का खाना विहित नहीं है।'

"फिर कितने समय तक शोक-दुख करते राजा (ने) जोगी के भेस में परदेश की राह ली। राजा को साधु के पास पहुँचाया गया। फकीर ने कहा—" तेरे सिर पर जो फल है, उस फल को रानी के साथ खा। नौ मास बाद एक सुन्दर राजकुमार पैदा हुआ, कुवर मनोहर नाम रखा गया। जब (वह) चौदह साल का हुआ, तो एक रात कोठे पर आराम कर रहा था। परियो ने उसे मधुमालती की बगल में सुला दिया। वह जागे। चकित हुए। उसके बाद दोनों का वियोग हुआ। मनोहर योगी बनकर खोज में चला। सैकडो कष्ट सहते अन्त मे अपने अभिलषित अर्थ को पाया। सफलतापूर्वक लौटा और राज करने लगा।"

(३) काव्य का उद्देश्य

नस्रती ने काव्य लिखने का उद्देश्य बतलाते हुए लिखा है†—

यके इश्क की बात कते[1] सो नक़ल[2]।
वलेकिन[3] दखिन यो रह्या (है) कुहन[4]। न काइम्यूब किरसा कहा नेक-फन[5]॥
करे कुछ गवासी[6] पतीकर खयाल[7]। किया ताज़ा[8] बागे, वदीयुज्जमाल॥

---

* मु० द० म०, पृष्ठ २६३–६४। † मु० द० म०, पृ० २६८।

१ कहते, २ अनुकरण, ३ लेकिन, ४ पुराना, ५ सुदर कला, ६ एक कवि, ७ विचार, ८ नया।

दक्खिनी साहित्य में इस कमी को देखकर इब्न-अब्दुस्समद ने इस काव्य के लिखने के लिए प्रेरण और प्रोत्साहन दिया।

(४) प्रेमारंभ—

मनोहर कुँवर को जब मधुमालती ने अपनी शय्यापर देखा, तब उसने उससे पूछा*—

कहे "कौन है तूँ सो इज्हार[१] कर। परा[२] है कि देव या है बशर[३]॥
गुपत रूप ल्याया है भी कुछ बला। मँतरते मुँज आया है कर मुब्तला"॥
कहा बात यो सुन मनोहर कुंवर। कि "तूँ कौन अपे (है) देखाती सो डर॥
मेरा बाप विकरम करे राज याँ। कवाता है राज्याँका सरताज याँ॥"
कही "बेहोश क्या तुं खाया अहै। हो दिवाना चुपमें गँवाया अहै॥
महारस नगर इस नगरका है नाँव। अहै इस महल मे सो मेरा च[४] ठाँव॥
धरमराज मुंज बाप है जगपती। अहै नाँव मेरा भी मधुमालती॥

मंझन ने इस सवाद को और चामत्कारिक रूप में वर्णित किया है†—

देखत ही पहिचानेउ तोही। एक रूप जेहि छंद-यो मोही॥
एही रूप बुत[५] अहै छिपाना। एही रूप सब सृष्टि समाना॥
एही रूप सकती और सीऊ। एही रूप त्रिभुवन कर जीऊ॥
एही रूप प्रकटे बहुभेसा। एही रूप जग रंक नरेसा॥

मनोहर ने राजकुमारी चंपावती (मंझन की प्रेमा) को शत्रु के चंगुल से मुक्त किया था। इस उपकार का प्रतिशोध करने के लिए चंपावती और उसकी माँ मधुमालती और उसकी माँ को अपने यहाँ निमंत्रित करती हैं, जिसमें मनोहर और मधुमालती का परिचय हो सके। गवासी की मस्नवी 'बदीयुज्जमाल' में भी सिरन्दीप की कुमारी के उद्धारक के सैफुलमुलूक को बदीयुज्जमाल से मिलाया जाता है‡—

उधर साथ थी माँके मधुमालती। इधर माँके संगात चंपावती॥
बहुत दिनकु जिस वक्त बिछुड़े मिले। यकस यक[६] लगाये चिकल[७] कर गलै॥
उनौ क्याँ[८] सख्याँ चूँकि सौ साथ थ्याँ। इनोंके कने भी इसी धात[९] थ्याँ॥
चल्याँ जब वो रुनझुन लटक नाज[१०] सों। निहालों[११] धरे हाल आवाज सों॥
दोनों घेर[१२] बीब्याँ जो थ्याँ मुख्तसर[१३]। बुजुर्गी[१४] सो बैठ्याँ वो जा सद्र[१५] पर॥
दोनों घेर कियाँ[१६] खुश सहेल्याँ तमाम। खड़्याँ खिदमती घर अपसका मुकाम॥
यो चपावंती होर मधुमालती। बैठ्याँ मिलके ना फरक घर एक रती॥

---

* यु० द० म०, पृ० २६६। १. प्रकटन, २. परी पुरुष, ३. मनुष्य, ४. मेरा ही। † 'हिन्दी-साहित्य का इतिहास", पृ० ९७। ५. मूर्ति। ‡ उ० श०, पृष्ठ २२९–३२। ६. एक से एक, ७. चिपक, ८. उनकी, ९. भाँति, १०. लीला, ११. पौधों १२. दोनों पास, १३. संक्षिप्त, १४. बड़प्पन, १५. मुख्य स्थान, १६. दोनों ओर की।

दोना किर्यां सो मावाँ भी एक ठार मिल । सो यो रग उसमें लगा दिलसा दिल ॥
अचभा न हो क्यो चँदर-सूरकू । मिल यक ठार देख्या है विन नूरकू ॥

० ० ० ०

खुश इखलास[1] सो आ वो खाला वेरन[2] । लगी गोदमें बस वार्ता करन ॥
उने सिरते तिस पीठ लग हाथ उतार । बला लेके कुर्बान जा वार-वार ॥
मुहब्बत की वार्तामें रयाई उसे । अपमके कहे मैं फिराई समे ॥
निसँक तव कही जायें चल सर तें । "वो सब सुन ले किस्सा कहूँगी जो मैं ॥
जो हर वात सुन दिल तेरा ताजा होय । अधिक इश्क का तुझमे अदाजा[3] होय ॥
करे फूल-राहत[4] सो दिल वाग-वाग[5] । भले होय विछडनके पुरसोज[6] दाग ॥
अपस दिलकी विसरात कूं याद दे । हरेक ठार इन्साफ सो दाद[7] दे ॥
छुपी छद सो यो वशारत[8] करे । अपस साथ चलने इशारत[9] करे" ॥
उठी वाते तिस साथ करते च वात । चली लेके छन्न मो पकड हतमें हात[10] ॥
सहेली जो कोई साथ आने मँगी[11] । फिराई[12] उसे नै ले चाने मँगी ॥
गइयाँ मिलके दोनों यकल्याँ गवन । तमाशा सा फिरत्या चमन-दर्-चमन[13] ॥
यकन[14] ठार खातिर[15] में चेल्या यक तरफ । वठ्याँ मिलके दोना अधिक धर शरफ ॥
तव उन पाके फुर्सत[16] यो करनेकी वात । लगी वोलन यो कि "ऐ धन सुजात ॥
जो वटीका दरशन हुआ सो हमन । यो सब फज्ल-वख्शिश[17] है तेरे चरन ॥
न होता ते तुज-पगते यो फैज अगर । वो कां[18] फिरके पडती हमारी नजर[19] ॥
हमन सिर तेरा यो है उपकार आज । जो हाइ तुज-अँग[20] वात करनेकी लाज" ॥
यो सुन वात मधु-मालती वह अजव[21] । कही "उज्रख्वाही[22] ऐती क्या सवव ॥
कि मेरे सवालांकू दे पेच-ताव[23] । अजो लग[24] भी देती है होर कुछ जवाब ॥
मगर वातका मुंज में नै कर समझ । हिकायत[25] वो कहने तुज आई है रज[26] ॥
लगी फिर यो कहने कुं "ऐ धन सची । समज वात पुख्ती[27] है कि होय कची ॥
कनी हूँ जो यो वात अछै[28] वूट कर । तो सौगद खाती हूँ तुज हुस्न[29] पर" ॥
सुनी जो वो मधुमालती फिर यो वात । विचारों सो तज्वीज[30] कर लाख धात[31] ॥
अपसमें अपस[32] सख्त हैरान हो । लगी पूछने फिर परेशान हो ॥
कि "अव चुप न रह तू मुअम्मा[33] च वोल । कि मुश्किल[34] दिसे गर न दिखलाय खोल" ॥
तव इस वात पर धनके जा मुख पे वल । कही "मैं तो करती हूँ मुश्किल यो हल ॥

---

१ सुस्वभाव, २ मौसी के पास, ३ अनुमान, ४ आराम का फूल, ५. प्रसन्न, ६. जलन-भरा, ७ न्याय, ८ सुसमाचार, ९ इशारा, सकेत, १० हाथ में हाथ, ११ चाही, १२ लौटाई, १३ बागे-बाग, १४ अकेला, १५ दिल, १६ छुट्टी, १७ कृपा, दया, १८ वह कहाँ, १९ दृष्टि, २० तेरे आगे, २१ अद्भुत, २२ क्षमा मांगना, २३ टेढा-मेढा, २४ आजतक, २५ कथा, २६ चाहकर, २७ पक्की, २८ रहे, २९ सौंदर्य, ३० विचार कर, ३१ भाति, ३२ अपने-आप, ३३ पहेली, ३४. कठिन।

वले[1] पूछती हुँ अवल[2] तुज सों बात । खुदाके बदल[3] कह् तु सचमुच सगात[4]।।
कि तुजसों हमें जिव[5] सों हमराज[6] है । होर अकसर[7] तो दुसरयाँ सों कम-राज हैं।।
हम पर तुमन लुत्फ़[8] जों पेश[9] अछै[10] । हमे जिव भी तुम-काजपर पेश अछै।।
कवाना[11] तुमन खैर-अंदेश[12] हम । तुमन-काजपर जिवसों है पेश हमे।।
यो सब सच कतीहूँ, नको[13] जान झूट । न कै जाय हमनाते यो बात फूट"।।
सुनी उस दुलक्खन[14] न यो बात जब । अधिक ताबिया[15] हों बुरा मान तब।।
कही "यों तु इस धात[16] वाजिब[17] न था । बड़ेपनका तेरे मुनासिब[18] न था।।
कि ले हीला[19] मूँजपर जब इस धात सो । न्हने जिव पे[20] करने मँगी[21] धात तूँ।।
मुज-ऐसी तुजे जाइ बाली[22] अहै । होर इतने पे तूँ बद-खियाली[23] अहै।।
न कह फिर तुँ ऐसी वचन आजते । कि मैं पलमें जिव देउँगी लाजते"।।
यो सुन बात खाला[24] कही फिर वचन । कि "ऐ पाकदामन[25], सुजाती सुधन।।
उतमपन[26] मे यक धाल[27] मोती है तूँ । निछल चाल[28] मे चाँद-जोती है तूँ।।
म गर मुँज दो तन कर तुँ जानी अहै । मुँज-इखलास[29] झूटा पिछानी अहै।।
तुँ समजी है शायद मुँजे यों यकी[30] । कलँक ला जो तुज मह[31] कुँ होउँ ऐबचीन[32]।।
कि है अस्ल[33] गौहर सों ना हो खता[34] । नको हो सुटूँ[35] अस्लपन[36] का वफ़ा[37]।।
सची बातकूँ चुप न कर झूट तूँ । खुदा वास्ते मुँजते मत टूट तूँ"।।
यो खाला ने सब बात कही च में । अधिक आके मधुमालती बीचमें।।
छुपा उससों दिल गर्चे राजी[38] घरी । वले मुँपे कै एतराजी[39] घरी"।।

मौसी को तब मधुमालती ने अपने मन की बात कही—

किसे दुख यो कहना न देखी दवा । लगी मनमे जलने च हो ला-दवा[40]।।
यकत[41] नित रहूँ गम[42] से गर सर तलार[43] । न कोइ बाँट लेवे मेरे दिलका बार[44]।।
टले दिन तो हर क्यों[45] सहेल्याँ के साथ । पड़े पन[46] बजरसिल[47] हो सीने पे रात।।
जरीना[48] अगिन तन पे सारे लग । गुलाँ[49] सेज के सब अँगारे लग।।
चँदर मुँज उपर जह्र[50] का हूआ बाग । देवे हर सितारा मेरे दिल पे दाग़।।
अछै[51] निस तो दोजख[52] ने काली कठिन । दिसे दिन तो रोजे-क़यामत[53] का दिन।।

---

१. लेकिन, २. पहिले, ३. खुदा के वास्ते, ४. साथ, ५. दिल से, ६. रहस्य जानकर, ७. प्रायः, ८. कृपा, ९. पहिले-जैसी, १०. रहे, ११. कहलाना, १२. भलाई चाहनेवाला, १३. नहीं, १४. दुर्लक्षणा, १५. चित्त, १६. भाँति, १७. उचित, १८. उचित, १९. बहाना, २०. छोटे से प्राण पर, २१. चाहा, २२. पुत्री, बाला, २३. बुरा विचार होना, २४. मौसी, २५. सती, २६. उत्तमता, २७. बढ़िया, २८. निर्मल गति, २९. मेरी मुहब्बत, ३०. विश्वास, ३१. चाँद, ३२. दोषदर्शी, ३३. सच्चे, ३४. दोष, ३५. छोड़ूँ, ३६. सच्चापन, ३७. भक्ति, अनुरक्ति, ३८. सहमति ३९. असम्मति, ४०. बे-इलाज, ४१. अकेला, ४२. रंज, ४३. सिर तक, ४४. भार, बोझ, ४५. जैसे-तैसे, ४६. किन्तु, ४७. वज्रशिला, ४८. आभूषण, ४९. फूलों, ५०. विष, ५१. है, ५२. नर्क, ५३. प्रलय-दिन।

मेरे सिर टले[1] यो कठिन माहने-साल[2] । खुदा बिन कहूँ किस सो मुंज-दिलका हाल ॥
न बोले कि मुंज-तनपे ह पोस्त[3] जम[4] । कि जलते अँगारे पे वह है भसम ॥
हुआ रग मुंज जाफरानी[5] करार[6] । सुरज हँस पडे देख बे-इख्तियार[7] ॥
जो देखू निझा[8] तो दिसे नैन में । जो बोलू वचन तो उमे बैनमें" ॥

कथा पुरानी है, जिस पर पहिले के कवियों का प्रभाव हो सकता है, किन्तु उसमें नसती का अपना कवि-कौशल कम नही है। उसने ऋतुओं का भी सुन्दर वर्णन किया है। जैसे—

(५) ग्रीष्म ऋतु*—

न वह सूर[9] बल[10] आग-बादल अथा । न वा धूप यक आतशी जल[11] अथा[12] ॥
मगर खीच दोजख के दरियाते बीर । बरसता अछे जग में जलता च[13] नीर ॥
किरन है सो सब जलकी धारां दिसे । हरेक जरी कतराते[14] बर्दा[15] दिसें ॥
जमी[16] ते फलक[17] लग सब यक धात[18] सो । भरी सद आतिश[19] की बरसात सो ॥
लगे मारने जब सुरावां[20] के मोज । चले चौकधन तब हरारत की फौज ॥
वले इस अबर में है यव-नर्फा घात । लजाता है फिर तीज खीच अपने साथ ॥
न धरता तो यो नीर-आलम त फक । तो होती जहा तब हरारत स गर्क[21] ॥
गगनके अँगन पर न तारे दिसे । उठ जीके लोगां सो सारे दिसें ॥
वह अम्ल में क्या यो सीमाब[22] है । रूपा गलके तिसने हुआ आब है ॥
खत कोह होली निराली हुई । जमी देख हैरां दिवाली हुई ।
भरे लाल खोरी देस[23] आई है यो । हयां में अगिन धकधकाती है ज्यों ॥
यकी आफताब आफने आब था । ता हर चाह[24] पर आफने-नाब था ॥
देखा कहि न था रूबे गीती[25] पर आब । मगर थी नद्यां जा हवापर सुराब ॥
अजब तेज गरमी जला मगो-खाब । करे सग का चूना माटीकुं आब ॥
अथी गर्म कँकरी अँगारा ते तेज । दिसे तप्त बालू हो चिगियां[26] की रेज ॥

३ अलीनामा

यह सुलतान अली आदिल का चरित-सा है, जिसमें १६५६ से १६६६ ई० तक की घटनाएँ वर्णित है। इस मस्नवी (कथाकाव्य) में (युद्ध-वर्णन) औरगजेब, शिवाजी और मलाबार के राजा के साथ के महत्त्वपूर्ण युद्ध-सबधी सात कसीदे सम्मिलित है। 'गुल्शने इश्क' से अलीनामा बडा है। सात कसीदे निम्नलिखित है—

---

१ गुजरे, २ महीना-वर्ष, ३ चमडा, ४ सदा, ५ केसर-जैसी, ६ निश्चय, ७ बेबस, ८ ध्यान से। * उ० श० पृ० २३३, ९ सूर्य, १० बल्कि, ११ अग्नि-ज्वाला, १२ था, १३ जलता हो, १४ छोटी बूंद, १५ वर्षा, १६ पृथिवी, १७ आकाश, १८ एक-सा, १९ आग, २० बालू, २१ डूबना, २२ पारा, २३. दिवस, २४ कुआं, २५. ससार, २६ चिनगारियां।

(१) पनाला-विजय, १६६१ ई० (१०७२ हि०) में लिखा गया; १५७ शेर।

(२) आदिलशाही विश्वासघाती सेनापति सलावतखाँ का पतन, यह १६६४ ई० (१०७५ हि०) मे लिखा गया; ५५ शेर।

(३) युद्ध से विजयी बादशाह की वापसी १६६३ ई० (१०७४ हि०) में लिखित; २८ शेर।

(४) शरद का सुंदर वर्णन, १६७४ ई० मे लिखित; २४ शेर।

(५) विजयोत्सव-वर्णन : यह तीसरे कसीदे का अंश है; ६ शेर।

(६) मुहर्रम की मजलिस के संबध मे मर्सिया, १६६४ ई० (१०७५ हि०) में लिखित; १४८ शेर।

(७) मलनाड-विजय, १६६४ ई० मे लिखित; २२० शेर।

इस काव्य का आरम्भ करते कवि कहता है—

मुझे खूब कामॉकी तौफ़ीक[1] दे। अछै[2] हक़[3] सो कर मुझपे तहक़ीक़ा[4] दे।
मेरे शेर[5] सों जिन्दा घर हर शऊर[6]। तबीयत[7] कुँ दरिया[8] की नित मौज[9] दे॥

० ० ०

(१) आरंभ—

मेरे मुखते काड इस असर[10] का कलाम[11]। कि हर हर्फ़[12] होय मै-पस्ताँ[13] कुँ जाम[14]॥
धरनहार असर-हाल[15] का क़ाल[16] दे। दिलॉकूँ जम इस कालते हालदे॥
मेरे कौल[17] अं`बहस[18] कर सबकी रद। सखुन[19] कर मेरा आरिफाँ[20] में सनद[21]॥

अलीनामा लिखने के लिए सुल्तान की आज्ञा के बारे मे नसरती ने लिखा है—

वले[22] इस बडे फन[23] के डुंगर[24] अँगे। खडा आ अटक कस्द[25] नाकर अँगे[26]॥
मेरे पर (तो) यो फिक्र[27] मुश्किल पडी। तबीयत[28] चलानेकुँ अक्कल[29] खडी॥
अव्यासो उसी अडके हैरत[30] मे जाँव। करन मुश्किल आसॉ मग्या हक़ते[31] यों॥
टलीरात बाद अज[32] हुआ सुब्ह[33] वे। अथा तब तलक शहकी दर्गह[34] मे मै॥
देखत मुझ रुखन[35] शाह आलमनेवाज[36]। बडे लेके खिदमत करना सर्फराज[37]॥
मुअम्मे[38] सों नै हर इशारत[39] किये। दिले दिलसो दिलकुँ बशारत[40] किये॥

---

१. शक्ति, २. रहे, ३. सच, ४. सच्चा, ५. पद्य, छन्द, ६. ज्ञान, ७. विचारों, ८. वायु, ९. गति, १०. प्रभाव, ११. वचन, कविता, १२. अक्षर, १३. मद्यपूजकों, १४. प्याला, १५. प्रभावशाली, १६. कथन, १७. वचन, १८. विवाद, १९. वाणी, २०. ज्ञानियों, २१. प्रमाण, २२. लेकिन, २३. कला, २४. पहाड़, २५. संकल्प, २६. आगे, २७. चिन्ता, २८. मन, २९. कठिनाई, ३०. आश्चर्य, ३१. सत्य भगवान्, ३२. उसके बाद, ३३. प्रातः, ३४. राजदर्बार, ३५. मुंह, ३६. जगत्कृपालु, ३७. भाग्यवान्, ३८. गूढ़, ३९. इशारा, संकेत, ४०. सुसमाचार, कहना।

कह्या मैं कि वदेमें यो काँ[1] हैं हद[2]। कहूँ तव जो उस्ताद का होय मदद ॥
देख्या मे जो मुज-दिल-तरफ का सयाल। लगा मुज तवीयत[3] की चढने उवाल ॥
समुंदरते शह-फैंज[4] की होके सौर[5]। हुनरका लग्या मेह वरसन अवीर[6] ॥
गई थी वले[7] ते मेरे हाथते। तवीयत जमानेके अतिघातते[8] ॥
दो वाजू[9] मेरे दीनो-दुनियाके जोर। टुटे थे सो था जीव-मुंज ऐन[10] शोर ॥

(२) शरद का वर्णन*—

दी है जमिस्ता[11] नो गर्जी[12] दूगा उचा[13] धुंधकार आज।
सर्दार हो वादेखजाँ[14] थँड[15] का रच्या है भार[16] आज ॥
उपट्या हवाका फौज यो शवनम् के गोल्या छाँटता।
डरसूँ[17] अगिनमा झापले डर राही हैं ठारेठार आज ॥
ओ आग कोइ मारे तो दम उठती थी हो सव तन जवाँ।
वैसी भी सरकश[18] सर नवा पीली दिसे सद हार आज ॥
वेशक[19] वतन इस जगते मिटजाती आगिन हो वेनिशाँ[20]।
गर दिलमें अपते आशिकाँ[21] देते न उसकू ठार आज ॥
हौज[22] यक हवाका या दिसे मशरिक[23] ते मगरिव[24] लग भरया।
कापे फलक[25] जो वुडवुडा[26] वैठे तो तिसके ल्हार[27] आज ॥
शवनम्[28] जो उजला छावसा आ शीरसे[29] जलमें पड्या।
हर वाई होइ है वही हडी जमनीर सव यक वार आज ॥
जल ते च हरयक जा-वजा विल्लोर[30] का दरपन दिसे।
ऐ चाँद वेगी देसले तिस वीच अपस दीदार[31] आज ॥
हर वग[32] कुं वारा मारने पीले हुये हैं पात सव।
हर यक नगर वाग-जहाँ[33] हैं थडसे वीमार आज ॥
ना सरफराजी[34] पा सके दौलत[35] ते थडकी कोंपली।
ना वेल अपनी गोदते लवा करे हथ भार[36] आज ॥
गुलशन[37] के आईने उपर पडता चल्या सर्दी सो जग।
हर खारो-खस[38] शवनम् सेती होता हैं जौहरदार आज ॥
देखे न जा-जो थडते किस यक[39] कलीकूँ खन्दारु[40]।

---

१ कहाँ, २ सामर्थ्य, ३ मन, ४ शाह की कृपा, ५ भरा, ६ जल, ७ लेकिन, ८ प्रहार से, ९ बाँह, १० बिलकुल।

* उ० श०, पृ० २३४।

११ सर्दी, १२ नौगजी, १३ उठा, १४ पतझड की हवा, १५ ठंड, १६ वहार, १७ डरँगा, १८ वागी, गर्वी, १९ निस्सदेह, २० बेपता, २१ प्रेमियो, २२ कुंड, २३ पूर्व, २४ पश्चिम, २५ आकाश, २६ बुलबुला, २७ लहर, २८ ओस, २९ दूध से, ३० स्फटिक, ३१ दर्शन, ३२ पत्ता, ३३ दुनिया का वाग, ३४ भाग्यशालिता, ३५ सरकार, ३६ वाहर, ३७ फुलवाडी, ३८ काँटा घास, ३९ किसी एक, ४० हँसते हुए।

नग़मे[1] बिसर जा बुल्बुला हर बनमें है बेकार आज।
सूरजके चश्मेका रवाँ[2] आब-आतशी[3] यों जम रह्या।
क्यों सेंकने बस आयगा इतन्याँ कुं यक अंगार आज।।
हूँ मैं तो बेसामाँ[4] अधिक दुश्मन तो है भारी अटल।
पाते सिला[5] इस बाब[6] का शह का धरूँ दरबार आज।।
जिस मेह्रबाके फ़ैज ते सब नौबहार इस दौर[7] में।
जिसकी इनायत[8] ते अधिक आलम दिसै गुलज़ार आज।।
सुल्तान आलमबख्श[9] ओ शाहंशाहे आदिल अली।
हैं यो जहाँ पर्वर[10] अधिक निराधारकूँ अधार आज।।
तिस जरअफ़शाँ[11] के हथते पुर है नजरकी गोद यों।
पाताँसों पीले बागका दामन[12] है जो जरदार[13] आज।।
सूरज जनमका तन नँगा शह-हथते खलअत[14] पाय तू।
काँटा न आ तिसतन उपर काँपे न फिर यकबार आज।।
मै इस क़सीदे[15] में सनत[16] कहता हवाकी कै वले[17]।
तिस थंडसों मुखमें ते फुट निकली निछक गुफ्तार[18] आज।।
ऐ नस्रती बेहतर है तुज पहलेही दिल गर्मी ऐतीं।
कह मतला[19] ताजा[20] सों फिर वही शेर[21] शक्करबार[22] आज।।

(३) शिवाजी के साथ युद्ध--

भूषण ने यदि शिवाजी की वीरता का वर्णन किया है, तो उसके प्रतिद्वंद्वी अली आदिल के पनाला में १६६१ ई० मे शिवाजी पर विजय प्राप्त करने का वर्णन नस्रती ने 'अलीनामा' के प्रथम कसीदे में किया है। पूना और बीजापुर की सीमा पर पनाला एक पहाड़ी किला था। बीजापुर के सेनापति अफ़ज़ल खाँ को धोखे से जब शिवाजी ने मार डाला, तो जोहर के सेनापतित्व में दूसरी सेना भेजी गई। जौहर हाल ही मे विद्रोही बनकर क्षमा-पात्र तथा सलाबत खाँ की उपाधि से विभूषित किया गया था। शिवाजी ने पहिले पनाला के दुर्गका आश्रय लिया फिर सलाबत खाँ को अपनी ओर फोड़ लिया। इस पर अली आदिल स्वयं सेना लेकर चला। शिवाजी ने किला छोड़ दिया और पनाला पर बीजापुर की विजय हुई। नस्रती ने अपने इस कसीदे मे बादशाह की प्रशंसा शिवाजी की निदा करते सलाबतजंग के युद्ध का वर्णन और धोखा देना, फिर बादशाह के अभियान और विजय का वर्णन किया है। इसके कुछ अश है—*

---

१. गीत, २. जारी, ३. अग्नि-जल, ४. साधनहीन, ५. पारितोषिक, ६. विषय, ७. युग, ८. कृपा, ९. दुनिया पर दयालु, १०. जगत्पालक, ११. सुवर्णवर्षक १२. किनारा, १३. सुवर्णवाले, १४. दरबारी पोशाक, १५. प्रशंसात्मक पद्य, १६. अलंकार, १७. लेकिन, १८. बातचीत, वाणी, १९. दो आदिम चरण, २०. नया, २१. पद्य, छंद, २२. शक्कर बरसानेवाला।

[* उ० श०, पृ० २३५।]

जबते झलक[1] देख्या अधिक सूरज तेरी तरवारका।
तबते लग्या थर काँपने हो पुर-अरक[2] यक बार का॥
कोइ बुँद जो तेरे खगके पानीते दरियामें पडे।
सा जोश अधिक यक नीर होय तस्ना अगँड यव गारका॥
किसमें तु-ताला[3] के कवी[4] चमते अधिक जम जम[5] दिसै।
जिसमें तु आलमगीर[6] हो आया सिकदर सारका[7]॥
कोइ मुहरये-सर्द[8] तुज-अ` जाँवाज[9] नहिं ले जा सके।
जाँ[10] रज्म[11] के तख्ते पो तूं शशदर[12] बँध्या फुल भारका॥
हर फस्ल[13] शहके वस्फ[14] को लिखता तो होते कइ वरक[15]।
पढता हु सिरनामा वडी यक फतह की तूमार[16] था॥
अव खम्[17] ते इस मज्मून[18] के मतला[19] नवल पैदा करूँ।
हर हर्फ[20] के माने ते ता निकले सुरज झलकार का॥

(क) शिवाजी की निंदा*—

ऐ शाह आदिल तूं अती साहेब है सब ससारका।
कुफ्फार-भजन जग तुम्हें नहिं सूर[21] कोइ तुज सारखा॥
यकसाल ओ बागी सिवा[22] जगमें शितत[23] पैदा किया।
है तिफ्ल-मक्तब[24] मक्र[25] में शैतान जिस मक्कार[26] का॥
कोइ खेल उस मक्कारने खेल्या न कजबाजी[27] के बिन।
गोया फलक[28] कजकाल[29] है माव्या उमी ऐयार[30] का॥
मरता सो देख उस खिज्र[31] अगर लेवे बचा अमृत पिला।
वै जाम भर दे जह्रसा फेरे[32] उधार उपकार का॥
था यक्क-यक[33] जो जगमें सब आ गढ पनालाकूं बुलद।
थमने धरति लगरसे होर अवरकूं थांव अधार का॥
बेतुल्-शरफ[34] सो सूरका धरता है नित हम-सायगी।
मरींख[35] सो उसका धनी दावा धरे हक्दार का॥

---

१ चमक, २ पसीन-पसीने, ३ तेरे भाग्य, ४ बलिष्ठ, ५ सदा, ६ चक्रवर्ती, ७ सरीखा, ८ वडी गोटी, ९ जान पर खेलनेवाला, १० जहाँ, ११ युद्ध, १२ द्वारो का। १३ अध्याय खड, १४ गुण, १५ पन्ने, १६ ढेर, १७ खम्भे, खुम (घडे), १८ विषय, १९ गजल की आदि पक्ति, २० असर,* उ० श० पृ० २३५, २१ सूर्य, २२ विद्रोही शिवाजी, २३ गडबडी, २४ पाठशाला का बच्चा, २५ फरेब, २६ धोखेबाज, २७ टेढा खेल, २८ आकाश देव, २९ गोल-मात्र, ३० चालाक। ३१ अमृत का देवता, ३२. लौटाये, ३३ यकायक, ३४ उच्चतम घर नक्षत्र, ३५ मगल।

जिसके हशम[1] का शवनवीस[2] अकसर अतारद[3] का सगा।
जिसका अलंगी नित धरे ज़बरासों[4] ताता यार का।।
पौचे पवन पीरी[5] में जाकर गर जवानीमें चढ़े।
अँपड़े[6] न दूजी उम्र लग तिसपर कयास[7] यक बारका।।
नैं बात कें लग मुख नै क ठार पर पहले जवाँ।
गर नाँव कोइ लेने मँगे तिस राह नाहमवार[8] का।।
दामन[9] मे तिस ऐसा ह्ै क पाले गया है बर्ग[10] एक।
दुनियामें कोइ राज आज लग उस गढ़कुँ नै लड़ने सक्या।।
तिरजुग[11] का दल[12] ले वो जनम खोये ते यक बार का।
जब हाथ उस मक्कारके भेदों[13] से ऐसा गढ़ चढ्या।।
होर यक दग़ाका हो अमल[14] जाने इसी बदकार[15] का।
गढ़ देखकर जान्या कि गढ़ ज्यों काडने आवे मलक[16]।।
तो मुँज तरफ देखे न यों हो लखधनी उस ठारका।।
सामा सों हरयक जिन्स[17] के गढ़पर ज़ख़ीराँ[18] यों भरया।
नै नित पड्या सो गढ़ अजब ओ जाहो भारी भार का।।
मुतलक़[19] तजावुज[20] हदते कर भी शर[21] सों पेश आता[22] चल्या।
शहनेस्त[23] तब करने मंगे पाया[24] वो नाहंजार[25] का।।

(ख) युद्ध का दृश्य*—

खडगाँ खनाखन सूर धर सूराँ के यों बजने लगे।
जोहरा का जोहरा गुल रह्या आवाज़ सुन झलकारका।।
खडगाँ खडगाँ लग अधिक चौधेर ते यों चिंगियाँ उडियाँ।
ज्यों आगकियाँ बिजलियाँ चमक बरस्याँ बदल अंगार का।।
गुर्जासों मुहरे मान यों कीते परा गंदा[26] दिसन।
गोफनके जों लगते फतर[27] फटता है हुक्का[28] नारका।।
लागी तबर[29] के ज़र्ब[30] सों तफराख अजलके हाथकी।
जमके मखी[31] ते कम न था धबका गुरज[32] के मारका।।

---

१. दबदबे नौकर, २. रात्रि-लेखक, ३. बुध, ४. जबर्दस्तों, ५. बुढ़ापे, ६. पहुँचे, ७. खयाल, ८. विषम, ९. किनारे, १०. पत्ता, ११. गरुड़, १२. सेना, १३. रहस्यों, युक्तियों, १४. शासन, १५. दुष्कर्मी, १६. फरिश्ते, देवता, १७. प्रकार, १८. भंडार, ढेर, १९. बिलकुल, २०. गुजरना २१. शरारत, २२. के साथ आता, २३. नष्ट, २४. जज, २५. दुश्चरित्र। *उ० श०, पृ० २३६। २६. बिखरे, २७. पत्थर, २८. डब्बा, २९. कुल्हाड़ा, ३०. चोट, ३१. मक्खी, ३२. गदा।

हर घटमें दिलका धाक सो रहे थे रखट की कीच हो।
हर रगके गुलने था अयाँ[1] फव्वारा लहुके धारका॥
मरत्याँ के लहुके बह्र[2] ते धरती पो जब लहरती धरयाँ।
जीत्याँ पो तुट[3] पडने लग्या डूँगर पो डूँगर ल्हार[4] का॥
लोटा के मछल्याँ पर जर जाले दिसें हर द्रहमें।
थागल[5] के दौडे के नमन[6] तागा सो हर जुनार[7] का॥
चकत्याँ सिराँक्याँ तैरते दिस्त्याँ कँवलके फूलस्याँ।
पजा झड्या सो दड था हर तिस दँडलके सार का॥
दीदे बिखरे जा जगल मुहेर-सुलेमानी बस्या।
सगे - यहूदी हो दिलाँ दामन भरया कुहसार[8] का॥
चोला गगनका अक्स[9] पर सारा कुसुँबा हो रह्या।
जब लाल मखमल सब जमी ओढे जो लख विस्तार[10] का॥
लहूमे रँगे जब सब कँकर याकूत-रेजे हो रहे।
जो माँगियाँ दिसते लग्या रगी हो चूरा गारका॥
छिटक्याँ न थ्याँ लहुक्या मगरयो फतह[11] लिखते शाहका।
पाताँ पो बनके आस्माँ अफशाँ[12] किया छिडकार का॥
हो रहे मूयाँ रुँड मुँड नाबूद[13] सब खँडलाट सो।
जीते हो बेसूरत[14] भुले बोझ आपनी दीदारका॥
लश्करके जमते कम नही शहके वजीराँ का बटक।
आसफ[15] के सफ[16] दे है अधिक हम्ला[17] हरेक सरदार का॥
बीनी[18] पो शहकी फौजके जिमके मलायक[19] पेशरौ[20]।
दमदार पुश्तेवान[21] है जम-जम[22] मदद करतार की॥
इस फौज ताजेदारकूँ देखे फलक[23] के जब तलक।
बोले कि आलमगीर हाय बेशक यो भार अतबार[24] का॥
निकले जिधर शह बाँध रुख फिलहाल[25] उधरते फतह[26] भी।
आवे अँगे होने[27] अपें हदिया[28] सो मुल्क आयारका॥
यलगार[29] शहकी पेशरौ है अक्ल[30] की भी दौडते।
ना झाक सकसे[31] वहम जहाँ हो शहधनी तिस ठारका॥

---

१ प्रकट, २ समुद्र, ३ टूत ४ लहर, ५ पेबद, ६ सूत-सदृश, ७, ज
८ पहाड, ९ प्रतिबिम्ब, १० लम्बाई-चौडाई, ११ विजय, १२ वर्षा, १३
१४ बेरूप, १५ नाम, १६ पंक्ति, १७. आक्रमण, १८. बेन बाजा, १९ फरिश्ते, दे
२० अग्रगामी, २१ पृष्ठपोषक, २२ सदा, २३ आकाश, २४. विश्वास, २५ ‍
२६ विजय, २७ आगे होने, २८ भेंट, २९ धावा, ३० बुद्धि, ३१ सकेगा।

अँपड्याँ[1] जो शह आदिल अली जब मुर्तजा-आबादकूँ।
जेरोजंबर[2] जगकूँ किया आवाज[3] उस-हुंकार का।।
सफ़पर गुनहगाराँ[4] की तब कायम[5] क़यामत[6] हो रही।
बिसरे यकस यककी मदद पेशआ[7] सबब[8] दुश्वार[9] का।।
जो जाँ[10] अथे सो त्यों च वाँ[11] हैरत सों सारे दँग रहे।
सूरत में हर तन यों दिस्या जों नक्श[12] है दीवार का।।
शहके ग़जब[13] की त अगिन नहिं सरकशी पर आप लगा।
शह शोर में दिल जा पड़्या हर मायमे-अशरार[14] का।।
तहकीक़[15] सब जाने कि अब आखि़र तुटे पर आसमाँ।
हरगिज[16] थमा सकसे[17] न कोइ बल हथके दे आधार का।
यों अल्-अमाँ[18] की हाँक सब चौधेर[19] ते गढ़ परते[20] उठी।
आजिज[21] हो काडे मुख पकड़ सुट[22] दे धंदा हथियार का।।
जब शह चढ़े घोड़े उपर यों फ़तह गढ़ ऐसा किये।
तब मुखमें शायाँ[23] के हुआ नित दर्द इस गुफ्तार[24] का।
कहना है धन[25] उस माहकूँ है जिसकूँ ऐसा शह खलफ़[26]।
सो ओ बड़े-साहेब[27] हैं जम[28] पाकर करम[29] करतार का।।
जिस घरकी न्यामत[30] ते जमन पाली गई है सब जमी।
ते आबे-दरिया[31] मे असर है तिसकी...खारका।।
जिस दिलकूँ कर हुब्बुल-वतन[32] गमती[33] है निस-दिन रास्ते।
होर घर करामत[34] सों जखम है तिस-जबाँ में प्यारका।।
तिस-मेह्र[35] की नित छांवमें पाती है आसाइश[36] जहाँ।
तिसका करम तो जगकुँ जम[37] आधार है निरधार[38] का।।
जिस कौल साबित[39] कूँ पत्या सीमुर्ग[40] आवे काफ़[41] ते।
रखवाल हो रहे सग-तमन[42] शेरजा[43] भी तिस दरबारका।।

---

१. पहुँचा, २. उलट-पुलट, ३. शब्द, ४. पापियों, ५. मौजूद, ६. प्रलय, ७. सामने आया, ८. कारण, ९. कठिन, १०. जहाँ, ११. वहाँ, १२. चित्र, १३. कोप, १४. शरारत की जड़, १५. सचमुच, १६. कदापि, १७. सकेगा, १८. त्राहि-त्राहि, १९. चारों ओर, २०. गढ़ पर से, २१. लाचार, २२. फेंक, २३. शाहजी, २४. बात, २५. धन्य, २६. उत्तराधिकारी, २७. अली आदिल द्वितीय की माँ खदीजा सुलतान, जो कि गोलकुंडा के सुलतान मुहम्मद कुतुब की लड़की और अब्दुल्ला कुतुब की बहिन तथा साहित्यप्रेमी थी, २८. सदा, २९. दया, ३०. उत्तम भोग, ३१. समुद्र के जल, ३२. देशप्रेम, ३३. पसन्द, ३४. ईश्वरी चमत्कार या दया, ३५. उसकी मुहब्बत, ३६. शोभा, ३७. सदा, ३८. निस्सहाय, ३९. पक्के वादे, ४०. गरुड़, ४१. काकेशस पर्वत, ४२. कुत्ते–सदृश, ४३. शेर-बच्चा।

दुनिया कशाकश[1] कर अगर फाडे फलक[2] के दौर[3] कूँ।
सरिश्ता[4] फिर साँवे उसे तिस-अहद[5] के यक तारका॥
सहवन्[6] भी तिमकी वातमें ना फेर[7] होय जाहिर[8] कधी।
गर याद गुजरे दिलमें टुक जिसके सचे इकरार[9] का॥
है गर शुजाअत[10] की फलक उनका खलफ[11] यो सूर[12] है।
जिस-नेश-रोशन ते[13] छिप्या वल[14] कुफ्र[15] की रिदकार[16] का॥
जा शबके खुश-नक्काश[17] ने दाने सफेदी के भर्‍या।
कासा[18] सोनेके जलने जब खाली दिस्या जगार[19] का॥
होनेमें निस मुदा जल्वागर[20] शह शह गश्त[21] अति शोकसो।
करने हवस ल्या दिलमने[22] किसवत[23] किया जरतार[24] का॥
जिममें अजब शह सूर सा निकल्या झलकता नूरसो।
चदर-उपर काले कलँक नहि रह सक्या अँधकारका॥
चँदना न था वल[25] शरमते गल-गल को पडता था चँदर।
ना देख सक सक शुअआ[26] उस मारकी झलकारका॥
चौंवर[27] हलालाँ[28] मशअलाँ[29] यो भर रह्या सब ठारमें।
जो नूर भार[30] आता है चल गुलनारो-लालाजार का॥
चारो रुखन[31] रग-रसभरे हर भात वाजे यो वजे।
क़ाजी फलक[32] का हाल धर पग्वा सुट्या[33] दस्तार[34] का॥
हर हर कदम चलते अँगे[35] चदर हो शहके पाँव तल।
मुँह पर बिछाता था अपें उजला निगट[36] झमकार का॥
उस-शह तुरग कूँ देखने निकल्या सो गुलशन[37] ते पवन।
हर दम किया तोहफा[38] थ खुश्बूइके महकारका॥
"ऐ शहसवार[39] इस वक्तपर पडने शहाबाँ[40] सो अथे।
करते थे निस हर डगपे तुज बाराँ[41] गुहर ईसार[42] का"॥

---

१ खींचाखींची, २ आकाश, ३ चक्कर, ४ सिलसिला, सबब, ५ उसके शासन-काल, ६. भूल से, ७ उलटापन, ८ प्रकट, ९ सच्ची कौल, १० वीरता, ११. उत्तराधिकारी, १२ सूर्य, १३. जिसकी चमकदार तलवारसे, १४. शक्ति, सेवा, १५ अन्-इस्लाम, १६. अधार्मिकता, १७ अच्छे चित्रकार, १८ बडा पियाला, कटोरा, १९ तूतिया, २० प्रकाशमान, २१ गया, २२ दिलमें, २३. पोशाक, २४ जरी, २५ वन्हि, २६ किरणें, २७ चारों ओर, २८ अर्ध चन्द्र-सी, हजारों, २९ मशालें, दीप-यष्टियाँ, ३०. बाहर, ३१ तरफ, ३२. आकाश, ३३ फेंका (पजाबी), ३४ दर्शन, ३५ आगे, ३६ बिल्कुल, ३७ फुलवाडी, ३८ भेंट, ३९ असवार, ४० ज्वालाएँ, ४१ वर्षा, ४२ त्याग की मोती।

शह शह्न पास आये वही ले हदिया अमृतके खड़े।
अक़बाल[1] पेश आया[2] अपे बंदा जो था सरकारका ।।
चँदना न था बल[3] चाँद अपस किसवत[4] दिया था शह्नकूँ।
ता मनकूँ साफ़ी-बख्श[5] होय नज्ज़ारा[6] तिस सिंगारका ।।
जों शमा[7] की फानूसते होती है खूबी[8] जल्वागर[9]।
यों शह्न कूँ रोशन किया शहका दरस अनवार का[10] ।।
अल्हक[11] कि हक़[12] में जगकी जो तौफ़ीक़[13] तुजते आइ है।
आलम[14] बिसरते[15] ना कधीं यो शुक्र तुज उपकारका ।।
तेरे क़ ी[16] ताले[17] की अब सौगंद होय आलममने[18]।
हक्क़ा[19] कि तुज हरदम मदद है हैदरे-क़र्रार[20] का ।।
तुज हुक्म मान्या सो ओही मक़बूल[21] ओ दारैन[22] में।
मर्दूद-आलम[23] है रख्या जिन तुजसों रुख इन्कारका ।।
फ़हमो[24] शुजाअत[25] अक्लो-दिलशह तुज खुदा बख़शिश किया।
बख्तो[26] जवानी का अवल दे बल अपसके प्यारका ।।
तेरी सिफ़त[27] सब वाकई[28] बोल्या हुं आपें जोड[29] में।
कंचन की उत्तम वस्तकूँ क्या काम टंक निखार का ।।
ेहर[30] हुनरका बेबहा[31] तुज-दौरमें क़ीमत धरया।
दौलत[32] ते तुज तज्जार[33] होय जिस लगह इस बैहार[34] का ।।
मुफलिस[35] अथा पन यो रतन पाते हुआ तज्जार मैं।
तूँ शाह आरिफ़[36] मुश्तरी[37] है हर दुरे-शहवार[38] का ।।
गर तुज-नज़रते यक रतन कुछ बेबहा पावे तो होय।
तारयाँ का खुर्दा[39] ले गगन सर्राफ़[40] मुँज बाज़ार का ।।
दह-पाँच ैत[41] इस भांत में किये है तो शौकों क्या हुआ।
मालूम होता शेर अगर कहते सो स विस्तारका ।।
सेवट[42] हुनरमंदी के फ़न[43] कहते क़सीदा[44] होय अयाँ[45]।
करना है ठारेठार अदा[46] क्यों लाज़िमा[47] अशआर[48] का ।।

---

१. प्रताप, २. आगे आया, ३. बल्कि, ४. पोशाक, ५. सफाई देनेवाला, ६. दृश्य, ७. मोमबत्ती, दीप, ८. सुन्दरता, ९. प्रकाशमान, १०. प्रकाशों, ११. सचमुच, १२. पक्ष, १३. भलाई, १४. दुनिया, १५. बिसरेगी, १६. शक्तिशाली, १७. भाग्य, १८. दुनिया में, १९. सचमुच, २०. आक्रमक अली, २१. स्वीकृत २२. उभयलोक, २३. दुनिया का अभागा, २४. समझ, २५. वीरता, २६. भाग्य, २७. गुण, २८. यथार्थ, २९. जोड़जाड़, ३०. मोती, ३१. अनमोल, ३२. धन, राज्य, ३३. व्यापारी, ३४. अ-पराजय, ३५. निर्धन, ३६. ज्ञानी, ३७. खरीदार, ३८. राजमोती, ३९. खुदरा पैसा, ४०. सर्राफी करनेवाला, ४१. शेर, छंद, ४२. अंतिम (गु० छेवट), ४३. कला, ४४. प्रशंसात्मक पद्य, ४५. प्रकट, ४६. प्रकट करना ४७. औचित्य, ४८. शेरों।

उस्तादे-आलम[1] का जो मैं शागिर्द था कर[2] कमतरी[3]।
　　　　बोल्या हुँ यो ज्यो त्यो वरी मेरे सकत-मिकदार[4] का॥
कै मूशिगाफी[5] का हुनर मुंज हतमें है पन वस नही।
　　　　तुर्रा[6] न भाता चीर अधिक जैसे भी नाजुक[7] तारका॥
यह हर्फ कहते शह तुझे होते है लख मानी[8] समझ।
　　　　ऐ शाह आरिफ[9] इस उपर वाकिफ[10] हो सब इसरार[11] का।
ऐ नस्रती मश्गूल[12] हो शहकी दुआके विद[13] में।
　　　　काफी है दो जगमें तुजे तिल फैज़[14] तिस आसार[15] का॥
है आसमां या रब[16] तलक धरती के सरपर सायवां[17]।
　　　　कायम तलक यो छत्र अछो[18] शह जग के पालनहार का॥

(४) औरगजेब से युद्ध*—

औरगजेब की सेना से अली आदिल को लोहा लेना पडा था, जिसका वर्णन नस्रती निम्न प्रकार से करता है —

उसी रात अरस्तूय-दौरां[19] के यां। दखिनके सब ऐयान[20] थे मेहमां॥
सँवारे थे कइ अंजुमन[21] दिलनशी। ॥
हरेक नामवर[22] ते दिलेरां[23] की सफ[24]। अया यक गमतमे हो बैठ यक तरफ॥
न थी बिन-खडग कुछ गमतकूं रवाज। न बाज़ी[25] की मज्कूर[26] जांबाज़ी-बाज[27]॥
कही लेके शहनामा[28] शहनामा-ख्वां[29]। दिलेरी[30] में रुस्तम की खोले जबां॥
कतेक ले सफीना[31] निज़ामी[32] का हाथ। सिकदरकी मर्दी[33] के बोलें नुकात[34]॥
दिलेरां हरेक भात रज्मीय[35] सुन। शुजाअतते होते चलें अति वो गुन॥
फुगें[36] यो तहव्वर[37] सो मर्दाके रग। खोलें हो जिरह[38] क्यां कडियां तनपे तग॥
जैते शेर शम्शेर[39] म्यांना ते काड। देखें तौल हाथा सो धारां के बाड[40]॥
दिया शौक[41] या सबकुं जल्दी तमाम। कि गो आ पडेगा मुगल-साथ काम॥
तलक[42] या कहे आके जासूस[43] भेद। जो धरता है यो दुशमने बद-उमेद[44]॥
बदअदेश[45] के दिलका जब भेद पाय। सबे शेरमर्दा[46] ने गुस्से मे आय॥

---

१ जगद्गुरु, २ इति, ३ अधम, ४ शक्ति के अनुसार, ५. कई बाल की खाल खींचने, ६ कलगी, ७ कोमल, ८ अर्थ, ९ ज्ञानी, १० जानकार, ११. भेदो, १२ सलग्न, लगा, १३ जप, १४ कृपा, १५ प्रभाव, १६ हे भगवान्, १७ छाया करनेवाला, १८ रहो।

[*उ० श०, पृ० २३९।

[१९ युग का अरस्तू, २० सामन्त २१ सभी, २२ नामी २३ वीरो २४ पाती, २५ खेल, २६ वर्ण २७ प्राण के खेल के बिना २८ पुस्तक २९ शाहनामा पढनेवाला, ३० वीरता, ३१ पुस्तक, ३२ गजा(म)का फारसी कवि, (११३९-१२०० ई०), ३३ वीरता, ३४ बातें, रहस्य, ३५ युद्ध-सबधी, ३६ फूले, ३७ आश्चर्य, ३८ कवच, ३९ तलवार, ४० तेजी, ४१ उत्साह, ४२ जबतक, ४३ गुप्तचर, ४४ दुष्ट शत्रु ४५ बुरा सोची, ४६. नरसिंह।

"करें तेगसों पेशहस्ती[१] हमे[२] । उतारें उनन सिरते मस्ती हमें ।।
दिलेराँ उठे बोलते 'दीन-दीन'[३] । कहे म्हालदारा[४] कि है ज़ीन-जीन[५] ।।
घड़ी भरमें हो मुस्तअद[६] बेदरंग[७] । सलह[८] बाँध सब रावताँ[९] होर तुरंग ।।
कवी बस्तराँ[१०] कोइ सो जोशन[११] बँधे । केते चार आईना[१२] रोशन बँधे ।।
ज़िरा वा कुला[१३] ने केतक चहल[१४] कद । कबायाँ[१५] व कबच्याँ[१६] तो थ्याँ बेअदद[१७] ।।
हुई फौज यों मुस्तअद जिस घड़ी । दमाम्याँ[१८] पे चौधरते[१९] लकड़ी पड़ी ।।
गगनपर सितारे हुये हाल[२०] में । हदरता[२१] है सीमाब[२२] जों थालमें ।।
जेती भेर वो बराम[२३] जो बजनें लगे । सवालाख पर्वत गरजने लगे ।।
सवाराँ चले मस्त हो तावमे । रखे तेज ताजी[२४] नज़र बाद[२५] में ।।
दिसे फौज दरियानमन[२६] हर तरफ़ । लगे रस्ते[२७] छत्रयाँ के मौजाँ[२८] पे कफ़ ।।
जो पीसी गई भारतल सब ज़मीं । वो गर्द आ गगनके तबक[२९] मे जमी ।।

(क) दिल्ली की सेना*—

कता[३०] हूँ एता[३१] फौज **देहलीकी** बात । चली थी दखिन दलते किस धात[३२] साथ ।।
कि जिस फौजकूँ देखनेमें समझ । दिसे ना किसे[३३] इन्तहा[३४] होर उपज[३५] ।।
हथ्याँ का अराबा[३६] चले मेल-मेल । न्हना जिसमे सरदार असहाब-फ़ील[३७] ।।
सरासर[३८] अगर भार सारा दिसे । तो यक फौज़दार[३९] उसमे दारा[४०] दिसे ।।
सुबुकमन्सवी[४१] होर भारी केते । अथे कै सदी[४२] होर हजारी[४३] केते ।।
यकेक मुल्कके नामआवर जवाँ । दो अस्या[४४] सेहास्या[४५] सिपह[४६] बेगुमाँ[४७] ।।
मोगोलाँ केते मुल्को कइ शह्रके । केते हिन्दु कइ **मावरन-नह्र**[४८] के ।।
जगत्तइ[४९] **किजलबाश**[५०] **उज्वक**[५१] बली । **कंधारी** केते **बल्खी** व **काबुली** ।।
मुरव्वत के मुफ्लिस[५२] मुहब्बतके शूम[५३] । फ़रासत[५४] कुँ तूती नहूसत[५५] में बूम[५६] ।।
फरेब[५७] उनके फन[५८] में बड़ा बुर्द[५९] है । जनम जिनका इब्लीस[६०] शागिर्द[६१] है ।।

---

१. हाथ मिलाना, २. हम, ३. धर्म-धर्म, ४. महलदार, ५. चारजामा ६. तैयार, ७. निर्भय ८. हथियार ९. सर्दार, १०. मजबूत, ११. कवच, १२. वर्म, १३. कुलाह, टोप, १४. चालीस, १५. जामा, १६. बकबकी, १७. असंख्य, १८. नगाड़े, १९. चारों तरफ से, २०. तन्मयता, २१. नाचता, २२. पारा, २३. बाजे, २४. अरबी घोड़ा, २५. हवा, २६. समुद्र-सदृश, २७. मार्ग, २८. लहरों, २९. थाल।

* उ० श० पृ० २४०।

३०. कहता है, ३१. इतनी, ३२. भाँति, ३३. किसीको, ३४. अंत, ३५. आदि, ३६. पाँती, ३७. हाथीवाले, ३८. बिलकुल, ३९. सेनानायक, ४०. दारा बादशाह, ४१. छोटे दर्जे-वाले, ४२. सौ के नायक, ४३. हजार के नायक, ४४. दो घोड़ेवाले, ४५. तीन घोड़ेवाले, ४६. सेना, ४७. अनंत, ४८. गंगा-जमुनाका अंतर्वेद, ४९. जगताई (मुगल), ५०. नग्न कबीला, ५१. लाल बाल (ईरानी), तुर्क, ५२. बेमुरौवत, ५३. बेमुहब्बत, ५४. विशालता, ५५. अशुभता, ५६. उल्लू, ५७. धोखा, ५८. कला, शिल्प, ५९. लाभ, ६०. शैतान, ६१. शिष्य।

न छे[1] जिनमें असला[2] मुरव्वत की बोय[3] । करें उससो बद जिसते नेक उनपे होय ॥
बदी बापसो अपनी मीरास[4] जान । बिरादरका खून शीरे-मादर[5] पिछान ॥
देखें कुछ है ज्यों फायदा आपकूं । न छोडे सगे भाइ होर बापकूं ॥
अथे मीरजा[6] मीर कश्मीरके । गरायब[7] सिपाही भी चौधेग्के ॥
खुरासानियाँ अस्फहानी केते । दमावदी वो दामगानी केते ॥
कमांदार कोइ गुजबाजी[8] में चुस्त[9] । तिरदाज[10] कोइ नेजाबाजाँ[11] दुरुस्त[12] ॥
भुखे होके झगडेकुं फिरते दिलेर[13] । लोहे चाँभते दिल न होय उनके सीर[14] ॥
खलाल[15] उनके ताँदाँ या माला दिसे । गिरा[16] गुर्ज[17] मुखवा नेवाला दिसे ॥
केतेक जातके थे एहेले ओवट । जबर्दस्त पजाविशी दिलके घट[18] ॥
दिलेरीके बिन कुछ न उनमें ओवार[19] । जनम रहके शहरमें ऐसे गँवार ॥
मुगल हर हुनरमें वडा कारसाज[20] । लडाईके फन[21] पर तो अति हीलाबाज[22] ॥
सब इस घात[23] फौजाँ खुशारास्ता[24] । चल्याँ ब्याँ अरूसा[25] हो नौख्वास्ता[26] ॥
हरेक मर्दका शौक ताजा हुआ । लटापट ब-दिल[27] जौक[28] ताजा हुआ ॥
अजब फौज रगी दिल-फरोज[29] थी । वले[30] सख्त खूँरेज[31] जाँ-मोज[32] थी ॥

(ख) युद्ध-वर्णन*—

गनीमाँ[33] के भेज्याँ[34] कुँखाने शिताब[35] । खुश[36] आने लग्या मूमें गुर्गा[37] के आब[38] ॥
कमानाँ रख्याँ दिल कुशाकुश मने[39] । उबलने लगे तीर तकशामने ॥
फुत्र्याँ तेज या सक्त भाल्याँ में रग । कि फुकता[40] है जो बाव लेकर भुजग ॥
मडकते तुरगाँ हो आगाँ दिसे । सवाराँ मुखे रनके बाघाँ दिसे ॥
निकलते हैं जो बाघ नख्चीर[41] कूं । निकल यों म्हराटे दोनो घेर[42] सूं ॥
रकत भुँइपे पड-पड के पामाल[43] हो । लडतका हगामा रह्या लाल हो ॥
हजाराँ तुरगाराँ कालख तल[44] बजा । जमी के धमक्ते फलक[45] हिल बजा ॥
जबाँ[46] लहुकी प्यासी खडगकी अपार । निकल आई जो म्या[47] के लबते[48] बहार[49] ॥
हरेक मुखते आवाज सुन 'मार-मार' । किया जिव[50] ने दुश्मनके होंठोंमें ठार ॥

---

१ है, २ बिलकुल, ३ मुरव्वतकी गध, ४ दायभाग, ५ माँ का दूध, ६ मिर्जा, ७ चित्र विचित्र, ८ गदा चलाने, ९ चालाक, १० तीर चलानेवाला, ११ भालाबाज, १२ ठीक, १३ वीर, १४ तृप्त, १५ दत-खोदनी, १६ पडा, १७ गदा, १८. छोटे, १९ उबार, २० कार्यकर, २१ कला, २२ चालाक, २३ भाँति, २४ सुसज्जित, २५ दुल्हनें, २६ नई माँग, २७ दिल से, २८ उत्साह, २९ उत्साहवर्धक, ३० लेकिन, ३१ खूनी, ३२ प्राणदायक।

* उ० श० पृ० २४२।

३३ शत्रुओ, ३४ प्रेषितों, ३५ जल्दी, ३६ प्रसन्न, ३७ भेडिया, ३८ पानी, ३९ काटाकाटी में, ४० फुँफकारता, ४१ शिकार, ४२ दोनो ओर, ४३ बर्बाद, ४४ धरती, ४५ आकाश, ४६ जीभ, ४७ मियान, ४८ ओठ से, ४९ बाहर, ५० जीव, प्राण।

शरंगेज[१] बाना[२] ते शर-शोर उठ्या । कड़ाकड़ जबूरयाँ ते पुरजोर[३] उठ्या ।।
जो यक दम छुटी पोप हर फ़र्द[४] फ़र्द । उचाया[५] धुआँ बाद[६] हो यक की गर्द ।।
दिसे निसमें तरवार झलके जेती । पकड़ गर्द में उड़ रही है बती ।।
क़हे देख हैरान[७] हो अहले-अर्श[८] । मुअल्लक़[९] हवापर बँध्या कौन फ़र्श[१०] ।।
मुगल का जो हादी[११] सेव्ता पेस्तदस्त[१२] । अगले के था फीज हाथ्या के मस्त ।।
अवल उसपे शेरजे[१३] का पंजा पड्या । सलहपोश[१४] दिलपर कड़ाकड़ घड्या ।।
दिलेरा करें नारा[१५] यों होके आग । नेस्तान[१६] में जों गरजते हैं बाघ ।।
झलकने[१७] लगे गुर्ग भाल्याँ में यों । लगी है नेस्तान कूँ आग जों ।।
भुसाँध्याँ ते लहु यों भूँसाँधे पिले । चलें जोशसों आहनी[१८] जों नले[१९] ।।
कमानाँ[२०] की रत[२१] जब कशाकश हुई । हवा भरके तीराँ यो तर्कश[२२] हुई ।।
छुटी सफते[२३] यों तीर यक मुठ दिलेर । उड़े घेत ते जों हजाराँ तिलेर[२४] ।।
हुआ लाल गीती[२५] पकड़ तीर ओज[२६] । कहे तूकि टोलाँ की निकली है फौज ।।
लग्या तीर हर तनपे जब बाले-बाल । दिस्या लहु उछलते फवारे[२७] का जाल ।।
दिस्या ज़रपोशाँ[२८] का तीराँ सों हाल । फुगाया[२९] है गुस्से सों जों रीछ बाल ।।
चुवे पाखराँ[३०] पर जो तीराँ अपार । हुआ हर तुरँग ऐन[३१] अफ़्रीत-सार[३२] ।।
हथ्याँ का हुआ हल्का[३३] यों सरबसर[३४] । मकोड्याँ[३५] के जों फील[३६] कूँ आये पर ।।
दमे-तेग[३७] ते यों उठे शोला[३८] जाग । लगे जाके सूरजके कपड़्याँ कुँ आग ।।
करे क़ीमा[३९] तनकूँ तिरे बेकमाँ[४०] । किये कोफ़्ता[४१] सिरकुँ गुर्जे गिराँ[४२] ।।
कियाँ जब कटार्‍याँ ने सीन्याँ कु रेश[४३] । दिलाँ फांच छोड़े जो खंजरकुँ पेश ।।
म्हरा होय सब लहुके शर्बत[४४] में मिल । मुरब्बा[४५] रह्या होके सीन्याँ में दिल ।।
हरेक तीर एक मार जोहहाक था । करे मगज़ख्वारी[४६] तो दिल चाक[४७] था ।।
शपाशप जो बरछ्यों मुठ्याँ ते खुल्याँ । दियाँ कइ सवारा कुँ उलट्याँ सूल्याँ ।।
पड़ा बार हो जिस गले आ कमंद । निकल भार[४८] दीदे[४९] पड़े होके मंद ।।
न कोइ किस मदद कर सके तिस घड़ी । हरेक सिरपे आ फेंच अपसें पड़ी ।।
किये मुगल सों कूँ दखिनियाँ ने पाँच । यो पाँचों के गालिब[५०] हजारों पे आँच ।।
मिल्याँ बारकूँ यक-ब-यक आके जो । यकेला च आकर भिड्या होके दो ।।

---

१. चिंगारी फेंकनेवाला, २. बाण, ३. जबर्दस्त, ४. अलग-अलग, ५. उठाया, ६. हवा, ७. चकित, ८. स्वर्गवाले, ९. लटके, १०. जाजम, ११. हिदायत देनेवाला, १२ आगे, १३. शेरबच्चे, १४. कवचधारी, १५. घोष, १६. बाँस के जंगल, १७. चमकने, १८. लोहे, १९. नल, २०. धनुष, २१. समय, २२. तूणीर, २३. पंक्ति से, २४. तीतर, २५. दुनिया, २६. उन्नति, २७. फव्वारे, २८. कवचधारी, २९. फुलाया, ३०. ढालों, ३१. बिलकुल, ३२. भूत-सरीखा, ३३. घेरा, ३४. निरंतर, ३५. कीड़ों, ३६. हाथी, ३७. तलवार की धार, ३८. ज्वाला, ३९. मांसपिष्ट, ४०. बेधनुष, ४१. मांस का, ४२. गदावाले, ४३. विदीर्ण, ४४. रस, ४५. अचार, ४६. बर्बादी, ४७. फटा, ४८. बाहर, ४९. आँख, ५०. विजयी ।

दमे-तेग कायम[1] कयामत[2] करे । अजल[3] नाजिल[4] यकबारा आफत[5] करे ॥
अजल का जो जिस मर्द पर शौक[6] होय । जरा[7] की कड़ी मू-ब-मू[8] तौख[9] होय ॥
मुगल आयकर घरकूं मेहमान जान । गये कर यो ताज़ीम[10] खातिर निशान[11] ॥
ज़मीं सद्र[12] गी बना बेदरंग[13] । करे यक-ब-यक तनकु यो रंग-ब-रंग ॥
किते मै-अजल[14] का च पी होके मस्त । हुये दग सर धो नटे[15] बैठ मस्त ॥
केतक ग्वाके पीने लगे गमके अवक[16] । अपस सिरके[17] कास्याँ में भेज्याँ[18] के कदक[19] ॥
सुरज सम्द[20] तूफान का एक उबाल । मग्या चढते चदर की कश्ती[21] निकाल ॥
हिलावे जो पुरज़ोर[22] आने लगे । तही तोल में डुलमुलाने लगे ॥
हुआ मव यो अरवाह[23] सो भर रहे । पवन पर अधिक मारते पर रहे ॥

§२४. मीराँजी खुदानुमा (मृ० १६५९ ई०)

सैयद मीराँजी हुसैनी पहिले गोलकुंडा के सुलतान अब्दुल्ला कुतुबशाह (१६२४-७२ ई०) के दरबार में नौकर थे। एक बार किसी काम से बीजापुर गये, जहाँ उन्हें शाह अमीनुद्दीन आला की संगत में आने का मौका मिला। वह शाहजी के शिष्य हो गये और भागनगर (हैदराबाद) लौटकर सूफियों-जैसा जीवन व्यतीत करते १६५९ ई० (१०७० हि०) में मरे। यही मुहल्ला कारवाँ में इनकी समाधि आज भी पूजी जाती है। इन्होंने दक्खिनी हिन्दी में गद्य-पद्य की कई पुस्तकें लिखी हैं। 'चक्कीनामा उर्फान' (ज्ञानचक्की) की छोटी-सी पुस्तिका में उन्होंने चक्की के गीत लिखे हैं, जिनके नमूने* —

बिस्मिल्लाह[24] जाती[25] नाँव। कुरान ऊपर लिया ठाँव। कुल्ले[26] शैयन[27] उसकी छाँव ॥
लाइलाहा[28] कहना इल्लल्लाह[29] में रहना। नबीरसूलसे मनलाना अल्ला अल्ला कहना।
अव्वल अल्ला नाँव सिफत[1] जिसका ठाँव। याद है मेरे जी में हरदम तेरा नाँव ॥
ला इलाहा कहना० ॥

और अन्त में —

उर्फां का चक्कीनामा। बोले सैयद खुदावन्द[31]। पीर ले[32] मुरीद[33] यो समझाना ॥
अल्ला अल्ला कहना इल्लल्लाहमें रहना। नबीरसूलसे मन लाना अल्ला अल्ला कहना ॥

सैयद मीराँजी खुदावन्द खुदानुमा, अर्थात् ब्रह्म और ब्रह्मस्वरूप थे, इसलिए अद्वैतवाद (सूफी-मत, वेदान्त) के विचार रखनेवाले थे। ऐसा विचार इस्लाम में कुफ्र (नास्तिकता) कहे

१ स्थापित, २. प्रलय, ३ मृत्यु, ४ उतरकर, ५ संकट, ६ शौक, ७ कवच, ८ रोम-रोम, ९. तख्ती, १० सम्मान, ११ हृदय-चिह्न, १२ मुख्य, १३ बदरंग, १४ मृत्यु-मदिरा, १५ भागे, १६ आँसू, १७ कटोरे, १८ भेजा, १९ कश्कोल, २० बड़े, २१ नाव, २२ जबर्दस्त, २३ आत्मा।

* त० उ० म०, पृ० ६४–६५।

२४ भगवान के नाम से, २५. व्यक्तिगत, २६ सरि, २७ चीजें, २८ नहीं भगवन्, २९ सिवाय अल्लाह के, ३० ज्ञान, ३१ भगवत्स्वरूप, ३२ गुरु-द्वार, ३३. शिष्य।

जाते हैं, इसलिए वह अपने विचारों को अधिकारि-भेद से ही प्रचार कर सकते थे। 'वजूदिया' (सत्तावाला) उनका ऐसा ही लघु-ग्रंथ (रिसाला) है, जिसमें वह लिखते है*—

"विस्मिल्लाहिर्-रहमानिर्-रहीम[1]। ई रिसलिये वजूदिया[2]-अल्लाह मुहम्मद के राज़-रम्ज[3] की बाताँ किसी ना-महरम[4] के अंगे ना बोलना। बोलंगे सो काफ़िर होयं व सुनेंगे सो दीवाने होयंगे। उनकूँ दीवाने भी न करना अपे काफ़िर भी न होना। जबान सों जिक्र करना अल्ला-अल्ला। जो जबान से कहते हैं, तो दम आवते-जाते अल्ला अल्ला कहना। सारा दिन सारी रात क्या काम करते है, सो अल्ला की याद सों करना। यो संभाल कर बरते तो ज़िक्र[5] अलल्ला[6] की यादसों किया। तिसका फ़ायदा क्या? और अल्लाकी याद सों न किया जायाँ[7] गया। जों शरा[8] पीच में किया सो हराम[9] है और दुरुस्त[10] रखे सो हलाल[11] है।...अल्ला हमारे नज्दीक है तनके फ़ेल[12] करते है, सो देखता है। बोलते है सो सुनता है। बुरा खतरात[13] लाव ना, बुरी बात न बोलना, बुरे फेल न करना।...."

§२५. तबई (१६७० ई०)

तबई गोलकुंडा में उस समय अपनी प्रतिभा के जौहर दिखला रहा था, जब कि उत्तर में मतिराम और बिहारी सहृदयों को चकित कर रहे थे। इसका संरक्षक अबुलहसन कुतुबशाह—जो तानाशाह के नाम से अधिक प्रसिद्ध है—गोलकुंडा का अन्तिम बादशाह (१६७२-८७ ई०) था। २१ सितम्बर १६८७ ई० को आठ महीनेकी सख्त लड़ाई के बाद विजय कर औरंगजेब के पुत्र शाहजादा आजम ने तानाशाह को बंदी वनाया। १४ साल दौलताबाद (देवगिरि) में नजरबन्द रह १७०० ई० में वही उसका देहान्त हुआ। तबई इसी अन्तिम कुतुबशाह का दरबारी था। शाह राजूहुसेनी, जो सुल्तान के गुरु थे, तबई के भी भक्तिभाजन थे। एक तरह कह सकते है, तबई दक्खिनी-हिन्दी का अन्तिम महाकवि था। आगे होनेवाले वली (औरंगाबादी) को दक्खिनी ही नहीं, उर्दूवाले भी अपना कवि मानते हैं।

तबई की केवल एक पुस्तक 'बहरामो-गुलन्दाम' उपलब्ध है, जिसके १३४० शेरों में कोई भरती का नही मालूम होता। इस पुस्तक को तबई ने ४० दिनों में लिखा था†—

किया हूं में चालीस दिसवमें किताब। बहुत फिक्र[14] कर रात-दिन बेहिसाब॥
यों नामा पढ़ेंगे तो बहरे खुदा[15]। पढ़ो फ़ातिहा[16] नाम लेकर मेरा॥
गिना बैत-बैतां कु मै एक जो दिल। हजार और हैं तीन सौ पर चहल॥
अथा साल तारीख का खूब नेक। सन यक हजार ओर हश्ताद एक (१०८१)॥
यो नामे कु तबई किया है तमाम। बहक्क़े मुहम्मद[17] अलेहिस्सलाम[18]॥

---

* त० उ० म०, पृष्ठ २५०-५१।

१. कृपालु दयालु अल्लाह, नाम से, २. यह वजूदिया नामक पुस्तक है, ३. रहस्य, भेद, ४. अ-पात्र, ५. स्मरण, ६. अल्लाह के प्रकाश, ७. बर्बाद, ८. धर्मशास्त्र, ९. धर्म-प्रतिषिद्ध, १०. ठीक, ११. धर्मानुमोदित, १२. कर्म, १३. संकट।

† उर्दू-शहपारे, पृ० १११। १४. चिन्ता, १५. खुदा के लिए, १६. कुरान-सूक्त, १७. मुहम्मद के लिए, १८. उसके ऊपर नमस्कार।

बहराम की कथा को लेकर अमीन और दौलत ने भी दक्खिनी में मस्नवियाँ लिखी है। किन्तु तबई की मस्नवी उनसे कही अच्छी है। तबई ने फारसी किस्से की अन्धाधुन्ध नकल नही की है, न केवल कथा सुनाने का खयाल किया है। वस्तुत उसने उसे एक सुगठित काव्य का रूप दिया है।

तबई के काव्य के नमूने देखें—

(१) मगलाचरण—

इलाही[1] यो तबई तेरा दास है। दे ईमान[2] इसका तेरा आस है॥
इलाही वचन का मुंजे ताव दे। मेरी जीभकी तेगकूं आब दे॥

(२) गुरु (शाहराजू)-वन्दना*—

कती तू बडा है कि कर शाह राजू। चल आया है शह तेरे घर शाहराजू॥
फलक[3] पर तूं उडता है शहबाज नमने[4]। करामत[5] की लाशाह-उपर शाहराजू॥
खबर तेरी मालूम नै बेखबरकूं। खबरदार जाने खबर शाहराजू॥
तूं मखदूम[6] सैयद मुहम्मदके धनका। बहुत बेबदल है गौहर[7] शाहराजू॥
करामत हुआ सबकूं मालूम या जाहिर[8]। तु बातिन[9] में कर यकनजर[10] शाहराजू॥
दखिन का किया बादशाह बुल्हसनकूं। तेरा तख्त देकर छतर शाहराजू॥
खडा होके खिदमतने[11] तेरी सूरज। उडाता कजन की चॅवर शाहराजू॥
किसी का नही ऐब चिन्ता[12] तूं हर्गिज। बडा तुममें है यो हुनर शाहराजू॥
कदम तेरे पकड्या हूं उम्मेद लेकर। मेरे वक्त[13] तेरी नजर शाहराजू॥
खुदा पास उचा[14] हाथ करता है तबई। दुआ तुजकू शामो-सेहर[15] शाहराजू॥

(३) वजही स्वप्न में†—

लख्या मैं जो यो मस्नवी बोलने। यो मातिया निछल धाल[16] यो रोलने॥
यो वजही मेरे ख्वाब में आयकर। कुछ अपना सुरजनार[17] दिखलायकर॥
सरासर[18] सुन्या जो मेरी मस्नवी। कया[19] "बात तबई तेरी है नवी॥"
हो खुशहाल[20] सुनकर यो वार्ता मेरी। अपसके ले हाथामें हार्यां मेरी॥
बडे प्यारसा अपना यो दे मिसल[21]। सुन्या सो पड्या ख्वाब[22] में मैं उछल॥

---

१ भगवान्, २ धर्म-विश्वास।

* उ० श० पृ० ११५।

३ आकाश, ४ बाज-जैसे, ५ चमत्कार, ६ स्वामी, ७ अनमोल, ८ मोती, ९ बाहरी, १० भीतरी, ११ एक दृष्टि, १२ सेवा में, १३ दोष निकालना, १४. बारी, १५ उठा, १६ प्रात-साय।

† उ० श०, पृ० १११।

१७ निर्मल जाति, १८ सूर्य-सदृश, १९ जैसे ही, २० कहा, २१ प्रसन्न, २२ राय, २३ स्वप्न।

(४) काव्य-निर्माण का उद्देश्य*—

कता[1] हूँ सुनो कान धर लोग हो । कहावत मने[2] बात हो आप यो ।।
अगर शेर[3] कोइ खूब कहकर जो लाय । तो खूबाँकूँ[4] सुन रश्क[5] अल्बत्ता[6] आय ।।
यक सकूँ सो यक[7] देख सकते नही । यकसकूँ यो यक मान रखते नही ।।
अगर खूब जो बोले जो तो वो अहै । अगर जो बुरा बोले तो यों अहै ।।
तबई तुँ ओ काम कर अख्तियार[8] । कि रहे ता कयामत[9] तेरा यादगार[10] ।।

(५) तानाशाह की प्रशस्ति†—

शह अबुलहसन सच तुँ शाहे दखिन । तुजे शाहराजू मदद बुल्हसन ।।
दिया है खुदा पादशाही तुझे । सोहाता है जल्ले-इलाही तुझे ।।
शहंशाह तू आज दिन सूर[11] है । तेरे परते शाहा बला दूर है ।।
मलाहत[12] मे ज्यों सूर चंदर है तूँ । सलाबत[13] मने ज्यों सिकन्दर है तूँ ।।
तेरा नामका कुत्ब[14] तारा दिसे । तेरा पर्दा मादी[15] फरारा दिसे ।।
दिलोजानते अपने ऐ बादशाह । यो आलम[16] कते[17] तुजकूँ आलमपनाह ।।
रतन है सखावत[18] की तू खानका । भिखारी है हातम तेरे कानका ।।
अदालत[19] में फ़ाजिल[20] है तूँ शहजवाँ । बराबर नही तेरे नौशेरवाँ ।।
तु मर्दी[21] के मैदान का बाघ है । तेरे घरमें दिन रात रंगराग है ।।
शहेश: तुँ राजा अहै छत्रपती । गगन तेरे दरबार का है हती ।।

(६) राजा को आशीर्वाद‡—

तेरे हाथमे शाह-जम[22] जाम[23] अछो[24] । हमेशा बगल[25] में दिलाराम[26] अछो ।।
जगतके शहाँ मे तुअ-च[27] नेकनाम । कि दुश्मन तेरा है सो बदनाम अछो ।।
चंदर-सूरके जाम ते आसमाँ । तुजे गुस्ल[28] करनेकुँ हम्माम[29] अछो ।।
अछो सब सलामत[30] अज़ीजा तेरे । जहाँ लग अदू[31] है सो गुमनाम अछो ।।

(७) कथारंभ‡‡—

रवायत[32] किया राविये[33] नेकनाम[34] । बहुत फिक्र[35] सों यो हिकायत[36] तमाम[37] ।।
अथा रूम के शह्र में बादशाह । .... ।।

---

*उ० श०, पृ० ११२।

१. कहता, २. कहानी में, ३. छन्द, ४. सुन्दरियों को, ५. ईर्ष्या, ६. जरूर, ७. एक को एक, ८. स्वीकार, ९. प्रलय, १०. स्मृति-कीर्त्ति।

† यु० द० म० पृ० ९७।

११. सूर्य, १२. लावण्य, १३. दृढ़ता, १४. ध्रुव, १५. सदा, १६. दुर्लभ, १७. कहते, १८. दानशीलता, १९. न्याय, २०. पूर्ण, २१. बहादुरी ।

‡उ. श, पृष्ठ ११२ ।

२२. जमशेद का, २३. प्याला, २४. रहो, २५. पार्श्व-क्रोड, २६. प्रेमिका, २७. तेरा ही, २८. स्नान, २९. स्नानशाला, ३०. सानंद, ३१. शत्रु।

‡‡यु० द० म०, पृ० ९४।

३२. कथा, ३३. कहनेवाला, ३४. सुनाम, ३५. चिंतन, ३६. कथा, ३७. समाप्त।

ओ शाह भीत मकबूल[1] आकिल[2] अया। सखी[3] होर फाजिल ओ कामिल अया॥
सवा लाखये उसकूं तुर्की गुलाम। जो अल्मास था रग उनका तमाम॥
जो हब्शी गुलामा सवा लाख थे। ओ नीलम की त्यो हुस्न[5] में पाक थे॥
अगर्चे ओ शाहे-जहांगीर[6] था। नहीं है कि फर्जन्द[7] दिल्गीर[8] था॥
इसी गमसो दिनरात रोता अछें[9]। ॥

(८) नख-शिख-वर्णन*—

(१)

अजब मीन पर उस लँबे बाल थे। भुजंग चान-सदल[10] पर रखवाल थे॥
जबीं[11] देख उसको छुपे आफताब[12]। ले मुख पर अपनके रचनका नकाब[13]॥
भवा पर उसीके नज़र कर हलाल। किया तनकूं लागिर[14] रचना नकाब॥
नयन देख आहू[15] परेशान हो। चमन-बीच नर्गिस हो हैरान हो॥
अजब उसकी आंखामें डोरे थे लाल। कि जिन नयन कारा बनाई जा चाल॥
दो गालां सफाकी[16] सना[17] की ना जाय। देखत आशना उसके रश्क[18] ल्याय॥
सियह खाल[19] नादिर[20] था उस गालपर। भँवर होके बैठा है गुलल्याल[21] पर॥
दो लब[22] आबे-हैवां[23] से लबरेज़[24] थे। किया शहद[25] शक्कर सो आमेज़[26] थे॥
अये दांत मुख बीच हीरे जडे। दहन[27] के सदफ[28] बीच मोती जडे॥
जहां वो खुशी साथ हँस बोलती। गुलां और मोतियां कई रोलती॥
सीनापर दो पिस्तान[29] अनार थे। यो दो कुजमुश्कीन[30] ताराज थे॥
शिकम[31] मौज-दरियाय-सीमाब[32] है। अगे नाफ[33] तिस बीच गर्दाब[34] है॥
चरन देख चंपा खिला बाग-बाग। वह रुप देख लाला हुआ दाग-दाग[35]॥

० ० ० ०

(२)

ओ जुल्फां[36] दिलोंके हिंडोले अहैं। गल्त मैं कया[37] दो सँपोले अहैं॥
भँवा वागनख होर आंखियां हरिन। कि ओ मोहनी है अजब मनहरन॥

---

१ बहुत पसंद, २ बुद्धिमान्, ३ दाता, ४ हीरा, ५ सौन्दर्य, ६ चक्रवर्ती राजा, ७ पुत्र, ८ दुखी, ९ रहे।

*उ श पृ० ११३।

१० चंदनशाखा, ११ ललाट, १२ सूर्य, १३ घूँघट, १४ कृश, १५ हरिण, १६ स्वच्छ, १७ प्रशंसा, उपमा, १८ ईर्ष्या, १९ तिल, २० दुर्लभ, २१ लालफूल, २२ अधर, २३ अमृत, २४ भरा, २५ मधु, २६ मिश्रित, २७ मुख, २८ मोती, २९ स्तन, ३० काले, ३१ उदर, ३२ पारद-समुद्र-तरंग, ३३ नाभि, ३४ भँवर, ३५ दागवाला, ३६ अलक, ३७ कहा।

ओ गालाँ की सुर्खी सो लालेमें नै । ओ बालाॅ की खुश्बोइ बालेमे नै ।।
दिसे फूल दो सेवतीके दो कान । चँपेकी कली नाक है दर्मियान ।।
अजायब[1] यो चाहे-जनख़दान[2] है । कि गर्क[3] उसमने दीन - ईमान है ।।
दो जोबन सो चोलीके दो हाथ में । जो अम्रीतफल छुप रहे पातमें ।।
अथा पेट जों आरसीनाद[4] साफ । कहूँ क्या झमकता अथा ज्यों शफ़ाफ़[5] ।।

(९) नायक-नायिका का प्रेमालाप *––

वहराम––हुआ मजनूँ बिरहते सुध गँवा मैं । अथा दाना[6] सो दीवाना[7] हुआ मैं ।।
तुझे दिलमें छुपाया हूँ अपसके । खराबेमें[8] लगाया हूँ दिवा मैं ।।
उचाया[9] हुँ तेरे ग़मके[10] पहाड़ाँ । अजब है नै सीना फटकार मुवा मैं ।।
सनम[11] तेरे बदल[12] होकर बरहमन । गलेमे अपने भाया[13] जानेवा[14] मैं ।।
मुझे क्या देखती अजमा[15] गुलन्दाम । पुराना हूँ नही आशिक़[16] नवा मैं ।।
गुलन्दाम––तुझे हासिल नही है विन गम । नको[17] कर गममे अपना पाॅव मुहकम[18] ।।
तेरा दिल हो गया फोड़ा दुखों ते । नही इस जख्मका मुॅज पास मरहम ।।
मेरे पावों पो सिर तेरा न अॅपड़े[19] । करे धनुकी नमन[20] गर तूकमर खम[21] ।।
कधाँ लग गम तु खायगा[22] बोल बारे[23] । मुॅजे तू छोड़ दे आज भौत खुर्रम ।।
न पायगा इस मनमें ते तूं मेवा । ... ... ।।

(१०) स्वदेश-प्रेम †––

जे कोइ याद करता न अपना वतन[24] । ओ मर्द है पेरन[25] असलका कफन ।।
अगर कोइ गुर्बत[26] मे शाही करे । अगर माल होर मिलक[27] लाखाँ धरे ।।
अपसकूँ देखे खोलकर जों अँखियाँ । देवे खाक[28] तनका वतन का निशान[29] ।।
वतन सबकूँ दुनिया में प्यारा अहै । सफ़र[30] है सो जो बादेबाराँ[31] अहै ।।

§२६. गुलामली (१६८० ई०)

गुलामली गोलकुंडा के अन्तिम कवियों मे से था, और अबुल्हसन कुतुब तानाशाह के समय में हुआ था। इसने जायसी की 'पद्मावत' का दक्खिनी में अनुवाद उसके किसी फारसी

---

१. अद्भुत, २. नाभि, ३. मज्जित, ४. ठुड्डी (ठोढ़ी), ५. आकाश की लालिमा, *उ०श०, पृ० २४६।

६. बुद्धिमान्, ७. पागल, ८. खंडहर मे, ९. उठाया, १०. दुःख के, ११. प्रियतमे, १२. तेरे लिए, १३. पाया, डाला, १४. जनेऊ, १५. परीक्षा ले, १६. प्रेमी, १७. नहीं, १८. दृढ़, १९. पहुँचे, २०. धनुष की तरह, २१. टेढ़ी, २२. खायेगा, २३. बाले।

†उ० श०, पृष्ठ २४६।

२४. घर, २५. परिधान, २६. परदेश, २७. सम्पत्ति, २८. मिट्टी, २९. पता, ३०. यात्रा, ३१. वर्षा की हवा।

भलाई सेती तूँ भला पायेगा। बुराई सो सिरपर वला[1] त्यायगा॥
होवे कोइ बुरा तु भलाई न छोड। बुरा बोल किसकूँ अपस-मू न तोड।

०   ०   ०   ०

गुलामली जिसमा दिल लाइये। बिछुडने मा बेहतर जो जिउ जाइये॥
कते[2] खून-दिलमा सो दिल लावना। ता एक तिलमने[3] ताडकर जावना॥
जनावर के जाने मे दुग्व पाइया। तो इन्सान-खतिर[4] न गम खाइया॥

§ २७ इश्रती (१६८२ ई०)

सैयद मुहम्मद खाँ 'इश्रती' के पिता सैयद युसुफ हुसेनी और पितामह सैयद हुसेन थे। सैयद युसुफ भाग्य-परीक्षा करने वसरा (मेसोपातामिया) से दक्खिन (बीजापुर) पहुँचे। इश्रती अभी १२ साल का ही था, कि उसके पिता का देहान्त हो गया, किन्तु वह पूज्य सैयद (मुसल्माना के ब्राह्मण) वंश की सन्तान था, इसलिए उसकी शिक्षा-दीक्षा में बाधा नहीं पड़ी। बीजापुर-दर्बार में इश्रती का काफी सम्मान हुआ। जब १६८६ ई० में बीजापुर को औरंगजेब ने अपने राज्य में मिला लिया, तब उसके दरबार में भी इश्रती की बहुत इज्जत हुई। इश्रती दक्खिन का अंतिम महाकवि है। उसका तरुण समकालीन वली औरंगाबादी तो दक्खिनी और उर्दू का सम्मिलित कवि था। इश्रती की कब्र हैदराबाद गाजीबंडा दरवाजा के बाहर शाहराजू हुसनी की समाधि के उत्तर मे है। इसके खान्दान के लोग अब भी हैदराबाद में मौजूद है।

इसकी कृतियों में 'चितलगन', 'दीपक-पतंग' और 'नेहदर्पन' अधिक महत्त्व रखती है, यहाँ उसकी कविता के नमूने दिये जाते है—

१ पुत्र वियोग में माता (दीपक-पतंग) *—

बेचारी हो रही तब बेचारी वा माई। बेचार्‌याँ नमन[5] वो कसू रो[6] हाय हाय॥
लहू घट ले भरके सीन्में खार[7]। कलीक[8] नमन दिल रखी नहूँ तलार[9]॥
चँदरघरके घनकी हटीली वो नार। निकल राजके गमसा आई वहार[10]॥
सुना मार सिर पीट के हाय-वाय। चँदर में पिरा हर अँजू[11] जल-हवाय[12]॥
कि 'ए गुल[13]' मुजे आग तुज बिन है बन। कि घर तुज मजन बिन दिसे ज्या सजन॥
जगत्तर[14] में तुजसा मेरा नाम है। कि तुज सूर[15] बिन दिन मेरा शाम है॥
तुमा[16] खाय हस्रत[17] मेरे लालाजार[18]। वगर तुज है मुंज सेज में फूल खार॥

---

१ आफत, २ कितने, ३ क्षण में, ४ मनुष्य के लिए।
*उ श, पृष्ठ २८२।
५ गरीब-से, ६ रोवे, ७ काँटा, ८ कुड्मल के, ९ नख-तलवार, १० बाहर, ११ आंसू, १२ नहाय, १३ फूल, १४ जगत्, १५ सूय, १६ तुझसे, १७ अफसोस, १८ फुलवाड़ी।

ए तुजसों मेरे हौज[1] मे नीर है । तेरे बाज[2] नित खाक[3] मुँज सीर है।।
ए तुजसों मेरा हासिल[4] हर मुद्दआ[5] । अगिन तुज बिना मुजकुँ बादेसबा[6]।।
तुसों बख्त[7] है जेर[8] मुज जोर[9] मे । है तुजवाज आराम मुज गोर[10] मे।।
ए तुज-शमाते बज्म[11] अनवार[12] है । बगैर तुज मेरे दिलमने नार[13] है।।
ए तुजसों है मुँजकुँ राज होर नियाज[14] । न तुज विन बगैरसोज दिसताहै साज।।
न हो बेकटर[15] सुट[16] के मुज दिलपो खार। जुदाई के पर्देका ना छोड़ तार।।
न कर बेवफ़ाई[17] वफ़ादार हो । मेरी देख जारी न बेजार[18] हो।।
हवस[19] इस सफ़रकी तुँ सुट दे एताल[20] । नही तो, ले चल मुजकुँ अपने दुँबाल[21] ।।
मुँजे जबह कर नै तो कै मूँद कर । अगर्चे न होय तन लहु बूँद भर।।
कया राज'' ए छँदभरी नाजनी[22] । डुबाया अर्जू-जलमे अब घर केती।।

—दीपक-पतग

२. प्रेम-पत्र*—

लिख्या दिलके लहू सों यो नामा[23] तुजे । जो तुज बिन दिस्या दिन क़यामत[24] मुजे।।
तेरी जुल्फ़े-मुश्की[25] की सौगंद है । खबेखब मे जिस जिवका एक बद है।।
कि जबते अँख्याँ लहू भर्‌याँ ना सबूर[26] । रह्या है तेरे मुखके फुलवनसो दूर।।
तधांते डुब्या लहु मे लाले नमन[27] । जो अजबस[28] सुटी लहुकी अँजुआँ[29] नमन।।
लग्या इस रविश बहने लहुका नई । कि गैरत[30] ले जाता है इस पर कही।।
पवन शाहिद[31] है होर सितारे गवाह । कि मुँज दिलकी तंगीपे कर यह निगाह।।
समज सच तु दो दिन के बिछड़ेका रोग । मुँज आशिक उपर जिन सुट्या[32] प्यास भूक।।
जो दिसता है सुरज अगिनका कुवाँ । है मेरे कलेजेकी आगका धुवाँ।।
पिरितकूँ खलल[33] क्या है इस बात सों । जो मुँज-दिलकी दर्पन में सो रातसो।।
सुट्या जानो तेरी पिरित[34] का खियाल । भी किस हुब[35] का नक्श[36] उसमे पड़ना महाल[37]।।
मुलुक-दिलका तुजसों च पाया है रुच[38] । किसीका हुकुम ना चले इसमे कुछ।।
तेरा विरह नै सर्सरी होर निबल । कि जावे मेरे सिरसो भी कें निकल।।
बिना आजिजी[39] नै जो आशिक़कुँ लाभ । तो अब वातकुँ ना वढ़ा बेहिसाव।।
न चूक्या जो उसकुँ भी चक है कि जान । पशेमाँ[40] हुँ मेरा उजर[41] टुक मान।।

---

१. कुंड, २. तेरे बिना, ३. मिट्टी, ४. प्राप्त, ५. अभीष्ट, ६. प्रातःसमीर, ७. भाग्य, ८. नीचा, ९. जबरदस्ती, १०. कब्र, ११. सभा, १२. प्रकाश, १३. आग, १४. कृपा, १५. क्रूर, १६. छोड़, १७. विश्वासघात, १८. आजिज, १९. लालच, २०. इस समय, २१. पीछे, २२. सुन्दरी।

*उ. श., पृष्ठ २८०।

२३. पत्र, २४. प्रलय, २५. काली अलके, २६. धैर्य, २७. लाला की भाँति, २८. अत्यन्त, २९. आँसू-सा, ३०. लज्जा, ३१. गवाह, ३२. फेंका, छोड़ा, ३३. वाधा, ३४. प्रेम, ३५. किसी के प्रेम, ३६. प्रतिविम्ब, ३७. असम्भव, ३८. कामना, ३९. नम्रता, ४०. लज्जित, ४१. प्रार्थना।

जवस की गता होर खुदी[1] का हरफ । नयनजल मो धोकर किया बरतरफ[2] ॥
भला है जो अब पढयो नामेकुं बेग । कि ज्यो पर पतिंगे लग हर्फांकुं बेग ॥
सपद[3] हो जने मुंज-अगिन मो नुकत[4] । धुआ[5] ऊद[6] का त्या निकलता फक़त ॥
चँदर त्यो यो सूरज सो ना मुख फिरा । न धर जीभ पर कुछ भला होर बुरा ॥
गिले होर झगडेकु मव छोड कर । सरोकद[7] अपसवा इधर मोड कर ॥
तमाशा मेरे चश्मके चश्मेका देख । कि क्याकर व्हता है तेरा बिरह मेंख ॥
तेरा मुख देखें मूरा अजुवाँ[8] मा धो । हुआ ताँत तन क्या निपट चे-हमो ॥
अगर मकडी मुंज तनपे जाला तने । मखी त्या मैं ना हिल सकूँ उसमने[9] ॥
जने चिमटी[10] मुंज बद-पावो ऊपर । छुटा ना सकूँ हिल अपन ठावना ॥
वचन बिन पराम मा मेरा तन एता । न पावे कधी कोइ ढूंडे जेता ॥
मेरी अडक हिलने बजुज[11] खाक[12] सा । न कोइ फाम[13] सकता है इदराक[14] सा ॥
इलाही नरम कर तूं वह सगदिल[15] । देवे मोमियाई[16] मया[17] की वो मिल ॥
भर उसके गमेकी अगिन की बला । कि जाली है जिन मेरे जिवका घुला ॥
बुवा वस्ल[18] का जल छिनक[19] आसपास । बजुज इसके नै कूछ मुंज दिलका आस ॥
कलम दो जबाँ हाय घावा मेती । मू उसका मेरे दुखकी आहाँ सेती ॥
हुआ काला ज्यो तेरी मुश्की अलक । नो यो दुख अंगे लग सबे वाँ तलक ॥

—चिनलगन

३ सहेलियो द्वारा स्नान-निमंत्रण*—

अवल सब जत्याँ जाके पद्मिनके घिर[21] । अदब[22] सो रख्या उसके पावा पो सिर ॥
जोवनके मेहर[23] मा थीं मनमें उमग । दस्या जोशदिल का जवानी तरँग ॥
क्या "तुजते ऐ शहपरी[24] नेकनाम । सिक्या हँस चलन होर मनोहर क़याम[25] ॥
यो दो दिनकी दुनियामें दुख सब बिसार । अनँद करले सुट[26] फिक्र गमते बहार[27] ॥
कि कल परसा की जाम चुप हवस । खुशी जग में हमना यही दम है बस ॥
किसे क्या खबर है कि यो आसमाँ । रच्या क्या है पर्दे मे बाजी[28] निहा[29] ॥
हो गमते मुक्त कर लेवें कुछ आज । सुवाक्नि देख्या है घरे रच आज ॥
सुवा सासुरे जायगी नेह जाड । चले सब सगे होर मा-बाप छोड ॥
हमें तो पिछे गममें रहन च है । बदल गुल्के[31] सो खार[32] खाना च[33] है ॥

---

१ अभिमान, २ अलग, ३ एक धूप, ४ बिंदु, ५ धूपका धुआँ, ६ अगर, ७ सरो-सा सीधा शरीरवाला, ८ आँसू, ९ उसमें, १० चींटी, ११ सिवाय, १२ मिट्टी, १३ समझ, १४ दर्यापत, १५ कठोरदिल, १६ मोम-सी, १७ माया, १८ मिलन, १९ छिडक, २० काली।

*उ न, पृष्ठ २८४।

२१ पद्मिनी के पास, २२ सम्मान-सहित, २३ यौवन की कृपा, २४ परियो की रानी, २५ ठहरना, २६ छोड, २७ बाहर, २८ खेल, २९ छिपा, ३० कामना, सुख, ३१ फूल के, ३२ काँटा, ३३ खाना हो।

वह अछ वल चंचल नार सुध ज्ञान धर । सहेलियों की सुन वो वचन कान धर ।।
नजाकत[1] सों दिल नैनका नीर कर । कदम सर्व का चखपो पानी के धर ।।
सुरजके नमन[2] जलमें डूब गहपरी । सदफ त्यो[3] च जल्द मोतियाँ सो भरी ।।
डुव्याँ जलमे कमके सकल हूरजाद[4] । हुयाँ शाद[5] पायाँ जो अपनी मुराद ।।
डुब उस हौजमे शौक सो खेल्तियाँ । अगिन तनपो पानी टॅडा मेल्तियाँ[6] ।।
कलूलाॅ उचा जल यकस यक पो मेल[7] । अपस-दिलकी अतिश पो सुट्ट्याँ थ्याँ तेल ।।
—दीपक-पतंग

४. विवाह-भोज*—

बिछाये चाँदनीका फ़र्श निर्मल । कि जैसा चाँदनी म्याने सफ़ा जल ।।
बिछाये सुजनियाँ जरबाफ़[8] के साफ़ । है उस गुलपर सुरज बुल्बुलकु इन्साफ ।।
रुपेरी और सुनेरी मस्नदाँ पर । सदरमुहरी[9] रखे ज्यों सूर-चंदर ।।
अथे बरदार तकिये बर्नियाँ बाफ़[10] । परयाँके गाल जैसे नाजुक[11] होर साफ ।।
सुरँग असमानगीर्याँ थी शफ़क[12] सी । अथे गुलदार[13] ज्यों घनके तबक़[14] सी ।
लताफ़त[15] का हुआ गुलशन वो मंदिर । दिवारगिरियाँके खीचे बाड़ ज्यों फिर ।।
रखे फूलाॅ सो भर उस ठार गुलदान[16] । रखे थे पान सेती भर तँबूलदान ।।
जडितके शमादाँमें शमा[17] का नूर[18] । नवे चँद त्यो लगनमे धनके पुरनूर ।।
महाफ़ी[19] थे चिरागाँ सात पुरनूर । दिसे थे नयनमें हो रैन के सूर ।।
कँदीलाँके देखत झोंके सोहाने । अँगूराँके झड़े खुशियाँके दाने ।।
दीव्याँसों कटघराॅ ऐसे सँवारे । कि ज्यों कौसेकजा म्याने[20] सितारे ।।
दिसे हौजाँ मे उड़ते सो फँवारे । मुकट माकाँसों बाल्याँ[21] कूँ सँवारे ।।
जो आ याकूत[22] की प्याल्याॅ मे घाले । सुरॅग रँग सों दिसे मानद लाले ।।
तवक बिल्लोर[23] की खुश्बूय सो भर । हजाराॅ चाँद थे ज्यों भुइँके ऊपर ।।
दिये थे मंडपाॅ चौबेर[24] यों रात । कि घन उस चहल ज्यो बादल किया भात ।।
क़मरका[25] दौर जो दिसनेमे ना आये । वह प्याले बदर[26] से भर-भर को दिखाये ।।
हरीफ़ाँ[27] झेलते जो जाम अधन तर । करै चौगान बाजी ज्यो हवा पर ।।
हवस[28] के जो तुरॅगकूँ खूब दौड़ाये । गरम हो लालकर मूं-खूय[29] भर लाये ।।
दिसे रुख[30] लाल पर बुंद-खुय[31] के सारे । शफक़[32] है चाँदपर तिसपर सितारे ।।

---

१. कोमलता, २. सूरज-समान, ३. सीप-सी। ४. अप्सरा-पुत्र, ५. प्रसन्न, ६. डालतीं, ७. डाल,

*उ.श., पृष्ठ २८६, नेहदर्पन ।

८. सोने की बुनी, ९. गिलाफ, १० बरनी के बुने, ११. कोमल, १२. आकाश-चुम्बी लाली, १३. फूलदार, १४. थाल, १५. लालित्य, १६. फूलदान, १७. मोमबत्ती, १८. प्रकाश, १९. बलते, २०. इन्द्रधनु में, २१. बालों, २२. लाल, २३. स्फटिक, २४. चारों ओर, २५. चाँद का, २६. पूर्ण चन्द्र, २७. शत्रु, २८. लाभ-लालसा, २९. रोम में पसीना, ३०. मुख, ३१. पसीने की बूंद, ३२. आकाशी लालिमा।

हुई जब मैं[1] सो दिलकूं शादमानी[2] । तमाशेकी मँगे दिल कामरानी[3] ।।
शबद शीरी सेती होवे बहुत सुख । परीरुख[4] दिलरुबा[5] मो होड भँजन सुख ।।
तरबसाजी[6] के मुतरिब[7] ताँ लगाये । बहुत कुछ खूब गाये होर बजाये ।।
उनन-आवाज़ के गोले[8] पे रख दिल । पतग होइ घनपी जोहरा[9] बनमें कोयल ।।
बुलद आवाज पर उनके रख्या ध्यान । चँदर हार सूरमो धाके खुले कान ।।
बजतर ता पडाँ जब नाचने आये । आजायब[10] दिलरबाई के गताँ लाये ।।
वो जुल्फाँ मुख उपर अपने जो खोले । ये दिल उश्शाक[11] के डसने मँपोले ।।
नयन मटकाई जो हरयक मदनमस्त । सितारे घनते उस देखत हुये पस्त ।।
उचल गरदान[12] कर जब भाव बतलाय । तलबदारा[13] के दिल चादी दे ले जाय ।।
छबेल्याँ छतसेती जब चर्ख में आये । भँवर तिस झल मो गोते जलमें खाये ।।
ढलकत्याँ रकस[14] में आकर सलब[15] जायें । गताँ सीमाब[16] के छदों मा दिखलायें ।।
करयाँ रक्काम[17] हा आशिक दिलेबाग[18] । धरयाँ मोराँ के तनपर रश्क[19] का दाग ।।
तमाशा देख जब नैनाँ अघाये । कँदूरी[20] बार[21] कर खाना खिलाये ।।
जो कुछ खाने की होवे चीज बेहतर । चुनी थी सब चतुर-ज्ञानी-विचित्तर ।।
रिकाब्याँ भर रखे थे सो कबूली । तबीयत[22] ने उस अव्वल[23] कबूली[24] ।।
तसजन[25] का अया ले खूब महकार[26] । खुल्या था बनमें गोया हारसिंगार[27] ।।
जो जिनन्याँ नीच खुश्का[28] साफ भरलाय । है गुलचाँनी वो अवली[29] का कह्या जाय ।।
मसलादार खिजडी थी सोहानी । खिली दिल देख तिस रँग जाफरानी ।।
थी नाना बोच किसमीसी जरूमी[30] । बरज मेहमान के तै दस्तबोसी[31] ।।
खुल्या था मू हरेक बर्की[32] मँबोसा[33] । देवन मेहमानके लबताईं बोसा[34] ।।
कबाबाँ मो हई मद्दे-मुकाबिल[35] । करन यो बहस[36] जो है कौन फाजिल[37] ।।
सुलह कारन[38] उनन सीने पो रख हात । मलाई मूंमें मेहमानाँ कर यक बात ।।
रख रगीन कलई[39] नादिर[40] हैं डार । अचाराँ होर मुरब्बे ले मजादार ।।
दिसें यो तैरते घिउमें चुकदर । बचे सुरखाब[41] के ज्या नीर-अन्दर ।।
सफाई सो करम[42] रखते करामात[43] । उननकी गर्मजोशी[44] थी हरेक साथ ।।

---

१ मदिरा, २ प्रसन्नता, ३ सफलता, ४ अप्सरामुखी, ५ मनोहर, ६ सगीत, ७ गायक, ८ ज्वाला, ९ बृहस्पति, १० अद्‌भुत, ११ प्रेमी, १२ वुहराना, १३ इच्छुको, १४ नृत्य, १५ सबद्ध, १६ पारे, १७ नर्त्तकी, १८ हृदयोद्यान, १९ ईर्ष्या, २० पक्वान्न, २१ बाहर, फैला, २२ मन, २३ प्रथम, २४ स्वीकारा, २५ एक भोजन, २६ सुगन्धित, २७ हरसिंगार, २८ सूखा भात, २९ एक भोजन, ३० दुलहावाली, ३१ हस्तचुम्बन, ३२ पन्नीवाला, ३३ समोसा, ३४ चुम्बन, ३५ सामने, ३६ विवाद, ३७ पडित, ३८ के लिए, ३९ राँगे के, ४० दुर्लभ, ४१ जलपक्षी, हस, ४२ दया, ४३ चमत्कार, ४४ सोत्साह ।

कदूकी हुइ थी गर्दन-फ़राजी[1]। न थी रग़बत[2] कुँ उसते बेनियाजी[3]॥
करेली होर चँचोड़ी[4] जो रखे ला। कँदूरी[5] का हुआ सर-सब्ज[6] मँडवा॥
दिस्या खुशरग नजराँ तल[7] निचला। जल इस झल[8] सों हुआ रैहान[9] काला॥
देखत तिस सब्ज[10] रंग महबूब जाना[11]। हुआ मेथी उपर दोना दिवाना॥
कली दिलकी गिरह कुफ्त्याँ[12] ने खोले। अँगूराँ खाय तिस झल[13] के ग़लोले॥
जो प्याला दालका सफ़रे[14] पो आया। सँदल[15] तिस-रश्क[16] सों अपसो घिसाया॥
चमन[17] न्यामत[18] के ऐसे देख सुथरे। जनावर सीख[19] के झाड्याँ सों उतरे॥
दराजाँ मस्त थे अपनी सदा[20] सों। न थी सुध जों फकड लेते उनन कूँ॥
बटेराँ, बुल्बुलाँ, सफ़रा[21] था.....। थे कलई नर्गिसी उनतें नशेमन[22]॥
रिकाब्याँ हौजखाने[23] घीव ज्यों नीर। लवे, मुर्गावियाँ[24] त्यों उसमें रह तै॥
कवाबाँ मुर्ग के याकूत[25] के रग। हुआ ताजे-खरुस उन-रंगपर दगाँर॥
थे मोतीचूर लड्वाँके अंबाराँ। उनन रश्को सों लहु घोंटते अनाराँ॥
शकरपारे नज़ाकत[26] सों संवारे। थे सुँदर[27] के अधर-शीरी[28] ते प्यारे॥
जलेब्याँ के निछल शीरीपो रख आँख। झजरसे पट्टियाँके शहद[29] रहे झाँक॥
न कूजे क़न्द[30] के थे साफ कन्दील। बनाये चाँदके बिल्लोर[31] सों झील[32]॥
देखत फिरनी की प्याली धीर चंदर। गले ज्यों यख[33] न हो सक उस बरावर॥
जो कोइ देख्या है वो फालूदा रँगदार। नज़र उसकी ँगा रँग होय गुलजार[34]॥
कर ऐसी धात[35] के न्यामत मुहैया। बैठाये मेहमाँ ताईं[36] ले आ आ॥
कँदूरी के सफ़ा[37] मैदाँमें जब आय। तुरँगकूँ इश्तहा के अस्त्र बतलाय॥
मलीदे की कधी टेकाँ पो लाये। कभी हलवेके दल-दलमें फँसाये॥
अडाई जिभ-नमन पंखेकी दे झाल। पड्या तिस पगमने सेवियाँ केरा जाल॥
लगा सिरके की उसकूँ तेज महमेज[38]। चलायेबाँते कर बेगी जिलव-रेज[39]॥
वो फुलवनका करे सब[40] सैर यकबार। लिये चुनक रजो कुछ था उनकुँ दरकार॥
मजअफ़र के लिये थे जो नवाले[41]। दिसें सदवर्ग[42] के फूलाँमें आले॥
मिलाकर दालकूँ खुश्के[43] के संगात। करे रबड़ी गुलव्वासी[44] अपस हाथ॥
जो थे खुशरंग[45] ज्यों याकूत-दाने[46]। गुले औरंग[47] कर कुफ्त्याँकुँ जाने॥

---

१. सिर उठाना, २. रुचि, ३. बेमुरौवती, ४. चिंचिडा, ५. पक्वान्न, ६. हरा, ७. आँखों में, ८. चमक, ९. बालंगू, १०. हरा, ११. प्राणप्रिय, १२. कुफ्ता, १३. चमक, १४. आहार-विहार, १५. चंदन, १६. तिसकी ईर्ष्या, १७. फुलवाड़ी, १८. सुभोग, १९. कबाब की सीख, २०. शब्द, २१. दस्तरखान, २२. घोंसला, २३. कुंडगृह, २४. पनचिरई, लाल, २५. कुक्कुट, शिखंड, २६. कोमलताएँ, २७. सुन्दरियों, २८. मधुर ओठ, २९. मधु, ३०. मिसरी के कूजे, ३१. स्फटिक, ३२. पिघला, ३३. कृत्तिका (तारे), ३४. फुलवाड़ी, ३५. भाँति, ३६. एकत्रित, ३७. दस्तरखान, ३८. गंध, ३९. प्रकाश-प्रसार, ४०. केसरिया चावल, ४१. ग्रास, ४२. शतपत्र (गेंदा) ४३. फीके चावल, ४४. एक मिठाई, ४५. सुन्दर रंग, ४६. लाल के दाने, ४७. एक भोजन।

कमाँचाँ जिसके हाया बीच आये । गुले-चदर के नमने[1] वो सोहाये ॥
कबाबाँ आतिशी-गुल[2] के सों भित्तर । लिये दूर इश्तहा[3] का उनसेती भर ॥
गरज जिसकूँ हुआ जिम धात[4] रगबत[5] । मिले वैसे च वाँ उसताईं न्यामत ॥
मिठे खाने के जो मैं वस्फ[6] बोलूँ । कलमसेती झडी शर्बतकी खोलूँ ॥
जा खारे[7] की सिफत[8] का मैं करूँ काम । सलोन्याँ[9] मुजसेती लेवें नमक-दाम[10] ॥
कँदूरी खच कर जब सब अयाने । लगे हर एक्के हाया धुलाने ॥
धुलाकर हाथ दी उनताईं ले मान[11] । दिये ज्जतसेती हर एक कूँ पान ॥

—नेहदपन

५ युद्धक्षेत्र*—

तबल बजते थे होर नरसिंग पुरगम[12] । दमामे हर यवन बजते थे धम-धम ॥
घत्तर[13] होवें तलक दोघेर[14] के रनसूर । उबलते थे गजब[15] सा ज्यो कि समदूर[16] ॥
अथे यो मुन्तजिर[17] जो होन घत्तर । निकाले म्यान मो कीने[18] का खजर ॥
खडग ले हाथ म्याने[19] एक बारा । करें जौहर[20] अपसका आशिकारा[21] ॥
बडे हर हाल वो आखिर हुई रैन । छिप्या कोने में जा आराम होर चैन ॥
दिखाया सूर अपस खजर का झलकाट । सितार्‌यो का सकल लश्कर[22] गया न्हाट[23] ॥
हुये दोघेर[24] सेती मुस्तैद[25] दो दल । दिसें ज्यो भुइ पो प्हाडहोर घन[26] पो बादल ॥
दिलेराँ[27] ने सफा[28] आरास्ता कर । दिये थे मर्दुमी[29] की दाद[30] यकसर[31] ॥
पडे हरतन उपर वारा[32] सेती गार[33] । बदल पानीके निकल्या ल्होका अगार ॥
लगा छानीसो छानी होके गल[34] जोड । सुटे[35] सिर होर सीना हाथ-पग तोड ॥
करें गुरजाँ[36] के ऐसे घात[37] सों मार । पडे थे धरति कूँ पाताल लगगार[38] ॥
जिरहपोशाँ[39] पडे हो रनमें पामाल । पडे ज्यो मीन भुईं उपराल बेहाल ॥
कर्‌या यो फोड हरयक हाथ का तीर । कि चूम्या हात हर एकस का रहगीर[40] ॥
धनुख जब खींचता हर यक कमाँदार[41] । चला कहता जेहा-जेह[42] उसकूँ सौ बार ॥
दिसें या पाखराँ[43] सा हस्तिका दल । कि जैसा नीर भर बादल दिया चल ॥
दिसे जख्म्याँ का अक्स[44] उसमें रक्तसो । दिखाया ज्यो शफक[45] बादलमने[46] मू ॥
लडे दिलसोज[47] गिर-पड होके इस धात । दिवायाँ कूँ हुआ जैसा कि सनपात[48] ॥

---

१ चद्र-पुष्प की भाति, २ अग्नि-पुष्प, ३ भूख, ४ प्रकार ५ पसदी, ६ गुण, ७ नमकीन, ८ गुण, ९ सलोनियाँ, १० नमक का मोल, ११ सम्मान।

*उ श ,पृष्ठ २८५।

१२ करुणापूर्वक, १३ प्रात , १४ दोनो ओर, १५ क्रोध, १६ समुद्र, १७ प्रतीक्षा में, १८ डाह, १९ हाथ में, २० गुण, २१ प्रकट, २२ सेना, २३ भाग, २४ दो तरफ, २५ तैयार, २६ आकाश, २७ वीर, २८ पक्तियाँ, २९ बहादुरी, ३० प्रमाण, ३१ अकेले, ३२ प्रहारो, ३३ घाव, दरार, ३४. गले, ३५ फेंके, ३६ गदाएँ, ३७ ढग, प्रकार, ३८ दरार, गुहा, ३९ कवचधारी, ४०. राही, ४१ धनुर्धर, ४२ शाबाश, ४३ ढाल, ४४ छाया, ४५ आकाश की लाली, ४६ बादल में, ४७ दिल जलाते ४८ सन्निपात।

§२७. जईफ़ी (१६८९ ई०)

शेख दाऊद 'जईफ़ी' गोलकुडा के अन्तिम दिनों का कवि है। इसके दो पद्य-ग्रथ 'हिदायात हिंदी' १६८९ ई० (११०० हि०) और 'इश्क-सादिक' (मस्नवी) उपलभ्य हैं, जिन पर कविता से अधिक धार्मिकता की छाप है। इन ग्रंथों के लिखते समय दक्खिन के मुसलमानी राज्य मुगल-साम्राज्य में हजम हो चुके थे। ३६३८ शेरों की पुस्तक 'हिदायात-हिंदी' के अन्त मे जईफ़ी लिखता है—

यह दौरे[1] जहाँदार[2] औरंगजेब । कि जिसते हुआ इस जमाने को जेब[3]॥
शहंशाह आदिल[4] अहै दर-अमूर[5] । कि वद्अत[6] जलालत[7] हुआ जिसते दूर॥
दिया हक-तआला[8] ने यो जिसकू जस । जो दुश्मन हुआ उस-अँगे ख्वारो-खस[9]॥
धरया सिरपो जो पन शहीफा वो ताज[10] । दिली होर दखिन का हुआ एक राज॥
अजब[11] फ़तहो-नस्रत[12] है उसके सँगात । जो कोइ नै किया उससों दावा की बात॥
कि शाहाँ भी अव्वल[13] हुये है तो क्या । न कोइ जोहदो-तक़बा[14] में ऐसा दिसा॥
अहै उसमने[15] भी वली[16] की सिफ़ात[17] । कि हो आये जो मूँसों काढ़े सो बात॥
बड़ा दीन-इस्लाम[18] का कारसाज[19] । इलाही तुँ कर उम्र उसकी दराज॥

और पुस्तक की समाप्ति २२ सितम्बर, १६८९, बृहस्पतिवार को हुई—

ग़रज[20] उस जमानेमने[21] शाहके । मसायल[22] किया दीनके राहके॥
जो तारीख हिज्रत हजार एक सौ (११००) । 'हिदायात हिन्दी' हुआ यो तोवीच॥
इग्यारा सो उसमे भरे थे तमाम । उसी बीच तम्मत[23] का देख्या मुकाम॥
सदी बारवी का लग्या था बरस । उसी बीच बाजा यो दखिनी जरस[24]॥
बलेकिन[25] शाहंशाह दह्र[26] में । मुबारक[27] ओ जुल्हज्जके शह्र[28] में॥
अथी सात तारीख दिन मुश्तरी[29] । यो नुस्खा[30] मुरत्तब हुआ खुश्तरी[31]॥

इस प्रकार ज़ईफ़ी ने ११०० हिज्री (१६८८ ई०) मे इस पुस्तक को लिखना आरम्भ किया, और ७ जिल्हजा, ११०१ हि० बृहस्पति के दिन समाप्त किया, (किन्तु ११ सितम्बर, १६९० ई० को बृहस्पति नही, सोमवार था)।

अपने और पुस्तक के बारे मे जईफ़ी ने लिखा है—

मसायल[32] यो फ़िक़्हाँ[33] के असनाद[34] सों । निकाले किया पढ़के उस्ताद सों॥
कि अकसर जबाँ हिन्दकी इस तरफ । लगे खुश जो प ते है दखिनी हरफ[35]॥

---

१. युग, काल, २. चक्रवर्त्ती, ३. शोभा, ४. न्यायी, ५. काम में, ६. कुधर्म, ७. पथभ्रष्ट, ८. भगवान्, महासत्य, ९. तबाह-बर्बाद, १० मुकुट, ११. अद्भुत, १२. विजय, १३. पहिले, १४ संयम-नियम, १५. उसमें, १६. सन्त, १७. गुण, १८. इस्लाम-धर्म, १९. काम करनेवाला, २०. अथ, निदान, २१. समय में, २२. विषय, बातें, २३. समाप्ति, २४. घंटा, २५. लेकिन, २६. समय, २७. शुभ, २८. अरबी, बारहवाँ महीना, २९. बृहस्पति, ३०. पुस्तक, ३१. अधिक अच्छा, ३२. विषय, ३३. अर्थशास्त्र, ३४. प्रमाण, ३५. दक्खिनी भाषा।

इसी वास्ते हदिया[1] यो हिंद कूं। जो ल्याया दखिन मालके सन्द सों॥
हिदायात-हिन्दी फिकर इसका नाव। रख्या हार ल्याया हूँ हिंदियाँ के ठाँव॥
कि हिन्दी केरे हैं हिदायात में पो। ॥
शिफाआत[2] रवैयत का जो काज है। जईफी इसींका च[3] मुहताज है॥
यही इहतियाज[4] अपने दिलमें पकड। पिरोया हूँ मैं इस ग्रिमाऊ[5] की लड॥
लकब उस हुआ शेख दाऊद नाँव। जईफी है उसके तखल्लुस[7] का ठाँव॥
अरबीमें होर फारसीमें। केतेक मसायल जरूर लिख्या देख-देख॥
अरब होर अजम[8] का सखुन[9] पाइया। सो दखिन्याँ कूं दखिनी सों समझाइया॥

० ० ० ०

हिदायात-हिन्दी का यो सब कलाम[10]। बयाँवार बोलूँ अँगे भी तमाम॥
हजार तीन पर ही अठह (३०१८) हिंदी बैत[11]। कि इसमें-मलूक[12] होर शरीअत[13]-समेत॥
मुरत्तब[14] करे जब यो नुस्खा तमाम। दुआ मथिये शेख दाउद नाम॥
छमा के उपर बीस बतियाँ नबी। जा मकसूद[15] कै कै न था सो हुई॥

मस्नवी 'इश्के-सादिक' (सच्चा प्रेम) में इस्लाम के पैगम्बर मुहम्मद पर एक अरब स्त्री के सच्चे प्रेम की कथा कही गई है, कहने का ढग कुछ रूखा-सूखा सा है, जैसे*—

जया सुन कहूँ नकल[16] उस नारका। जो सगवेत-कदम[17] नार-अवतार[18] का॥
सुन्या हूँ नबी (के) जमानेमें एक। अया जा मुसल्माँ कोई मर्द नेक॥
नवा आ नबीके सो इस्लाममें। अया नेक नेकी केरे काममें॥
सा बख्ता[19] सा होय देख यारी[20] उसे। मिली एक अजब नेक नारी उसे॥
निछल पाक-पैकर[21] परी-सारखी। परी बल्कि अच्छी न उस सारखी॥

§२८ मुहम्मद अमीन (१६९७ ई०)

यह भी गोल्कुडा के अन्तिम समय में पैदा हुआ। इसने अपने काव्य 'युसुफ-जुलेखा' को औरगजेब के शासन-काल १६९७ ई० (११०९ हि०) में समाप्त किया। युसुफ-जुलेखा भारतीय और भारत से बाहर के भी बहुत-से मुस्लिम कवियो के काव्य का विषय रहा है। भारत में सर्व-प्रथम खुसो देहलवी ने अपना काव्य 'युसुफ जुलेखा' लिखा। सभवत अमीन ने उसी के आधार पर अपना काव्य रचा। पुस्तक की समाप्ति के बारे में कवि ने लिखा है—

---

१ भेंट, २ सिफारिश, ३ इसी का हो, ४ ध्यान, ५ पुस्तक, ६ पदवी, ७ उपनाम, ८ अरब भिन्न (ईरान) देश, ९ वाणी, साहित्य, १०. वाणी, साहित्य, ११ हिन्दी-छद, १२ बर्त्ताव की विद्या, १३ इस्लामी धर्मशास्त्र, १४ तैयार, १५ अभिप्राय।

*यु द म, पृष्ठ २३५।

१६ कहीं-कहीं, १७ दृढ पग, १८ अद्वितीय नारी, १९ भाग्य, २० दोस्ती, २१ पवित्र शरीर की।

यु द म, पृष्ठ २३८।

इग्यारा सौ उपर जब नौ गुजरे (११०९)। बरस हिज्रते मुहम्मद मुस्तफ़ा के।।
वना चालीस सौ फिर चारद और सौ (४११४)। मैं लिक्खा गौधरी के बीच सुन लो।।
जमादील अवलमें इतवारके रोज। अथी तारीख दूजी दे दिल-अफ़रोज।।

जमीदिउल्-अव्वल ११०९ हिजरी को १७ नवम्बर, १६९७ तारीख और रविवार का दिन था, जबकि यह पुस्तक समाप्त हुई।

अमीन ने अपने ग्रथ की भाषा गोधरी या गूजरी लिखी है, जिसका अर्थ यही है, कि गुजरात मे भी बहुत-से मुसलमान-परिवार थे, जिनकी भाषा हिन्दी थी और जिस तरह दक्खिनी मुसल्मान अपनी हिन्दी को दखिनी कहते थे, उसी तरह गुजराती मुसल्मान उसे गूजरी कहते थे। अमीन ने लिखा है—

आरम्भ में*—

अवल तारीफ़[1] सुन खालिक़[2] की ऐ यार। कि वह दोनों जग का है करनहार।।
सुनो मत्लब[3] रही अब यो अमीका। लिखे गूजरि मने[4] युसुफ-जुलीखा।।

अन्त में†—

जमाने शाह औरगजेब के में। लिखी युसुफ-जुलेखा कूँ अमी मैं।।
इलाही[5] तूँ ऐसा आदिल[6] शहशाह। रखे जब लग रहे कायम मेहर-माह[7]।।
अमी ने गूजरी की सो यों कर। कि अपने तैं रहे दुनियाँ के भीतर।।
वजूदी[8] है सो हो जायेगा खाक[9]। नही पावे सो धौदा जीवन पाक।।
निशानी तब रहेगी ए सखुन[10] है। जो कुछ बोला अमी मीठी वचन रे।।
अमी कूँ है उमीद इतनी ऐ यारो। पढ़ो सो फ़ातिहा[11] सो ना विसारो।।
बरक्कत तो तुमारीसों खलासी[12]। कछु पावे अमी बेचारा आसी[13]।।

(क) जुलेखा का प्रेम‡—

देखी सूरत अजीजे-मिस्र[14] की जब। पड़ी धरती उपर पिछडाय[15] कर तब।।
कि वावेला कि वावेला[16] कर दाई। बखत[17] रबने मेरे औधे लिखाई।।
वे तो कुछ और था एतो है कुछ और। एतो दुश्मन रहे उस दोस्तके ठौर।।
हमे वे कब मिले गम मुझ नयन दरस। अरे है-हात[18] और अफसोस अफसोस।।
हमे क्योंकर मिलेगा मुजसों बे शाह। हजार अफसोस और सद[19] आह सद आह।।
गया वह गंज[20] और यह रह गया साँप। (कि) सूरत देख चढ़ी मुँज धोज और काँप।।

*यु० द० म०, पृ० ३३९।

१. प्रशंसा, २. स्रष्टा, ३. अभिप्राय, ४. गुजराती में।

† वही, पृष्ठ ३४१।

५. भगवान्, ६. न्यायी, ७. सूर्य-चाँद, ८. होनेवाला, ९. मिट्टी, १०. वाणी, ११. कुरान का एक सूक्त, १२. मुक्ति, १३. पापी।

‡ वही, पृष्ठ ३४०-४२।

१४. मिस्र का मन्त्री, १५. पछाड़ खा, १६. हल्ला, १७. भाग्य, १८. हाय-हाय, १९. सौ (शत), २०. खजाना।

जुलेखा की हकीकत[1] अब सुनावे। जुलेखा फिरके युसुफ कौन पावे॥
जुलेखा बेखबर[2] फिरती रती थी। इशक[3] का घाव वो ऊपर सती[4] थी॥
कधू[5] घरमें कधू जगलमें जाती। वे मेहनत[6] के दिनों को या गँवाती॥
गई थी एक दिन जाल के भीतर। चली थी उस जगे सो आपने घर॥
अया जब राह युसुफ का बाजार। जुलेखा ने सुया तब शोर बसियार॥
लगी पूछन कि "ए क्या शोर है रे। कहाँ मुंझ क्या ऐ दौरा दौर[7] है रे॥"
जुलेखा ने सो तब पर्दा उठाकर। सूरत[8] युसुफकी नजरो बीच ल्याकर॥
पिछाना है वही दिलयार जानी। कि जिस कारन हुँ फिरती थी दिवानी॥
युसुफ (का) देखकर रोई पुकारी। पडी हो बेखबर कर करके जारी[9]॥
सवारीकू शताबी[10] लेके भागे। जुलेखाकूँ ले आये घरके आगे॥
उतारे घरमने[11] जब हुइ खबरदार[12]। पूछी तब दाईने उसको गुफ्तार॥
"तेरी फिर अक्ल और सुध का[13] गई थी। ऐसी तूं बेखबर क्यु हो रही थी॥"
कहा तब "वो गुलाम है यार मेरा। उसी ऊपर हैं दिलका प्यार मेरा॥

§ २९ वज्दी (१७०३ ई०)

शेख वर्जीहुद्दीन 'वज्दी' करनूल के निवासी औरंगजेब के अन्तिम समय का कवि था। इसने तीन कथा-काव्य (मस्नवियाँ) लिखी—'तोहफये-आशिकाँ' (१७०३ ई०), 'बागे-जा-फ़ेजा' (१७३२ प्रमोद-उद्यान) और 'पछीनामा' या 'पछीबाचा' (१७३२)। इनमें पहिले और तीसरी प्रसिद्ध सूफी सन्त फरीदुद्दीन अत्तार की फारसी मस्नवियों के अनुवाद हैं। वज्दी का दीवान (कविता-संग्रह) भी सुना जाता है। इनके कुछ पद्य इस प्रकार हैं*—

चचलका आज विछुडा[14] मुज उपर भागी हुआ याराँ।
तो मैं इस दो जगतसेती निराधारी हुआ याराँ॥
हमारी बुत-परस्ती[15] कू नही समझे अजूँ[16] जाहिद[17]।
बराये-कुफ्र सत दी कू तु पुजारी हुआ याराँ॥
नको[18] कह वज्दिया अपन्याँ निपट शब-वस्ल[19]—क्याँ वाताँ।
कते हैं लोग सब तुजकूँ कि जुन्नारी[20] हुआ याराँ॥

० ० ० ०

गई है उम्र सब मेरी सदा सूरत-परस्ती में[21]।
सुद्या है हुस्न[22] का मद मुज सो हुशियारी[23] ते मस्ती में॥
निकल जा वज्दिया शेखीके शेव्याँ[24] के झज[25] सेती।
अगर मकसूद-खुद[26] हासिल[27] किया हैं बुत-परस्ती मे॥

१ दशा, २ बेहोश, ३ प्रेम, ४ सहती, ५ कभी, ६. परिश्रम, ७ दौड़ा-दौड़ी, ८. रूप, ९ रोदन, १० जल्दी, ११ घर में, १२ होश में, १३ कहाँ।

*त उ म, पृष्ठ ६०—६१।

१४ वियोग, १५ मूर्त्ति-पूजा, १६ आज भी, १७ भक्त पुजारी, १८ नहीं ही, १९ मिलन-यामिनी, २० जनेऊधारी, २१ रूप-पूजा, २२ सौन्दर्य, २३ होश में होना, २४ तरीके, २५ झंझट, २६ अपना लक्ष्य, २७ प्राप्त।

'पंछीवाचा' वज्दी की लोकप्रिय पुस्तक है। इसके लिखने की प्रेरणा के बारे मे वह लिखता है*—

था वले[1] जो फारसीमें ओ कलाम[2] । कम समज सकते है उसकूँ खल्केआम[3] ।।
गर्चे मै यो कुछ नही मानी शिनास[4] । काँ मुँजे उसकू समझनेका क़यास[5] ।।
लेकिन इसकू देखकर दिल चुप-न-बोल[6] । यक-ब-यक यों दिल्लमें आया कलोल ।।
जी मुवाफिक[7] फ़हम[8] अपनेके जईफ़[9] । इस किताबे खासा[10] का नज़्मेशरीफ[11] ।।
क़स्द[12] कर दखिनी जबाँमें लेके आउँ । ता रहे दुनियाँ में मेरा भी (तो) नाँव ।।
पस मदद मँग शेख[13] की अरवाह[14] सों । ... ... ।।
मै कलम जारी किया औराक़[15] पर । जब हुआ पूरा यो नज़्मे मुख्तसर[16] ।।
नाँव इसका पंछीवाचा मै किया । यादगारी खल्के-आलम[17] पर[18] किया ।।

समाप्त करते हुए—

इसमें आरब मेरा होता है यो काम । शुक्र है जो हुई पंछीवाचा तमाम[19] ।।

कथारम्भ करते कहा गया है †—

एक दिन सब जगके पंछी जानपर । मिलके भइ[20] जमा हो यक ठार पर ।।
शौक सों दिलकी लगे मुर्गोलने[21] । यक-यकसते राज दिलका बोलने ।।
नागहाँ[22] बाताँ में निकली बात यों । जे पँख्याँ मे बादशा कोई न क्यों ।।
है हरेक फिर्के[23] में हर यक बादशाह । नहिं हसनकूँ बादशाह सो क्या गुनाह ।।
स वजा[24] पछी लगे करने विचार । बोल उट्ठा उसमे हुदहुद नामदार ।।
"ऐ अजीजाँ[25] बात यों करते थे क्या । दिलमें चुप विसवास यों धरते थे क्या ।।
के पड़े है इस वजा ग़फलतमने । कुफ्र है यो मुल्क होर मिल्लत मने[26] ।।
कुफ्र[27] सों तोबा[28] करो तोबा करो । वादशा की जातमे[29] शक ना धरो ।।

'ंछीवाचा' के कुछ नमूने ‡—

हिंदुआँ में कोइ राजा था गभीर । के हुआ महमूद सुल्ताँका असीर[30] ।।
लेके आये ज्यों उसे महमूद-पास । दीनसो कीते नबी[31] के रू-शिनास[32] ।।

---

*यु. द. म., पृष्ठ ३६८-६९।

१. लेकिन, २. कृति, काव्य, ३. साधारण लोक, ४. मर्मज्ञ, ५. सामर्थ्य, विचार, ६. मौन, नीरव, ७. अनुसार, ८. समझ, ९. निर्बल, १०. विशेष, ११. उत्तम छंद, १२. इरादा, १३. स्थायी गुरु, १४. आत्मा, १५. पृष्ठों, १६. संक्षिप्त पत्र, १७. दुनिया, १८. हे भगवन्, १९. समाप्त।

†यु. द. म., पृष्ठ ३६८।

२०. हुए, २१. कलरव, २२. संयोग से, २३. वर्ग, २४. प्रकार, २५. प्यारो, २६. जाति में, २७. इस्लाम-विरोध, २८. क्षमापन, २९. व्यक्ति में।

‡उ. श., पृष्ठ २६६-६७।

३०. बंदी, ३१. पैगम्बर मुहम्मद, ३२. परिचित।

जब हुआ इस्लाम सो जो आशना[1] । दिल दो आलम[2] सो किया अपने जुदा ॥
एकला जा बैस गोशव के मझार[3] । रात दिन रोने लग्या जब जार-जार[4] ॥
कुछ न था काम उसकूं र-अज[5] सोजो-आह[6] । रोज उसका रातमों बदतर[7] सियाह ॥
सोजो-जारी जब गये हदमा गुजर । हुइ बजा[8] महमूद सुल्तां कूं खबर ॥
बस बुला राजाकुं शाहे-नामदार[9] । मेहूबानीसा कया[10] "तूं क्यों है जार ॥
मैं तुजे देऊँगा एता कुछ मुल्को-माल । जे तुं यक सायत[11] में हो जाये निहाल ॥
ऊन को इस धात ऐ राजा गँभीर । दुखमने[12] अपना नको गालो सरीर" ॥
बस लग्या कहने कुं राजा शाह सो । "मैं रोता नैं जो मुल्को-माल मो ॥
सोजो-जारी है मुजे इसके सबब । जे कयामत[13] मैं करेगा या च रब[14] ॥
ऐ मेरे बदअहद[15] बदे बे-वफा[16] । किस वजा[17] कीता है तूं ऐसा जफा[18] ॥
नैं किया तूं याद मेरा तो लगूं । तुझमने सुल्तान आया जो लगूं ॥
जब किया लश्करकशी[19] तेरे पे ओ । आसरा मेरा लिया ऐ जिग्त-ख[?] ॥
नैं किया तूं याद लश्कर में मुंजे । दोस्त समझं या कि दुश्मन कर तुझे ॥
गर लगूं तुजसो जफा मुजसो वफा[21] । या वफादारीमने[22] है क्या रवा ॥
शमसारी[23] है मुंजे इस बातकी । सोज[24] दिनका होर जारी[25] रातकी ॥

(क) बनावटी आशिक*—

एक आशिक[26] था दिवाना बेखबर[27] । सो रह्या था नींदमें यक गौर[28] पर ॥
अज-कज़ा[29] माशूक[30] निकल्या एक वहाँ । नीद मे आशिक कुं देख्या नागहां[31] ॥
पस (वह खत) यक लिखको उसके बदमों । बाँधकर जाता रह्या आनदमा ॥
आशिक उठकर ओ चिठी देख्या जा खोल । यारके खतसो दिसे उसमें यो बोल ॥
"ऐ दिवाने इस वजा[32] सोता है क्या । उठ जो सौदागर है तूदूकां पै जो ॥
होर अगर जाहिद[33] है तो बेदार रह । बदगीमे सब अपस हुशियार रह ॥
भी जो आशिक है तो सोता है गजब । नीद चखमे आशिकांके आये कब ॥
मर्द आशिक तो सदा बेदार[34] अछें[35] । दिनकुं हैरां[36] रातकू हुशियार अछै ॥
इश्क में सोना तुजे सर महूल[37] है । आशिकी के वस्त[38] में ना-अहल[39] है ॥

---

१ परिचित, २. उभय लोक, ३ कोने, एकान्त, ४ फट-फट, ५ सिवाय, ६ जलन-हाय, ७ अधिक बुरा, ८ अनतर, ९ नाम, १० कहा, ११ घडी, १२ दुख में, १३ प्रलय, १४ भगवान्, १५ असत्यसध, १६ नमकहराम, १७ प्रकार, १८ जुल्म, १९ सैनिक आक्रमण, २० बदचलन, २१ भक्ति २२ अनुरक्ति में, २३ लज्जित होना, २४ जलन, २५ रोना।

*उ० श०, पृ० २६७।

२६ प्रेमी, २७ पागल, बेहोश, २८ विचार, २९ दैव से, ३० प्रियतमा, ३१ एकाएक, ३२ प्रकार, ३३ भक्त ३४ जाग्रत, ३५ रहे, ३६ परेशान, ३७ आसान, ३८ पेशा ३९ अयोग्य।

§ ३०. वली दकनी (१७०५ ई०)

१. कवि

वली के साथ पुरानी दक्खिनी काव्यधारा की एक तरह समाप्ति होती है और उसके स्थान पर उर्दू-काव्यधारा का युग आरम्भ होता है। वह संधिकाल का महान् कवि है। एक समय था, जब वली को ही उर्दू-काव्य का आदिकवि माना जाता था। उर्दू में वली का नाम सबसे पहले आता है। अबतक दक्खिनी काव्य मे मस्नवी या कथा-काव्य की प्रधानता थी, किन्तु वली ने पीटी लकीर को छोड़ गजल (स्फुट प्रेम-पदावलि) का रवाज दिया। उसकी गजले इतनी सरस और चमत्कार-पूर्ण थीं, कि आगे आनेवालों को उसीके पदचिह्नों पर चलना पड़ा। यद्यपि गजलों का प्रारम्भ उससे एक शताब्दी पहिले मुहम्मद कुल्ली कुतुब ने भी किया था, इसलिए इसे वली का नवाविष्कार नही कह सकते। दक्खिनी कवियों मे शायद ही कोई हो, जो फारसी का पंडित नहीं था। फारसी में गजलों के लिए हाफिज बहुत पहिले ही मशहूर हो गये थे। वली की एक यह भी विशेषता मानी जाती है, कि उसने सर्वप्रथम अपना दीवान ग्रथित किया। यह भी बात ठीक नहीं है कि क्यों मुहम्मद कुल्ली कुतुब ने यह काम पॉच-छह पीढ़ी पहिले ही कर डाला था। हाँ, वली की एक बड़ी विशषता यह ज़रूर मानी जायेगी, कि इस दक्खिनी कवि के देशी भाषा में लिखे पद्यों के चमत्कार को देखकर औरंगजेब-कालीन दिल्ली के कवि-देवताओं का आसन डगमगा उठा। अभी तक शाहों, शाहजादों तथा उसके दरबार की भापा फारसी थी, फारसी ही काव्य की भाषा भी समझी जाती थी। कोई सम्भ्रान्त कवि हिन्दी में छन्द जोड़ना अपनी शान के खिलाफ़ समझता था। लेकिन अब उन्हें साफ दिखलाई देने लगा, कि यदि हम नही चेते, तो जिस तरह आरवा की कविताओं पर दरबार के लोगों के सर झूम रहे हैं, उसमे वली और उसके चेले बाजी मार ले जायेंगे, और हम मुँह देखते ही रह जायेंगे। वली उसी समय का कवि है, जब कि उत्तर भारत में वृन्दू, लाल, घन आनन्द, नागरीदास हिन्दी-काव्य की श्रीवृद्धि कर-रहे थे।

वली का असली नाम वली मुहम्मद था। यह १६८२ ई० (१०९३ हि०) के आसपास औरगाबाद मे पैदा हुआ था, और १७३० ई० (११५५ हि०) मे अहमदाबाद (गुजरात) में मरा, जहाँ ही इसकी कब्र है। वली की शिक्षा-दीक्षा गुजरात मे हुई, उसका गुजरात से प्रेम था, जैसा गुजरात-वियोग तथा सूरत-वर्णन-सम्बन्धी उसकी कविता से मालूम होता है। पुराने लेखकों ने इसी भ्रम से उसे गुजराती समझा, यद्यपि वह दक्खिन का निवासी था। उसके विचारों के सम्बन्ध में डॉ० सैयद मुहम्मद कादिरी जोर लिखते है—

"औरंगाबादी वली मजहबी आदमी नही था। प्रख्यात गजलवक्ता हाफिज और गालिब की तरह इसका काव्य भी तुच्छ धार्मिक पक्षपातों से मुक्त है। और, उसने अत्यन्त आशिकी प्रेमपंथी का जीवन व्यतीत किया है। स्पष्ट है कि एक व्यक्ति जिसने खास तौरपर खूबसूरत लड़कों और मद्यपान की अभिलापा के सम्बन्ध मे गजले लिखी हो, किस तरह धार्मिक समझा जा सकता है। वह एक दुनियादार आदमी और कवि था, और कु[illegible]। गालिब की तरह उसके काव्य में सूफीयत (वेदान्त) का रंग झलकता है। यह [illegible] क स्वाभाविक बात [illegible] क्योंकि जो मुसलमान स्वतन्त्रचेता रहना चाहते थे, [illegible] सधर्मियों के [illegible] सुनना [illegible]

चाहते थे, अपने आपको सूफी प्रकट करते हैं। उन लोगों को दैनिक धार्मिक कर्त्तव्यों की पाबन्दी नही रहती।*

"इससे हमारा अभिप्राय यह नही कि वली नास्तिक था। मुसलमानों के दोनों बड़े सम्प्रदाय, अर्थात् सुन्नी और शिया दोनों में से हरेक वली को अपने सम्प्रदाय का गिनता है। वली की योग्यता के सम्बन्ध में पक्ष-विपक्ष में कितने ही विचित्र तर्क किये गये हैं। यह विचारा जाता है कि उसका अरबी-फारसी का ज्ञान बहुत ही सीमित था और इसी कारण से उसकी कविता में अशुद्ध अरबी और फारसी शब्द पाये जाते हैं। वस्तुत यह दोषारोपण ठीक नही है। वली अपने समय का सच्चा प्रतिनिधि था। उससे यह आशा रखनी कि वह शब्दों का प्रयोग उसी तरह करेगा, जैसा आज किया जाता है, अनुचित है। लखनऊ के कवियों ने उर्दू-कविता में अरबी और फारसी के शब्दो के प्रयोग करने के लिए जो अविद्वत्ता-पूर्ण नियम बनाये थे, वली के समय वह प्रचलित नही थे। वली से पहिले के और उसके समकालीन कवि स्वाभाविक कवि थे, जो केवल कविता के रस से आप्लावित होने के लिए पद्य कहा करते थे। उनका उद्देश्य शब्दो और मुहावरों का प्रयोग करके अपनी कविता को अरबी और फारसी भाषा के ज्ञान की किताब बनाना या कोश तैयार करना कदापि नही था। और भी, कि वह जिस भाषा का प्रयोग करते थे, वह उनके समकालीनों की बोलचाल की भाषा थी। वह अरबी और फारसी-कोशों से शब्द नही लेते थे, बल्कि दिन प्रतिदिन साधारण तौर पर बोलचाल में जो शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं, उन्ही को इस्तेमाल करते थे। वली के दीवान मे कई प्रकार की कविता के नमूने हैं—४५० गजलें, भिन्न-भिन्न प्रकार के नद, ६ कसीदे, २ मस्नवियाँ, (कथा-काव्य) और २५ रुबाइयाँ (चौपदे) हैं। लेकिन, मीर और गालिब की तरह उसकी प्रसिद्धि निर्भर करती है गजलों ही पर। उनमें कविता के उत्कृष्ट गुण विद्यमान हैं। प्रेम और शृगार में उसकी गजलें मीर और दर्द से, स्वतन्त्र विचार में गालिब और हाफिज से और सौन्दर्य चित्रण मे नजीर की गजलों से मिलती-जुलती हैं।"

वली के दीवान (काव्य-संग्रह) में ४००० के करीब अबियाँ हैं।

२ कविता

(१) गुजरात-वियोग†—

गुजरातके फिराक[1] सा है खार-खार[2] दिल। बताब[3] है सूनेमने[4] आतिलबहार[5] दिल॥
मरहम नही है इसके जखमका जहाँमने। शम्शेरे-हिज्र[6] सो जो हुआ है फिगार[7] दिल॥
अव्वल[8] सा था जईफ[9] यह पावस्ता[10] मौज[11] में। ज्यो बात है अगिनके उपर बेकरार दिल॥
इस सैरके नशे सो अवल तर दिमाग था। आखिरकूँ इस फिराक मे खीचा खुमार[12] दिल॥
मेरे सुनेमे आके चमन देख इश्क का। है जोश-ख[13] सो तनमें मेरे लालाजार दिल॥

---

*उर्दू शहपारे, पृ० १५०, (शब्दो में रूपान्तर करके)।

† उ० श०, पृष्ठ २७०।

१. वियोग, २ काँटा-काँटा, ३ अधीर, ४ शून्य में, ५ आग बरसता, ६ वियोग के खड्ग, ७ घायल, ८ प्रथम, ९ निर्बल, १० पादनिगडित, ११ जलन, १२ मदालसता, १३ खून के उबाल।

हासिल[१] किया हूँ जगमें सरापा[२] शिकस्तगी[३] । देखा है मुझ शकीबे[४] हों सुब्हेबहार[५] दिल ।।
हिजरत सों दोस्ताँके हुआ जी मेरा गुजर । इश्रत[६] के पैरहन[७] कूँ दिया तार-तार दिल ।।
हर आशना[८] की याद[९] की गर्मीसों तनमने[१०] । हरदममें बेकरार[११] है मिस्ले-शरार[१२] दिल ।।
सब आशिकाँ[१३] हजूर अछे पाक सुर्ख़रू[१४] । अपना अपस लहूसों किया है फ़िगार दिल ।।
हासिल हुआ है मुजकूँ समर[१५] मुज-शिकस्त[१६] सों । पाया है चाक-चाक[१७] हो शकले-अनार[१८] दिल ।।
अफसोस है तमाम कि आखिरकूँ[१९] दोस्ताँ । इस मैकदे[२०] सो उसके चला सुध बिसार दिल ।।
लेकिन हजार शुक्र वली हकके फैज[२१] सों । फिर उसके देखनेका है उम्मेदवार दिल ।।

(२) सूरत शहर—*

अजब[२२] शहरोंमे है पुरनूर[२३] यक शह्र । बिला शक[२४] वह है जगमें मक़सदे-दह्र[२५] ।।
अहै मशहूर उसका नाम सूरत । कि जावे जिसके देखे सब कदूरत[२६] ।।
जगतकी आँखका गोया[२७] है यह नूर । अछो[२८] इस नूरसो हर चश्म-बद[२९] दूर ।।
शहर ज्यों मुन्तखिब[३०] दीवान[३१] है सब । मलाहत[३२] की वह गोया खान है सब ।।
सुरज सुन आग उसकी जगमे काँपा । समुंदर मौज जन[३३] रग-रगमे काँपा ।।
किनारे उसके यक दरियाय-तपती[३४] । कि दुनियाँ देखने कूँ उसके टपती ।।
किया सब तन खलालत[३५] सो यह ज्यों अर्क़ । हुआ दरिया[३६] अपसके अर्क़में गर्क ।।
शहरसों है वह हम-बाजू[३७] हमेशा । दरयाँ सो है वह हम पहलू[३८] हमेशा ।।
कि आबे-खिज्र[३९] की है उसमे तासीर[४०] । हवा देती है उसकी याद कश्मीर ।।
अजब किल्ला है व्हाँ यक बाकरीना[४१] । अंगूठीमें दुन्याके ज्यों नगीना ।।
नजिक किल्लेके बाडाघाट है वाँ । कि दायम गुलरुखाँ[४२] की हाट है वाँ ।।
अहै इस हाशिये[४३] पर जाय-आराम[४४] । तिलस्मी[४५] बागवाँ होता है हर शाम ।।
ऐ बुलबुल, पाकबीनी[४६] सों नजर[४७] कर । कसाफत[४८] की नजरसो बस हज्र[४९] कर ।।
खुले है हर तरफ रुखसार[५०] के गुल । हरेक गुल के नजिक वाँ पर है सुंबुल[५१] ।।
जो कोई देखा है उनका बाग-रुखसार[५२] । हुआ यक दीद[५३] में वह मह्व[५४] दीदार[५५] ।।
जो है वह महज तस्वीराते-इख्लास[५६] । सो आशिकपर्वरी में हैच[५७] है खास ।।

---

१ प्राप्त, २. सिर से पैर तक, ३. परास्तता, ४. सन्तोष, ५. वसन्त का प्रातः, ६. प्रमोद, ७. परिधान, ८. मित्र, ९. स्मृति, १०. शरीर में, ११. अधीर, १२. अंगारे की तरह, १३. प्रेमी, १४. भाग्यशाली, १५. फल, १६. मेरी हार, १७. टुकड़े-टुकड़े, १८. अनार-जैसी, १९. अन्त में, २०. मद्यशाला, २१. सत्य (भगवान्) की दया।

*उ० श०, पृ० २७०।

२२. अद्भुत, २३. प्रकाशपूर्ण २४. निस्संदेह, २५. जग की अभिलाषा, २६. मलिनता, पाप, २७. मानो, २८. रहो, २९. कुदृष्टि, ३०. चुना, ३१. संग्रह ३२. मधुरता, ३३. तरंगायित, ३४. ताप्ती, नदी, ३५. लज्जा, ३६. समुद्र में, ३७. पास में, ३८. पार्श्व, ३९. अमृत, ४०. प्रभाव, गुण, ४१. नियमपूर्वक ४२. गुलाबमुखियाँ, ४३. किनारी, ४४. सुखस्थान, ४५. जादू का, ४६. पवित्र दृष्टि, ४७. देख, ४८. मालिन्य, पाप, ४९. संयम, ५०. भाल, ५१. तमाल-जैसा पौधा, ५२. गाल, ५३. दृष्टि, ५४. विभोर, तन्मय, ५५. दर्शन, ५६. प्रेम-मूर्त्ति, ५७. प्रेमी पर दया में प्रत्येक।

वहाँ हैं साकिये[१] इश्क-अंगेज[२] । मुहब्बत की करे मै[३] मुझ उपर रेज[४] ॥
सफाईसों खिले मुझ-जीवका बाग । करूँ उस दर्द-मंदकूँ मरहमे-दाग[५] ॥
अहैं सूरत हकीकत[६] की निशानी । कि हैं मामूर[७] वाँ अहले-मआनी[८] ॥
शराफत[९] में यह है ज्यों बाबे-मक्का[१०] । तो है सब मुल्क पर उसका जो सिक्का ॥
अगर देखे मुलूकाँ शामो-तबरेज़ । न देखा को ऐसा मुल्क जरखेज़[११] ॥
कि इस भीतर केते ऐसे हैं तुज्जार[१२] । कि धारूँ कूँ नहीं उनके नज़िक बार ॥
एते आतिशपरस्तों[१३] की है बस्ती । सिरे नमरुद वाँ आतिशपरस्ती[१४] ॥
फिरंगी[१५] इसमें इत्ते हैं कुलहपोश[१६] । अदद[१७] वा जिनकी गिनतीमें है बेहोश ॥
वहाँ साकिन[१८] एते हैं अहले-मजहब[१९] । कि गिनती में न आवें उनके मुश्रिब ॥
अगर्चे सब हैं वह इब्नाय-आदम[२०] । वले बीनश[२१] में रंगारंग आलम[२२] ॥
भरी हैं सीरतों[२३]-सूरत[२४] सों सूरत । हरेक सूरत है वाँ तस्वीर मूरत ॥
खतम[२५] है अमरदाँ[२६] पर ओ सफाई । बले हैं बेस्तर[२७] हुस्ने-निसाई[२८] ॥
सभा इन्दरकी है हरयक कदममें । छुपा इन्दरसभाको ले अदम[२९] में ॥
किशन की गोपियाँ की नै हैयह नस्ल[३०] । रहें सब गोपियाँ वह नक्ल[३१] यह अस्ल ॥
हजारां इस सबब[३२] शैदा[३३] है बुलबुल । कि है वाँ गुंचेलब[३४] दायमा[३५] गुल[३६] ॥
न कइ एक रक्कन सो सीचे शोख[३७] चंचल । वह मुल्कके बाग कन[३८] दीवार अचल ॥
नजर भरकर देखो हर गुलबदनकूँ । कि है पर्दये मे बेपर्दा उननकूँ ॥
रहे वाँ आशिकां[३९] कूँ आम[४०] आवाज़ । कि नै पर्दाबगैर अज-पर्दये-नाज[४१] ॥
किसीकूँ नै नजरबाजी[४२] बिना चैन । खुले हैं रात-दिन सब गर्कये-नैन[४३] ॥
शहर भीतर जो आवे मेहना[४४] का दिन । हिंदू की कौम[४५] के अस्नान[४६] का दिन ॥
हरेक जानिब[४७] देखूं मैं फौज-दर-फौज । तजल्ली[४८] के समुदर की उठे मौज ॥

(३) एक पथिक का प्रेम*—

लागी है लगन तुमसों छुड़ा कौन सकेगा । है किसमें यह कुदरत[४९] ॥
अजब मुजकु वतन अपने ले जा कौन सकेगा । कर दिलसों रफाकत[५०] ॥

---

१ मद्यवितरक, २ प्रेममय, ३ मद्य, ४ छिड़क, ५ जले पर मलहम, ६ सत्यता, ७ भरे, ८ तत्त्वज्ञ, ९ भद्रता, १० मक्के का द्वार, ११ उर्वर, १२ महासेठ, १३ अग्निपूजक पारसी, १४ अग्नि-पूजा, १५ युरोपियन, १६ टोपधारी, १७ संख्या, १८ निवासी, १९. धर्मवाले, २० मनु-संतान, मानव, २१ देखने में, २२ जगत्, २३ आचरण, २४ रूप, २५ समाप्त, २६ छोकरे, २७ अधिकतर, २८ स्त्रैण सौन्दर्य, २९ प्रलय, ३० जाति, ३१ कृत्रिम, ३२ कारण, ३३ मुग्ध, ३४ अधर-कलिका, ३५ सदा, ३६ गुलाब फूल, ३७ ढीठ, ३८ पास ३९ प्रेमी, ४० सामान्य, ४१ लीला के पर्दे से, ४२ दृष्टिपात, ४३ नयन में मग्न, ४४ त्यौहार ४५ जाति, ४६ स्नान, ४७ ओर, ४८ सौन्दर्य।

*उ श, पृष्ठ २७५।

४९ सामर्थ्य, ५० मित्रता।

हैं नकश किनारी का तेरे जामेके ऊपर । ऐ हिन्द के बाँके ।।
दामन[1] कूँ तेरे हाथ लगा कौन सकेगा । नै जोर नै ताक़त ।।
हूँ खाक तुम्हारी ही गली का ऐ सिरीजन । नै काम कफ़न सों ।।
अब मुझकूँ जनाजे[2] में उठा कौन सकेगा । यों ग़र[3] है हक़ीकत[4] ।।
मत मारो वली कूँ मैं यह कहता हूँ कहाकर । सुन बात हमारी ।।
इस हिज्र[5] के तूमार[6] कूँ पा कौन सकेगा । बिन गम्जा - जराफ़त[7] ।।

(४) अभिलाषा*--

नको[8] कर आशनाई[9] गैर सों ऐ सीम-तन[10] हर्गिज ।
न हो ऐ शमारू[11] हर अंजुमन[12] में शोलाजन[13] हर्गिज ।।
न मिल नायल हो हर तूती[14] सो ऐ शक्करशिकन[15] हर्गिज ।
न मिल हर बुल्बुले-मुश्ताक[16] हों ऐ गुलवदन[17] हर्गिज ।।
हरेक गुलशन[18] में ज्यों नर्गिस न खोरे अपने नयन हर्गिज ।।
फसीहाँ[19] खल्क़[20] के सारे तुजे शीरी-वचन[21] कहते ।
पेशानी[22] रोज-रोशन[23] और जुल्फ़[24] काली-रयन कहते ।।
मुबस्सिर[25] हो जवाहरके तुजे (सब) दर अदन[26] कहते ।।
जहाँके गुलरुखाँ[27] सारे तुझे नाजुक - बदन[28] कहते ।।
तु हर पलकाँके काँटाँपर न रख अपने चरन हर्गिज ।।
सदा मुश्ताक़[29] है तूबा[30] तेरे क़द[31] ज्यों सनोबर[32] का ।।
तजल्ली[33] में तेरा यह मुख अहै खुर्शीद[34] महशर का ।।
दहन[35] तेरा सो खैर-अंजाम[36] है यह जामे - कौसर[37] का ।
तु बेशक रूह[38] हक जगमें खुलासा[39] चार अंसर[40] का ।।
वजुज[41] तुज रूह के कायम[42] न हो जगका बदन[43] हर्गिज ।।३।।
दो रुखसार[44] ते रोशन यह दो अनवर[45] सितारे है ।
तेरे चंचल नयन आगे चिका क्या चेकारे[46] है ।।
अजीजाँ[47] मिस्रके सारे तेरी खातिर सँवारे है ।।

---

१. अंचल, २. अरथी, ३. यदि, ४. सत्य ५. वियोग, ६. राशि, ७. कटाक्ष-लालित्य ।
*उ० श० पृ०, २७६ ।

८. नहीं, ९. मित्रता, १०. रुपहला शरीर, ११. दीपमुख, १२. सभा, १३. ज्वलित, १४. तोता, १५. शक्कर तोड़नेवाला, मधुर, १६. प्रेमी बुलबुल, १७. गुलाब-मुख, १८. फुलवाड़ी, १९. वाणी-निपुण, २०. दुनिया, २१. मधुरवचन, २२. ललाट, २३. प्रकाशमान दिन, २४. अलक, २५. प्रभाववाला, २६. स्वर्ग मे, २७. गुलाबमुखियाँ, २८. कोमलांगी, २९. प्रेमी, मुग्ध, ३०. कल्पवृक्ष, ३१. आकृति, ३२. पद्मवृक्ष, ३३. सौन्दर्य, ३४. प्रलय, ३५. मुख, ३६. परिणाम, फल, ३७. स्वर्ग-निर्झर का प्याला, ३८. आत्मा, ३९. सार, ४०. महाभूत, ४१. विना, ४२. मौजूद, स्थायी, ४३. शरीर, ४४. गाल, ४५. प्रकाशमान, ४६. किस काम के, ४७. मंत्री, सुन्दर ।

जुलेखा से केते आशिक[1] ते पर जीव वारे है।।
न कर मसकत[2] हरेक युसुफका यह चाहेजकन[3] हर्गिज़।।
तु है मह्‌बूब[4] आलमका वले[5] आलम[6] सो हो यकसू[7]।
तु महबूबां में उन्का[8] है नको[9] दिखला किसी को रू[10]।।
जो आतिशदा[11] किया दिलकूं वी लेजा वां जुल्फ अबर[12] तू।।
बग़ैर-अज[13] ईद मत दिखला किसीकूं मह हलाल[14] अबरू[15]।।
न मिल महताब[16] में भी किससा ऐ चदरवदन हर्गिज़।।

(५) सुन्दर से*—

मत ुस्सेके शोले[17] सा जलतेकूं जलाती जा।
टुक मेह्र[18] के पानी सो यह आग बुझाती जा।।
तुज चाल की कीमतमो नै दिल है मेरा वाकिफ[19]।।
ऐ नाज-भरी[20] चचल टुक भाव बताती जा।।
इस रैन अँधेरी मे मत भूल परा निस सो।
टुक पाँवके बिछुओकी आवाज़ सुनाती जा।।
मुज दिलके कबूतर कुं फकडा है तेरी लट ने।
यह काम धरम का है टुक इसकू छुडाती जा।।
तुज मुखकी परस्तिश[21] में गइ उम्र मेरी सारी।
ऐ बुतकी बचन हारी इस बुतकुं बचाती जा।।
तुज इश्कमे दिल चलकर जोगी की लिया सूरत।।
यक्बार अरे मोहन छाती सा लगाती जा।।
तुज घरकी तरफ सुदर आता है वली दायम्[22]।
मुश्ताक[23] है दर्शन का टुक दरस दिखाती जा।।

(६) विरह की नारी—

यह विरहकी तार क्यो के जावे। चलने की पुकार क्या के जावे।।
जादार की पार क्यो के जावे। दिले यार[24] को छो[25] क्यो के जावे।।
जख्मी[26] है, शिकार क्यो के जावे।।
भरता हुँ जहाँ वो जग मो हजार। इस बदमें[27] आ हुआ हूँ लाचार[28]।।
क्याकर हो विरहमें मस्त हुशियार[29]। जब लग न मिले शराबे-दीदार[30]।।

---

१ प्रेमी, २ निवासी, ३ ठोडी का गड्ढा, ४ प्रियतम, ५ लेकिन, ६ दुनिया, ७ एक ओर, ८ दिव्य, ९ नहीं, १० मख, ११ अग्निधारी, १२ सुगधित रत्न, १३ विना, १४ खण्ड-शशि, १५ भ्रू, १६ चाँद।

*उ० श०, पृष्ठ २७७।

१७ ज्वाला, १८ दया, १९ जानकार, २० लीलामयी, २१ पूजा, २२ सदा, २३ मुग्ध।

†यु द म, पृष्ठ ४८८। २४ प्रियतमा के हृदय, २५ छाया, २६ घायल, २७ बँधा, २८ बेबस, २९ होश में, ३० दर्शन-मदिरा।

अंखियाँका खुमार[1] क्यों के[2] जावे ।।
जब इश्ककी फौजने आइ घेरा । हैराँ हुआ हवास[3] मेरा ।।
उस दिनसों हुआ हुं तेरा चेरा । यकसाँ[4] है हमेशा हुस्न[5] तेरा ।।
जन्नतसों बहार[6] क्योंके जावे ।।
यह दिल ते` देखने को रोवै । हर शामो- सुवह में तिल[7] न सोवै ।।
यह उम्र[8] अजीज[9] ग़म[10] में खोवै । आँखों की अगर मदद न होवै ।।
मुझ दिलका गुवार[11] क्यों के जावे ।।
आशिक की यही है जगमे वानाँ[12] । माशूक़[13] के नाँव पर बिकानाँ ।।
नै काम हरेक का इसमें आना । मुमकिन[14] नही अव वली का आना ।।
है आशिके - जार[15] क्योंके जावे ।।

(७) **प्रियतम से***—

ऐ यारे मन वहला हैगा । बीच उसके वहुत जफ़ा[16] हैगा ।।
जाने-मन[17] उस परउ फ़िदा[18] हैगा । ....मुव्तला[19] हैगा ।।
इश्कवाजों[20] वी शका[21] हैगा ।।
जाने-मन इस तरफ[22] तु आया कर । एक दो वात खुश[23] सुनाया कर ।।
हर किसीकूँ गले न लाया कर । वात कह कर सभी भुलाया कर ।।
इसमों[24] तेरा वहुत भला हैगा ।।
जाने-मन हरकहुँ[25] फिरा मत कर । सुखन - वन[26] कहूँ सुना मत कर ।।
वाँका[27] वो गुंडा[28] सों मिला मत कर । इन दखलवाज[29] कूँलिया मत कर ।।
जाँकि[30] वसियार[31] वेहुदा हैगा ।।
तुहमताँ[32] लोग करते है मुझपर । सव तेरे वास्ते सुने दिलवर[33] ।।
तू मेरा यार (है) किसी सों न डर । लाख तलवार गिर पड़े सिरपर ।।
सिर तेरे राहपर फ़िदा हैगा ।।
वर्ना[34] खीचूँ (कभू) जो मै तलवार । मुल्क हिन्दोस्ताँ करूँ गुलजार[35] ।।
जिसके सिरपर लगाके मारूँ वार । एकसो दो करूँ वो दो सों चार ।।

---

१. मदालसता, २. कैसे, ३. चेतना, ४. एक समान, ५. सौन्दर्य, ६. वाहर, ७. पल, ८. आयु, ९. प्रिय, १०. रंज, ११. धूल, १२. भेस, १३. प्रियतम, १४. संभव, १५. दुःखी प्रेमी।

*यु. द. म., पृष्ठ ४८९–९० ।

१६. अत्याचार, १७. मेरे प्राण, १८. नौछावर, १९. फँसा, २०. प्रेम-जुआड़ियों, २१. चतुर २२. इस ओर, २३. अच्छी, २४. इसमें, २५. सर्वत्र, २६. बुरी वात, २७. बदमाश, २८. गुंडा, २९. बीच में दखल देनेवालों, ३०. जहाँ पर कि, ३१. वहुत, ३२. बदनामी, ३३. मनोहर, ३४. नहीं तो, ३५. फुलवाड़ी।

तेग मेरी सा ला-फ़ना[1] हैंगा॥
दर-कफ़ेयार[2] काफ़िया तंग[3] अस्त[4]। यारे-मन दीदन श्-[5] बगें[6] रगअस्त[7]॥
शुक्र अल्ला[8] कि यार हमरंग[9] अस्त। यारेमन दर-जहाँ[10] अजब रगअस्त॥
रग-बा-रग[11] आगना[12] हैंगा॥
याद मेरा है हमचु[13] शीरी[14] बर[15]। सारे खुशसूरता मे हैंगा नर[16]॥
नाम रक्खा हुँ मैं जिसका अजवर[17]। मददे-आँ[18] अस्त[19] मुतजा[20] हैदर[21]॥
दिलरुबा[22] बूय-दिलरुबा[23] हैंगा॥
ऐ वली तूं मिसाल[24] सीमी बर[25]। हमचु[26] जोगी हो गश्तअम्[27] दर-दर॥
यार मेरा जो हैंगा जादूगर। सेह्र[28] आँखों मेती किया मुझपर॥
निगह[29] उसकी में क्या बला हैंगा॥

§ ३१ वली वेल्लोरी (१७२४ ई०)

१ कवि

वली औरंगाबादी के समकालीन इस वली का नाम सैयद मुहम्मद फैयाज था। इसके बारे में प्रोफेसर जोर ने लिखा है*—

"दखिन में दो कवि हुए हैं, जिनका उपनाम वली था। जिससे प्राय भ्रम पैदा हो जाया करता है। इसमें सन्देह नही कि दखिन मे एक ही समय दो कवि ऐसे हुए, जिनका उपनाम वली था, किन्तु एक कवि पश्चिमोत्तर भाग, अर्थात् सूबा औरंगाबाद (मराठवाड, हैदराबाद) का निवासी था और दूसरा दक्षिण पू (आन्ध्र) में रहता था, जो अब मद्रास प्रदेश में सम्मिलित है। यद्यपि एक ही समय में दोनो की उन्नति हुई, किन्तु वह स्वय एक दूसरे के अस्तित्व को जानते नहीं थे। वेल्लोर का वली बहुत धार्मिक आदमी था और अपने जीवन में कवि के रूप मे उसे कोई यश नहीं मिला। इसके विरुद्ध औरंगाबाद का वली अपने समय में मद्रास और हैदराबाद से गुजरात और उत्तरी हिन्द तक में मशहूर था। यह औरंगाबाद का ही वली है, जिसने दिल्ली तक सफर किया और जो एक उर्दू-शायर के रूप में बहुत मशहूर है।"

वली वेल्लोरी पेशेवर कवि नही था। इसका जन्म वेल्लोर के इलाके मे हुआ था, और पहिले सातगढ (मद्रास) के सूबेदार हिरासतखा के अधीन सैनिक नौकरी करता था। उसके

---

१ अविनाशी, २ प्रियतम की हथेली में, ३ बेबसी, ४. है, ५ उसके दाँतो में, ६ बहुत, ७ रग है, ८ भगवान् को धन्यवाद, ९ समान रंगवाला, १० ससार में, ११ एक-एक रग से, १२ परिचित, १३ ऐसा, १४ माधुय, १५ लानेवाला, १६ बढ-बढकर, १७ नाम, १८ उसकी सहायता, १९ है, २० इष्ट, अभिलषित, २१ विदारक सिंह (हजरत अली), २२ मनोहर, २३ मनोहर (प्रियतम) की सुगध, २४ उपमा, २५ चाँदी-जैसा, २६ मानो, यथा, २७ गया हूँ, २८ जादू, २९ दृष्टि।

*उ श, पृष्ठ १४४। (कठिन शब्दो के हिंदी-पर्याय हमारे है।—ले०)

वाद वह कड़पा चला गया और वहाँ के सूबेदार (प्रान्तपाल) नवाब अब्दुल् मजीदखाँ का बड़ा ही मित्र बन गया, जिसने बहुत सम्मान करते हुए उसे सिघोट में एक ऊँचे पद पर नियुक्त किया। सिघोट वही शहर है, जहाँ इब्ननिशाती के 'फूलवन' का सुन्दर हस्तलेख लिखा गया। वली की मृत्यु १७३७ ई० (११५० हि०) से पहिले अरकाट मे हुई। वही मुहल्ला असदपुर मे उसकी कब्र है। इसने अपना अन्तिम जीवन जागीर चटपेट्टा मे बिताया।

२. कृतियाँ

वली वेल्लोरी के दो काव्य-ग्रंथों का पता लगा है—

(१) **'रतन व पदम'**—

यह उसी रतनसेन और पद्मिनी की कथा पर आधारित है, जिसे जायसी ने अपनी पद्मावत के लिए लिया, और शायद वली को जायसी के प्रसिद्ध काव्य से भी प्रेरणा मिली। स्प्रिंगर ने इस काव्य की एक प्रति नवाब मैसूर (टीपो सुल्तान) के पुस्तकालय में सौ वर्ष पहिले देखी थी, किन्तु अब वह उपलभ्य नही है। यह ४००० अर्धालियों का एक अच्छा बड़ा काव्य था। इसकी कुछ पंक्तियाँ है *—

खुदाया[१] तु है पाक[२] पर्वर्दगार[३]। निरंकार वो आवारो अच्छे उतार[४]।।

अपने आश्रयदाता के बारे में लिखा है †—

हिरासतखां अमीर यक नामवर था। सकूनतगाह[५] उसकूँ सात गढ़ था।।
अथा ओ अहल-दर्द[६] वो नेक-आमाल[७]। रफाक़त[८] मे अथा मैउसकेखुशहार।।
कजारा[९] दाँसों हों किस्मतसों बर्खास्त[१०]। सो आया मैं तरफ कड़पाके घर ख्वास्त।।
नवाब अब्दुलमजीद इब्न[११]अब्दुलहमीद[१२]एक। अथा वॉ नामवर सूबा सईद[१३] एक।।
सो ओ बहरे-शुजा[१४] पर्वाना लिखकर। सलुक (दे) नौकराँ में मन्सबत[१५] कर।।
तऐयन[१६] कर मुज सिघवट रवाना। किया वह साहेबे-शीरी जमाना[१७]।।
सो हस्बुल्हुक्म[१८] मै सिघवट को आया। रंगारग वॉ तमाशे मैंने पाया।।

(२) **'रौज तुश्शुहदा'**—

रौजतुश्शुहदा (धर्मवीरों की कहानी) वली की दूसरी कृति ५५०० अर्धालियों की विशाल मस्नवी (कथा-काव्य) है। मुल्ला हुसेन वायज काशफी ने इसी नाम से एक पद्य-ग्रंथ लिखा था,

---

*'दकन में उर्दू', नसीरुद्दीन हाशमी, हैदराबाद, १९३६ ई०, पृष्ठ २३०—३१।

१. हे भगवान्, २. पवित्र, ३. पालक, ४. अवतार, अद्वितीय।

†त० श० म०, पृ० १४६।

५. निवास-स्थान, ६. पीडित जन, ७. सु-कर्म, ८. मित्रता, ९. संयोग से, १०. बहिष्कृत, ११. इच्छा, १२. अब्दुल हमीद का सून्र, १३. सूबा अधिकारी, १४. वीरतापूर्वक, १५. संबंधित, १६. नियुक्त, १७. मधुर समयवाला, १८. आज्ञानुसार।

वली ने उसीके आधार पर अपना काव्य लिखा। मूल फारसी और इस किताब में दस अध्याय हैं। इसलिए उसे 'दह-मज्लिस' भी कहा जाता है। इसके दस अध्याय हैं*—

१ मुहम्मद की मृत्यु।
२ मुहम्मद-पुत्री फातिमा की मृत्यु।
३ मुहम्मद-जामाता अली की वीरगति।
४ फातिमा-पुत्र हुसेन की वीरगति।
५ हुसेन के चचेरे भाई अकील-पुत्र मुस्लिम हानी और उसपुत्र मुहम्मद की वीरगति।
६ मुस्लिम के लडको की वीरगति।
७ हुसेन की मक्का से कर्बला तक की यात्रा और वीरगति।
८ हुसेन के साथियों की वीरगति।
९ हुसेन के पुत्र और सम्बन्धियों की वीरगति।
१० कर्बला-युद्ध-सम्बन्धी कुछ घटनाएँ।

कुछ लेखको के खयाल में यह पुस्तक मर्सियो (शोकाजलियों) का सग्रह है, किन्तु इसके शीर्षको को देखने से पता चलता है, कि यह किताब रसूल-वशजो के युद्धो और वीरगतियों का इतिहास है। दूसरी दक्खिनी मस्नवियों की भाँति यद्यपि यह पुस्तक बिल्कुल धार्मिक रग में लिखी गई है, तो भी काव्य के गुणो और विशेषताओं का इसमें अभाव नहीं है।

इस ग्रथ की प्राचीनतम प्रति पुस्तक लिखने के दो वर्ष बाद १७६६ ई० (११३९ हि०) में लिखी गई, जो हैदराबाद के नवाब सालारजग के पुस्तकालय में मौजूद है। पुष्पिका में लिखा है†—

"सन ११३७ हिजरी किताब दखिनी 'रौजा' दरबयान इमाम हुसेन तस्नीफ मीर वली फैयाज साहब सज्जाद मनू हर कदऽअ द। कातिबुल् हुरूफ सैयद वजहुल्ला हैदरी वल्द सैयद वडे मनू चोहरी दर-मुकाम एल्लोर रोज यकशबा बवक्त सेहपहर बातारीख इज्जा जीहेजा सन ११३९ हिजरी मुताबिक ११३६ फसली[1]।"

मगलाचरण करते कवि ने लिखा है—

करूँ नामे[2] कूँ बिस्मिल्ला[3] सा आगाज[4] । अछू[5] ता मैं फसाहत सा सरफराज[6]॥
सराऊँ[7] क्या उसे जिन यक सखुन[8] में । वँध्या जीव दमके रिश्ते[9] सो बदनमें॥

और अत में—

किया हूँ खतम[10] जब यो ददका काल[11] । इग्यारा सौ पै था सैंतीसवाँ साल[12]॥

---

* त० उ० म०, पृष्ठ ५८–५९। † वही।

१ रविवार, २० जुलाई, १९२७ ई०, २ पुस्तक, ३ भगवान् के नाम से, ४ आरभ, ५ रहूँ, ६ भाग्यशाली, उन्नतशिर, ७ सराहना करूँ, ८ वाणी, ९ श्वास के सम्बन्ध में, १० समाप्त, ११ दुख-भरी कथा, १२ सन् १७२४ ई०।

जमाना[1] मेहदिया[2] आखिर-जमाँ[3] का । अथा उस बाइस[4] अम्नों-अमाँ[5] का ।।
वली अब रख रक़म[6] होर खत्म कर वात । ... ...।।

(१) द्वितीय अध्याय में फातिमा के बारे में लिखा है*—

करूँ मैं मज्लिसे-दोयम[7] (कुँ) पुरग़म[8] । वफाते-फातिमा[9] कर कर मुरक्कम[10] ।।
तवल्लुद[11] बोलना लाजिम[12] (है) अव्वल । मुनाकिब[13] तिस लगा करना मुसल्सल ।।
खदीजा[14] सों जो औलादे-पयम्बर[15] । अथे सब दो पिसर[16] होर चार दुख्तर[17] ।।
न्हनी थी फ़ातिमा सब दुख्तराँ मे । व अछता[18] चाँद यो सब अख्तरा[19] में ।।
शिकम मे माँ के थी जों उनकुँ आराम । रखे हजरत ने उनकूँ फातिमा नाम ।।
नबूवत[20] सौंपनेके पाँचवी साल । वलादत[21] का हुआ नज्दीक ज्यों साल।।
खदीजा ने बशारत[22] यों सुनाये । कबीले की जनाँकूँ सब बुलाये ।।

(२) हुसेन के जन्म का वर्णन†—

वली हो रौजतुश्शुहदा[23] का माली । न यकदम फ़िक्र कर मज्लिस सों खाली[24] ।।
नवा गुल[25] मदह[26] के गुलशन[27] सों लाकर । करे भी शाहकी मज्लिस मुअत्तर[28] ।।
शिकारी था अक़ीदे[29] का सचा एक । नबीकूँ ला दिया आहू-बचा[30] यक ।।
कबूल[31] उसकूँ शहे-आलम[32] ने फरमाय[33] । जों इतने मे हसन[34] मज्लिसमें आय ।।
देखे आहूबचा हजरत कने[35] दो । हसनकूँ खुश किया है दिलमने[36] वो ।।
उसी साअत[37] नबीने उस हिरनकँ । करम फ़रमा[38] के बख्शे है हसन कूँ ।।
यकायक आ हुसेन जुल्करामात[39] । हसनकूँ खेलने देखे हरिन साथ ।।
पूछे "ऐ भाइ, यह तुम काँसो[40] लाये । हिरनका यो बचा तुम कासों लाये" ।।
हसन ने कह "हरिन कर प्यार मुजकूँ । दिये है जद्दबुजर्गवार[41] मुँजकूँ" ।।
नबी सों कय हुसेन आ दौड़ करनैं । "हरिन उनकुँ दिये तुम मजकू को नै" ।।
यहीं छद[42] ले करें तकरार[43] फिर फिर । नबी[44] के साथ ऊपर पाँवों पो पड़कर ।।
तसल्ली[45] शाहजादे कूँ कई धात । करे हजरत रख उसके सिर उपर हात ।।
हुए नज्दीक जो शहजादा रोये । "हरिन नै हात कि दीगर...होये" ।।

---

१. युग, २. पैगम्बर मेहदी, ३. अन्तिम युग, ४. कारण, ५. शान्ति, ६. लेख।

* यु० द० म०, पृष्ठ ३५६।

७. द्वितीय सभा ८. शोक-पूर्ण, ९. मुहम्मद-पुत्री फातिमा की मृत्यु, १०. लिखित, ११. जन्म, १२. उचित, १३. सगुण, १४. लगातार, १५. पैगम्बर की सन्तान, १६. पुत्र, १७. कन्या, १८. रहता, १९. तार, २०. पैगम्बरी, ऋषित्व, २१. जन्म, २२. सुसमाचार।

† उ० श०, पृष्ठ २७८–७९।

२३. धर्मवीरों की समाधि, २४. रिक्त, २५. फूल, २६. प्रशंसा, २७. फुलवाड़ी, २८. सुगन्धित, २९. श्रद्धा, ३०. हरिण-शिशु, ३१. स्वीकार, ३२. जगराज, ३३. श्रीमुख से वचन कहा, ३४. मुहम्मद-नाती, ३५. हजरत के पास, ३६. दिल में, ३७. घड़ी, ३८. कृपा करके, ३९. चमत्कारी, ४०. कहाँ से, ४१. मान्य पुरखा, ४२. बहाना, ४३. झगड़ा, ४४. पैगम्बर, ४५. धीरज।

जो यक हरिनी ने बच्चा लेके हमराह[1] । पुकारी (आयकर) मस्जिदपो नागाह ॥
दे लेने बच्चाकूँ उनकी डाल । दिखाने लाइ हजरत - पास फिलहाल[2] ॥
सलाम आकर फमाहत[3] की जबाँसो । लगी कहने रसूले-उस जाँ सों[4] ॥
"बच्चे ते थे उनमें एक धरकर । शिकारी छीन ले या बँद कर कर ॥
रहा था उनमें एक खुशनूद[5] । जगलमें मैं पिलाती थी उसे दूध ॥
निदा[6] इतने मे आया आसमाँ सो । पैगंबर पास ले जा इस बचेक ॥
कि शहजादा हरिन मगता खडा है । हरिन के साथ शौक[7] उसकूँ बडा है ॥
मुबादा[8] गर होयें उसके नयन नम[9] । फरिश्त्याँ पर होयेगा अर्श के गम ॥
निदा (सुन) इज्तरावी[10] इज्तरावी । बजा लाई हूँ खिदमत में शितावी ॥
न होर उसके आस्याँ सो हम्द-अल्ला । अँज[11] रुखसार[12] पाया है नही राह ॥"
यो सुन सब दिलमें गम का बीज बोये । जेते हज्जा[13]-मजलिस थे सो रोये ॥
दुआ हरिनी कूँ हजरत ने किये तो । बचा ले शाहजादेकू दि`तो ॥
अज़ीज़ा[14] सब फरिश्ते हो पैगंबर । न चाहें जिस अजूँ बहनेकूँ मुख पर ॥
जे कोई कर उसके सिर पर जरमकारी[15] । किये हैं लहू कूँ रुखसारो[16] पो जारी ॥
वो रोशन[17] मू जिनोंके करके सर[18] खू । रगे-खुर्शीद[19] कूँ बहते हैं गुलगूँ ॥
उनोपर क्या अछे रुख रुसियाही[20] । अछैगा किस वजा[21] कहरा[22] इलाही[23] ॥
रवा[24] है यो पियारा मुस्तफा[25] । हुये हैरान दश्ते - करबला[26] मा ॥
कि जिसका बाप अछै[27] साकीये-कौसर[28] । रवा है वह तपे पानी न पाकर ॥
सिफत[29] उसका है सब आलम[30] पे मालूम । जमाने के है वो दफतर[31] पो मालूम ॥

(३) हुसेन घायल*—

वलेकिन[32] शाहवा वो दबदबा देख । सलाबत[33] हार आली[34] मर्तबा देख ॥
कदम शोखी[35] सो आगे ना रखे कोई । न अँखियाँ खोलकर मुखपर देखे कोई ॥
सो हो नाचार तब सब नाबकारा[36] । लगे करने कु शहपर तीरबारा[37] ॥
तुरग उपर सा उतरे शाह शब्बीर[38] । कि ना तेजी[39] कु नाहक ना ल` तीर ॥
अो था जद्दो-पिदर[40] की यादगारी[41] । कलर[42] कै कै करूँ चुप उसकी ख्वारी[43] ॥

---

१ साथ, २ तत्काल, ३ लालित्य, ४ प्राणो से प्यारे, ५ राजी, प्रसन्न, ६ वाणी, ७ प्रेम, ८ शायद, ९ गीली, १० जल्दी, ११ आँसू, १२ गाल, १३ उपस्थित, १४ प्यारे, १५ गहरा घाव, १६ गालो, १७ प्रकाशित, १८ सिर का खून, १९ सूर्य, २० मुख कालिमा, २१ प्रकार, २२ कोप, २३ भगवान, २४ उचित, २५ अभिलषित, वरण किये गये, मुहम्मद, २६ कर्बला की मरुभूमि, २७ रहे, २८ स्वर्ग-निर्झर-जल को पिलाने-वाला, २९ प्रशसा, गुण-गान, ३० दुनिया, ३१ इतिहास।

*यु द म, पृष्ठ ३६३।

३२ किंतु, ३३ दृढता, ३४ उच्च, ३५ चचलता, ढिठाई, ३६ दुष्ट, ३७ वाणवर्षा, ३८ सुदर इमाम हुसेन, ३९ घोडे, ४० पुरखा (नाना) पिता, ४१ स्मृति, ४२ व्यर्थ, ४३ विनाश।

देखे जब काफिराँ[1] ने शाहजादा। तुरँगकुँ सुट[2] हुआ है यक पियादा॥
दिलावर हो लगे भाने[3] कुँ तीराँ। लगे शह चुप खड़े खानेकुँ तीराँ॥
पेशानीपर[4] लग्या यक तीर कारी[5]। उखाड़े सो हुआ लहु वाँसे जारी॥
भरा लहूकने[6] उस हात सर्वर[7]। भलै उस लहुकुँ ले मुख सात स र॥
रकतमें चेहरेये-पुरनूर[8] पेशानी। हुआ था ज्यो शफ़क़[9] मे सूरपानी॥
कहते थे यों चमें[10] उस लाल मुख सात। करूँगा जद[11] सों अपने जा मुलाक़ात॥

(४) हुसेन की मृत्यु*—

चरिंदे सब जँगलके हो दुखारे। खड़े रोते थे चरना छोड़ सा ॥
पहाड़ाँ शोरसों फोड़े थे सीना। खड़े थे सिरसों कर पग-लग पसीना॥
दर्याँ मे के घराँ सब छोड़ अपने। लगे खुश्की पो आ मछल्याँ (सो) तपने॥
किसीपर शाहकी था प्यास का ग़म। किसीपर शहके था मरनेका मातम[12]॥
दुन्यॉमें भर रह्या था शोर सारा। हुआ था दर्दो-गम[13] हर शै[14] पो न्यारा॥
खियाई[15] क्यों हमामे-बा-वफ़ा[16] कूँ। बुझाई क्यों चिरागे-मुस्तफा[17] कूँ॥
गया क्यों आज ओ सुल्ताने-आलम[18]। बलुकहजरतसों मिला था जाने आलम[19]॥
पड्या क्यों आज औधा तख्तेशाही[20]। हुआ क्यों आज आलम पर तबाही[21]॥
जहाँमें सब क़यामत[22] का बजा सूर[23]। लगे मौजां सो खलबलने कूँ समदूर[24]॥
गुबारे-सुर्ख[25] होकर आशकारा[26]। जगतपर छा गया था सब अँधारा॥
जमीं सब लाल थी होरआसमाँलाल। मँग्या[27] होने कुँ सब कुदरत[28] पो जंजाल[29]॥
फरिश्ते हाथमें लें गुर्जे-आहन[30]। खड़े थे फ़ोड़ने धनकूँ खना खन॥

(५) हुसेन के सगे-सम्बन्धियों का कतल †—

बजाँ[31] तारिक़ का बेटा एक उमर था। जदीके[32] फ़न[33] मे खरसा[34] बेखबर था॥
उनें अकबरका आतींवार खाया। जहन्नुम[35] में पिदर[36] कूँ जा मिलाया॥
दुजा था तलहा कर तारिक्का फ़र्जन्द[37]। अथा मलऊन[38] हाथी सा तनोमन्द[39]॥
जल अपने बाप होर भाई के गमसों। तुरत शहजादे पर धाया मनम्[40] कूँ॥

---

१. विधर्मियों, २. छोड़ (पंजाबी), ३. पाने (पंजाबी), डाले, ४. ललाट पर, ५. गहरा, ६. रुधिर से, ७. सरदार, ८. प्रकाशमय, प्रभास्वर, ९. प्रातः समय, संध्या-लालिमा, १०. इसी बीच, ११. नाना (मुहम्मद)।

*यु. द. स., पृष्ठ ३५७।

१२. शोक, १३. दुःख, १४. बातचीत, १५. गँवाया, १६. सत्यनिष्ठ, १७. पैगम्बर मुहम्मद (का दीपक), १८. विश्व के राजा, १९. विश्व के प्राण, २०. राजसिंहासन, २१. बरबादी, २२. प्रलय, २३. नरसिंहा, २४. समुद्र, २५. लाल धूलि, २६. प्रकट, २७. चाहा, २८. प्रकृति, शक्ति, २९. झगड़ा, ३०. लौह-गदा।

†यु. द. म., पृष्ठ ३५७।

३१. इसके पश्चात्, ३२. पैतृक, ३३. कला, ३४. गदहे-सा, ३५. नर्क, ३६. पिता, ३७. पुत्र, ३८. पातकी, ३९. हट्टा-कट्टा, ४०. प्रहार।

सो अकबर का गरेबाँ[1] हातसो धर। मँग्या[2] था खीचकर सुटने[3] जमी पर॥
तलक[4] अकबर जलाली कर हुन साथ। सुटे मलऊन के गर्दन उपर हाथ॥
पकड कूवतसेती ऐसा मरोडा। जो गर्दन की रँगा होर हाड तोडी॥
पछीं उन जीनमों ने खीच काडी। उचा[5] कर जोरसों भुईंपर पछाडी॥
देखत अकबरकी मर्दी होर बरजोर। लईना[6] के पड्या सब दिलमने शोर॥
मँग्या मिस्र[7] ने तो शम्शेर[8] काडी। तलक अकबर ने भी शम्शेर झाडी॥
खड्ग ओ सामें उसके जा लग्या सो। कट्या काफिर कमर लग हो गया दो॥
उपत यो दोहजारां सार यकबार। कये अकबरपो हमला करके हकार॥
इधरकू भी किये अकबर ने हम्ला। कुत्यापर ज्यों कि शेरे नर ने हम्ला॥
जब अकबर यो बशारत[9] बापसो पाइ। सो फिर खुशवख्त हो मैदानपर धाइ॥
तलग वे रहम मूज्या[10] का सरबदल। गये तन्हा अली अकबर उपर चल॥
सगा[11] उस शेरकूं दरम्यानमें घेर। लगे भाने[12] मना होर गुर्जा शमशेर॥

§ ३२ हाशिम अली (१७३७ ई०)

१ कवि

इस कवि के जन्मस्थान के बारे में विवाद है। कुछ लोग इसे बुरहानपुर (मध्यप्रदेश) का कहते हैं। भीतरी गवाही गुजरात का भी बतलाती है। हाशिम अली मर्सिया (शोकाजलि) कहनेवाला कवि है, इसने मर्सिया छोड दूसरे विषयो पर कलम नही उठाई। इमाम हुसेन के शहीद होने पर शोक के आसू बहाना मुसलमानो में, विशेषकर शिया लोगो में, बहुत पुरानी परिपाटी है। ईरान मे सदियो पहिले ऐसे काव्य बने। भारत (उर्दू) में अनीस मर्सिया के सर्वश्रेष्ठ उस्ताद माने गये है। दखिन के गोलकुडा, बीजापुर दोनो राजवश शिया थे। इसलिए ताजियादारी का वहाँ बहुत रवाज था। मर्सिया पढना ताजियादारी का एक आवश्यक अग था। हाशिम अली ने जीवन भर मर्सिया लिखे। इसके २३८ मर्सियो का सग्रह 'दीवान हुसेनी' के नाम से मिला है। भीतरी साक्षियो से मालूम होता है, कि हाशिम अली १७३५ ई० (११४९ हि०) और १७५५ ई० (११६९ हि०) में मौजूद था और इस प्रकार दूलह, गिरिधर कविराय का समकालीन था।

हाशिम अली की जीवनी के बारे में कोई बात मालूम नही—उसके निम्नाकित पद्यो से मालूम होता है, कि जीवन के कडवे तजुर्बो से उसे काफी पाला पडा था*--

---

१ कठाबल, २ चाहा, ३ फेंकने, (पजाबी), ४ जबतक, ५ उठा, ६ पापियो, धिक्कृतो, ७ पद, ८ तलवार, ९ सुसमाचार, १० आततायियो, ११ कुत्ते, १२ पाने (पजाबी), डालने।

*उ श, पृष्ठ १६६।

हाशिम अली ज़माना में मेह्रो-वफ़ा[1] यहीं। दिल हाय[2] पुर-नफ़ाक़[3] में सिदक़ो-सफ़ा[4] नहीं॥
हर्गिज[5] नहीं मुरौवत व शर्म व हया[6] नहिं। इस दर्द की दवा कूँ बगैरज़[7] खुदा नहिं॥
फरियाद[8] या मुहम्मद व या मुर्तजा अली।
जिन्दगी दुनियाको है हाशिम अली ख्वाब-ओ ख़ियाल[9]।
जा रह्या सोयाँ वो चूका जागना हैगा कमाल[10]॥
हे लह्द[11] की नीद भारी आज तूँ उसकूँ सम्हल।
ता जगाएँ सुबहे-महशर[12] तुजको आसाँनीद सों॥

कवि की अभिलाषाएँ*—

या हुसेन, ऐ ख़ामस[13] आले अबा। अर्ज[14] हैंगे पाँच मतलब[15] ऐ शहा॥
अव्वल है हा आरजू दिलमें मुदाम[16]। लुत्फ[17] सों अपनी जियारत[18] कूँ बुला॥
दूसरा जब तईं[19] हयाते इस्तआर[20]। रख मुझे बे मिन्नते[21] खल्के-खुदा[22]॥
तीसरा होना कबूली[23] वरगहत[24]। यो सखुन[25] लिखना मेरी तेरी सना[26]॥
चारमीं यह हाजिराँ[27] वह ज़ाकिराँ[28]। तुमसो पावें अपने दिलकी मुद्दआ[29]॥
है तुजे मन्सब[30] शफाअत का नसीब[31]। पांचवाँ मुजकूँ कयामत में छुड़ा॥

और भी†—

हश्र[32] के दीवान[33] से जब नूरचश्मे-मुस्तफ़ा[34]।
रौजये-रिज्वाँ[35] कुँ भेजेंगे मुहिब्बाँ[36] कु छुड़ा॥
यादकर हाशिम अली तुझकूँ कहीं रोजे-जजा[37]।
वह हमारा कमतरी[38] मद्दाह[39] शायर काँ गया॥

कवि हरसाल मर्सिया लिखता था और भावावेश के साथ‡—

तुझकूँ हाशिम अली हुसेन सरूर[40]। हर बरस मर्सिया लिखाते है॥४९॥
लिखूँ कहाँ तलक मैं बयाने-सितम[41]। मुजे हर बरस लेके तीरे-क़लम[42]॥१६३॥
कहाँ तक मैं लिखूँ इस गम की बाताँ। कि दिलके जोशसों पुर-खाँ[43] है आँखाँ॥१३७॥
आज हाशिम अली लिखा ग़मसों। भरके अँझू[44] लोहू सों सारे नयन॥

---

१. प्रेम, सत्यनिष्ठा, २. मनों (बहुवचन), ३. द्वेषपूर्ण, ४. सत्य, शुद्धता, ५. कदापि, ६. लज्जा, ७. विना, ८. पुकार, ९. स्वप्न और कल्पना, १०. निपुणता, ११. कब्र, १२. प्रलय की सुबह।

*उ. श., पृष्ठ १६४। १३. पंचम, १४. निवेदन, १५. अभिप्रेत, १६. सदा, १७. कृपा, १८. दर्शन, १९. लिए, २०. प्रकट, २१. प्रार्थना, २२. ईश्वर-पूजा, २३. स्वीकार, २४. तेरे सम्मुख, २५. वाणी, २६. प्रशंसा, २७. उपस्थित, २८. जपी, २९. उद्देश्य, ३०. पदवी, ३१. प्राप्त।

†उ. श., पृष्ठ १६५-६६। ३२. प्रलय, ३३. न्यायालय, कार्यालय, ३४. मुहम्मद की नेत्र-ज्योति, ३५. स्वर्गोद्यान, ३६. मित्रों, ३७. न्याय-दिन, प्रलय-दिन, ३८. अधम, ३९. प्रशंसक।

‡वही, पृष्ठ १६५-६६। ४०. हर्ष, ४१. अत्याचारी की कथा, ४२. लेखनी के बाण। ४३. रुधिराक्त, ४४. आँसू।

प्रोफेसर जोर ने हाशिम अली के मर्सिया के बारे में लिखा है*--

"हाशिम अली ने केवल वेदी पर बैठकर पढने ही के लिए मर्सिये नही लिखे, वल्कि उसे मुहर्रम मास के साधारण रीति-रिवाज का भी खयाल रखना पडा। दशन, चालीसवाँ के अतिरिक्त ताज़िया ले जाते समय रास्ते में पढते हुए जाने के लिए भी उसने पृथक् मर्सिये लिखे। हाशिम अली एक अच्छा मर्सियागो (शोकाजलि-रचयिता) था। यद्यपि मिर्जा, गुलामी और कादिर के कुछ मर्सियो के सामने दीवान-हुसेनी मे कोई मर्सिया मौजूद नही है, तथापि हाशिम अली की सिद्धहस्तता और उच्चकोटि के शायर होने में सन्देह नही किया जा सकता और उसके कथनानुसार--

शेरे-हाशिम अली हुये मशहूर। नै है दीवानकी किताब हनोज[1]॥

कोई आश्चर्य नही, अगर वह दीवान हुसेनी के सगृहीत होने से पहिले ही सुप्रसिद्ध हो चुका हो।

२ कविता के नमूने

(१) कासिम की वीरगति--

(क) हसन के पुत्र कासिम की वीवी सकीना से अभी-अभी शादी हुई थी। मृत्यु के मुख म जाते पति के साथ सकीना का वार्तालाप बहुत ही करुणापूर्ण है†--

जलवा[2] से उठके रनकू चला तब कही दुल्हन। दामन[3] पकड कर लाजसो अँझुआँ[4] भरे नयन॥
"कैसी यो कदखुदाई[5] वो कैसी है यो वरात। आता फिराक[6] तुमसो यह जलवा की आज रात॥
धरकू न ले गये हो न बोले हो हमसा बात। देखा नही जमाल[7] कू भरके नयन नयन मेरा॥
इस करबलाके बनमे अकेली में क्यो रहूँ। तुम बाज[8] मे जहाँ मैं फिर उमेद क्या धरूँ॥
जदे[9] के मर्दाना क्यो कि[10] मैं इस ठार से फिरूँ। तुज अपने साथ लेके दिखाओ वतन मेरा॥
जाते हो छोड रनकी तरफ मुझकूँ तुम रुला। नै शामका हनोज यह सरसो[11] घूँघट खुला॥
करते नही मुहब्बत व जाते मया[12] भुला। इस जिदगीसो आज भला है मरन मेरा॥
शोला[13] लगा है दिलमने इस गमका क्या कहूँ। मुजकूँ रवा[14] हुआ है अगर जहर खा मरूँ॥
दूरी[15] मे हाय तेरी मैं दिन-रैन क्यो भरूँ[16]। फुर्कत[17] की आगसेती जलेगा बदन मेरा॥"
कासिम खडा था रोने नैन सो दुल्हनके सात। गमनाक[18] अपना देखके दामन दुल्हनके हात॥
तब आहे-दर्दनाक[19] सो बोला दुल्हनके सात। "हुँ बोस्ताने-राहत[20] वो सर्वे चमन[21] मेरा॥
मजकू नही है तेरी जुदाई[22] का इख्तियार[23]। तेरे फिराक सात में जाता हुँ अश्कवार[24]॥

---

*उ श, पृष्ठ १६५। १ आज भी।

†वही। पृष्ठ २९६। २ सोहागरात, ३ अचल ४ आँसू, ५ विवाह, ६ वियोग, ७ सौन्दर्य, ८ तेरे बिना, ९ नाना, १० कैसे, ११ सिर से, १२ माया, स्नेह, १३ ज्वाला, १४ विहित, उचित, १५ वियोग, दूरस्थिति, १६ कैसे काटूं, १७ वियोग, १८ दुःखपूर्ण, १९ पीडा पूर्ण हाय-हाय, २० सुखोद्यान, २१ उद्यान के सरोवृक्ष, २२ वियोग, २३ शक्ति, २४ प्रकट।

ं क्या करूँ सलाह[१] नही हुक्म-कर्दगार[२]। हक़ने[३] किया है रनमें मुकर्रर[४] रहन मेरा
ई दाग़[५] दिलमें तेरी जुदाई का क्या करूँ। नै है उमेद रनसे फिर आकर तुझे मिलूँ ॥
ो कुछ हुआ है मुकदरों[६] में रास्ती[७] कहूँ। वादा[८] हुआ है हश्र[९] में तुमसे मिलन मेरा ॥

(ख) कासिम और सकीना की इसी विदाई का वर्णन गुलामी की लेखनी से भी सुनिए*—

ोहरा गम आके घेरेगा शाहे-जमनकूँ[१०] आज। जलवा[११] में क्यों बिठाये है इब्नेहसन[१२] कूँ आज ॥
ूँघट नें सोग आन पड़ेगा दूल्हनकूँ आज। "कासिम खुदाके वास्ते मत जा तूँ रनकूँ आज ॥
ल्ताँ[१३] बखूँ[१४] हुये है सब अहबाब-ओ-अक़रबा[१५]। वाँधे कमर जे-वह्ले[१६] शहादत[१७] वह मुक्तदा[१८] ॥
ासिमने इज्ने-हर्ब[१९] तलब[२०] करके यों कहा। 'अमूँ[२१] न जाओ रन को रजा[२२] दो हमनकूँ आज ॥
हलत[२३] के दिन पिदर[२४] यो वसीयत किया हजे। तुजपर निसार[२५] होने नसीहत किया मुजे ॥
ाकीद[२६] करके कामकी रुखसत[२७] किया मुजे।" यह सुन अँझूँ[२८] से शह[२९] ने किये पुर-नयनकूँ आज ॥
ोले अगर तुजे यों वसीयत किया पिदर। हकमें तेरे मुजे भी जो कै[३०] वह नामवर ॥
ाऊँ वजा[३१] मै हुक्मे-बिरादर[३२] तूँ सब्र[३३] कर। यो बात कह तलब किये[३४] सर्वर[३५] बहनकू आज ॥
ीमा[३६] में अपने लाया वह दुल्हनकूँ नौजवाँ। हल मनमुवारिज[३७] अहले-सितम[३८] बोले नागहाँ ॥
स्ते अरूस[३९] छोड़के कासिम हुये रवाँ[४०]। बोले "खुदाकूँ सौंप चला हूँ तुमनकूँ आज ॥
ामन[४१] पकड़ अरूस[४२] लगी रोने गम सेती। कहती मया[४३] अभी से उठाते हो हम सेती ॥
ोले कि 'शोखी[४४] करते है आदा[४५] सितम[४६] सेती। जाकर हटाऊँ फिर्कये-दोजख-वतन[४७] कूँ आज" ॥
हने लगी कि "होते हो या इब्ने-अम[४८] जुदा। बेकस अकेली छोड़ मुझे दुख में मुब्तला[४९] ॥
ुमकूँ करें शहीद मुबादा[५०] यह इश्तिया। बेवा हो तरसती रहूँ फिर मै मिलनकूँ आज" ॥
ौशा[५१] कहे कि जीते फिरेंगे नही हमन। दुनिया के बीच फिरके मिलेंगे नही अपन ॥
हशर[५२] उपर है वादये-दीदार[५३] जाने-मन[५४]। होना है पारा-पारा हमारे बदनकूँ आज ॥
ूछी कि रोजे-हश्रमें पाऊँ तुम्हें कहाँ। दिल भरके मुख तुमारा नही देखा दरजहाँ[५५] ॥
योंकर पिछानूँ मुझकूँ बता जाओ कुछ निशाँ। टुक बैठो ना कि सुन लो यह मीठे बचनकूँ आज ॥

---

१. मर्जी, २. कर्त्ता (भगवान्) की आज्ञा, ३. सत्य (भगवान्) ने, ४. निश्चित, ५. जलन, ६. भाग्य, ७. सच, ८. वचन, ९. प्रलय-दिन।

* उ. श., पृष्ठ २९७।

१०. युग के राजा, ११. सोहागरात, १२. हसन-पुत्र कासिम, १३. छटपटाना, तदफद, १४. रुधिर में, १५. सगे-सम्बन्धी, १६-१७. वीरगति-प्राप्ति के लिए, १८. नायक, इमाम, १९. युद्ध-कष्ट, २०. इच्छा, २१. चचा, २२. अनुमति, २३. कूच, मृत्यु, २४. पिता (हसन), २५. निछावर, २६. जोर देकर कहना, २७. विदा, २८. आँसू, २९. राजा (हुसेन), ३०. कहा, ३१. पूरा, ३२. भाई (हसन) की आज्ञा, ३३. धीरज, ३४. बुलाया, ३५. सरदार, हुसेन, ३६. तम्बू ३७. लड़ाका, ३८. जालिम, ३९. दुलहन का हाथ, ४०. प्रस्थित, ४१. अंचल, ४२. दुलहन, ४३. स्नेह, ४४. ढिठाई, ४५. शत्रुगण, ४६. जुल्म, ४७. नरकवाले पन्थ, ४८. चचा का पुत्र, ४९. फँसे, ५०. शायद, ५१. दुलहा, ५२. प्रलय-दिन, ५३. दर्शन-चषक, ५४. मेरे प्राण, ५५. दुनिया मे।

यारॉं क्यॉं यह गमका निपट बेशुमार है । बेहतर जे-तूल किस्सा[1] गमे - इख्तियार[2] है ॥
लानत[3] वो जालिमॉंकूँ हजारॉं हजार है । जो दुख दिये हे इश्रतें[4] शाहेजमन[5] कूँ आज ॥
हैं शश जहत[6] मे गम अहे - बेकस[7] का बरमला[8] । रोते हैं उन्सो -जिन मलायक दरी अजा[9] ॥
हर्गिज न रख तूँ खौफ[10] गुलामी जे-हासिदॉं[11] । आले-अबाम[12] ते तू मदद मॉंग हर जमा ॥
दिखलावे कवला तुजे आखिर दो सर्वरा[13] । जो आरजू[14] है कह तूँ हुसेन-ओ हसनसो आज ॥

(२) असगर की वीरगति*—

कर्बला की निर्मम हत्याओं मे हुसेन के छोटे बच्चे असगर का हत्या भी है । बनी-उमेया के लिए अली और फातिमा की औलाद सबसे खतरे की चीज थी, इसलिए वह उनका नामो-निशान नही छोडना चाहते थे । हुसेन की लडकी सकीना (कासिम की बीवी) विधवा हुई, हुसेन का बेटा असगर यजीद के जल्लादो के हाथ मारा गया । हुसेन की बीवी शह्रबानू—जो साथ ही ईरान के अन्तिम सासानी शाह यज्दगिर्द तृतीय की लडकी थी—असगर की मृत्यु पर विलाप करती है—

(क) वाले असगर केते बुलाती रही । सुना यह पालना झुलाती रही ॥
झूला तेरा पडॉं रहा खाली । डोरी मूज हातमें हिलाती रही ॥
हाय क्यो रुठकर गया मुजसो । मेरे प्यारे के ते मनाती रही ॥
भूल क्यो तूँ चला मया[15] मेरी । 'आ रे असगर' तुजे बुलाती रही ॥
मै सुलाती थी जब लगा छाती । आँचल अपना तुजे उढाती रही ॥
रात - दिन मे कभू न दी रोने । करके बातो तुजे हँसाती रही ॥
था बरसगाठ का तुजे अरमान[16] । लाल जामॉं तेरा सिलाती रही ॥
कासिम आया है जब बियाने[17] कूँ । मै तमाशा तुझे दिखाती रही ॥
रहो मरा क्यो तेरा चँदरमुख है । जिसकूँ हाथो से मै बुलाती रही ॥
दूध पीता मेरा गया वाले । गमसो छाती मेरी भर आती रही ॥
तुजकूँ भाती न थी अधारी रात । तेरी खातिर दिवा जलाती रही ॥
करके तावीज[18] दिल ऊपर रखती । बदनजर[19] से तुजे छिपाती रही ॥
क्यो न आखिर हुई उमर मेरी । तुज बिना हैफ[20] मुज हयाती[21] रही ॥
आज पुरखू[22] कफन तेरा असगर । आज सूखा दहन[24] तेरा असगर ॥
लाल हैं गुलबदन[25] तेरा असगर । हैफ यो नाजपन तेरा असगर ॥
क्या है जुल्फा[26] के बाल तारो-तार[27] । क्यो गले से लोहू के जारी धार ॥

---

१ लम्बी कथा मे, २ संक्षिप्त दुःख, ३ धिक्कार, ४ आनन्द, ५ युग के राजा, ६ छहो दिशाएँ, ७ बेबस राजा, ८ प्रकट, ९ इस दुःख में आदमी जिन और फरिश्ते, १० भय, ११ ईर्ष्यालुओ, १२ फातिमा-अली हसन-हुसेन, १३ सरदार, १४ अभिलाषा।
*उ श, पृष्ठ २९४।
१५ स्नेह, १६ अभिलाषा, १७ ब्याहने, १८ जतर, १९ कुदृष्टि, २० समाप्त, २१ शोक, २२ जीवन, २३ रुधिराक्त, २४ मुंह, २५ पुष्पतनु, गुलाबी शरीरवाला, २६ अलकें, २७ बिखरे।

तुजकूँ सोते कभू न लगती वार । हैफ़ यो बालपन तेरा असग़र ॥
उठ गलेका लोहु धुलाऊँ मै । नींद आती तुजे सुलाऊँ मै ॥
चल तेरा पालना झुलाऊँ मे । हैफ़०॥
क्यों जुदा मुज सेती किये तुजकूँ । फिर मै गोदी लिये फिरूँ किसकूँ ॥
क्यों न लागी बला तेरी मुजकूँ । हैफ़०॥
अल्ला - अल्ला किया तुजे पाला । मनमें यों था करूँगी विस्मिल्ला ॥
हाय तेरा गया जिया वाला । हैफ़०॥
किसका अब पालना झुलाऊँगी । लोली[1] देके किसे सुलाऊँगी ॥
किसकूँ छाती सेती लगाऊँगी । हैफ़०॥

(ख) कवि गुलामी ने भी शह्रबानू के विलाप पर लेखनी चलाई है*--

जुल्म किया है कठिन है-है फ़लक[2] क्या किया । शहसों छुड़ाया वतन है-है फलक क्या किया ॥
अब मै झुलाऊँ किसे छाती लगाऊँ किसे । दूध पिलाऊँ किसे है-है०॥
निकली मै जब अज-वतन[3] कैसी हुई थी सगुन । गुम हुये सारे रतन है-है० ॥
लोहू मे अकबर[4] मेरा जखमी-वदन है पड़ा । तन हुआ सिरसों जुदा है-है० ॥
हात मेरा जार[5] है जीवना दुश्वार[6] है । आबदीन बीमार है, है-है० ॥
आई तो आई कहाँ बेटी ब्याही कहाँ । मेरा जँवाई[7] कहाँ है-है० ॥
मेरी सकीना निढाल प्यास सों है खस्ता-हाल[8] । क्या करूँ ऐ जुल्जलाल[9] है-है० ॥
शह मेरा मारा पड़ा कोइ नै वाली मेरा । बेवा हुई ऐ खुदा फ़लक क्या किया ॥

गुलामी ने और भी लिखा है†--

बानू पे कर्बलामें कैसा यह दुख पड़ा है । गोदों मै प्यारा असग़र बिन दूद मर चला है ॥
होर राँड़ बैठी बेटी दामाद[10] मर चुका है । सिरका चतर[11] भी ढलना कोइ दमको आ रहा है ॥
समझाना उस बची[12] का इस वक्त क्या मुसीबत । बाबा[13] बिना तड़पता और तश्नगी[14] की शद्दत[15]।
"ऐ बेटी तेरे बाबा खाने गये जियाफ़त" । मासूम[16] का यह सुनकर दहचद[17] जी जला है ॥
कहने लगी कि "अम्मा, है-है यह क्या गजब है । मरती हुँ भूख सेती प्यासोंसे जाँबलब है ॥
ज्याफ़त[18] मे गये बाबा मुज बिन सो क्या सबब है । बाबाने मुजपे शायद शफ़कत कुँ कम किये हैं ॥
मुजसे कभू न करते बाबा मेरी जुदाई । असग़र कुँ ले गये है मुझसे मया उठाई ॥
बावर[19] न हाइ जो तुमकूँ बतलाउँ काँ है भाई । असग़रका पालना भी खाली देखा पड़ा है ॥
रो-रो हरम मियाँसे उस तिल्फ़[20] कूँ मनाते । हर यकले भरके उसकूँ छाती सेती लगाते ॥

---

१. लोरी। *उ. श., पृष्ठ २९९। २. आकाश, भाग्य, ३. घर से, ४. हुसेन का बड़ा पुत्र, ५. बुरा, ६. कठिन, ७. जैतुल आबदीन हुसेन का लड़का, और फातिमा का एक मात्र नामलेवा, ८. अति पीड़ित, ९. सुन्दर।

†वही, पृष्ठ २९९--३००। १०. जामाता, ११. छत्र, १२. बच्ची, १३. पिता, १४. प्यास, १५. कड़ी, १६. बेगुनाह, १७. दसगुना, १८ बड़ी दावत, १९. विश्वास, २०. शिशु।

कहते थे "तेरे बाबा अब कोइ घडीमें आते । वल्लाह[1] साथ शहके असगर नहीं गया है॥
समजा बने है हारे पन[2] करते नैं वह बावर । कहते "जो ले गये नैं दिस्ता नहीं क्यों असगर॥
लाचार हो कहे तब अहले-हरम[3] ने यकसर । असगरकी लाश लाकर उसको दिखा दिया है॥
भाई को देख रोते दौडे हैं बर[4]में लेने । हर रोज की तरह से लागे हैं बोसा[5] देने॥
कहते "क्या आज भाई, नैं उठता दूद पीने । क्यों उसके पैरहन[6] कू ताजा लहु लगा है"॥
यह मर्सिया लिखा जब ऐ दोजहांके मौला[7] । सीने सेती धडक्कर गमका उठा है शोला॥
सब जाकिरां[8] में कमतर[9] है खस्तादिल[10] गुलामी । दो दाद[11] जल्द हरचंद[12] है आसिया[13] में नामी।

(ग) हाशिम अली ने इसी विषय पर कहा है*—

"जाऊँ किधर मैं क्या करूँ यह गोद खाली ले फिरूँ।
फिर 'अम्मार अम्मार' मैं कहुँ किसका झुलाऊँ पालना॥
यह देख मेरा हाल तू तोडी है सिरके बाल तू।
मैं दिलकी हालत क्या कहूँ किसका झुलाऊँ पालना॥
थे खेलने के दिन तेरे क्या उम्र क्या थी सिन[14] तेरी।
नैं चैन मुजकू बिन तेरे किसका झुलाऊँ पालना॥
यह बहन तेरी गमगुसार[15] बैठी है रोने जारजार।
तूँ उठ सकीना कर पुकार किस०॥

(३) कर्बला—

इस्लाम के पैगम्बर की सन्ताना पर यह जुल्म मुसल्मान कर्बला में ढा रहे थे, उसका वर्णन हाशिम अली के मुँह से सुनें†—

फिर घटा हुइ गमके बादल की गगनपर आशकार[16] । कर्बलामें मेघ बरसे लोहूके धारा बेशुमार॥
तेग चमके सिर उपर बिजली के मानिंद[17] बारबार । क्या समां है-हू पडा सारा जहाँ स्याले-अंधार[18]॥
नारहा[19] कडके गरजकर आज नफ्मे-सूर[20] है । चौतरफ घनघोर है लहुकी बरसती है फुहार॥
नैं निकलता है सुरज सोसे नहीं सुबके भजन । सुन दिलमा जहाँ तलक देखे टपकते है नयन॥
तर हुये हैं अश्कबारी[21] सा लजने है रदन । जाह का हर दम हुआ हैगा दिलोंसेती पुकार॥

(४) फातिमा विलाप—

पैगम्बर की प्यारी बेटी तथा हसन-हुसेन की मा फातिमा का पुत्र-शोक पर विलाप‡—

आया मुहर्रम[22] उडता धुलारा । होता है आलम इस गममें सारा॥
खैरुन्निसा[23] ने तब यों पुकारा । मेरा हुसेना नाहक्क[24] मारा॥

---

१ भगवान्, २ लेकिन, ३ अतःपुरिकाएँ, ४ गोद में, ५ चुम्बन, ६ परिधान, ७ स्वामी, ८ जपी, ९ छोटा, १० अकिंचन, दिल टूटा, ११ शाबाशी, १२ चाहे कितना ही, १३ पापियों।

*यु द म, पृष्ठ ६४७। १४ आयु, १५ हमदर्द। †उ श, पृष्ठ २९६। १६ प्रकट, १७ भांति, १८ अधकार में, १९ शब्द, २० प्रलय के नरसिंह की आवाज, २१ अश्रुपूर्ण।

‡उ श, पृष्ठ २९६। २२ मुहर्रम का महीना, जिसमें इमाम हुसेन मारे गये। २३ नारीश्रेष्ठ, २४ अन्यायपूर्वक।

है-है हुसेना तेरी जबानी । था कुत्ब[1] तारा तेरी पेशानी ॥
दूजा नहीं था कोई जगमें सानीं । मेरा हुसेना० ॥
तब तश्नगीसों तूँ तिलमिलाया । सातो समुन्दर तब खलबलाया ॥
नैं जालिमों ने पानी पिलाया । मेरा हुसेना० ॥
तूँ अर्श[2] का था रोशन सितारा । तेरा शरफ़[3] था सब आशकारा[4] ॥
है आज तेरा सिर तनसों न्यारा । मेरा हुसेना० ॥

(५) हुसेन के परिवार की दुर्गति--

हुसेन और उनके साथियों के हत्याकांड के बाद आततायियों ने उनके परिवार के साथ जो जुल्म किया, उसे भी सुनिए*--

ले गये, आज किधर ताजे-शहीदाँ[5] कहाँ । रनमें तन सों जुदा कर सरे-सुल्ताँ[6] कहाँ ॥
काँ किये जुल्फे-मुअंबर[7] कुं परेशान कहाँ । नेजा-ऊपर किवा जालिमने नुमायाँ[8] कहाँ ॥
जो शफ़क़[9] बीच हवेदा[10] देखो खुर्शीद[11] मुदाम्[12] । लहूभरा नेजा[13]-उपर था सरेपुरनूरे-इमाम्[14] ॥
सरखोलेजाते यतीमां केते जारी[15] सों तमाम । यह क़यामत[16] है सर-ऊपर वह शर्फ़ीआन[17] कहाँ ॥
शामियां शामकों[18] जाते थे लिये अहले-हरम[19] । सर-उपर रहमें करते थे सभी जोरों-सितम[20] ॥
हाय कैसे थे मुसलमान न मुहम्मदसों शरम । कुफ्र[21] के काम किया जो, उसे ईमान कहाँ ॥
जलती धूपाँ में यतीमाँकूँ दिये रजे-सफर । न खोरिश है न पोसिश न कोई लेता खबर ॥
राह-मंजिल[22] में न था तोशा मगर खूने-जिगर[23] । शहक़ाम[24] उनका रफीक[25] हो रहा सामान यहाँ ॥
एक दिन शाम[26] तलक देखी न वस्ती का निशाँ । वह यजीदाँ[27] रहे हैराँ कि हुई रात अयाँ[28] ॥
सब हरम[29] रोते कहे "हाय नहीं हमकूँ मकाँ । कां रहा जदां[30] का मदीना यो बयाबान[31] कहाँ ॥
चौतरफ देख जंगल में कि मिल जाय पनाह[32] । जाँरहें-अहले-हरम[33] और सरे-सुस्तां[34] केसिपह[35] ॥
केते सायत[36] वह फिरे हाल हुआ सबका तवाह । पाये एक किलये-यहुदी[37] का मुसलमान कहाँ ॥
तव खड़े रहके पुकारे वहाँ सर्दारे-हिसार[38] । "है यजीदी सभी लश्कर यों खड़ा खोल किवाड़॥
यक रात हम कूँ तेरे किलामेंलाके उतार । सुबह में लेके चलेंगे तेरा इहसान[39] कहाँ" ॥

---

१. ध्रुव, २. स्वर्ग, ३. कृपा, ४. प्रकट।

*यु. द. म., पृष्ठ ६४९।

५. वीरों का मुकुट, ६. राजाओं का सरदार, ७. अंबर-गंधी अलकें, ८. प्रकट, ९. आकाश की लाली, १०. प्रकट, ११. सूर्य, १२. सदा, १३. भाला, १४. इमाम का प्रकाश, १५. रोदन, १६. प्रलय, १७. पाप क्षमा करनेवाला, १८. शाम (सिरिया) के निवासी, १९. अन्तःपुरिकाएँ, २०. जोर-जुल्म, २१. अधर्म, २२. रास्ते के पड़ाव, २३. हृदय-रक्त, २४. दुःख, २५. साथी, २६. सिरिया, २७. हुसेन के शत्रु म्वाविया-पुत्र यजीद के आदमी, २८. प्रकट, २९. अन्तःपुरिकाएँ, ३०. नाना, ३१. मरुकान्तार, ३२. शरण, ३३. अन्तःपुर की स्त्रियाँ, ३४. सुस्तान (हुसेन) का मुंड, ३५. सेना, ३६. घड़ी, ३७. यहूदी का दुर्ग, ३८. दुर्गपाल, ३९. उपकार।

समकालीन कवि

हाशिम अली ने अपने समकालीन मर्सियाभाषी शायरों का स्मरण करते कहा है*—

हजार हैफ[1] नैं शायराने-दखिन[2] । सो रूही व मिर्जा ओ कादिर नहीं ।।

इनमें कुछ के मर्सिये हैं —

(क) रूही†—

आज गमनाक[3] है चमनके गुल[4] । बल्कि दिल चाक है समन के[5] गुल ।।
गमजदा सीनये-दाग[6] हैरां हे । नर्गिस-ओ-लाला यासमन[7] के गुल ।।
यो न लाले शिफक[8] के दिसते हे । लहूमें डूबे हैं सब गगन के गुल ।।
जब सुने शह[9] की बात मज्लिसमे । जल गुझे शमा[10] अंजुमन[11] के गुल ।।
नक्शे-पा[12] देख दिल हवस रखता । सिरपे रखनेकूं तुज चरन के गुल ।।
खुश लगे तुज-तबा[13] से एं रूही । दिलके बागांमने सखुन[14] के गुल ।।

(ख) मिर्जा (१७३७ ई०)††—

स्प्रिगर के अनुसार मिर्जा अबुल्कासिम सुल्तान अबुल हसन कुतुब (तानाशाह) का दरबारी था । जब उसके स्वामी कैद कर लिये गये, तब यह अब्दुल्लागज के करीब हैदराबाद में फकीरी की जिन्दगी बसर करने लगा। उसकी कुछ शोराजलियां—

शह[15] पर था जिस दिन थिरया मातम[16] रह्या जगमें यो सोज[17] ।।
तब मुहर्रम[18] की दहम[19] तारीख था होर जुमा[20] रोज ।।
शहकने[21] चालीस प्यारे तीस होर दो ये सवार ।।
जालिमा के दस्तने तब ये सवारा बीस हजार ।।

० ० ० ०

(ग) हुसेन की वीरगति†††—

जखम ताउपर जब लगे बेहिसाब । परे सर्वर[23] उस रनमें जो आफताब[25] ।।
उठ्या शोर हर शै सो उस वक्तपर । गया हाक यो अर्श[27] के तख्त[28] पर ।।
धुआं आहका उस गगन लग गया । सुरज गमसों शोला[29] हो सब जल गया ।।

---

*उ श, पृष्ठ १६१। १ शोक, २ दक्खिन के कवि।

†उ श, पृष्ठ ३१४।

३ शोकपूर्ण, ४ उद्यान के फूल, ५ चमेली, ६ दिल के घाव, ७ चमेली, ८ रक्तिमा, ९ हुसेन, १० दीपक, ११ सभा, १२ पद-चिह्न, १३ तेरे मन, १४ वाणी।

††यु द म, पृष्ठ १८९।

१५ हुसेन, १६ शोक, १७ जलन, सताप, १८ महीना, १९ दसवीं, २० शुक्र, २१ हुसेन के पास, २२ अत्याचारी।

†††वही, पृष्ठ १९०।

२३ घाव, २४ सरदार, २५ सूर्य, २६ प्रत्येक वस्तु, २७ स्वर्ग, २८ सिंहासन, २९ ज्वाला।

न कुलसून, जेनबकूँ ताकत रह्या । न कुछ शह्लबानू के राहत[1] रह्या ॥
जेते अहले-मासूम[2] हो रहे यतीम[3] । खडया[4] सब ऊपर या जफ़ा[5] होर अजीम[6] ॥

० ० ० ०

बाद-ज[7] उमर साद सराँ[8] रनते लिया है । सब सर वो सवाराँके हवाले[9] सो किया है ॥
तब शामकी जानिब ले चले अहले-हरम[10] कूँ । बदबख्त[11] यजीद पासकने जुल्मों-वफा सों ॥
यों सब वो सिराँ हो हरम सात लिया है । मंजिल[12] ओ-मुकामाँ केते उस रहमें किया है ॥

(ग) क़ादिर (१७३६ ई०)*--

हुआ शोहरत[13] मुहर्रममें यो गम[14] है शाहअली[15] का ।
कि है फर्जन्द[16] प्यारा वह दोंनों आलम[17] के वाली[18] का ॥
छुपा है दीन[19] का चंदर कि जिसके सोगसों जगपर ।
फ़लक[20] हर मुल्क में ताने शम्याना[21] रात काली का ॥
सितारे सब यह क़ुदस्याँ[22] ने मिलाकर गगन ऊपर ।
हुसेनके उर्स[23] कूँ बांधे मँडप मोतियाँकी जाली का ॥
नही यो अश्के[24]-शब्नम[25] सों खुले हैं आहके गुल हो ।
देखो गमके चमन म्याने[26] लताफत[27] ग़मके मानी[28] का ॥
क़यामत[29] काँपना क़ादिर तजुल्जुल[30] अब करे जाहिर ।
मुजे तकवा[31] तब आखिर है हुसेन सर्वर से वाली[32] का ॥

० ० ० ०

मुहर्रम यो ग़म है कहल[33] हाय-हाय । हुआ शोर मातम[34] सकल हाय-हाय ॥
शफ़क़[35] में रँग्या सूरका पैरहन[36] । भिगाकर गगनमे अँचल हाय-हाय ॥
हुसेनाकूँ कहाँ दे पोसलाय नबी । क[ ] प्यार सबते अवल हाय-हाय ॥
हुसेनाकी खिदमतकुँ सुरज खवास[37] । किरन का करे मोरछल हाय-हाय ॥
उननपर जुलुमके सितारे गि[ ] । किमिर्रीख़[38] जेहरा[39] जौहल[40] हाय-हाय ॥
रो[ ] फ़ातिमा होर ख़दीजा नबी । यो तक़दीर उनकी अजल[41] हाय-हाय ॥
नबीके घराँका दिया गुल हुआ । खुदाया[42] तुँ कर यो अदल[43] हाय-हाय ॥

---

१. सुख, २. निरपराध, ३. अनाथ, ४. पड़ा, ५. अत्याचार, ६. महान्, ७. इसके बाद, ८. शिरों, ९. सपुर्द, १०. अन्तःपुर की, ११. अत्याचार, १२. पड़ाव।

*उ. श., पृष्ठ ३१६। १३. प्रसिद्ध, १४. शोक, १५. महाराजा, १६. संतान, १७. शोक, १८. स्वामी, १९. धर्म, २०. आकाश, भाग्य, २१. तम्बू, २२. फरिश्ते, २३. उत्सव, २४. आँसू, २५. ओस, २६. उद्यान में, २७. लालित्य, २८. अर्थ, २९. प्रलय-दिन, ३०. कम्पन, ३१. धीरज, ३२. स्वामी, ३३. कठिन, २४. शोक, ३५. रक्तिमा, ३६. परिधान, ३७. सेवक, ३८. मंगल, ३९. शुक्र, ४०. सनीचर, ४१. मृत्यु, ४२. हे भगवान्, ४३. न्याय।

कि शाह-ऊपर जुल्म नाहक[1] बेगुनाह । तो महशर[2] के सफ[3] में खजल[4] हाय-हाय ॥
सदा गमसों रोता खडा कादिरा । दुन्या ख्वाब झूठा सहल[5] हाय-हाय ॥*

§३३ कयासी (१७५१ ई०)

१ कवि

सैयद अब्दुल्ला उपनाम कयासी अठारहवीं सदी के मध्य का दक्खिनी कवि है। इसका कथा-काव्य 'सौदागर की बीवी' पलासी के अंगरेजी-महाविजय के सात साल पहिले लिखा गया।—

हुये सात सौ वैत चोदा पे सात[6] । मुरत्तम हुआ है यो नक्ल[7] वात ॥
अया सन इग्यारा सौ चौसठ साल । व तारीख ग्यारा ओ माहे शवाल[8] ॥
सैयद अब्दुल्ला करके मेरा है नांव । तखल्लुस[9] कयासी फिकर डाल नांव ॥

२ कविता

'सौदागर की बीवी' (जौजये-ताजिर) का कथा-संक्षेप है—एक सौदागर था। उसकी बीवी अत्यन्त सुन्दरी थी। सौदागर परदेश गया। बहुत समय तक नहीं लौटा। जीवन-यात्रा चलाना कठिन हुआ। अन्तमें बीवी ने एक मोम का पुतला बनाया और उसके द्वारा जौहरियों को ठगकर अपने प्राणों और सतीत्व की रक्षा की।—

रहती नित इश्रत[10] में ओ मनहरन । मरद जाके गुजरे[11] सो केते करन[12] ॥
मुरत्तब[13] हुई घरकी खर्ची तमाम[14] । हुआ भार[15] का वल्कि कुछ एक दाम[16] ॥
न आया है तब लग भी खाविन्द[17] ओ । सा उस घरमें बेहद फिकरमंद हो ॥
अथी दाई घरमें सो उसकूं बुलाइ । कही "क्या फिकर अब करे बोल दाइ ॥
घनी जाको घरका हुये सौत रोज । न आया है अब लग खबर नैं हनोज[18] ॥
न खानेकी बाकी[19] रह्या है यहां । करें फिक्र[20] क्या कुछ तरद्दुत[21] बना" ॥
कही दाइ "बीबी, करें क्या इलाज । न कुछ फिक्र चलती है अल्ला के बाज[22] ॥
किसी तौर अब जिन्दगी काटना । कही पीसना - कूटना - कातना" ॥
कहीं सुनको उस-बातकूं मोहनी । "अछी बात बोली अरी साजनी ॥
बडा खर्च घरका एती जान यो । हावे क्यों मजूरीमें गुजरान[23] यो ॥

---

१ अन्याय से, २ प्रलय, ३ पाँती, ४ लज्जा, ५ विष। *दक्न में उर्दू (नसीरुद्दीन हाशिमी, हैदराबाद, १९३६, पृ० २९५)।

[1]यु द म, पृष्ठ ५१०, ११ शंवाल, ११६४ हिज्री को २ सितंबर १७५१ था। ६ ७२१, ७ लेख, ८ बुध, २ सितम्बर १७५१ ई०, ९ उपनाम।

[11]उ शा, पृष्ठ २९०-९२। १० आनन्द, मौज, ११ बीते, १२ युग, १३ समाप्त, १४ सारी, १५ बाहर, १६ कर्ज, १७ पति, १८ अबतक, १९ बचा, २० चिंता, २१ उपाय, २२ विना, २३ निर्वाह।

करे फिक्र ऐसी कि दरहाल[१] कुछ । होवे घरका गुजरान हर हाल कुछ"॥
कही दाई "बीबी, मेरी बात सुन । न होता है कुछ अब मेरे हात सुन॥
जो कुछ फिक्र करना सो अब तूँच कर" । एता बोल रही चुपके मूँ मोच[२] कर॥
सुन इस बातकूँ नार उस तिलमने[३] । करी यक अँदेशा[४] अपस दिल मने॥
बजाँ मोम दो तीन पेका मँगाइ । सो उस मोमका एक पुतला बनाइ॥
कि ऐसा बनाई ओ नादिर[५] बचा । जे कोइ देख बोले है आदमी सचा॥
अजब[६] सनअती सो बनाई उसे । कि कपड़े ओ बस्ताँ पिनाई उसे॥
कही "जाँ अहै जौहरीकी दुकान । ऐ दाई लेजा मुजकूँ वाही ठिकान॥"
बचेकुँ लेकर आपने गोद बीच । सवार सिर उपर ऊपर बुर्केकुँ वै च[७]॥
लेकर दाइ कूँ साथ निकली बहार[८] । चली डोलती ठुमके सों गुलअजार[९]॥
चली पेशखिदमत[१०] अँगे होके दाइ । जहाँ जौहरी थे वहाँ लेको आइ॥
सो आ छवि सों दूकानमें बैठ नार । कही जौहरी कुँ "ऐ दूकानदार॥
तेरे पास मोती बड़े मोल के । है कुछ बेबहा[११] कीमती तोलके॥
देखा" जौहरी सो वहीं सुध विसार । तअज्जुब[१२] हो दिलमे किया यो विचार॥
अजब नूर बख्शा[१३] है इसकँ खुदा । है किस घरकी बीबी या शहकी दवा॥
ओ बे-उज्र होकर रख्या दर[१४] जरूर[१५] । केतक वजा[१६] के लाको मोती हजूर[१७]॥
ओ मोती सबोंमे अथे नामदार । रखी मोल उनका चुका तीन हजार॥
पूछा "लाल-हीरे है तेरेकने[१८] । कहया नै हीरे लाल-मेरेकने"॥
केतक धातके ओ जवाहर ले आय । बहुत बेबहा बेश[१९] नादिर[२०] ले आय॥
हीरा उनमेंते यक हजार चारका । लिये लाल आठ हज्जार का॥
हुये पैसे तीनों के पन्द्रह हजार । बजाँ जौहऱ्याँ कूँ कही यों ओ नार॥
"जवाहर मे देती हुँ दाई के हात । तुमे तीन आदमियो देउ इसके सँगात॥
जवाहर लेकर घरकुँजाती है दाइ । तुमारे जो पैसे दिलातीहै दाइ॥
कि मै बैठती हूँ ओ फिर आये लग । तुमारे जो पैसे यहाँ ल्याय लग"॥
कबूले[२१] सुन इस वातकूँ जोहऱ्याँ । अपसके दे साथ तीन आदमियाँ॥
चली दाइ लेकर ओ तीनों के तै । शहरके गली होर कूच्याँ मैं "॥
केतक वक्त लाग शह्र सारा फिराइ । मौत करके माँदे सो यक ठार लाइ॥
बड़ा एक कूचे मे भडकल[२२] अथा[२३] । वो तीनो कुँ उस जाय ऊपर बिठा॥
कही "यो अछो घरमे जाती हूँ मै । तुमारे ये पैसे ले आती हुँ मैं॥"
बिठा उनकुँ होर आप भडकल के पार । ओ भडकल-अँदर राह थे तीन-चार॥

---

१. तत्काल, २. मीच, मूँद, ३. क्षण मे, ४. विचार, ५. अद्भुत, ६. विचित्र, ७. वहाँ ही, ८. बाहर, ९. गुलाबी गालवाली, १०. शोभा-सहित, ११. अनमोल, १२. अद्भुत, १३. प्रदान किया, १४. द्वार, १५. जरूरी, १६. प्रकार, १७. सम्मुख, १८. तेरे पास, १९. बढ़िया, २०. दुर्लभ, २१. स्वीकार, २२. महल, २३. था (हता)।

मो यक बाटते जौंक[1] सो घरको गइ। जवाहर रख आरामसो बैठ रही॥
केतेक वेर लग बैठकर हो हलाक[2]। लगे मारने बावरे होके बाँग॥
न ओ दाइ है नाँ जवाहर न माल। लगे पीटने[3] सर-उपर खाक[4] डाल॥
तब औरो कूँ पूछे यो किसका है घर"। कहेलोग "सब बाटका है ये दर"॥
कहे "गइ दगा दे को हमना ओ राँड। हमें[5] काँसो खाविन्द[6] कूँ देले वाँड"॥"
चलो जाय जल्दी सो दूकान लग। जो बीबी ओ मक्कार की है तलक॥
हो हैबतजदा[8] दाइ की आस छोड। लगे आने दूकानकूँ अपने दौड॥
बजा[9] इस बजा[10] सो हुआ वाँ सबब[11]। वरे[12] याँ हुआ सो सुनो हाल अब॥
सुला नार उस र बच्चे के तें। कही "इस्तजा कर को आती हुँ मैं"॥
बचा सो रह्या है मो पुरलीद[13] हो। न बैठे मखी त्यो उडाते रहो॥
एता बोलकर वाँमे ज्यो आइ भार[14]। चली ना पछी फिरको देख एकबार॥
निसक बेगसो आपने घरकुं आइ। हुई जमा-खातिर अपें होर दाइ॥

§३४. बाकर आगाह (१७४५-१८०५ ई०)

१ कवि

आगाह का नाम मुहम्मद बाकर था। इनके पू ज अरबी सौदागर थे, जो व्यापार के सम्बन्ध से कारोमडल (चोलमडल) के समुद्र-तट पर बस गये। इस्लाम के आरभ से ही जहाँ एक ओर गाजी तलवार की सहायता से इस्लामी राज्य और धर्म का प्रसार करते थे, वहाँ मुस्लिम फकीर ज्ञान-भक्ति, अद्वैतवाद, सयम द्वारा इस्लाम धम में काफिरो को दीक्षित कर रहे थे। सौदागर (व्यापारी) भी व्यापार के साथ धम-विस्तार में हाथ बँटा रहे थे। मलाया, जावा, सुमात्रा में इस्लाम का प्रचार मुस्लिम व्यापारियो ने किया। यही काम आगाह के पूवजा ने कारोमडल तट पर किया। पीछे इनके पूवज बीजापुर में आकर बस गये। १६८२ ई० में बीजापुर के पतन के बाद इनके पिता मुहम्मद मुर्तुजा वेल्लोर मे आ गये, जहाँ १७४५ ई० (११५८ हि०) में आगाह का जन्म हुआ। इन्होंने विद्याध्ययन वेल्लोर और त्रिचिनापल्ली मे किया और अरबी, फारसी, उर्दू मे खासी विद्वत्ता प्राप्त की। अरबी और फारसी की इनकी कविताओं के दीवान मौजूद हैं। अरबी, फारसी और दक्खिनी मिलाकर कुल ३०३ ग्रथ इन्होंने रचे। ६२ साल की उम्र मे १८०५ ई० (१२२० हि०) में इनका देहान्त हुआ। इनकी कब्र मद्रास मे है। मुशी सदासुखलाल, पण्डित लल्लूलाल, मुशी इशाअल्ला और सदल मिश्र जिस समय अपनी रचनाएँ कर रहे थे, उसी समय आगाह सुदूर दक्षिण में लेखनी चला रहे थे। १५ साल की उम्र से कविता शुरू की। २६ वय की उम्र में १७७१ ई० (११८४ हि०) से उन्होंने दक्खिनी में लिखना शुरू किया।

---

१ हर्ष, २ परेशान, ३ डालने, ४ मिट्टी, ५ हम लोग, ६ स्वामी, ७ उधार, ८ भयभीत, ९ इसके बाद, १० प्रकार, ११ कारण, १२ अथ, १३ निद्रापूर्ण, १४ बाहर।

२. कृतियाँ

दक्खिनी में इन्होंने १७ पुस्तकें लिखी है, जिनमें 'हश्त-बहिश्त' (आ स्वर्ग) मुख्य है। इनकी सत्रह पुस्तके है—

१. अक़ायदनामा
२. तोहफतुन्निसा
३. हश्त-वहिश्त (८ भाग)
४. रियाजुल्जनाँ (मुहम्मद-परिवार) ३०९९ बैत
५. महवूबुल्कुलुब (गौस पीर की जीवनी) ४०६३ वैत
६. हाशिया मनदर्पन (मनदर्पनसार)
७. तोहफ़ये-अहवाब
८. मेराजनामा
९. हिदायतनामा
१०. गुल्जारे-इश्क
११. रूपसिंगार
१२. दीवान-आगाह
१३. रौजतु-ल्-इस्लाम
१४. फ़रायद-दर-अक़ायद
१५. रियाजु-स्-सैर
१६. खम्सा मुत्वहरा
१७. फिर्कहाय-इस्लाम

'अक़ायदनामा' (सिद्धान्तिका) शायद आगाह की पहिली १५०० बैतों की दक्खिनी पुस्तक है, जिसमें आगाह ने लिखा है*—

कहा नै मै कभी दखिनीमे अशआर[1] । मुँजे है शेर कहनेसे बहुत आर[2]॥
वले[3] यह नज्म बोल्या बिज्जरूरत[4] । पड़े[5] ता उसको हर उम्मी[6] व औरत॥

आगाह की दक्खिनी मे उपनाम बाकर था†—

तु रख बाकर उपर नित प्यार अपना। इनायत कर उसे दीदार[7]॥

अरवी मे उनका उपनाम आगाह बतलाया जाता है, किन्तु आगाह न अरबी भाषा का शब्द है, न गाफ (ग) के अभाव के कारण उसे अरबी मे लिखा जा सकता है। अपनी फारसी कविताओं में उन्होंने जरूर यही उपनाम रखा है—

'हश्त-वहिश्त' आगाह की सबसे वड़ी पुस्तक है, जिसमे प्रायः ८६५० वैत (अर्धालियाँ) है। हश्त-वहिश्त वस्तुतः आठ ग्रंथों का सग्रह है, जिसका विषय है पैगम्वर मुहम्मद का वृत्तान्त —

---

*त. उ. म., पृष्ठ ७७। १. पद्य, २. संकोच, ३. लेकिन, ४. आवश्यकता के कारण, ५. पढ़े, ६. अनपढ़।

†त. उ. म. पृष्ठ ८९, "पंद्रहवें साल से शेर के साथ उल्फत (प्रेम) रखता है, अगर्चे शेर कम कहता है, इसकी वास्ते तखल्लुस (उपनाम) मुद्दत लग मुकर्रर नें किया था। जब ११८४-८५ हि० (१७७०-७१ ई०) में बाज रसायल हश्त-बहिश्त के मंजम (पद्यबद्ध) किया, . . . बाकर . . . तखल्लुस रखा। . . . ११९४ हि० (१७८० ई०) . . . दीवान अरवी के समय तखल्लुस अपना आगाह मुकर्रर किया। इस तखल्लुस को अशआर अरवी व फारसी में लाया।"

—यु० द० म० पृ० ४३६-३८।

७. दर्शन।

१ मनदीपक—मुहम्मद का प्रकाश।

२ मनहरन—मुहम्मद के लिए भविष्यद्वाणियाँ।

३ मनमोहन—मुहम्मद का जन्म।

४ जगमोहन—मुहम्मद के वस-स्वभाव, आठ वर्ष से मत्यु तक की जीवनी।

५ आरामदिल—सुन्दर आचरण।

६ राहतजान—मुहम्मद के गुण।

७ मनदर्पन—मुहम्मद के चमत्कार।

८ मनजीवन—मुहम्मद-भक्त।

वाकर ने 'हश्त-बहिश्त' के हर भाग पर गद्य में बड़ी भूमिकाएँ लिखी, जो इंशाअल्ला, लल्लूलाल के समय की दक्खिनी गद्य के अच्छे नमूने हैं, यद्यपि उनमें कवित्व लाने की कोशिश नही की गई है। इनके कुछ उदाहरण हैं* —

"उ रिसाले[1] ११८५ और ११८६ (१७७१-७२ ई०) में बने हैं। पीछे उसके बहुत ढील हुई। क्या वास्ते कि यह रफीक[2] कि इन रिसालाका तालिब[3] था, सो रहलत[4] कया। आखिर इब्तिदा[5] सन एक हजार और दो सौ और छै (१७९१ ई०) में रिसाला 'मनदर्पन' और रिसाला 'मनजीवन' बनाने का इत्तिफाक[6] हुआ। इन आठ रसायल[7] में तक़-रीबन[8] आठ हजार और छ सौ और पचास बैत हैं। सुर्खियों[9] के साथ नौ हजार बैत होंगे। इन सब रिसाला में शायरी नैं किया हूँ, बल्कि साफ-व-सादा[10] कहा हूँ और उर्दूकी भाका में नही कहा, किस वास्ते कि रहनेवाले यहाँ के उस भाका मे वाकिफ[11] नही हैं। ऐ भाई, यह रिसाले दखिनी जबान में है करकर[12] सहल और सरसरी न जाने, क्या वास्ते कि बडे मातबर[13] कुतुब[14] से तहकीक करके लिखा हूँ।"

१ मनदीपक—"रिसाला अव्वल[15] का नाम मनदीपक है। इस रिसाला में हजरत मुहम्मद के नूर-मुक्द्दस[16] का जिक्र है†।

२ मनमोहन—"इस रिसालेमें हजरत के हालात[17] का बयान है, यानी[18] जो माजिजात[19] के मुद्दते-हमल[20] और वलादत[21] और दूध छुड़ाई और खुदसालो[22] में हजरत से जाहिर[23] हुये, उस हद[24] तक कि हजरत की आठ बरसकी उम्र हुई है††।"

मनदर्पन मे कवि के सम्बन्ध में निम्न सूचनाएँ मिलती हैं ††† —

---

*त उ म, पृष्ठ ७९-८६।

१ पुस्तकें, २ मित्र, ३ इच्छुक, ४ मौत, ५ आरभ, ६ सयोग, ७ पुस्तकें, ८ प्राय, ९ शीर्षक, १० स्पष्ट, सरल, ११ परिचित, १२ इति, १३ विश्वसनीय, १४ ध्रुव, १५ प्रथम, १६ पवित्र आकाश।

† वही, पृष्ठ ८०।

१७ अवस्थाओ, १८ अर्थात्, १९ चमत्कार, २० गर्भकाल, २१ जन्म, २२ छुटपन, शैशव, २३ प्रकट, २४ सीमा।

†† वही, पृष्ठ ८२।

††† त उ म, पृष्ठ ८४।

थे बारा सो के उपर छे बरस जब[1] । हुआ यह नुस्खये[2]-दिलकश[3] मुरत्तब[4] ।।
मैं हूँ किस हालमें तू जानता है । मै हूँ किस जंजालमें पहिचानता है ।।
है मेरी मुश्किलाँ सब तुजकूँ मालूम । है मेरी कुल्फताँ[5] सब तुजकूँ मफ़हूम[6] ।।
हुआ हूँ सब तरफसे मै उदासी । न कर ऐसे निरासे कुँ निरासी ।।
हुआ हूँ जोफ[7] व बीमारी से हैराँ । तबीबाँ[8] पास नै है मेरे दरमाँ[9] ।।
हुई आजिज[10] दवा मेरी दुआ भी । हुई आजिज मेरी ताकत ग़िजा[11] भी ।।
मेरा खातिर[12] परागंदा[13] हुआ है । निपट दुनियासेती गंदा हुआ है ।।
जईफी[14] से हुआ हूँ मै ज़मींगीर[15] । नही कुछ सूझती है मुजकूँ तदबीर ।।
मुदाम[16] इस फिक्र[17] में ह यह कमीना[18] । कि चलता सिरसे जावे ता-मदीना[19] ।।
हुँ रहनेसों यहाँ के भौत बेजार[20] । बहुत इस बातसे पाता हूँ आजार[21] ।।
हुआ है कुफ्र[22] का याँ गर्म बाजार[23] । मुसल्मानाँ उपर है सख्त दुश्वार[24] ।।
समाँ[25] याँ मुश्किल उनपर आ खड़ा है । पहाड़ उनके सिर ऊपर आ पड़ा है ।।
किधर जावें कि यह लश्कर है तेरे । अगर है नेक-हो-बद चाकर हैं तेरे ।।
अगर्चे है बद्याँ[26] इनके घनेरे । वले[27] बेशुबहा[28] कहलाते है तेरे ।।
मेरी औलाद[29] कूँ सरसब्ज[30] कर तूँ । रखअपने दीन[31] पर साबित[32] उनोंकू ।।
दे उनको खूबियाँ[33] दोनों जहाँ[34] की । दे उनकूँ न्यामताँ सिर[35] ओ अयाँ की ।।
मेरे भायाँ के तें बा यकसर औलाद[36] । हमेशा दीन हो।र दुनियाँमें रख शाद[37] ।।

'हश्त-बहिश्त' को समाप्त करते हुए मनजीवन मे लिखते है * —

तमत[38] बिल्-खेर[39]. रसायल 'हश्त-बहिश्त'. . . मिन्-तस्नीफ़[40] मौलवी मुहम्मद बाकर आगाह शाफ़ई[41] बीजापुरी एलोरी. . . बतारीख[42] दोयम शहर रबीउ-स्-सानी रोज दोशंबा सन् १२०९ हि०।"

---

१. १२०६ हिजरी, (१७९१ ई०), २. ग्रंथ, निबन्ध, ३. मनोहर, ४. निर्मित, ५. कष्ट ६. मालूम ७. निर्बल, ८. चिकित्सक, ९. चिकित्सा करनेवाले, १०. निराश, बेकार, ११. भोजन, १२. दिल, १३. परेशान, १४. निर्बलता, बुढ़ापा, १५. धरती पकड़ना, १६. सदा, १७. चिन्ता, १८. अधम, १९. मदीना, अरब तक, २०. दुःख, २१. दुःख, २२. अधर्म, २३. बहुप्रचार, २४. कठिन, २५. स्थिति, २६. बुराइयाँ, २७. किन्तु, २८. निस्सन्देह, २९. सन्तान, ३०. हरा-भरा, समृद्ध, ३१. धर्म, ३२. दृढ़, ३३. गुण, २४. उभयलोक, ३५. गुप्त, ३६. अकेली संतान, ३७. प्रसन्न, सुखी।

*वही, पृष्ठ ८६। ३८. समाप्ति, ३९. निर्विघ्न, ४०. अष्ट स्वर्ग की पुस्तकें, कृति, ४१. एक सुन्नी सम्प्रदाय, ४२. तारीख, अक्तूबर, १७९४ ई०, दिन रविवार।

†'हश्त-बहिश्त' सन् १२६२ हि० (१८४५ ई०) में राजकिशन प्रेस में तथा सन् १२७० हि० (१८५३ ई०) में अजीजिया प्रेस (हैदराबाद) में छप चुका है।

३ कवित्व

बाकर ने बहुत-सी पुस्तकें लिखी है, उनकी कृतियों में कवित्व का अभाव है, इसे वह स्वयं स्वीकार करते थे। किन्तु, दक्खिनी कविता के अन्तिम कवि होने के कारण उनका महत्त्व भी है। हश्त-बहिश्त पैगम्बर मुहम्मद पर लिखी गई है, और इसके लिखने में लेखक ने इस्लाम के बहुत-से प्रामाणिक ग्रंथो से सहायता ली है। पैगम्बर मुहम्मद के जो चित्र बाकर ने खींचे है, उनमें से कुछ के नमूने देखिए *—

(१) प्रथम अनुयायी—

अवल रोज[1] खदीजा खातू[2]। लाई ईमान[3] मुकद्दम[4] सबसूं॥
भी[5] उसी रोज वक्त वक्ते[6] असर[7]। लाये ईमान हैदर[8] सफदर॥
बाद[9] जैद-ओ-अबूबकर वो बलाल। लाये तरतीब[11] से ईमान फिल्हाल[12]॥

(२) मुहम्मद और युद्ध—

इस्लाम के पैगम्बर स्वयं शान्तिप्रिय थे, यद्यपि वह चरम अहिंसा के अनुयायी नही थे—

और उसी साल हुआ फर्ज[13] जहाद[14]। उस शहनशाह के ऊपर रब तू याद॥
उसके गज़वात[15] थ सब सत्तावीस। कि अथा उसमें शाह[16] नफसे-नफीस[17]॥
हुई दस जगमे ए यार लडाई। बाकी जंगामें नही हुई ऐं भाई॥
जो लडायां में गया नही वह रईस[18]। हुये दस सालमें वाके[19] सब॥

(३) मुहम्मद की शरीराकृति—

मियान जये शाह के सिर के बाल। सम[20]-ओ-सीने पन[21] बीच ऐ जग-उजाल॥
दराज़ी[22] में पोंचे थे कांदे तने[23]। यो आय है अक्सर[24] हदीसां मने[25]॥
कभी सिर मुंडाया नै ओ नामदार[26]। मगर[27] हजके अय्याम[28] में एक वार॥
दिया बाँट असहाब[29] कूं सबके बाल। रखे सब उसे अपने जीके मिसाल[31]॥
ओ सरवर कें सीस भर बाल थे। दिलां सैद[32] करने के जाल थे॥
निहायत[33] थे सुब्ज़[34] ओ सये-सियाह[35]। है कहना उसे मुश्क-ओ-अबर[36] गुनाह[37]॥
भी ह यक[38] रयायत[39] में इस बात[40] स। कि धोता था सिर पे के पात से॥
भी सुन्नत[41] अहै बात रखना तमाम[41]। निगाह[42] उसकी करना यह सुब्ह-ओ-शाम[43]॥

---

*यु द म, पृष्ठ ४३८।

१ पैगम्बर होने के प्रथम दिन, २ खदीजा मुहम्मद की प्रथम पत्नी, ३ धर्म-स्वीकार, ४ प्रथम, ५ और, ६ समय, ७ अपराह्ण, ८ अली, ९ पक्ति-भेदक, १० अनन्तर, ११ क्रमश, १२ तत्काल।

†वही, पृष्ठ ४३९। १३ कर्त्तव्य, १४ धर्मयुद्ध, १५ लडाइयाँ, १६ मुहम्मद, १७ स्वय, १८ सरदार, १९ घटित, २० मझोले, २१ वक्षि, २२ किंतु, २३ लबाई, २४ कधे के पास, २५ प्राय, २६ स्मृतियो में, २७ कीर्तिशाली, २८ किंतु, २९ समय, ३० मित्र-मडली, ३१ प्राणसम, ३२ शिकार, ३३ अत्यत, ३४ सुगधित, ३५ काले बाल, ३६ कस्तूरी और अबर, ३७ पाप ३८ परम्परा, ३९ भाँति, ४० धर्मानुगत, ४१ सारा, ४२ दृष्टि, ४३ प्रात-साय।

(४) मुहम्मद के उदार गुण--

सखावत[1] में कोइ उसके सानी[2] नही । न था जूद कूँ उसके कडका[3] कही ।।
सवासो दिया ऊँट रोजे-हनी[4] । गरीबाँकुँ ओ खल्क का नूर - ऐन[5] ।।
बकौले- हवाजन[6] दिया छे हजार । दिरम[7] ओ शहंशाह आली तबार ।।
नवे यक[8] मुसल्मानकूँ ओ बे-बदल[9] । दिया यक जँगल भरकू बकरी सकल ।।
कहा "क़ौम[10] कूँ जाको ऐ गुमरहाँ[11] । मुहम्मद उपर लाओ ईमान जान ।।
सख़ावत[12] कुँ उसकी नही इन्तिहा[13] । यो जाहिर सखावत है मुद्दआ[14] ।।
मैं रहमत[15] का उसकी कश क्या बयान । सराया[16] है उसकूँ खुदा और कुरान. . . ।।
भी जाता अथा शह मरीजाँ[17] के घर । भी होता था हाजिर[18] जनाजे[19] उपर ।।
बुलाता अगर कोइ ज्याफ़त[20] लिये । तो जाता शहंशाह घर उसके चल ।।
कोइ असहाब[21] सों गर न आता नजर[22] । वहुत पूछता था उसे जिद्द[23] कर ।।
मुसाफ़िर कुँ पौचाने जाता था ओ । कोई आया तो लेता अथा आगे हो ।।
मन[24] ऐ भाइ, स`र[25] कूँ शाम--सेहर[26] । तक़ैयद[27] न था कोइ खाने उपर ।।
तकल्लुफ़[28] में उसके न था गर्मजोश[29] । जो पाता अथा उसकुँ करता था नोश[30] ।।
जो खाते थे अहलेमदीना[31] सकल । वही नोश करता अथा शह नवल[32] ।।

(५) मुहम्मद का पहनावा*--

अथा[33] पैरहन[34] शहकने[35] दो सतर । भी कपड़े सफेद ए गरामी गुहर[36] ।।
यही कहता था अकसर[37] वह गुल-उमेद[38] । "करो लाजिम अपने पो कपडे सफेद ।।
है पाकीजा[39] वो खूब तर[40] वह लिबास । पैनो तुम शामो-सेहर[41] वह लिबास[42] ।।
पिनाओ उसे अपने अह्या[43] केतै । भी तकफ़ी[44] करो उसमे मूये के तैं ।।

---

१. दानशीलता, २. समान, द्वितीय, ३. कभी, ४. एक दिन, ५. दुनिया की सच्ची आँख, ६. हवाजिन के कथनानुसार, ७. यूनानी सिक्का (द्राख्म, द्रम्य, द.म), ८. उच्च कुलीन, ९. अनुपम, अनमोल, १०. जाति, ११. पथभ्रष्टों, १२. दानशीलता, १३. अन्त, १४. उद्देश्य, प्रयोजन, १५. दया, १६. सराहा, १७. रोगियों, १८. उपस्थित, १९. अन्त्येष्टि, २०. भोज, २१. मित्र-मंडली, २२. दृष्टि, २३. आग्रह, २४. ऐ मेरे भाई, २५. सर्दार, मुहम्मद, २६. प्रातः-सायं, २७. बंधन, २८. बनावट, २९. बहुमान, ३०. भोजन, ३१. मदीनावाले, ३२. राजा।

*वही, पृष्ठ ४४१। ३३. था (हता), ३४. परिधान, ३५. शाह के पास, ३६. मोती, ३७. प्रायः, ३८. आशा-पुष्प, ३९. उचित, ४०. अच्छा-अच्छा, ४१. सायं-प्रातः, ४२. पोशाक, ४३. जीवन, ४४. मृतक-संस्कार।

§ ३५ तुराब दखनी (१८४० ई०)

'मसनवी तुराब दखनी', 'रिसाला बारा बहार' आदि काव्य-ग्रंथों को तुराब ने लिखा। अब भी हैदराबाद में इनके गीतों को गाते फकीर भीख माँगते हैं। इनकी कविताओं में लोकगीत का रस आता है। १८४० ई० में लिखी 'बाराबहार' के नमूने हैं—

सुना हूँ गुलशनाबाद[१] एक नगर था।
वहाँ एक महजबी गुलरु[२] का घर था॥
निहायत हुस्न[३] में औतार[४] थी ओ।
कुल पचार में खूंखार थी जो॥
जयो यो पाकदामन पारसा नार।
नमाजाँ पंच वक्ताँ होर जिक्र चार॥
कभी नागा नहीं करती थी अक्सर।
चतुर सब औरताँ में थी विचित्तर॥
खसम राजी रजामन्द सब कबीला।
न जाने औरताँ का मक्र[५] व हीला॥
अछे हिलमिल हमेशा ओ खसम सूं।
के ज्यूं है आशना[६] साबित-कदम[७] सूं॥
कभी कोई नई हुआ आजुर्दा-खातिर[८]।
अथी खुश-खल्क ओ दिलबर बजाहर[९]॥
जहाँ आवाज ना-महरम[१०] का आवे।
वो ताबा कर वहाँ सूं अटकी जावे॥
उँचा घूंघट न मारा मुँह को खाके।
न बाताँ बोलमिल बोलियाँ सूं बोले॥
वलेकिन मशेन्द नाजुक बदन थी।
मक्ल खूबाँ[११] मने जादू-नयन थी॥
कमान-अब्रू निगह खंजर पलक तीर।
अदा मैंके[१२] दुधारा जुल्फ जंजीर॥
सरोपा नाजनी दिलदार दिलबर।
बला थी, जुल्म थी, जालिम, सितमगर॥
यहाँ लग उस परी-रू[१३] को मैं सराऊँ।
दिले आशिक सिगा कर क्यों जलाऊँ॥

---

१ फूलनगर, २ चन्द्रमुखी, गुलाबमुखी, ३ सौन्दर्य, ४ अनुपम, ५ छल, ६ जानकार, ७ दृढ़ पग, ८ व्याकुलचित्त, ९ प्रकट, १० देखने के अयोग्य, ११ सुन्दरियाँ, १२ दुधारी तलवार, १३ अप्सरामुखी।

गया था नौकरी को उसका खाविन्द।
अकेली घर में थी दिलदार दिलबन्द॥
हुये थे दिन जो कोइ शातिर[1] न आया।
खबर भी खैरियत की कोई न लाया॥
पर उस नगर में ओ गुलबदन नार।
कहीं मारे गया या ओ बीमार॥
कहे फिर दाइ को ओ यों बुला कर।
"बुला मुल्ला को दाई जल्द जाकर॥
भौत दिन सों नही आई खबर है।
न जाने क्या सबब उनके उपर है॥
ओ अब लग नौकरी किसकी किये नै।
जो घर की कुछ खबर हरगिज लिये नै॥
या कइँ लश्कर में जा सँपड़े[2] हैं रन में।
या कइँ अटके है शौक़े-रागो-रँग मे॥
या कोई सौकन ने दिल उनका बहलाई।
या किसके जा हुये हैं घर-जँवाई॥
भौत जादूगराँ राँडाँ वहाँ है।
उनों जाकर रहे चाकर वहाँ है॥
मेरे बिन यक घड़ी रहता नही था।
मेरे विन बात कइँ करता नही था॥
अता भेजा नई झूटी किताबत।
किया है जाके शायद वाँ की औरत॥
किया तो खूब है जीता रहे ओ।
खबर आई तो उसकी बस है देखो॥"
सुनी यो वात सो दाई चली भार[3]।
बेचारी नार कुँ करने गिरफ्तार॥
जहाँ पड़ते थे लड़के भौत से मिल।
वहाँ बैठा था मुल्ला एक फाजिल[4]॥
ले तसवीह हात मे करता जिकर[5] था।
लगन के दर्द सूँ ओ बेखबर था॥
रखे शमला चीरा बाँधे मदूर।
करे सानी शरीअत काम अक्सर॥
सुनावे सब कतें मसला - मसाअल।

---

१. चालाक, २. पहुँचे, ३. बाहर, ४. विद्वान्, ५. सुमिरन।

करी तसलीम जाकर उसको दाई।
हकीकत बोल खत लिखने बुलाई॥
सुना सो दाई सूँ मुल्ला ने यो बात।
चला लेकर कलम दावात सगात॥
खबर बीबी को दे आया है मुल्ला।
कह बीबी "उसे घर में बुला ल्या"॥
उनें बुत घर[1] में गोशा[2] कर बुलाई।
बिछौना करके परदे कन बिठाई॥
अपी बैठी सुंदर परदे के अन्दर।
बुला मुल्ला कूँ अपने घर के भीतर॥
बिठा परदे कने मुल्ला बिचारा।
सुनो बारी लगन का यब नजारा॥
गँवाया पारसा की पारसाई।
किया जुह्द[3]-वो-रिया[4] की जग-हँसाई॥
पूछा ले हाथ में मुल्ला वो खामा[5]।
"हकीकत क्या लिखूँ सो वो नामा[6]॥"
देखा तो ओ परी-रू झाँकती थी।
गरूरे हुस्न में ज्यो मदमती थी॥
हुये एक बार जो चश्[7]-चार दोनो।
रहे हैरत मूँ हो लाचार दोनो॥
यकायक देख दिवाना हुआ तब।
लगा कहने को "बोलो क्या लिखूँ अब"?
कहे ओ नाजनीं सब अपना अहवाल।
न समजी ओ हुआ सो देख बेहाल॥
हकीकत सब सुना बोली सो सुन्दर।
कहा,   भी क्या लिखूँ गर॥
कहे भी ओ परी सो करके तकरार।
"`सो फिर क्या लिखूँ" बोल्या गिरिफ्तार॥
कही दो चार बार उस कनें तब।
समज के दिल मने दीवाना है तब॥
देखी तो कुछ भी पढता है न लिखता।
चुपी चुप "क्या लिखूँ" कह कर बिलखता॥

---

१ मूर्त्ति-गृह, २ पर्दा, ३ सदाचार, ४ ढोंग, ५ कलम, ६ पत्र, ७ चक्षु।

क़लम यक हात और यक हात क़िरतास[1]।
बैठा हैरतजदा[2] परदे के है पास॥
कही तब दाई कुँ गुस्से में आकर।
"तू दीवाने कू क्यों लाई बुला कर॥
गया था काँ तेरा तब होश दाई।
जो ऐसे मस्त दीवाने कूँ लाई"॥
कही तब दाई "मैं लाई थी सयाना।
इता दिसता हुआ उजड़ा दिवाना॥
भला-चंगा सो मुल्ला ओ दिस्या तब।
बिसर सब होश दीवाना हुआ अब॥
लगा अब के अभी मैं उसको शैतान।
हुआ यक बारगी बदबख़्त मस्तान॥
हमारे शह्र में था ओ ई च नामी।
भौत आलम तो करता है गुलामी॥
मुआ सब फ़ाजिलों मे ओ बड़ा है।
न जानो क्या सबब उस पर खड़ा है॥
है सारे मुल्क में उसका पुकारा।
जो करता खूब है सदका[3]-उतारा॥
जहाँ लग भौत शैतानाँ ख़बीसाँ[4]।
उतरते उसके तावीजाँ सों यक साँ॥
मुए तलपट की सब सुन कर भलाई।
मुँडीकाटे को मै लिखने बुलाई॥
मुए के जिव[5] के गुन मै जानती क्या?
करेगा यो किकर मै पछानती क्या?"
कहा तब दाई को "दे उसको जाने।
भौत आलम में है स्याने - दिवाने"॥
कही तब दाई "मियाँ तुम भार जाओ।
नको चुप क्या लिखूँ कर गुल मचाओ॥
बुला लेउँ तुम तो तब नइँ थे दिवाने।
भले चंगे दिसे तब मुजको स्याने॥
यकायक क्या हुआ मै तुम पो वारी।
बिसर कर अक़्ल क्याँ गइ है तुमारी॥
बड़े फ़ाज़िल तुमे मुल्ला कला[6] कर।

१. कागज, २. चकित, ३. नौछावर, ४. भूत-प्रेत, ५. दिल, ६. कहला।

भई किस अछर का पकडा तुमको छर॥
भला अब जाओ अपने घर को प्यारे।
हुआ क्या तुमको मैं वारी तुमारे"॥
विसर शमला उठे कुमला के मुल्ला।
रहा नईं याद तसबी[1] औ मुमल्ला[2]॥
कलम - दावात सुर उसी जागे सारा।
उठा सो 'क्या लिखूं' कर हाँक मारा॥
चल्या ओ 'क्या लिखू' करता विचारा।
लगा जब इश्क का सैंफे[3] दुधारा॥
पड्या आलम में उसका 'क्या लिखूं' नाम?
रहा होकर खाक गोई गुलफाम॥
नही हरगिज कही खाता था खाना।
था फिरता 'क्या लिखू' कहता दिवाना॥
सुने यो बात जो शागिद सारे।
नँगे पावा च दौडे सब बिचारे॥
देखे उस्ताद वते कर कदम बोस।
लगे मलने को सारे दस्ते अफसोस॥
के ऐ साहेब-करम, फय्याजे - आलम्।
येता किस पास जाना दर्स को हम॥
तुमे काँ गये थे खत लिखने की खातिर।
यकायक क्या गिरा है तुमने पर॥

—मस्नवी तुराब दखनी

---

१ जप-माला, २. पूजासन, ३ दुधारी तलवार।

शब्दानुक्रमणिका

ख

ड

ढ

त